हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्त्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु।

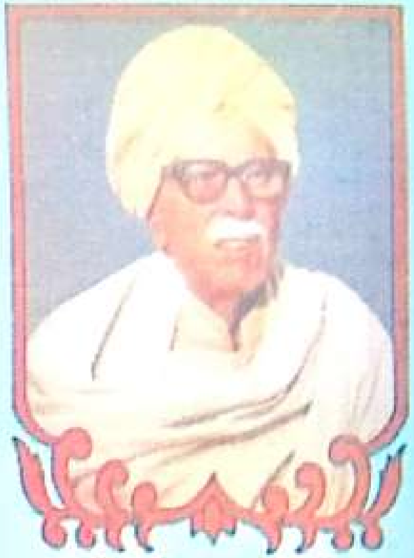
श्री शंकरः शं करोतु।

पंचांग-प्रवर्तकः

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत







चित्रापक्षीय निरयण दृक्सिद्ध

शोध निबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०८२, शक संवत् १९४७,
सन् २०२५-२६, जय हिन्द संवत् ७८-७९,

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा सूर्य

मंत्री सूर्य

पंचांगप्रवर्त्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

सम्पादक मण्डल

स्व. श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त,

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व. डॉ. शक्तिधर शर्मा, M.Sc., Ph.D.(Nuclear Physics) (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त,

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A. ज्योतिषाचार्य,

भविष्यवक्ता श्री संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,

गौरवशाली ९८ वां प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

अमित पॉकेट बुक्स
नजदीक चौक, अड्डा टांडा- जालन्धर
फोन नं.:-0181-5001696, 9417021269,

मूल्य 155/-

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52', अक्षांश उ. 30° 44' के आधार पर किया गया है। अत: विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमश: पूर्वापर क्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि-साधनार्थ इष्टकालादि-ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमश: घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अत: यह जान लेना चाहिए कि - यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**- सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेजी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि. (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा. स्टैं. टा. (I.S.T.) 82° 30' पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी-पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा-मिनटों (भा.टैं.टा.) में दिया गया है। घटी-पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि-नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी-पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी-पलात्मक काल बतलाते हैं। किञ्च- घण्टा-मिनटात्मक वाले पंचागभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि- घण्टा-मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं.-00मि. के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर, उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्त्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा-मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्त्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे- मान लीजिए**- पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। **इसका अभिप्राय है**-यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी-पलात्मक पंचांगभाग वाले (24) पक्षों वाले पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रात: 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा.(=मार्गी), व. (=वक्री) इसके नीचे उ. (=उदित), अ. (=अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी-पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि-नक्षत्र-योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं। प्राचीन पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं-**यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि-नक्षत्र व योग के आगे घटी-पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा-मिनटात्मक में - (डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी-पलात्क तथा घण्टा-मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर-भूकेन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पंचांग की तिथयादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र-नक्षत्रचरणप्रवेश, उदयास्त, लोप-दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित "प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6," P.O. पंचकूला (हरियाणा), Pin-134 109 के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की गई है।

इस पञ्चाङ्ग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	- अस्त।
अं	- अंश।
उ.	- उदित, उत्तर।
क.	- कला।
कृ.	- कृष्णपक्ष, कृत्तिका (नक्षत्र)।
क्रां.सा.	- क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	- गोधूलि (लग्न)।
ति.	- तिथि।
द.	- दक्षिण।
दा.	- दानपूजन।
दि.	- दिन।
दि.ल.	- दिन का लग्न।
प्रा.	- प्रारम्भ।
भ.	- भद्रा।
मा.	- मार्गी।
मि.	- मिनट।
रा.	- राशि।
ल.	- लग्न।
व.	- वक्री।
वा.	- वार।
वि.	- विकला।
वै.	- वैष्णवों के लिए।
स.	- सबके लिए।
शु.	- शुक्लपक्ष, शुक्रवार, शुक्र (ग्रह)।
सं.	- संक्रान्ति, संवत्।
सां. का.	- साम्पातिक काल।
स्मा.	- स्मार्तों के लिए

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु।

श्री शंकरः शं करोतु।

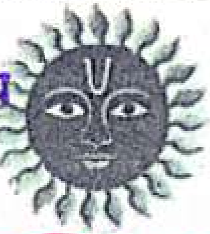
भारतीय एवं पाश्चात्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः



भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

अक्षपाद महर्षि गौत्तम वेद विद्यालय
नोखा (बीकानेर) राज०



प्राचार्य
गजानन्द शास्त्री
Mo. 8619094536



दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

चित्रापक्षीय निरयण दृक्सिद्ध

शोध निबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०८२, शक संवत् १९४७,
सन् २०२५-२६, जय हिन्द संवत् ७८-७९,

श्री मार्तण्ड पञ्चांगम्

राजा सूर्य

मंत्री सूर्य

पंचांगप्रवर्त्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र, ज्योतिषाचार्य,

सम्पादक मण्डल

स्व. श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त,

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व. डॉ. शक्तिधर शर्मा, M.Sc., Ph.D.(Nuclear Physics) (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त,

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

भविष्यवक्ता श्री संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,

गौरवशाली ९८ वां प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

अमित पॉकेट बुक्स
नजदीक चौक, अड्डा टांडा- जालन्धर
फोन नं.:-0181-5001696, 9417021269,

मूल्य
155/-

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2082 वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन,	टा.पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख-प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3-10
श्रीगणेश चतुर्थी/श्रीकृष्णजन्माष्टमी-चन्द्रोदय,	11-12
संदिग्ध व्रतपर्व-व्यवस्था (सं. 2082 वि.),	13-18
गण्डमूल, पंचक,	19
ग्रहण-विवरण,	20-24
संवत् 2082 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-कुण्डलियां,	25-35
शनि-साढेसाती,	36-40
आकाशी कौंसिल (सं. 2082 वि.),	41-57
जलवायु एवं वर्षाविचार,	58-61
व्यापारविमर्श (सं. 2082 वि.),	62-75
यंत्र, मंत्र, तंत्र साधनाकाल एवं चमत्कार,	76-81
दैवज्ञों एवं कर्मकाण्डी विद्वानों के लिए ज्ञातव्य विषय,	82-83
प्रत्येक मास के व्रत-पर्वों का संक्षिप्त विवरण,	84-85
नेष्ट ग्रहजन्य रोगशान्त्यर्थ उपाय,	86-88
प्रसूति लग्नविचार, नक्षत्र-राशिज्ञान चक्र आदि,	89-100
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2082 वि.),	101-112
वर्षराजादि फल (सं. 2082 वि.),	113-122
तिथ्यादि 24 पक्ष (सं. 2082 वि.),	123-146

विषय	पृष्ठ
घण्टा-मिनटात्मक तिथ्यादि (भा. स्टैं. टा.),	147-161
चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणप्रवेश (सं. 2082 वि.),	162-166
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	167-181
अक्षांशभेद से चन्द्रदर्शन की तारीखें,	182
चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2082 वि.),	183-184
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	185-189
ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्र-चरणचार, वक्र-मार्ग/उदय-अस्त,	190-195
विश्व के नगरों का सूर्योदयास्तकाल,	196-206
अक्षांशादि सारणी,	207-216
कुछ विदेशी नगरों के अक्षांशादि, एवम् स्टैं. टा. मेरिडियन सारणी,	217-223
दैनिक लग्नसारणी (चण्डीगढ़ के लिए),	224-229
प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	230
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि,	231-234
सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल-कोष्ठक आदि,	235-240
विंशोत्तरी दशा-साधन,	241-243
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	244
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म-शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	245-247
आवश्यक मुहूर्त्त,	248-250
मेलापक-सारणी देखने की रीति और अष्टकूट-परिहार, मेलापक-सारणी,	251-258

विषय	पृष्ठ
लग्न-गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	259-272
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2082 वि.),	273-279
सं. 2083 वि. में सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त,	280
त्रिबलशुद्धि कोष्टक (सं. 2082 वि.),	281-283
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2082 वि.),	284-285
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त,	286-288
श्रीगणेश, शिव, गौरी, दुर्गा आदि द्वादश देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त,	289
सर्वार्थसिद्धि आदि योग,	290-293
नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि-बोधक सारणी,	294
सुगम प्रश्नविचार,	295-298
केरल मत से शुभाशुभ फल,	299
फलित के उच्च-नीच खगोलीय मन्दोच्च-मन्दनीच नहीं,	300-304

इस वर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
दैवज्ञों के लिए कुछ ज्ञानवर्धक-ज्ञातव्य विषय,	82-83
प्रत्येक मास के व्रत-पर्वों का संक्षिप्त विवरण,	84-85
विश्व के नगरों का सूर्योदयास्त-काल,	196-206
विंशोत्तरी दशासाधन,	241-243
फलित के उच्च-नीच खगोलीय मन्दोच्च-मन्दनीच नहीं,	300-304

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि-पीठाधिप, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य्य-श्रीमच्छंकर-भगवत्पाद-प्रतिष्ठित-श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप-जगद्गुरु-श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे-महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम्, अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म-श्रीशक्तिधरशर्म-श्रीमदिन्दुशेखर-शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध-स्फुट-गणितरीत्या परिशोध्य स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पंचांगं धर्मशास्त्रसम्मतंकमात्र-दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत-पर्वादि-धार्मिक-कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्-इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ. शक्तिधरशर्मा ज्योतिष-गणितादि-विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं "दृक्सिद्धान्तभास्करः" इति विरुदेन पूर्वमेव सभाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड-पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती-महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक-लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश-कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

कांचीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या
(सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2083 वि.) में विशेष-अगले वर्ष (2083 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा। – संपादक

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

जनवरी (सन् 2025 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2025 ई. प्रा.	1 जन.	बु.
पौषी पूर्णिमा	13 जन.	चं.
माघस्नान प्रारम्भ	13 जन.	चं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	17 जन.	शु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	चं.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	मं.
मौनी अमावस	29 जन.	बु.
महाकुम्भ पर्व (प्रयागराज)	29 जन.	बु.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	30 जन.	गु.

फरवरी (सन् 2025 ई.)

गौरी तृतीया (गौंतरी)	1 फर.	श.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	1 फर.	श.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	2 फर.	र.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	2 फर.	र.
रथसप्तमी/आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	4 फर.	मं.
भीष्माष्टमी	5 फर.	बु.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	6 फर.	गु.
भीष्म द्वादशी	9 फर.	र.
माघी पूर्णिमा	12 फर.	बु.
माघस्नान समाप्त	12 फर.	बु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	26 फर.	बु.

मार्च (सन् 2025 ई.)

होलाष्टक प्रारम्भ	7 मार्च	शु.
गोविन्द द्वादशी	10 मार्च	चं.
होलिकादहन	13 मार्च	गु.
होलाष्टक समाप्त	14 मार्च	शु.
वसन्तोत्सव	15 मार्च	श.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा. (पं.)	15 मार्च	श.
महाविषुव दिन	20 मार्च	गु.
वारुणी पर्व	27 मार्च	गु.
मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.)	28 मार्च	शु.
चान्द्र संवत् 2081 वि. पूर्ण	29 मार्च	श.
चान्द्र संवत् 2082 वि. प्रा.	30 मार्च	र.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	30 मार्च	र.
वर्षफलश्रवण	30 मार्च	र.
तैलाभ्यंग/ध्वजारोहण	30 मार्च	र.
गौरी तृतीया (गणगौर)	31 मार्च	चं.
आन्दोलन तृतीया	31 मार्च	चं.

अप्रैल (सन् 2025 ई.)

श्री (लक्ष्मी) पंचमी	2 अप्रै.	बु.
हयव्रत	2 अप्रै.	बु.
नागपंचमी	2 अप्रै.	बु.
स्कन्दषष्ठी	3 अप्रै.	गु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	5 अप्रै.	श.
श्रीरामनवमी	6 अप्रै.	र.
वासन्त नवरात्र समाप्त	6 अप्रै.	र.
नवरात्र-व्रतपारणा	7 अप्रै.	चं.
दोलोत्सव	8 अप्रै.	मं.
विष्णु-दमनोत्सव	9 अप्रै.	बु.
अनंग त्रयोदशी	10 अप्रै.	गु.
श्रीमहावीर जयन्ती	10 अप्रै.	गु.
शिव-दमनोत्सव	11 अप्रै.	शु.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	12 अप्रै.	श.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	र.
श्रीपरशुराम जयन्ती	29 अप्रै.	मं.
अक्षय तृतीया	30 अप्रै.	बु.

मई (सन् 2025 ई.)

श्रीगंगा जन्म	3 मई	श.
श्रीजानकी जयन्ती	5 मई	चं.
श्रीनृसिंह जयन्ती	11 मई	र.
श्रीकूर्म जयन्ती	12 मई	चं.
वैशाखी पूर्णिमा	12 मई	चं.
श्रीबुद्ध जयन्ती/श्रीबुद्ध पूर्णिमा	12 मई	चं.
वैशाखस्नान समाप्त	12 मई	चं.
भद्राकाली एकादशी (पं.)	23 मई	शु.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	26 मई	चं.
भावुका अमा	27 मई	मं.
श्रीशनैश्चर जयन्ती	27 मई	मं.
रम्भा तृतीया	29 मई	गु.

जून (सन् 2025 ई.)

अरण्यषष्ठी	1 जून	र.
विन्ध्यवासिनी पूजा	1 जून	र.
श्रीगंगा दशहरा	5 जून	गु.
निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.)	6 जून	शु.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष)	10 जून	मं.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	26 जून	गु.
रथयात्रा (पुरी)	27 जून	शु.
कुमार षष्ठी	30 जून	चं.

जुलाई (सन् 2025 ई.)

विवस्वत् सप्तमी	1 जुला.	मं.
आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त	4 जुला.	शु.
श्रीविष्णु-शयनोत्सव	6 जुला.	र.
कोकिला व्रत	10 जुला.	गु.
शिव-शयनोत्सव	10 जुला.	गु.
गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)	10 जुला.	गु.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रा.	10 जुला.	गु.
श्रावण-शिवरात्रि	23 जुला.	बु.
हरियाली अमा	24 जुला.	गु.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	27 जुला.	र.
नागपंचमी	29 जुला.	मं.

अगस्त (सन् 2025 ई.)

श्रीदुर्गाष्टमी	1 अग.	शु.
ऋक् उपाकर्म	9 अग.	श.
रक्षाबन्धन (राखी)	9 अग.	श.
शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म	9 अग.	श.
श्रावणी पूर्णिमा	9 अग.	श.
श्रीअमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	9 अग.	श.
कज्जली तृतीया	12 अग.	मं.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	12 अग.	मं.
बहुला चतुर्थी	12 अग.	मं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	15 अग.	शु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	16 अग.	श.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	16 अग.	श.
श्रीगुग्गा नवमी	17 अग.	र.
कुशोत्पाटिनी अमा	23 अग.	श.
पिठोरी अमा	23 अग.	श.
साम उपाकर्म	26 अग.	मं.
गौरी तृतीया	26 अग.	मं.
हरितालिका तृतीया	26 अग.	मं.
कलंक चतुर्थी	26 अग.	मं.
सिद्धिविनायक व्रत	27 अग.	बु.
ऋषि पंचमी	28 अग.	गु.
सूर्यषष्ठी व्रत	29 अग.	शु.
मुक्ताभरण सप्तमी	30 अग.	श.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	31 अग.	र.
श्रीराधाष्टमी	31 अग.	र.
दूर्वाष्टमी	31 अग.	र.

सितम्बर (सन् 2025 ई.)

श्रीचन्द नवमी	1 सितं.	चं.
श्रीवामन जयन्ती	4 सितं.	गु.
श्रीअनन्त चतुर्दशी	6 सितं.	श.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	7 सितं.	र.
पूर्णिमा श्राद्ध	7 सितं.	र.
खग्रास चन्द्रहण	7 सितं.	र.
महालय प्रारम्भ	8 सितं.	चं.
पितृपक्ष प्रारम्भ	8 सितं.	चं.

प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

चन्द्रषष्ठी व्रत	12 सितं.	शु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	14 सितं.	र.
महालय/श्राद्ध समाप्त	21 सितं.	र
शारद नवरात्र प्रारम्भ	22 सितं.	चं.
उपाङ्गललिता व्रत	26 सितं.	शु.
सरस्वती आवाहन	29 सितं.	चं.
सरस्वती पूजन	30 सितं.	मं.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	30 सितं.	मं.

अक्तूबर (सन् 2025 ई.)

सरस्वती के लिए बलिदान	1 अक्तू.	बु.
महानवमी (पूजा, उपवास के लिए)	1 अक्तू.	बु.
महानवमी (बलिदान के लिए)	1 अक्तू.	बु.
शारद नवरात्र समाप्त	1 अक्तू.	बु.
सरस्वती विसर्जन	2 अक्तू.	गु.
नवरात्रपारणा	2 अक्तू.	गु.
विजयादशमी (दशहरा)	2 अक्तू.	गु.
भरतमिलाप	3 अक्तू.	शु.
कोजागर व्रत	6 अक्तू.	चं.
शरत् पूर्णिमा	6 अक्तू.	चं.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	7 अक्तू.	मं.
कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ	7 अक्तू.	मं.
श्रीपराशर जयन्ती	7 अक्तू.	मं.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	10 अक्तू.	शु.
अहोई अष्टमी	13 अक्तू.	चं.
गोवत्स द्वादशी	17 अक्तू.	शु.
यम-प्रीत्यर्थ दीपदान	18 अक्तू.	श.
धनत्रयोदशी	19 अक्तू.	र.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.)	19 अक्तू.	र.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	20 अक्तू.	चं.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजा	21 अक्तू.	मं.
गोवर्धनपूजा, बलिपूजा	22 अक्तू.	बु.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	22 अक्तू.	बु.
यमद्वितीया, भाईदूज	23 अक्तू.	गु.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	23 अक्तू.	गु.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	27 अक्तू.	चं.
गोपाष्टमी	30 अक्तू.	गु.
अक्षय नवमी	30 अक्तू.	गु.
कूष्माण्ड नवमी	30 अक्तू.	गु.

नवम्बर (सन् 2025 ई.)

भीष्मपंचक प्रारम्भ	1 नवं.	श.
हरिप्रबोधोत्सव	2 नवं.	र.
तुलसी-विवाह	2 नवं.	र.
चातुर्मास्त व्रत-नियमादि-समाप्त	2 नवं.	र.
त्रिस्पृशा महाद्वादशी	2 नवं.	र.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	4 नवं.	मं.
त्रिपुरोत्सव	5 नवं.	बु.
श्रीगुरुनानक जयन्ती	5 नवं.	बु.
कार्त्तिकस्नान समाप्त	5 नवं.	बु.
कार्त्तिक पूर्णिमा	5 नवं.	बु.
भीष्म पंचक समाप्त	5 नवं.	बु.
पद्मकयोग	6 नवं.	गु.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	12 नवं.	बु.
स्कन्द, गुहषष्ठी	26 नवं.	बु.
चम्पाषष्ठी	26 नवं.	बु.
मित्रसप्तमी	27 नवं.	गु.

दिसम्बर (सन् 2025 ई.)

श्रीगीता जयन्ती	1 दिसं.	चं.
श्रीदत्त जयन्ती	4 दिसं.	गु.

जनवरी (सन् 2026 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2026 ई. प्रा.	1 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	3 जन.	श.
माघस्नान प्रारम्भ	3 जन.	श.
श्रीगणेश/संकष्ट चतुर्थी	6 जन.	मं.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर)	13 जन.	मं.
मकर संक्रान्ति	14 जन.	बु.
मौनी अमावस	18 जन.	र.
माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	19 जन.	चं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	21 जन.	बु.
वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी	22 जन.	गु.
श्रीपंचमी, वसन्तपंचमी	23 जन.	शु.
लक्ष्मी-सरस्वती पूजन	23 जन.	शु.
रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	25 जन.	र.
आरोग्य सप्तमी	25 जन.	र.
भीष्माष्टमी	26 जन.	चं.
माघ गुप्त नवरात्र समाप्त	27 जन.	मं.
भीष्म द्वादशी	29 जन.	गु.

फरवरी (सन् 2026 ई.)

माघी पूर्णिमा	1 फर.	र.
माघस्नान समाप्त	1 फर.	र.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	15 फर.	र.
होलाष्टक प्रारम्भ	24 फर.	मं.
गोविन्द द्वादशी	28 फर.	श.

मार्च (सन् 2026 ई.)

खग्रास चन्द्रग्रहण	3 मार्च	मं.
होलिकादहन	3 मार्च	मं.
होलाष्टक समाप्त	3 मार्च	मं.
वसन्तोत्सव	4 मार्च	बु.
होलामेला श्रीआनन्दपुर सा. (पं.)	4 मार्च	बु.
वारुणी पर्व	17 मार्च	मं.
पिहोवा तीर्थ (हरि.)	17 मार्च	मं.
चान्द्र संवत् 2082 वि. पूर्ण	19 मार्च	गु.
चान्द्र संवत् 2083 वि. प्रारम्भ	19 मार्च	गु.

आगामी वर्ष (वि. सं. 2083) के लिए प्रमुख-प्रमुख व्रत-पर्व

नाममेला/पर्व (सन् 2026 ई.)	तारीख	
वासंत नवरात्र प्रारम्भ	19	मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	26	मार्च
श्रीरामनवमी	26	मार्च
श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	31	मार्च
मेषसंक्रान्ति (वैशाखी)	14	अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	19	अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	1	मई
श्री गंगा दशहरा	25	मई
गुरु पूर्णिमा	29	जुला.
रक्षाबन्धन	28	अग.
संकष्ट चतुर्थी	31	अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	4	सितं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	4	सितं.
श्राद्ध प्रारम्भ	26	सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	11	अक्तू.
श्रीदुर्गाष्टमी	19	अक्तू.
दशहरा (विजयादशमी)	20	अक्तू.
शरत् पूर्णिमा	25	अक्तू.
श्रीवाल्मीकि जयन्ती	26	अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	29	अक्तू.
दीपावली	8	नवं.
भाईदूज	11	नवं.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	24	नवं.
श्रीभैरवाष्टमी	1	दिसं.
(सन् 2027 ई.)		
मकर संक्रान्ति	14	जन.
वसन्त पंचमी	11	फर.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	20	फर.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	6	मार्च

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2025 ई.)

पौष शुक्ल	10 जन.
माघ कृष्ण	25 जन.
माघ शुक्ल	8 फर.
फाल्गुन कृष्ण	24 फर.
फाल्गुन शुक्ल	10 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	25 मार्च
चैत्र शुक्ल	8 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	24 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	8 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	23 मई
ज्येष्ठ शुक्ल (स्मा.)	6 जून
आषाढ़ कृष्ण (स्मा.)	21 जून
आषाढ़ शुक्ल	6 जुला.
श्रावण कृष्ण	21 जुला.
श्रावण शुक्ल	5 अग.
भाद्रपद कृष्ण	19 अग.
भाद्रपद शुक्ल	3 सितं.
आश्विन कृष्ण	17 सितं.
आश्विन शुक्ल	3 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण	17 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल (स्मा.)	1 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	15 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	1 दिसं.
पौष कृष्ण	15 दिसं.
पौष शुक्ल (स्मा.)	30 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ कृष्ण	14 जव.
माघ शुक्ल	29 जन.
फाल्गुन कृष्ण	13 फर.
फाल्गुन शुक्ल	27 फर.
चैत्र कृष्ण	15 मार्च

(स्मा. = स्मार्त्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्त्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2025 ई.)

माघ कृष्ण	14 जन.
माघ शुक्ल	30 जन.
फाल्गुन कृष्ण	13 फर.
फाल्गुन शुक्ल	28 फर.
चैत्र कृष्ण	15 मार्च
चैत्र शुक्ल	30 मार्च
वैशाख कृष्ण	13 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	28 अप्रै.
ज्येष्ठ कृष्ण	13 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	27 मई
आषाढ़ कृष्ण	12 जून
आषाढ़ शुक्ल	26 जून
श्रावण कृष्ण	11 जुला.
श्रावण शुक्ल	25 जुला.
भाद्रपद कृष्ण	10 अग.
भाद्रपद शुक्ल	24 अग.
आश्विन कृष्ण	8 सितं.
आश्विन शुक्ल	22 सितं.
कार्त्तिक कृष्ण	7 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल	22 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	6 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	21 नवं.
पौष कृष्ण	5 दिसं.
पौष शुक्ल	20 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ कृष्ण	4 जन.
माघ शुक्ल	19 जन.
फाल्गुन कृष्ण	2 फर.
फाल्गुल शुक्ल	18 फर.
चैत्र कृष्ण	4 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2025 ई.)

पौष	13 जन.
माघ	12 फर.
फाल्गुन	13 मार्च
चैत्र	12 अप्रै.
वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	10 जून
आषाढ़	10 जुला.
श्रावण	8 अग.
भाद्रपद	7 सितं.
आश्विन	6 अक्तू.
कार्त्तिक	5 नवं.
मार्गशीर्ष	4 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

पौष	2 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन	2 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2025 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	31 मार्च
श्रीरामनवमी	6 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	29 अप्रै.
श्रीनृसिंह जयन्ती	11 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	12 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	12 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	30 जुला.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	15 अग.
श्रीवराह जयन्ती	26 अग.
श्रीवामन जयन्ती	4 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द-विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2025 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	17 जन.
फाल्गुन	16 फर.
चैत्र	17 मार्च
वैशाख	16 अप्रै.
ज्येष्ठ	16 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	14 जुला.
भाद्रपद (संकष्ट चतुर्थी)	12 अग.
आश्विन	10 सितं.
कार्त्तिक	10 अक्तू.
मार्गशीर्ष	8 नवं.
पौष	7 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	6 जन.
फाल्गुन	5 फर.
चैत्र	6 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

(सन् 2025 ई.)

पौष	4 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन	3 मार्च
चैत्र	1 अप्रै.
वैशाख	1 मई
ज्येष्ठ	30 मई
आषाढ़	28 जून
श्रावण	28 जुला.
भाद्रपद	27 अग.
आश्विन	25 सितं.
कार्त्तिक	25 अक्तू.
मार्गशीर्ष	24 नवं.
पौष	23 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	22 जन.
फाल्गुन	21 फर.

प्रदोष व्रत

(सन् 2025 ई.)

पौष शुक्ल (शनि)	11 जन.
माघ कृष्ण (सोम)	27 जन.
माघ शुक्ल (सोम)	10 फर.
फाल्गुन कृष्ण (भौम)	25 फर.
फाल्गुन शुक्ल (भौम)	11 मार्च
चैत्र कृष्ण	27 मार्च
चैत्र शुक्ल	10 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	25 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	9 मई
ज्येष्ठ कृष्ण (शनि)	24 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	8 जून
आषाढ़ कृष्ण (सोम)	23 जून
आषाढ़ शुक्ल (भौम)	8 जुला.
श्रावण कृष्ण (भौम)	22 जुला.
श्रावण शुक्ल	6 अग.
भाद्रपद कृष्ण	20 अग.
भाद्रपद शुक्ल	5 सितं.
आश्विन कृष्ण	19 सितं.
आश्विन शुक्ल (शनि)	4 अक्तू.
कार्त्तिक कृष्ण (शनि)	18 अक्तू.
कार्त्तिक शुक्ल (सोम)	3 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (सोम)	17 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल (भौम)	2 दिसं.
पौष कृष्ण	17 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

पौष शुक्ल	1 जन.
माघ कृष्ण	16 जन.
माघ शुक्ल	30 जन.
फाल्गुन कृष्ण (शनि)	14 फर.
फाल्गुन शुक्ल	1 मार्च
चैत्र कृष्ण (सोम)	16 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

मासिक शिवरात्रि व्रत (सन् 2025 ई.)

माघ	27 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	26 फर.
चैत्र	27 मार्च
वैशाख	26 अप्रै.
ज्येष्ठ	25 मई
आषाढ़	23 जून
श्रावण	23 जुला.
भाद्रपद	21 अग.
आश्विन	19 सितं.
कार्तिक	19 अक्तू.
मार्गशीर्ष	18 नवं.
पौष	18 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	16 जन.
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	15 फर.
चैत्र	17 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2025 ई.)
(स्नान-दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा)

पौष	13 जन.
माघ	12 फर.
फाल्गुन	14 मार्च
चैत्र	12 अप्रै.
वैशाख	12 मई
ज्येष्ठ	11 जून
आषाढ़	10 जुला.
श्रावण	9 अग.
भाद्रपद	7 सितं.
आश्विन	7 अक्तू.
कार्तिक	5 नवं.
मार्गशीर्ष	4 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

पौष	3 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन	3 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2025 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	15 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	16 नवं.
पौष	15 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ) (सन् 2025 ई.)

माघ	29 जन.
फाल्गुन	27 फर.
चैत्र (शनैश्चरी)	29 मार्च
वैशाख	27 अप्रै.
ज्येष्ठ (भौमवती)	27 मई
आषाढ़	25 जून
श्रावण	24 जुला.
भाद्रपद (शनैश्चरी)	23 अग.
आश्विन	21 सितं.
कार्तिक (भौमवती)	21 अक्तू.
मार्गशीर्ष	20 नवं.
पौष	19 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	18 जन.
फाल्गुन (भौमवती)	17 फर.
चैत्र	19 मार्च

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (सन् 2025 ई.)

पौष	7 जन.
माघ	5 फर.
फाल्गुन	7 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.
वैशाख	4 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ़	3 जुला.
श्रावण	1 अग.
भाद्रपद	31 अग..
आश्विन	30 सितं.
कार्तिक	30 अक्तू.
मार्गशीर्ष	28 नवं.
पौष	28 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	26 जन.
फाल्गुन	24 फर.

मासिक कालाष्टमी व्रत (सन् 2025 ई.)

माघ	21 जन.
फाल्गुन	20 फर.
चैत्र	22 मार्च
वैशाख	21 अप्रै.
ज्येष्ठ	20 मई
आषाढ़	18 जून
श्रावण	17 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	14 सितं.
कार्तिक	13 अक्तू.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	12 नवं.
पौष	11 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	10 जन.
फाल्गुन	9 फर.
चैत्र	11 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी
श्रीसंगमेश्वर महादेव, अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी)

(सन् 2025 ई.)

माघ	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र	27 मार्च
वैशाख	26 अप्रै.
ज्येष्ठ	25 मई
आषाढ़	23 जून
श्रावण	22 जुला.
भाद्रपद	21 अग.
आश्विन	19 सितं.
कार्तिक	19 अक्तू.
मार्गशीर्ष	17 नवं.
पौष	17 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

माघ	16 जन.
फाल्गुन	15 फर.
चैत्र	17 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2025 ई.)

प्रोष्ठपदी / ○ पूर्णिमा	7 सितं.
प्रतिपदा	8 सितं.
द्वितीया	9 सितं.
तृतीया	10 सितं.
चतुर्थी	10 सितं.
भरणी श्राद्ध	11 सितं.
पंचमी	11 सितं.
षष्ठी	12 सितं.
सप्तमी	13 सितं.
अष्टमी	14 सितं.
■ नवमी	15 सितं.
दशमी	16 सितं.
एकादशी	17 सितं.
⬠ द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	18 सितं.
त्रयोदशी	19 सितं.
मघा श्राद्ध	19 सितं.
▲चतुर्दशी	20 सितं.
सर्वपितृ अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	21 सितं.
नाना / नानी का श्राद्ध	22 सितं.

○ "जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"—यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमावस्या को करने की लोक-परम्परा है।

■ सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

⬠ संन्यासियों का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

▲ शस्त्र-विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

जैन व्रत-पर्व

(सन् 2025 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	27 जन.
मर्यादा महोत्सव	4 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	6 अप्रै.
श्रीमहावीर जयन्ती	10 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	7 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	1 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	10 जुला.
चातुर्मास्य व्रत-नियम आदि प्रारम्भ	10 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण-दिवस	20 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	21 अग.
संवत्सरी महापर्व	28 अग.
श्रीकालू निर्वाण-दिवस	29 अग.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	1 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण-दिवस	5 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण-दिवस	21 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी-जन्म	23 अक्तू.
ज्ञानपंचमी	26 अक्तू.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	5 नवं.
श्रीमहावीर-दीक्षादिवस	14 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी-दीक्षादिवस	9 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	14 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

श्रीमेरुत्रयोदशी	16 जन.
मर्यादा महोत्सव	25 जन.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2025 ई.)

स्वामी विवेकानन्द	21 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	21 जन.
नेता जी श्रीसुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	31 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	12 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	23 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	1 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	14 मार्च
डॉ. अम्बेडकर जयन्ती	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	24 अप्रै.
श्रीछत्रपति शिवाजी	29 अप्रै.
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	2 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा.)	3 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	29 मई
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	31 जुला.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराजा अग्रसेन जी	22 सितं.
श्रीमाध्वाचार्य	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	3 नवं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.

(सन् 2026 ई.)

श्रीरामानन्दाचार्य	9 जन.
स्वामी विवेकानन्द	9 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	20 जन.
नेता जी श्रीसुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	1 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	12 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	19 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	3 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2025-26 ई.)

जन्म श्री हजरत अली	14 जन.
शब-ए-मिराज	28 जन.
शब-ए-बरात	15 फर.
रमज़ान का पहला दिन	2 मार्च
शब-ए-कद्र	28 मार्च
शहादत-ए-हज़रत अली	22 मार्च
जमतुल विदा	28 मार्च
ईद-उल-फित्र	31 मार्च
इदुलज्जुहा	7 जून
मुहर्रम (ताजिया)	6 जुला.
चेहल्म	14 अग.
आखिरी चहार शम्बा	20 अग.
शहादत-ए-इमाम हसन	23 अग.
ईद-ए-मिलाद	5 सितं.
ईद-ए-मौलाद	10 सितं.
फातिहा यज़दहुम	4 अक्तू.
जन्मदिन श्री हजरत अली	3 जन.
शब-ए-मिराज	17 जन.
शब-ए-बरात	4 फर.
रमजान का पहला दिन	20 फर.
शहादत-ए-हजरत अली	12 मार्च
शब ए कद्र	18 मार्च

सूचना—सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे-पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है। इसकी सूचना टी.वी. आदि द्वारा प्रसारित कर दी जाती है।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2025 ई.)

इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	13 अप्रै.
गुड फ्राई डे	18 अप्रै.
ईस्टर सण्डे	20 अप्रै.
क्रिसमस डे	25 दिसं.

(सन् 2026 ई.)

इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें-

'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त, व्रतपर्व, तेज़ी-मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि-किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है– यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं–

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि-नक्षत्र/नक्षत्र-चरणप्रवेश, वक्र-मार्गिता, उदयास्त, लोप-दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व-निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त-गणित-फलित- सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ निम्नांकित पते पर सम्पर्क करें।

(ii) राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिक दलों के चुनावचक्र में जय-पराजय, राजनेताओं का उत्थान-पतन; पाक्षिक-मासिक-वार्षिक फलादेश, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवीय एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति-विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवम् वायदा-हाज़र बाज़ार के चांस, सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स; चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज; तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचांग में प्रकाशित वार्षिक-मासिक-पाक्षिक-दैनिक तेज़ी-मन्दी-सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए–

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवम् ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN : 140103,
Phone : 0160-2641277, 09988407010,

सिक्ख पर्व (सं. 2082 वि.) (30 मार्च, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा [विक्रमी कैलेण्डर (तिथियों)] के अनुसार						नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (ग्रेगोरियन तारीखों के अनुसार स्थिर)		
	प्रकाश दिवस		गुरयाई मिली		जोतीजोत समाए		प्रकाश दिवस	गुरयाई मिली	जोतीजोत समाए
	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तारीख	तारीख	तारीख
श्री गुरु नानकदेव जी	कार्त्तिक शु. 15	5 नवं.	------	----	आश्वि. कृ.10	16 सितं.	5 नवं.	---	22 सितं.
श्री गुरु अंगददेव जी	वैशाख शु. 1	28 अप्रै.	आश्वि. कृ. 5	12 सितं.	चैत्र शु. 4	1 अप्रै.	18 अप्रैल	18 सितं.	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	वैशाख शु. 14	11 मई	चैत्र शु. 1	30 मार्च	भाद्र. शु. 15	7 सितं.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितं.
श्री गुरु रामदास जी	कार्त्तिक कृ. 2	8 अक्तू.	भाद्र. शु. 13	5 सितं.	भाद्र. शु. 3	26 अग.	9 अक्तू.	16 सितं.	16 सितं.
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	वैशाख कृ. 7	20 अप्रै.	भाद्र. शु. 2	25 अग.	ज्ये. शु. 4	30 मई	2 मई	16 सितं.	16 जून
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	आषाढ़ कृ. 1	12 जून	ज्ये. कृ. 8	20 मई	चैत्र शु. 5	2 अप्रै.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	माघ शु. 13	31 जन. '26	चैत्र कृ. 13	17 मार्च '26	कार्त्ति. कृ. 9	15 अक्तू.	31 जन.	14 मार्च	20 अक्तू.
श्री गुरु हरकिशन जी	श्राव. कृ. 9	19 जुला.	कार्त्ति. कृ. 9	15 अक्तू.	चैत्र शु. 14	11 अप्रै.	23 जुलाई	20 अक्तू.	16 अप्रैल
श्री गुरु तेगबहादुर जी	वैशाख कृ. 5	18 अप्रैल	चैत्र शु. 14	11 अप्रै.	मार्ग. शु. 5	25 नवं.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवं.
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	पौष शु. 7	27 दिसं.	मार्ग. शु. 3	23 नवं.	कार्त्ति. शु. 5	26 अक्तू.	5 जन.	24 नवं.	21 अक्तू.

-: ध्यान दें :-

'नानकशाही कैलेण्डर', जिसके अनुसार सभी सिक्खपर्वों का निर्णय अंग्रेजी तारीखों के आधार पर किया गया है, सन् 2003 ई. में लागू किया गया। चूंकि, सभी सिक्खपर्व विगत शताब्दियों से पुरातन परम्परा (विक्रमी कैलेण्डर/तिथियों) के अनुसार ही मनाये जाते रहे हैं, अतः कई सिक्ख सम्प्रदाय एवं पटना, नांदेड़ आदि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटियां भी सिक्खपर्वों को 'पुरातन परम्परा वाले विक्रमी कैलेण्डर' के अनुसार ही मनाने के पक्ष में हैं। इस प्रकार इस विषय में उत्पन्न मतभेद को शान्त करने के लिए सिक्ख-धर्म की सर्वोच्च संस्था S.G.P.C. (शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्ध कमेटी) अमृतसर द्वारा पर्वों के निर्णय के लिए अब पुनः विक्रमी कैलेण्डर को ही मान्यता दी गयी है—यह ध्यान देने योग्य है।

पुरातन परम्परा के अनुसार इस वर्ष (सं. 2082 वि.) की संक्रान्तियां—वैशा. 13-4-25, ज्ये.14-5-25, आषाढ़ 15-6-25, श्रावण 16-7-25, भाद्. 16-8-25, आश्वि. 16-9-25, कार्त्तिक 17-10-25, मार्ग. 16-11-25, पौष 15-12-25, माघ 14-1-26, फाल्गुन 12-2-26, चैत्र 14-3-26,

नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार—चैत्र की संक्रान्ति हमेशा 14 मार्च को होती है, चैत्र से श्रावण तक के पांच महीने हमेशा 31-31 दिनों के और शेष 6 महीने हमेशा 30-30 दिनों के होते हैं। लीप इयर में फाल्गुन मास के 32 दिन माने गये हैं।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

(ध्यान दें—अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गजट की सूची से अवश्य मिला लें।)

(सन् 2025 ई.)		इदुल-फित्र	31 मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	क्रिसमस डे	25 दिसं.
जन्मदिन श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	6 जन.	श्रीरामनवमी	6 अप्रै.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	16 अग.	जन्मदिन श्री गुरुगोबिन्द सिंह जी	27 दिसं.
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	10 अप्रै.	ओणम (केरल)	5 सितं.	(सन् 2026 ई.)	
जन्म श्री हजरत अली	14 जन.	वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	ईद-ए-मिलाद	5 सितं.	जन्म श्रीहजरत अली	3 जन.
पोंगल	15 जन.	विशु (केरल)	14 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	30 सितं.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	15 जन.
भारतगणतन्त्र दिवस	26 जन.	गुड फ्राई डे	18 अप्रै.	जन्मदिन श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.	पोंगल	15 जन.
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	12 फर.	श्रीबुद्ध जयन्ती	12 मई	दशहरा	2 अक्तू.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	26 फर.	इदुलज्जुहा	7 जून	श्रीवाल्मीकि जयन्ती	7 अक्तू.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	1 फर.
होला, वसन्तोत्सव	15 मार्च	रथयात्रा (पुरी)	27 जून	दीपावली	21 अक्तू.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	15 फर.
जमतुल विदा	28 मार्च	मुहर्रम (ताजिया)	6 जुला.	भाईदूज	23 अक्तू.	होला, वसन्तोत्सव	4 मार्च
गुड़ी पड़वा	30 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	9 अग.	श्री गुरुनानक जयन्ती	5 नवं.		
		श्रीगणेश चतुर्थी (संकष्ट)	12 अग.	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी	25 नवं.		

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2025 ई.)	तारीख
जनवरी 2025 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2025 ई.	
वसन्त पंचमी	2 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	10 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
मेला पीर भीखनशाह (घड़ाम, पटियाला) प्रा.	11 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	26 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	26 फर.
मार्च 2025 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	15 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतरसिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
श्री बीरमदास, बधौछी (पटियाला)	18 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	19 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	20 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	28 मार्च
अप्रैल 2025 ई.	
माईसर खाना (पंजाब)	3 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल–गुरदासपुर)	5 अप्रै.
मेला माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	10 अप्रै.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	11 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	11 अप्रै.
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रै.
ज.दि. भाई दित्तसिंह ज्ञानी	21 अप्रै.
मेला पिंजौर (हरि.)	27 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
मई 2025 ई.	
समागम (8दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण (हि.प्र.) प्रा.	6 मई
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	13 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज. दि. सं. बा. तेजासिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
जून 2025 ई.	
पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊंराम जी (सप्तसरोवर) भूपतवाला (हरिद्वार)	1 जून
क्षीर भवानी (जम्मू-कश्मीर)	3 जून
श्रीगंगा दशहरा	5 जून
सपोर यात्रा–धारलदा (उधमपुर)	5 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	6 जून
पीपलू, ऊना (हि.प्र.)	6 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	11 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	15 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	15 जून
यादगारी दिवस बीबी शरणकौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	29 जून
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्तसरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	30 जून
जुलाई 2025 ई.	
ब. सं. बा. तेजासिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/बड़ू साहिब (हि.प्र.) प्रा.	1 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–कश्मीर)	4 जुला.
ब.बा. सन्तोखसिंह जी/भा. दर्शनसिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर चीमा प्रा.	9 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	10 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	10 जुला.
धाटा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	16 जुला.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	29 जुला.
गाड़ा गोशयन मेला (मण्डी, हि.प्र.) प्रा.	30 जुला.
अगस्त 2025 ई.	
श्रीनयना देवी (हि.प्र.)	1 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)	1 अग.
ब. सं. बा. निधानसिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज.दि.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारासिंह जी, गु. श्री अमरगढ़साहिब, चमकौरसाहिब प्रा.	5 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (कश्मीर)	9 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	16 अग.
ब. सं. बा. हरचन्दसिंह लौंगोवाल	20 अग.
कैलाशयात्रा (कश्मीर) प्रा.	21 अग.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2025 ई.)	तारीख
ब.सं.बा. ईशरसिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	25 अग.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रा.	27 अग.
मेला पट्ट्ट (कश्मीर) प्रारम्भ	28 अग.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	28 अग.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	29 अग.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	31 अग.
सितम्बर 2025 ई.	
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	4 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	6 सितं.
छपार (पं.)	6 सितं.
ब. भा. दित्त सिंह ज्ञानी, नन्दपुर कलौड़ (पं.)	6 सितं.
श्रीगोईदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	7 सितं.
श्री आशापति यात्रा (कश्मीर) प्रा.	20 सितं.
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	30 सितं.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	30 सितं.
ज्वालामुखी (हरचोवाल, गुरदासपुर) पं.	30 सितं.
अक्तूबर 2025 ई.	
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	2 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	6 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	6 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	6 अक्तू.
पर्वत मेला (मण्डी-हि.प्र.)	18 अक्तू.
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	16 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	21 अक्तू.
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौरसाहिब	24 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2025 ई.)	तारीख
नवम्बर 2025 ई.	
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	1 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	1 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	1 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	3 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	4 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर-पं.)	5 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	5 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	5 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	19 नवं.
ब. सं. बा. रामसिंह / बूटासिंह, नानकसर चीमा	30 नवं.
दिसम्बर 2025 ई.	
ब. सं. बा. विसाखासिंह, दुदेहर साहिब (तरनतारन)	5 दिसं.
ब. बीबी तेजकौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.
ज.दि.सं.बा. किशनसिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा-हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं.
ब.सं.बा. किशनसिंह जी, गु. कर्मसरसाहिब, राड़ासाहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2026 ई.)	तारीख
जनवरी 2026 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतरसिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
वसन्तपंचमी	23 जन.
ब. सं. बा. बख्शीशसिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतरसिंह जी, (मस्तुआणां) (पं.) प्रा.	30 जन.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा-कुराली (पं.)	31 जन.
फरवरी 2026 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीपसिंह जी शहीद, सोलखियां (रोपड़-पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	15 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी-गढ़वाल)	15 फर.
मार्च 2026 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	4 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	8 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	10 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	12 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतरसिंह जी (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	17 मार्च

चंद्रोदय श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चंद्रोदय (सं. 2082 वि.), (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	चन्द्रोदय-श्रीगणेश चतुर्थी													चन्द्रोदय श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी स्मार्त	चन्द्रोदय श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी वैष्णव
	16 अप्रैल 2025 ई.	16 मई 2025 ई.	14 जून 2025 ई.	14 जुलाई 2025 ई.	12 अगस्त 2025 ई.	10 सितं. 2025 ई.	10 अक्तू. 2025 ई.	08 नवं. 2025 ई.	07 दिसं. 2025 ई.	06 जन. 2026 ई.	05 फर. 2026 ई.	06 मार्च 2026 ई.		15 अगस्त 2025 ई.	16 अगस्त 2025 ई.
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.		घं. मि.	घं. मि.
अजमेर	22 : 05	22 : 44	22 : 13	22 : 04	21 : 11	20 : 20	20 : 30	20 : 17	20 : 12	21 : 08	21 : 45	21 : 22		23 : 02	23 : 48
अमृतसर	22 : 19	22 : 58	22 : 25	22 : 07	21 : 09	20 : 12	20 : 15	20 : 00	19 : 57	21 : 01	21 : 46	21 : 28		22 : 50	23 : 34
अलवर	22 : 00	22 : 39	22 : 08	21 : 57	21 : 03	20 : 10	20 : 19	20 : 05	20 : 01	20 : 59	21 : 37	21 : 15		22 : 51	23 : 38
अलीगढ़	21 : 58	22 : 36	22 : 06	21 : 58	21 : 05	20 : 15	20 : 25	20 : 12	20 : 07	22 : 03	21 : 39	21 : 16		22 : 57	23 : 44
अहमदाबाद	22 : 05	22 : 43	22 : 14	22 : 10	21 : 20	20 : 32	20 : 47	20 : 35	20 : 29	21 : 21	21 : 53	21 : 27		23 : 17	24 : 05
अयोध्या	21 : 35	22 : 13	21 : 43	21 : 33	20 : 40	19 : 48	19 : 58	19 : 44	19 : 40	20 : 36	21 : 14	20 : 51		22 : 30	23 : 16
आगरा	21 : 53	22 : 32	22 : 01	21 : 51	20 : 57	20 : 05	20 : 14	20 : 00	19 : 56	20 : 53	21 : 31	21 : 09		22 : 46	23 : 33
इन्दौर	21 : 51	22 : 29	22 : 00	21 : 56	21 : 07	20 : 20	20 : 35	20 : 22	20 : 16	21 : 08	21 : 39	21 : 13		23 : 04	23 : 53
इलाहाबाद	21 : 33	22 : 11	21 : 42	21 : 34	20 : 42	19 : 52	20 : 03	19 : 50	19 : 45	20 : 39	21 : 15	20 : 51		22 : 34	23 : 21
उज्जैन	21 : 52	22 : 30	22 : 02	21 : 52	21 : 07	20 : 20	20 : 34	20 : 22	20 : 16	21 : 08	21 : 40	21 : 14		23 : 04	23 : 52
उदयपुर (राज.)	22 : 05	22 : 44	22 : 13	22 : 02	21 : 07	20 : 15	20 : 23	20 : 09	20 : 05	21 : 03	21 : 42	21 : 20		22 : 56	23 : 42
ऊना	22 : 13	22 : 52	22 : 19	22 : 02	21 : 03	20 : 07	20 : 09	19 : 54	19 : 52	20 : 55	21 : 40	21 : 22		22 : 44	23 : 28
कपूरथला	22 : 16	22 : 55	22 : 22	22 : 05	21 : 07	20 : 11	20 : 13	19 : 58	19 : 56	20 : 59	21 : 44	21 : 25		22 : 48	23 : 32
करनाल	22 : 04	22 : 43	22 : 11	21 : 57	21 : 00	20 : 06	20 : 11	19 : 57	19 : 54	20 : 55	21 : 36	21 : 16		22 : 45	23 : 30
कांगड़ा	22 : 14	22 : 54	22 : 20	22 : 02	21 : 03	20 : 06	20 : 07	19 : 52	19 : 50	20 : 24	21 : 10	20 : 52		22 : 43	23 : 27
कानपुर	21 : 42	22 : 20	21 : 50	21 : 41	20 : 47	19 : 56	20 : 06	19 : 53	19 : 48	20 : 44	21 : 21	20 : 58		22 : 38	23 : 25
कुरुक्षेत्र	22 : 06	22 : 45	22 : 13	21 : 58	21 : 01	20 : 07	20 : 11	19 : 57	19 : 54	20 : 55	21 : 37	21 : 17		22 : 45	23 : 30
कुल्लू	22 : 11	22 : 50	22 : 17	21 : 59	21 : 00	20 : 03	20 : 05	19 : 50	19 : 47	20 : 51	21 : 37	21 : 19		22 : 40	23 : 24
कोटा	21 : 57	22 : 35	22 : 06	21 : 58	21 : 06	20 : 17	20 : 28	20 : 15	20 : 10	21 : 05	21 : 40	21 : 16		22 : 59	23 : 47
कोलकाता	20 : 28	21 : 36	21 : 08	21 : 05	20 : 15	19 : 28	19 : 43	19 : 30	19 : 24	20 : 16	20 : 47	20 : 21		22 : 13	23 : 01
गुरदासपुर	22 : 18	22 : 57	22 : 24	22 : 06	21 : 06	20 : 10	20 : 11	19 : 56	19 : 54	20 : 58	21 : 44	21 : 26		22 : 47	23 : 30
ग्वालियर	21 : 50	22 : 29	21 : 59	21 : 50	20 : 57	20 : 06	20 : 16	20 : 03	19 : 58	20 : 54	21 : 30	21 : 07		22 : 48	23 : 35
चण्डीगढ़	22 : 08	22 : 47	22 : 14	21 : 59	21 : 01	20 : 05	20 : 09	19 : 54	19 : 52	20 : 54	21 : 37	21 : 18		22 : 44	23 : 28
चम्बा	22 : 17	22 : 56	22 : 22	22 : 03	21 : 04	20 : 06	20 : 07	19 : 52	19 : 49	20 : 55	21 : 41	21 : 24		22 : 43	23 : 26
चूरु	22 : 09	22 : 48	22 : 16	22 : 04	21 : 09	20 : 16	20 : 24	20 : 10	20 : 06	21 : 05	21 : 44	21 : 23		22 : 57	23 : 42
चेन्नई	21 :10	21 : 46	21 : 23	21 : 31	20 : 50	20 : 12	20 : 38	20 : 28	20 : 19	20 : 59	21 : 18	20 : 45		23 : 03	23 : 55
जम्मू	22 : 22	23 : 02	22 : 28	22 : 09	21 : 09	20 : 11	20 : 11	19 : 56	19 : 54	21 : 00	21 : 46	21 : 29		22 : 47	23 : 31
जयपुर	22 : 02	22 : 40	22 : 10	22 : 00	21 : 06	20 : 14	20 : 24	20 : 10	20 : 06	21 : 03	21 : 40	21 : 18		22 : 56	23 : 42
जालन्धर	22 : 16	22 : 56	22 : 22	22 : 06	21 : 07	20 : 11	20 : 14	19 : 59	19 : 57	21 : 00	21 : 44	21 : 26		22 : 49	23 : 33
जैसलमेर	22 : 22	23 : 00	22 : 30	22 : 20	21 : 26	20 : 35	20 : 44	20 : 31	20 : 27	21 : 23	22 : 01	21 : 38		23 : 16	24 : 02
जोधपुर	22 : 12	22 : 50	22 : 20	22 : 11	21 : 17	20 : 27	20 : 37	20 : 24	20 : 19	21 : 15	21 : 52	21 : 29		23 : 09	23 : 55
दरभंगा	21 : 18	21 : 56	21 : 26	21 : 18	20 : 25	19 : 34	19 : 44	19 : 30	19 : 26	20 : 22	20 : 58	20 : 35		22 : 16	23 : 03
दिल्ली	22 : 01	22 : 40	22 : 08	21 : 56	21 : 00	20 : 07	20 : 14	20 : 00	19 : 56	20 : 55	21 : 35	21 : 14		22 : 47	23 : 32

चंद्रोदय श्रीगणेश-चतुर्थी एवं श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चंद्रोदय (सं. 2082 वि.), (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	चन्द्रोदय-श्रीगुणेशचतुर्थी												चन्द्रोदय श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी	
													स्मार्त्त	वैष्णव
	16 अप्रैल 2025 ई.	16 मई 2025 ई.	14 जून 2025 ई.	14 जुलाई 2025 ई.	12 अगस्त 2025 ई.	10 सित. 2025 ई.	10 अक्तू. 2025 ई.	08 नवं. 2025 ई.	07 दिसं. 2025 ई.	06 जन. 2026 ई.	05 फर. 2026 ई.	06 मार्च 2026 ई.	15 अगस्त 2025 ई.	16 अगस्त 2025 ई.
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
देहरादून	22 : 02	22 : 41	22 : 09	21 : 53	20 : 56	20 : 01	20 : 05	19 : 51	19 : 48	20 : 49	21 : 32	21 : 13	22:40	23:24
नाहन	22 : 06	22 : 45	22 : 12	21 : 57	20 : 59	20 : 04	20 : 08	19 : 53	19 : 50	20 : 52	21 : 35	21 : 16	22:42	23:27
पटना	21 : 19	21 : 58	21 : 28	21 : 20	20 : 28	19 : 38	19 : 48	19 : 35	19 : 30	20 : 25	21 : 01	20 : 37	22:20	23:07
पटियाला	22 : 09	22 : 48	22 : 15	22 : 00	21 : 03	20 : 08	20 : 12	19 : 58	19 : 55	20 : 56	21 : 39	21 : 20	22:47	23:31
पठानकोट	22 : 18	22 : 57	22 : 23	22 : 05	21 : 05	20 : 08	20 : 09	19 : 54	19 : 52	20 : 57	21 : 43	21 : 25	22:45	23:29
पुणे	21 : 49	22 : 26	22 : 00	22 : 01	21 : 15	20 : 32	20 : 53	20 : 42	20 : 34	21 : 20	21 : 46	21 : 17	23:20	24:10
फगवाड़ा	22 : 14	22 : 53	22 : 20	22 : 04	21 : 05	20 : 09	20 : 12	19 : 57	19 : 55	20 : 58	21 : 42	21 : 24	22:47	23:31
फिरोज़पुर	22 : 18	22 : 57	22 : 24	22 : 08	21 : 10	20 : 14	20 : 18	20 : 03	20 : 00	21 : 03	21 : 47	21 : 28	22:52	23:37
बंगलौर	21 : 21	21 : 57	21 : 34	21 : 42	21 : 01	20 : 23	20 : 50	20 : 40	20 : 31	21 : 10	21 : 29	20 : 56	23:14	24:06
बरेली	21 : 51	22 : 29	21 : 38	21 : 46	20 : 51	19 : 17	20 : 05	19 : 51	19 : 47	20 : 46	21 : 26	21 : 05	22:38	23:24
बिलासपुर (हि.प्र.)	22 : 10	22 : 50	22 : 16	22 : 00	21 : 01	20 : 05	20 : 08	19 : 53	19 : 50	20 : 54	21 : 38	21 : 20	22:43	23:27
बीकानेर	22 : 15	22 : 54	22 : 22	22 : 11	21 : 16	20 : 23	20 : 31	20 : 18	20 : 14	21 : 12	21 : 51	21 : 29	23:04	23:50
बूंदी	21 : 58	22 : 37	22 : 07	21 : 59	21 : 07	20 : 38	20 : 28	20 : 15	20 : 11	21 : 05	21 : 41	21 : 17	23:00	23:47
भटिंडा	22 : 14	22 : 54	22 : 21	22 : 06	21 : 09	20 : 14	20 : 19	20 : 04	20 : 01	21 : 03	21 : 45	21 : 56	22:53	23:38
भरतपुर	21 : 56	22 : 34	22 : 04	21 : 53	20 : 59	20 : 07	20 : 16	20 : 03	19 : 58	20 : 56	21 : 34	21 : 11	22:49	23:35
भोपाल	21 : 45	22 : 23	21 : 54	21 : 50	20 : 59	20 : 12	20 : 26	20 : 14	20 : 08	21 : 00	21 : 32	21 : 06	22:56	23:44
मण्डी (हि.प्र.)	22 : 11	22 : 50	22 : 17	21 : 59	21 : 00	20 : 04	20 : 06	19 : 51	19 : 48	20 : 52	21 : 37	21 : 19	22:41	23:25
मथुरा	21 : 55	22 : 34	22 : 03	21 : 53	20 : 58	20 : 06	20 : 15	20 : 01	19 : 57	20 : 55	21 : 33	21 : 11	22:47	23:33
मुंबई	21 : 54	22 : 31	22 : 05	22 : 06	21 : 20	20 : 36	20 : 56	20 : 45	20 : 37	21 : 24	21 : 50	21 : 21	23:23	24:13
रोपड़	22 : 10	22 : 49	22 : 16	22 : 00	21 : 02	20 : 07	20 : 10	19 : 55	19 : 52	20 : 56	21 : 39	21 : 20	22:45	23:29
रोहतक	22 : 04	22 : 43	22 : 12	21 : 59	21 : 03	20 : 09	20 : 16	20 : 02	19 : 58	20 : 58	21 : 38	21 : 18	22:49	23:35
लखनऊ	21 : 40	22 : 19	21 : 48	21 : 39	20 : 45	19 : 53	20 : 03	19 : 49	19 : 45	20 : 41	21 : 19	20 : 57	22:35	23:21
लुधियाना	22 : 13	22 : 52	22 : 19	22 : 03	21 : 05	20 : 09	20 : 13	19 : 58	19 : 55	20 : 58	21 : 41	21 : 23	22:47	23:32
वाराणसी	21 : 28	22 : 06	21 : 37	21 : 29	20 : 37	19 : 47	19 : 58	19 : 45	19 : 40	20 : 35	21 : 10	20 : 46	22:30	23:17
शिमला	22 : 08	22 : 47	22 : 14	21 : 58	20 : 59	20 : 04	20 : 07	19 : 52	19 : 49	20 : 52	21 : 36	21 : 17	22:42	23:26
श्रीनगर (क.)	22 : 27	23 : 07	22 : 31	22 : 10	21 : 08	20 : 09	20 : 07	19 : 52	19 : 50	20 : 58	21 : 47	21 : 31	22:44	23:27
संगरूर	22 : 11	22 : 50	22 : 17	22 : 02	21 : 05	20 : 10	20 : 15	20 : 00	19 : 57	20 : 59	21 : 41	21 : 22	22:49	23:34
सहारनपुर	22 : 04	22 : 43	22 : 10	21 : 56	20 : 59	20 : 04	20 : 09	19 : 55	19 : 52	20 : 53	21 : 35	21 : 15	22:43	23:28
सीकर	22 : 06	22 : 45	22 : 14	22 : 03	21 : 08	20 : 16	20 : 25	20 : 11	20 : 07	21 : 05	21 : 43	21 : 21	22:57	23:43
हरिद्वार	22 : 00	22 : 39	22 : 07	21 : 53	20 : 56	20 : 01	20 : 06	19 : 51	19 : 48	20 : 49	21 : 31	21 : 12	22:40	23:25
हिसार	22 : 08	22 : 47	22 : 15	22 : 02	21 : 06	20 : 12	20 : 18	20 : 04	20 : 01	21 : 01	21 : 41	21 : 21	22:52	23:37
होशियारपुर	22 : 14	22 : 53	22 : 20	22 : 03	21 : 05	20 : 08	20 : 11	19 : 56	19 : 54	20 : 57	21 : 41	21 : 23	22:46	23:30

संदिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं. 2082 वि.)

(संवत्सर 2082 वि. में संदिग्ध कुछेक व्रत-पर्वों की तिथियों का शास्त्रसम्मत निर्णय)

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

1. श्रीनृसिंह जयन्ती *(वैशाख शुक्ल चतुर्दशी)

सूर्यास्तकालव्यापिनी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी के दिन '**नृसिंह जयन्ती**' मनाई जाती है-

''**वैशाखशुक्ल-चतुर्दशी नृसिंह जयन्ती। सा सूर्यास्तमयकालव्यापिनी ग्राह्या**''।।

-(धर्मसिन्धुः)

''**नृसिंहपुराण**'' के अनुसार यह पर्व प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशी में मनाया जाना चाहिए। लेकिन '**श्रीमद्भागवत पुराण**' के अनुसार श्रीनृसिंह भगवान् का आविर्भाव ठीक सूर्यास्त के समय हुआ था, अतः **धर्मसिन्धुकार का मत ही यहां संगत है।**

दो दिन चतुर्दशी अस्तकाल-व्यापिनी अथवा अव्यापिनी हो तो यह जयन्ती दूसरे दिन होगी- ''**चतुर्दशी शुक्ला परा।**'' **-(धर्मसिन्धुः)**

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) वैशाख शुक्ल चतुर्दशी 10 और 11 मई, 2025 ई. को दोनों ही दिन सूर्यास्तकाल में व्याप्त है। **इस स्थिति में उपरोक्त नियम को ध्यान में रखते हुए यह 'नृसिंह जयन्ती पर्व' हमने दूसरे दिन 11 मई, 2025 ई. को लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।**

** '**जयन्ती**' शब्द का अर्थ शास्त्रकारों ने किसी '**महापुरुष**' व '**देवपुरुष**' आदि की जन्मतिथि माना है- यह हमारे धर्मग्रंथों व 'शब्द-व्याख्या-बोधक ग्रन्थों से स्पष्ट है। जयंती केवल मृत व्यक्ति की होती है, जीवित की नहीं- ऐसा तात्पर्य किसी भी ग्रंथ/ग्रंथकार द्वारा कहीं भी लक्षित नहीं है। होगा भी कैसे ? क्योंकि जयंती का अर्थ ही जन्मोत्सव, प्राकट्योत्सव, जन्मदिन, आविर्भावदिन आदि होता है, चाहे वह मृत की हो या जीवित की। कुछ लोग भ्रांतिवश '**जयंती**' शब्द बारे अनर्थक बातें करने लगे हैं। वे कहते हैं कि- श्रीहनुमान् और श्रीपरशुराम के साथ जयंती शब्द न लिखा जाए, क्योंकि वे तो दीर्घजीवी हैं, अतः उनकी जयंती में '**जन्मोत्सव**' का प्रयोग किया जाए। अरे! स्पष्ट कर दूं कि- जयंती लिखें या जन्मोत्सव- अर्थ दोनों का उत्पत्ति से है, प्राकट्य से है। मृत या जीवित का भाव ही निरर्थक है। ''**जयं पुण्यं च कुरुते जयन्तीति तां विदुः**''- '**स्कंदपुराण**' का यह वचन जय और पुण्यदायी तिथि जयंती की उद्घोषणा करता है। मृत/जीवित का तो यहां प्रश्न ही नहीं है।*

2. शनिप्रदोष व्रत (ज्येष्ठ कृष्ण)

प्रत्येक पक्ष की प्रदोषकालव्यापिनी त्रयोदशी तिथि में यह व्रत किया जाता है। यह नक्तव्रत है। स्पष्ट है- इस व्रत का तिथिनिर्णय नक्तव्रत के समान ही होगा। दो दिन प्रदोष में त्रयोदशी की आंशिक या सम्पूर्ण व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे दिन होगा। इस बारे '**कालमाधवकार**' का यह वचन देखिए-

''**प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।**
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।''

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी 24 मई, 2025 ई. को 19 घं. 20 मि. से शुरु होकर 25 मई, 2025 को 15 घं. 51 मि. तक विद्यमान रहेगी। इन दिनों चण्डीगढ़ एवम् इसके पार्श्ववर्ती स्थलों पर प्रदोषकाल लगभग 19 घं. 12 मि. पर प्रारम्भ होगा। क्योंकि 25 मई, 2025 ई. को यह त्रयोदशी तिथि 15 घं. 51 मि. पर (प्रदोषारम्भ से पहले ही, दिन में ही) समाप्त हो रही है। **अतः स्पष्ट है- यह 'शनिप्रदोष व्रत' 24 मई, 2025 ई. को ही होगा, क्योंकि इस दिन त्रयोदशी तिथि 19 घं. 20 मि. बाद पूरे प्रदोष को व्याप्त कर रही है।**

3. निर्जला एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (ज्येष्ठ शुक्ल)

द्वादशी की वृद्धि होने पर स्मार्त्त द्वादशीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव षष्टिघट्यात्मक द्वादशी के दिन यह व्रत करते हैं। ध्यान रहे- दशमी द्वारा अरुणोदय-वेला में वेध और अवेध- दोनों स्थितियों में भी यही नियम समानरुपेण लागू होता है।

उपरोक्त इस नियम के अनुसार ज्येष्ठ शुक्लपक्ष में घटित होने वाला 'निर्जला एकादशी व्रत' स्मार्त्त लोग 6 जून, 2025 ई. को (द्वादशीयुता एकादशी के दिन) और वैष्णव लोग 7 जून, 2025 ई. को (षष्टिघट्यात्मक एकादशी के दिन) करेंगे- यह स्पष्ट है।

4. योगिनी एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (आषाढ़ कृष्ण)

यदि एकादशी का क्षय हुआ हो तो स्मार्त्त दशमीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन एकादशी व्रत करते हैं।

उपरोक्त इस नियम अनुसार इस वर्ष सं. 2082 वि. में स्मार्त्तों का 'योगिनी एकादशी व्रत' 21 जून, 2025 ई. को (दशमीयुता एकादशी के दिन) और वैष्णवों का यह 'योगिनी एकादशी व्रत' 22 जून, 2025 ई. को (त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन) होगा।

5. रक्षाबन्धन (राखी) (श्रावण पूर्णिमा)

अपराह्णव्यापिनी श्रावण पूर्णिमा में रक्षाबन्धन किया जाता है। भद्रा में यह नहीं होता- **''भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।''**

जब पहले दिन अपराह्ण में भद्रा हो, दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्त्तत्रयव्यापिनी हो और भले ही वह अपराह्ण से पूर्व ही समाप्त हो जाए, तब रक्षाबन्धन दूसरे ही दिन अपराह्ण में करना चाहिए, क्योंकि उस समय वहां साकल्यापादिता पूर्णिमा का अस्तित्व होता ही है। **इस बारे 'पुरुषार्थचिन्तामणिकार' का यह वचन विशेष प्रमाण है– ''यदा द्वितीयापराह्णात् पूर्वं समाप्ता, तदापि'' भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये' ...... इति भद्रायां निषेधादुत्तरैव। तत्र तिथ्यनुरोधेन अपराह्णात्पूर्वम् अनुष्ठाने अपराह्णस्य सर्वथा बाधापत्तेः, अपराह्णे ज्योतिश्शास्त्रप्रसिद्ध– तिथ्यभावेऽपि साकल्य-बोधित-तिथि-सत्त्वात्तत्रैव अनुष्ठानम्।।''**

जब दूसरे दिन पूर्णिमा मुहूर्त्तत्रयव्यापिनी नहीं होगी, तब अपराह्ण में साकल्यापादिता पूर्णिमा भी नहीं होगी- यह स्पष्ट है। **ऐसी स्थिति में पहले ही दिन प्रदोष के उत्तरार्ध में अथवा भद्रा की समाप्ति पर रक्षाबन्धन करना चाहिए– यही शास्त्रादेश है। इस बारे 'पुरुषार्थ चिन्तामणि' का यह वाक्य देखिए-''यदा तूत्तरत्र मुहूर्तद्वय (त्रय) मध्ये किंचित् न्यूना पौर्णमासी तदापराह्णे सर्वथा तदभावात्, प्रदोष-पश्चिमौ-यामौ दिनवत् कर्म चाचरेत्, इति पराशरात् भद्रान्ते प्रदोषयामेऽनुष्ठाम्।''**

ध्यातव्य है कि– पंजाब आदि अनेक प्रान्तों में परम्परया रक्षाबन्धन के लिए अपराह्ण को स्वीकार नहीं किया जाता और मध्याह्न से पूर्व ही (विशेषतया प्रात:काल ही) रक्षाबन्धन कर लिया जाता है। लेकिन यह शास्त्रानुमोदित नहीं है और भद्रा में तो रक्षाबन्धन शास्त्रों द्वारा वर्जित माना गया है।

ग्रहणवेध (सूतक) तथा संक्रान्तिदिन में यह (रक्षाबन्धन) निर्बाध मनाया जाता है।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) श्रावण शुक्ल पूर्णिमा 8 अगस्त, 2025 ई. को 14 घं. 12 मि. से प्रारम्भ होकर 9 अगस्त, 2025 को 13 घं. 25 मि. तक चलेगी। **इन दिनों अपराह्णकाल 13 घं. 47 मि. से 16 घं. 26 मि. (भा. स्टैं. टा.) तक है।** 8 अगस्त, 2025 ई. को अपराह्ण काल 14 घं. 12 मि. बाद भद्रा से दूषित है और 14 घं. 12 मि. से पहले इस दिन (चतुर्दशी में) रक्षाबन्धन कतई नहीं हो सकता। दूसरे दिन यानी 9 अगस्त, 2025 को पूर्णिमा भले ही अपराह्ण से पहले ही समाप्त हो रही है, फिर भी पूर्णिमा इस दिन त्रिमुहूर्त्ताधिककाल- व्यापिनी होने से साकल्यापिदिता पूर्णिमा का अस्तित्त्व अपराह्णकाल में बना हुआ है। **अतः हमने उपरोक्त नियम को ध्यान में रखते हुए 9 अगस्त, 2025 ई. को ही रक्षाबन्धन (राखी) का पर्व निर्देशित किया है, जोकि पूरी तरह शास्त्रशुद्ध है।**

6. श्रीवराह जयन्ती (भाद्र. शुक्ल तृतीया)

अपराह्णव्यापिनी भाद्र. शुक्ल तृतीया के दिन '**वराह जयन्ती**' मनाई जाती है। तृतीया यदि दो दिन अपराह्णव्यापिनी हो अथवा न भी हो तो भी यह जयन्ती दूसरे दिन होगी। इस बारे '**ब्रह्मवैवर्त पुराण**' का यह वाक्य देखिए-

''रम्भाख्यां वर्जयित्वा तु तृतीयां द्विजसत्तम।
अन्येषु सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यते।।''

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) भाद्र. शुक्ल तृतीया 25 अगस्त, 2025 ई. को 12 घं. 35 मि. से शुरु होकर 26 अगस्त, 2025 ई. को 13 घं. 55 मि. तक विद्यमान है। स्पष्ट है- यह तिथि दोनों दिन (पहले दिन पूरे और दूसरे दिन कुछ कम) अपराह्ण को व्याप्त कर रही है। **अतः उपरोक्त नियमानुसार इस वर्ष 'श्रीवराह जयन्ती' हमने दूसरे दिन यानी 26 अगस्त, 2025 ई. को लिखी है, जोकि पूर्णतः शास्त्रसम्मत है।**

7. चतुर्थी का श्राद्ध (आश्विन कृष्ण चतुर्थी)

आश्विन कृष्ण पक्ष **श्राद्धपक्ष** कहलाता है। दिवंगत व्यक्तियों की मृत्युतिथियों के अनुसार इस पक्ष में उनका श्राद्ध किया जाता है। श्राद्ध दो प्रकार का है-

(i) पार्वण श्राद्ध और (ii) एकोद्दिष्ट श्राद्ध।

पार्वण श्राद्ध हमेशा अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि के दिन किया जाता है, जबकि एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्नव्यापिनी तिथि में किया जाए- ऐसा शास्त्रनियम है। पिता, पितामह, परपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह तथा इनकी पत्नियों (माता, पितामही, प्रपितामही, मातामही, प्रमातामही, वृद्धप्रमातामही) का श्राद्ध पार्वणपद्धति से अपराह्णकाल-व्यापिनी तिथि में किया जाता है। उपाध्याय, गुरु, ससुर, चाचा, मामा, भाई, बहनोई, भतीजा, शिष्य, जामाता, भानजा, फूफड़, मासड़, पुत्र, मित्र, विमाता के पिता एवम् इन सभी की पत्नियों का श्राद्ध एकोद्दिष्ट पद्धति से मध्याह्न-व्यापिनी तिथि में किया जाए- ऐसी शास्त्राज्ञा है।

यह भी जान लें कि- अन्तिम श्वास-परित्याग के समय विद्यमान तिथि को ही मृत्युतिथि माना जाए। **ध्यान रहे-** यहां मृत्युतिथि से हमारा अभिप्राय सर्वत्र इसी (अन्तिम श्वासत्याग वाली) तिथि से ही है।

नोट : कुछ लोग अन्तिम संस्कारकालीन तिथि अनुसार श्राद्ध करने के पक्षधर देखे जाते हैं, जोकि सर्वथा अशास्त्रीय है। हां, यदि किसी की मृत्युतिथि ज्ञात न हो सके तो ऐसी स्थिति में संस्कारकालीन तिथि लेना आवश्यक हो जाता है।

जैसा कि ऊपर बतला चुके हैं कि- पार्वणश्राद्ध अपराह्णव्यापिनी मृत्युतिथि में ही किया जाए। यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण में व्याप्त न हो तो श्राद्ध पहले दिन किया जाए। यदि दोनो दिन मृत्युतिथि अपराह्ण के एक देश को असमानता से (एक दिन अधिक और दूसरे दिन कम) व्याप्त करे तो वहां अधिक व्याप्ति वाले दिन श्राद्ध किया जाए।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि 10 सितं., 2025 ई. को 15 घं. 38 मि. बाद शुरु होकर 11 सितं., 2025 ई. को 12 घं. 46 मि. तक चलेगी। क्योंकि 11 सितं., 2025 ई. को यह चतुर्थी तिथि अपराह्ण-प्रारम्भ से पूर्व ही 12 घं. 46 मि. पर (मध्याह्न में ही) समाप्त हो जाती है। अतः स्पष्ट है- इस दिन (11 सितं., 2025 ई. को) यह चतुर्थी का श्राद्ध नहीं हो सकता। **क्योंकि पिछले दिन यानी 10 सितं., 2025 ई. को चतुर्थी तिथि 15 घं. 38 मि. बाद कुछ समय के लिए अपराह्णव्यापिनी प्राप्त हो रही है। अतः हमने 'चतुर्थी का श्राद्ध' इसी दिन यानी 10 सितं., 2025 ई. को लिखा है।**

इन दिनों अपराह्णकाल 13 घं. 33 मि. से 16 घं. 1 मि. भा. स्टैं. टा. तक रहेगा।

8. श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (कार्त्तिक कृष्ण)

यह व्रत प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। यदि चतुर्थी दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो इसे पहले दिन (तृतीयायुता चतुर्थी में) मनाया जाता है- **''चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।''** चतुर्थी यदि दोनों दिन चन्द्रोदयाव्यापिनी न हो तब यह व्रत दूसरे दिन होता है-

''उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्त्वे तृतीया-युतैव ग्राह्या।
दिनद्वये चन्द्रोदय-व्याप्त्यभावे परैव।''

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) कार्त्तिक कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि 9 अक्तू., 2025 ई. 22 घं. 54 मि. बाद प्रारम्भ होकर 10 अक्तू., 2025 ई. को 19 घं. 38 मि. तक विद्यमान रहेगी। 9 अक्तू., 2025 ई. को चण्डीगढ़ एवम् इसके पार्श्ववर्ती स्थलों पर चन्द्रोदय 19 घं. 20 मि. (तृतीयातिथि के समय) होगा और 10 अक्तू. 2025 ई. को चन्द्रोदय 20 घं. 9 मि. पर (पंचमीतिथि के समय) होगा। स्पष्ट है- दोनों ही दिन चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी नहीं है। **इस स्थिति में उपरोक्त नियम को ध्यान में रखते हुए (दोनों दिन चन्द्रोदयाभाव की स्थिति में) हमने यह 'श्रीगणेश चतुर्थी व्रत' दूसरे दिन यानी 10 अक्तू., 2025 ई. को लिखा है, जोकि पूर्णतः शास्त्रशुद्ध है।**

9. दीपावली (कार्त्तिक अमा)

प्रदोष(सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त्त)व्यापिनी कार्त्तिक अमा के दिन '**दीपावली**' मनाने की शास्त्राज्ञा है। इस दिन प्रदोष में लोग '**श्रीमहालक्ष्मी-पूजन**' करते हैं। दोनों दिन प्रदोष में अमा का अभाव होने पर पहले दिन ही लक्ष्मीपूजन करने का **धर्मसिन्धुकार** ने निर्देश किया है। देखिए-

''परदिन एव, दिनद्वये वा प्रदोषव्याप्तौ परा पूर्वत्रैव प्रदोषव्याप्तौ लक्ष्मीपूजादौ पूर्वा, अभ्यङ्गस्नानादौ परा, एवमुभयत्र प्रदोषव्याप्त्यभावेऽपि।''

दोनों दिन प्रदोष में अमा की **व्याप्ति या अव्याप्ति** होने पर दीपावली दूसरे ही दिन मनाई जाए- यही शास्त्रकारों का अन्तिम निर्णय है-

''दिनद्वये सत्त्वाऽसत्त्वे परा।'' – (तिथिनिर्णयः)

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) 20 अक्तू., 2025 ई. को कार्त्तिक अमा 15 घं. 45 मि. बाद शुरु होकर 21 अक्तू., 2025 ई. को 17 घं. 55 मि. तक प्राप्त हो रही है। **यह अमा दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी है। अतः उपरोक्त नियमानुसार हमने 'दीपावली' पर्व दूसरे दिन यानी 21 अक्तू., 2025 ई. को लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।**

10. देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (कार्त्तिक शुक्ल)

द्वादशी का क्षय होने पर स्मार्त्त दशमीयुता एकादशी के दिन '**एकादशीव्रत**' करते हैं एवम् वैष्णव लोग द्वादशी/त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन इस व्रत को करते हैं। इस बारे '**पद्मपुराण**' का वाक्य इसतरह है। देखिए-

''एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः।।''

'**वृद्धवशिष्ठ**' भी इसी मत का पूरी तरह समर्थन करते हैं-

''द्वादशी स्वल्पमल्पापि यदि न स्यात्परेऽहनि।
दशमी-मिश्रिता कार्या महापातकनाशिनी।।''

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) कार्त्तिक शुक्ल पक्ष में द्वादशी का क्षय हुआ है। **अतः उपरोक्त नियमानुसार इस पक्ष में स्मार्त्तों का 'देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत' हमने 1 नवं., 2025 ई. को (दशमीयुता एकादशी के दिन) और वैष्णवों का यह एकादशीव्रत 2 नवं., 2025 ई. को (द्वादशी/त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन) लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रसम्मत है।**

11. वैकुण्ठ चतुर्दशी (कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी)

कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी को '**वैकुण्ठ चतुर्दशी**' मनाई जाती है। इसे मनाने की दो परम्पराएं हैं-

(*i*) कुछ श्रद्धालुजन इस दिन उपवास रखकर रात्रि में जागरण एवम् विष्णु-पूजा करते हैं। ये लोग निशीथव्यापिनी चतुर्दशी स्वीकार करते हैं। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष और निशीथ-दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन प्राप्त हो, उस दिन विष्णुपूजक भक्त '**वैकुण्ठ चतुर्दशी**' मनाते हैं-

''केचित्तु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तद्व्याप्तौ निशीथ-प्रदोषोभय-व्यापिनी ग्राह्येत्याहुः।''

–(धर्मसिंधुः)।

चतुर्दशी यदि दोनों दिन निशीथ का स्पर्श न करे तो भी यह व्रत दूसरे ही दिन होगा।

(*ii*) पहले दिन उपवास करके अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजक भक्त शिवपूजा करके बाद में प्रातःकालवेला में व्रतपारणा करते हैं। इस मत के अनुयायी लोग अरुणोदयत्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो, उस दिन उपवास करते हैं अर्थात् वे उसी दिन '**वैकुण्ठ चतुर्दशी**' मनाते हैं। चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदयत्यापिनी हो तो पहले दिन उपवास और दूसरे दिन अरुणोदय में पूजा करनी चाहिए। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय का स्पर्श ही न करे तो चतुर्दशी तिथि वाले दिन अहोरात्र में अरुणोदय के समय पूजा करें और पूजा से पहले इसी अहोरात्र में उपवास करना चाहिए। इस बारे '**धर्मसिंधु**' का यह वचन देखिए-

''पूर्वेद्युरुपवासं कृत्वा अरुणोदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यां शिवं सम्पूज्य, प्रातः पारणं कार्यम्। तथा च- चतुर्दशीयुक्तारुणोदयवति अहोरात्रे उपवासः फलितः। उभयत्रारुणदयव्याप्तौ परत्रारुणोदये पूजा पूर्वत्र उपवासः। उभयत्राव्याप्तौ चतुर्दशीयुक्ताहोरात्रे एव अरुणोदये पूजा पूर्वत्रोपवासश्च।''

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) 3 नवं., 2025 ई. को 26 घं. 06 मि. से 4 नवं., 2025 ई. को 22 घं. 36 मि. तक यह चतुर्दशी विद्यमान रहेगी। इन दिनों निशीथकाल लगभग 24 घं. 05 मि. प्राप्त हो रहा है। **स्पष्ट है- 3 और 4 नवं., 2025 ई. को दोनों ही दिन निशीथ में कार्त्तिक शुक्ल चतुर्दशी का अभाव है। इस स्थिति में हमने यह 'वैकुंठ चतुर्दशी व्रत' दूसरे दिन यानी 4 नवं., 2025 ई. को लिखा है।**

ध्यान दें कि- 4 नवं. 2025 ई. को भी यह तिथि (चतुर्दशी) 'अरुणोदयव्यापिनी' भी प्राप्त हो रही है।

12. पद्मक योग

विशाखा में सूर्य की स्थिति के समय जब चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में हो, तब '**पद्मक योग**' होता है। *किसी तीर्थ स्थान, विशेषतः तीर्थराज पुष्कर (राजस्थान) पर इस योग में स्नान-दान का विशेष माहात्म्य माना गया है-*

''विशाखास्थे सूर्ये सति यद्दिने चन्द्रनक्षत्रं कृत्तिका, तत्र 'पद्मकयोगः', अयं पुष्करेऽति प्रशस्तः।'' – (धर्मसिन्धुः)

यह योग दिन में ही मान्य है, रात्रि में नहीं।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) यह स्थिति यानी विशाखा नक्षत्र में सूर्य और कृत्तिका नक्षत्र में चन्द्रमा की विद्यमानता वाली स्थिति 6 नवं., 2025 ई. को बन रही है, जिससे इस दिन 'पद्मक नामक योग' घटित हुआ है।

13. श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (पौष कृष्ण)

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत जैसा कि हम पहले भी बतला चुके हैं, प्रत्येक चांद्रमास के कृष्णपक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है। यदि चतुर्थी दो दिन चंद्रोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन ही यह व्रत किया जाता है, क्योंकि गणेशचतुर्थी हमेशा तृतीयाविद्धा ही ली जाए, ऐसा शास्त्रनिर्देश है–

''चतुर्थी-गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।''

दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी यदि न मिले तो दूसरे दिन यह व्रत करना चाहिए–**''दिनद्वये चन्द्रोदय-व्याप्त्यभावे परैव।''**

इस वर्ष (सं. 2082 वि.) में पौष कृष्णपक्ष में चतुर्थी तिथि 7 दिसं., 2025 ई. को 18 घं. 25 मि. बाद शुरु होगी और यह चतुर्थी 8 दिसं., 2025 ई. को 16 घं. 3 मि. तक रहेगी। **चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी केवल 7 दिसं., 2025 ई. को ही प्राप्त हो रही है। अतः उपरोक्त नियमानुसार हमने यह 'श्रीगणेश चतुर्थी व्रत' पहले दिन यानी 7 दिसं., 2025 ई. को (चन्द्रोदयवती चतुर्थी वाले दिन) लिखा है, जोकि सर्वथा शास्त्रानुमोदित है।**

14. पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मार्त्त) (पौष शुक्ल)

जैसा कि हम पहले भी बतला चुके हैं कि– यदि एकादशी का क्षय हुआ हो तो स्मार्त्त लोग दशमीयुता एकादशी के दिन और वैष्णव लोग त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन एकादशी व्रत करते हैं।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) पौष शुक्लपक्ष में एकादशी का क्षय हुआ है, **अतः हमने स्मार्त्तों का यह 'पुत्रदा एकादशी व्रत' 30 दिसं., 2025 ई. को (दशमीयुता एकादशी के दिन) और वैष्णवों का यह एकादशीव्रत 31 दिसं. 2025 ई., को (त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन) लिखा है।**

15. श्रीसत्यनारायण व्रत (पौष शुक्ल)

यह व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है– **''सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे।''** यहां **'निशामुख' सूर्यास्तकाल** को कहा गया है और इसे ही **'प्रदोषारम्भ-काल'** भी कहते हैं।

हालांकि कोई भी व्यक्ति इस व्रत को स्वेच्छया अन्य किसी भी दिन अन्य किसी भी प्रदोषव्यापिनी तिथि में भी कर सकता है– ऐसा भी शास्त्रवाक्य मिलता है। लेकिन अधिकतर लोग इस व्रत को परम्परया प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा वाले दिन ही करते हैं।

यह नक्त व्रत है, तदनुसार यदि पूर्णिमा दोनों दिन प्रदोष को व्याप्त करे अथवा न भी करे– ऐसी दोनों ही स्थितियों में यह व्रत दूसरे दिन होगा।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) 2 जनवरी, 2026 ई. को पूर्णिमा 18 घं. 53 मि. बाद शुरु होकर 3 जन., 2026 ई. को 15 घं. 32 मि. तक चलेगी। क्योंकि 3 जनवरी, 2026 ई. को यह पूर्णिमा प्रदोषारम्भ से पहले ही (दिन में ही) 15 घं. 32 मि. पर समाप्त हो जाती है, अतः पहले दिन यानी 2 जनवरी, 2026 ई. को (प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा वाले दिन) पौष शुक्लपक्ष का यह 'श्रीसत्यनारायण व्रत' होगा– यह स्पष्ट है।

16. होलिकादहन (फाल्गुन पूर्णिमा)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्गुन पूर्णिमा में **'होलिकादहन'** किया जाता है। यदि दो दिन पूर्णिमा प्रदोषव्यापिनी हो अथवा दूसरे दिन वह प्रदोष के एकदेश को व्याप्त करे तो पहले दिन भद्रादोष के कारण होलिकादहन दूसरे दिन ही किया जाता है। **यदि दूसरे दिन प्रदोष का वह स्पर्श ही न करे और पहले दिन प्रदोष में भद्रा विद्यमान हो, किंच-दूसरे दिन पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर अथवा उससे ज़्यादा हो एवम् अगले दिन प्रतिपदा वृद्धिगामिनी (पूर्णिमा से अधिक मान वाली) हो तब दूसरे दिन ही प्रदोषव्यापिनी प्रतिपदा में होलिकादहन होता है।** यदि वहां प्रतिपदा ह्रासगामिनी (पूर्णिमा से कम मान वाली) हो तब पहले दिन भद्रा के पुच्छ में अथवा भद्रा के मुख को छोड़कर भद्रा में ही होलिकादहन किया जाता है। दूसरे दिन पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श ही न करे और पहले दिन निशीथ से पहले ही भद्रा समाप्त हो जाए तो वहां भद्रा-समाप्ति पर होलिकादहन किया जाए। यदि यहां भद्रा निशीथ के बाद समाप्त हो रही हो तो भद्रामुख को छोड़कर भद्रा में ही **'होलिकादहन'** होना चाहिए। यदि

प्रदोष में भद्रामुख हो तो भद्रा के बाद अथवा प्रदोष के बाद होलिकादहन किया जाए। दोनों दिन यदि पूर्णिमा प्रदोष को स्पर्श न करे तो पहले ही दिन भद्रापुच्छ में होली जलाई जाए। यदि वहां भद्रापुच्छ भी न मिले तो भद्रा में ही प्रदोष के अनन्तर होलिकादीपन करे। ये विभिन्न स्थितियां '**होलिकादहन**' के लिए शास्त्रों में प्रतिपादित हैं।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) यह फाल्गुनी पूर्णिमा 2 मार्च, 2026 ई. को 17 घं. 56 मि. बाद प्रारंभ होकर 3 मार्च, 2026 ई. को 17 घं. 07 मि. तक रहेगी। यह पूर्णिमा केवल 2 मार्च 2026 ई. को ही प्रदोषव्यापिनी मिल रही है। 3 मार्च को तो यह प्रदोषारम्भ से पहले ही (दिन में ही) 17 घं. 7 मि. पर समाप्त हो जाएगी। लेकिन 2 मार्च, 2026 ई. को पूरा का पूरा प्रदोष भद्रादूषित है, अत: इस दिन '**होलिकादहन**' प्रदोष में नहीं हो सकता। **क्योंकि इस वर्ष प्रतिपदा वृद्धिगामिनी (पूर्णिमा से अधिक मान वाली) है और अगले दिन यानी 3 मार्च, 2026 ई. को पूर्णिमा साढ़े तीन प्रहर से अधिक कालव्यापिनी है। अत: इसी दिन यानी 3 मार्च, 2026 ई. को सायाह्नव्यापिनी पूर्णिमा में होलिकादहन होगा, यह स्पष्ट है। इस दिन सायाह्न लगभग 16 घं. 1 मि. बाद रहेगा।**

ध्यान रहे- क्योंकि भारत के विभिन्न प्रदेशों में '**सायाह्नकाल**' की विविधता बनी रहेगी, अत: आप इस दिन प्रदोषकाल में ही 'होलिकादहन' कर सकते हैं, भले ही वहां प्रतिपदा विद्यमान है।

नोट:- 'होलिकादहन' में इसी तरह की स्थिति सं. 2072 वि. में भी घटित हो चुकी है। और (अधिक स्पष्टता के लिए) उस वर्ष के पंचांग में दिया 'होलिकादहन का निर्णय' भी अवश्य देखें।

17. श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (चैत्र कृष्ण)

यह व्रत प्रत्येक चान्द्रमास के कृष्ण पक्ष की चन्द्रोदयव्यापिनी चतुर्थी में किया जाता है - ऐसा हम पहले भी बतला चुके हैं। मातृ(तृतीया)विद्धा चतुर्थी में इस व्रत को करने का विशेष महत्त्व है-

''चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।''

चतुर्थी यदि दो दिन चन्द्रोदयव्यापिनी हो तो यह व्रत पहले दिन (तृतीयायुता चतुर्थी में) किया जाए। चतुर्थी यदि दोनों दिन चन्द्रोदयव्यापिनी न हो तो यह व्रत दूसरे ही दिन होता है।

इस वर्ष (सं. 2082 वि. में) चैत्र कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि 6 मार्च, 2026 ई. को 17 घं. 53 मि. बाद शुरु होगी और यह 7 मार्च, 2026 ई. को 19 घं. 17 मि. तक रहेगी।

क्योंकि यह चतुर्थी तिथि 6 मार्च को ही चन्द्रोदयव्यापिनी प्राप्त हो रही है। अत: हमने चैत्र कृष्णपक्ष का यह 'श्रीगणेशचतुर्थी व्रत' 6 मार्च, 2026 ई. को लिखा है।

18. चान्द्र संवत्सर प्रारम्भ (सं. 2083 वि.)

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को '**नवं संवत्सर**' का प्रारम्भ होता है। संवत्सर का प्रारम्भ उदयकालिक प्रतिपदा के दिन किया जाता है। प्रतिपदा की वृद्धि होने पर इसका प्रारम्भ पहले दिन (षष्टिघट्यात्मक प्रतिपदा के दिन) होता है और प्रतिपदा का क्षय होने पर नवसंवत्सर उसी दिन प्रारम्भ होता है, जिस दिन वह प्रतिपदा तिथि प्रारम्भ और समाप्त हो रही हो। इस स्थिति में स्पष्ट है- नवसंवत्सर का प्रारम्भ उस दिन होगा, जिस दिन चैत्र अमा समाप्त हो रही हो। इस बारे '**धर्मसिंधुकार**' का यह वचन देखिए-

''तत्र चैत्र-शुक्ल प्रतिपदि वत्सराम्भ:। तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा।''

आगामी वर्ष (सं. 2083 वि. में) चैत्र शुक्लपक्ष की यह प्रतिपदा 19 मार्च, 2026 ई. को सं. 2082 वि. की चैत्र अमा की समाप्ति के दिन पड़ रही है। सं. 2083 वि. की शुरुआत में पड़ने वाली यह प्रतिपदा 19 मार्च, 2026 ई. को 6 घं. 53 मि. से शुरु होकर 20 मार्च, 2026 ई. को 4 घं. 52 मि. तक रहेगी। स्पष्ट है- यह प्रतिपदा 19 मार्च, 2026 ई. के सूर्योदय (6 घं. 32 मि.) के बाद शुरु होगी और 20 मार्च, 2026 ई. के सूर्योदय (6 घं. 30 मि.) से पहले ही समाप्त हो जाएगी। अत: यहां प्रतिपदा का क्षय है- यह स्पष्ट है। **अत: उपरोक्त नियमानुसार सं. 2083 वि. में नवसंवत्सर का प्रारम्भ 19 मार्च, 2026 ई. (जिस दिन सं. 2082 वि. की चैत्र अमा की समाप्ति और सं. 2083 वि. की चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का प्रारम्भ और समाप्ति-दोनों घटित हो रहे हैं) को होगा- यह स्पष्ट है।**

ध्यान रहे- क्योंकि नवसंवत्सर 2083 वि. का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के क्षय के कारण 19 मार्च, 2026 ई. को हो रहा है, **अत: इससे सम्बद्ध वासन्त (चैत्र) नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, वर्षफल-श्रवण आदि अन्य व्रत-पर्व भी इसी दिन होंगे- यह भी स्पष्ट है।**

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त		
2025 ई.	घं.	मि.	2025 ई.	घं.	मि.
6 जन.	19	6	8 जन.	16	29
15 जन.	10	28	17 जन.	22	44
25 जन.	7	7	27 जन.	9	2
3 फर.	0	52	4 फर.	21	49
11 फर.	18	34	13 फर.	21	7
21 फर.	15	54	23 फर.	18	42
2 मार्च	8	59	4 मार्च	4	29
11 मार्च	0	51	13 मार्च	4	5
20 मार्च	23	31	23 मार्च	3	23
29 मार्च	19	26	31 मार्च	13	45
7 अप्रै.	6	24	9 अप्रै.	9	57

प्रारम्भ			समाप्त		
2025 ई.	घं.	मि.	2025 ई.	घं.	मि.
17 अप्रै.	5	55	19 अप्रै.	10	21
26 अप्रै.	6	27	28 अप्रै.	0	39
4 मई	12	53	6 मई	15	52
14 मई	11	47	16 मई	16	7
23 मई	16	2	25 मई	11	12
31 मई	21	7	2 जून	22	55
10 जून	18	1	12 जून	21	57
19 जून	23	17	21 जून	19	50
28 जून	6	35	30 जून	7	20
8 जुला.	1	11	10 जुला.	4	50
17 जुला.	4	50	19 जुला.	2	14
25 जुला.	16	0	27 जुला.	16	23

प्रारम्भ			समाप्त		
2025 ई.	घं.	मि.	2025 ई.	घं.	मि.
4 अग.	9	12	6 अग.	13	0
13 अग.	10	32	15 अग.	7	36
22 अग.	0	8	24 अग.	0	54
31 अग.	17	27	2 सितं.	21	51
9 सितं.	18	7	11 सितं.	13	58
18 सितं.	6	32	20 सितं.	8	5
28 सितं.	1	8	30 सितं.	6	57
7 अक्तू.	4	1	8 अक्तू.	22	45
15 अक्तू.	12	0	17 अक्तू.	13	57
25 अक्तू.	7	51	27 अक्तू.	13	27
3 नवं.	15	5	5 नवं.	9	40
11 नवं.	18	17	13 नवं.	19	38
21 नवं.	13	55	23 नवं.	19	28

प्रारम्भ			समाप्त		
2025-26 ई.	घं.	मि.	2025-26 ई.	घं.	मि.
1 दिसं.	1	11	2 दिसं.	20	51
9 दिसं.	2	52	11 दिसं.	2	44
18 दिसं.	20	7	21 दिसं.	1	21
28 दिसं.	8	43	30 दिसं.	6	4
5 जन.	13	25	7 जन.	11	26
15 जन.	3	3	17 जन.	8	12
24 जन.	14	16	26 जन.	12	32
1 फर.	23	58	3 फर.	22	10
11 फर.	10	52	13 फर.	16	12
20 फर.	20	7	22 फर.	17	54
1 मार्च	8	34	3 मार्च	7	31
10 मार्च	19	5	13 मार्च	0	43
20 मार्च	4	5	----		----

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त		
2025 ई.	घं.	मि.	2025 ई.	घं.	मि.
3 जन.	10	47	7 जन.	17	50
30 जन.	18	45	3 फर	23	16
27 फर.	4	37	3 मार्च	6	39
26 मार्च	15	14	30 मार्च	16	35
23 अप्रै.	0	31	27 अप्रै.	3	39

प्रारम्भ			समाप्त		
2025 ई.	घं.	मि.	2025 ई.	घं.	मि.
20 मई	7	35	24 मई	13	48
16 जून	13	9	20 जून	21	44
13 जुला.	18	53	18 जुला.	3	39
10 अग.	2	11	14 अग.	9	6

प्रारम्भ			समाप्त		
2025 ई.	घं.	मि.	2025 ई.	घं.	मि.
6 सितं.	11	21	10 सितं.	16	3
3 अक्तू.	21	27	8 अक्तू.	1	28
31 अक्तू.	6	48	4 नवं.	12	34
27 नवं.	14	7	1 दिसं.	23	18
24 दिसं.	19	46	29 दिसं.	7	41

प्रारम्भ			समाप्त		
2026 ई.	घं.	मि.	2026 ई.	घं.	मि.
21 जन.	1	35	25 जन.	13	35
17 फर.	9	5	21 फर.	19	7
16 मार्च	18	14	-------		-------
-------	-------				

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2025 से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

2025 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	5	12	19	26	–
फरवरी	2	9	16	23	–
मार्च	2	9	16	23	30
अप्रैल	6	13	20	27	–

2025 ई.	रविवार की तारीखें				
मई	4	11	18	25	–
जून	1	8	15	22	29
जुलाई	6	13	20	27	–
अगस्त	3	10	17	24	31

2025 ई.	रविवार की तारीखें				
सितंबर	7	14	21	28	–
अक्तूबर	5	12	19	26	–
नवंबर	2	9	16	23	30
दिसंबर	7	14	21	28	–

2026 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	4	11	18	25	–
फरवरी	1	8	15	22	–
मार्च	1	8	15	22	29
–	–	–	–	–	–

ग्रहण-विवरण (सं. 2082 वि.)

वि. सं. 2082 में निम्नलिखित ये 4 ग्रहण भूगोल पर दृश्य होंगे:-

(i) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (7/8 सितं., 2025 ई.)।

(ii) **आंशिक सूर्यग्रहण** (21/22 सितं., 2025 ई.)।

(iii) **कंकण सूर्यग्रहण** (17 फर., 2026 ई.)।

(iv) **खग्रास चन्द्रग्रहण** (3 मार्च, 2026 ई.)।

इन चारों ग्रहणों में से 7/8 सितं., 2025 ई. वाला 'खग्रास चन्द्रग्रहण' और 3 मार्च, 2026 ई. वाला 'खग्रास चन्द्रग्रहण' – ये दोनों ग्रहण ही भारत में दृश्य होंगे। ध्यान दें- 21/22 सितं., 2025 ई. वाला, 'आंशिक सूर्यग्रहण' और 17 फर., 2026 ई. वाला 'कंकण सूर्यग्रहण' – ये दोनों सूर्य ग्रहण भारत में दृश्य नहीं होंगे।

भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस तरह से है-

(i) आंशिक सूर्यग्रहण (21/22 सितं., 2025 ई.)

यह ग्रहण आश्वि. कृष्ण अमा, रविवार, 21 सितं. 2025 ई. को भा. स्टैं. टा. अनुसार 23 घं. 0 मि. से शुरु होकर 22 सितं., 2025 ई. को 3 घं. 24 मि. तक विश्व के अनेक भागों में आंशिक रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया, पैसिफिक-अटलांटिक एवं अंटार्कटिक महासागर में दिखाई देगा। यह ग्रहण फिजी, अमेरिकन समोआ, न्यूजीलैंड, अटार्कटिका आदि में आंशिक रूप में दिखाई देगा। **भारत में यह ग्रहण कहीं भी नहीं दीखेगा।**

(ii) कंकण सूर्यग्रहण (17 फर., 2026 ई.)

यह ग्रहण फाल्गुन कृष्ण अमा, मंगलवार, 17 फर., 2026 ई. को भा. स्टैं. टा. अनुसार 15 घं. 26 मि. से 19 घं. 58 मि. तक विश्व के विभिन्न भागों में कंकणरूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका, पैसिफिक, अटलांटिक, हिन्द महासागर एवम् अन्टार्कटिका में कंकण रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण चिल्ली, अर्जेण्टाईना, दक्षिण जॉर्जिया, मालावी, नामीबिया, नॉर्वे, फ्रांस, जिम्बाबे, मौरिशिस, मेडागास्कर, तंजानिया, जाम्बिया आदि देशों में दिखाई देगा। **भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।**

भारत में दृश्य ग्रहणों का विस्तृत विवरण

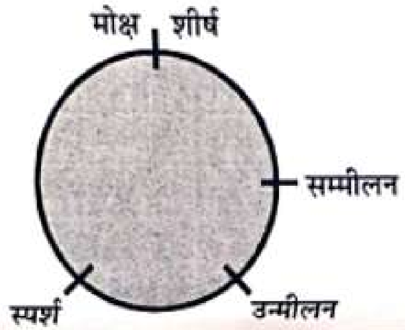
(i) खग्रास चन्द्रग्रहण (7/8 सितं., 2025 ई.)

यह खग्रास चन्द्रग्रहण भाद्रपद पूर्णिमा, रविवार, तदनुसार 7/8 सितं., 2025 ई. को यूरोप, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, पश्चिमी-उत्तरी-पूर्वी अमेरिका एवम् पैसिफिक, अटलांटिक, अंटार्कटिक एवं हिन्द महासागर में खग्रासरूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण म्यांमार, चाईना, नाईजीरिया, इजिप्ट, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, जर्मनी, रसिया, उ. कोरिया, ईटली, बंगलादेश, हंगरी, फिलीपींस, ग्रीस, सिंगापुर, रोमानिया, बुल्गारिया, जापान, टर्की, बैल्जियम, नीदरलैण्डस, फ्रांस, यू. के., स्पेन और भारत के अधिकतर भागों में खग्रासरूप में दिखाई देगा। इसके अतिरिक्त अमेरिका के कुछ भाग, पुतर्गाल और ब्राजील में यह ग्रहण आंशिक रूप में भी देखा जा सकेगा।

इस ग्रहण के स्पर्शादि काल भा. स्टैं. टा. में इसप्रकार हैं :

	घं. मि. से.	
ग्रहण-स्पर्श :	21 - 57 - 09	7/8 सितं., 2025 ई.
खग्रास-प्रारम्भ :	23 - 00 - 48	
ग्रहण-मध्य :	23 - 41 - 47	
खग्रास समाप्त :	00 - 22 - 51	
ग्रहण समाप्त :	01 - 26 - 31	
पर्वकाल :	3 घं. 29 मि.	
परमग्रासमान :	1.362	

ग्रहणचित्र (7/8 सितं., 2025 ई.)



ग्रहण-सूतक – इस ग्रहण का सूतक 7 सितं., 2025 ई. को 12 घं. 57 मि. भा. स्टैं. टा. से प्रारम्भ हो जाएगा।

नोट:- क्योंकि 7 सितं., 2025 ई. को 'पूर्णिमा का महालय श्राद्ध' है और इस दिन श्राद्धकाल में (अपराह्ण के वक्त) ग्रहणसूतक लगा रहेगा। श्राद्ध आदि ग्रहण- समय में शास्त्रों द्वारा विहित माने गए हैं। लेकिन ध्यान रहे कि-यहां अपक्वान्न (न पके अन्न) का ही दान विहित है। पक्वान्न का यहां निषेध है- यह ध्यान रखें।

ग्रहण का राशिफल – यह ग्रहण पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र एवम् कुम्भ राशि के समय घटित हो रहा है। अत: पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र और कुम्भ राशि के जातकों के लिए यह अधिक अशुभ / कष्टप्रद रहेगा।

विभिन्न राशि के जातकों के लिए इसका फल इसप्रकार है -

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभ	सुख	अपमान	महाकष्ट	स्त्री/पति कष्ट	सुख	चिन्ता	कष्ट	धन-लाभ	हानि	चोट-भय	हानि

ग्रहण का अन्य फल – कुम्भ राशि का ग्रहण पर्वतीय प्रदेशवासियों, पाश्चात्त्य देशों में रहने वाले लोगों, बोझा ढोने वाले, चोर, अहीर, दरद देश (उत्तरी कश्मीर और दक्षिण रूस के सीमांत प्रदेश) वासियों, प्रधान शासकों, सिंह, एवम् बार्बर देश (उत्तरी अफ्रीका) में रहने वाले जनों के लिए अशुभकारी माना जाता है।

ग्रहण का नक्षत्रफल – पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में ग्रहण होने से हिंसक, पशुपालक, चोर, अधर्मी, व्रत नियमादि न मानने वाले, शठ/नीच प्रवृत्ति वाले और युद्ध-प्रवीणजन कष्ट पावें।

वारफल –क्योंकि यह ग्रहण रविवार को घटित हो रहा है, अत: वर्षा की कमी हो, धान्य की उत्पत्ति में भी कमी रहे। गाएं कम दूध दें। राजाओं एवम् शासकों में युद्ध का वातावरण बने।

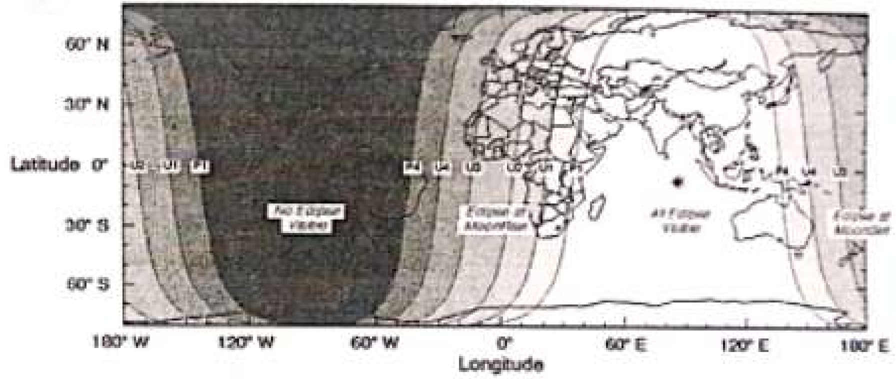
मासफल – भाद्रपदी पूर्णिमा का चन्द्रग्रहण कलिंग (उत्तरी तेलंगाना, उत्तर/पूर्वी आंध्र, ओडिसा व मध्य प्रदेश का कुछ भाग), बंग (बंगाल व बंगलादेश आदि), मगध (बिहार), सौराष्ट्र (काठियावाड़ आदि), मलेच्छ, सुवीर (सिंधु नदी के पार्श्ववर्ती प्रदेश), दरद (उत्तरी कश्मीर व दक्षिणी रूस के सीमाप्रदेश), अश्मक (नर्मदा और गोदावरी के मध्यप्रदेश) – इन देशों के वासियों के लिए हानिप्रद और स्त्रियों के गर्भ का हानिकारक होता है। हालांकि यह विश्व में सुभिक्ष का संकेत भी देता है। इस बारे '**वराहमिहिर**' का यह वचन देखिए-

"कलिङ्गबङ्गान् मगधान् सुराष्ट्रान् म्लेच्छान् सुवीरान् दरदाश्मकांश्च।
स्त्रीणां च गर्भानसुरो निहन्ति सुभिक्षकृद्भाद्रपदेऽभ्युपेत:।।"

अयनफल – यह चन्द्रग्रहण दक्षिणायन में घटित हो रहा है, अत: वैश्य, व्यापारी वर्ग और शूद्रजनों के लिए यह अशुभदायी रहेगा।

इस ग्रहण के प्रारम्भ, मध्य और समाप्तिकाल सभी भारतीय नगरों/उपनगरों ग्रामों के लिए समान रहेंगे- यह ध्यान रखिए।

ग्रहणचित्र 7/8 सितम्बर, 2025 ई.



चित्र-स्पष्टीकरण – (i) इस चित्र में काले भाग वाले स्थलों पर कहीं भी यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

(ii) काले भाग के साथ लगते धुंधले भाग में चन्द्रोदय के समय ग्रहण समाप्त हो जाएगा।

(iii) इस चित्र में साफ दिखाई दे रहे भाग में पूर्ण खग्रास दिखाई देगा।

(iv) दाईं ओर वाले धुंधले भाग में चन्द्रास्त के समय ग्रहण प्रारम्भ होगा।

(ii) खग्रास चन्द्रग्रहण (3 मार्च, 2026 ई.)

यह खग्रास चन्द्रग्रहण फाल्गुन पूर्णिमा, मंगलवार, तदनुसार 3 मार्च, 2026 ई. को पूर्वी यूरोप, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी एवम् दक्षिणी अमेरिका, पैसिफिक, अटलांटिक, आर्कटिक, अन्टार्कर्टिक और हिन्द-महासागर में खग्रास रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण पेरु, कैनेडा, यू. एस., फिलीपींस, वियतनाम, ताईवान, इण्डोनेशिया, हांगकांग, गोटेमाला,

क्यूबा, थाईलैण्ड, उत्तरी कोरिया, सिंगापुर, चाईना, साल्वाडोर, जापान, मैक्सिको एवम् म्यांमार और भारत के पूर्वी भाग के नगरों में खग्रास रूप में दिखाई देगा। इसके अतिरिक्त ब्राजील, अर्जेनटाईना, कैनेडा के कुछ भागों, चिल्ली, वैन्जुएला, बंगलादेश, उज्बेकिस्तान और भारत के अधिकतर भागों में आंशिक रूप में दृष्टिगोचर होगा।

इस ग्रहण के स्पर्शादि काल भा. स्टैं. टा. में इसप्रकार हैं -

	घं. मि. से.	
ग्रहण-स्पर्श :	15 - 20 - 07	3 मार्च, 2026 ई.
खग्रास-प्रारम्भ :	16 - 34 - 34	
खग्रास-मध्य :	17 - 03 - 46	
खग्रास समाप्त :	17 - 32 - 49	
ग्रहण समाप्त :	18 - 47 - 15	
***पर्वकाल :**	3 घं. 27 मि.	
परमग्रासमान :	1.150	

क्योंकि यह ग्रहण भारत में ग्रस्तोदय रूप में दिखाई देगा। अतः सभी प्रदेशों में इस ग्रहण का प्रारम्भ चन्द्रोदयकाल से ही माना जाएगा। आगे पृष्ठ 24 पर भारत के लगभग 150 प्रसिद्ध नगरों के चन्द्रोदयकाल, जोकि भारत के नगरों में इस ग्रहण के प्रारंभ काल हैं, दिए गए हैं।

ग्रहण-सूतक - इस ग्रहण का सूतक 3 मार्च, 2026 ई. को प्रातः 6 घं. 20 मि. भा. स्टैं. टा. से शुरु हो जाएगा।

ग्रहण का राशिफल - यह ग्रहण पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र एवम् सिंह राशि के समय घटित हो रहा है, अतः पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र और सिंह राशि के जातकों के लिए यह अधिक अशुभ/कष्टप्रद रहेगा।

** इस ग्रहण का उपरोक्त यह पर्वकाल भूमण्डलीय ग्रहणावधि के आधार पर निर्देशित किया गया है। लेकिन ध्यान रहे कि- जहां यह चन्द्रग्रहण ग्रस्तोदय यानी चन्द्रोदय के साथ प्रारम्भ होगा, वहां उन नगरों में ग्रहण का पर्वकाल चन्द्रोदय से ग्रहण-समाप्ति तक माना जाएगा।*

विभिन्न राशि के जातकों के लिए इस ग्रहण का फल इसप्रकार है :-

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिंता	कष्ट	धन-लाभ	हानि-भय	चोट-भय	हानि-भय	लाभ	सुख	अपमान भय	महा-कष्ट	स्त्री/पतिकष्ट	सुख

ग्रहण का अन्य फल - मलेच्छ, मेकल (छतीसगढ़ के भाग के) पर्वतवासियों, बलीष्ठ जन्तुओं, राजा एवं राजाश्रितजनों, वन में निवास करने वाले मनुष्यों के लिए कष्टप्रद है-

''सिंहे पुलिन्दगणमेकलसत्त्वयुक्तान्।
राजोपमान्नपतीन् वनगोचरांश्च।।''

क्योंकि यह ग्रहण ग्रस्तोदित है, अतः शारद्धान्यों की हानि हो-

''ग्रस्तावदितास्तमितौ शारद्धान्यावनीश्वरक्षयदौ।।''

वारफल – क्योंकि यह ग्रहण मंगलवार के दिन होगा, अतः गजादिकों को कष्ट रहे। दुर्भिक्ष, चौर, अग्नि आदि का भय और अवन्ती देशवासियों को कष्ट रहे।

मासफल – फाल्गुन पूर्णिमा का यह ग्रहण नाचने-गाने वाले, क्षत्रियों, तपस्वियों, स्त्रियों के लिए कष्टप्रद है और बंग, अश्मक, अवन्त (म. प्र. का मालवा, उज्जैन) आदि देशों में राजद्रोह की सम्भावना बने।

नक्षत्रफल – पू. फा. नक्षत्र का यह ग्रहण शिल्पीजनों, खरीद-फरोख्त का व्यापार करने वाले लोगों, कुवांरी कन्याओं क लिए पीड़ाप्रद है। कपास, रुई, सूत, कपड़ा, सब प्रकार के तेल, नमक महंगे हों।

अयनफल - यह ग्रहण उत्तरायण में घटित हो रहा है, अतः आगामी मासों में सवर्ण (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) लोगों को राजनैतिक परेशानी रहे। गोजाति पर निर्दयतापूर्ण व्याहार हो। चना, गेहूं, जौ एवम् दालवाना महंगे हों।

भारत के कुछ शहरों में 3 मार्च, 2026 ई. को घटित होने वाले चन्द्रग्रहण की आकृतियां

चण्डीगढ़



ग्रहण-प्रारम्भ 18 घं. 22 मि.

दिल्ली



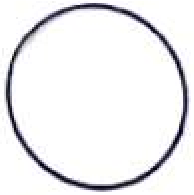
ग्रहण-प्रारम्भ 18 घं. 22 मि.

कोलकाता



ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 38 मि.

अहमदाबाद



ग्रहण-प्रारम्भ 18 घं. 44 मि.

वाराणसी



ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 59 मि.

इम्फाल



ग्रहण-प्रारम्भ 17 घं. 14 मि.

ध्यान रहे– **चन्द्रग्रहण के प्रारम्भ, मध्य और समाप्तिकाल सभी भारतीय नगरों/उपनगरों के लिए समान होते हैं, यह हम पहले भी बतला चुके हैं। लेकिन क्योंकि यह ग्रहण भारत में ग्रस्तोदय है, अत: आपके अपने स्थान का स्थानीय चन्द्रोदयकाल ही उस स्थल के लिए इस चन्द्रग्रहण का प्रारम्भकाल माना जाएगा। सम्पूर्ण भारत के सभी प्रदेशों/नगरों में इस ग्रहण का प्रारम्भकाल नहीं दिखाई देगा और भारत के अधिकतर भागों में तो चन्द्रोदय (जोकि इस ग्रहण का प्रारम्भकाल है) ग्रहणमध्य (17 घं., 04 मि. भा. स्टैं. टा.) के बाद ही होगा। यहां तक कि राजस्थान, गुजरात आदि के सुदूरवर्ती पश्चिमी भागों में यह ग्रहण अत्यल्प समय (कुछ मिनटों मात्र) के लिए ही दृश्य होगा।**

यह भी स्पष्ट कर देते हैं कि-अत्यन्त सीमावर्ती पश्चिमी भागों जैसे भुज, सोमनाथ, द्वारिका (गुज.), जैसलमेर (राज.), एवम महाराष्ट्र के सुदूर दक्षिणवर्ती कुछ एक गिने-चुने स्थलों पर तो यह ग्रहण चन्द्रोदय से पहले ही समाप्त हो जाएगा। अर्थात् इन स्थलों पर चंद्रग्रहण दीखेगा ही नहीं।

ग्रहणकाल में कर्त्तव्य/अकर्त्तव्य

ग्रहणारंभ से पूर्व स्नानादि करें। तत्पश्चात् देवस्नान, पूजनार्चन, जाप आदि सम्पन्न करें। ग्रहण के पर्वकाल में देवपूजा, तर्पण, श्राद्ध, जप, होम, दान आदि का अनन्त फल शास्त्रकारों ने पदे-पदे प्रतिपादित किया है। गुरुमुख से प्राप्त मंत्र का जाप इस समय (ग्रहणवेला में) श्रद्धासहित करना चाहिए। ग्रहणमोक्ष के बाद पुन: स्नान कर, पुन: देवार्चनादि कृत्यों का संपादन करना चाहिए।

ग्रहण में स्नान-विषयक निर्देश – ग्रहणवेला में सभी जलों का महत्त्व गंगाजल-समान माना गया है। जो गंगा, यमुना आदि पवित्रस्थलों व तीर्थादि में न जा सकें, वे अपने गृह पर ही गंगा आदि के स्मरणपूर्वक स्नान कर, अन्य पूजादि धर्मकृत्यों को सम्पन्न करें। प्रवाहित (बहता-हुआ) जल, सरोवर, वापी, कूप, नदी, महानदी, गंगादि के पवित्र प्रदेशों/संगमों पर अथवा समुद्रजल से स्नान करना उत्तरोत्तर शुभ एवं श्रेष्ठ/पुण्यकारक माना है। ग्रहण में हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नान, दान, जापादि का विशेष महत्त्व शास्त्र प्रतिपादित करते हैं। यदि तीर्थादि पर जा पाना संभव न हो सके तो गंगा आदि के स्मरणपूर्वक घर पर ही स्नान कर लेना चाहिए।

भोजनसंबंधी निर्देश– ग्रहणमोक्ष के अनन्तर ही स्नान/पूजा/दान आदि से निवृत्त होकर भोजन करें। केवल बाल, अशक्त, बीमार (रोगी), वृद्ध आदि को भोजनग्रहण में (विवशता की स्थिति में) छूट है अर्थात् वे भोजन कर सकते हैं। असमर्थता की स्थिति में भोजनग्रहण करने से इन्हें किसी भी प्रकार का दोष नहीं लगता- यह स्पष्ट है।

-: आगामी वर्ष सं. 2083 वि. में घटित होने वाले ग्रहण :-

(i) **खग्रास सूर्यग्रहण** (12 अग., 2026 ई.) (भारत में अदृश्य)।

(ii) **आंशिक चन्द्रग्रहण** (27/28 अग., 2026 ई.) (भारत में अदृश्य)।

(iii) **कंकण सूर्यग्रहण** (6 फर., 2027 ई.) (भारत में अदृश्य)।

ये तीनों ग्रहण भारत में नहीं दीखेंगे। इसके अतिरिक्त 20/21 फर. 2027 ई. को एक उपच्छाया चन्द्रग्रहण भी होगा। लेकिन उपच्छाया चन्द्रग्रहण को शास्त्रकारों ने ग्रहण की कोटि में नहीं माना है- यह समझ लें।

3 मार्च, 2026 ई. को खग्रास चन्द्रग्रहण के दिन भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों में चन्द्रोदयकाल (भा.स्टैं.टा.)

नगर	चन्द्रोदय घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय घं. मि.	नगर	चन्द्रोदय घं. मि.
अगरतला	17 : 26	जलगांव (महा.)	18 : 33	भटिण्डा	18 : 31	कोणार्क (उ.)	17 : 49
अहमदाबाद	18 : 44	जबलनपुर (म.प्र.)	18 : 14	मुंबई	18 : 45	तिरुपति (आं.प्र.)	18 : 20
अमरावती	18 : 26	जमशेदपुर (झा.खं.)	17 : 48	मालेगाँव	18 : 18	झुंझुनू (राज.)	18 : 29
अनंतपुर	18 : 28	जयपुर (राज.)	18 : 29	मंगलुरु	18 : 35	डिब्रूगढ़ (आ.)	17 : 08
अजमेर (राज.)	18 : 33	जलपाईगुड़ी (बं.)	17 : 36	मैसूर	18 : 33	तारकेश्वर (गुज.)	18 : 43
अयोध्या (उ.प्र.)	18 : 02	जोधपुर (राज.)	18 : 40	मुरादाबाद (उ.प्र.)	18 : 04	दार्जिलिंग (बं.)	17 : 36
आगरा	18 : 20	जोरहाट (आ.)	17 : 12	रुड़की (उ.खं.)	18 : 18	धर्मशाला (हि.प्र.)	18 : 23
अलीगढ़	18 : 19	झज्जर (हरि.)	18 : 24	वडोदरा (गुज.)	18 : 42	नाहन (हि.प्र.)	18 : 20
अलवर	18 : 25	झांसी (उ.प्र.)	18 : 19	वलसाड़ (गुज.)	18 : 44	पंचकूला (हरि.)	18 : 22
अमृतसर	18 : 30	जालावाड़ (राज.)	18 : 28	विजयवाड़ा (आं.प्र.)	18 : 14	त्रिपुरा	17 : 21
इलाहाबाद	18 : 05	जालन्धर (पंजाब)	18 : 27	वियजपुरम् (ता.)	18 : 20	पटियाला	18 : 24
इन्दौर	18 : 31	जम्मू	18 : 29	विशाखापटनम् (आ. प्र.)	18 : 03	पठानकोट	18 : 26
इम्फाल (मणि.)	17 : 14	तिरुवनंतपुरम्	18 : 33	वाराणसी	17 : 59	पुट्टापर्ती (आं.प्र.)	18 : 26
उत्तरकाशी	18 : 15	देहरादून	18 : 18	सोलापुर (महा.)	18 : 41	फरीदकोट (पं.)	18 : 31
उज्जैन (म. प्र.)	18 : 30	धुले (महा.)	18 : 36	सूरत (गुज.)	18 : 44	बद्रीनाथ (उ.खं.)	18 : 12
ऊना (हि.प्र.)	18 : 23	नासिक (महा.)	18 : 41	सीकर (राज.)	18 : 31	बागपत (उ.प्र.)	18 : 21
उदयपुर (राज.)	18 : 39	नागपुर (महा.)	18 : 18	सिरसा (हरि.)	18 : 31	बेगूसराय (बि.)	17 : 46
कोल्हापुर (महा.)	18 : 41	नादेड़ (महा.)	18 : 27	शिमला (हि. प्र.)	18 : 21	मंडी (हि.प्र.)	18 : 21
कोइम्बटूर	18 : 32	नागरकोइल (ता.)	18 : 31	श्रीनगर	18 : 29	मथुरा (उ.प्र.)	18 : 21
करनूल	18 : 25	दिल्ली	18 : 22	उन्नाव (उ.प्र.)	18 : 09	मेरठ (उ.प्र.)	18 : 19
कटक (ओडिसा)	17 : 50	पुणे (महा.)	18 : 41	ऊधमपुर (ज.क.)	18 : 28	मोगा (पं.)	18 : 29
कोलकाता	17 : 38	पणजी (गोवा)	18 : 43	औरंगाबाद (महा)	18 : 35	मोहाली (पं.)	18 : 22
कोहिमा (ना.)	17 : 13	पुडुचेरी	18 : 20	कठुआ (ज.क.)	18 : 26	रांची (झा.खं.)	17 : 51
कानपुर	18 : 10	पटना	17 : 51	कन्नौज (उ.प्र.)	18 : 11	रामनाथपुरम् (ता.)	18 : 24
खांडवा (म. प्र.)	18 : 29	पाली	18 : 40	करनाल (हरि.)	18 : 22	रामपुर बुशहर (हि.प्र.)	18 : 18
ग्वालियर	18 : 19	पालमपुर (हि. प्र.)	18 : 22	कांगड़ा (हि.प्र.)	18 : 23	रामेश्वरम् (ता.)	18 : 23
गया	17 : 52	बेंगलुरु	18 : 28	कांचीपुरम (ता.)	18 : 19	रोपड़ (पं.)	18 : 23
गोरखपुर	17 : 57	बिलासपुर (हि. प्र.)	18 : 22	कारगिल	18 : 21	संगरूर (पं.)	18 : 26
गंगानगर	18 : 35	बरेली	18 : 13	कुराली	18 : 22	सोलन	18 : 21
कोटा	18 : 30	बुलंदशहर	18 : 19	कुरुक्षेत्र	18 : 22	हरिद्वार (उ.खं.)	18 : 17
चंद्रापुर (महा.)	18 : 18	बीकानेर	18 : 39	कुल्लू	18 : 19	हैदराबाद (ते.)	18 : 22
चंडीगढ़	18 : 22	भावनगर (गुज.)	18 : 47	केदारनाथ	18 : 13	होशियारपुर (पं.)	18 : 25
चेन्नई	18 : 17	भागलपुर (बि.)	17 : 43				
		भीलवाड़ा (राज.)	18 : 35				

संवत् 2082 वि. की कुल जन्म-वर्ष-प्रश्न-मुहूर्त्त-कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में पूर्ण सहयोग के लिए "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवम् ज्योतिष कार्यालय"–कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्त्ता ग्राम सुन्हाड़–सौर, सोलन (हि.प्र.) निवासी प्रबुद्ध ज्योतिर्विद्वान् आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य को आशीर्वाद पुरस्सर धन्यवाद दिये बिना मैं नहीं रह सकता। –प्रियव्रत शर्मा

यद्यपि जातकपद्धति एवं ताजिक ग्रन्थों में द्वादशभाव-साधनपूर्वक बनायी गयी भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक की जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश–कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि-कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाये हुए हैं। जन्म, प्रश्न, वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनायी गयी जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बड़ा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाये हुए है। **सच बात तो यह है**–फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक-रूप तो लगभग लुप्त-सा ही हो गया है। **इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2082 वि. में बनने वाली सभी कुण्डलियां दी जा रही हैं। "किस तारीख के कितने बजे से, किस तारीख के कितने बजे तक"**–कौन-सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन-किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश–कालानुसारी वर्षप्रवेश–कुण्डली (वर्षप्रवेश–कालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति–कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास ही बना सकेंगे।

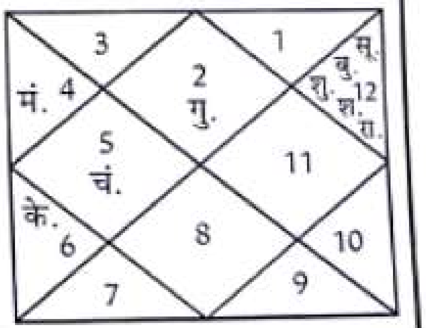
ध्यान दें–यहां दी गयीं ये कुण्डलियां विवाहादि–मुहूर्त्तकालिक लग्नों के निर्णय में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई हैं। लग्ननिर्णयार्थ अपेक्षित ग्रहस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यहां दी गयीं इन कुण्डलियों द्वारा दैवज्ञ स्वयं भी लग्न की शुद्धि-अशुद्धि का यथार्थ निर्णय अत्यन्त आसानीपूर्वक अनायास ही कर सकते हैं।

क्योंकि, आगे दी जा रहीं ये सभी कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जायेगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी भी देश के लिए प्रयोग में लाना हो, तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाईम को केवल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में बदलकर इन्हें तुरन्त प्रयोग में लाइये।

स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। यहां पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (1)–चण्डीगढ़ (U.T.) **में 30 मार्च, 2025 ई. को प्रातः 10 घं. 15 मि. (भा.स्टैं. टा.) पर उत्पन्न होने वाले जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है?**

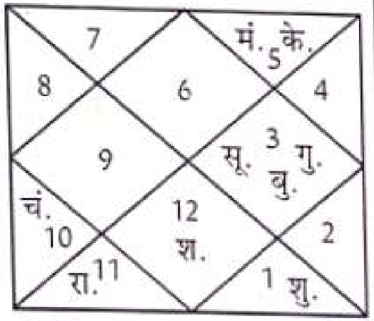
क्योंकि, इस जातक का जन्म "**30 मार्च 6 घं. 18 मि. से 30 अप्रैल 16 घं. 34 मि.**" के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**–चण्डीगढ़ में 30 मार्च को 10 घं. 15 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर वृष लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न-कुण्डली यह बनी–



अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (2)–15 जून, 2025 ई. को Arizona City, Arizona (U.S.) में 12 घं. 40 मि. P.M. पर पैदा होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है?

Arizona State (U.S.) में D.S.T. (ग्रीष्मकालीन समय) चलता है, जो क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घण्टा आगे रहता है। इन दिनों (गर्मियों में) यह लागू है। **स्पष्ट** है–इस जातक का यह जन्मसमय D.S.T. अनुसार है। अत: स्टैं.टा. अनुसार इस समय इस जातक का जन्मकाल 11 घं. 40 मि. होगा। U.S. का यह Arizona शहर Arizona State के अंतर्गत Mountain St. Time Zone में पड़ता है और M.S.T. (Mountain Standard Time) से भा.स्टैं.टा. 12 घं. 30 मि. आगे रहता है, अत: इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 16 जून, 2025 ई. और जन्मकाल 0 घं. 10 मि. (भा.स्टैं.टा.) बने। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा.स्टैं.टा. अनुसार "**15 जून 06 घं. 44 मि. से 16 जून 13 घं. 8 मि.**" के मध्य हुआ है, अत: इसकी जन्म-कालिक-कुण्डली (ग्रहस्थिति-कुण्डली) यहां दी गयी इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। किंच–Arizona City, Arizona (U.S.) में इसके जन्म के समय लग्न कन्या होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी–



अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (3)–भारत, हि.प्र., सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11 घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवं सम्प्रति मोहाली (पं.) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2025-26 की वर्षकुण्डली जाननी है ?

इस जातक के गताब्द यहां 51 मिले और 52वां वर्षप्रवेश 15 अगस्त, 2025 ई. (शुक्रवार) को 13घं. 01 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वर्षप्रवेश "**14 अगस्त 09 घं. 6 मि. से 16 अगस्त 11 घं. 42 मि.**" के मध्य हुआ है, अत: इसकी वर्षकुण्डली (52वें वर्ष की) यहां दी गई इसी कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**–इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में वर्षप्रवेश के समय (15 अगस्त, 2025 ई. को 13 घं. 01 मि. पर) तुला लग्न है, अत: इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी–



अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं–

उदाहरण (4)–मान लें-14 अप्रैल, 2025 ई. को 11 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आपके पास चण्डीगढ़ (U.T.), भारत में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि/असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है ?

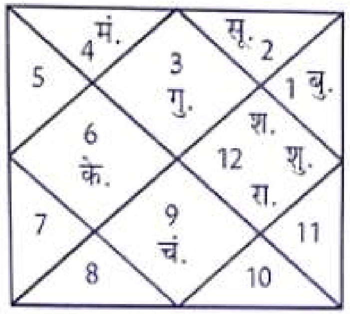
यहां प्रश्नकालिक तारीख 14 अप्रैल, 2025 ई. और प्रश्नकाल 11 घं. 30 मि. आगे इस स्तम्भ में दिये गये "**14 अप्रैल 03 घं. 21 मि. से 15 अप्रैल 20 घं. 26 मि.**" के मध्य पड़ता है, अत: यहां यह प्रश्न-कुण्डली इसी अवधि के अन्तर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किंच**–यहां प्रश्नस्थल (चण्डीगढ़) में इस समय लग्न मिथुन है, अत: यहां इस प्रश्नकर्त्ता की कुण्डली इस तरह बनेगी–



आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (5)–हमारे इस पंचांग (श्रीमार्त्तण्ड) में 16 मई, 2025 ई. को पृष्ठ 274 पर दिये मिथुन लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है ?

इस लग्न (मिथुन) का काल इस दिन (16 मई, 2025 ई. को) चण्डीगढ़ में 07 घं. 21 मि. से 09 घं. 35 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिये गये "**15 मई 14 घं. 07 मि. से 18 मई 00 घं. 02 मि.**" के मध्य पड़ता है, अत: यह मुहूर्त्त-कुण्डली (मिथुन लग्न की) यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी–

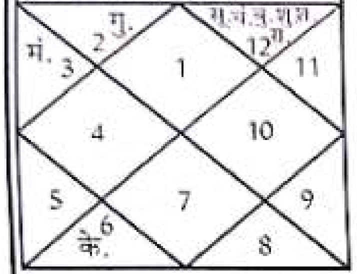


इस प्रकार पाठक समझ गये होंगे–जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

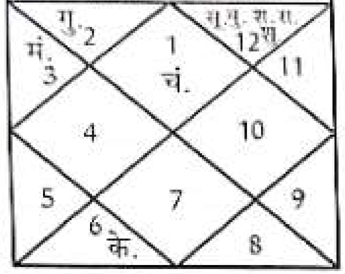
ध्यान रहे–कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से बिल्कुल नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

30 मार्च से 14 मई, सन् 2025 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

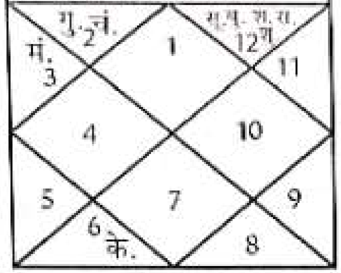
30 मार्च 6 घं. 18 मि. से 30 मार्च 16 घं. 34 मि.



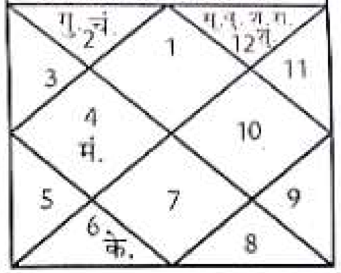
30 मार्च 16 घं. 35 मि. से 1 अप्रै. 16 घं. 29 मि.



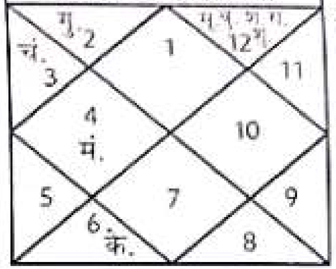
1 अप्रै. 16 घं. 30 मि. से 3 अप्रै. 1 घं. 24 मि.



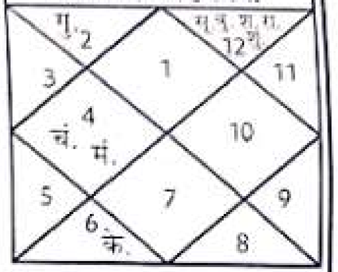
3 अप्रै. 1 घं. 25 मि. से 3 अप्रै. 18 घं. 20 मि.



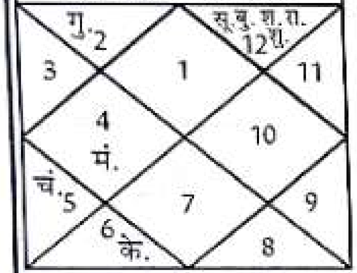
3 अप्रै. 18 घं. 21 मि. से 5 अप्रै. 23 घं. 24 मि.



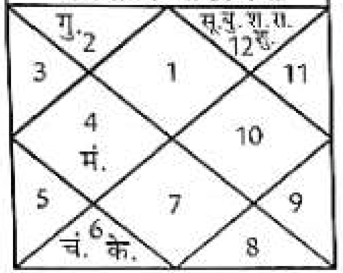
5 अप्रै. 23 घं. 25 मि. से 8 अप्रै. 7 घं. 54 मि.



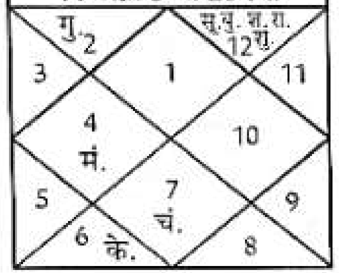
8 अप्रै. 7 घं. 55 मि. से 10 अप्रै. 19 घं. 3 मि.



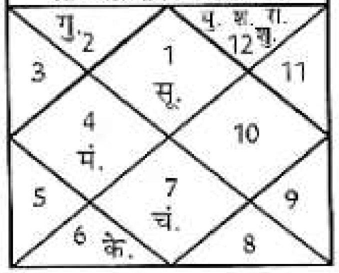
10 अप्रै. 19 घं. 4 मि. से 13 अप्रै. 7 घं. 37 मि.



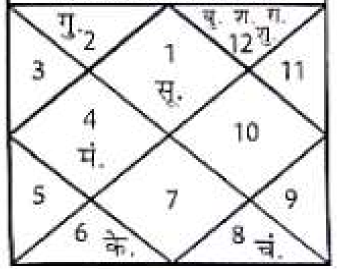
13 अप्रै. 7 घं. 38 मि. से 14 अप्रै. 3 घं. 20 मि.



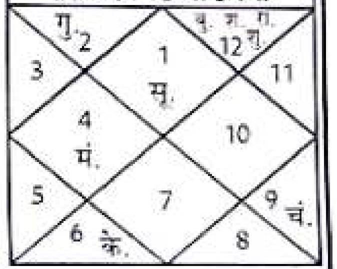
14 अप्रै. 3 घं. 21 मि. से 15 अप्रै. 20 घं. 26 मि.



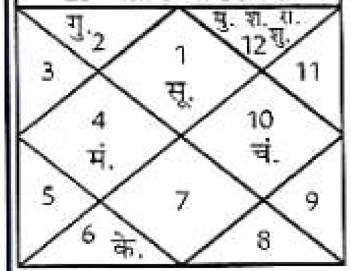
15 अप्रै. 20 घं. 27 मि. से 18 अप्रै. 8 घं. 20 मि.



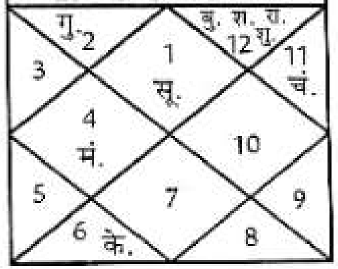
18 अप्रै. 8 घं. 21 मि. से 20 अप्रै. 18 घं. 3 मि.



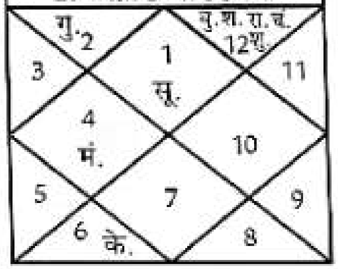
20 अप्रै. 18 घं. 4 मि. से 23 अप्रै. 0 घं. 30 मि.



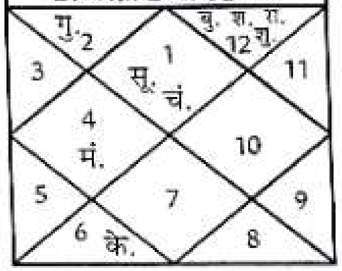
23 अप्रै. 0 घं. 31 मि. से 25 अप्रै. 3 घं. 24 मि.



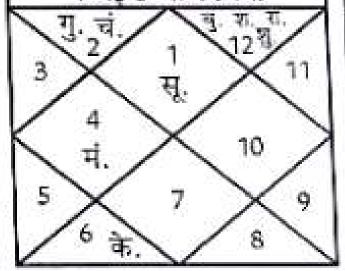
25 अप्रै. 3 घं. 25 मि. से 27 अप्रै. 3 घं. 38 मि.



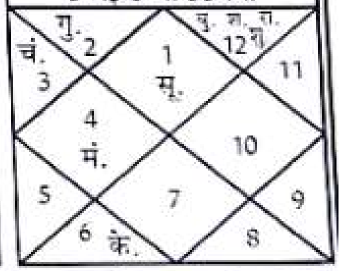
27 अप्रै. 3 घं. 39 मि. से 29 अप्रै. 2 घं. 52 मि.



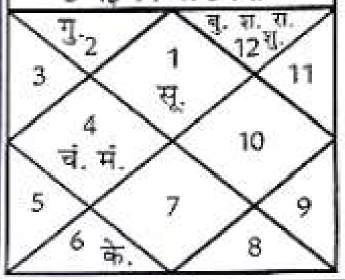
29 अप्रै. 2 घं. 53 मि. से 1 मई 3 घं. 14 मि.



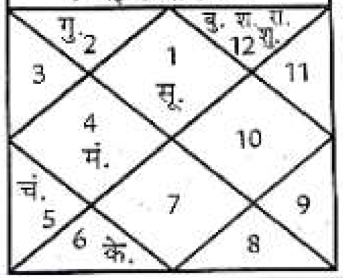
1 मई 3 घं. 15 मि. से 3 मई 6 घं. 36 मि.



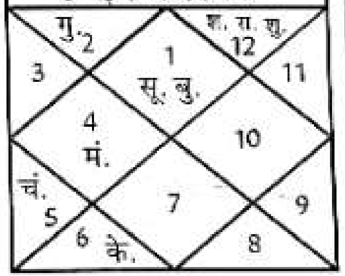
3 मई 6 घं. 37 मि. से 5 मई 14 घं. 0 मि.



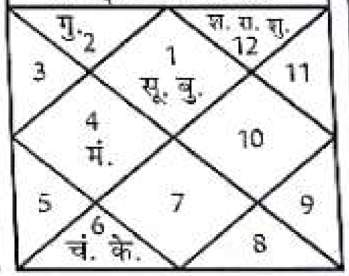
5 मई 14 घं. 1 मि. से 7 मई 4 घं. 5 मि.



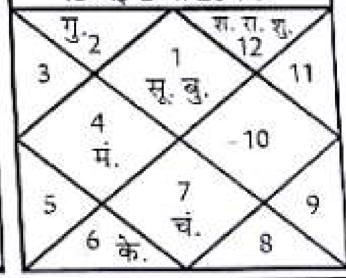
7 मई 4 घं. 6 मि. से 8 मई 0 घं. 56 मि.



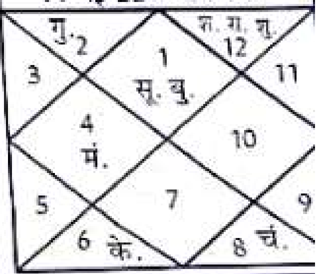
8 मई 0 घं. 57 मि. से 10 मई 13 घं. 41 मि.



10 मई 13 घं. 42 मि. से 13 मई 2 घं. 26 मि.

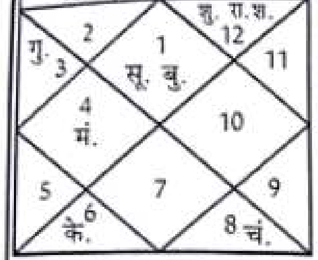


13 मई 2 घं. 27 मि. से 14 मई 22 घं. 35 मि.

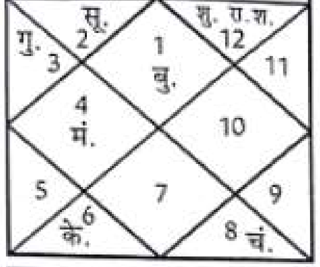


14 मई से 20 जून, सन् 2025 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

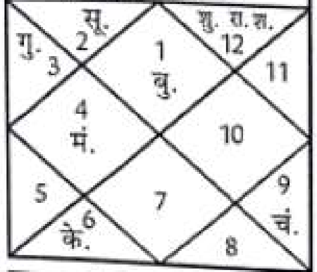
14 मई 22 घं. 36 मि. से 15 मई 0 घं. 11 मि.



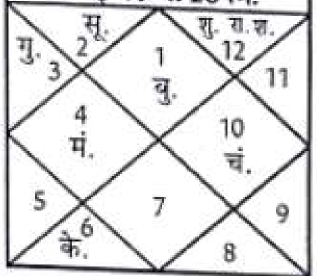
15 मई 0 घं. 12 मि. से 15 मई 14 घं. 6 मि.



15 मई 14 घं. 7 मि. से 18 मई 0 घं. 2 मि.



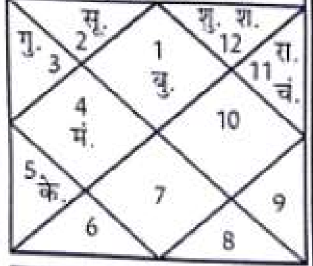
18 मई 0 घं. 3 मि. से 18 मई 19 घं. 28 मि.



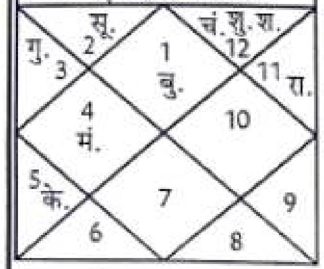
18 मई 19 घं. 29 मि. से 20 मई 7 घं. 34 मि.



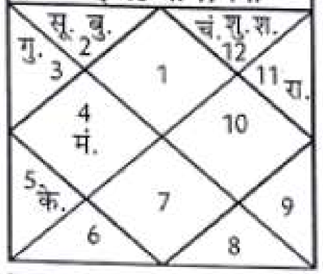
20 मई 7 घं. 35 मि. से 22 मई 12 घं. 7 मि.



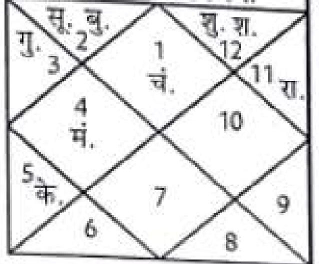
22 मई 12 घं. 8 मि. से 23 मई 12 घं. 59 मि.



23 मई 13 घं. 0 मि. से 24 मई 13 घं. 47 मि.



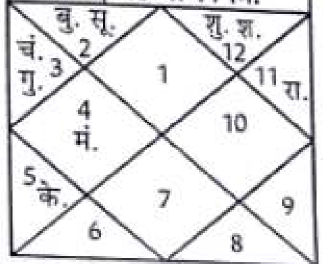
24 मई 13 घं. 48 मि. से 26 मई 13 घं. 39 मि.



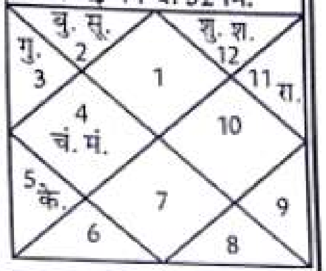
26 मई 13 घं. 40 मि. से 28 मई 13 घं. 35 मि.



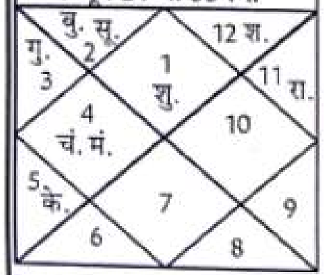
28 मई 13 घं. 36 मि. से 30 मई 15 घं. 41 मि.



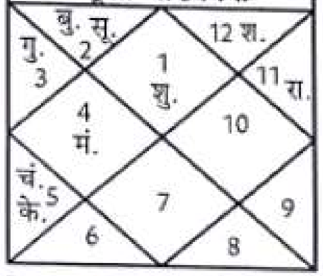
30 मई 15 घं. 42 मि. से 31 मई 11 घं. 32 मि.



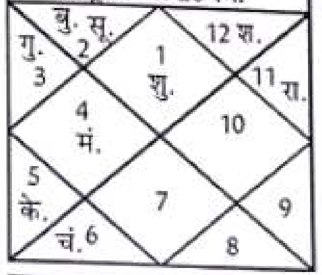
31 मई 11 घं. 33 मि. से 1 जून 21 घं. 35 मि.



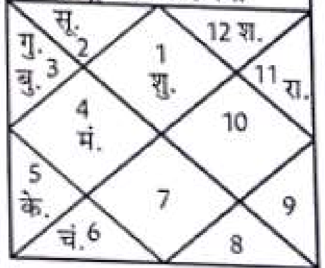
1 जून 21 घं. 36 मि. से 4 जून 7 घं. 34 मि.



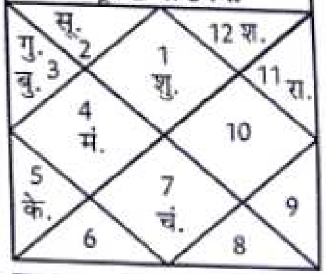
4 जून 7 घं. 35 मि. से 6 जून 9 घं. 26 मि.



6 जून 9 घं. 27 मि. से 6 जून 20 घं. 5 मि.



6 जून 20 घं. 6 मि. से 7 जून 2 घं. 8 मि.



7 जून 2 घं. 9 मि. से 9 जून 8 घं. 49 मि.



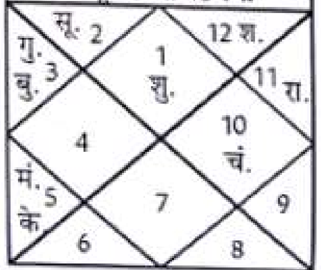
9 जून 8 घं. 50 मि. से 11 जून 20 घं. 9 मि.



11 जून 20 घं. 10 मि. से 14 जून 5 घं. 37 मि.



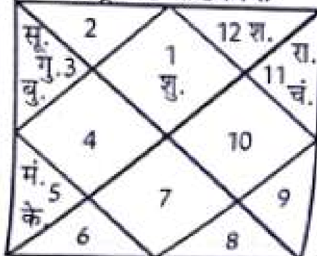
14 जून 5 घं. 38 मि. से 15 जून 6 घं. 43 मि.



15 जून 6 घं. 44 मि. से 16 जून 13 घं. 8 मि.



16 जून 13 घं. 9 मि. से 18 जून 18 घं. 34 मि.

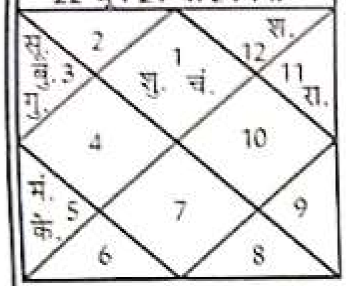


18 जून 18 घं. 35 मि. से 20 जून 21 घं. 43 मि.

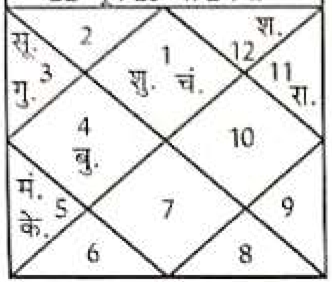


20 जून से 2 अगस्त, सन् 2025 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

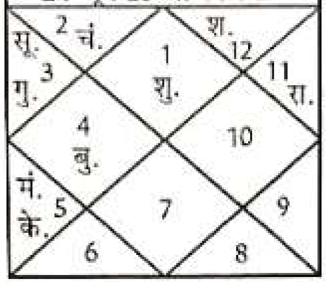
20 जून 21 घं. 44 मि. से
22 जून 21 घं. 31 मि.



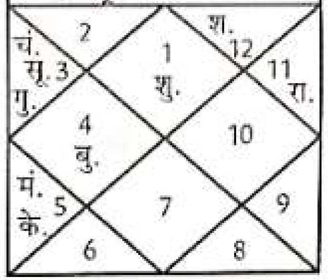
22 जून 21 घं. 32 मि. से
22 जून 23 घं. 2 मि.



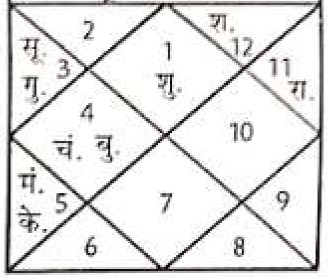
22 जून 23 घं. 3 मि. से
24 जून 23 घं. 44 मि.



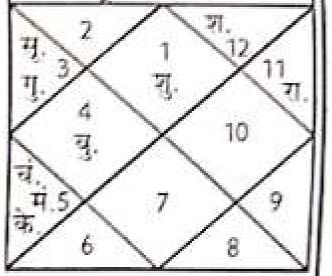
24 जून 23 घं. 45 मि. से
27 जून 1 घं. 38 मि.



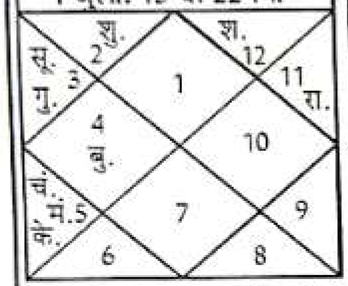
27 जून 1 घं. 39 मि. से
29 जून 6 घं. 33 मि.



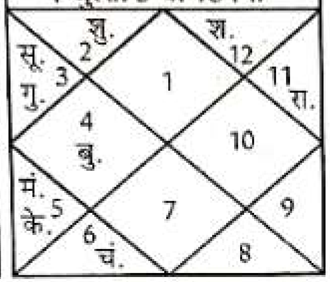
29 जून 6 घं. 34 मि. से
29 जून 14 घं. 9 मि.



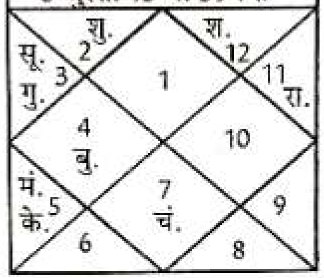
29 जून 14 घं. 10 मि. से
1 जुला. 15 घं. 22 मि.



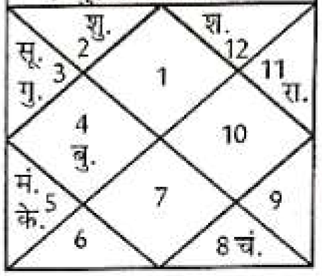
1 जुला. 15 घं. 23 मि. से
4 जुला. 3 घं. 18 मि.



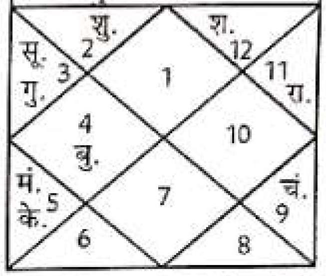
4 जुला. 3 घं. 19 मि. से
6 जुला. 15 घं. 59 मि.



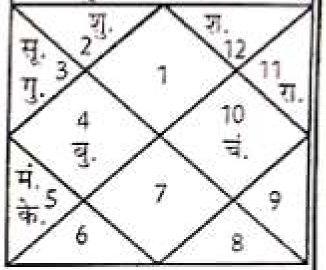
6 जुला. 16 घं. 0 मि. से
9 जुला. 3 घं. 14 मि.



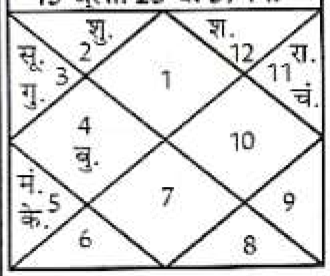
9 जुला. 3 घं. 15 मि. से
11 जुला. 12 घं. 7 मि.



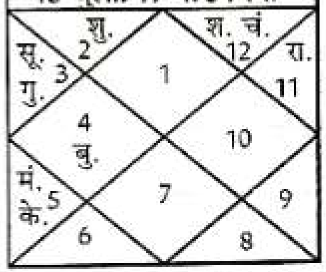
11 जुला. 12 घं. 8 मि. से
13 जुला. 18 घं. 52 मि.



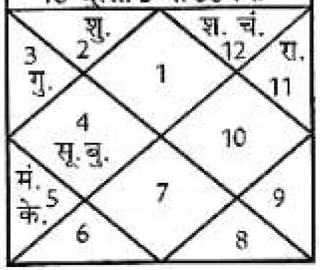
13 जुला. 18 घं. 53 मि. से
15 जुला. 23 घं. 57 मि.



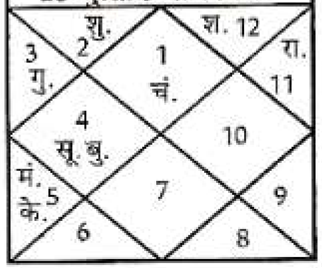
15 जुला. 23 घं. 58 मि. से
16 जुला. 17 घं. 31 मि.



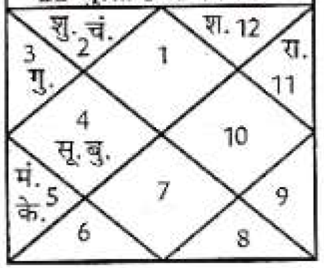
16 जुला. 17 घं. 32 मि. से
18 जुला. 3 घं. 38 मि.



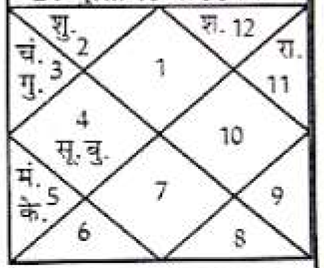
18 जुला. 3 घं. 39 मि. से
20 जुला. 6 घं. 11 मि.



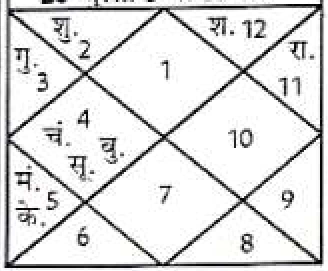
20 जुला. 6 घं. 12 मि. से
22 जुला. 8 घं. 14 मि.



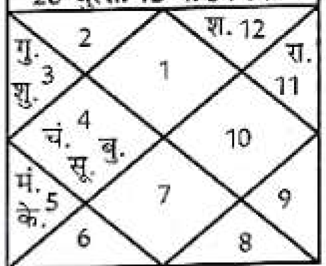
22 जुला. 8 घं. 15 मि. से
24 जुला. 10 घं. 58 मि.



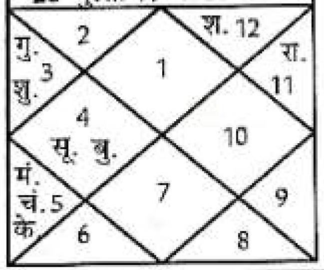
24 जुला. 10 घं. 59 मि. से
26 जुला. 8 घं. 56 मि.



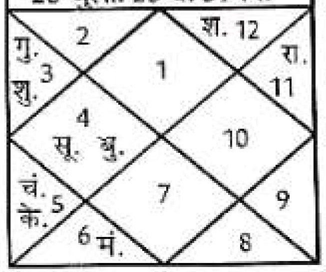
26 जुला. 8 घं. 57 मि. से
26 जुला. 15 घं. 51 मि.



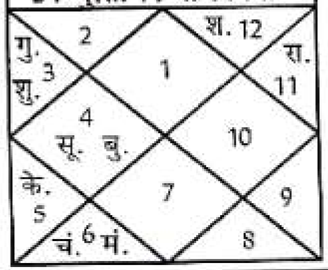
26 जुला. 15 घं. 52 मि. से
28 जुला. 19 घं. 57 मि.



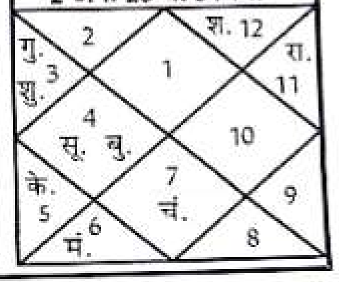
28 जुला. 19 घं. 58 मि. से
28 जुला. 23 घं. 59 मि.



29 जुला. 0 घं. 0 मि. से
31 जुला. 11 घं. 14 मि.



31 जुला. 11 घं. 15 मि. से
2 अग. 23 घं. 51 मि.

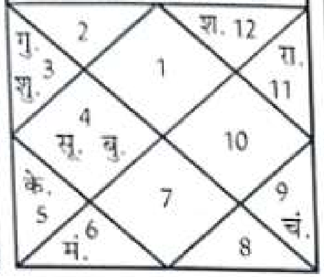


2 अगस्त से 15 सितम्बर, सन् 2025 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

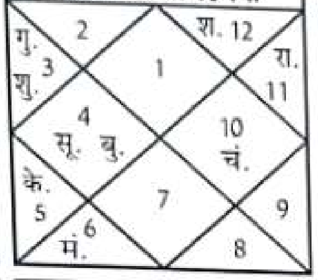
2 अग. 23 घं. 52 मि. से 5 अग. 11 घं. 21 मि.



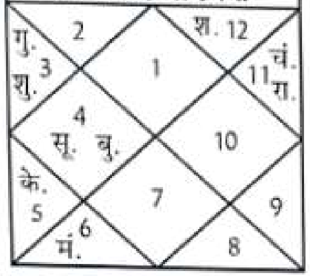
5 अग. 11 घं. 22 मि. से 7 अग. 20 घं. 10 मि.



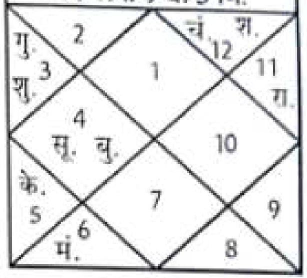
7 अग. 20 घं. 11 मि. से 10 अग. 2 घं. 10 मि.



10 अग. 2 घं. 11 मि. से 12 अग. 6 घं. 9 मि.



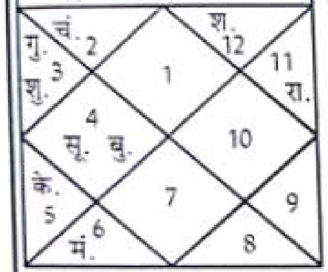
12 अग. 6 घं. 10 मि. से 14 अग. 9 घं. 5 मि.



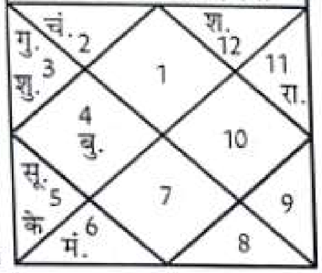
14 अग. 9 घं. 6 मि. से 16 अग. 11 घं. 42 मि.



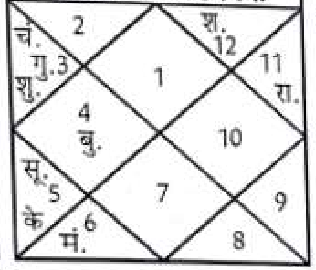
16 अग. 11 घं. 43 मि. से 17 अग. 1 घं. 51 मि.



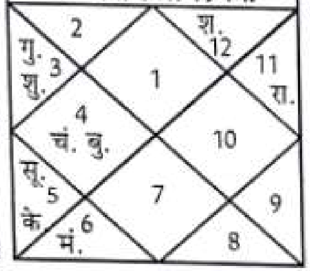
17 अग. 1 घं. 52 मि. से 18 अग. 14 घं. 39 मि.



18 अग. 14 घं. 40 मि. से 20 अग. 18 घं. 34 मि.



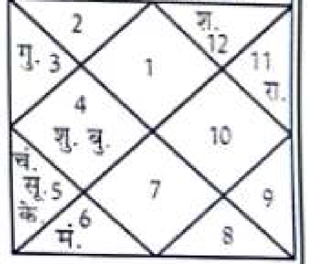
20 अग. 18 घं. 35 मि. से 21 अग. 1 घं. 19 मि.



21 अग. 1 घं. 20 मि. से 23 अग. 0 घं. 15 मि.



23 अग. 0 घं. 16 मि. से 25 अग. 8 घं. 27 मि.



25 अग. 8 घं. 28 मि. से 27 अग. 19 घं. 20 मि.



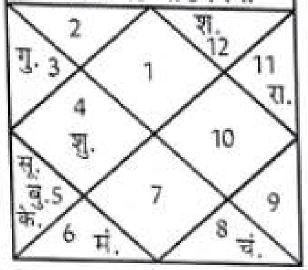
27 अग. 19 घं. 21 मि. से 30 अग. 7 घं. 52 मि.



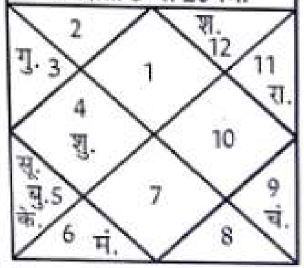
30 अग. 7 घं. 53 मि. से 30 अग. 16 घं. 43 मि.



30 अग. 16 घं. 44 मि. से 1 सितं. 19 घं. 54 मि.



1 सितं. 19 घं. 55 मि. से 4 सितं. 5 घं. 20 मि.



4 सितं. 5 घं. 21 मि. से 6 सितं. 11 घं. 20 मि.



6 सितं. 11 घं. 21 मि. से 8 सितं. 14 घं. 28 मि.



8 सितं. 14 घं. 29 मि. से 10 सितं. 16 घं. 2 मि.



10 सितं. 16 घं. 3 मि. से 12 सितं. 17 घं. 29 मि.



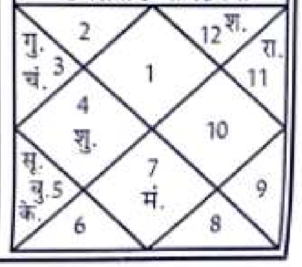
12 सितं. 17 घं. 30 मि. से 13 सितं. 21 घं. 21 मि.



13 सितं. 21 घं. 22 मि. से 14 सितं. 20 घं. 2 मि.

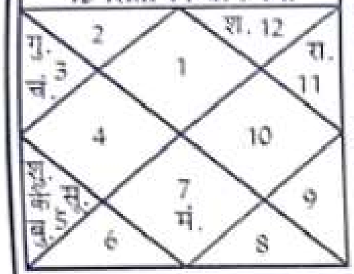


14 सितं. 20 घं. 3 मि. से 15 सितं. 0 घं. 16 मि.

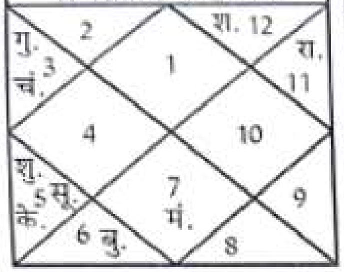


15 सितम्बर से 24 अक्तूबर, सन् 2025 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

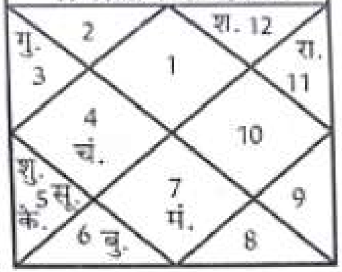
15 सितं. 0 घं. 17 मि. से 15 सितं. 11 घं. 7 मि.



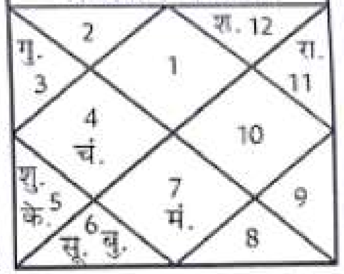
15 सितं. 11 घं. 8 मि. से 17 सितं. 0 घं. 27 मि.



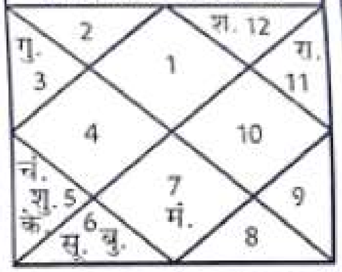
17 सितं. 0 घं. 28 मि. से 17 सितं. 1 घं. 46 मि.



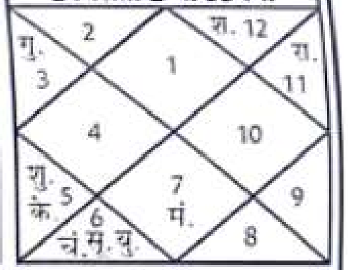
17 सितं. 1 घं. 47 मि. से 19 सितं. 7 घं. 4 मि.



19 सितं. 7 घं. 5 मि. से 21 सितं. 15 घं. 56 मि.



21 सितं. 15 घं. 57 मि. से 24 सितं. 2 घं. 55 मि.



24 सितं. 2 घं. 56 मि. से 26 सितं. 15 घं. 22 मि.



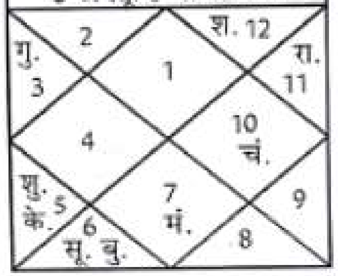
26 सितं. 15 घं. 23 मि. से 29 सितं. 3 घं. 53 मि.



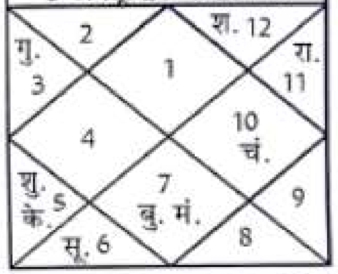
29 सितं. 3 घं. 54 मि. से 1 अक्तू. 14 घं. 26 मि.



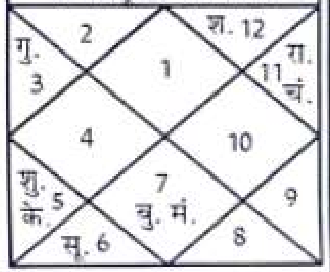
1 अक्तू. 14 घं. 27 मि. से 3 अक्तू. 0 घं. 42 मि.



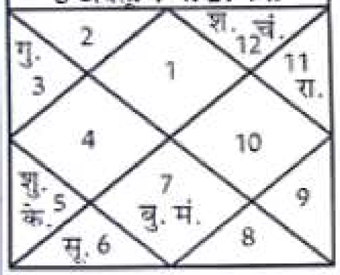
3 अक्तू. 0 घं. 43 मि. से 3 अक्तू. 21 घं. 26 मि.



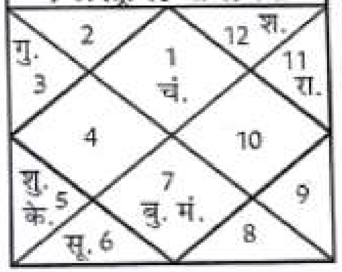
3 अक्तू. 21 घं. 27 मि. से 6 अक्तू. 0 घं. 44 मि.



6 अक्तू. 0 घं. 45 मि. से 8 अक्तू. 1 घं. 27 मि.



8 अक्तू. 1 घं. 28 मि. से 9 अक्तू. 10 घं. 47 मि.



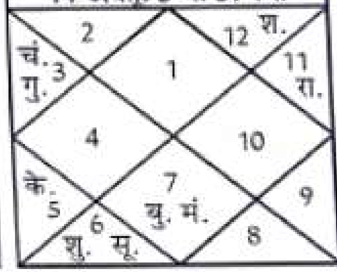
9 अक्तू. 10 घं. 48 मि. से 10 अक्तू. 1 घं. 22 मि.



10 अक्तू. 1 घं. 23 मि. से 12 अक्तू. 2 घं. 23 मि.



12 अक्तू. 2 घं. 24 मि. से 14 अक्तू. 5 घं. 57 मि.



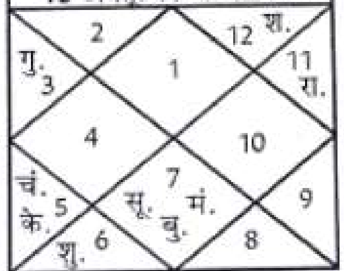
14 अक्तू. 5 घं. 58 मि. से 16 अक्तू. 12 घं. 41 मि.



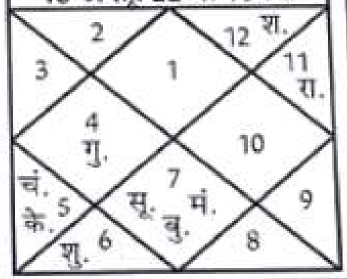
16 अक्तू. 12 घं. 42 मि. से 17 अक्तू. 13 घं. 45 मि.



17 अक्तू. 13 घं. 46 मि. से 18 अक्तू. 19 घं. 42 मि.



18 अक्तू. 19 घं. 43 मि. से 18 अक्तू. 22 घं. 10 मि.



18 अक्तू. 22 घं. 11 मि. से 21 अक्तू. 9 घं. 35 मि.



21 अक्तू. 9 घं. 36 मि. से 23 अक्तू. 22 घं. 4 मि.

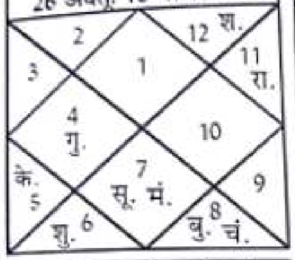


23 अक्तू. 22 घं. 5 मि. से 24 अक्तू. 12 घं. 36 मि.

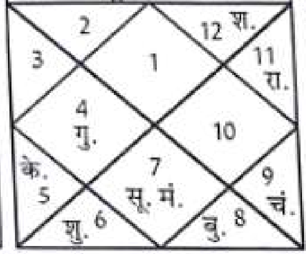


24 अक्तूबर से 5 दिसम्बर, सन् 2025 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

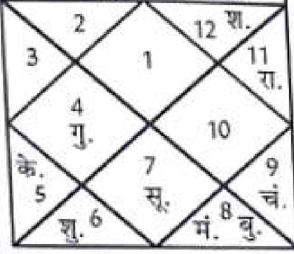
24 अक्तू. 12 घं. 37 मि. से
26 अक्तू. 10 घं. 45 मि.



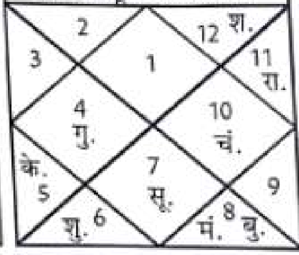
26 अक्तू. 10 घं. 46 मि. से
27 अक्तू. 15 घं. 41 मि.



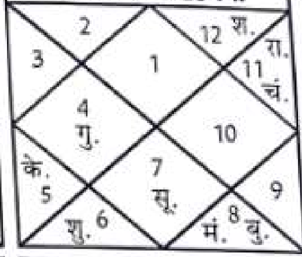
27 अक्तू. 15 घं. 42 मि. से
28 अक्तू. 22 घं. 13 मि.



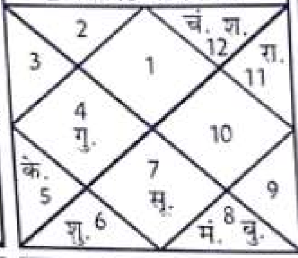
28 अक्तू. 22 घं. 14 मि. से
31 अक्तू. 6 घं. 47 मि.



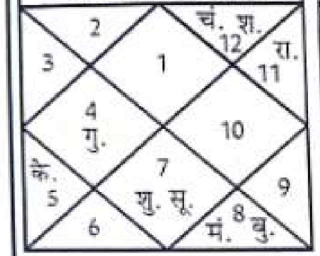
31 अक्तू. 6 घं. 48 मि. से
2 नवं. 11 घं. 25 मि.



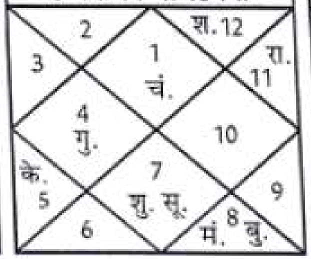
2 नवं. 11 घं. 26 मि. से
2 नवं. 13 घं. 14 मि.



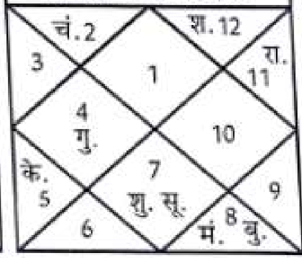
2 नवं. 13 घं. 15 मि. से
4 नवं. 12 घं. 33 मि.



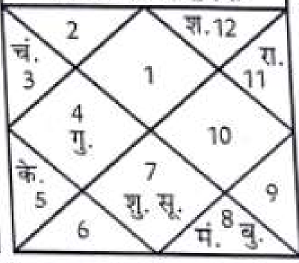
4 नवं. 12 घं. 34 मि. से
6 नवं. 11 घं. 46 मि.



6 नवं. 11 घं. 47 मि. से
8 नवं. 11 घं. 13 मि.



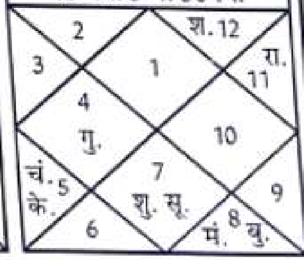
8 नवं. 11 घं. 14 मि. से
10 नवं. 13 घं. 2 मि.



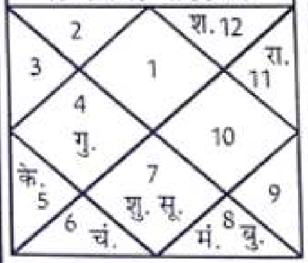
10 नवं. 13 घं. 3 मि. से
12 नवं. 18 घं. 34 मि.



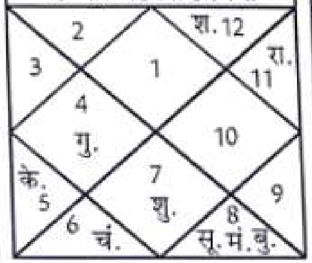
12 नवं. 18 घं. 35 मि. से
15 नवं. 3 घं. 50 मि.



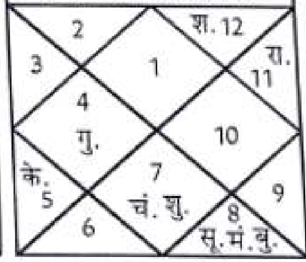
15 नवं. 3 घं. 51 मि. से
16 नवं. 13 घं. 36 मि.



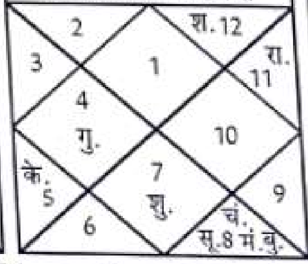
16 नवं. 13 घं. 37 मि. से
17 नवं. 15 घं. 34 मि.



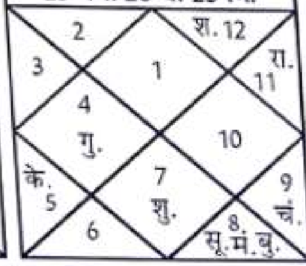
17 नवं. 15 घं. 35 मि. से
20 नवं. 4 घं. 13 मि.



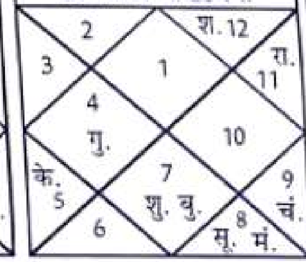
20 नवं. 4 घं. 14 मि. से
22 नवं. 16 घं. 45 मि.



22 नवं. 16 घं. 46 मि. से
23 नवं. 20 घं. 25 मि.



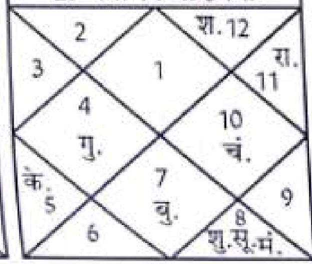
23 नवं. 20 घं. 26 मि. से
25 नवं. 4 घं. 25 मि.



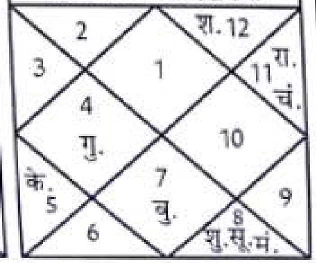
25 नवं. 4 घं. 26 मि. से
26 नवं. 11 घं. 20 मि.



26 नवं. 11 घं. 21 मि. से
27 नवं. 14 घं. 6 मि.



27 नवं. 14 घं. 7 मि. से
29 नवं. 20 घं. 32 मि.



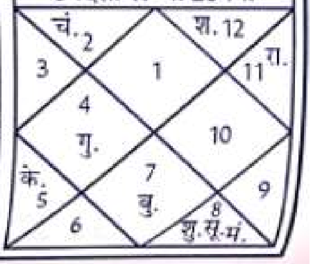
29 नवं. 20 घं. 33 मि. से
1 दिसं. 23 घं. 17 मि.



1 दिसं. 23 घं. 18 मि. से
3 दिसं. 23 घं. 13 मि.

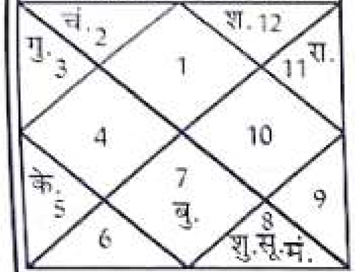


3 दिसं. 23 घं. 14 मि. से
5 दिसं. 17 घं. 26 मि.

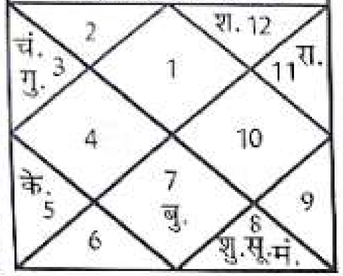


5 दिसम्बर, सन् 2025 ई. से 13 जनवरी, सन् 2026 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

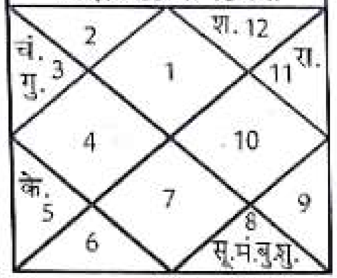
5 दिसं. 17 घं. 27 मि. से 5 दिसं. 22 घं. 14 मि.



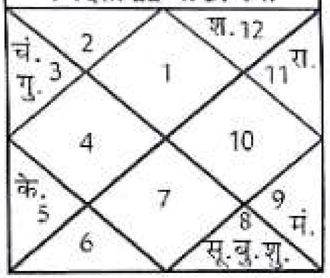
5 दिसं. 22 घं. 15 मि. से 6 दिसं. 20 घं. 25 मि.



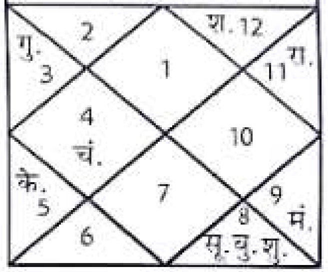
6 दिसं. 20 घं. 26 मि. से 7 दिसं. 20 घं. 15 मि.



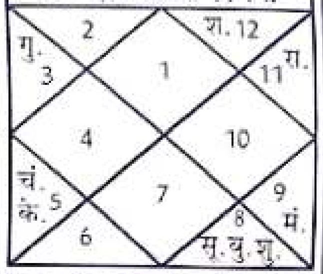
7 दिसं. 20 घं. 16 मि. से 7 दिसं. 22 घं. 37 मि.



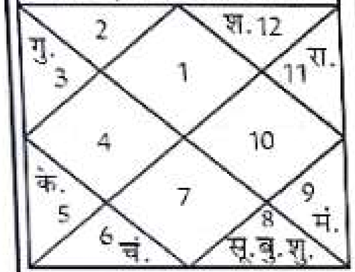
7 दिसं. 22 घं. 38 मि. से 10 दिसं. 2 घं. 21 मि.



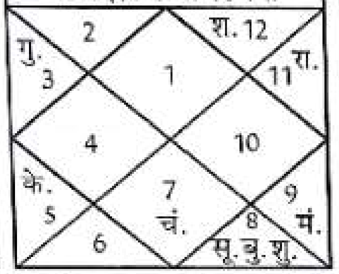
10 दिसं. 2 घं. 22 मि. से 12 दिसं. 10 घं. 19 मि.



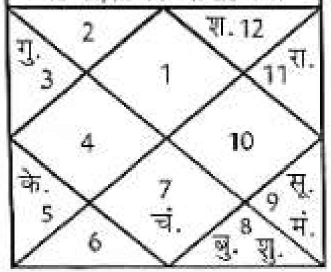
12 दिसं. 10 घं. 20 मि. से 14 दिसं. 21 घं. 40 मि.



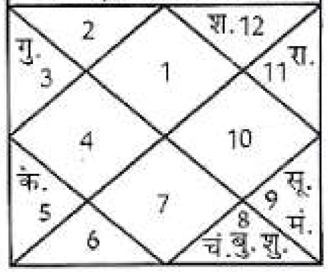
14 दिसं. 21 घं. 41 मि. से 16 दिसं. 4 घं. 19 मि.



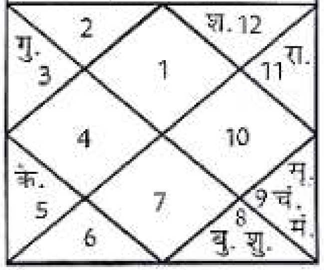
16 दिसं. 4 घं. 20 मि. से 17 दिसं. 10 घं. 25 मि.



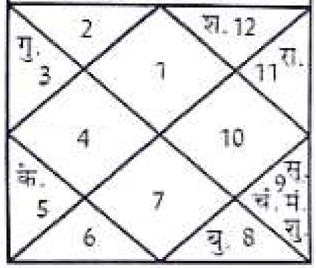
17 दिसं. 10 घं. 26 मि. से 19 दिसं. 22 घं. 50 मि.



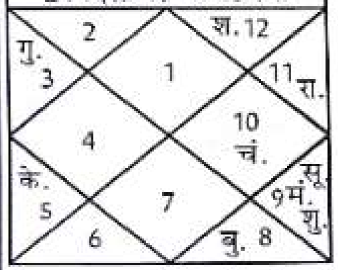
19 दिसं. 22 घं. 51 मि. से 20 दिसं. 7 घं. 44 मि.



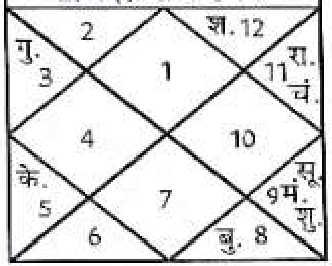
20 दिसं. 7 घं. 45 मि. से 22 दिसं. 10 घं. 5 मि.



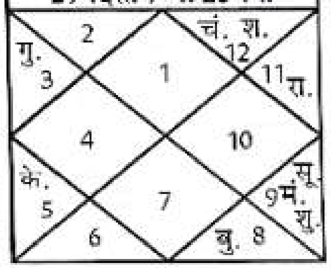
22 दिसं. 10 घं. 6 मि. से 24 दिसं. 19 घं. 45 मि.



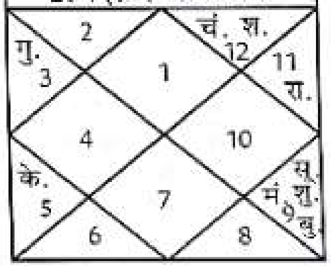
24 दिसं. 19 घं. 46 मि. से 27 दिसं. 3 घं. 9 मि.



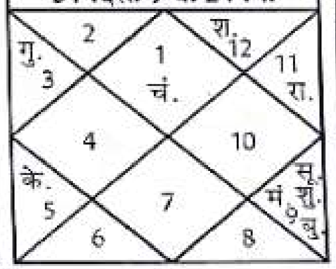
27 दिसं. 3 घं. 10 मि. से 29 दिसं. 7 घं. 23 मि.



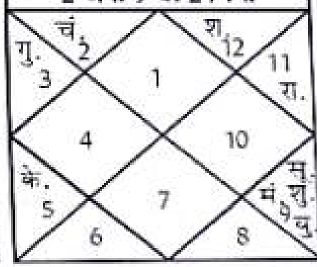
29 दिसं. 7 घं. 24 मि. से 29 दिसं. 7 घं. 40 मि.



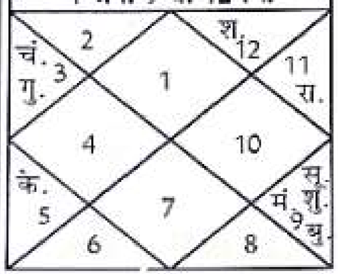
29 दिसं. 7 घं. 41 मि. से 31 दिसं. 9 घं. 21 मि.



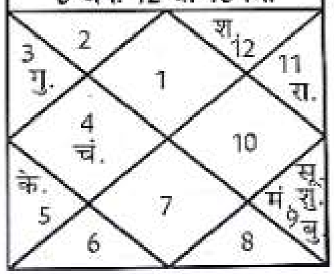
31 दिसं. 9 घं. 22 मि. से 2 जन. 9 घं. 24 मि.



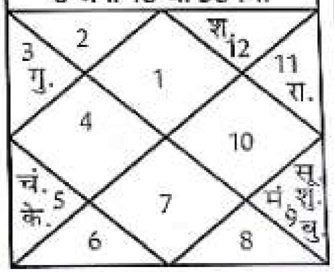
2 जन. 9 घं. 25 मि. से 4 जन. 9 घं. 42 मि.



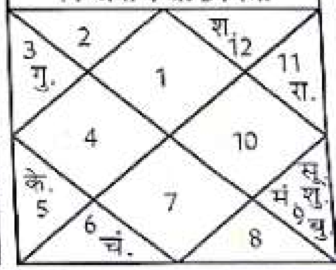
4 जन. 9 घं. 43 मि. से 6 जन. 12 घं. 16 मि.



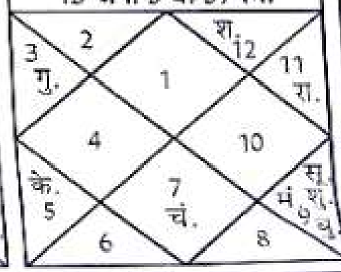
6 जन. 12 घं. 17 मि. से 8 जन. 18 घं. 38 मि.



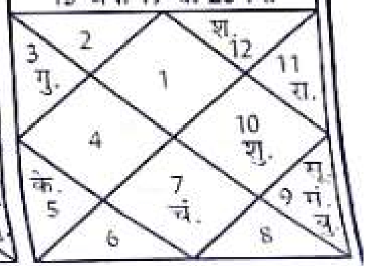
8 जन. 18 घं. 39 मि. से 11 जन. 4 घं. 51 मि.



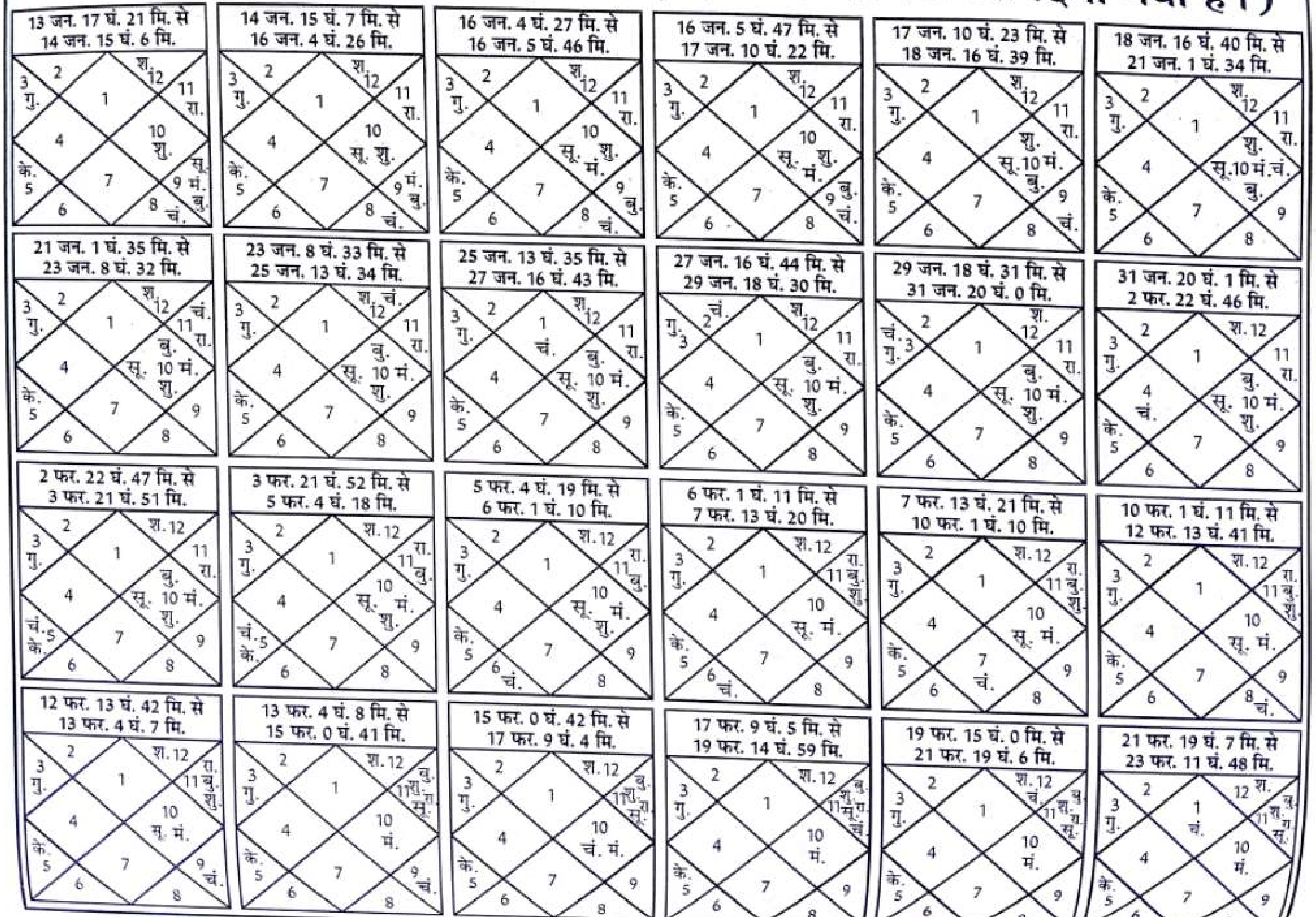
11 जन. 4 घं. 52 मि. से 13 जन. 3 घं. 57 मि.



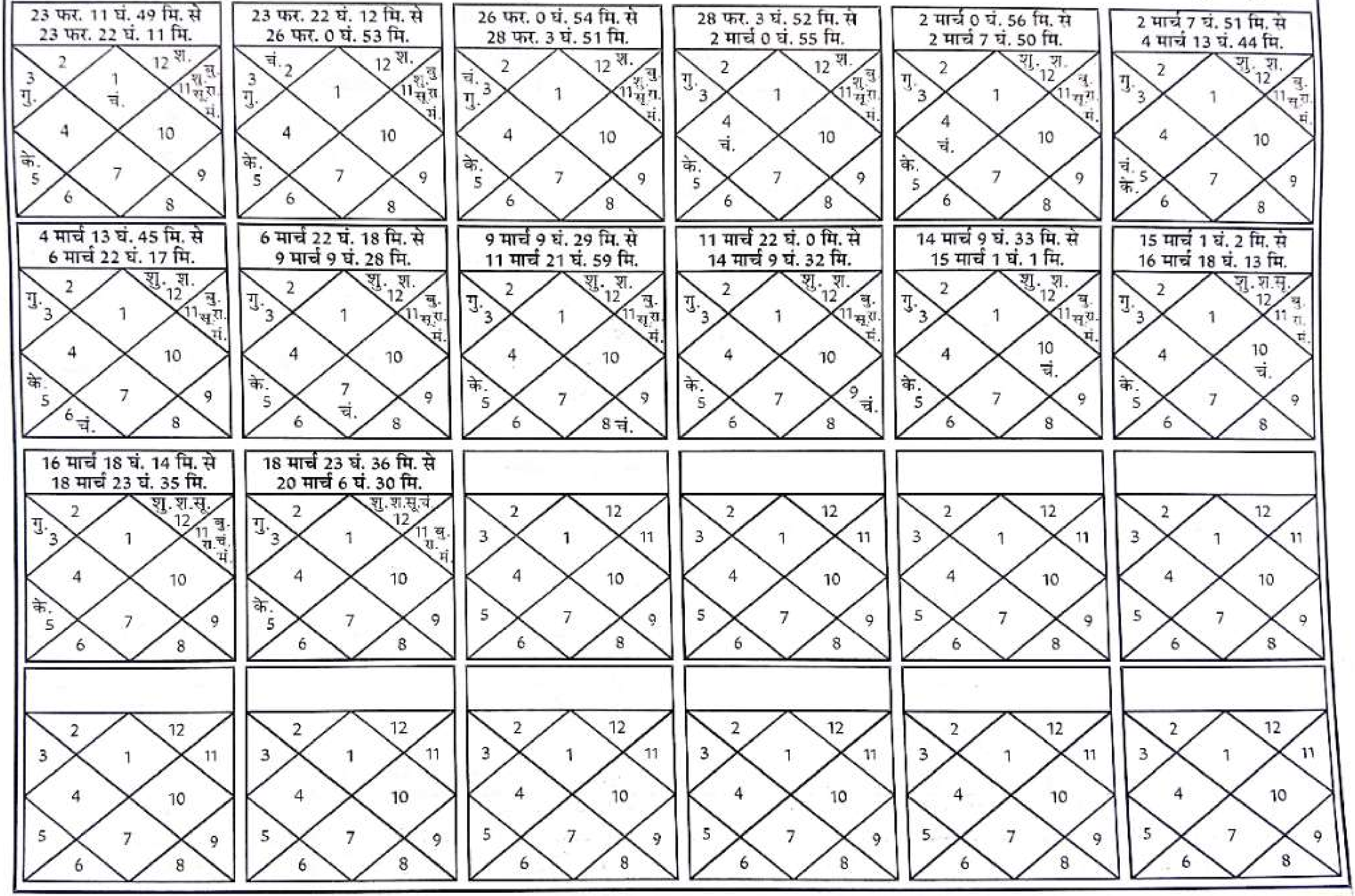
13 जन. 3 घं. 58 मि. से 13 जन. 17 घं. 20 मि.



13 जनवरी से 23 फरवरी, सन् 2026 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)



23 फरवरी से 20 मार्च, सन् 2026 ई. (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)



शनि की साढेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पादविचार और गुरु-राहु का गोचरफल (सं. 2082 वि.)

लेखक–इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु-पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। **यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख-सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ; कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढेसाती किसे कहते हैं ?

शनि की गोचर स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की **जन्मराशि किंवा नामराशि** से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक '**साढेसाती**' के प्रभाव में रहता है, अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है–

''द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः।
सार्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।।''

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इस प्रकार लिखा है–

''राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्।।''

''शनि की ढैय्या'' किसे कहते हैं ? यह भी जान लें–गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हों तो उस व्यक्तिविशेष पर ''**शनि की ढैय्या**'' चल रही है, ऐसा जानें।

ढैय्या का फल इस प्रकार है–

''ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध-विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।''

ध्यान दें–शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु-शुक्र स्थितिविशेष-विचार से शुभ एवं शनि-मंगल अशुभ फलप्रद माने गये हैं–

''तेषामतीव शुभदौ गुरु-दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत-क्षितिभौ भवेताम्।।''

–(फलितमार्त्तण्ड)

शनि के लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे '**मन्द**' किंवा '**शनैश्चरति' इति शनिः**' की संज्ञा दी गयी है। लेकिन शनि वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपने अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी-कभी शनि अपनी वक्र-मार्ग गति एवं अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष के अनुसार तत्तद्राशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को जन्म देता है।

अनेकदा **शनि-मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि-सम्बन्ध बना लें तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं।** ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु-रक्त-पित्त-विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देशविशेष के लिए

राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है–

''क्रूराः वक्राः महाक्रूराः।''

शनि-पादविचार

''जन्मांग-रुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपंचनन्दे रजतस्य पादम्।
त्रि-सप्त-दिक् ताम्रपादं वदन्ति शेषेषु राशिष्विह लौहपादम्।।''

पादफल-विचार–

''लौहे धनविनाशः स्यात् सर्वं दुःखं च कांचने।
ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं च राजते भवेत्।।''

शनि के राशिपरिवर्तन के समय तात्कालिक चंद्र जन्मराशि से यदि 1, 6, 11 स्थान में हो तो स्वर्णपाद; 2, 5, 9 स्थान में हो तो रजतपाद; 3, 7, 10 स्थान में चन्द्र हो तो ताम्रपाद। यदि शनि के राशि- परिवर्तन के समय चन्द्र 4, 8, 12 में हो तो लौहपाद होता है। **स्वर्णपाद सभी प्रकार के दुःखों को देने वाला, रजतपाद सुख-सौभाग्यप्रद, ताम्रपाद मध्यम फलद एवं लौहपाद धन-धान्य का नाशक होता है।**

शनि का मीन राशि में प्रवेश

गत संवत् 2081 वि. में 29 मार्च, सन् 2025 ई. को 21 घं. 43 मि. पर रेवती नक्षत्र एवं मीनस्थ चन्द्र के समय शनिदेव मीन राशि में आकर आगे वक्र-मार्गादि गति से विचरण करते हुए सं. 2082 वि. के अन्त तक मीनराशि में ही रहेंगे।

मीन राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल
(29 मार्च, सन् 2025 ई. से संवत् 2082 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	ढैय्या	लौह	--	--	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।
धनु	ढैय्या	लौह	--	--	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।
	कुम्भ	साढेसाती	रजत	पाद	व्यपार में प्रगति, धन-धान्य-उतरती समृद्धि, अनेक सुख-सम्पदा-लाभ, प्रभावक्षेत्र बढ़े, घर में मंगलकृत्य हों, राजपक्ष से सम्मान।
मीन	साढेसाती	सुवर्ण	हृदय	--	निजीजन-विरोध, शत्रु बढ़ें, गृहक्लेश, अनेकविध रोगों से परेशानी, वृथा व्यय, धननाश।
मेष	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री-पुत्र-पशु-पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय-कष्ट, आर्थिक संकट भी रहे।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का सामान्यतया अशुभ फल कब होगा–

मेष राशि वालों के लिए बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहले अढाई वर्ष, मिथुन को अन्त के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहले 5 वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहले 5

वर्ष, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अन्तिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारम्भ के अढाई वर्ष, मकर को पहले 5 वर्ष, उनमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुम्भ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषत: अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभ फल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीजमन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा–दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में **'नीलम'** रत्न एवं **'शनियन्त्र'** धारण करना भी आश्चर्यजनक रूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व किसी दैवज्ञ का परामर्श लेकर शनि के अंशादि का अध्ययन करवाना श्रेयस्कर होगा।

शनि का बीज मन्त्र–"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:।"

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले **"अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर-नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि-मन्त्रजापमहं करोमि"**–इस प्रकार संकल्प करके शनि-मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलिवेला में) शनि-मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलायें।

मन्त्रजाप की विधि–अनुष्ठान शनिवार को करें। सूर्यास्त-समय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर, पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200-200 ग्राम लेकर एक अंजलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लाल चन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर **"ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:"**–इस मन्त्र का कुल 23 हज़ार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी है, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटा) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें–

"ॐ नम: कृष्णाय नीलाय शिति-कण्ठनिभाय च।
नम: कालाग्नि-रूपाय कृतान्ताय च ते नम:।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद **"दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग"** से नमस्कार करके घर को जायें। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) **'नीली'** या **'नीलम'** नग धारण करना भी ठीक रहेगा।

'नीलम' रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष-निवारण के लिए अनेक व्यक्ति **'नीलम'** धारण करते हैं, परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध **'नीलम'** रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले-बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहुमूल्य (महंगा) होता है। अत: सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में **'बिच्छू-बूटी'** की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छू-बूटी हिमाचल प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अत: इसका नाम बिच्छू-बूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रात:(यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाये तो अत्युत्तम) बिच्छू-बूटी की जड़ उखाड़कर ले आयें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमन्त्रण दे आयें। इस जड़ के टुकड़े को चांदी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यक्ति का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्त्रवन्तु न:। शं शनये नम: ॐ।।"

शनिजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ शनैश्चर-स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

"ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमन्दिर या घर में भी बैठकर प्रात: करने से साढेसाती व ढैय्या की दु:खद पीड़ा नहीं होती है, अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल–परिहारार्थ तुलादान करायें–

विधि–शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर या शनैश्चरी अमावस/शनिवार को दिन में लगभग 11/12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (माह), जौ, मूंग आदि सात अनाजों से अपने वजन के बराबर तौलकर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणासहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके, दान कर दें।

नोट–तुलादान से पहले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह पहले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

गुरु का वृष राशि में प्रवेश

संवत् 2081 वि. में 1 मई, सन् 2024 ई. को 12 घं. 55 मि. (I.S.T.) पर श्रवण नक्षत्र एवं मकर राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव वृषराशि में प्रविष्ट होकर सं. 2081 वि. के अन्त तक किंवा आगे सं. 2082 वि. में 13 मई, 2025 ई. तक वृषराशि में ही रहेंगे।

वृषस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(संवत् 2082 वि. के प्रारंभ से 13 मई, 2025 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	आधि–व्याधि	भय	धन–लाभ	शरीर –कष्ट	धन–हानि	सुख	रोग	सम्मान	धन–हानि	धन–लाभ	धन–हानि	प्रगति

गुरु का मिथुन राशि में प्रवेश

संवत् 2082 वि. में 14 मई, 2025 ई. को 22 घं. 36 मि. (I.S.T.) पर ज्येष्ठा नक्षत्र एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र के समय गुरुदेव मिथुन राशि में प्रविष्ट होकर 17 अक्तू., 2025 ई. में तक मिथुन राशि में ही रहेंगे।

मिथुनस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(14 मई से 17 अक्तू., 2025 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	प्रगति	आधि–व्याधि	भय	धन–लाभ	शरीर –कष्ट	धन–हानि	सुख	रोगभय	सम्मान	धन–नाश	धन–लाभ	धन–हानि

गुरु का कर्क राशि में प्रवेश

सं. 2082 वि. में 18 अक्तूबर, सन् 2025 ई. शनिवार को 19 घं. 43 मि. पर उ. फा. नक्षत्र एवं सिंह राशिस्थ चन्द्र के समय गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण एवं कर्क (अपनी उच्च) राशि में प्रवेश करेगा एवं यह सं. 2082 वि. में 4 दिसम्बर, 2025 ई. तक कर्क राशि में ही रहेगा।

कर्क राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल

(18 अक्तू. से 4 दिसं., 2025 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन-हानि	शरीर -कष्ट	धन-लाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धन-हानि	धन-लाभ	धन-नाश	सम्मान	रोगभय	सुखाप्ति

गुरु का वक्रगति से पुनः मिथुनराशि में प्रवेश

5 दिसम्बर, सन् 2025 ई. को वक्रगति से गुरु पुनर्वसु के तृतीय चरण एवं मिथुन राशि में मृगशिरा नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्र के समय 17 घं. 27 मि. पर प्रविष्ट होगा। यह मिथुन राशिस्थ गुरु सं. 2082 वि. के अन्त किंवा कुछ आगे तक भी मिथुन राशि में ही रहेगा।

मिथुन राशिस्थ-गुरु का शुभाशुभ फल

(5 दिसं., 2025 ई. से सं. 2082 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	शरीर -कष्ट	धन-लाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धन-हानि	धन-लाभ	धन-नाश	सम्मान	रोगभय	सुखाप्ति	धन-हानि

गुरुजन्य नेष्टफल-शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह जन्मांग या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो–गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हज़ार जाप करें। **गुरु का जपनीय बीजमन्त्र यह है–'' ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।''** केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला '**पुखराज**' 5/7 रत्ती पुरुष दाएं और स्त्रियां बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

राहु का मीन राशि में प्रवेश

सं. 2080 वि. में 30 अक्तू. 2023 ई. को 17 घं. 0 मि. (I.S.T.) पर कृत्तिका नक्षत्र एवं वृषस्थ चन्द्र के समय राहु मीनराशि में प्रविष्ट हुआ था, जोकि सं. 2081 वि. के अन्त एवं संवत् 2082 वि. में 17 मई, 2025 ई. तक मीन राशि में ही रहेगा।

मीन राशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(सं. 2082 वि. के प्रारंभ से 17 मई, 2025 ई. तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	विनाश	धन-लाभ	कलह	दुःख	धन-हानि	राजभय	सुख	धन-क्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय

राहु का कुम्भ राशि में प्रवेश

सं. 2082 वि. में 18 मई, 2025 ई. को 19 घं. 29 मि. (I.S.T.) पर श्रवण नक्षत्र एवं मकरस्थ चन्द्र के समय राहु कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर सं. 2082 वि. के अन्त तक किंवा कुछ आगे तक भी कुम्भ राशि में ही रहेगा।

कुम्भ राशिस्थ राहु का शुभाशुभ फल

(18 मई, 2025 ई. से सं. 2082 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
फल	धन-लाभ	कलह	दुःख	धन-नाश	राजभय	महासुख	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश

राहु जन्मांग या गोचर में नेष्टफलप्रद हो तो–कम्बल, तिल-तैल, नारियल, लौंग एवं काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के बीजमन्त्र (**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**) का 18हज़ार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ '**गोमेद**' *नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।*

आकाशी कौंसिल का विचार (संवत् 2082 वि.)

(संसार की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति का ग्रहगोचर के अनुसार सर्वेक्षण)

(1) संवत् 2082 वि. में 'सिद्धार्थी' संवत्सर होने से वर्षा पर्याप्त होगी, राजनैतिक स्थिरता रहेगी।

(2) इस संवत् के राजा और मन्त्री दोनों पद सूर्य को प्राप्त हैं, अत: भीषण अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि से हानि हो।

(3) 28 जुलाई से 7 दिसं. के मध्य विश्व में भयंकर घटनाएं घटित होंगी, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त होगा।

(4) प्राकृतिक आपदा की घटनाएं 15 जुलाई से 13 सितं. 2025 के मध्य विशेषरूप से संभावित हैं।

(5) 12 जुलाई से 28 नवं. सन् 2025 के मध्य शनि के वक्रत्वकाल में जनता में रोगविशेष से परेशानी रहे।

(6) 27 अक्तू. से 7 दिसं. तक मंगल की राहु पर दृष्टि, इससे पूर्व 6 जून से 21 जुलाई के मध्य मंगल की शनि पर दृष्टि कहीं अतिवर्षण एवं कहीं अवर्षण से भारी हानिकारक मालूम देती है।

आकर्षण-विकर्षण से प्रभावित अनन्तकोटि खगोलीय पिण्ड अपनी वक्र-मार्ग, अतिचार, मन्द आदि अनेकविध गतियों द्वारा भौतिक किंवा ऐहलौकिक क्रिया-कलापों में सामयिक परिवर्तनों से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का साक्षित्व अनन्तकाल से ही प्रस्तुत करते आ रहे हैं। प्रत्येक पिण्ड उस जगत् पिता की अदृश्य अलौकिक शक्ति से प्रभावित होकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रभावित करता है। प्रभावित वर्ग ग्रहों की गति एवं प्रकृति के अनुरूप ही कर्मानुष्ठान करने को प्रेरित होता है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम '**भवितव्यता**' किंवा '**ईश्वरेच्छा**' कहकर स्वीकार करने को विवश हैं।

इस प्रकार इस ग्रहगति से प्रभावित व्यक्ति किंवा घटनाचक्र की स्थिति तीव्र वायुवेग से प्रभावित एक तिनके की भांति होती है, जो एक ही क्षण में अपने अस्तित्व को खोकर वायुवेग से प्रताड़ित होकर, तदनुसार (वायुवेग की अनुकूल दिशा में) चलने को विवश हो जाता है-

''अवश्य-भव्येष्वनवग्रह-ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशावशात्मनः।।''

स्पष्ट है कि– 'संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता है।' सिद्धान्तों के व्यभिचार-मात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य-सिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कालात्मा सूर्य को सब ग्रहों का प्रधान माना गया है। '**शुक्ल यजुर्वेद**' की इस ऋचा पर ध्यान दें–

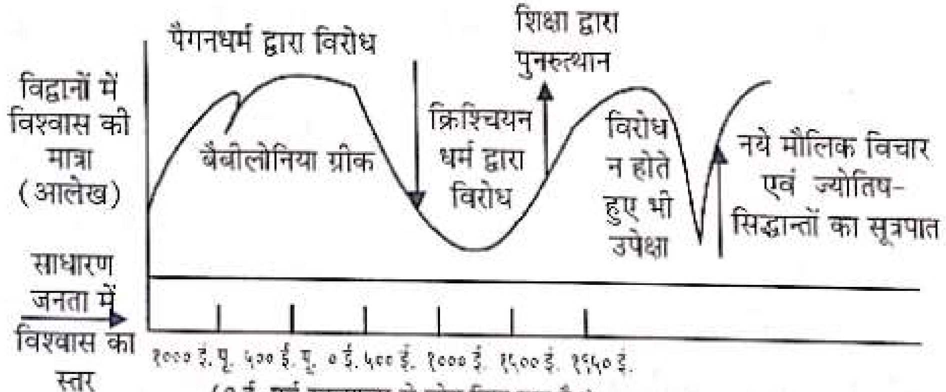
''आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ।।''

अर्थात्–सूर्यनारायण सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सभी ग्रहों में एकमात्र सूर्यदेव ही तो हैं, जो प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते रहते हैं। सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा सूर्य स्थावर, जंगम जगत्, ग्रह, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद जानता है। सूर्य की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। **अत: स्पष्ट है कि–** आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित भी। उपेक्षित इसलिए कि–फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षाभाव लिये हैं। मनुष्य जाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकती है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था, जबकि ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भौतिक ज्योतिष की अनेक शाखाओं का विकास हुआ है, जिनके आधार पर फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में प्रमाण मिलते ही जा रहे हैं। सूर्य-कलंकचक्रों, चन्द्रमा एवं ज्वारभाटा-सम्बन्धी सिद्धान्तों के परिशीलन तथा ग्रहों के आकर्षण-सिद्धान्त की प्रक्रिया के आधार पर विवेचन करने से प्राणीशास्त्र-वनस्पतिशास्त्र एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलु पर ग्रहों का प्रभाव सत्य सिद्ध हो चुका है। यही कारण है कि- आजकल के वैज्ञानिक युग में पाश्चात्य एवं पूर्वीय सभी देशों में इस शास्त्र के प्रति आस्था प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस विषय में हम **मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका)** (University of Minnesota) में **डॉ. मार्क ग्रोबार्ड** (Dr. Mark Graubard) के तत्त्वाधान में हुए फलित शास्त्रसम्बन्धी शोध के परिणामों का विवेचन ग्राफ द्वारा प्रस्तुत करना उचित समझते हैं-

आलेख–(पाश्चात्त्य देशों में फलित ज्योतिष पर विश्वास में वृद्धि तथा न्यूनता का समय-सापेक्ष आलेख)-



(0 ई. पूर्व स्वल्पान्तर से छोड़ दिया गया है।)

"एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये तो विराट् ब्रह्माण्ड एक क्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्नि-ज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे।" यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात् कृतधर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही **'ज्योतिष'** है। ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया-कलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह-नक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते-यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धान्त है।

इस सिद्धान्त की प्रामाणिकता में सन्देह करना तो दुराग्रह ही है। विज्ञान कार्य-कारण के सिद्धान्त पर ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं।

यहां पीछे प्रस्तुत आलेख में पाश्चात्य जनता एवं विद्वानों के फलित ज्योतिष पर विश्वास को अंकित किया गया है। इस आलेख से स्पष्ट है कि-ईसा पूर्व कुछ शताब्दियों में अफ्रीकन-पैगान-धर्म द्वारा फलितशास्त्र का विरोध होने पर भी फलितशास्त्र के प्रति विद्वानों की निष्ठा यथावत् बनी रही है। पांचवीं शताब्दी में क्रिश्चियन धर्म द्वारा फलित ज्योतिष का विरोध होने पर यद्यपि आस्था कुछ कम हुई थी, परन्तु क्रिश्चियनों का प्रभाव भी स्थायी न रह सका। ज्यों ही शिक्षा का क्षेत्र बढ़ता गया, फलितशास्त्र पर 1500 ई. के लगभग लोगों की निष्ठा पुनः दृढ़ होकर पूर्वस्थिति को प्राप्त हो गयी। 17वीं शताब्दी से अब तक विरोध न होने पर भी एकमात्र उपेक्षावृत्ति के कारण लोगों में आस्था की कमी देखी गयी है। परन्तु साथ ही साथ नये मौलिक विचार एवं नये ज्योतिष सिद्धान्तों का सूत्रपात हो जाने से इस शास्त्र के प्रति आस्था बढ़ती गयी है और ये विद्वान् लोग इस शास्त्र में विशेष परिवर्तन से नये रूप की आशा रखते हैं।

ऋग्वेद में पचानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रहनक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु-शिष्यपरम्परया चिन्तन व संशोधन-संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति/स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। **इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं और यह इस प्रकाशन का 98वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।**

वि. संवत् 2082 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, *जिन्होंने लगातार 97 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 98वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को*

प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत है।

सबसे पहले विगत-वर्षों के श्री मार्त्तण्ड पंचांगों में की गई आश्चर्यजनक रूप से सत्यसिद्ध भविष्यवाणियों की चर्चा करना चाहेंगे-

1A. भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में आश्चर्यजनक प्रगति की भविष्यवाणी-सं. 2075 वि. के पंचांग, पृष्ठ 52, कॉलम 1/2 पर की गयी थी कि-

''गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत इस वर्ष किंवा आगामी वर्षों में अन्तरिक्ष विज्ञान (Space-Science) में आश्चर्यजनक प्रगति करेगा, जिसमें अन्य कुछ देश भी सहायक रूप में मददगार रहेंगे।''

1B. इस संवत् 2077 का सेनाधिपति (दुर्गेश) सूर्य होने से भारत सैन्यबल को सुसमृद्ध करके सर्वोपरि प्राथमिकता-सम्पन्न सशक्त देश बनेगा। देश अन्तरिक्ष विज्ञान में भी आश्चर्यजनक चमत्कारों से नवीन शस्त्रास्त्रों के परीक्षण से विशेष प्रगति करेगा।

इन भविष्यवाणियों की सत्यता को समाचारपत्रों ने इस प्रकार प्रसारित किया-

ISRO continues to make India proud

It was yet another year of jubilation for Indian Space Research Organisation (ISRO) for it achieved a historic feat of having launched a massive 104 satellites using its Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV).

इसके अतिरिक्त भारत के अन्तरिक्ष विज्ञान में प्रगति से चीन एवं पाक भी प्रभावित हुए हैं।

2. 12 अप्रैल, सन् 2018ई. को हरिकोटा में I.R.N.S.S.-1 का परीक्षण सफल, सदमें में चीन-पाक (पंजाब केसरी 13/4/18)

Space-Science की इस सफलता की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 4 जून, 2017 ई. को की गयी थी, जोकि आश्चर्यजनक रूप से सत्य सिद्ध हुई।

3. श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2076वि., पृ. 55 पर जगत् लग्नेश कुण्डली के आधार पर स्पष्ट भविष्यवाणी इस प्रकार की गयी थी-

वर्षेश लग्न में राहु एवं शनि की परिधि में ही सभी प्रभावी ग्रह हैं। अत: कुछ राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (प्राकृतिक प्रकोप), अग्निकाण्ड, भयंकर तूफान, भूकम्प आदि से मई, 2019 तक भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं।

तदनुसार अनेक राष्ट्रों एवं प्रान्तों में भयंकर समुद्री तूफान, जलप्रलय किंवा भयंकर प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड़ा।

4. कोरोना महामारी से सन् 2020 ई. का पूर्वार्द्ध व इससे आगे आने वाला समय और भी भयंकर रहेगा-यह भविष्यवाणी सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 50 पर, कॉलम 1 में स्पष्ट की गयी थी, पढ़ें-

''अग. सन् 2020 ई. के लगभग से शनि-मंगल की दृष्टि और दशम-चतुर्थ-सम्बन्ध होने से भारत में हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों में भयंकर प्राकृतिक आपदा (महामारी कोरोना) से जनधनहानि सम्भव है, भगवान् रक्षा करें।''

5. भारत सरकार द्वारा पुरातन एवं देशहित के विपरीत परिस्थितियों को दूर करने के लिए मुस्लिम-विवाहप्रथा (तीन तलाक) के दोष एवं विदेशी व्यक्तियों के बहिर्गमन की नीति (CAA) से भारत सरकार को देशव्यापी उपद्रवों एवं शाहीनबाग आदि पर भारी संकटों का सामना करना पड़ा है-इस भविष्यवाणी को सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 50 पर निम्नांकित शब्दों में लिखा गया था-

''कर्क लग्न पर शनि एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है। यह दृष्टिसम्बन्ध लगभग 3 मई तक प्रभावी रहेगा। यह समय देश की पुरातन एवं देशहित के विपरीत नयी परिस्थितियों को दूर करने के लिए कठिन परिस्थितियों का संकेत देता है।''

6. सं. 2077 वि. में चीन-अमेरिका एवं कुछ अन्य देशों के साथ कोरोना महामारी के कारण अघोषित युद्ध जैसी स्थिति रही है। इस भविष्यवाणी को सं. 2077 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में निम्नांकित शब्दों में लिखा गया था, पढ़ें- पृ. 51, कॉलम 1 पर-

''इस वर्ष (सं. 2077 वि. में) शनि-मंगल-सूर्य एवं शुक्र की स्थिति वर्ष के मध्य उत्तर तथा दक्षिण की ओर से शत्रुदेश की गतिविधि अघोषित युद्ध जैसा वातावरण बना सकती है, भारतीय सैन्यबल सशक्त सिद्ध होगा। वर्षप्रवेश-कुण्डली में शनि की सूर्य एवं मंगल पर दृष्टि पाक में आन्तरिक क्रान्ति किंवा विभाजन का संकेत देती है।''

7. सं. 2077 वि. में **'भाजपा शीर्षक'** के अन्तर्गत पृ. 52, कॉलम 1 पर स्पष्टरूप से भाजपा के लिए भारी समस्याओं वाला लिखा था, तदनुसार भाजपा-

नेतृत्व को देश की सुधारात्मक नीति के कारण दिल्ली आदि में हिन्दु-मुस्लिम-उपद्रव एवं जामिया, J.N.U. आदि में होने वाली विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा है। **पंचांग पृ. 52 पर सत्यापित भविष्यवाणी यह थी, पढ़ें–**

''अब आगामी गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार धनु:स्थ गुरु एवं मकरस्थ शनि भी भाजपा के सामने परीक्षा की घड़ी उपस्थिति करेगा। क्योंकि समय-समय पर शनि-मंगल किंवा शनि-राहु का एक साथ रहना भारी समस्याओं को उपस्थित करेगा। इस समयावधि में प्रधान नेताओं की सुरक्षा-व्यवस्था को सुदृढ़ रखना होगा।''

8. प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी जी के बारे में सं. 2077 वि. में जो अंकित किया था, वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ है, पढ़ें पृ. 52, कॉलम 2 पर, इन पंक्तियों में–

''चतुर्थ-भाव (सहयोगी वर्ग) में मौजूद गुरु की मदद से अनेक समस्याओं को हल करने का श्रेय श्री मोदी को अवश्य मिलेगा। ताकतवर देशों से सन्तुलन साधने की क्षमता से श्री मोदी को गौरव प्राप्त होगा। अपने शपथग्रहण में 'विम्सटेक देशों' को न्योता विश्व में भारत की धाक जमाने का प्रथम चरण है, जो देश को यश-मान देकर प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में स्थापित करेगा। श्रीमोदी की विदेशनीति से भारत गौरवान्वित एवं प्रगतिपथ पर अग्रसर रहेगा; इसमें सन्देह नहीं।

श्रीमोदी की 30 मई को सायं 7 बजे शपथ-ग्रहणकालीन ग्रहस्थिति के निरीक्षण से स्पष्ट है कि–वृश्चिक लग्नस्थ गुरु की मीनस्थ चन्द्र एवं कर्मेश सूर्य पर विशेष दृष्टि है। अतः श्रीमोदी महाभाग को देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं को हल करने के लिए आश्चर्यजनक सफलता मिलेगी। देश प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से श्रेय प्राप्त करेगा।''

तीन तलाक का निरस्तीकरण, धारा 370/35-A का जम्मू-कश्मीर से हटा इस प्रान्त को नयी दिशा देना और श्रीराम मन्दिर-निर्माणारम्भ-प्रक्रिया का श्रीगणेश आदि बड़े कार्य श्रीमोदी जी व देशप्रेमियों के लिए गौरव की बात है।

9. यूरोपीय देशों के बारे में सं. 2077 वि. के पंचांग में पृ. 46, कॉलम 1 पर की गयी भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं। पढ़ें–यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1)–

''अणुशस्त्र, सीमाविवाद, शस्त्रास्त्रों की मारकक्षमताजन्य उन्माद एवं शक्ति-सम्पन्नता-प्रदर्शन से हालात बिगड़ेंगे। यूरोप के देशों में विचार-वैमनस्य से द्विधाविभक्त किंवा विशेष ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति घातक रहेगी, इससे विश्वशान्ति को भी खतरा पैदा हो सकता है।''

उ. कोरिया, चीन एवं यू. एस. ए. आदि शस्त्रास्त्र-परीक्षण करके विश्वशान्ति को चुनौती देते रहे हैं।

10. 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत सं. 2077 वि. में अंकित निम्नांकित पंक्तियों की सत्यता स्वतः सिद्ध है। पढ़ें–पृ. 54, कॉलम 1 पर–

''संवत् 2077 वि. की गोचर ग्रहस्थिति कश्मीर की राशि पर मंगलयुत 'शनि की दृष्टि' होने से कश्मीर-समस्या का हल सहज सम्भव नहीं। इस जलते सीमाप्रान्त पर पाक की कुदृष्टि इस संवत् में भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है। ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि–तिब्बत, कश्मीर एवं अन्य सीमान्त-प्रदेशों में भारत के साथ पाक-चीन, जिस स्थिति को जन्म दे रहे हैं, वह भारत एवं विश्वजनीन शान्ति के लिए भयावह सिद्ध होगी।''

कश्मीर में प्रतिदिन उग्रवादजन्य अपराध एवं सैन्यसंघर्ष प्रायः होते रहते हैं तथा तिब्बत-लद्दाख-मिजोरम आदि में चीन का दखल भी जगजाहिर है। अभी 13 मई के पंजाब केसरी समाचार पत्र में समाथार था– **''पूर्वी लद्दाख में दिखे चीनी हैलीकॉप्टर''** जवाब में भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने भी वायुसीमा में उड़ान भरी।'' **इस प्रकार उल्लिखित सं. 2077 वि. की पंक्तियों की सत्यता स्पष्ट हो गयी है।**

हालांकि चाईना द्वारा किये इस युद्धोन्माद में स्वयं चीन ही सर्वत्र घिरा दिखा और विश्व के अधिकतर देश भारत के समर्थन में दिखाई दिये। यह सभी जानते ही हैं।

अब संवत् 2079 वि. की कुछ भविष्यवाणियों की सफलता का उल्लेख भी संक्षेप में कर देना चाहते हैं–

1. पृ 49, कॉलम 1 पर लिखा गया था कि– 'इस वर्ष भयंकर अग्निकाण्डों से नगर-पतन व जंगलों को हानि पहुंचेगी। जनधनहानि अधिक होगी। तूफानों व प्राकृतिक प्रलयंकारी घटनाओं से अनेकत्र हानि हो।'

स्पष्ट है कि– भारत के H.P. एवं अन्य प्रदेशों व अमेरिका आदि के जंगलों में 15-4-2021 ई. में व अन्यत्र भी वीरोनेज (रूस) में भयंकर अग्निकाण्ड से अथाह क्षति हुई और कई हजार लोग बेघर हो गए।

2. सं. 2079 वि. में पृ. 48, कालम 2 पर भविष्यवाणी की गई थी कि–

''वर्षेश कुण्डली में सभी ग्रह राहु एवं केतु से घिरे और संवत्सर के मन्त्री चन्द्र की परिधि में हैं। अतः इस वर्ष कुछ राष्ट्र भूकम्प, तूफान, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक आपदा से भयंकर जनधनहानि की चपेट में आ सकते हैं। यह स्थिति मई से सितम्बर के मध्य सम्भव है।''

ठीक मई से सितं. के मध्य नेपाल, चीन, उड़ीसा, म्यांमार, हि. प्र. एवं म. प्र. के कुछ भागों में एवं अन्यत्र भी भूकम्प आदि की अनेकों घटनाएं हो चुकी हैं। म. प्र., उड़ीसा, महाराष्ट्र में समुद्री तूफान से जनधनहानि भी हो चुकी है। बिहार में आकाशीय बिजली से भी जन-धनहानि हुई है।

3. सं. 2078वि. श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, पृ. 50 पर भविष्यवाणी की गई थी कि–

''सं. 2078वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य-शुक्र की पोजीशन इस संवत् में मंगल के राजा-मन्त्री दोनों पदों पर अधिष्ठित होने एवं राहुजन्य नेष्टफल-स्वरूप चीन की विस्तारवादी नीति, पाक के उग्रवाद एवं उ. कोरिया आदि की स्वच्छन्दता से सीमाप्रान्तों पर सभी को विशेष सावधान रहना होगा। इस वर्ष कहीं घोषित किंवा अघोषित युद्धात्मक स्थिति से भारत एवं अन्य और कुछेक देशों को भी सावधान रहना होगा।''

तदनुसार चीन की विस्तारवादी नीति से भारत एवं अन्य और कुछेक देशों को सचेष्ट रहना पड़ रहा है। ग्रहगोचर सीमाप्रान्तों पर लंका एवं पाक आदि देशों को अपनी छद्मनीति से भारत को भी सावधान रहने का संकेत दे रहा है।

4. सं. 2078वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में पृष्ठ 46, कॉलम 1 पर लिखा था कि–

''श्रीमोदी की 30 मई को सायं 7 बजे शपथ-ग्रहणकालीन ग्रहस्थिति के निरीक्षण से स्पष्ट है कि–वृश्चिक लग्नस्थ गुरु की मीनस्थ चन्द्र एवं कर्मेश सूर्य पर विशेष दृष्टि है। अतः श्रीमोदी महाभाग को देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं को हल करने के लिए आश्चर्यजनक सफलता मिलेगी। देश प्रतिष्ठित देशों की श्रेणी में आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से श्रेयः प्राप्त करेगा।''

सभी भारतीय श्रीमोदी जी के प्रभावक्षेत्र के कारण भारत को विश्ववन्द्य बनाने में सफल सिद्ध हुए हैं।

5. 'कांग्रेस-पार्टी' के बारे में भी सं. 2078वि. के पंचांग में पृ. 56पर की गई भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है–

''कांग्रेस पार्टी–कांग्रेस-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति के अनुसार भाग्येश एवं कर्मेश सूर्य-बुध व्ययस्थान में होने से अभी समय प्रगतिप्रद नहीं है। क्योंकि 20 जून, 2021 ई. से 18अक्तूबर तक शनि-गुरु दोनों ही वक्री रहेंगे, अतः राजनैतिक गतिविधि विपक्षी प्रधान पार्टी के तौर पर देश के हित में अनुभव नहीं की जायेगी।''

6. पंजाब प्रान्त में घटित घटनाचक्र का संकेत सं. 2078वि. के पंचांग में पृ. 56 पर पढ़ें–

ध्यान दें– 20 जून से 18अक्तू., 2021 ई. के मध्य गुरु-शनि दोनों वक्रगति से चलेंगे, अतः कुछ अवांछित तत्त्व प्रान्त की शान्ति को भंग कर सकते हैं। 22 फर., सन् 2022 ई. से संवत् के अन्त तक शनि-मंगल का मकर राशि में रहना इस प्रान्त के लिए उलझनपूर्ण है, क्योंकि सीमान्तक्षेत्रों एवं आन्तरिक कुछ अव्यवस्था को नियन्त्रित करने के लिए प्रधान नेता को कठोर पग उठाने होंगे।

ठीक, इस समयावधि में पंजाब में किसान-आन्दोलन एवं कश्मीर-चीन-सीमाप्रान्तों पर उग्रवादजन्य अशान्ति से शासन को चिन्तित रहना पड़ा है।

7. सं. 2078वि. के पंचांग में जम्मू-कश्मीर के बारे में की नई भविष्यवाणी भी सटीक अक्षरशः सत्य रही है। पढ़ें- पृ. 56, कॉलम 2 पर–

'जम्मू-कश्मीर'– इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है। मकर राशि का स्वामी शनि लगभग 2 जून, 2021 ई. किंवा आगे तक मंगल के साथ षडष्टक योग बनायेगा। आगे शनि-मंगल का समसप्तक जुलाई तक इस प्रान्त में उग्रवादियों द्वारा वातावरण को अशान्त रखेगा। पाक की नीति यहां (उग्रवादियों द्वारा प्रसारित नीति) पाक के लिए ही ऐतिहासिक रूप से विघातक सिद्ध होगी।

यहां प्रतिदिन पाक-प्रेरित उग्रवादियों द्वारा हत्याकाण्ड आदि से वातावरण अशान्त रहा–यह सर्वविदित है।

8. अब **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** सं. 2078वि. में 1 जून, 2020 ई. को की गई एक ऐसी भविष्यवाणी की चर्चा कर देना उचित समझते हैं, जिससे सम्पूर्ण दैवज्ञ जगत् को ज्योतिष-शास्त्र-प्रतिष्ठा की प्रामाणिकता का बोध हुआ। इस भविष्यवाणी की चर्चा भारत के कई न्यूज चैनल्ज़ पर चर्चित रही है। **देखें**– श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2078, पृ. 49, कॉलम 1 पर स्पष्टरूप से जगत् लग्न कुण्डली में की गई भविष्यवाणी–

''सं. 2078वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य-शुक्र की पोजीशन'' इस संवत् में मंगल के राजा-मन्त्री दोनों पदों पर अधिष्ठित होने एवं राहुजन्य नेष्टफल-स्वरूप चीन की विस्तारवादी नीति, पाक के उग्रवाद एवं उ. कोरिया आदि की स्वच्छन्दता से सीमाप्रान्तों पर सभी को विशेष सावधान रहना होगा। इस वर्ष कहीं घोषित किंवा अघोषित युद्धात्मक स्थिति से भारत को भी सावधान रहना होगा।''

आगे पृ. 50, कॉलम 1 पर यूरोपीय देशों की कुण्डली के फलादेश में स्तब्ध कर देने वाली भविष्यवाणी भी पढ़ें–

लगभग 14 जनवरी, सन् 2022 ई. को बुध के वक्री होने से यूरोपीय देशों के लिए भारी युद्धात्मक किंवा विपदात्मक स्थिति बन सकती है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य-शनि की स्थिति जनवरी, 2022 ई. से आगे संवत् 2078वि. के अन्त किंवा आगे तक 6से 8महीने की ग्रहस्थिति के अनुसार मिथुनप्रभावराशि देश अमेरिका के प्रभुत्व को क्षीण करे एवं महाशक्ति की होड़ में ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका, उ. कोरिया, रूस के साथ चीन द्वारा विकसित शस्त्रास्त्रों के विरुद्ध आवाज उठेगी। परिणाम संघर्षात्मक स्थिति को जन्म देंगे। चीन, रूस, जर्मनी किंवा जापान आदि में परस्पर शस्त्रास्त्रों की होड़ से विश्वशान्ति भंग हो सकती है।

लगभग 26 फर., 2022 ई. के बाद 7 अप्रैल, सन् 2022 ई. तक शनि-मंगल का मकर राशि में योग यूरोपीय देशों की नीति विश्वव्यापी अशान्ति किंवा अघोषित युद्ध का वातावरण बना सकती है। गुरु, शुक्र एवं शनि, मंगल की स्थिति इस संवत् 2078वि. में कहीं भयंकर प्राकृतिक आपदा, भूकंप, तूफान किंवा अग्निकाण्ड आदि से अप्रत्याशित जनधनहानि के योग बनाती है।

ठीक, इस भविष्यवाणी के अनुसार फरवरी 2022 ई. को ही रूस-यूक्रेन-युद्ध प्रारम्भ हुआ है, जोकि यूक्रेन को अग्निकाण्डादि व भयंकर शस्त्रास्त्रों से श्मशान बना रहा है। आगे कुछ देशों की ग्रहस्थिति विश्वव्यापी युद्ध का संकेत देती है। भगवान् से प्रार्थना है कि–भगवान् चीन, यू.एस., कोरिया आदि देशों के नेताओं को सद्बुद्धि दे, क्योंकि आगामी ग्रहस्थिति विश्वयुद्ध का संकेत दे रही है।

9. पाकिस्तान में सत्तापरिवर्तन एवं गृहयुद्ध के खतरे की भविष्यवाणी पढ़ें– संवत् 2079 वि. के पंचांग में पृ. 55, कॉलम 1 पर–

इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लगभग 5 सितं., 2021 ई. को मंगल पाक की प्रभावराशि कन्या में आयेगा। अत: अक्तूबर 2022 ई. तक पाक के ब्लूचिस्तान, सिन्ध एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भयंकर अराजकता के परिणामस्वरूप सिविलवार सम्भव है और **इस दौरान प्रधान शासक को अपना पद त्याग करने को बाध्य भी होना पड़ सकता है**। सैन्यसंघर्ष आन्तरिक अशान्ति को शान्त नहीं कर सकेगा। POK, बलूचिस्तान, सिन्ध आदि में सैनिक अत्याचार एवं अनाचार पाक के विखण्डन का कारण बन जायें तो कोई आश्चर्य नहीं। हां, सबसे कठिन परिस्थिति तो 21 अक्तूबर से 4 दिसम्बर, सन् 2022 ई. के लगभग तक है। इसमें मुस्लिमराष्ट्रों को (विशेषत: पाक को) भारी आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। पाकिस्तान में सत्तापरिवर्तन किंवा राष्ट्रपतिप्रणाली लागू होने के योग हैं।

अब कुछ सफल भविष्यवाणियों की सफलता का जिक्र सं. 2080 के पंचांग से उद्धृत कर देना भी प्रासंगिक समझते हैं–

(1) जापान के प्रधानमन्त्री श्री शिंजो आबे की हत्या। भारत में दो दिन का राष्ट्रीय शोक रहा।

इस भविष्यवाणी की सफलता सं. 2080 वि., पृ. 47, कॉलम 2 पर इस प्रकार की गई थी– ''जुलाई 2022 ई. को गुरु वक्री होकर वक्र शनि के साथ दृष्टिसम्बन्ध बनाएगा। इस दौर में नक्सली हमलों से किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक संतप्त होना भी संभव है।''

(2) सन् 2022 में कश्मीर, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि में जो नक्सली हत्याकाण्ड हुए हैं, वे सब सर्वविदित हैं। इस भविष्यवाणी की सत्यता भी आश्चर्यजनक है, जोकि इन शब्दों में स्पष्ट लिखी गई थी–

''28 जुलाई, 2022 ई. से गुरु वक्री होकर वक्री शनि के साथ 22 अक्तूबर तक दृष्टिसम्बन्ध बनाएगा, जोकि कश्मीर, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ आदि में नक्सली हमलों से जनधनहानि का संकेत देता है।''

(3) पश्चिमी बंगाल, बिहार में श्री रामनवमी *3 मार्च, 2023 ई.* को शोभायात्रा के अवसर पर साम्प्रदायिक घटना से जो पथराव व हिंसा, *आगजनी* की घटनाएं हुई हैं–*इनका संकेत निम्नांकित शब्दों में पृ. 49, कॉलम 1 पर लिखा गया था–*

वर्षप्रवेशकुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर पर नीचाकांक्षी मंगल की विशेष दृष्टि है। मकरराशीश शनि के साथ मंगल का षडष्टकयोग भारत के सीमाप्रान्तों को क्षुब्ध करेगा।

विशेषत: कश्मीर की नामराशि मिथुन में मंगल की स्थिति यहां उग्रवादियों द्वारा जन-धनहानि के कुचक्र से अशान्त वातावरण बनाएगी।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार इस वर्ष म.प्र., पंजाब, बंगाल, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि प्रान्तों में साम्प्रदायिक उपद्रवों से मार्च से जून व आगे विशेषत: 30 जून से अगस्त के मध्य भारी अशान्ति रहेगी।

(4) संवत् 2079 वि. के पंचांग में पृ. 55 पर घोषणा की गई थी कि- ''इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार लगभग 5 सितं. को मंगल पाक की प्रभावराशि कन्या में आयेगा। अत: अक्तूबर, 2022 ई. तक पाक के ब्लूचिस्तान, सिन्ध एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भयंकर अराजकता के परिणामस्वरूप सिविलवार सम्भव है और इस दौरान प्रधान शासक को अपना पदत्याग करने को बाध्य भी होना पड़ सकता है। सैन्यसंघर्ष आन्तरिक अशान्ति को शान्त नहीं कर सकेगा।''

इस भविष्यवाणी के अनुसार पाक के प्रधानमन्त्री इमरान खान को अराजकता जैसे वातावरण में अप्रैल, 2022 में ही पदत्याग करने को विवश होना पड़ा।

(5) आजकल चीन भारत की मिजोरम आदि सीमाओं पर अपना प्रभुत्व कल्पना कर रहा है। इस भविष्यवाणी की सफलता पढ़ें पृ. 48 पर संवत् 2080 में कॉलम 2 पर-

''शनि एवं शुक्र दोनों सितंबर तक वक्रगति से चलेंगे। 16नवं से 26दिसं., सन् 2023 ई. तक शनि-मंगल का दशमचतुर्थसम्बन्ध एवं 15 मार्च से लगभग 27 अप्रैल, 2024 ई. तक शनि-मंगल दोनों युद्धप्रिय ग्रह कुम्भराशि में रहेंगे। इस समयावधि में चीन, पाक-द्वारा कहीं युद्धात्मक स्थिति बनेगी। चीन, म्यांमार, ताईवान आदि में सैन्यबल विश्वशान्ति को भंग करे। इस समय भारत को भी अपने सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। भारत की नीति एवं प्रगति तो विश्व में अनुकरणीय ही मानी जाएगी।''

(6) श्रीराहुल गांधी जी के बारे में की गई भविष्यवाणी भी कम आश्चर्यजनक नहीं। सं. 2080 वि. पृ. 51, कॉलम 1 पर पढ़ें–

''तद्नुसार पार्टी के कुछ व्यक्ति अन्तर्मन से इनका विरोध भी करते रहे हैं। राजनैतिक संघर्ष एवं पराजयजन्य परेशानी का भी सामना करना पड़ा है। इस समय मंगल की महादशा में शुक्रान्तर भी राजनैतिक दृष्टि से विशेष फलद नहीं हैं। 30 जून से 18अग., 2023 ई. तक सिंहस्थ मंगल का कुंभस्थ शनि के साथ समसप्तकयोग इनके लिए कष्टप्रद किंवा राजनैतिक दृष्टि से नेष्टफलप्रद ही रहेगा।

(7) ''इजराइल एवं हमासयुद्ध 7 अक्तू., 2023 को प्रारम्भ हुआ। इसकी भविष्यवाणी सं. 2081 वि. के पंचांग में इस प्रकार की गई थी - ''

''जून 2024 से आगे 24 फर. 2025 ई., के मध्य भयंकर युद्ध संभावित है। देश के राजनीतिज्ञों को शान्त्यर्थ योगदान करना होगा, अन्यथा स्थिति शान्ति के लिए विस्फोटक हो सकती है।''

(8) बद्रीनाथ, हेमकुंट साहब जैसे प्रसिद्ध स्थलों और जोशीमठ में भूमि धंसने की भयंकर चुनौती की भविष्यवाणी, सं. 2080 वि. पृ. 54 पर इस प्रकार की गई थी-

''सूर्य की आर्द्रा-प्रवेशकालीन ग्रहस्थिति कुम्भस्थ शनि पर नीच मंगल की दृष्टि में 17 जून से 2 नवंबर, सन् 2023 ई. के मध्य (शनि के वक्रत्वकाल में) कहीं भयंकर भूकम्प, कहीं बाढ़, आकाशीय बिजली गिरने आदि प्राकृतिक आपदा से अनेकत्र (बिहार, मेघालय, उड़ीसा, उत्तराखण्ड आदि में) भयंकर जनधनहानि के योग हैं।

ठीक यह घटना 1 नवम्बर को घटित हुई।

(9) भारत के उत्तरी भाग में अनेकत्र भयंकर भूकम्प, अतिवर्षण किंवा अवर्षण से जो स्थिति बनी है, उसकी भविष्यवाणी भी इसप्रकार की गई थी-

शनि की दृष्टि-सं. 2080 वि. में शनि कुम्भ राशि में ही विचरण करेगा। इस **वर्ष शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ ही रहेगी।** उ. गोलार्ध में भूकम्प, आकाशीय बिजली से हानि, कहीं अतिवर्षण किंवा कहीं अवर्षण से दुर्भिक्ष की स्थिति बने। उग्रवाद, सीमातिक्रमणादि से सीमान्त-क्षेत्र अशान्त रहें।

(10) **2 जून, 2023 को ओडिशा ट्रेन टक्कर**–इस घटना में 900 से अधिक लोग मारे गए।

10 मई, 2023 ई. के लगभग मंगल कर्क राशि में आकर शनि के साथ षडष्टकयोग बनाएगा। यह योग लगभग 29 जून, 2023 ई. तक प्रभावी रहेगा।

उत्तरी एवं दक्षिणी प्रान्तों/देशों में अनेकत्र युद्ध एवं सीमावर्ती भूभागों पर अशान्ति, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप किंवा भूकम्प आदि कारणों से महानगरों में जनधनहानि के योग हैं। अमेरिका, जापान, टर्की, नाईजीरिया, फिलिपीन्स (Asia Pacific Region) में भूकम्प, टायफोन, हैरिकेन आदि से **जनधनहानि के संकेत** मिलते हैं।

पाठक बन्धुओं! स्थानाभाव के कारण सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा पूर्णरूप से हम नहीं कर पा रहे। श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रहीं सभी भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय: जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणों की कृपा ही है या जनता-जनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार/Telephone द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

''विमृश्य ग्रह-संस्थितिं मुनिवचः सिद्धान्तयित्वा स्फुटम्।
शास्त्रं-शाकुनकं विचार्य नितरामालोच्य सत्संहिताः।।
राष्ट्रे राज-समाज-धर्मविषये ह्युद्भाविनी या स्थितिः।
सा शम्भोः कृपया यथामति मया प्रागेव निर्णीयते।।''

''मनुष्य जीवन अनन्त आकाशव्यापी सौर जगत् की एक क्षुद्र प्रतिकृति है''– यह तथ्य भारतीय ही नहीं, पाश्चात्य विद्वान् भी स्वीकार करते हैं। मानव-जीवन एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सौर जगत् के साथ एकत्व-सम्बन्ध होने से सौर जगत् के आकर्षण-विकर्षण-सिद्धान्त के अनुसार समय-समय पर मानव-जीवन एवं विश्वजनीन परिवर्तन स्वाभाविक एवं युक्तियुक्त हैं। ग्रहों की '**आकर्षण-विकर्षण**' रूपी दो अदृश्य शक्तियों द्वारा प्रकृति एवं जन-जीवन की मानसिक प्रवृत्ति में परिवर्तन से सम्पूर्ण विश्व का घटनाचक्र चलता ही रहता है। इस खोज में ऋषियों ने अथाह चिन्तन एवं सम्पूर्ण जीवन लगाकर ग्रहों एवं प्रकृति का गहन अध्ययन करके '**ज्योतिष शास्त्र**' का आविष्कार किया, जोकि आज भी अनुसन्धान का विषय है।

हम पहले भी लिख आए हैं, पुनः बता देना चाहते हैं कि-''संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाये तो विराट् ब्रह्मांड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे''– यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्त्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्मांड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृत् धर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही '**ज्योतिष**' है।

यह वेदांगरूप ज्योतिष गुरु-शिष्यपरम्परा आज तक जीवित है। इसका प्रमाण वेदांग '**निरुक्त**' में स्पष्ट है–

''साक्षात्कृतधर्माणो वै ऋषयो बभूवुः।
तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रददुः।
उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्नासिषुर्वेदं वेदांगानि च।।''

–(यास्काचार्य)

प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति-स्थिति में अन्तर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र-मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, ''**श्रीमार्त्तण्ड पंचांग**'' के माध्यम से अपने प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित कर देते हैं और यह इस प्रकाशन का 98वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् 2082 की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 97 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 98वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी *सर्वांगशुद्ध गणित एवं* आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए *भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका* है।

संवत् 2082 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान '**कार्य-कारण के सिद्धान्त**' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने-आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धान्तों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धान्तों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसन्धान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर '**लोकतान्त्रिक राज्य**' की स्थापना के लिए प्रधानमन्त्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण-कर्म-स्वभाव-योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों और शासनतन्त्र पर पड़ता है, उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती '**आकाशी कौंसिल**' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुरूप संसार में जो उलट-फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं; इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा निर्दिष्ट संकेतों के आधार पर एवं वि. सं. 2082 की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ आगामी घटनाओं के बारे में यहां लिखने की चेष्टा कर रहे हैं-

संवत् 2082 वि. में बार्हस्पत्य-मान से 'सिद्धार्थी' नामक संवत्सर है। सिद्धार्थी संवत्सर का फल इसप्रकार है :-

''तोयपूर्णाः भवेन्मेघाः बहुसस्या च मेदिनी।
सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे वरवर्णिनि।।''

अर्थात्- इस संवत्सर में वर्षा पर्याप्त होगी, खाद्य पदार्थ एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता पर्याप्त होगी। शासन किंवा राजनैतिक स्थिरता बनी रहेगी।

किञ्च- कुछ प्रान्तों (उ. खाण्ड, मेघालय आदि) में अतिवर्षण, जलाप्लाव (बाढ़) की स्थिति भी बनेगी।

'वर्षप्रबोध' ग्रन्थानुसार ''सिद्धार्थ संवत्सर'' का फल इसप्रकार है:-

चैत्र-वैशाख में जनता में रोगादि से परेशानी रहे। ज्येष्ठ-आषाढ़ में प्राकृतिक प्रकोप एवं श्रावण में भयंकर वर्षा से हानि हो, लेकिन राजनैतिक दृष्टि से समय कुछ अनुकूल रहे।

संवत् 2082 वि. में ग्रह-परिषद् का राजा सूर्य है। कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से खाद्य पदार्थों की उपलब्धता कम हो, जनता में रोग से परेशानी रहे। अनैतिक घटनाएं चर्चा का विषय रहें। कुछ प्रान्तों में भयंकर प्राकृतिक उत्पात, अग्निकाण्ड, तूफान आदि से जन-धनहानि होगी। इस वर्ष उग्रवाद किंवा कुछ **देशद्रोही व्यक्तियों द्वारा वातावरण विषाक्त होना संभव है। परिणामस्वरूप, किसी प्रथित व्यक्ति किंवा राजनीतिज्ञ के निधन से शोक व्याप्त हो सकता है।**

'भुवनेश्वर' मतानुसार एवं समास-संहिता के अनुसार भी उल्लिखित वातावरण की संभावना है एवं भारत के पड़ौसी देशविशेष में कहीं युद्ध की चिंगारी से वातावरण अशान्त हो सकता है।

इस संवत् का मन्त्री पद भी सूर्य को ही प्राप्त है। राजा-मन्त्री पद दोनों सूर्य के अधीन होने से संवत् 2082 वि. में भयंकर अग्निकाण्ड, भूकम्प से भयंकर हानि एवं अनैतिक कार्यों की वृद्धि होगी।

''स्वयं राजा स्वयं मन्त्री अग्नि-चौरादिजं भयम्।''- प्रमाणानुसार रासायनिक एवं फूलझड़ी आदि की फैक्ट्रियों में अग्निकाण्डों से हानि होगी।

यह बात अनेकत्र अनुभूत है कि- राजा-मन्त्री पद पर ऐकाधिपत्य उ.प्र., गुजरात, बिहार, पाक, ब्लूचिस्तान आदि में भूकम्प, समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हुई है।

इस वर्ष की ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि- जम्मू-कश्मीर, मिज़ोरम, POK एवं पाक-चीन के कुचक्र से अनेकत्र सीमाप्रान्त अशान्त होंगे।

संवत 2082 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संभावित घटनाचक्र पर एक नज़र-

ज्योतष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया-कलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रहनक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा संपूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते- यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धान्त है। ग्रहों की प्रभाव-परिधि में ही विश्व का घटनाचक्र अहर्निश चलता रहता है। **महाकवि श्रीहर्ष ने इस सिद्धान्त की सत्यता को स्पष्टतः स्वीकारा है-**

''अवश्यभव्येष्वनवग्रह-ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते जनस्य चित्तेन भृशावशात्मनः ।।'' - (नैपधचरित)

संवत् 2082 वि. में वर्षप्रवेश (जगत्) - लग्नगत ग्रहस्थिति का चिन्तन

संवत् 2082 वि. वर्षेश (जगत्) लग्न का उदय कुम्भ लग्न में हुआ है। लग्नेश शनि राहु-बुध एवं शुक्र के साथ धन स्थान में है। अतः इस वर्ष विश्व में मुस्लिम राष्ट्रों (ईरान एवं इजराईल आदि) में प्रतिशोध की भावना से गाजा पट्टी में युद्ध अपराधों और मानवता के खिलाफ इजराईल को अपराधी ठहराने से परस्पर विश्व-परिप्रेक्ष्य में वातावरण अशान्त हो सकता है।

वर्षेश (जगत्) लग्नकुण्डली
(संवत् 2082 वि.)



13/14 अप्रैल, सन् 2025 ई., 3 घं. 20 मि. (I.S.T.),

यूक्रेन एवं रूस के मध्य एवं विश्व के कुछ देशों में प्रतिशोध-भावना विश्वशान्ति को भंग करेगी। जगत् लग्न-कुण्डली में शुक्र नवमेश होकर शनि-राहु के साथ होने से परमाणु एवं ऊर्जा-संयन्त्र क्षतिग्रस्त हो जाने का भय रहेगा।

जगत् लग्न-कुण्डली में रा. बु. एवं शु.- ये **तीन ग्रह धनस्थान में शनियुत होने से इस वर्ष देश में आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करने के लिए भारी-भरकम प्रयास एवं बहुविध उद्योगों की स्थापना होगी।**

जगत् लग्नकुण्डली में द्वितीयेश एवं आयेश गुरु केन्द्र (चतुर्थभाव) में होने से विश्व में भारत का व्यापारक्षेत्र आश्चर्यजनक रूप से प्रगति पर रहेगा-

''धने व्यये च सौम्यश्च केन्द्रे वा मेषसंक्रमे।
स्वर्क्षे शुभे सुहृद्दृष्टे सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा।।''

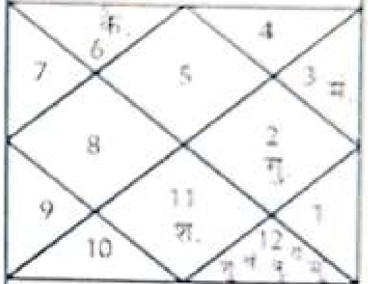
स्पष्ट है- ग्रहस्थिति विश्व के देशों विशेषतः भारत में सुभिक्ष एवं खुशहाली का संकेत देती है।

ध्यान दें कि- वर्षेश-कुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि बालग्रह बुध (पंचमेश-अष्टमेश होकर) शनि-राहु के साथ है। **अतः इस वर्ष भारत के सीमाप्रान्तों मिजोरम, लद्दाख, कश्मीर आदि के उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। शत्रुदेश पाक-चीन आदि की गतिविधि एवं अवांछित घटनाएं अशान्ति का कारण बनेंगी। नीच मंगल की चन्द्र एवं कुम्भ लग्न पर दृष्टि आश्विन-पौष एवं कुछ अन्य मासों में महामारी से परेशानी का कारण बन सकती है।**

नववर्ष प्रवेशकालीन कुण्डली का संक्षिप्त विवरण

चैत्र कृष्ण अमावस, शनिवार, तदनुसार 29 मार्च, सन् 2025 ई. को उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय संवत् 2082 वि. का शुभारम्भ 16 घं. 27 मि. पर सिंह लग्न में होगा।

वर्षप्रवेश-कालीन कुण्डली



29 अप्रै., सन् 2025 ई., 16 घं. 27 मि.,

संवत् 2082 वि. का शुभारम्भ सिंह लग्न में होने से यह संवत् जन-जीवन के लिए, विशेषतः कृषक वर्ग के लिए विशेष लाभप्रद नहीं। दक्षिणी प्रान्तों में सर्पादि जीव-जन्तुओं से वर्ष कष्टभयकारक है।

छः मास तक अनाज सस्ते रहें। अनेकत्र बादल फटने किंवा भयंकर वर्षा-पानी से जन-धनहानि के समाचार भी मिलेंगे।

पश्चिमी प्रान्तों किंवा देशों में स्वर्णादि धातु महंगी रहेंगी। उत्तर में महावर्षा से हानिकारक घटनाएं होंगी। पूर्व में कृषि वर्ग को भारी हानि होगी। मध्यप्रदेश में राजनीतिज्ञों में मतभेद एवं शासनसत्ता में उलट-फेर होंगे:-

''सिंह-लग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीरयेत्।
धान्ये समर्घता मास-षट्कं यावद् धनं महत्।।
पश्चिमायां धातुवस्तु-फलादीनां महर्घता।
उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च।।''
किञ्च- ''पूर्वस्यामर्ध-निष्पत्तिः श्रेयोऽग्रेमास-पञ्चकात्।
मध्यदेशे राजयुद्धं मास-पंचकमुद्धतम्।।''

कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार मीन राशि में सूर्य-बुध-शुक्र-चन्द्र एवं राहु की स्थिति भारत के कुछ प्रान्तों में भयंकर राजनैतिक आपदा, प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, बाढ़ एवं अग्निकाण्ड से जन-धनहानि के योग बनाएगी। *सप्तमस्थ शनि*

की लग्न पर दृष्टि दुःखद किंवा जटिल समस्याओं का संकेत देती है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार पूर्व-उत्तर-पश्चिम एवं दक्षिण की ओर से शत्रुदेश की कुचेष्टा से शासनतन्त्र को सतर्क रहना होगा-

"मारिर्दक्षिण-देशे स्यात् तथा बंगेप्युपद्रवः।
लोके दुःखं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रहः।।"

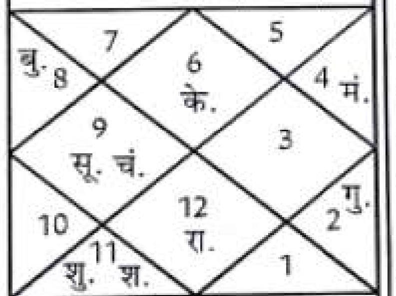
भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि स्वराशिस्थ होने से देश आर्थिक-सामाजिक एवं सर्वविध प्रगति की ओर अग्रेसर रहेगा:- इसमें सन्देह नहीं।

वर्षप्रवेशकालीन कुण्डली में चतुर्थभाव पर गुरु की दृष्टि होने से भारत आर्थिक दृष्टि से विश्व में आश्चर्यजनक प्रगतिपथ पर रहेगा। नवम स्थान पर शनि की नीच दृष्टि है एवं नवमेश मंगल नीचाकांक्षी है, अतः राजनैतिक क्षेत्र में उठापटक रहेगी। सत्तारूढ़ राजनैतिक पार्टियों में ऐक्य हो, हालांकि प्रभावी पार्टी तो भाजपा ही रहेगी।

संवत् 2082 वि. की ग्रहस्थिति का यूरोपीय देशों पर प्रभाव (एक संक्षिप्त सर्वेक्षण)

15 नवं., 2024 ई. को शनि मार्गी हो रहा है। अतः नवं. से जुलाई, 2025 ई. तक का समय यूरोपीय देशों के लिए भयावह है। कुछ देश उग्रवाद से प्रभावित होंगे। भयंकर हत्याकाण्ड, भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या व निधन से कहीं आन्तरिक अशान्ति बनेगी।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 1
1 जन. से 31 दिसं., 2025 ई.



समय मध्यरात्रि 0 घं. 0 मि.

जून से जुलाई के मध्य शनि-मंगल का षडष्टक भी यूरोपीय देशों में कहीं भयंकर युद्ध किंवा अशान्ति का संकेत देता है। "युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ"- प्रमाणानुसार कुछ देश दुर्भिक्ष किंवा भयंकर रोगों से ग्रस्त होने से भी चिंतित रहेंगे। अमेरिका, ब्राजील, चीन, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, पोलैण्ड, हंगरी एवं कोरिया, इजराईल, ईरान, यूक्रेन आदि में शस्त्रास्त्रों की होड़ से विश्वजनीन वातावरण अशान्त रहने के योग हैं।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. 2
(1 जन. '26 से 2083 वि. के अन्त तक)



समय मध्यरात्रि 0 घं. 0 मि.

यूरोपीय देशों की ग्रहस्थिति के अनुसार जून, 2025 से अगस्त के मध्य यूरोपीय देशों में कहीं भयंकर युद्ध किंवा अशान्ति के योग हैं। शनि-मंगल के दशम-चतुर्थसंबंध एवं कुम्भस्थ राहुकाल में कहीं उग्रवाद से कुछ देश अशांत होंगे। जून से अगस्त के मध्य भयंकर भूकम्प, समुद्री तूफान किंवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पदरिक्त होने का योग भी है।

मुस्लिम राष्ट्रों के हालात

कुण्डली नं. 1 के अनुसार चीन की विस्तारवादी नीति पाक पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहेगी। परिणामस्वरूप, चीनी भाषा का अध्ययन पाक के कुछ प्रान्तों में अनिवार्य होगा।

मुस्लिम देशों की कुण्डली नं. 1



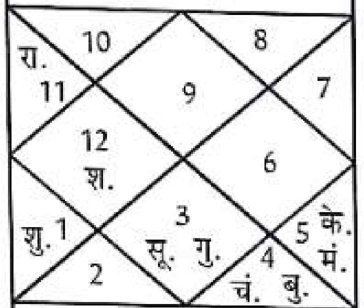
8 जुलाई, 2024,
हिजरी सन् 1446 (1 मुहर्रम)
(सूर्यास्त-समय) 19 घं. 24 मि. (I.S.T.)

चीन की विस्तारवादी नीति से पाक में उग्रवाद एवं उ. कोरिया आदि की स्वतन्त्रा से सीमाप्रान्तों पर विशेष सतर्क रहना होगा। कश्मीर में पाकजन्य उग्रवाद एवं पाक-अधिकृत कश्मीर आदि में पाक का कुचालचक्र भारत के सीमाप्रान्तों को अशान्त कर सकता है, जिसका परिणाम पाक के लिए भयावह सिद्ध होगा।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार ब्लूचों द्वारा चीन संक्रमित क्षेत्र ग्वादर-पोर्ट आदि पर आत्मघाती हमले आदि भयंकर काण्ड होंगे। देश में मदरसे भी उग्रवाद को प्रोत्साहित करेंगे, जिससे कुछ देशों के सम्बन्ध परस्पर खराब होंगे।

"इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार रा. के. पाक की प्रभावराशि कन्या को प्रभावित करेंगे। अतः पाक के ब्लूचिस्तान, सिन्ध एवं कुछ अन्य प्रान्तों में भयंकर अराजकता के परिणामस्वरूप सिविलवार सम्भव है और इस दौरान प्रधान शासक को अपना पदत्याग करने को बाध्य भी होना पड़ सकता है। सैन्यसंघर्ष आन्तरिक अशान्ति को शान्त नहीं कर सकेगा।"

मुस्लिम देशों की कुण्डली नं. 2



27 जून, सन् 2025, हिजरी सन् 1447 (1 मुहर्रम), सूर्यास्त समय 19 घं. 25 मि.,

मुस्लिम देशों की कुण्डली नं. 2 के अनुसार राहु एवं मंगल का समसप्तक दुबई एवं अन्य मुस्लिम देशों में प्राकृतिक भयंकर आपदाएं बनाएगा, जिससे स्थिर सम्पदा एवं जानी नुकसान होगा।

वृष नामराशि-प्रधान देश ईराक, इज़राईल एवं ईरान में युद्धाग्नि के भय से कुछ पाक आदि देशों का व्यवहार आश्चर्यजनक रहेगा। पड़ोस में युद्धाग्नि से पाक एवं अन्य '**तेल-व्यापार के प्रधान देशों**' की प्रतिक्रिया भी कुछ अजीब रहेगी।

शनि-मंगल के षडष्टक से मुस्लिम-देशों को प्राकृतिक आपदाओं से जूझना पड़ेगा। इज़राईल एवं हमास के युद्ध में पश्चिमी लॉबी भी इज़राईल को रोकने में निष्क्रिय रहेगी। परिणामस्वरूप जनता को विपत्ति का सामना करना पड़ेगा- ऐसा गोचर ग्रहस्थिति से मालूम होता है। कुण्डलीगत ग्रहस्थिति से स्पष्ट है कि- इज़राईल और ईरान में परस्पर अस्तित्त्व की होड़ युद्धाग्नि को प्रज्ज्वलित कर सकती है। लेकिन भारतीय कुछ अधिकारी, यूरोपीय यूनियन और संयुक्त राष्ट्र के प्रयास शान्ति स्थापित करने में सफल होंगे।

गोचर ग्रहस्थिति से ज्ञात होता है कि- ग्वादर पोर्ट पर आत्मघाती हमले आदि एवं भयंकर काण्ड होंगे। मुस्लिम देशों के शिक्षाक्षेत्र उग्रवाद को प्रोत्साहित करेंगे, जिससे पड़ोसी देशों के सम्बन्ध खराब होंगे।

पाक आदि मुस्लिम देशों में खाद्य समस्या विषम होगी, अराजकता किंवा राजनैतिक हत्याकाण्ड भी घटित होने का संकेत मिलता है।

किञ्च– चीन की विस्तारवादी नीति पाक पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने में सफल रहेगी। परिणामस्वरूप, चीनी भाषा का अध्ययन यहां पाक के कुछ प्रान्तों में अनिवार्य होगा। यह हम पहले भी लिख चुके हैं।

चीन की विस्तारवादी नीति से पाक में उग्रवाद एवं उ. कोरिया आदि की स्वतन्त्रा से सीमाप्रान्तों पर विशेष सतर्क रहना होगा। कश्मीर में पाकजन्य उग्रवाद एवं पाक-अधिकृत कश्मीर आदि में पाक का कुचालचक्र भारत के सीमाप्रान्तों को अशान्त कर सकता है, जिसका परिणाम पाक के लिए भयावह सिद्ध होगा। यह हम बार-बार बतला रहे हैं।

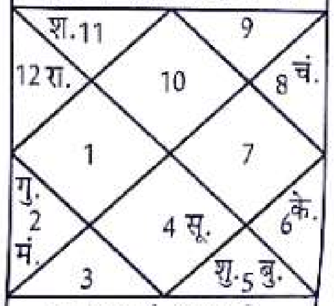
संवत् 2082 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत सरकार में घटित घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत-भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र-द्वारा प्रत्यक्ष जान लिये जाते हैं। हमारे ऋषियों ने वेदचक्षु इस ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है–

"ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।" –(श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण-विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "**भविव्यता**" किंवा "**ईश्वरेच्छा**" कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 78वां वर्ष



14-8-2024 ई., 17 घं. 45 मि.,

संवत् के प्रारम्भ से पहले ही 16नवं. से 27 दिसं. 2024 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि सीमान्त-प्रदेशों पर चिन्तनीय सैन्यसंघर्ष का कारण बनती है। अतः सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। तत्पश्चात् 25 मार्च, सन् 2025 ई. के बाद लगभग 13 अप्रैल तक शनि-मंगल की स्थिति से भारत की विभिन्न राजनैतिक

पार्टियों के अध्यक्षों में अहमहमिकया महत्त्वाकांक्षी होने से एकरूपता कहने के लिए भी संभव न हो पाएगी। परिणामस्वरूप, राजनीतिक घटकों में जनता के लिए प्रलोभनात्मक प्रवृत्ति रहेगी। परिणाम इस वर्ष आगे संवत् के अन्त तक विभिन्न पार्टियों के लिए निराशाजनक रहेंगे। भाजपा का प्रभुत्व प्राय: सर्वत्र बना रहेगा।

लगभग मई 2025 ई. के प्रारम्भ तक श. रा. का राश्यैक्य इस वर्ष किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए विशेष दु:खद घटनापूर्ण रहेगा।

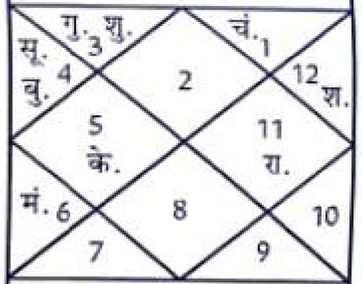
इन दिनों मं. रा. का षडष्टक एवं श. की सू. पर नजर किसी सीमाक्षेत्र में उग्रवादजन्य अशान्ति किंवा नाटो देशों में परस्पर वैमत्य का कारण बने। कुछ देशों में परस्पर युद्ध की स्थिति किंवा अकालिक वर्षा से कृषिक्षेत्र में हानि हो।

6 जून, 2025 ई. को **मंगल सिंह राशि में आकर 28 जुलाई तक कुम्भस्थ राहु की दृष्टि में रहता है। श. मं. का समसप्तकयोग देश में राजनीतिज्ञों में बहुत ही भयंकर परिस्थिति को जन्म देगा।** कश्मीर, छत्तीसगढ़ एवं उ.प्र., महाराष्ट्र आदि में अघटित घटनाक्रम को जन्म देगा। देश के राजनैतिक क्षितिज पर अभूतपूर्व घटनाएं घटित होंगी। पाक, चीन आदि से सीमाप्रान्त क्षुब्ध हो सकते हैं, सावधानी आवश्यक है।

अगस्त से 13 सितं., सन् 2025 ई. तक शनि एवं मंगल का समसप्तक देश में राजनीतिक अस्थिरता एवं अशान्त शासनसत्ता का संकेत देता है। इस कालावधि में पाक-चीन एवं किसी देशविशेष की गतिविधि से सावधान रहना नितान्त आवश्यक है।

इस वर्ष शनि-मंगल एवं सूर्य-राहु की पोजीशन के आधार पर स्पष्ट भान होता है कि- L.O.C. पर साईबर अटैक, काबुल (अफगानिस्तान) में नए युद्ध के सूत्रपात एवं पाक में आन्तरिक विद्रोह-विस्फोट आदि से भारी हानि के योग हैं। मई से सितं. 2025 ई. के मध्य महाराष्ट्र, बंगाल, छत्तीसगढ़, असम, म.प्र., पंजाब आदि भारतीय प्रान्तों में भी उग्रवाद किंवा साम्प्रदायिक उपद्रवों से भारी हानि एवं अशान्ति के योग हैं। **इस संवत् में भी विगत वर्ष की भांति ही भारत में साम्प्रदायिक एवं धार्मिक समरसत्ता की प्रमुखता को महत्त्व देने के लिए भारत सरकार संविधान में संशोधन को महत्त्व देगी—ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है।**

स्वतन्त्र भारत का 79वां वर्ष



14 अग., 2025 ई., 23 घं. 55 मि. (I.S.T.).

इस स्वतन्त्र वर्ष का उदय वृष लग्न में हो रहा है। परिणामस्वरूप, भारत के पश्चिमी भाग में प्राकृतिक प्रकोप से अकाल की स्थिति बनेगी। भारत के पूवी भाग किंवा पूर्व की सीमाओं पर शत्रुराष्ट्र की प्रक्रिया से विक्षोभ पैदा हो। राजनीतिज्ञों में उद्वेग, मध्य प्रदेश में महावर्षा, किंवा किसी क्षेत्र में भारी वर्षा से प्रलयंकारी स्थिति बने। धान्य की उपज अच्छी हो।

स्वतंत्र भारत का उदय वृष लग्न में होने से पश्चिम में अकाल की स्थिति बने। पूर्व में राजनैतिक अस्थिरता, उत्तर में फसल-पैदावार अच्छी हो व दक्षिण में सुकाल की स्थिति रहे-

''वृषे तु पश्चिमेऽकाल: पूर्वस्यां राजविग्रह:।
उदग् धान्यर्द्धि निष्पत्तिर्दक्षिणस्यां सुकालक:।।''

स्वतन्त्र भारत कुंडली में गुरु एवं शुक्र मिथुन राशि में एकत्र हैं। भारत के सीमाप्रान्तों पर सुरक्षा-व्यवस्था को ससुन्नद्ध रखना होगा, क्योंकि देशविशेष में कहीं भारी वर्षा हो, कुछ देशों में कहीं युद्धाग्नि से हानि के योग हैं-

''गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद्वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशय:।।''

ध्यान दें- इस योग के परिणामस्वरूप देश के किसी भाग में अकालिक वर्षा किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि की संभावना को भी नकारा नहीं जा सकता।

ग्रहस्थिति के विचार से शनि एवं मंगल की स्थिति भी चिन्ताजनक है। क्योंकि श. मं. दोनों ग्रह युद्धाग्नि को प्रज्वलित करने वाले हैं :-

''युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्ष कारकौ।।''

भारत सरकार को शान्ति स्थापित करने के लिए सतर्क रहना होगा। जलप्रलय किंवा प्राकृतिक प्रकोप से परेशान जनता की सहायतार्थ प्रशासन को प्रस्तुत रहना होगा।

गोचर ग्रहगति के अनुसार ग्लोबल वार्मिंग की लक्ष्मण रेखा के निकट पृथ्वी खिसक रही है। गर्मी की अधिकता व ध्रुवीय बर्फ पिघलने के कारण प्राकृतिक उत्पात संभव हैं। यही शनि-मंगल की स्थिति भी संकेत देती है।

अप्रैल 2025 के शुरु में पंचग्रहीयोग बन रहा है एवं जून में मं. रा. का समसप्तक रहेगा।

12 जुला., 2025 ई. को शनि वक्रगति से चलना शुरु करेगा एवं 28 नवं., 2025 ई. को इसकी वक्रगति समाप्त होगी। इस समय देश में कहीं उग्रवादी वातावरण को क्षुब्ध करने का प्रयास करेंगे, लेकिन 11 मार्च, 2026 ई. के करीब से सर्वत्र वातावरण में सुधार एवं शान्ति का वातावरण संभव है। अशुभ व क्षुब्ध कर देने वाली घटनाएं तो होंगी, फिर भी भाजपा एवं मोदी के प्रतिनिधित्व में देश प्रगतिपथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

विगत वर्ष की भांति ही इस संवत् में भी भारत को अन्तरिक्ष यान (अन्तरिक्ष-अध्ययन) में विशेष सफलता से विशेष सम्मान (यश) प्राप्त होगा, ऐसा शुक्र-शनि की स्थिति से संकेत मिलता है।

भारतीय गणतन्त्र का 76वां वर्ष

तीसरे कार्यकाल में भारत का तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना सुनिश्चित है।

संवत् 2082 वि. के संवेदनशील मास 11-12 अप्रैल, 11, 12 मई, 27 मई, 10, 11 जून, 9, 10, 23, 24 जुलाई, 8, 9, 22, 23 अगस्त, 6, 7 सितम्बर, 4, 5 नवं., 3, 4 दिसं., जनवरी 2026 का पूर्वार्ध, 1, 2 फरवरी, 2, 3 मार्च (सन् 2026 ई.)

12 जुला. से 28 नवं. तक का समय संकटापन्न है।

उल्लिखित समयों में उग्रवाद, हत्याकाण्ड, जलाप्लाव, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि से हानि संभव है।

भारतीय गणतंत्र का 76वां वर्ष



26 जन., 2025 ई., 15 घं. 47 मि. (I.S.T.).

भारतीय गणतन्त्र कुंडली में लग्नेश बुध सूर्य की सन्निधि में अष्टमभाव में होने से यह वर्ष धर्म के नाम पर एवं साम्प्रदायिक दृष्टि से संघर्षपूर्ण रहेगा। छत्तीसगढ़, हरियाणा आदि में भयंकर साम्प्रदायिक उपद्रव किंवा धर्म के नाम पर हिंसा की घटनाएं दु:खद होंगी।

कुम्भ राशि में शनि-शुक्र की स्थिति कश्मीर के कुपवाड़ा, बारामूला आदि में एवं सीमाप्रान्तों पर व पंजाब आदि में अशान्ति से निपटने के लिए सरकार को कठोर पग उठाने होंगे।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि- धनेश चन्द्र शुभक्षेत्र में है। कर्मक्षेत्र में राहु होने से भारत में औद्योगिक समृद्धि होगी एवं नए-नए उद्योगों से भारत समृद्धि की ओर बढ़ेगा।

अमेरिका एवं यूरोप में मैन्युफैक्चरिंग में समृद्धि से भारत को विशेष लाभ होगा।

शनि-राहु की चाल भारत-चीन सीमाप्रान्तों पर संघर्षात्मक स्थिति बना सकती है, अत: भारत सरकार को सावधान रहना ही होगा।

कर्मक्षेत्र में मीन राशि का राहु होने से भारत सरकार/मोदी जी युवा, किसानों, महिलाओं एवं युवाओं को प्राथमिका देंगे।

लग्नेश बुध पर गुरु की विशेष दृष्टि है। नवमेश शनि नवम स्थान में ही है। अत: मालद्वीव पर चीन-नेपाल की दृष्टि सुखद प्रतीत नहीं होती। भारत को इस बारे सावधान रहना होगा। नेपाल, पाकिस्तान एवं मालद्वीव जैसे देशों पर भारत से दूरियां बढ़ती नज़र आएंगी, जोकि ठीक नहीं।

76वें वर्ष की गणतन्त्र कुण्डली में धनेश चन्द्र गुरुक्षेत्र में सप्तमस्थ है, लग्नेश बुध एवं सहयोगी देशों का प्रतिनिधि (तृतीयेश) सूर्य भी बुध के साथ है, इन पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है। **अत: संकेत मिलता है कि- मकर राशिप्रधान भारत की अर्थव्यवस्था चामत्कारिक ढंग से आगे बढ़ रही है। भारत आर्थिक दृष्टि से विश्व के देशों में स्वायत्त रहेगा एवं विदेशों से औद्योगिक इकाइयां भारत में आएंगी, जिससे देश समृद्धि की ओर बढ़ेगा।**

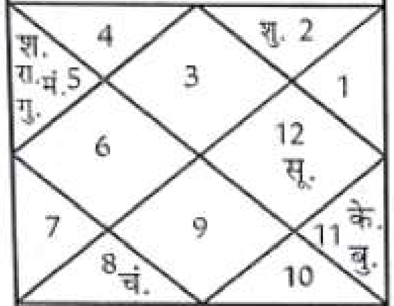
संवत् को उत्तरार्ध में भारत में प्राकृतिक प्रकोप, वर्षा से हानि, अग्निकाण्ड में जनधनहानि के योग हैं- भगवान रक्षा करें।

देश के प्रमुख राजनैतिक दल

भाजपा

सं. 2082 वि. की वर्षप्रवेशकालीन कुण्डली में मिथुन राशि में मंगल एवं भाजपा-कुण्डली में बुध-केतु पर सिंहस्थ श. रा. गु. मं. का दृष्टियोग भारतीय राजनीतिक दृष्टि से भारी प्रभुत्व प्रदान कराने वाला है।

भाजपा-स्थापनाकालीन ग्रहस्थिति



6-4-80, 11-40 A.M.,

भाजपा कुण्डली के अनुसार भारतीय गणतन्त्र आर्थिक दृष्टि से विश्व के प्रतिष्ठित देश भारत में औद्योगिक निवेश करके गौरवान्वित अनुभव करेंगे।

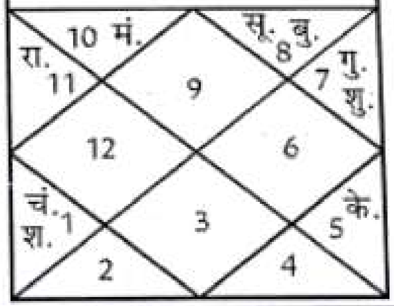
भाजपा कुण्डली में दशमेश गुरु एवं नवमेश शनि सिंहस्थ रा. मं. के साथ एकत्र होने से भारी प्रगति एवं भाजपा के लिए विशेष यशकारक एवं आगे सुशासन प्रदान कराने वाले हैं।

28 जुलाई से सितम्बर तक की ग्रहस्थिति व शनि की **मंगल पर दृष्टि सीमान्त-प्रदेशों पर चिन्तनीय सैन्यसंघर्ष का कारण मालूम होती है। अतः सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। इस संवत् के अन्त तक भाजपा का विजयरथ प्रगति पर रहेगा। संवत् के प्रारम्भ से मई, 2025 ई. के लगभग तक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए समय दुःखद घटनापूर्ण भी रहे।**

इस वर्ष शनि-मंगल का समसप्तक पाक-चीन के सीमाप्रान्तों एवं जम्मू-कश्मीर आदि में भी सैन्यसंघर्ष भाजपा के लिए परीक्षा-निकष सिद्ध होगा।

कांग्रेस-पार्टी

कुंडली कांग्रेस 22-11-1969, 9-57 A.M., बैंगलूरु,



इस संवत् में 6 जून, सन् 2025 ई. से 26 जुला. तक तथा विशेषत: 28 जुलाई से सितं., 2025 ई. तक का समय कांग्रेस पार्टी के लिए विशेष संघर्षात्मक रहेगा। कुछ पार्टी के सदस्य दूसरी पार्टी में जा मिलेंगे, पुनरपि पार्टी का नियन्त्रण आगे होने वाले निर्वाचनक्षेत्रों में कुछ प्रगतिप्रद बना रहेगा।

जून से आगे नवम्बर के मध्य इस पार्टी की कुण्डली में बुध सूर्य के साथ हतप्रभ होने से प्रधाननेतृत्व की चर्चा विवाद का विषय रह सकती है। कांग्रेस-कुण्डली में गु. शु. का तुलास्थ होना इस पार्टी को पुनर्जीवन देता मालूम देता है।

आम आदमी पार्टी

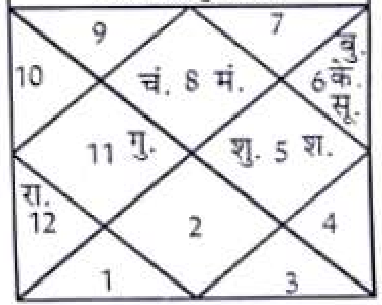
आम आदमी पार्टी के मुखिया श्रीकेजरीवाल जी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार 20-7-2021 के बाद अर्थात् गुरु में चन्द्रांतर का समय प्रगतिप्रद रहने **की भविष्यवाणी मार्त्तण्ड पंचांग सं. 2080 वि. में की गई थी, तदनुसार सारा पंजाब आप पार्टी के प्रभाव में आ गया एवं 'आप पार्टी' एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में उभर कर सामने आई थीं।**

आगे की ग्रहस्थिति इस पार्टी के लिए संघर्षपूर्ण रहेगी। दिल्ली में भी इस पार्टी का प्रभुत्त्व खतरे में आ सकता है। लेकिन अन्य कुछ प्रान्तों में यह पार्टी अपना खाता खोलने में सफल रहेगी।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्रीनरेन्द्र मोदी महाभाग

जन्माङ्ग श्री नरेन्द्र मोदी, 17 सितं., 1950 ई., 11 घं. 0 मि. A.M., मेहसाना (गुजरात),



श्रीनरेन्द्र मोदी महाभाग के जन्मांग में मंगल स्वस्थ है। **इस समय मंगल में शनि का अन्तर 30 मई, सन् 2025 ई. तक चलेगा। गोचर में शनि-राहु सूर्य-शुक्र के साथ मीन राशि में हैं। 6 जून, 2025 ई. तक मंगल कर्क राशि में रहेगा। ग्रहस्थिति राजनैतिक दृष्टि से संघर्षपूर्ण है, 6 जून के बाद मंगल सिंह राशि में आकर जन्मांग में शनि के साथ मेल करेगा। यह ग्रहस्थिति देश में आन्दोलन किंवा जटिल समस्याओं से परेशानीकारक मालूम देती है।**

लेकिन जन्मांग में मीनस्थ राहु त्रिकोण (पंचम भाव) में होने से **आपदाओं-समस्याओं को परास्त करने वाला है-**

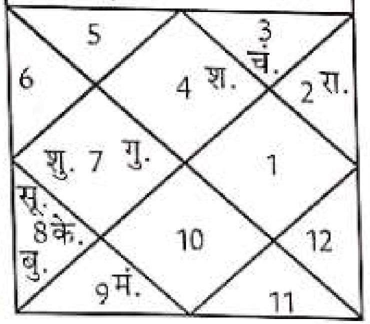
"यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद् योगकारकौ।।"

28 जुला., 2025 ई. से 13 सितं. तक गोचर में शनि-मंगल का समसप्तक स्वास्थ्य एवं राजनैतिक दृष्टि से नेष्ट मालूम देता है। **परन्तु गोचर में मिथुनस्थ गुरु की जन्माङ्ग में पंचमेश गुरु पर विशेष दृष्टि एवं 30 मई, 2025 के बाद मंगल में बुधान्तर में पुनः इन्हें राजनैतिक सर्वोच्च मञ्च पर प्रतिष्ठित कर सकेगी, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।**

श्रीमती सोनिया गान्धी

इस संवत् के प्रारम्भ में ही कर्क राशि का मंगल श्रीमती सोनिया गांधी जी के जन्मांग में जन्मकालिक शनि के साथ रहेगा। यह स्थिति 6 जून तक प्रभावी रहेगी। **तत्पश्चात् 28 जुलाई से कन्या राशिस्थ मंगल की मीनस्थ शनि पर दृष्टि समसप्तकयोग बनाएगी। 13 सितम्बर तक यह योग स्वास्थ्य की दृष्टि से कष्टप्रद है। 18 अक्तूबर के बाद कर्कस्थ गुरु भाग्येश होकर भाग्यस्थान को देखेगा। राजनैतिक दृष्टि से यह योग उत्तम है, राजनीति में उत्तम प्रभाव प्रदान करने वाला है।**

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी



इस वर्ष शनि-मंगल की स्थिति एवं गुरु की गोचर स्थिति श्रीमती सोनिया गांधी जी के स्वास्थ्य एवं सन्तानभाव के राजनैतिक जीवन को प्रभावित करेगी।

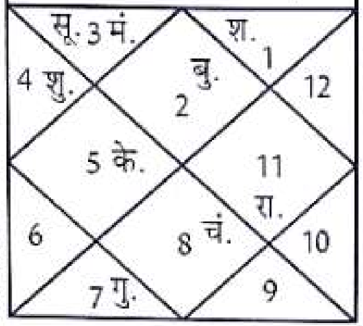
श्रीराहुल गांधी

गतवर्ष के पंचांग में श्रीराहुल गांधी के बारे में जो भविष्यवाणी की थी, वह कम आश्चर्यजनक नहीं। पढ़ें-संवत् 2080 वि. का पंचांग, पृष्ट 51, कॉलम 1 में–

"गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार शनि- मंगल का संबंध एवं नवम-दशमपति शनि की स्थिति राजनैतिक संघर्ष एवं परेशानी वाली रहेगी।"

"तदनुसार पार्टी के कुछ व्यक्ति अन्तर्मन से इनका विरोध भी करते रहे हैं। राजनैतिक संघर्ष एवं पराजयजन्य परेशानी का भी सामना करना पड़ा है।"

कुण्डली श्रीराहुल गांधी
19-6-1970, 5.5 A.M.,



मंगल की महादशा में चन्द्र का अन्तर 27-10, 2024 ई. तक चलेगा। जन्माङ्ग में शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है। चन्द्रमा सप्तम भाव में नीच है अतः यह वर्ष श्रीराहुल गांधी जी के लिए विशेष मानसिक परेशानी वाला रहेगा। आगे राहु में राहु का अन्तर 9-7-2027 ई. तक रहेगा। इन दिनों कर्मक्षेत्र पर गुरु की दृष्टि से श्रीगांधी जी के लिए राजनैतिक जीवन प्रगतिप्रद रहेगा।

श्रीमती प्रियंका वाड्रा– श्रीमती प्रियंका की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार शुक्र की महादशा में बुधान्तर 12 जन., 2024 ई. तक प्रभावी है। बुध केन्द्रेश होकर धनुःस्थ सूर्य एवं गुरु के साथ सप्तमस्थान में 'बुधादित्ययोग' बनाता है, जोकि राजनीति में विशेष स्थान बनाने की प्रेरणा देता है। आगे सूर्य की महादशा में सूर्यान्तर 30/6/24 ई. तक चलेगा। भाग्येश शनि भाग्य स्थान में (गोचर में) आ रहा है और कर्मेश गुरु भी मेषस्थ होकर नवम दृष्टि से सूर्य-बुध एवं गुरु को देखेगा– **यह ग्रहस्थिति प्रियंका जी को कुछ राजनैतिक प्रगति एवं आभासी स्थायीत्व प्रदान करने वाली है। सन् 2025-26 ई. की ग्रहस्थिति इनके लिए ठीक-ठीक रहेगी।**

श्री अरविन्द केजरीवाल– 'आप' पार्टी के प्रवर्त्तक श्री केजरीवाल की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार एवं अन्य पार्टी सहयोगियों/नेताओं के श्रम के आधार पर पार्टी को पंजाब, दिल्ली में सफलता मिली है। लेकिन गुरु में मंगलांतर, मंगल जोकि जन्माङ्ग में नीच एवं क्षीण है, दिल्ली में एवं अन्यत्र भी विपक्षी पार्टियों की नीति से पार्टी की गरिमा को कुछ हानि कर सकता है, लेकिन केजरीवाल जी मिथुनस्थ/कर्कस्थ गुरु में पार्टी को पुनरुज्जीवित करने एवं इस पार्टी का प्रसार एवं स्थायीत्व प्रदान करने में सक्षम रहेंगे। हालांकि संघर्ष व प्रतिष्ठा पर आंच तो बनी रहेगी।

शनि नवमेश-दशमेश होकर व्ययस्थान में नीच है, जन्माङ्ग में ही सप्तमेश एवं व्ययमेश मंगल तृतीय स्थान में सूर्य से हतप्रभ है एवं नीच है, अतः इस समय गुरु में राहु का अन्तर 20 मार्च, 2026 तक *राजनैतिक परेशानी वाला तो है, लेकिन पदाप्तियोग बनने का संकेत भी देता है।*

आगे शनि में शनि का ही अन्तर 23-3-2029 तक स्वास्थ्य, राजनैतिक जीवन एवं दुर्घटना आदि से सावधान रहने का है, भगवान् रक्षा करें- यही प्रार्थना है।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब- इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन है तथा नामराशि कन्या है। वर्ष-प्रवेशकालीन कुण्डली में मीन राशि में सू. बु. रा. चं. शु.- ये पंचग्रही योग बना रहे हैं, कन्या राशि से इनका समसप्तकयोग है। अत: पंजाब में अराजक तत्त्वों द्वारा अशान्ति संभव है। कनाडा आदि में खालिस्तानी हलचल राजनीतिज्ञों की परेशानी का कारण बनेगी। 28 जुलाई, 2025 ई. से आगे संवत् के अन्त तक समय संवेदनशील है- भगवान् कृपा करें।

हिमाचल प्रदेश – इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन है। मीन राशि में पंचग्रही योग भयंकर प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, जलाप्लाव, भयंकर अग्निकाण्ड आदि से हानिकारक है। 16 जून से एवं 28 जुलाई से 13 सितम्बर तक का समय यहां के जनजीवन के लिए कष्टप्रद रहेगा। शासनतन्त्र के लिए भी यह समय उलझनपूर्ण एवं कठिन परिस्थिति वाला मालूम देता है।

हरियाणा- नामराशि मिथुन एवं प्रभावराशि मीन होने से 12 जुलाई से सितम्बर तक यहां राजनैतिक परेशानियां रहेंगी। आगामी निर्वाचन भी प्रभावित होगा। संवत् 2082 वि. के आरम्भ से मई तक मीन राशि में पंचग्रहीयोग यहां की शासनसत्ता के लिए कठिन परिस्थितियों वाला रहेगा। लेकिन 14 मई से संवत् के अन्त तक मिथुन राशिस्थ गुरु इस प्रदेश की शासनसत्ता एवं प्रगतिप्रद योजनाओं के लिए शुभंकर रहेगा।

जम्मू-कश्मीर – इस प्रान्त की नामराशि मकर एवं प्रभावराशि तुला है। संवत् के आरम्भ से 6 जून, 2025 ई. तक नीच राशिस्थ मंगल की मकर पर पूर्ण दृष्टि है। लेकिन मकरराशि पर गुरु की भी विशेष दृष्टि है। अत: यहां राजनेता सुधारात्मक कानून लागू करने के लिए प्रयास करेंगे। 28 जुलाई, 2025 ई. से सितम्बर तक शनि-मंगल का समसप्तक बना हुआ है। इस दौरान यहां मुल्लावाद, अलगाववाद, कट्टरता एवं भारत के प्रति पाकप्रेरित उग्रवाद पुंछ, कुपवाड़ा, बारामूला एवं राजौरी क्षेत्र में भयंकर विषम स्थितियों को बनाएगा। सीमाप्रान्त विशेषत: पाक-कश्मीर, कश्मीर-पंजाब उग्रवाद से प्रभावित रहेंगे। इस प्रान्त में सक्रिय आतंकियों के विरुद्ध कार्यवाही तेज करनी होगी, ताकि हमारे जान-माल व सैन्यबल की हानि न हो।

दिल्ली – इस प्रान्त की प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन है। भारतीय गणतन्त्र दिवस में सूर्य मकरस्थ है। शनि सारे संवत् में मीन राशि में ही रहेगा। 28 जुलाई से सितम्बर तक शनि-मंगल का समसप्तक चलेगा। **उपरोक्त ग्रहस्थिति इस प्रान्त में हिन्दू एवं मुस्लिम क्षेत्रों में उपद्रव का संकेत देती है। लेकिन शासनसत्ता स्थिति को नियन्त्रित कर लेगी। यहां आगामी निर्वाचनक्षेत्रों में भाजपा का विजयरथ सफल रहेगा। गोचर ग्रहस्थिति इस प्रान्त में हत्याकाण्ड आदि से अशान्ति का कारण बन सकती है।**

राजस्थान – इस प्रान्त की प्रभावराशि कर्क एवं नामराशि तुला है। संवत् के प्रारम्भ से ही मंगल कर्क राशि में आकर 6 जून तक तुला राशि को प्रभावित करेगा। बाद में मंगल 13 सितम्बर से 27 अक्तूबर तक तुला राशि में रहेगा। इसी मध्य शनि वक्री रहेगा।

वर्तमान मन्त्रिमण्डल में सहयोगी कार्यकर्त्ताओं की स्वार्थपरकता एवं सहयोग यहां के प्रधान नेतृत्व के लिए प्रश्नचिह्न पैदा कर सकता है। परिणामस्वरूप, आगे भाजपा के वरिष्ठ नेतृत्व के प्रयत्न से यहां सत्ता-संरक्षण संभव है। राजस्थान के सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि से भी सचेष्ट रहना होगा।

विशेष:- चीन से सम्बन्धों का स्वर्णयुग समाप्त होगा। म्यांमार, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा आदि क्षेत्र विवाद का कारण बनेंगे। छत्तीसगढ़ में इस वर्ष मई, 2025 ई. से जुलाई के मध्य उग्रवादजन्य अशान्ति रहेगी।

पाठको! प्रभुकृपा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया, जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुन्धान के आधार पर विश्वास करें-

''समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र-परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुर:।।''

लेख पूर्ण होने की तिथि-
10 मई, 2024 ई.
(अक्षय तृतीया)

शुभचिन्तक-
पं. इन्दुशेखर शर्मा,
संयमी शर्मा,

संवत् 2082 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षाविचार

वायुप्रदूषण, जलसंरक्षण का अभाव, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन–ये सब पूरे भारत के लिए संकट की आहट हैं, धरती पर मानवजाति को बचाना है तो हमें इन समस्याओं का हल ढूँढना होगा, अन्यथा प्राकृतिक प्रकोप एवं पर्यावरणविचार से समय कठिन परिस्थिति को लेकर आ रहा है।

इस लेख के माध्यम से हम प्रशासक वर्ग को सावधान कर देना चाहते हैं। — संयमी शर्मा

जलवायु एवं वर्षाविचार के मूलभूत सिद्धान्तों, मानवीय भूलों, प्रबन्धन की अदूरदर्शिता, प्राकृतिक स्रोतों के दोहन एवं प्राकृतिक रहस्यों की उपेक्षा विश्व के लिए जल्दी ही भयावह सिद्ध होगी–इसे जनता, नेतागण एवं देश की प्रबन्धन-समितियों को अतिशीघ्र गम्भीरता से लेना होगा, अन्यथा "**यद्‌भावी न तद्‌भावी भावी चेन्न तदन्यथा**"–(जो होना है, वह होना ही है)–यह सोचकर कब तक प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर पाएंगे–यह तो भगवान् ही जानें। लेकिन ग्रहचाल के अनुसार प्राकृतिक आपदाओं के भयंकर दुष्परिणाम शीघ्र ही स्थावर-जंगम जगत् को विनाश के कगार पर ले जाने वाले मालूम होते हैं। जलवायु/वर्षा-विचार के साथ इस लेख में एतत्-सम्बन्धित आधारभूत रहस्यों की चर्चा भी सूक्ष्मरूप से की गयी है।

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि उत्पादन–ये जीवनाधायिका-चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा–ऐसी मान्यता है। लेकिन "**जल एवं वायु**"–ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से है। इन्हीं के आधार पर "**अन्नस्तम्भ**" की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज सम्भव नहीं। अत: सं. 2082 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश आगे दे रहे हैं। **आशा करते हैं कि–यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए एक दिशा-निर्देशक सिद्ध होगा।**

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव, जोकि समस्त विश्व के मौसम को स्थिर रखने में सर्वोच्च भूमिका निभाते हैं, 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण उत्तरी ध्रुव में बढ़ रहा तापमान आगे आने वाले लगभग 15/16वर्षों की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शनि, राहु एवं केतु कुछ वर्षों में ही विश्व के लिए खतरे की घण्टी बजा सकते हैं। **कहने का तात्पर्य यह है कि–"ग्लोबल वार्मिंग" विश्व के जलवायु के लिए भयंकर किंवा विपरीत परिस्थितियां बनाएगी, जिससे ध्रुवों के आसपास के देशों को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को ही दुष्परिणाम झेलने पड़ेंगे। अनेकत्र 'ऋतु-विपर्यय' अनुभव होने से वैश्विक तापमान किंवा प्रकृति में महानद और अन्य जलस्रोत सूखने लगेंगे। समुद्र एवं महानदों के तटों पर प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित होंगे। वृक्षों से ऑक्सीजन कम प्राप्त होने लगेगी–इत्यादि आश्चर्यजनक परिवर्तन होंगे, जिससे रोग बढ़ेंगे।** मौसम में इस प्रकार के उतार-चढ़ाव प्रकृति के साथ चल रहे खिलवाड़ के कारण जारी हैं। **प्रकृति में हो रहे असामान्य किंवा अप्राकृतिक परिवर्तन को समझने में तो आधुनिक वैज्ञानिक भी सकते में हैं। मौसम की अनिश्चितता से कृषिक्षेत्र में सम्भावित जोखिम कम करने के लिए सरकार को व्यापक रणनीति बनानी होगी।**

सभी समुदायों के धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरण-हितैषी बनने के लिए कहा गया है। "मनुस्मृति में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर की संज्ञा दी गयी है। कुरान कहती है कि-जल ही जीवन है। 'वेद' पानी के महत्त्व की गाथाओं से भरे पड़े हैं। ईसाई समुदाय में भी प्रकृति-प्रेम को श्रेष्ठता प्रदान की गयी है।"

इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार '**अलनीनो**' गर्मी को बढ़ायेगा, *परिणामस्वरूप कहीं सूखा, कहीं भयंकर बाढ़ से जनधनहानि का संकेत मिलता है।* '**अलनीनो**' *ऐसी प्राकृतिक घटना है, जिससे* ***प्रशान्त महासागर का गर्म***

पानी उत्तर एवं दक्षिणी अमेरिका की ओर फैलता है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया का तापमान बढ़ेगा। मौसम का सामान्य जलवायु-चक्र बिगड़ जायेगा, कहीं विनाशकारी बाढ़, कहीं सूखे के हालात बनेंगे। अमेरिका, चीन एवं भारत आदि में विगत कई वर्षों से बाढ़ एवं उत्तरी भारत में सूखा भी इन्हीं कारणों से सम्भव हुआ है।

आगे बर्फ के पिघलने से विश्व में समुद्री-तूफान आदि विनाशकारी लीलाएं देखने को भी मिलेंगी। आर्द्राप्रवेश-कालीन ग्रहगति के अनुसार जम्मू-कश्मीर, गुजरात, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, मिजोरम आदि में इस वर्ष प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। महाराष्ट्र (मुम्बई) में भी प्राकृतिक प्रकोप दिखाई देगा।

समुद्रतटवर्ती महानगरों एवं विश्व के देशों में इस वर्ष (सं. 2082 वि.) से ही विशेष प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग स्पष्ट रूप से ग्रहस्थिति संकेत देती है।

भारत में वर्षा एवं वायु के योग

जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन ग्रहगोचर के अनुसार माना गया है। ज्योतिष-शास्त्रानुसार वर्षा, वायुमण्डल, समुद्री तूफान एवं चक्रवात आदि प्राकृतिक उत्पातों का विचार भी सूर्य के आर्द्राप्रवेश, रोहिणीवास, चतुर्मेघविचार एवं गोचर ग्रहस्थिति पर निर्भर करता है। अत: सर्वप्रथम सूर्य की आर्द्रा-प्रवेशकालीन कुण्डली के आधार पर विचार करते हैं।

वि. सं. 2082 में 'सिद्धार्थी' संवत्सर होने से वर्षा काफी होगी।

'तोयपूर्णा: भवेन्मेघा:'- प्रमाणानुसार बादल-वर्षा पर्याप्त होने के योग हैं। इस संवत् में **राजा एवं मन्त्री सूर्य** होने से कहीं बाढ़ से हानि एवं कहीं सूखा पड़ने से हानि के योग बनते हैं। **सस्येश बुध** एवं **धान्येश चन्द्र** होने से वर्षा की अधिकता का भान होता है। लेकिन **मेघेश** सूर्य होने से वर्षा की भयंकर कमी से कृषिकर्म को हानि होगी। इस वर्ष चतुर्मेघों में **'संवर्त'** मेघ होने से **'संवर्ते वायु-पीड़नम्'**- प्रमाणानुसार अत्यधिक वायुवेग से अनेकत्र तूफान से हानि होगी, कुछ प्रांतों में अत्यधिक वर्षा से बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जनजीवन एवं खड़ी फसलों को हानि होने के योग भी बनते हैं।

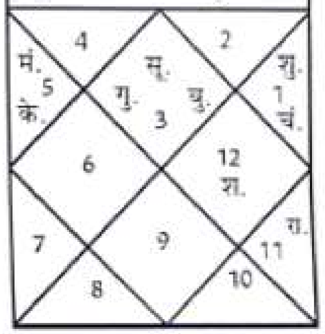
इस वर्ष नवमेघविचार से **'नील'** नामक मेघ होने से **''नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टि: प्रजायते''**- प्रमाणानुसार पर्याप्त वर्षा के संकेत मिलते हैं।

इस वर्ष वायुसप्तक में **'प्रवह'** नामक वायु कुछ प्रान्तों में समुद्री तूफान, बवण्डर आदि से जनधनहानि का संकेत देती है। **अष्टनाग-विचार** से भी इस वर्ष वायुवेग से भारी हानि के योग बनते हैं।

'जलस्तम्भ'-विचार से इस वर्ष जलस्तम्भ 85.3 प्रतिशत होने से भयंकर वर्षा होने के योग हैं।

वि.सं. 2082 में 22 जून सन् 2025 ई. को मेषस्थ चन्द्र के समय 6 घं. 18 मि. (I.S.T.) पर **सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।** इस समय मिथुन लग्न है। शनि मीन राशि में होने से शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ ही रहेगी।

सूर्य-आर्द्राप्रवेश कुण्डली



नोट करें कि-उत्तरी भूभाग के प्रान्तों में शनि के वक्रत्वकाल 12 जुला., 2025 ई. से 28 नवं. के मध्य एवं 12 नवं. के लगभग गुरु के वक्रत्व काल में, 11 मार्च 2026 ई. के मध्य एवं 14 मार्च 2026 ई. से सं. के अन्त तक श. सू. के ऐक्य एवं शनि की वर्षभर मीन राशि में स्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है कि-भूभाग पर अत्यधिक निर्माण, पर्यावरण के प्रति घोर उपेक्षा, पर्वतीय भूभाग पर टनल आदि निर्माण से पर्वतों के दरकने, भयंकर वर्षा, भूकम्प, भयंकर हिमपात आदि विपरीत परिस्थितियों से अनेकत्र भयंकर आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।

आर्द्राप्रवेशकुण्डली के अनुसार शनि-सूर्य की स्थिति देश के कुछ भागों में दुर्भिक्ष एवं पेयजल की समस्या से भयंकर स्थिति का संकेत देती है। इन दिनों अप्रैल-मई के लगभग ही उत्तर-दक्षिणी प्रान्तों में वर्षा ऋतु से पहिले ही वर्षा किंवा ऋतुविपर्यय से हानि के लक्षण प्रतीत हो रहे हैं।

शनि की दृष्टि-इस वर्ष शनि की दृष्टि उत्तर की तरफ होने से उत्तरी भूभाग में कहीं दुर्भिक्ष, प्राकृतिक आपदा, समुद्री तूफान, भूकम्प एवं किसी क्षेत्र (देश) में परस्पर भयंकर युद्धात्मक स्थिति से भयंकर हानि होगी-यह चिन्ता का विषय है-

''शनैश्चर:क्रमात् पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष-देश-भंगाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरै:।।''

ग्रीष्म-सस्यजातक-ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है, लेकिन शनि भी विशेष दृष्टि से सूर्य को प्रभावित कर रहा है। अत: पहले बोई हुई (अगेती) फसलें खराब होंगी। पछेती की पैदावार से लाभ हो।

शरत् सक्ष्यजातक ग्रहस्थिति के अनुसार शनि की सूर्य पर दृष्टि एवं मंगल नीचस्थ होने से किञ्च श. रा. राश्यैक्य अवर्षण किंवा अतिवर्षण से हानिकारक रहेगा।

इन सभी आपदाओं से बचने के लिए वेदों एवं अन्य शास्त्रों में इस प्रकार के उपाय बताएं हैं; जोकि बहुत ही सुगम एवं महत्त्वपूर्ण हैं।

मानव समाज प्राचीन काल से ही वृक्षों की पूजा करता आया है। बरगद, पीपल, आम, नीम, तुलसी, हरड़, बहेड़ा, आंवला आदि का प्रयोग सदियों से औषधरूप में भारत में प्रचलित है। इनका रोपण एवं वनों के संरक्षण से वर्षा/वायु की विशुद्धि एवं सुचारु प्रयोग से हम पर्यावरण की रक्षा एवं जीवन्त रहने का स्वप्न साकार कर सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है-

''तुलसी-गन्धमादाय यत्र गच्छति मारुत:।
दिशा दशश्च पूता: स्युर्भूत-ग्रामश्चतुर्विध:।।''

अत: तुलसी की पवित्र सुगन्धि एवं इसी प्रकार अन्य वृक्षों के संरक्षण से हम वर्षा-वायु का नियन्त्रण करके जीवन को सुरक्षित रख सकते हैं, अन्यथा अनियन्त्रित वर्षा किंवा गर्म हवाओं का प्रकोप संसार के लिए भारी पड़ सकता है।

गर्म हवाओं का प्रकोप आज की ही समस्या नहीं, लेकिन इसके दूरगामी प्रभावों के प्रति हमें सावधान अभी से रहना होगा। ग्रहगोचर के अनुसार आगामी वर्षों में तापमान दो से चार डिग्री सैल्सियस तक या इससे भी अधिक बढ़ सकता है। यह मानवता एवं जीवन्त सृष्टिमात्र के लिए बड़ी चुनौती है। वैज्ञानिकों को इस बारे में सावधान कर देना उचित समझते हैं।

अब संवत् 2082 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत में प्रत्येक मास का वर्षाविचार संक्षेप से लिखना उचित समझते हैं-

''वृष्टिमूला कृषि: सर्वा वृष्टिमूलं च जीवनम्।
तस्मादादौ प्रयत्नेन वृष्टिज्ञानं समाचरेत्।।''—*(कृषि-पराशर)*

मार्च (सन् 2025 ई.) – मासारम्भ में ही बुध का मेल शुक्र एवं राहु के साथ मीन राशि में होने से कुछ प्रान्तों में अवर्षण किंवा अधिक वर्षा से हानि के योग हैं। आगे 2 से 5 मार्च तक की ग्रहस्थिति कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ से हानिकारक है। 14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आएगा। 14 से 17 मार्च तक तथा 19-20 मार्च को तूफान से हानि संभव है। 25 मार्च से 31 मार्च के मध्य शनि के मीन में आने पर कुछ प्रान्त अकालग्रस्त होंगे एवं अनेकत्र बाढ़-तूफान से हानि के योग बनेंगे।

इन दिनों लंका के पूर्वी छोर, म. प्र., बंगाल, आसाम, बिहार आदि में कहीं बादलचाल एवं वायुवेग किंवा बूंदाबादी हो। श. मं. एवं सूर्य की स्थिति कहीं प्राकृतिक आपदा किंवा आकाशीय बिजली से हानि बना सकती है।

अप्रैल (2025 ई.)–अप्रैल 2, 3, 7, 10, 11, 12- इन दिनों सू. रा. श. शु. एवं बुध की मीन राशि में स्थिति अवर्षण किंवा अच्छी वर्षा के योग बनाती है। 13 अप्रैल को शुक्र मीन राशि में मार्गी होगा। 25, 27, 28, 29 एवं 30 अप्रैल को जोरदार वायु का प्रकोप रहेगा। महाराष्ट्र, आसाम, उड़ीसा, उ. प्र. के कुछ भागों में, किंच प. राजस्थान एवं हि. प्र. के कुछ भागों में बादलचाल किंवा वायुवेग के साथ खण्डवृद्धि होगी। उत्तरी भारत में मौसम बदलेगा व तापमान बढ़ने लगेगा।

मई – मई 6, 11, 12, 14 से 18 मई के मध्य हवा का जोर रहेगा एवं बादलचाल से कुछ प्रान्तों में स्वल्प वर्षा के योग हैं। मई 23, 25, 27, 30, 31 मई तक गु. रा. श. की स्थिति महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, उत्तराखण्ड, उ. प्र., जम्मू-कश्मीर, बिहार एवं हि. प्र. में मेघगर्जना के साथ अच्छी वर्षा के योग बनाती है। **ध्यान दें**- 10, 15, 20 एवं 30 मई के लगभग कुछ प्रान्त अतिवृष्टि/सूखे से प्रभावित रहेंगे।

जून – 3, 6, 7, 8, 9, 10, 12, 13, 14, 15, 16, 22, 23, 24, 26, 28, 29 एवं 30 जून को अनेकत्र जोरदार वर्षा हो। कुछ प्रान्तों में बाढ़ एवं तूफान से हानि का भी भय है। पंजाब, हरियाणा, हि. प्र., चण्डीगढ़, देहली, उ. खण्ड, उ.प्र., महाराष्ट्र, उड़ीसा, केरल, आसाम, जम्मू-कश्मीर एवं बंगाल में इन दिनों जोरदार वर्षा के योग हैं। **ध्यान दें कि- 8 से 18 जून एवं 21, 22 और 30 जून के लगभग इन दिनों कुछ प्रान्त बाढ़ की चपेट में भी रहेंगे।** श. मं. की स्थिति कुछ प्रान्तों में सूखा कर दुर्भिक्ष की स्थित भी बनाएगी।

जुलाई – 6, 7, 8 और 10 जुलाई से 23 जुलाई के मध्य शनि के वक्रत्व-काल एवं गुरु की स्थिति के अनुसार कुछ प्रान्त भयंकर बाढ़, तूफान की चपेट

में आएंगे। उ. भारत के कुछ प्रान्त सूखाग्रस्त भी रह सकते हैं। जुलाई 26, 27, 28, 29, 30, 31 जुलाई को अनेकत्र जोरदार वर्षा के योग हैं। जुलाई के मध्य भारत के राजस्थान, उड़ीसा, आसाम, उ. खाण्ड, हि. प्र., बिहार, महाराष्ट्र एवं अन्य समुद्रतटवर्ती इलाकों में कहीं तूफान, बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनधनहानि भी संभव है।

नोट - इस मास में श. मं. का समसप्तक एवं सू. श. का षडष्टक बाढ़, तूफान एवं आकाशीय बिजली गिरने आदि प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का संकेत देते हैं।

अगस्त - अगस्त 2, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 16, 18, 20, 21, 23 को अनेकत्र जोरदार वर्षा, बाढ़ से हानि के योग हैं। 29, 30, 31 अगस्त को भी वायुवेग के साथ यत्र-कुत्र वर्षा होगी। पंजाब, हि. प्र., उ. खण्ड, उ. प्र., महाराष्ट्र, कश्मीर, हि. प्र., नेपाल, बिहार, दार्जीलिंग एवं आसाम में ज़ोरदार वर्षा के योग हैं।

ध्यान दें— 17 अगस्त से सू. श. का समसप्तक व इस मास में श. शु. बु. का वक्रत्व एवं श. मं. का षडष्टक कहीं बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन किंवा समुद्री तूफान आदि से हानिकारक मालूम देते हैं।

सितम्बर - 3, 6, 13, 14, 15, 16, 19, 20, 21 सितं. को वायुवेग रहे एवं वर्षा-पानी की कमी रहे। सितं. 23, 25, 27, 28 एवं 30 सितं. को बादल चाल रहे, लेकिन वर्षा पर्याप्त न हो। इन दिनों भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में बादलचाल एवं वायुवेग के साथ अनेकत्र खण्डवृष्टि होगी। हि. प्र., कश्मीर एवं उत्तराखण्ड के उन्नत शृंगों पर कहीं हिमपात के समाचार मिलेंगे।

शनि-मंगल के षडष्टक एवं बु. गु. के वक्रत्वकाल में शीत का प्रभाव बढ़ेगा एवं प्राकृतिक आपदा व जलवायुविकार से हानि का भय है।

अक्तूबर - 2, 3, 6, 9, 10, 13, 16, 17, 18, 24, 25, 27 एवं 28 अक्तूबर को श्रीलंका, आसाम, बंगाल, उ. प्रदेश, कश्मीर, हि. प्र., बंगाल एवं उत्तराखण्ड आदि में बादलचाल एवं वर्षा के योग हैं। उत्तरी भारत में शरद ऋतु का प्रभाव बढ़ेगा, हिमाचली इलाकों में कहीं बर्फबारी भी होगी।

नवम्बर (2025 ई.) - 1, 2, 5, 6, 7, 10, 12, 13, 14, 16, 18, 19, 20, 23, 26, 27, 28 एवं 29 नवं. को उत्तरी भारत भयंकर शीत लहर की चपेट में रहेगा। हि. प्र., उत्तराखण्ड, कश्मीर आदि में ज़ोरदार हिमपात से यातायात अवरुद्ध रहेगा एवं मैदानी इलाकों में धुन्ध के कारण यानदुर्घटनाएं भी संभव हैं।

नोट - 27, 28, 29 नवम्बर की ग्रहस्थिति इस मास में कहीं भयंकर वायुवेग, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप व उग्रवादजन्य घटना से हानिकारक रहेगी।

दिसम्बर (2025 ई.) - 2, 5, 6, 7, 9, 10, 14, 15, 19, 20, 25, 28, 29, 30 एवं 31 दिसं. को अल्प बादलचाल, खंडवृष्टि, धुंध आदि से जनजीवन त्रस्त रहे। श. मं. की स्थिति व गु. शु. का समसप्तक उ. भारत में प्राकृतिक आपदा का संकेत देते हैं।

जनवरी (सन् 2026 ई.) - जन. 4, 6, 7, 10, 11, 12, 14, 15, 16, 17, 20, 21, 23, 24, 25, 28, 30 एवं 31 जन. को कहीं अतिवर्षण किंवा वर्षा के अभाव से अथवा भयंकर वायुवेग (तूफान) से हानि के योग बनते हैं। जनवरी के उत्तरार्द्ध में 18 जनवरी के लगभग मीनस्थ शनि की गुरु पर दृष्टि एवं मं. की राहु पर दृष्टि प्राकृतिक प्रकोप से हानिकारक रहे।

इस मास में आकाशीय बिजली भी कहीं गिरे- ऐसा योग है।

फरवरी 2026 ई. - फर. 3, 5, 6, 7, 8, 11, 12, 14, 15, 19, 21, 22, 23, 26, एवं 28 फरवरी के लगभग श्रीलंका के पूर्वी छोर, शिलांग व कुछ अन्य भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी होगी। उत्तरी भारत में हवा का ज़ोर रहेगा। वसन्त ऋतु के आगमन से मौसम में परिवर्तन अनुभव होगा। जलवायु-विचार से मौसम सुहावना रहेगा। इस मास में श. सू. मं. एवं रा. की स्थिति बिहार एवं हि. प्र. में कहीं बादलचाल, बूंदाबांदी कहीं वर्षा के योग भी बनाती है।

मार्च (सन् 2026 ई.) - 1, 3, 4, 5, 8, 9, 10, 11, 14, 15 एवं 18 मार्च को म. प्र., बंगाल एवं आसाम आदि में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी होगी। उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ गर्मी अनुभव होने लगेगी। मार्च में शनि मीन में एवं सूर्य-मंगल-बुध-राहु- ये चारों कुम्भ में होने से समुद्री तूफान किंवा भूकम्प आदि से कहीं प्राकृतिक आपदा एवं रोगविशेष से जनधनहानि हो।

कुछ चिन्तनीय स्थिति—जलवायु-प्रदूषण के बारे में भविष्य में विशेषरूप से चिन्तनीय विषयों पर ध्यान देना अनिवार्य है। विश्व का तेल एवं गैस उद्योग तथा ऑटोमोबाईल-निर्माण-क्षेत्र— ये दो व्यवसायक्षेत्र कार्बन-डाईआक्साईड उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत हैं, जो जलवायु-परिवर्तन एवं प्रदूषण का प्रमुख स्रोत भी हैं। विश्व के वैज्ञानिकों को प्रदूषण के इन स्रोतों का हल निकालना होगा, अन्यथा आगामी कुछ वर्षों में ही हमारे ग्रह को विषम परिस्थितियों से जूझना पड़ेगा और जीवन संकट में पड़ जाएगा। आगामी दशाब्दों की ग्रहचाल के परिशीलन से यह चेतावनी चिह्नित कर देने के लिए विवश हैं।

— — — — —

व्यापार-विमर्श (संवत् 2082 वि.)

(संतव् 2082 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवं मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक - संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियन्त्रण है और सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है, तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रहविशेष की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम 'तेज़ी-मन्दी' कहते हैं।

हम यहां '**व्यापार-विमर्श**' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी-मन्दी का मशवरा अपने ग्राहकों को देते हैं। व्यापारियो! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे।

व्यापारी सज्जनो! 1 जनवरी, सन् 2025 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-काली मिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 6000/- (छः हजार रुपये) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 60,000/- (साठ हज़ार रुपये) है।

व्यापारियों से निवेदन है कि वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी भी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

संवत् 2082 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी-मन्दी का आकलन

संवत् 2082 वि. में तेज़ी-मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है-

इस संवत् का राजा और मन्त्री-दोनों पद सूर्य के पास होने से अनाजादि की उपज कम होने से बाज़ार तेज रहेंगे। जनता में भयंकर रोग से परेशानी बनेगी। मेघेश सूर्य वर्षा-पानी की भी कमी करेगा।

कुछ देशों से व्यापारिक सम्बन्धों का नवीकरण होगा। कुछ देश व्यापारिक दृष्टि से अपने सम्बन्धों को निराकृत करेंगे। **राजनैतिक परिप्रेक्ष्य से इस वर्ष चीन, पाक, साऊदी अरब आदि देशों से व्यापारिक सम्बन्ध विशेषरूप से कमजोर होने का संकेत मिलता है।** अत: व्यापारिक बन्धुओं से अनुरोध है कि- तेल, कॉटन, बादाम, किशमिश, दालों एवं नमक आदि के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर ही काम करें। लेकिन इस वर्ष मंगल का मित्र चन्द्र धनेश है। **अत: यह वर्ष बहुत नये आयाम एवं नयी योजनाओं के साथ भारत आर्थिक दृष्टि से समृद्ध एवं महाशक्ति-सम्पन्न देशों की कोटि में मान्यता प्राप्त करेगा।**

व्यापारी ध्यान दें- संवत् 2082 वि. में ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज; गुड़, दालवाना, विशेषत: कपास, नरमा, मैथा, तेल एवं सरसों आदि तिलहन; लाल-काली मिर्च, जीरा, लौंग व सोना, चांदी आदि धातु में तेजी-मन्दी के भयंकर

रिएक्शन्ज आएंगे। दूर-दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आयें। आने की असमर्थता में सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स में से किसी भी धातु, अनाज; दालवाना, गुड़, शेयर बाज़ार या तिलहन की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 6000/- **(छः हजार रुपये) प्रतिजिन्स/प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।**

इस वर्ष (सं. 2082 वि.) में गुरु वक्र-मार्गादि गति से 13 मई तक वृष राशि में ही रहेगा। शनि भी इस संवत् में वक्र-मार्गादि गति से मीन राशि में ही चलेगा। परिणामस्वरूप सोना-चांदी-तांबा, तेल-तिलहन एवं सभी अनाजों में भयंकर तेजी-मन्दी के योग बनेंगे। व्यापारीबन्धु हमारे साथ परामर्श करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकेंगे; -इसमें सन्देह नहीं।

सं. 2082 वि. में व्यापारिक क्षेत्र में विशेष उतार-चढ़ावों का सांकेतिक विवरण आगे प्रतिमास लिखने का प्रयास कर रहे हैं। आशा है-व्यापारीजन पूर्ण लाभ उठा सकेंगे।

मार्च (सन् 2025 ई.)

मास के प्रारम्भ में ही चन्द्रदर्शन होगा एवं 1 मार्च को बुध उ. भा. में प्रवेश करेगा। **इस समय बुध का मेल शुक्र एवं राहु के साथ मीन राशि में है।** चान्दी में घटावढ़ी, रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों का भाव अस्थिर रहे।

2 मार्च को शुक्र वक्री होगा। इस समय घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी रहे। रुई में पहले तेजी होकर बाद में मन्दी रहे।

2 मार्च को ही शनि पू.भा. के दूसरे चरण में आ रहा है। गेहूं आदि अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, उड़द, मूंग में अच्छी तेजी का झटका आएगा।

4 मार्च को सूर्य पू. भा. में आता है। नोट करें कि- सूर्य-शनि दोनों कुम्भ राशि में ही हैं। ग्रहस्थिति के मुताबिक रेशम, सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिलहन, तेल, गुड़, खाण्ड, रुई तेज हों।

[2 से 5 मार्च तक बाजार तेज रहें।]

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर राहु, शुक्र एवं बुध के साथ चतुर्ग्रहीयोग बना रहा है। इस समय सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना में अच्छी तेज का झटका आएगा। प्रत्येक जाति के अनाजों में कुछ तेजी, चांदी में 1-2 टका की मन्दी का रुख संभव है।

15 मार्च को बुध वक्री होगा। इस समय शुक्र-राहु भी वक्रगति से चल रहे हैं।

बाजार तेजी की ओर बढ़ेंगे। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चावल, चना, रुई आदि में व्यापारी तेजी से लाभ लेंगे।

16 मार्च को राहु पू. भा. के चतुर्थ चरण में आता है। सभी अनाज, घी, तेल, तिलहन, दालवाना आदि में अच्छी तेजी का योग है। 17 मार्च को सूर्य उ. भा. में आकर भी सभी बाजारों में तेजी करेगा।

[15 से लगभग 17 मार्च तक बाजार तेज रहेंगे।]

19 मार्च को गुरु के रोहिणी में आने एवं 20 मार्च को गुरु के पश्चिम में अस्त होने पर बाजार नीचे आएंगे- सावधान रहें। हमारे विचार से इन दिनों सभी अनाज, दालों, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, मिर्च, रुई, सूत, सण आदि में **मन्दी का झटका आ सकता है।**

25 मार्च को शुक्र पूर्व में उदय होगा। रुई, सूत, चांदी, चावल, घी, सोना तेज रहें। 29 मार्च को शनि पू. भा. के चतुर्थ चरण/मीन राशि में आकर घी, अनाज, तेल, सभी तिलहन, दालवाना में जोरदार तेजी का झटका लाएगा।

लगभग 29 मार्च को ही शनि पूर्व में उदित होकर गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों एवं लोहा, गुड़, घी, शक्कर आदि में तेजी से लाभ देगा।

26 मार्च बुधवार को शुक्रबाल्य समाप्त होने पर बाजारों में उठापटक हो सकती है- सावधानी से काम करें।

29 मार्च (2025 ई.) को शनि पू.भा. 4, मीन में आएगा। इस समय चांदी, चन्दन, केसर एवं कुसुम्भ मे तेजी रहेगी। **ध्यान दें- इस समय तिलहन में जोरदार मन्दी का झटका आएगा। सोना, चांदी भी मन्दे रहें। रुई, दालों एवं सभी अनाजों में सू. चं. बु. रा. एवं शु. के शनि के साथ मीन राशि में होने से जोरदार तेजी आएगी, तुरन्त लाभ लें।**

मीन का शनि दारुण दुर्भिक्ष का संकेत देता है, अतः बाजारों में तेजी भी संभव है-

''अर्कपुत्रो यदा मीने दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्।
सागराः सर्वनद्यश्च विनश्यन्ति चतुष्पदा।।''

अप्रैल (सन् 2025 ई.)

2 अप्रैल (सन् 2025 ई.) को मंगल कर्क राशि में दाखिल होगा। इस समय रुई में 30 टका की मन्दी संभव है, तेल-तिलहन में मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी, सभी अनाजों एवं गुड़-शक्कर आदि में तेजी से तुरन्त लाभ लें।

3 अप्रैल को वक्री बुध पू.भा. में आकर बाजारों में विशेषतः सोना, चांदी, लोहा, तांबा तथा अनाजों में अचानक मन्दा करे, रुई में घटाबढ़ी हो।

ध्यान दें:- 7 अप्रैल को बुध मार्गी होगा। इस समय बु. रा. श. शु. एवं सू. - ये सब मीन राशि में पंचग्रहीयोग में हैं। इस समय रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बनेगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी; रेशम, तेल, घी, तिलहन मन्दे हों। मोटे अनाज चार दिन तक तेज रहें।

10 अप्रैल को गुरु मृगशिरा नक्षत्र में दाखिल होगा। इस समय गुरु शनि की नज़र में है। रुई, चांदी, तिल, तिलहन, घी, कपास तेज रहें, चावल मन्दे रहें।

11 अप्रैल को बुध उ.भा. में आकर चांदी में घटाबढ़ी करे, रुई, गुड़, खाण्ड, चावल एवं गेहूं आदि अनाज तेज रहें।

12 अप्रैल को मंगल पुष्य नक्षत्र में आकर बाजारों में जोरदार मन्दी का झटका देगा - सावधान रहें। चांदी, रुई में घटाबढ़ी और सोने में खासी मन्दी का झटका आएगा।

13 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आएगा। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सोना में तेजी का उछाला आएगा। अनाज, दालवाना, चना, मटर, जौ, चावल आदि में तेजी के बाद मन्दी बने। **नोट करें**- 13 अप्रैल को ही शुक्र मार्गी होकर रुई में मन्दी करे, 5 दिन बाद चांदी, सोना तेज रहें। **इस समय अनाज, गुड़, घी के स्टॉक से आगे अच्छा लाभ मिलेगा।**

25 अप्रैल को शुक्र उ.भा. में आएगा। इस समय शु., श., बु. रा. एक साथ हैं। चावल, मोती, चांदी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास, घी आदि के बाजारों में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे। साथ-साथ लाभ लें, पूरी तरह नफा लेने के चक्कर में न रहें।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी नक्षत्र एवं बुध रेवती नक्षत्र में आकर आगामी 11 दिनों में रुई, अलसी, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, सभी अनाज, अलसी, राई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, केसर, कुसुम्भ, गेहूं, लाल मिर्च में तेजी करे। तिलहन में कुछ मन्दी संभव है।

28 अप्रैल को गुरु के मृगशिरा 2 में आने पर अनाज, दालें, गुड़, तिल, रुई, कपास तेज हों। चावल, चांदी, घी में मन्दी का झटका आ सकता है।

29 अप्रैल को सभी अनाज, व्यापारिक वस्तुएं तेज रहें, रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी। सोना-चांदी में घटाबढ़ी रहेगी।

30 अप्रैल को सोना-चांदी की खरीद अधिक होगी, भाव मन्दे होकर तेज होंगे।

मई (सन् 2025 ई.)

मासारम्भ में बु. शु. श. एवं रा. मीन राशि में एकत्र हैं, अत: बाजारों में तेजी-मन्दी के Reactions आएंगे, समझ से काम करें।

नोट करें कि- 6 मई को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर सूर्य के साथ एक-राशिसम्बन्ध बनाता है,- यह समय बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इन दिनों-रुई, कपास, सूत, घी, तिलहन, सुपारी, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चांदी, सोना तेज रहेंगे। गेहूं, दालवाना, चना, जौ आदि भी तेज होंगे। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर 11 मई तक चल सकती है, बाजार का रुख देखकर काम करें।

11 मई को सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा। आगामी 15 दिनों में घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, चावल, रुई, सरसों आदि में तेजी का ही वातावरण रहेगा- तुरन्त लाभ लें।

12 मई को मंगल आश्लेषा नक्षत्र में आकर बाजार का रुख बदल सकता है- सावधान रहें। हमारे विचार से चांदी और रुई में मन्दी बने, चांदी में इस समय झटके के साथ अच्छी मन्दी बने। **शेयर बाजार में भी इन दिनों मन्दी का वातावरण रहेगा।** यह मन्दी 13 मई तक उत्तम-मध्यमरूप से बनी रहेगी। तुरन्त लाभ लें।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शनि की नजर में रहेगा। यह योग बाजारों में जोरदार तेजी से लाभ देगा। इन दिनों चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, घी, तेल, सरसों आदि सभी तिलहन, तेज रहेंगे। जौ, चना, गेहूं, मटर, आटा एवं चावल के बाजार तेज होकर मन्दे रहें।

14 मई को बुध भरणी एवं गुरु मिथुन राशि में आ रहे हैं। व्यापारी बन्धु इस योग से उत्तम लाभ ले सकते हैं। इन दिनों राजनैतिक वातावरण भी बाजार तेज करें-

"मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।"

इस प्रमाणानुसार **मई के उत्तरार्ध में प्राकृतिक प्रकोप (वर्षा के अभाव आदि) से बाजारों में तेजी का संचार होगा।**

इन दिनों शेयर बाजार भी तेज होंगे।

नोट करें- 14 मई को सूर्य-बुध एवं गुरु की पोजीशन सोना-चांदी, सुपारी, मूंगफली, अलसी, सरसों, तांबा, लोहा, घी, तेल एवं तिलहन के बाजारों में **अच्छी तेजी का संकेत देती है।** रुई में 50 टका के झटके से मन्दी आ सकती है। **मन्दी हो, तो स्टाक करें, वरना 15 मई को तेजी आकर सारा नफ़ी करके लाभ लें, वरना आगे हानि में रहेंगे।**

16 मई को शुक्र रेवती नक्षत्र में आकर रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर, दालों, घी तथा जवाहरात में मन्दी का झटका लाएगा। यह मन्दी 17 मई तक रहेगी।

18 मई को राहु कुम्भ राशि में आएगा एवं बुध पूर्व में अस्त होगा। **इस समय राहु पर मंगल की विशेष नजर भी रहेगी। इस समय रुई की फसल अतिवृष्टि या कीड़ा आदि लगने से खराब हो सकती है, बाजार का रुख तेज रहेगा।** करयाणा, काली मिर्च, तेल, तिलहन एवं घी तेज रहें। काली मिर्च का स्टॉक 5 मास पहले करने पर ही लाभ रहे।

21 मई को बुध के कृत्तिका नक्षत्र में आने पर 15 दिन में रुई में मन्दी का झटका आकर तेजी बने। अफीम में घटाबढ़ी होकर बाजार मन्दे हों, अनाज और रुई तेज रहें।

23 मई को बुध वृष राशि में आकर सूर्य के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा एवं इस समय सूर्य-बुध पर शनि की विशेष नज़र भी रहेगी। यह योग 15 दिन में रुई में मन्दी की उम्मीद होने पर भी तेजी का संचार करेगा। **गेहूं,**

जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत एवं तिलहन, दालवाना में जोरदार तेजी बनेगी।

25 मई को सूर्य एवं 27 मई को बुध- ये दोनों ग्रह रोहिणी नक्षत्र में आकर शनि की नजर में रहेंगे। इस समय घी, तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, चावल, दालें, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सण, सुपारी, मिर्च, राई तेज रहें। चांदी, रुई में बाजार स्थिर या मन्दे रहें।

28 मई बुधवार को वृषस्थ चन्द्र के समय चन्द्रदर्शन एवं 30 मई को मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में गुरु के आने पर रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, अनाज, घी तेज रहें।

31 मई को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आएगा। यह समय बहुत समझ से काम करने का है, क्योंकि अश्विनी नक्षत्र बाजारों में मन्दी करेगा, मेष राशि बाजारों को तेजी की तरफ ले जाएगी। हमारे विचार से अलसी, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तिल, घी, तेल में मन्दी रहे। जौ, चना, गेहूं आदि अनाज, सोना-चांदी में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। समय पर हमारे साथ मशवरा करें, ठीक रहेगा।

जून (सन् 2025 ई.)

मासारम्भ में बाजारों में तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी तेज रहेंगे। 3 जून को बुध मृगशिरा नक्षत्र में आएगा। इन दिनों रुई तेज, चांदी में घटाबढ़ी, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी का वातावरण रहे। 5 जून तक बाजार अस्थिर रहेंगे।

6 जून को मंगल मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में दाखिल होगा। इस समय मंगल पर राहु की दृष्टि है। यह योग महत्त्वपूर्ण है। मूंग, मोठ, उड़द, तिल, सरसों, मूंगफली, रुई, तिलहन, एवं गेहूं, चावल, दालवाना आदि अनाज, मूंगफली, घी, चांदी, तांबा, लोहा, आदि धातुएं गुड़, शक्कर, खाण्ड, लाल मिर्च- इन सबमें अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। **नोट करें- 6 जून को बुध मिथुन राशि में आकर गुरु के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनाएगा।** बाजारों में अचानक मन्दी आ सकती है- सावधान रहें। 15 दिन में रुई, सोना, चांदी में मन्दी का वातावरण बन सकता है। सरसों, तारामीरा, तेल, घी आदि के बाजारों में घटाबढ़ी रहे।

7 जून को शनि उ.भा. के दूसरे चरण में प्रवेश करेगा। चांदी, चन्दन, केसर कुसुम्भ तेज रहें। दालवाना, अनाज भी तेज रहें। 8 जून को सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, तेल एवं घी में तेजी से लाभ लें।

9 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आकर वर्षा-पानी का योग बनाएगा। इस समय बुध गुरु के साथ मिथुन राशि में है। बाजार मन्दे रहेंगे- सावधान रहें। गेहूं, तिल, उड़द, जौ, चना आदि दालें एवं अनाज मन्दे रहें। 10 जून को बुध पश्चिम में उदित होगा। **शेयर बाजार 15 दिन में मन्दे हों। 12 जून को गुरु पश्चिम में अस्त हो रहा है। इस समय सोना-चांदी एवं दालवाना, घी, अनाज, तेल, तिलहनों में मन्दी का झटका आ सकता है। रुई और शेयर बाजार तेज रहेंगे।**

13 जून को गुरु आर्द्रा नक्षत्र में आकर बाजारों में वर्षा-पानी के प्रभाव से जोरदार मन्दी किंवा तेजी का वातावरण बनाएगा। बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमारे विचार से रुई एवं सभी अनाजों, दालवाना में मन्दी का झटका आ सकता है। पहले सोना-चांदी में घटाबढ़ी, नमक एवं खाद्य पदार्थ पहले तीन मास तेज रहें, अन्त में भारी तेजी रहे। सोना, चान्दी आदि धातुएं एवं नारियल, लौंग तेज रहें।

13 जून को शुक्र के भरणी नक्षत्र में आने पर सोना, चांदी, घी, तेल, तिलहन, मन्दे हों। चना, मूंग, मोठ में घटाबढ़ी एवं रुई तेज रहे।

15 जून को सूर्य मिथुन राशि में आकर बुध एवं गुरु के साथ एक-राशिसम्बन्ध बनाएगा। सूत, कपास, रुई, सरसों आदि तिलहन, तेल, घी,

दालवाना, गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी एवं सोना-चान्दी के बाजार तेज रहें। **इस समय मंगल की शनि पर दृष्टि भी है।** 16 जून को बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आकर बाजारों में मन्दी का रुख बना सकता है।

नोट करें कि - 22 जून को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आएगा। इस समय गुरु एवं बुध भी आर्द्रा नक्षत्र में ही हैं। अत: भारी वर्षा/जलवायु के प्रकोप से बाजारों में जोरदार मंदी किंवा तेजी का योग है, सावधान रहें। हमारे विचार से अलसी, एरण्ड, गेहूं, चावल, चना, जौ तेज रहें, रुई में मन्दी, गुड़, तेल, घी में तेजी होकर मन्दी बने, 24 जून को पुष्य नक्षत्र का बुध मन्दीकारक है। 26 जून की ग्रहस्थिति के मुताबिक बाजार मन्दे रहें। **28 जून को आर्द्रा के दूसरे चरण में गुरु के आने पर सोना, चान्दी आदि सभी धातुएं, तिलहन, तेल, घी एवं लौंग आदि सुगन्धित पदार्थ तेज रहें।**

29 जून को शुक्र वृष राशि में आकर शनि की दृष्टि में आ जाएगा। अत: अनाज, रुई, कपास, सोना, चांदी में मन्दी की उम्मीद होने पर भी बाजार तेज रहेंगे।

30 जून को मंगल पू.फा. में आकर 20 दिन में तिल, तेल, सरसों आदि तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, नमक, दालवाना एवं मोटे अनाजों में भी तेजी का संचार करेगा। यह तेजी आगे 7 जुलाई तक उत्तम-मध्यम तौर पर चल सकती है।

जुलाई (सन् 2025 ई.)

मासारम्भ में लगभग 6/7 जुलाई के करीब सूर्य के पुन. में एवं बुध के आश्लेषा में आने पर एवं गुरु के पूर्व में उदय होने पर बाजार तेजी की तरफ बढ़ेंगे। क्योंकि इन दिनों सूर्य पुनर्वसु में, बुध आश्लेषा में एवं गुरु पूर्व में उदित होगा, अत: सिक्का, कली, गेहूं, ज्वार, चावल, घी, तेल, तिलहन, सीमेण्ट, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, छुहारा, सुपारी एवं सभी अनाजों में अच्छी तेजी के योग बनते हैं।

8 जुलाई को **शुक्र के रोहिणी में आने पर 12 दिन में सोना-चांदी आदि धातु, अलसी, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, सुपारी, नारियल एवं ऊन में मन्दी का झटका आने के योग हैं, बाजार का रूख देखकर काम करें। 12 जुलाई तक बाजार अनिश्चित गति से चलेंगे।**

13 जुलाई को शनि वक्रगति से चलने लगेगा एवं 13 जुलाई को ही गुरु आर्द्रा-3 में आकर जोरदार वर्षा-पानी से मौसम को खराब करेगा- जिसका असर व्यापार एवं शेयर बाजारों पर अवश्य पड़ेगा।

"श्रावणे कृष्णपक्षे वै शनिर्वक्री यदा भवेत्।
दुर्भिक्षं जायते तत्र क्षुधाभिः पीड़िताः नराः।।"

इस समय ग्रहचाल के अनुसार सिक्का, कली, गेहूं, पीपल, ज्वार, चावल, तेल, तिलहन, घी, तंबाखू, सीमेण्ट तेज रहेंगे। इन दिनों वक्र शनि पर मंगल की विशेष दृष्टि भी है, अत: सोना, चांदी एवं खाद्य पदार्थ पहले तीन मास तेज रहें, तीन मास बाद बाजार अचानक मन्दे हो सकते हैं, सावधान रहें।

16 जुलाई को सूर्य कर्क राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। जब सू. बु. एकराशि में होते हैं, तो बाजारों में तूफानी तेजी आती है, बाजार का रुख देखकर काम करें। रुई, सूत, बादाम, सुपारी,गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों आदि तिलहन, नारियल, सोना, चांदी, दालवाना आदि अनाज तेज रहेंगे। अनाज के व्यापारी 17/18 जुलाई तक सौदा सैटल करके लाभ लें।

18 जुलाई को बुध कर्क राशि में वक्री होगा। 24 दिन में घी, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर, तेल-तिलहन, दालवाना आदि अनाज तेज रहेंगे। **यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 23 जुलाई तक रहेगी।**

19 जुलाई को सूर्य पुष्य नक्षत्र में, 20 जुलाई को शुक्र मृगशिरा नक्षत्र में एवं 20 जुलाई को ही राहु के पू.भा. नक्षत्र में आने पर गेहूं आदि मोटे अनाज, दालें, अलसी, सरसों, एरण्ड आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी में तेजी का काम करके व्यापारी लाभ लेंगे। इन दिनों शेयर बाजार भी तेज रहेंगे।

23 जुलाई को मंगल उ.फा. में आएगा। इस समय मंगल एवं राहु का समसप्तकयोग तो चल ही रहा है। ठीक 23 जुलाई को ही बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय रुई में 15/20 टका की मन्दी संभव है। गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें, लेकिन शेयर बाजार मन्दे रह सकते हैं।

26 जुलाई को चन्द्रदर्शन होगा एवं 26 जुलाई को ही शुक्र मिथुन राशि में आकर गुरु ग्रह के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इस समय घी, गुड़, अलसी में जोरदार घटाबढ़ी के योग है। गेहूं, जौ, चना, चावल, दालों में तेजी से लाभ संभव, सोना-चांदी में तेजी का उछाला आए। शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक रहे।

नोट करें कि- मिथुन राशि का शुक्र गुरु के साथ होने से प्रायः तेल, तिलहन, घी एवं सभी अनाजों में जोरदार मन्दी का कारण भी बनता है, अतः हम व्यापारियों को सलाह देंगे कि- बाजार के रुख को जांचकर ही व्यापार बढ़ायें।

व्यापारी सावधान रहें- 28 जुलाई को मंगल कन्या राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहा है, इन दिनों बाजारों में मन्दे की उम्मीद होने पर भी बाजार जोरदार तेज हो सकते हैं। इस समय रुई, चांदी, सोना, लोहा, तांबा, ऊन, सूत एवं सभी अनाजों में जोरदार तेजी का झटका आएगा; तुरन्त लाभ लें।

28 जुलाई को गुरु आर्द्रा 4 में एवं 29 जुलाई को वक्री बुध पुष्य में आकर सोना-चान्दी में मन्दी, रुई में घटाबढ़ी करे। खाद्य पदार्थ पहले तीन मास तेज, बाद में अचानक बाजार मन्दे होंगे।

31 जुलाई को शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में आता है। इस समय गुरु-शुक्र दोनों आर्द्रा नक्षत्र (मिथुन राशि) में ही हैं। गेहूं आदि अनाजों, दालवाना, घी, गुड़ ,खाण्ड में अचानक मन्दी का वातावरण बन सकता है। शेयर बाजार भी मन्दे रहें। बाजार का रुख देखकर व्यापार करें।

अगस्त (सन् 2025 ई.)

मासारम्भ में बाजारों में कुछ तेजी का वातावरण रहेगा। 2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आकर सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तेल, तिलहन, मिर्च, मजीठ एवं नील में तेजी करेगा। यह तेजी उत्तम-मध्यम तौर पर लगभग 12 दिन तक चल सकती है।

10 अगस्त को बुध पूर्व में उदय होगा। इस समय गेहूं, चना आदि एवं तिलहन, घी, लाल मिर्च में तेजी बने। इस दिन रुई में मन्दी रहे। 11 अगस्त को कर्कस्थ बुध के मार्गी होने पर रुई और चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज रहें, बिनौला, मूंगफली आदि तिलहन, तेल, गुड़, घी आदि में मन्दे का वातावरण बन सकता है।

12 अगस्त का दिन महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इस दिन गुरु-शुक्र दोनों पुनर्वसु नक्षत्र में दाखिल होंगे। इस समय शनि-मंगल दोनों का समसप्तकयोग तो चल ही रहा है। जोरदार अनावृष्टि किंवा अतिवृष्टि से बाजार प्रभावित होंगे। ये सभी ग्रह विरोधी ग्रुप के होने से बाजारों में भारी उठापटक कर सकते हैं। बहुत विचारपूर्वक काम करें। हमारे विचार से इन दिनों सोना, चांदी, रुई, कपास में जोरदार मन्दी या तेजी के Reactions आएंगे। बाजार का रुख देखें। गेहूं, चना, चावल, मक्का, बाजरा, दालें तेज रहें। घी, गुड़, खाण्ड, नमक, तेल- तिलहन आदि में अच्छी तेजी संभव है। 13 अगस्त को मंगल हस्त नक्षत्र में आ रहा है। हस्त नक्षत्र का मंगल वर्षा-पानी को प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप 21 दिन में दालवाना, सभी अनाज, घी, गुड़, खाण्ड, तेल-तिलहन में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा।

16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रविष्ट होगा। इस समय सूर्य-राहु का समसप्तक चल रहा है। यह योग बाजारों में जोरदार तेजी का है। रुई, चांदी, मूंग, ज्वार, बाजरा, गेहूं, दालें, सरसों, एरण्ड आदि तिलहन, तेल, घी, दाख, गुड़, खाण्ड, सोना-चांदी एवं लाल मिर्च में तेजी से लाभ मिलेगा। इन दिनों शेयर बाज़ार उठापटक से मन्दे रहें।

18 अगस्त को वक्री शनि उ.भा. नक्षत्र में एवं 20 अग. को शुक्र कर्क राशि में आएगा। रुई में जोरदार घटाबढ़ी या अचछी मन्दी के बाद तेजी, सभी अनाज, सोना, चांदी, तांबा, गेहूं, चना, मटर, अरहर आदि दालें, अलसी, एरण्ड, सरसों आदि तिलहन, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें।

21 अगस्त को बुध आश्लेषा एवं 23 अग. को शुक्र पुष्य नक्षत्र में आएगा। 15 दिन में तिल, तेल, सरसों, उड़द, मूंग, मोठ, मूंगी, धान्य तेज हों। गुड़, शक्कर, खाण्ड मन्दे हों।

24 अग. से 30 अगस्त के मध्य सोना, चांदी, गेहूं, दालें आदि अनाज, जीरा, सरसों, तिल, तेल, घी, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी का वातावरण रहेगा।

सितम्बर (सन् 2025 ई.)

मासारम्भ में बाजार कुछ तेज रहेंगे। **3 सितम्बर को मंगल चित्रा नक्षत्र में आता है। इस समय शनि-मंगल का समसप्तकयोग चल ही रहा है। यह योग बाजारों में तेजी का संकेत देता है।** गेहूं, चना आदि दालें, सोना, चांदी, तांबा एवं पीतल आदि मैटल, गुड़, घी में 12 दिन अच्छी तेजी के झटके आएंगे। लेकिन 3 सितं. को शुक्र के आश्लेषा नक्षत्र में आने से रुई और चावल में कुछ मन्दी बनेगी। 6 सितं. को बुध पू.फा. नक्षत्र में आता है। **नोट करें**- इस समय सूर्य भी पू.फा. नक्षत्र में है, अत: गुड़, खाण्ड, जीरा, सोना, सरसों आदि तिलहन, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, चावल आदि अनाज, रुई, सूत में अच्छी तेजी संभव है। 7 सितं. के करीब घी, गुड़, दूध, तिल, चीनी में खरीददारी ज्यादा होगी, अत: बाजार तेज हो सकते हैं।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. नक्षत्र में आएगा। 14 दिन में रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, घी, अलसी, एरण्ड, सरसों, तेल, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील में तेजी का झटका आएगा।

ध्यान रहे- इसी दिन (अर्थात् 13 सितं. को ही) मंगल तुला राशि में आकर गुरु की नज़र में आ जाएगा। अत: 13 सितं. की तेजी ज्यादा देर ठहरने वाली नहीं, तुरन्त लाभ लें। फिर भी 13 सितं. को अच्छी तेजी का भान हो रहा है। **इन दिनों शेयर बाजार मन्दे रहेंगे। 13 से 19 सितं. तक बाजारों के तेजी में रहने के योग हैं।**

19 सितं. को गुरु पुनर्वसु 3 में आकर चांदी, रुई में मन्दी एवं अनाज में तेजीकारक रहे, लेकिन 20 सितं. को बुध हस्त नक्षत्र में आएगा। इस समय गेहूं आदि अनाजों में मन्दी का झटका संभव है, बाजार का रुख देखकर काम करें।

21 सितं. को राहु पू. फा. में आ रहा है। इस समय शुक्र, चन्द्र के साथ राहु का समसप्तकयोग चल रहा है। गेहूं, चावल आदि अनाज, दालें, अलसी, तिल आदि तिलहन, तेल, घी, गुड़, रुई, शक्कर में तेजी से लाभ मिलेगा। 23 सितं. को कन्यास्थ चन्द्रदर्शन एवं इसी दिन मंगल स्वाती नक्षत्र में दाखिल हो रहा है। अत: रुई, ऊनी वस्त्र, गेहूं, तिलहन, तेल, घी, गुड़ादि में तेजी रहे। चांदी में घटाबढ़ी एवं सोने में कुछ मन्दी संभव है।

25 सितं. से मासान्त तक की ग्रहस्थिति तेजी कारक ही है। इन दिनों रुई, ऊनी वस्त्र, गेहूं, दालें, गुड़, खाण्ड, तिलहन, तेल, घी, कपास, सूत, जवार, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सण तेज रहेंगे। चांदी में घटाबढ़ी एवं सोने में कुछ मन्दी रहे। **25, 27 एवं 28 सितं. को शुक्र-सूर्य एवं बुध ग्रहों का नक्षत्रप्रवेश तेजी का ही इशारा करता है,** फिर भी बाजार के रुख को देखकर काम करने की सलाह है।

30 सितं. को पश्चिम में बुध उदित होगा। **इस समय बुध एवं सूर्य दोनों कन्या राशि में शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहे हैं।** वर्षा अच्छी होने का

योग है। सोना, चांदी, तांबा, लोहा आदि धातुएं, घी, तेल, अनाज आदि तेज रहेंगे, क्योंकि ग्रहस्थिति तेजी का संकेत देती है।

अक्तूबर (सन् 2025 ई.)

नोट - इस मास में बाजारों में खरीददारी अधिक होने से जोरदार उठापटक होगी। ग्रहचाल के हिसाब से यह लिख रहे हैं; फिर भी बाजार के रुख की प्रधानता को ध्यान में रखें।

2 अक्तूबर को बुध तुला राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इस समय बुध और मंगल पर गुरु की दृष्टि भी है। रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम तेज रहेंगे, लेकिन चांदी, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, तेल, घी में मन्दी का झटका आ सकता है। 6 अक्तूबर को शुक्र उ.फा. में राहु की नज़र में है, 12 दिन में गेहूं आदि मोटे अनाज, दालें व रुई तेज हों। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी चले।

9 अक्तूबर को शुक्र कन्या राशि में आकर शनि के साथ समसप्तकयोग बना रहा है। चांदी-सोने में जोरदार घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। सभी अनाज, दालें, गुड़, खाण्ड, घी, तेलों एवं चावलों में विशेष तेजी का योग है। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 15 अक्तूबर तक चल सकती है।

13 अक्तूबर को मंगल विशाखा एवं 16 अक्तूबर को बुध भी विशाखा नक्षत्र में आ जाता है। रुई, कपास, वस्त्र, गेहूं, आदि अनाज तेज रहेंगे। इन दिनों रुई में मन्दी का विशेष झटका आने का योग है, बाजार का रुख देखकर काम करें।

17 अक्तूबर को सूर्य तुला राशि में आकर मंगल और बुध के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनाएगा। यह योग तेजी का है। इस समय शुक्र हस्त नक्षत्र में आता है। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी चलेगी। चांदी, सोना, तांबा, गेहूं, जौ, चना, दालें, तिलहन, तेल, घी, रुई, लाल मिर्च, आदि में तेजी हो।

18 अक्तूबर को गुरु पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण एवं कर्क राशि में दाखिल हो रहा है। यह योग जोरदार तेजी का है। रुई में मन्दी आकर करीब 100 टका की तेजी बनेगी। अनाजों का संग्रह पहले ही करें तभी लाभ ले सकेंगे। सभी अनाज, दालवाना, गुड़, खाण्ड, घी में तेजी से लाभ मिलेगा। यह तेजी उत्तम-मध्यमरूप से 24 अक्तूबर तक चलेगी। 23 अक्तूबर को गुरुवारी चन्द्रदर्शन एवं **24 अक्तूबर को सूर्य का स्वाती में प्रवेश एवं बुध का वृश्चिक राशि में** आना - ये सब तेल, अलसी, सरसों आदि तिलहन, रुई, सूत, सण, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, रुई, हींग, गुग्गुल, अफीम तेज करें।

27 अक्तूबर को मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। गुड़, रुई, सरसों, राई, सोना, चांदी तेज रहेंगे। **मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से** बाजार का रुख देखकर काम करें। दालें, अनाज तेज, सोना-चांदी में पहले तेजी बाद में मन्दी, या पहले मन्दी, बाद में तेजी संभव है। तेजी-मन्दी का यह दौर मासान्त तक उत्तम-मध्यमरूप से चलेगा। सावधानी से काम करें।

इस समय शेयर बाजारों में जोरदार मन्दा आ सकता है।

नवंबर (सन् 2025 ई.)

1 नवम्बर को देवप्रबोधिनी एकादशी व्रत के बाद शुभ कार्यों का शुभारम्भ होने से बाजारों में खरीदो-फरोख्त होने लगती है।

1 नवम्बर को **मंगल अनुराधा नक्षत्र में** आकर 24 दिनों में रुई, कपास, गेहूं, लाल मिर्च, सोना, तांबा तेज करेगा।

2 नवम्बर को **शुक्र तुला राशि में आकर सूर्य के साथ योग बनाता है।** अतः एक मास में रुई, चांदी, अफीम में घटाबढ़ी; सोना, गुड़, खाण्ड, दालें एवं मोटे अनाज तेज रहेंगे। **क्योंकि जब भी शुक्र सूर्य के साथ राशि-सम्बन्ध बनाता है, तो बाजार तेजी की तरफ बढ़ते हैं- यह हमारा अनुभव है। यह तेजी 6 नवं. तक चल सकती है।** 6 नवं. को सूर्य विशाखा नक्षत्र में आता है

एवं 5 नवं. को **मंगल पश्चिम में अस्त होगा।** 14 दिन में जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, घी, तेल, अफीम तेज हों। गेहूं एवं अलसी में झटके की तेजी आ सकती है।

7 नवं को शुक्र स्वाती में आकर 11 दिन में गुड़, खाण्ड तेज करे एवं अनाजों में कुछ मन्दी संभव है।

10 नवं. को **बुध वक्रगति से चलने लगेगा। ध्यान रहे- इस समय बुध मंगल के साथ वृश्चिक राशि में गुरु की नज़र में है।** अत: आगामी कुछ दिनों में घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज होंगे। गेहूं, जौ, चना, दालों में तेजी-मन्दी के Reactions आएंगे।

11 नवं. को गुरु वक्रगति से चलने लगेगा। नोट करें- इस समय बुध भी वक्री है। अत: इस समय बाजार का रुख देखकर काम करे। हमारे विचार से इस समय गेहूं, जौ, चना, चावल, दालें, अलसी आदि तिलहन, तेल, घी, सोना, चांदी, ऊनी वस्त्र के बाजार तेज रहेंगे।

14 नवं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। बाजार तेज रहें। **16 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर वक्री बुध एवं मंगल के साथ रहेगा। इस समय गुरु वक्री है। अत: इन पर गुरु की दृष्टि विशेष प्रभावी नहीं रहेगी।** रुई, सोना, तांबा एवं ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे। सभी अनाज, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी तेजी रहेगी- ऐसा विचार है।

18 नवं. को शुक्र विशाखा नक्षत्र में आकर रुई एवं अनाजों में मन्दी कर सकता है। 19 नवं. को सूर्य अनुराधा में एवं मंगल ज्येष्ठा नक्षत्र में आएगा। इस समय जौ, चना आदि अनाजों, ऊन व सोना, चांदी, रुई एवं अफीम में तेजी का झटका आ सकता है, तुरन्त लाभ लें।

20 नवं. को वक्री बुध विशाखा नक्षत्र में आएगा। इस समय शुक्र भी विशाखा नक्षत्र में है। इन दिनों अनाजों एवं रुई में अचानक मन्दी आ सकती है, बाजार के रुख को देखकर व्यापार बढ़ावें। 22 नवं. को चन्द्रदर्शन एवं 23 नवं. को शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में राहु के आने पर एवं वक्री बुध के तुला राशि में आते ही गुड़, रुई, सूत, सोना, चांदी, अलसी, घी, तेल, चावल आदि अनाज, लौंग, सरसों, जौ, जवार एवं अफीम में तेजी संभव है।

26 नवं. को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर मंगल एवं सूर्य के साथ राशि-संबंध बनाएगा। रुई, सोना, चांदी, अफीम, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरा आदि अनाजों एवं घी में तेजी-मन्दी के Reactions आएंगे। **हमारे विचार से यहां तेजी ही प्रधान रहेगी।**

28 नवं. को शुक्र अनुराधा में आएगा। इसी दिन **शनि मार्गी** होगा। 6 दिन में रुई मन्दी होकर तेज होगी, आगामी कुछ दिनों में तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च में कुछ तेजी रहे। 29 नवं. को बुध के मार्गी होने पर रुई, चांदी में घटावढ़ी के बाद तेजी; तेल, तिलहन, गुड़ आदि मन्दे; गेहूं आदि अनाज तेज हों। मासान्त में बाजार अस्थिर रहेंगे।

दिसम्बर (सन् 2025 ई.)

मासारम्भ में लगभग 4/5 दिसं. तक बाजार तेज रहें- ऐसा विचार है।

2 दिसम्बर को **सूर्य ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर सोना, चांदी, चावल,** गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड आदि तिलहन, सभी अनाज, दालें, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल तेज करे। रुई में मन्दी के बाद तेजी रहे।

5 दिसंबर को वक्री गुरु मिथुन राशि में आकर गुड़, रुई में जोरदार मन्दी करेगा। सोना, चांदी, तेल, तिलहन तेज रहें। घी, तेल में लम्बी तेजी का योग है- सावधान रहें।

6 दिसं. को बुध वृश्चिक राशि में आकर घी, तेल, सरसों, रुई और चांदी में तेजी करेगा। सोने में भी तेजी का रुख रहेगा। अनाजों में बाजार कुछ कमजोर रहें।

7 दिसं. को मंगल मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा एवं शनि के साथ दशम-चतुर्थसम्बन्ध भी बनाएगा।

इन दिनों चावल, चना, जौ, मूंग आदि दालें, मोटे अनाज, चांदी, सोना आदि धातु, घी, तेल, तिलहन, रुई में तेजी बनेगी।

9 दिसं. को बुध अनुराधा नक्षत्र में एवं इसी दिन शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। इस समय बुध-शुक्र दोनों सूर्य के साथ हैं। रुई, कपास, सूत, चांदी, सोना, चावल, सरसों, तेल, घी में कुछ तेजी संभव है।

13 दिसं. को शुक्र पूर्व में अस्त होगा। अनाज, घी, तेल में तेजी संभव है। **15 दिसंबर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा। इसी दिन बुध ज्येष्ठा नक्षत्र में आता है।** आगामी कुछ दिनों में कपास, रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, चावल, सोना, चांदी, अलसी, तिलहन, तेल, घी तेज रहेंगे। इस समय अनाजों में उठापटक रहे-

''धनुराशिंगतो भानुः सुभिक्षं तत्र जायते।
महर्घं तिल-तैलं च कार्पासादिकं तथैव च।।''

20 दिसं. को **शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आता है।** गेहूं, जौ, चना, दालवाना आदि अनाज, चांदी, सोना, तांबा आदि धातु, रुई, सूत, कपास तेज रहें। क्योंकि इस समय शुक्र-बुध एकत्र हैं, अतः इन दिनों शेयर बाजारों में तेजी रहेगी।

25 दिसं. को मंगल पू.षा. एवं 28 दिसं. को सूर्य भी पू.षा. में आकर सोना, चांदी, तांबा, चावल, उड़द, घी, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, हल्दी, कपूर, ऊन, रुई, सूत एवं अनाजों में तेजी से लाभ करे।

29 दिसं. को बुध मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में आकर **सूर्य और मंगल के साथ एकराशिसम्बन्ध बनाएगा।** रुई, कपास, वस्त्र, सूत, अनाज, सोना, चांदी में जोरदार तेजी, मन्दी के Reactions आएंगे। **क्योंकि बुध सूर्य-मंगल के साथ है, अतः हमारे विचार से इस समय तेजी ही रहेगी।**

30 दिसं. को शु. सू. मं. तीनों पू.षा. नक्षत्र में होने से बाजारों में उठापटक रहेगी। **मासान्त तक** बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमें इन दिनों जोरदार तेजी या मन्दी का योग लग रहा है।

जनवरी (सन् 2026 ई.)

मासारम्भ में 3 जनवरी को माघस्नान प्रारम्भ होने पर ही बाजारों में तेजी का असर दिखाई देगा। 4 जनवरी को वक्री गुरु के पुनर्वसु नक्षत्र के दूसरे चरण में दाखिल होने पर सभी अनाज दालवाना, सोना चांदी, तेल, घी, गुड़ादि में तेजी बने, **क्योंकि इस समय गुरु सूर्य-मंगल-बुध एवं शुक्र के साथ समसप्तकयोग बना रहा है।**

6 जनवरी को बुध पू.षा. नक्षत्र में आकर **बिनौला में तेजी, अनाजों एवं सोना, चान्दी में खासी मन्दी कर सकता है- सावधान रहें।** तेजी-मन्दी का यह सिलसिला 9 जन. तक चल सकता है।

10 से 13 जन. के मध्य बाजारों में तेजी का असर ज्यादा रहेगा- सावधानी से काम करें।

10 जनवरी को शुक्र उ. षा. नक्षत्र एवं 11 जनवरी को सूर्य तथा 11 जन. को ही मंगल (ये तीनों ग्रह) उ.षा. नक्षत्र में आ रहे हैं। अतः गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड आदि तिलहन में कुछ मन्दी का झटका आएगा, लेकिन तुरन्त उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, कपास, सरसों, पिप्पलामूल, मूंग, रुई, लहसून, घी, तेल एवं सभी अनाजों में तेजी संभव है। 11 जन. के लगभग रुई में विशेष तेजी का झटका आ सकता है।

12 जनवरी को शुक्र मकर राशि में आकर शेयर बाजारों में तेजी का उछाला करेगा। इस समय गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, चना आदि सारे अनाज तेज रहें, रुई, चांदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

नोट करें कि - 12 जन. को शुक्र, 14 जन. को सूर्य एवं 15 जन. को मंगल - ये तीनों ग्रह मकर राशि में आकर शेयर/वायदा बाजारों में जोरदार तेजी करेंगे। इन दिनों अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, गेहूं, चना आदि सारे अनाज, रुई, सोना, चांदी, तांबा, ऊन में **अच्छी तेजी** से लाभ मिलेगा। यह तेजी-मन्दी 14 जन. तक चलेगी।

15 जन. को बुध उ.षा. में आकर अनाजों में मन्दा कर सकता है। 17 जन. को बुध मकर राशि में आकर सू.शु. एवं मं. (इन तीन ग्रहों) के साथ राशिसम्बन्ध बनाएगा। इन दिनों रुई, कपास, सोना, चांदी के भाव तेज रहेंगे। सभी अनाजों में उठापटक या भाव मध्यम रहें।

17 जन. को बुध भी मकर राशि में आकर सू. मं. एवं शु. के साथ मेल करेगा। इस समय रुई, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी आ सकती है। अनाजों के भाव मध्यम रहें।

आगे 20 जनवरी को चन्द्रदर्शन, शुक्र के श्रवण में, इसी दिन शनि के उ.भा. में आने पर चांदी-सोना, गुड़, खाण्ड, दालवाना आदि सभी अनाज, तेल, घी, तिलहन में तेजी संभव है।

23 जनवरी को बुध श्रवण नक्षत्र एवं 24 जनवरी को सूर्य भी श्रवण में आएगा। आगामी कुछ दिनों में ही गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, दालवाना आदि अनाज, रुई, सूत, सण, सोना, चांदी, अलसी, सुपारी, लौंग आदि के बाजार तेजी में रहेंगे।

25 जनवरी को राहु शतभिषा-3 में आकर गुड़, खाण्ड एवं अनाजों में तेजी ही रखेगा।

29 जनवरी को मंगल श्रवण नक्षत्र में आता है। ध्यान दें कि- सूर्य-बुध एवं शुक्र पहले ही श्रवण नक्षत्र में चल रहें हैं। इस समय गेहूं, जौ, चना, तिल, अफीम एवं सोना, चांदी में झटके की अच्छी तेजी आ सकती है, तुरन्त लाभ लें।

30 जनवरी को वक्री गुरु पुन.-1 में आकर बाजार के रुख को बदल सकता है। चांदी, रुई में मन्दी रहे। इन दिनों घी, गुड़, खाण्ड भी मन्दे हो सकते हैं।

31 जनवरी को शुक्र धनिष्ठा में आएगा। इसी दिन बुध भी धनिष्ठा में आ चुका है। घी, तेल, गुड़, खाण्ड में मन्दी का झटका आकर तेजी बने। सोना, चांदी, तिल, चावल, मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा, उड़द, रुई, कपास में तेजी हो।

फरवरी (सन् 2026 ई.)

मासारम्भ में बाजारों में तेजी-मन्दी के झटके आएंगे। 3 फरवरी को बुध कुम्भ राशि में आकर राहु के प्रभाव में रहेगा। इन दिनों अलसी, रुई मन्दे रहें; चान्दी में मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी। घी, तेल, गुड़, खाण्ड तेज रहें।

5 फरवरी को शुक्र भी कुम्भ राशि में आकर बुध और राहु के साथ मेल करेगा। **नोट करें-कुम्भ राशि में शुक्र यद्यपि मन्दी का संकेत देता है, लेकिन यहां शुक्र का योग बुध-राहु के साथ होने से तेजी ही रहे।** रुई, चांदी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा के व्यापारी समझ से काम करें। रुई में तेजी से लाभ मिलेगा।

6 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा में आकर सोना, चांदी, मोती, मूंग, मसूर आदि दालवाना, गेहूं आदि अनाज एवं रुई में तेजी करेगा। 7 फरवरी को बुध शत. में आकर गेहूं आदि अनाजों में तेजी करेगा एवं चान्दी-सोना मन्दे रहेंगे।

8 फरवरी को बुध पश्चिम में उदय होगा। बाजार का रुख बदल सकता है- सावधानी से काम करें। 11 फर. को शुक्र शतभिषा में आकर गेहूं, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई और सोना-चांदी में तेजी करेगा।

12 फरवरी को सूर्य कुम्भ राशि में आकर राहु-शुक्र एवं बुध के साथ एक-राशिसम्बन्ध बनाएगा। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली आदि तिलहन एवं राई में तेजी का व्यापार करें। रुई, पाट, एरण्ड, गेहूं, गुड़, खाण्ड, शक्कर के व्यापारी बाजार के रुख को देखकर काम करें। हमारा विचार तो इनमें भी तेजी का ही है, परन्तु शास्त्रानुसार रुई, पाट, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी का संकेत है। विचार-पूर्वक व्यापार बढ़ायें।

14 फर. को मंगल धनिष्ठा में आकर आगामी कुछ दिनों में रुई, जौ, सोना, चांदी, तांबा, जस्ता एवं लोहे के बाजार तेज करेगा। घी, गुड़, शक्कर, सूत एवं अनाज मन्दे रहें। 15 फर. को **बुध पू.भा. में आकर सोना, चांदी, लोहा, तांबा**

एवं अनाजों में मन्दी कर सकता है। इस समय रुई में घटाबढ़ी का वातावरण रहेगा।

19 फरवरी को सूर्य शतभिषक् नक्षत्र में आकर सोना, चांदी, सूत, सण, तिल, एरण्ड, सरसों, हींग, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी एवं घी, तेल, तिलहन, गेहूं, गुड़, खाण्ड तेज करेगा।

21 फरवरी को शुक्र पू.भा. एवं 22 फरवरी को शनि उ.भा.-2 में दाखिल होगा। परिणामस्वरूप चांदी, चन्दन, केसर, कुसुम्भ तेज रहें। सभी अनाजों में इस समय जोरदार तेजी की उम्मीद है। रुई में भी तेजी रहे।

23 फरवरी को मंगल कुम्भ राशि में आकर राहु-सूर्य-बुध एवं शुक्र के साथ एकराशि-सम्बन्ध बना लेता है। इस समय रुई, चांदी में जोरदार घटाबढ़ी रहेगी। अनाज, दालें, गुड़, खाण्ड एवं सोना में अच्छी तेजी बनेगी।

26 फर. को बुध वक्री होगा, बाजारों का रुख बदल सकता है- सावधान रहें। गेहूं, जौ, चना आदि अनाज मन्दे होंगे, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहेंगे।

28 फर. को बुध पश्चिम में अस्त होगा। यद्यपि अस्त होने पर बाजारों का रुख बदलता है, लेकिन यहां सूर्य-राहु-मंगल-शुक्र के साथ बुध के होने से गेहूं आदि का रुख तेज रहे एवं सोना, चांदी में घटाबढ़ी संभव है।

मार्च (सन् 2026 ई.)

मासारम्भ में ही शुक्र मीन राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इस समय रुई और चांदी में धमाके की तेजी आ सकती है। अनाज, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी में भी तेजी से लाभ ले सकेंगे। जल्दी ही बाजार का रूख देखकर नफा बुक कर लें। क्योंकि 3 मार्च को मंगल शतभिषक् नक्षत्र में आएगा, गुरु की इस पर दृष्टि है, अत: अनाज, रुई, सोना, चांदी में मन्दी आकर बाद में तेजी बन सकती है।

4 मार्च को शुक्र उ.भा. में आएगा एवं 4 मार्च को ही सूर्य पू.भा. में आकर तिल, तेल, अलसी, सरसों आदि तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई एवं सोने में तेजी करेगा, चांदी में मन्दी का झटका संभव है। अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में मन्दी का रुख रहे।

7 मार्च को शनि पश्चिम में अस्त होगा। बाजार का रुख बदल सकता है। केसर, अनाज, दालें, चांदी, अन्य व्यापारिक वस्तुएं भी प्राय: तेज रहेंगी। 9 मार्च को बाजार कमजोर रहेंगे।

9 मार्च को वक्री बुध शतभिषक् में आकर अनाजों में कुछ तेजी करेगा, सोना, चांदी मन्दे रहेंगे।

11 मार्च को मिथुन राशि में गुरु मार्गी होगा। 3 दिन में रुई और चांदी मन्दी होकर तेज हो। 8 दिन में चावल, अलसी, गुड़, खाण्ड, घी, सरसों एवं तंबाखू तेज रहें।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर शनि एवं शुक्र के साथ रहेगा। तिल, तेल, घी, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना तेज रहेंगे। अनाज और चांदी में भी तेजी रहे-

''मीन राशिंगते भानौ सर्वधान्य-महर्घता।
लवणं तिल-तैलं च महर्घं यान्ति वै ध्रुवम्।।''

ध्यान दें कि- 14 मार्च को ही बुध पूर्व में उदित होगा। यह अनाजों में तेजी का संकेत देता है।

15 मार्च को शुक्र रेवती में आकर बाजारों का रुख बदल सकता है। यह रुई, कपास, चांदी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दीकारक है।

18 मार्च को सूर्य उ.भा. में आकर 15 दिन में रुई, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, दालें, घी, तेल एवं तिलहन में तेजी करेगा- ऐसा विचार है।

(शेष सं. 2083 वि. के पंचांग में पढ़ें।)

व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा-
तेज़ी-मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

(अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी-मन्दी की लिखित रिपोर्ट)

व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2025 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी-मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाज़ार का चांस अर्थात् सोना, चांदी, कॉपर आदि मैटल्स; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल-कालीमिर्च, रुई एवं कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs. 6,000 (छः हज़ार रु.) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से Advance भेजकर Report प्राप्त करें। एक वर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 60.000 (साठ हजार रु.) है।

ध्यान दें- यदि आप लिखित Report के अतिरिक्त प्रतिदिन Telephone से तेज़ी-मन्दी का विचार करना चाहते हैं तो उसकी फीस अलग से होगी।

नोट- पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके मिलने का समय निश्चित कर लें।

यदि आप कार्यालय आने में किसी भी तरह से असमर्थ हैं तो अपने किसी भी कार्य की फीस 9988407010 नंबर पर 'Google Pay' कर सकते हैं और अपने कार्य का विवरण भी इसी नंबर पर WhatsApp अवश्य करें।

मैसेज, पत्र आदि पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ-साफ लिखें एवम् धनादेश किस जिन्स की तेज़ी-मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं- यह अवश्य लिखें। WhatApp मैसेज भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते पर करें-

Phone :- 0160-2641 277,
Mob :- 099 88 40 7010,

आचार्य संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली - PIN 140 103,
(मोहाली) पंजाब।

नोट : गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र-साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल (1 जनवरी, सन् 2025 ई. से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक)

जप एवं यन्त्र-मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य-चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य-चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है कि-क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है-''पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान-जप-होपदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।'' यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2025 ई. से 19 मार्च, सन् 2026 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र-तंत्रों के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि-साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य-चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि-साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहा-वारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी-कभी ही आते हैं।

सावधान-यंत्र-मंत्र-तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप में सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति-पुण्यकाल (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2025 ई.					
19 जन.	19	6	20 जन.	7	54
18 फर.	9	13	18 फर.	22	1
20 मार्च	8	8	20 मार्च	20	56
19 अप्रै.	19	2	20 अप्रैल	7	50
20 मई	18	1	21 मई	6	49
21 जून	1	49	21 जून	14	37
22 जुला.	12	36	23 जुला.	1	24
22 अग.	19	40	23 अग.	8	28
22 सितं.	17	26	23 सितं.	6	14
23 अक्तू.	2	57	23 अक्तू.	15	45
22 नवं.	0	42	22 नवं.	13	30
21 दिसं.	14	9	22 दिसं.	2	57
सन् 2026 ई.					
20 जन.	0	51	20 जन.	13	39
18 फर.	14	58	19 फर.	3	46

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2025 ई.					
9 जन.	14	3	9 जन.	19	24
22 जन.	23	22	23 जन.	4	47
4 फर.	15	17	4 फर.	19	23
17 फर.	16	45	17 फर.	21	11
15 मार्च	6	11	15 मार्च	10	12
28 मार्च	13	12	28 मार्च	16	29
9 अप्रै.	18	53	9 अप्रै.	23	1
23 अप्रै.	12	40	23 अप्रै.	16	31
5 मई	10	12	5 मई	14	50
19 मई	10	19	19 मई	15	24
31 मई	11	57	31 मई	17	35
14 जून	18	3	15 जून	0	40
22 जून	21	52	23 जून	3	45
6 जुला.	8	59	6 जुला.	15	40
19 जुला.	14	15	19 जुला.	19	9
सन् 2025-26 ई.					
1 अग.	12	38	1 अग.	17	48
14 अग.	14	49	14 अग.	18	44
27 अग.	7	4	27 अग.	11	49
9 सितं.	12	50	9 सितं.	16	14
5 अक्तू.	12	13	5 अक्तू.	15	40
17 अक्तू.	12	45	17 अक्तू.	16	50
31 अक्तू.	9	34	31 अक्तू.	13	46
12 नवं.	4	48	12 नवं.	9	27
26 नवं.	5	26	26 नवं.	11	8
8 दिसं.	9	48	8 दिसं.	15	34
31 दिसं.	4	6	31 दिसं.	9	50
13 जन.	0	15	13 जन.	6	28
26 जन.	12	22	26 जन.	16	54
7 फर.	21	38	8 फर.	2	17
21 फर.	8	9	21 फर.	11	55
5 मार्च	15	5	5 मार्च	18	59
31 मार्च	7	26	31 मार्च	11	14

वारुणी पर्व (सन् 2025 ई.) (भा. स्टैं.टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
27 मार्च	सू.	उ.	27 मार्च	सू.	अ.
(सन् 2026 ई.)					
17 मार्च	सू.	उ.	17 मार्च	9	23

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र-मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य-चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किये जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ-समाप्तिकाल महापातगाणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

सूर्य-चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रसाधना के लिए सूर्य एवं चन्द्रग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। एतदर्थ पृष्ठ 20 देखिये।

ध्यान रहे-मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। मन्त्रोच्चारणादि की अशुद्धि व अनभिज्ञता स्पष्टरूप से वज्रपात-सम घातक (विनाशकारी) मानी गई है-

''मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।''

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत 'यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र' गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन संक्रान्तियों के पुष्यकाल में दृढ़निश्चय पूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे**- दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों किंवा उल्लिखित समयावधियों में इन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र-मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है:- **'सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।'**

मन्त्र ऐसे दिव्य शब्दों का समूह है, जिससे दृढ़ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्तशब्द ही मंत्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारण मात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन्न उत्पन्न होता है, जिससे अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल प्रछन्न इच्छाशक्ति प्राप्त होती है- **'मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।'**

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमंत्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तांत्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्रीशाबरनाथ जी ने शाबरमंत्रों को अद्‌भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमंत्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जोकि अर्थहीन मालूम देते हैं। परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मंत्र अवन्ध्य प्रभाव वाले हैं- **''अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।''** अतः शाबरमंत्रों को यथावत् ही उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः**-मन्त्र का पुरश्चरण गुप्त रूप से करें। प्रकट होने पर पुरश्चरण अर्थहीन हो जाता है, यह तंत्रशास्त्रों का निर्देश है-**'गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।'**

भूत-भविष्य की जानकारी के लिए कर्णपिशाचिनी मंत्रसिद्धि

निम्नांकित गुह्य मंत्र का जाप कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से प्रारम्भ करें। सवा लाख मंत्रजाप पूरा होने पर दशांश होम करें। ऐसा कर लेने पर आपको स्वतः भूत-भविष्यत् एवं वर्तमान का वर्णन कान में प्रत्यक्षवत् अनुभव होने लगेगा।

मंत्र- ''ॐरक्ते महारक्ते इडि विडि सुणिदे कर्ण पिशाचिनी आगच्छ भगवति सत्यं वदतु स्वाहा।''

वशीकरण मन्त्र

''ॐ नमः सर्वलोक-वश्यंकराय कुरु कुरु स्वाहा।''

विधि - पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को उखाड़ कर उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके दाईं भुजा पर बांध दें। जिस व्यक्ति हेतु करेंगे, व्यक्ति वश्य अवश्य होगा।

पीलिया रोगनाशक अद्भुत माला

पुनर्नवा की जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े काट कर छेद करके माला में पिरो दें। अधिकतम 100 दाने पिरोए जाएं। इस माला को पीलिया रोग से ग्रस्त व्यक्ति को धारण करा दें। **ध्यान रहे**- जैसे-जैसे माला सूखती जाएगी, पीलिया रोग घटता जाएगा- यह अनुभूत प्रयोग है। **नोट करें**- इस प्रयोग में सफेद पुनर्नवा की जड़ का ही प्रयोग करें।

उच्चाटन-प्रयोग-पुनर्वसु नक्षत्र को पुनर्नवा की एक अंगुल लम्बी मोटी लकड़ी शत्रु के घर में दबा दें या छुपा दें, शत्रु घर छोड़ने पर विवश हो जाएगा। शत्रु के द्वारा सताए जाने पर ही यह प्रयोग करें, अन्यथा नहीं।

स्कन्द पुराणोक्त भौमदोषशान्ति के लिए 'अङ्गारक स्तोत्र'

[ऋणहर्ता, दरिद्रतानाशक, भूमि व पुत्रलाभ हेतु विशेष रूप से ग्राह्य]

कुण्डली में **भौमदोष एवं मंगलीक आदि दोषों की शान्ति के लिए** अंगारक स्तोत्र का पाठ विशेष रूप से कल्याणकारी होता है। आप इसे ऋण दूर करने के लिए, भूमि-जायदाद सम्बन्धी वाद-विवाद अथवा प्राप्ति में विघ्नों को दूर करने के लिए एवं पुत्रप्राप्ति हेतु भी श्रद्धापूर्वक पाठ करके अभीष्ट की प्राप्ति कर सकते हैं।

हाथ में जल-अक्षत लेकर विनियोग इस तरह करें-

विनियोग:- अस्य अङ्गारकस्तोत्रस्य विरूपाङ्गिरस-ऋषि:, अग्निर्देवता, गायत्री छन्द:, भौम-प्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

जल पूजापात्र में छोड़ दें।

अङ्गारक-स्तोत्रम्

''अङ्गारक: शक्तिधरो लोहिताङ्गो धरासुत:। कुमारो मङ्गलो भौमो महाकायो धनप्रद:।।१।। ऋणहर्ता वृष्टिकर्ता रोगकृद्रोगनाशन:। विद्युत्प्रभो व्रणकर: कामदो धनहृत् कुज:।।२।। सामगानप्रियो रक्तवस्त्रो रक्तायतेक्षण:। लोहितो रक्तवर्णश्च सर्वकर्मावबोधक:।।३।। रक्तमाल्यधरो हेमकुण्डलो ग्रहनायक:। नामान्येतानि भौमस्य य: पठेच्चेत् सततं नर:।।४।। पाठकस्य च दौर्भाग्यं दारिद्र्यं च विनश्यति। धनं प्राप्नोति विपुलं सकलं चैव मनोरथम्।।५।। वंशोद्योतकरं पुत्रं लभते नात्र संशय:। योऽर्चयेदह्नि भौमस्य मङ्गलं बहुपुष्पकै: ।।६।। सर्वा नश्यति पीड़ा च तस्य ग्रहकृता ध्रुवम्।।७।।

ऋणमुक्ति के लिए मन्त्र

कुशा की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर- इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखें। तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गोघृत द्वारा 44 दिनों तक प्रतिदिन सात बार हवन करें। मन्त्र की जपसंख्या कम से कम 10,000 है, जो 44 दिनों में पूरी होनी चाहिए। 43 दिनों तक प्रतिदिन 228 मन्त्रों का जाप हो और 44वें दिन 196 का। तदनन्तर 100 मन्त्र का जप दशांश के रूप में करना आवश्यक है। मन्त्र यह है-

''ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नम: ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पद् वर्धय वर्धय स्वाहा।।''

पुत्रप्राप्ति के लिए सन्तान-गोपाल मन्त्र व यन्त्र

०८	०१	३४	२९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

रविवार के दिन 'पुत्रजीवाबूटी तथा शिवलिङ्गी बूटी' को जड़, डाली तथा पत्तों सहित उखाड़ लाएं। फिर एक वर्णवाली गौ के दूध के साथ उसे कुमारी के द्वारा पिसवाकर एक ही वर्णवाली गौ के दूध के साथ मिलाकर रजोदर्शन से शुद्ध होकर चौथे दिन से

छठे दिन तक तीन दिन पिएं। दवा की मात्रा एक तोला प्रतिदिन मिश्री मिलाकर दूध-भात का भोजन करें। अधिक परिश्रम न करें। दवा पीने से पूर्व नीचे लिखे दोनों मन्त्रों की एक-एक माला (108 दाने की) श्रद्धा विश्वासपूर्वक अवश्य जप लें।

''ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।''

''देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।।''

तदनन्तर प्रतिदिन दवा पीने से पूर्व उपर्युक्त **'देवकीसुत गोविन्द....'** मन्त्र की एक माला का जप करते रहें।

साथ ही पीछे दिए ७२ यन्त्र का भी प्रयोग करें। इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर बाईं भुजा, कमर या कण्ठ में ताँबे के ताबीज़ में डालकर धूप देकर धारण कर लें। **हरिवंशपुराण के पाठ करने अथवा श्रवण से भी पुत्रप्राप्ति होती है।**

व्रतोपवास द्वारा सन्तानोत्पत्ति – (1) सन्तानप्राप्ति के लिए भाद्रपद कृष्ण सप्तमी को व्रत किया जाता है। इस दिन उपवास रखकर भगवान् विष्णु का पूजन और दूसरे दिन **''ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन-बल्लभाय स्वाहा''**– इस मन्त्र से अग्नि में यव-तिलादि की 108 बार आहुति देकर इच्छा और श्रद्धानुसार वटु-भोजन कराएं। पारणा में बिल्वपत्र खाकर षड्रस पदार्थों का भक्षण करें। तदनन्तर प्रत्येक मास की कृष्ण सप्तमी के दिन ऐसे ही व्रत करें। वर्ष पूरा होने पर ब्राह्मण को गोदान करें। **वाराह पुराण** का वचन है कि- ऐसा करने से पुत्रार्थी की निश्चित रूप से मनोकामना पूर्ण होती है।

(2) पौष शुक्ल एकादशी – यह एकादशी **'पुत्रदा एकादशी'** के नाम से विख्यात है। इस दिन नियमपर्वूक एकादशी व्रत करने वाले व्रती की मनोकामना निश्चित रूप से पूर्ण होती है।

'श्रीबटुक–भैरव मन्त्र'

मन्त्र–

ॐ ह्रीं वं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु-कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ।।

विनियोगः–उक्त मंत्रजाप से पूर्व हाथ में जल लेकर विनियोग करें।

ॐ अस्य श्री आपदुद्धरण श्रीबटुकभैरव-मन्त्रस्य वृहदारण्यको नाम ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः श्रीबटुकभैरवो देवता, ह्रीं बीजं, स्वाहा शक्तिः भैरवः कीलकं मम कार्यसिद्ध्यर्थे पाठे/जपे विनियोगः।

हाथ लिया जल पूजापात्र में छोड़ दें।

ध्यान – ॐ करकलित-कपालः कुण्डलीदण्डपाणिः
तरुण-तिमिर-नील-व्याल-यज्ञोपवीतिः।
क्रतुसमयसपर्या विघ्न-विच्छेद-हेतुः
जयति विघ्ननाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

विघ्ननाशक बटुक भैरव यन्त्र

विधि – इस यन्त्र को गोरोचन व कुंकुम से भोजपत्र पर स्वच्छ होकर लिखें। अमुक की जगह जिस पर विपत्ति हो उसका नाम लिखें। धूप-दीप आदि से पूजन करें। बटुक भैरव मन्त्र का जाप करें। ताबीज़ में रखकर हाथ में बाँध लें। इससे आपत्तियों से उद्धार होगा। लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी, शत्रु का नाश होगा तथा किसी प्रकार का अनिष्ट न होगा।



जायदाद/कृषिभूमि खरीदने के लिए

किसी से भूमि/जायदाद खरीदने या किराये पर लेने का प्रयास किया जा रहा हो अथवा किसी वाद-विवाद/शत्रुता-मुकद्दमा आदि के चक्कर में अपनी ही ज़मीन-जायदाद-मकान आदि नष्ट होने की स्थिति पैदा हो रही हो तो द्विपुष्कर या त्रिपुष्कर योग जिस दिन पड़े, उस दिन अपनी आकांक्षा के अनुसार संकल्प करके **श्रीगणेश-गौरी-कार्त्तवीर्य-दत्तात्रेय और वराह देवता** की विधिवत् पूजा करके 10 दिन इस मंत्र का जाप 10-10 माला प्रतिदिन करें-

''ॐएकदंष्ट्राय विद्महे महावराहाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रयोदयात्।।''

11वें दिन इसी मंत्र के 10 माला के जप द्वारा तिल, मधु, घी का हवन करें। फिर 12वें दिन से 27 दिन तक, कुल 16 दिन 5-5 माला प्रतिदिन निम्न मंत्र का जप करें-

''ॐ नमो भगवते वराहरूपाय भूर्भुवः स्वः पतये भूपतित्वं मे देहि च दापय स्वाहा।।''

28वें दिन इसी मंत्र के मालाजप द्वारा खड़ी हल्दी और घी का हवन करें। फिर 29वें दिन से 40 दिन तक, कुल 12 दिन 12-12 माला प्रतिदिन इस मंत्र का जप करें-

''ॐ श्रीवराहाय धरण्युद्धारणाय स्वाहा''

41वें दिन इसी मंत्र का 15 माला जप एवं छोटी इलायची, मधु, घी का हवन करें। 42वें दिन 3 ब्राह्मणों को विधिवत् भोजन कराकर सर्वांग वस्त्र दान देने से भूमि/मकान/जायदाद की इच्छित कामना पूर्ण होती है।

पौराणिक मृत्युञ्जय मन्त्र

[illegible] पौराणिक मृत्युञ्जय मन्त्र द्वारा महारुद्र रूप मृत्युञ्जय देव का रोगों, बुढ़ापा, जन्म-मृत्यु और कर्म-बन्धनों की पीड़ाओं एवं कष्टों से मुक्ति के लिए पाठ किया जाता है।

''ॐ मृत्युञ्जय महारुद्र! त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म-मृत्यु-जरा-रोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।''

अकाल मृत्यु एवं कालसर्पादि दोषों की शान्ति के लिए

''ॐ नमो नीलकण्ठाय नमः'' अथवा ''ॐ नीलकण्ठाय नमः''

दोनों मन्त्रों का एक ही भाव/अर्थ है कि- नीलकण्ठ भगवान् शिव को नमस्कार करते हैं। इस मन्त्र के जप से विभिन्न प्रकार के पापों से निवृत्ति, अकाल मृत्युभय, तीव्र ज्वर, रूधिर-विकार, कुष्ठादि रोग, भूत-प्रेतादि-बाधाएं, सर्प-विषादि से भय तथा जन्म-कुण्डली में कालसर्पादि दोषों की शान्ति होती है। यथेष्ट संख्या में संकल्पपूर्वक '**श्रीनीलकण्ठ स्तोत्र**' का पाठ करना भी विशेष लाभकारी होता है।

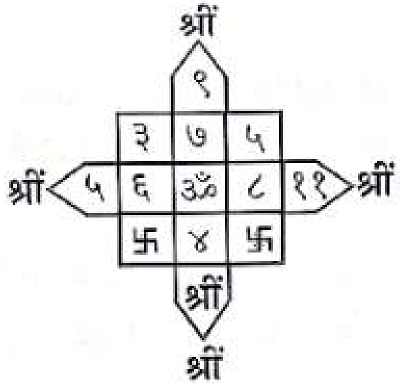
विदेश में सफलता हेतु मन्त्र

किसी विशेष उद्देश्य हेतु प्रदेश अथवा विदेशयात्रा में सफलताप्राप्ति हेतु निम्नलिखित श्री हनुमान्-मन्त्र की एक माला अथवा कम से कम 21 बार श्रीहनुमान् मन्दिर में दीप जलाकर श्रद्धापूर्वक जप करने से मनुष्य अपने मनोरथ में सफल हो जाता है। पाठारम्भ एवं समाप्ति पर '**श्री हनुमत्कवच**' का भी एक बार पाठ किया जाये तो सिद्धि अवश्यंभावी हो जाती है।

मन्त्र - त्रैलोक्यं त्रातुकामं सकल-भुविगतं रामदूतं नमामि।।
अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित।
प्रस्थानं च करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा।।

गृहदोष-निवारण यन्त्र

शुक्ल पक्ष की पंचमी को इस यन्त्र को भोजपत्र पर बनाएं। कच्ची हल्दी से यन्त्र बनाएं। वास्तुदोष-निवारण के लिए यह उत्तम यन्त्र है।



खोई / गुम हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

समाधान - दैवज्ञों के पास कई बार लोग खोई / गुम हुई वस्तु मिलेगी या नहीं अथवा किस दिशा में मिलेगी? यह प्रश्न पूछने आते ही रहते हैं। इसका समाधान ज्योतिषशास्त्रकारों ने अपने ग्रन्थों में इस प्रकार दिया है-

(1) **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की सम्भावना भी बनी रहती है।

(2) **सुलोचन नक्षत्रों** में खोई/गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा की ओर जाती है। उसका न तो पता चलता है ओर न ही पुनः प्राप्ति सम्भव है।

(3) **मध्याक्ष नक्षत्रों** में खोई/गुम हुई वस्तु पश्चिम की ओर अत्यन्त दूर चली जाती है। पता चलने पर भी उसकी पुनः प्राप्ति सम्भव नहीं है।

(4) **मन्दाक्ष नक्षत्रों** में खोई अथवा गुम हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है। अत्यधिक प्रयत्न के बाद ही वह प्राप्त होती है।

''विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः।
स्यात् दूरे श्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने।।''

अन्धाक्ष, सुलोचनादि ये नक्षत्र कौन-कौन से हैं और उनमें खोई वस्तु मिलेगी या नहीं मिलेगी, इसके ज्ञान बारे नीचे दिया यह कोष्ठक देखिए-

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र	मिलेगी या नहीं
अन्धाक्ष	रोहिणी, पुष्य, उ.फा., विशा., पू.षा., धनि., रेव.,	शीघ्र मिलेगी।
सुलोचन	कृत्तिका, पुन., पू.फा., स्वा., मूल, श्रव., उ.भा.,	नहीं मिलेगी।
मध्याक्ष	भर., आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभि., पू.भा.,	पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
मन्दाक्ष	अश्विनी, मृग., आश्ले., हस्त, अनु., उ.षा., शत.,	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

परदेश गया हुआ व्यक्ति शीघ्र ही वापिस घर लौटे

दाईं ओर दिए गए '**आस्य यंत्र**' को घोड़े के खुर के नाल के नीचे काली स्याही से लिखकर अग्नि में तपाएं तो सात दिन में ही परदेश गया व्यक्ति वापिस घर लौट आता है।

आस्य यंत्र

५७५ दुनदन ३६५६१६

आकर्षण यंत्र

इस षट्कोण यंत्र को गोरोचन से भोजनपत्र पर लिखकर पंचोपचार पूजन करके घृत-कलश में स्थापित करके नित्य कलश का पूजन करते रहें। प्रतिदिन भगवती का ध्यान करके निम्नांकित मंत्र का जाप करें। इस यंत्र एवं मंत्र में जहां '**अमुकं**' लिखा है, वहां जिस व्यक्ति का वशीकरण करना हो, उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।



''ॐआकर्षय महादेवि 'अमुकं' हि मम प्रियम्। ऐं त्रिपुरे देवदेवे तुभ्यं दास्यामि याचितम्।।''

दैवज्ञों एवं कर्मकाण्डी विद्वानों के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य विषय

(१) प्रणाम करने का रहस्य – आयु में वृद्धि, विद्या एवं यश की प्राप्ति, मनोबल की वृद्धि- ये सब गुरुजनों एवं वृद्धजनों की सेवा-सुश्रूषा किंवा विनम्रता से प्राप्त होते है-

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।" – (मनुस्मृतिः)

प्रणाम का लाभ तभी होगा, जब गुरुजनों के चरणों का स्पर्श किया जाए। प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) के बांए अंग में **'ऋणात्मक ऊर्जा'** एवं दाहिने अंग में **'धनात्मक ऊर्जा'** रहती है। जब हम गुरुजनों को प्रणाम करते हैं, तो उनके दाहिने अंग की ओर हमारा बायां हाथ और उनके बाएं अंग की ओर हमारा दायां हाथ रहेगा। यदि हम दाएं हाथ से उनका बायां पांव तथा बाएं हाथ से दाहिने पांव का स्पर्श करेंगे, तो ऊर्जा का एक सर्कुलर बन जाएगा। परिणामस्वरूप, हमें लाभ नहीं होगा। **अतः गुरुजनों को प्रणाम करते समय दाहिने हाथ से दायें पांव तथा बांयें हाथ से बाएं पांव का स्पर्श करना चाहिए। अन्यथा चरणस्पर्श के प्रणाम का कोई लाभ नहीं होगा।**

(२) पंचगव्य किसे कहते हैं ? – पीले रंग की गाय का दूध, नीले रंग की गाय का दही, किसी भी रंग की गाय का घी, लाल रंग की गाय का मूत्र, श्वेत रंग की गाय का गोबर मिलाने से पञ्चगव्य बनता है। ये पांचों द्रव्य काली गाय के भी लिए जा सकते हैं।

(३) घर में समृद्धि कैसे हो?– घर में समृद्धि हेतु घर में लड़ाई-झगड़ा न करें। स्त्रियों का सम्मान करें। घर में स्नेहपूर्ण वातावरण रखें। अतिथि का सम्मान करें। शराब-मांसादि का सेवन न करें।

(४) सात महापाप – मद्यपान, द्यूत-क्रीडा, परदारागमन, मन-वाणी एवं कर्म से हिंसाभाव, अनुचित दण्ड देना, अपशब्दों से किसी व्यक्ति के मन को परेशान करना, चोरी-ठगी करना – ये सात महापाप हैं। इनसे बचना चाहिए।

(५) पंचरत्न – माणिक, नीलम, पुखराज, मोती एवं हीरा- ये पंचरत्न हैं।

(६) अष्टधातु – सोना, चांदी, तांबा, लोहा, कांसा, पीतल, कथीर एवं सीसा – ये अष्ट धातुएं हैं।

(७) सप्तमृत्तिका – नदी-संगम, चौराहा-संगम, राज-दरबार, अश्वशाला, गौशाला, तुलसी-स्थल, चींटियों के बिल- इन सबकी मृत्तिका सप्तमृत्तिका मानी जाती है।

(८) सर्वौषधि – चम्पक, मुष्टा, सोंठ, दारुहल्दी, हरिद्रा, शैलेय, कूट, बच, जटामांसी, मुरा – ये सर्वौषिधियां हैं।

(९) षट्-पल्लव – बड़, पीपल, अशोक, गूलर, जामुन एवं आम – ये षट्-पल्लव हैं।

(१०) स्मार्त्त/वैष्णवविचार – श्रुति-स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक जन 'स्मार्त्त' हैं। वैसे तो सभी गायत्री-उपासक एवं वेद-पुराण-धर्मशास्त्र में निष्ठा रखने वाले पंचदेवोपासक भी 'स्मार्त्त' माने जाते हैं। किंवा किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से जिन्होंने विधिपूर्वक दीक्षा ली हो, वे **'वैष्णव'** हैं। स्मार्त्तों को स्मार्त्त परंपरा का व्रत तथा वैष्णवों, विधवा महिलाओं को वैष्णवों वाला व्रत करना चाहिए।

(११) जन्मदिन कब मनाया जाए ? – हमारे पूर्वज जन्मतिथि के दिन ही जन्मदिन मनाया करते थे, परन्तु पाश्चात्त्य मत वाले जन्म-तारीख को ही जन्मदिन मनाते हैं- यह प्रथा गलत है। जैसे श्रीराम, श्रीकृष्ण के जन्मदिन तिथियों के अनुसार ही मनाए जाते हैं, तदनुसार अपने जन्मदिन को अपनी जन्मतिथि के दिन ही मनाएं। हां, वर्षप्रवेश के दिन जन्मदिन मनाना अति उपयुक्त होगा। वर्तमान में जैन साधु तो जन्मतिथि को ही प्रधान मानते हैं।

(१२) **देवप्रदक्षिणा कितनी करें ?** – माता दुर्गा की एक प्रदक्षिणा, सूर्य की सात, गणेश जी की तीन, विष्णुदेव की चार एवं शिवजी की आधी प्रदक्षिणा करनी चाहिए।

गंडमूल नक्षत्र एवं शान्तिविचार – अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती – ये छः गंडमूल नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले बच्चों की '**गंडमूल शान्ति**' करानी आवश्यक है। गंडमूल में जन्मे बालक का मुख शान्ति तक देखना निषिद्ध है।

गंडमूलशांति लगभग २७वें दिन या उसी नक्षत्र वाले २६, २७, २८वें दिन करानी चाहिए।

गंडमूल नक्षत्रों का फलः- गंडमूल नक्षत्रों का फल केवल अशुभ ही नहीं होता, वरन् शुभ भी होता है। गंडमूल की शांति कराने से दोष नष्ट हो जाता है। गंडमूल शांति के पश्चात् पिता शिशु का मुख देखे।

अभिजित् मुहूर्त्त

प्रायः शोधित मुहूर्त्ततालिका में अभिजित् मुहूर्त्त में कार्य करें- यह लिखा रहता है। उसका अर्थ यह है कि- दिन के १५ मुहूर्त्तों में आठवां अभिजित् संज्ञक मुहूर्त्त शुभ फलप्रद होता है। इष्टदिन के दिनमान के घटी-पल को आधा करें तथा ढाई से भाग देकर घंटा-मिनट बनावें। इस दिनार्द्ध घंटा-मिनट को सूर्योदयकाल में जोड़ें, यह मध्याह्नकाल होगा। इस मध्याह्नकाल से २४ मिनट पहले तथा २४ मिनट बाद का समय अभिजित् मुहूर्त्त है। **ध्यान रहे-** यह अभिजित्-साधन का प्रकार मध्यममानानुसार है। इस मुहूर्त्तवेला का प्रयोग बुधवार के दिन शास्त्रसम्मत नहीं होता।

गंगा जी के स्नान से पहले संकल्प विधि

क्रुद्ध जह्नु द्वारा पी ली गई गंगा वैशाख शुक्ल सप्तमी को भगीरथ की प्रार्थना से जह्नु द्वारा कर्णरन्ध्र से बाहर निकाली गई थी, अतः यह तिथि गंगा के द्वितीय जन्म की तिथि मानी जाती है। श्रद्धालु लोग इस दिन व्रत रखते हैं।

प्रातः व्रत संकल्प :- ओम् विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसः परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे, अमुकनामसंवत्सरे वैशाखशुक्लसप्तम्याम् अमुकवासरे अमुकगोत्रः, अमुकनामाहं सकल-पापक्षयपूर्वक–श्रुति–स्मृत्युक्ताखिल – पुण्यफलोपलब्धये श्रीगंगायाः प्रीत्यर्थं व्रतं करिष्ये।

इस प्रकार व्रत का संकल्प करके "**ॐ पापहरायै श्रीगंगायै नमः**" कहते हुए पुष्पार्पणपूर्वक गंगा में स्नान करें।

षोडशोपचार पूजासंकल्प :- ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः अद्य ब्रह्मणो वयसः परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे अमुकनामसंवत्सरे वैशाखशुक्लसप्तम्याम् अमुकवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाहं सकल-पापक्षयपूर्वक–श्रुति–स्मृत्युक्ताखिल – पुण्यफलोपलब्धये स्वात्मशुद्धये च श्रीगंगायाः षोडशोपचारपूजनं करिष्ये।

इसके बाद मां गंगा का षोडशोपचार पूजन करें।

इस व्रत वाले दिन निम्न मन्त्रपाठ करते रहें –

"ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै नमो नमः।"

प्रत्येक मास में घटित होने वाले व्रत-पर्वों का संक्षिप्त विवरण

निम्नलिखित ये व्रत-पर्व प्रत्येक मास में घटित होते हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इसतरह है। देखिए-

(१) **विनायक चतुर्थी** - हर मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को '**विनायक चतुर्थी**' होती है। यह व्रत भगवान् श्रीगणेश जी के उपवास का है। मध्याह्न-समय में (तृतीयायुक्त) होने वाली चतुर्थी व्रत हेतु ली जाए- यह सामान्य नियम है। यह व्रत पूरे दिन उपवास रखकर दूसरे दिन समाप्त करना चाहिए। मंगलवारी '**विनायक चतुर्थी**' को '**अंगारक चतुर्थी**' कहते हैं।

(२) **श्रीदुर्गाष्टमी** - हर मास में सूर्योदयव्यापिनी शुक्ल अष्टमी को '**दुर्गाष्टमी**' मनाते हैं। दुर्गाष्टमी के दिन माता दुर्गा की उपासना-पूजा का विधान है।

(३) **एकादशी** - प्रत्येक मास के '**शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष**' में एकादशी का व्रत किया जाता है। इस व्रत के दिन **भगवान् श्रीविष्णु की** उपासना की जाती है। इस दिन सारे दिन उपवास रखकर दूसरे दिन पारणा की जाती है। सामान्यत: एकादशी के दो प्रकार हैं- स्मार्त्त एवं वैष्णव।

स्मार्त्त एवं वैष्णव एकादशी - एक वर्ष में कुल २४ एकादशी के व्रत होते हैं। एकादशी का व्रत स्मार्त्त संप्रदाय के लिए पारणाप्रधान है, वैष्णवों के लिए यह व्रत उपवासप्रधान है। पारणा हेतु सूर्योदय के समय यदि द्वादशी हो, तो उससे पूर्व दिन में (अर्थात् एकादशी के दिन) स्मार्त्तों को उपवास रखना चाहिए। वैष्णवों के लिए उपवास के दिन दशमी का वेध नहीं होना चाहिए। दशमीवेध अर्थात् एकादशी के सूर्योदय से पूर्व अरुणोदय के समय (स्थूलमान से १ घण्टा ३६ मि.) दशमी हो तो एकदशी दशमीविद्धा होती है। ऐसी (दशमीविद्धा) एकादशी का दिन छोड़कर द्वादशी के दिन वैष्णव संप्रदाय के लोगों को एकादशी व्रत करना चाहिए। ऐसी स्थिति में उन्हें पारणा त्रयोदशी के दिन करनी होगी।

एकादशी-तिथि का क्षय हो तो दशमीयुता एकादशी के दिन स्मार्त्तों को तथा त्रयोदशीयुता द्वादशी के दिन वैष्णवों को एकादशी का व्रत करना चाहिए।

द्वादशी का क्षय हो तो दशमीयुता एकादशी के दिन स्मार्त्त और द्वादशी-त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन वैष्णव एकादशी का व्रत करते हैं।

द्वादशी की वृद्धि हो तो द्वादशीयुता एकादशी के दिन स्मार्त्त और अहोरात्रव्यापिनी (षष्टिघट्यात्मक) द्वादशी के दिन वैष्णव एकादशी का व्रत करते हैं।

एकादशी की वृद्धि हो तो स्मार्त्त और वैष्णव-दोनों संप्रदाय षष्टिघट्यात्मक एकादशी को भी छोड़कर द्वादशीयुता एकादशी के दिन व्रत करते हैं।

(४) **प्रदोष व्रत** - इस दिन भगवान् शिव की उपासना की जाती है। सूर्यास्त के बाद लगभग ६ घटी (मध्यममान से २ घण्टे २४ मिनट) तक प्रदोषकाल होता है। प्रदोषकाल में दोनों दिन कम या अधिक त्रयोदशी हो अथवा दोनों ही दिन न हो तो दूसरे दिन प्रदोषव्रत रखना चाहिए। प्रदोष व्रत शुक्ल व कृष्ण दोनों ही पक्षों में होता है।

प्रदोषव्रत करते समय दिनभर निराहार रहकर सूर्यास्त के बाद स्नान करके महादेव का पूजन करना चाहिए।

(५) **श्रीगणेश चतुर्थी**- प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को भगवान् श्रीगणेश की उपासना की जाती है। इस दिन निराहार रहकर रात को चन्द्रोदय होने पर भोजन किया जाता है। सामान्यत: चन्द्रोदय होने पर चतुर्थी के दिन श्रीगणेश का व्रत किया जाता है। यदि संकट चौथ मंगलवार के दिन हो तो उसे '**अंगारक चतुर्थी**' कहते हैं।

(६) **कालाष्टमी** - प्रत्येक मास में प्रदोषकाल-व्यापिनी कृष्ण अष्टमी को कालाष्टमी मनाते हैं। इस दिन भैरवरूप में भगवान् शिव की उपासना की जाती है। कुछ मत मध्याह्न में भी भैरवाष्टमी के पक्षधर हैं।

(७) **शिवरात्रि** - प्रत्येक मास में कृष्ण चतुर्दशी के दिन शिवरात्रि का व्रत रखा जाता है। निशीथकाल में अर्थात् मध्यरात्रि में कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि का व्रत रखा जाता है। फाल्गुन मास की शिवरात्रि को '***महाशिवरात्रि***' कहते हैं।

(८) **दर्श अमावस्या** - अपराह्णकाल में (सामान्यत: दोपहर के डेढ़ से चार बजे तक) यदि अमावस्या हो तो उसे '**दर्श अमावस्या**' कहते हैं। सामान्यत: अपराह्णकाल में ज्यादा समय तक अमावस्या जिस दिन होती है, उस दिन '**दर्श अमावस्या**' होती है। इस दिन पिता हेतु श्राद्ध किया जाता है। यदि अमावस्या सोमवार को हो तो उसे '**सोमवती अमावस**' कहते हैं। सोमवती अमावस के दिन स्नान का विशेष महत्त्व है। हालांकि भौमवती व शनैश्चरी अमाओं का भी अपना विशेष महत्त्व है।

कुछ विशेष योग

(१) **गुरु-पुष्यामृत योग** - गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होने पर यह योग घटित होता है। इस शुभ योग में सुवर्ण की वस्तुएं खरीदने एवं शुभ कार्य करने का विशेष महत्त्व है। सभी कार्यो के शुभारंभ के लिए यह योग शुभ माना जाता है। लेकिन यह योग विवाह के लिए वर्ज्य है।

(२) **कार्त्तिक स्वामी दर्शन** - कार्त्तिक पूर्णिमा और कृत्तिका नक्षत्र एक साथ होने पर **कार्त्तिक-स्वामी-दर्शन** का योग बनता है। सामान्यत: जिस वर्ष कार्त्तिक अधिक मास आता हे, उस वर्ष 'अधिक मास' में (कार्त्तिक मास में) यह योग घटित होता है।

(३) **अर्धोदय-महोदय योग** - माघ कृष्ण अमावस्या के दिन रविवार, व्यतीपात तथा श्रवण नक्षत्र एक साथ होने पर '**अर्द्धोदय योग**' बनता है। अमावस्या को उपरोक्त पदार्थों में से एक भी कम होने पर '**महोदय योग**' बनता है। इन योगों में स्नान-दान आदि का विशेष महत्त्व होता है।

(४) **वारुणी योग** - चैत्र कृष्ण त्रयोदशी और शतभिषा नक्षत्र के संयोग से '**वारुणी योग**' बनता है। कृष्ण त्रयोदशी, शतभिषा और शनिवार के संयोग से '**महावारुणी योग**' बनता है। अमा का शतभिषा, शनिवार और शुभयोग से सम्पर्क होने पर '**महावारुणी योग**' बनता है। इन योगों में स्नान, देव-पूजन और दान देना पुण्यफलप्रद है।

(५) **कपिलाषष्ठी योग** - आश्विन कृष्ण षष्ठी के दिन रोहिणी नक्षत्र मंगलवार और व्यतीपात योग का संयोग होने पर '**कपिला षष्ठी योग**' बनता है। यह योग **सूर्यपर्व** होने से दिन में होता है। इस योग में सूर्यपूजन, हवन, दान आदि करना महापुण्यप्रद होता है।

(६) **गजच्छाया योग** - आश्विन अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र-दोनों के हस्त नक्षत्र में होने पर '**गजच्छाया योग**' होता है। इस योग में श्राद्ध-मन्त्रजाप-स्नान-दानादि का विशेष महत्त्व है।

(७) **सोमवती अमावस** - अमावस्या एवं सोमवार के संयोग से यह योग बनता है। इस योग पर गंगा किंवा तीर्थस्नान, अश्वत्थ-पूजन तथा विष्णुपूजन का विशेष महत्त्व है।

(८) **कनागत (कन्यागत)** - कन्या राशि में गुरु हो तो गंगा-कृष्णा आदि पवित्र नदियों किंवा तीर्थों पर स्नान, दान, पिण्डदान एवं श्राद्ध आदि करना, दानादि विशेष फलप्रद होता है।

(९) **धनुर्मास** - सूर्य के धनु राशि में प्रवेश करने पर '**धनुर्मास**' आरम्भ होता है। मकर संक्रांति के एक दिन पूर्व धनुर्मास की समाप्ति होती है। दान-पुण्य-मन्त्रजापादि का इस मास में अधिक महत्त्व है।

- - - - -

नेष्ट ग्रहजन्य रोग - शान्त्यर्थ उपाय

जन्माङ्ग में सूर्य की विषम स्थितियां– यदि सूर्य नीच का या पाप ग्रहों से युक्त किंवा शत्रुक्षेत्रस्थ हो तो सूर्य अनेक कष्टप्रद रोगों को जन्म देता है।

सूर्य की अन्य विषम स्थितियां– (1)-सूर्य तुला राशि में सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में हो एवं नीच राशिस्थ मंगल सूर्य को चतुर्थ दृष्टि से देखता हो।

(2)- यदि सूर्य जन्मकाल या गोचर में वृष, तुला, मकर या कुम्भ राशि में हो।

(3)-यदि शनि मंगल को या मंगल सूर्य को देखता हो और सूर्य शनि को देखे **किंच–**सूर्य महादशा में सूर्यान्तर में दुर्घटना-योग होता है।

(4)-यदि सूर्य अष्टमभाव में मंगल के साथ हो तो भी नेष्टफलप्रद है।

नेष्टसूर्यजन्य रोग

जब सूर्य नेष्टफलप्रद हो तो निम्नांकित रोगों की संभावना होती है–

पित्त, उष्णज्वर, चर्मरोग, अपस्मार, हृद्रुज, नेत्रकष्ट, रक्ताल्पता, पीलिया, लिवर-विकृति, हैजा, शिरोव्रण किंवा दाहज्वर आदि व्याधियों से कष्ट होता है।

शान्त्यर्थ:– माणिक्य रत्न 7 रत्ती या उपरत्न **सूर्यकान्त-मणि या लालड़ी** या **तामड़ा** रविवार को धारण करें।

तामड़ा– यह प्रदाहकारी रोगों को शान्त करता है, धैर्य एवं साहस प्रदान करता है।

सूर्यग्रह- शान्त्यर्थ विद्वान् पण्डित से '**आदित्य हृदय-स्तोत्र**' का पाठ जरूर कराएं अथवा "**ॐ घृणि: सूर्याय नम:**" मन्त्रजाप करें।

चन्द्र-ग्रहजन्य विषम स्थितियां– 1. यदि चन्द्रमा वृश्चिकस्थ तीसरे, छठे, आठवें या बारहवें घर में हो या कन्या राशिगत सातवें, नवम किंवा दूसरे स्थान पर हो।

2. यदि चन्द्र लग्न से अष्टम नीच का हो और शनि ग्यारहवें या दूसरे भाव से दसवीं एवं सप्तम दृष्टि से देखता हो।

3. क्षीण चन्द्र अष्टम में या मकरस्थ हो तथा शनि ग्यारहवें या दूसरे भाव से चन्द्र को देखता हो।

4. चन्द्र की महादशा में शन्यन्तर हो। जन्मांग में यदि चन्द्र पापग्रहों से युत या मंगल किंवा शनि से दृष्ट हो तो नेष्टफलप्रद लिखा है।

5. चन्द्रमा गोचर में पंचम, अष्टम किंवा बारहवें भाव में होने पर भी कष्टप्रद होता है।

नेष्ट चन्द्रजन्य रोग

मूत्राशय-सम्बन्धित रोग, मधुमेह, अतिसार, अनिद्रा, विक्षिप्तता, पीलिया, अरुचि, दमा, श्वासरोग किंवा खांसी आदि रोगों से परेशानी होती है।

शान्त्यर्थ– मोती ४रत्ती के लगभग सोमवार को चांदी में धारण करें या **चन्द्रकान्त मणि** 4, 5, 7 रत्ती धारण करें।

चन्द्रकान्तमणि धारण करना स्मृति, मानसिक-शान्ति और अनिद्रानाश किंवा हृदयकष्ट-निवृत्ति आदि के लिए विशेष लाभदायक है। "**ॐ ऐं क्लीम् सोमाय नम:**" इस मन्त्र का जाप करें।

मंगल ग्रह की विषम स्थितियां– 1. यदि जन्माङ्ग में मंगल कर्कस्थ होकर लग्न, चतुर्थ या सप्तम स्थान में हो तो नेष्ट है।

2. मंगल शत्रु ग्रहों के साथ स्थित हो एवं सूर्य से दृष्ट हो तो नेष्ट है।

3. मंगल मिथुन राशि में या तुला राशि में कम अंश का हो किंवा नवम या तीसरे भाव का स्वामी हो एवं शनि की दृष्टि में भी हो तो नेष्ट फलप्रद होता है।

4. मंगल की महादशा में मंगल का ही अन्तर हो। उस समय गोचर में चौथे,

2. लग्न से द्वितीयस्थ गुरु वृश्चिक राशि का हो या लग्न से तीसरे मिथुन राशि

4. मंगल की महादशा में मंगल का ही अन्तर हो। उस समय गोचर में चौथे, सातवें किंवा बारहवें भाव में वक्र मंगल अनेक प्रकार से कष्टप्रद होता है।

नेष्ट मंगलजन्य रोग

रक्तप्रवाह, रक्तातिसार, हाई ब्लड प्रैशर, अग्निव वाहनदुर्घटना, कुष्ठरोग, बवासीर, चर्मरोग, हड्डी टूटना, गुल्म एवं पित्त-विकार आदि रोग होते हैं।

शान्त्यर्थ– मूंगा 5 से 8रत्ती, विद्रुम मणि, संघ मूंगी, रतुआ, लाल अकीक धारण करें।

रतुआ– रक्तस्राव रोकता है, अर्बुद एवं ज्वरनाशक है। गले में आवाज़ को स्पष्ट करता है। **''ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः''** इस मंत्र का जाप करें।

बुध की विषम स्थितियां– 1. मीन राशिस्थ बुध बारहवें, आठवें या पंचमस्थ हो।

2. बुध शत्रुगृही हो और शनि के साथ बारहवें, नवम या द्वितीय भाव में हो तो नेष्ट फलप्रद होगा।

3. बुध राहु के साथ सप्तम भाव में हो तो नेष्ट है।

नेष्ट बुधजन्य रोग

मूक, बधिरता, नपुंसकता, अजीर्ण, वायुरोग, गलरुजा, उन्माद, मिर्गी, जिह्वारोग, हृदय रोग।

शान्त्यर्थ– पन्ना नग 3, 5 या 7 रत्ती बुधवार को धारण करें अथवा उपरत्न **मरगज, जबरजन्द** धारण करें।

मरगज– इस उपरत्न का प्रभाव **पन्ना** जैसा ही है। **''ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः''** इस मन्त्र का जाप करें या कराएं।

गुरु की विषम स्थितियां– 1. गुरु की शत्रुग्रहों के साथ युति किंवा गुरु मंगल अथवा शनिदृष्ट हो।

2. लग्न से द्वितीयस्थ गुरु वृश्चिक राशि का हो या लग्न से तीसरे मिथुन राशि का हो अथवा लग्न से आठवें तुला राशि का हो तो नेष्टफलप्रद होगा।

3. जन्माङ्ग में गुरु मकर राशि में सप्तम या अष्टमस्थ हो तो नेष्ट फलप्रद रहेगा।

नेष्ट गुरुजन्य रोग

गले का कष्ट, श्वासरोग, कफरोग, अतिसार, पक्षाघात, गठिया, कर्णरोग, मूर्छा, टी.बी. आदि रोग।

शान्त्यर्थ– ''ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः'' इस मंत्र का पाठ करें या कराएं।

'पुखराज' नग 3, 5, 7 रत्ती वीरवार को धारण करें या सुनैहला नग 5/7 रत्ती गुरुवार को धारण करें।

शुक्र की विषम स्थितियां– 1. शुक्र कन्याराशिस्थ लग्न में, सप्तम या व्ययस्थान में हो।

2. शुक्र कर्क-सिंह राशिस्थ हो या शत्रुग्रहों की युति हो और नवम अथवा दशम भाव में हो।

3. शुक्र पर शत्रुग्रहों की दृष्टि हो, शुक्र ग्रह की महादशा भी हो।

4. शुक्र राहु किंवा सूर्य के साथ तीसरे भाव में बैठकर भाग्यस्थान को देखे तो नेष्ट फलप्रद होता है।

नेष्ट शुक्रजन्य रोग

वीर्यदोष, नेत्ररोग, हिस्टीरिया, सर्वांगशोथ, मधुमेह, प्रदर रोग, इन्द्रिय-रोग, प्रमेह, सुजाक, मूत्ररोग, नपुंसकता, गोनोरिया एवं हर्निया आदि कष्टप्रद रोग होते हैं।

शान्त्यर्थ– हीरा रत्न शुक्रवार को विधिवत् धारण करें अथवा **तुरमली नग**, जिसे '**मास्टरस्टोन**' भी कहते हैं, इसे शुक्रवार को धारण करें। यह उपरत्न जीवन की समस्याओं को शीघ्रता से हल करके भौतिक सुख प्रदान करता है, बुरा फल कभी नहीं देता। "**ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः**"–इस बीजमंत्र का जाप विधिवत् कराएं।

शनि की विषम स्थितियां– 1. जन्माङ्ग में मेषस्थ शनि किसी भी भाव में बैठा हो, वह उस भाव के प्रभाव को क्षीण कर देता है।

2. कर्क या वृश्चिकस्थ शनि यदि लग्न, तृतीय, पंचम या सप्तम में हो तो नेष्ट है।

3. शनि या मंगल की किसी भी त्रिकोण में दोहरी सन्धि या युति हो तो शनि नेष्ट है।

4. यदि शनि राहु या शुक्र के साथ केन्द्र में हो या शनि में मंगल का अन्तर हो तो नेष्टफलप्रद है।

नेष्ट शनिजन्य रोग

पक्षाघात, हाथ-पैर या शरीर का कम्पन, मिर्गी, गठिया, कैंसर, टी.बी., उदरशूल, विषबाधा, कृमिरोग किंवा कुष्ठरोग भी संभव है।

शान्त्यर्थ– **नीलम** रत्न 5/7 रत्ती शनिवार को दूध से धोकर पहनें। अथवा उपरात्न **जामुनिया**, **नीली**, **लाजावर्त किंवा काला अकीक** शनिवार को चांदी में धारण करें।

शनिमन्त्र– "**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः**" इस मंत्र का जाप करें।

राहु की विषम स्थितियां– 1. जन्माङ्ग में राहु अष्टमभाव में हो एवं राहु पर मंगल की दृष्टि हो तो राहु नेष्ट फलप्रद रहेगा।

2. शनि-राहु एकत्र हों और राहु धनुराशि का हो तो नेष्ट होगा।

3. राहु नीचस्थ होकर नवम भाव में हो, शनि या मंगल की राहु पर दृष्टि भी हो तो नेष्ट है।

4. राहु मेष-कर्क-सिंह या वृश्चिकस्थ होकर लग्न, चतुर्थ, छठे अथवा दशम भाव में हो तो नेष्ट है।

नेष्ट राहु/केतुजन्य रोग

मस्तिष्क-रोग (पागलपन), कब्ज, अतिसार, प्रेतपीड़ा, चेचक, कुष्ठरोग, कैंसर, गठिया, हृदयरोग, त्वचा रोग, अस्थिविकार आदि रोग होते हैं।

शान्त्यर्थ– **गोमेद** 7 रत्ती बुधवार को सायंकाल या शनिवार को सुबह विधिवत् धारण करें। **किञ्च**–राहु के बीजमन्त्र– "**ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः**" का विधिवत् जाप करें एवं बुधवार सायं तेल में मुंह देखकर दान करें।

केतु की विषम स्थितियां– 1. केतु वृष या मिथुन राशि में शुक्र के साथ हो तो नेष्ट है।

2. केतु सूर्य के साथ सप्तम या अष्टम में हो तो नेष्ट है।

3. केतु लग्न या पंचम में शनि के साथ हो तो नेष्ट है।

4. यदि जन्माङ्ग में केतु शत्रुगृही (मेष, कर्क, सिंह किंवा वृश्चिक राशि का) होकर द्वितीय, तृतीय, पंचम या सप्तम भाव में शनि के साथ हो एवं सूर्य से दृष्ट भी हो तो नेष्ट फलप्रद है।

शान्त्यर्थ– केतु के बीजमन्त्र का जाप करें। **मन्त्र**– "**ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः**"। **किञ्च**–'**लहसुनिया**' नग धारण करें अथवा '**फिरोजा नग**' पहनें। यह नग गंभीर खतरों से रक्षा कर दीर्घायु प्रदान करता है। मानसिक शक्ति को प्रबल करता है।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षो के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— ये वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ, अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़ दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग में पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षों से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को; जीर्ण, धूम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। १। ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। स्मरण रहे-अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें – वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो– इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा— लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। या लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो॰— तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नादीपवर्तिज्ञानम्— जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः— यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि— वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पाया फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो॰— मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्— दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भावे परि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनथन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाह।। सुह्रद भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमें पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो— प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्यस्य रश्मयः। मुक्ता सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"— इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि— पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दो॰— "धूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो छीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः— "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसी त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसी त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः— "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परै ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग— क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग— यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तराद्धी का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हो तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब मान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि या युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परे ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन हरे सोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न ब्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसे त्रणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवै नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है भंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसी त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय या चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुखो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसी सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसी बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–सातें तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतभिषा मंगलवार। फटो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विषकन्या जान सोय।।४।। जन्मलग्न है शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नव (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में है द्वि मानो। या कन्या को विषया जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंगलवारयुत तीजो जोय।।७।। परे शतभिषा मंगलवार। सातें तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परे। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति शुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– द्वे अष्टमे काकवन्ध्यामन्दार्कावष्टगे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – **चौपाई**– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत पाके–चन्द्रज गुरु बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो स्ववर्ग बुध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा**– कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकी पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे सदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं में पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरु की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थान	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचार:– *ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किन्हीं के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।*

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष; असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्दौ विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्— मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्— प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। "ज्येष्ठापादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् —रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख—सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ—ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीपुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्थ	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ मातृसुखनाश—योग— (१) पापग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे—सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो— इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप—दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग— (१) सूर्य, मंगल दसवें या नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो— इन चार योगों मे से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग— भ्रातृ गृह को ईश जो गौन संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ—ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढ़ा	दुष्टा	रोगिणी

सन्तानसुखनाशयोग— गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग— शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग — सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज।।

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव–ग्रह।	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	वैदूर्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैदूर्यम्	नागवर्तः	नागवर्तः

जारजयोग

अनुष्टुप्

ना लखै लग्नप लखै न लग्न। को शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यू मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लामादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है।

सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलहठी, लसूढ़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दर्शनं नियासस्य तत्रराश्री – "ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।"– इत्यस्य जापः, ततोऽनेन मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नजरादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– "ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरि। रक्षतु रक्षितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–संगव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरदः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहबान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्तो पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, छल, आक 16 फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डाये विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्थानाद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली 16 बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में बिडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुञ्च रक्ष कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हरीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमदाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, 16 नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली 16 बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रैवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आंटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्भुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुं हुं हुं हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौ शांतिरन्तरिक्ष.........." इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रह संहरंतु हुं रोदय–रोदय स्फोटय –स्फोटय स्वाहा गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र-कष्टावली

रोग-नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन-संख्या 1	2	3	4	रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो-अन्नादि दान	0	60	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायवेति	सर्प को दूध-दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो-अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर-धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ-स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	16	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाव को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोधर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोरराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अभ्यान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दहीं, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी-पूओं की बलि छोड़ें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	८	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी झटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र-संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु- इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु-चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र-चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा मे पिता की मृत्यु होती है।

नोट— इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्-पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण मे पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उस चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप-दीपादि करके आटे की आकृति को जल में

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(1) रोग के शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2) सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुराधा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गौ बहुला दान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी -इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "धुं धुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंगविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुभ ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्करावलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षीरशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	16	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक्य	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोह	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोह	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुख्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी,श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुख्येशवत्	मुख्येशमन्त्रः	मुख्येशकाल	मुख्येशाद्य

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहू का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुको को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्ध्यर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दही का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 46 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह जरूरी है। उस दिन गुड से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनो का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :– हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :– पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करें। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तैल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उड़द तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :– घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :– शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :– नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारु, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। चन्द्र शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही मंगलव्रत के दिन अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर, बुधव्रत के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा, गुरुव्रत के दिन भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प, शुक्रव्रत के दिन इलायची, मजीठ तथा शनिव्रत के दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरबेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः– स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविघ्नशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कागनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध्र– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीडा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वर्ज्जनयं
लोहशस्त्रभयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

बृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्थान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :–अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप– अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशि→	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक		
नक्षत्र→ चरण ↓	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
प्रथम चरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो
द्वितीय चरण	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या
तृतीय चरण	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी
चतुर्थ चरण	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू

राशि→	धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	मूल	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	यो	धा	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि–नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। कामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करें। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पौ कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये धफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहा ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, यहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए है, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

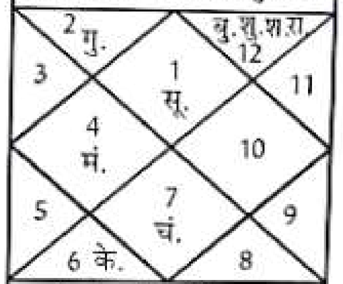
नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने *जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।*

बारह संक्रांतियों एवं राशियों का मासिक फलादेश (सम्वत् 2082 वि.)

वैशाख मास

मेष संक्रान्ति -**राशीश** मंगल कर्क (अपनी नीच) राशि में रहेगा। मंगल मेष राशि का स्वामी है। अतः त्वचा रोग किंवा मानसिक तनाव से परेशानी रहे। कर्मेश शनि द्वादश भावस्थ शु. बु. एवं रा. के साथ होने से कारोबार किंवा व्यापारक्षेत्र में हानि से मन चिंतित रहे। लेकिन वृषस्थ गुरु की कर्मक्षेत्र पर दृष्टि होने से कारोबार एवं अन्य कार्य से लाभ की स्थिति बनेगी। कारोबार में हिस्सेदारी में रद्दोबदल होगा। व्यय स्थान में श. रा. शु. बु. की स्थिति नेत्रकष्ट-कारक मालूम देती है, सावधान रहें।

वैशाखसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



मेषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
13/14 अप्रैल, सन् 2025 ई.,
3 घं. 21 मि. (I.S.T.)

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष - राशीश मंगल नीच होने से चोटभय-कारक है। राजकीय कार्यों में परेशानी रहे। पंचमेश के वली होने से संतानपक्ष शुभ रहे। 12वां सखल/नीच बुध बन्धु-बांधवों से अनबन करे। अप्रै. 16, 17, 25, 26; मई 3, 4, 5, 13 अशुभ।

वृष - शुक्र 12वें, पर उच्चस्थ है। सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन-सहयोग, मित्र-बन्धु से सुख, पति/स्त्रीकष्ट, कारोबार में कुछ गड़बड़। अप्रै. 18, 19, 20, 27, 28; मई 6, 7 अशुभ।

मिथुन - राशीश बुध नीचस्थ है। सेहत खराब रहे, आर्थिक संकट रहे, निजीजनों से अनबन, बन्धुसुख, शत्रुप्रबल, राजपक्ष से हानि। अप्रैल 21, 22, 29, 30; मई 8, 9, 10, अशुभ।

कर्क- कफ-पितविकार, आर्थिक लाभ होकर हानि, निजीजन-सहयोग, बन्धुकष्ट, सन्तान हेतु विशेष खर्च किंवा कष्ट-चिन्ता। मंगल का दान करें। अप्रैल 13, 14, 15, 23, 24; मई 1, 2, 11, 12 अशुभ।

सिंह - सेहत ठीक, अर्थहानि, मित्रबन्धु से कुछ मदद, यात्रा में कष्ट, गुप्त शत्रु भय, मासान्त में हानि। अप्रैल 16, 17, 25, 26; मई 3, 4, 5, 12 अशुभ।

कन्या - वायुरोग, धनलाभ, भाई-बन्धुओं को कष्ट, शत्रु प्रबल, मासमध्य के बाद समय अनुकूल रहे। अप्रैल 18, 19, 20, 27, 28; मई 6, 7 अशुभ।

तुला - नेत्रकष्ट, वृथाव्यय, मित्र-बन्धु से परेशानी, सन्तान हेतु खर्च, स्त्रीपक्ष से परेशानी, कारोबार कुछ ठीक। अप्रैल 21, 22, 29, 30, मई 8, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक - वृथा कलह से बचें, अर्थलाभ, भ्रातृकष्ट, राजपक्ष से लाभ, कार्यान्तर/स्थानान्तर का योग। अप्रैल 13, 14, 15, 23, 24; मई 1, 2, 11, 12 अशुभ।

धनु- सेहत खराब, आर्थिक संकट, निजबन्धु से कुछ मदद, स्त्रीपक्ष से चिंता, मासान्त अशुभ। अप्रैल 16, 17, 25, 26; मई 3, 4, 5, 13 अशुभ।

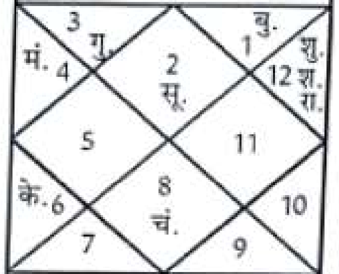
मकर - रक्त-पित्तविकार, अर्थलाभ, मित्र-बन्धु से सुख/लाभ, पति/स्त्रीपक्ष से परेशानी, नई योजना से लाभ, संतानपक्ष से सुख। अप्रैल 18, 19, 20, 27, 28; मई 6, 7 अशुभ।

कुम्भ- उदरविकार,अर्थलाभ होकर वृथाव्यय, निजीजनों से कुछ लाभ, संतानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल से चिंता। अप्रैल 21, 22, 29, 30; मई 8, 9, 10 अशुभ।

मीन- सेहत गड़बड़, धनहानि, बन्धुसुख, संतानपक्ष से चिंता, यात्रा में कष्ट हो। अप्रैल 13, 14, 15, 23, 24; मई 1, 2, 11, 12 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृष संक्रान्ति-कालीन कुण्डली



वृषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
14/15 मई, सन् 2025 ई.,
0 घं. 12 मि. (I.S.T.)

वृष संक्रान्ति - मासारम्भ में ही वृषस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि होने से समय संघर्षपूर्ण एवं कठिन परिस्थितियों वाला रहेगा। नीच चन्द्र एवं नीच मंगल की स्थिति मानसिक परेशानी किंवा कार्य में अस्थिरता बनाएगी। विदेशगमन से लाभ का योग किंवा निजीलोगों से लाभ की चाहत फलीभूत न होगी। 14 मई, 2025 ई. से गुरु मिथुन में आकर कार्यान्तर से लाभ दे सकता है। मासारम्भ में ही गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि उत्साहवर्धक रहेगी। नीच राशिस्थ मंगल की भाग्य स्थान (मकर) एवं कर्मक्षेत्र पर दृष्टि होने से निजीजनों से हानि संभव है, सचेत रहना होगा।

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि का शुभाशुभ फल

मेष - शनि-मंगल-राहु-शुक्र की स्थिति स्वास्थ्य खराब करेगी। नीचस्थ चन्द्र मानसिक कष्टकारक है। आर्थिक स्थिति कमजोर रहे, स्त्रीकष्ट, माता-पिता को कष्ट, कारोबार गड़बड़। मई 14, 15, 23, 24, 31; जून 1, 9, 10, 11 अशुभ।

वृष - मित्र-बन्धुकष्ट, रोगभय, शत्रु प्रबल, धनलाभ होकर हाथ से निकले, संतानपक्ष से चिंता, कार्यक्षेत्र में संघर्ष से सफलता प्राप्त हो। मई 16, 17, 25, 26; जून 2, 3, 12, 13 अशुभ।

मिथुन - मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहे। आय-व्यय बराबर, सन्तानकष्ट व चिन्ता, पारिवारिक उलझनें बढ़ें, कारोबार में प्रगति। मई 18, 19, 27, 28; जून 4, 5, 6 अशुभ।

कर्क - शरीरकष्ट, धनलाभ, परिवारसुख, सन्तानपक्ष से चिंता, स्त्रीकष्ट, व्यापार में हानि, कार्यक्षेत्र उलझनपूर्ण रहे। मई 20, 21, 22, 29, 30; जून 7, 8 अशुभ।

सिंह - शरीर-सुख, फिजूल खर्ची, आर्थिक स्थिति कमजोर, मित्र-बन्धु को तकलीफ, संतानपक्ष ठीक, स्त्रीपक्ष से हानि, कारोबार में रद्दोबदल। मई 14, 15, 23, 24, 31; जून 1, 9, 10, 11 अशुभ।

कन्या - स्वास्थ्य गड़बड़, स्त्रीपक्ष से परेशानी, पारिवारिक जीवन में असन्तोष रहे, करोबार में कुछ हानि। मई 16, 17, 25, 26; जून 2, 3, 12, 13, अशुभ।

तुला - सिर व नेत्र-व्यथा, शरीरकष्ट, स्त्रीकष्ट, रोगभय, नई योजनाओं से कारोबार में चिंता, परिवार-कष्ट, खर्च विशेष, आय-व्यय बराबर। मई 18, 19, 27, 28; जून 4, 5, 6 अशुभ।

वृश्चिक - स्वास्थ्य ठीक न रहे, स्त्रीपक्ष खराब, संतानपक्ष से चिन्ता एवं सन्तान हेतु खर्च, आय व व्यय बराबर, बन्धुसुख, कारोबार ठीक। मई 20, 21, 22, 29, 30; जून 7, 8 अशुभ।

धनु- शरीर-सुख, लेकिन रक्तविकार संभव, मानसिक परेशानी, पारिवारिक उलझनें बढ़ें, स्त्रीपक्ष शुभ, संतानकष्ट, आर्थिक स्थिति कमजोर। मई 14, 15, 23, 24, 31; जून 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मकर - स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहे, आर्थिक स्थिति भी ठीक, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, बन्धुकष्ट, पारिवारिक सुख ठीक, कार्यक्षेत्र में संघर्ष से प्रगति। मई 16, 17, 25, 26; जून 2, 3, 12, 13 अशुभ।

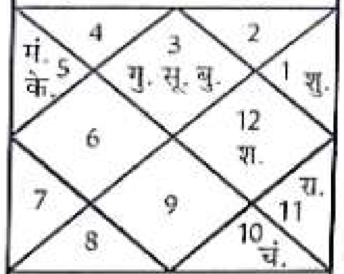
कुम्भ - रोगभय, शत्रुपक्ष से हानि, बन्धुकष्ट, धनलाभ, स्त्रीसुख, संतति-चिन्ता कम हो, कारोबार में हानि, आय-व्यय बराबर। मई 18, 19, 27, 28; जून 4, 5, 6 अशुभ।

मीन - स्वास्थ्य-हानि, शत्रु कमजोर हों, स्त्रीपक्ष से कुछ लाभ, बन्धुसुख ठीक-ठीक, शुभ समाचार, सन्तान पर खर्च, कारोबार ठीक, दुर्घटना-भय। मई 20, 21, 22, 29, 30; जून 7, 8 अशुभ।

आषाढ़ मास

मिथुन संक्रान्ति–मास का आरम्भ सफलताओं के बावजूद पारिवारिक तनाव और कलह का सामना कराएगा। कई बार कारोबार में विघ्न आएंगे। निराश होने की जरूरत नहीं, अन्ततः सफलता मिलेगी। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नवदम्पत्ती के लिए सन्तान के योग बनेंगे। मास के उत्तरार्ध में शनि-राहु-गुरु की स्थिति उत्साहवर्धक एवं प्रगतिप्रद रहेगी। विवादित मामलों में अन्ततः सफलता मिलेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिलन होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़े एवं नई योजना से लाभ रहे।

मिथुनसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



मिथुनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
15 जून, सन् 2025 ई.,
6 घं. 44 मि. (I.S.T.)

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष – स्वास्थ्य ठीक रहे, आर्थिक लाभ, किन्तु खर्च विशेष हो, मित्र/बन्धुसुख, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से लाभ, संतानपक्ष शुभ, रोग व चोटभय। शनि का दान करें। जून 19, 20, 27, 28; जुला. 7, 8 अशुभ।

वृष – स्वास्थ्य ठीक न रहे, धनहानि, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख, संतति-कष्ट, योजनाओं में बाधा उपस्थित हो, स्त्रीकष्ट, करोबार में प्रगति। जून 21, 22, 29, 30; जुला. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

मिथुन – सेहत ठीक-ठीक रहे, कारोबार भी ठीक, धन व परिवारसुख की चिंता, बन्धुसुख, सम्पत्ति-विवाद, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख। जून 15, 16, 23, 24; जुला. 2, 3, 12, 13 अशुभ।

कर्क – सेहत ठीक, मन प्रसन्न रहे, करोबार में प्रगति, धनसुख, लेकिन सम्पत्ति-विवाद में हानिभय। बन्धुकष्ट रहे, संततिसुख, स्त्रीपक्ष शुभ। जून 17, 18, 25, 26; जुला. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

सिंह – सेहत ठीक-ठीक, घरेलू झंझट, नेत्रकष्ट-भय, मित्र-बन्धुसुख, संतानपक्ष से सुख, कारोबार में लाभ, स्त्रीपीड़ा। जून 19, 20, 27, 28; जुला. 7, 8 अशुभ।

कन्या – देहसुख ठीक, लेकिन रोगभय, कारोबार मध्यम, स्वजनों से सम्पत्ति-विवाद, योजनाओं में सफलता, संततिसुख, स्त्रीकष्ट। शनि-मंगल का दान करें। जून 21, 22, 29, 30; जुला. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

तुला – स्वास्थ्य ठीक रहे, मानसिक शान्ति, धनलाभ, बन्धुसुख कुछ ठीक, स्थिर सम्पत्ति विवाद सुलझे, संतानपक्ष से हानि, स्त्रीसुख। जून 15, 16, 23, 24; जुला. 2, 3, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक – सेहत ठीक, धर्म-कर्म में मन लगे, धनलाभ, घरेलू झगड़े हल हों, सम्पत्तिलाभ, सन्तानसुख ठीक रहे, स्त्रीपक्ष खराब, कारोबार में रुकावट। जून 17, 18, 25, 26; जुला. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

धनु – स्वास्थ्य ठीक-ठीक, स्त्रीपक्ष से कुछ लाभ, भ्रातृसुख, सम्पत्तिलाभ, संततिसुख, मानसिक कष्ट, योजनाओं में सफलता मिले, कार्यक्षेत्र में लाभ। जून 19, 20, 27, 28; जुला. 7, 8 अशुभ।

मकर – स्वास्थ्य ठीक रहे, स्त्रीसुख, मन प्रसन्न रहे, सम्पत्तिहानि व धन-क्षय, मित्र-बन्धु का सहयोग न मिले। शत्रु दबे रहें, कारोबर ठीक। जून 21, 22, 29, 30; जुला. 1, 9, 10, 11 अशुभ।

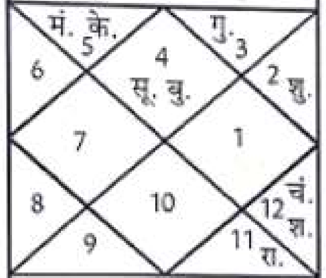
कुम्भ – देहकष्ट, मन अशान्त, धन व पारिवारिक सुख कुछ ठीक, भ्रातृसुख-लाभ, संततिसुख, स्त्रीसुख में कमी, चोटभय, कारोबार में लाभ। जून 15, 16, 23, 24; जुला. 2, 3, 12, 13 अशुभ।

मीन – स्वास्थ्य खराब, स्त्रीकष्ट, शनि-बुध का दान करें, बन्धुसुख, सम्पत्ति-सम्बन्धी विवाद सुलझें, संतानपक्ष से प्रसन्नता रहे, कारोबार ठीक, जून 17, 18, 25, 26; जुला. 4, 5, 6, 14, 15 अशुभ।

श्रावण मास

कर्क संक्रान्ति - लग्नेश चन्द्र शनि के साथ होने से वृथा कलह, गुप्त चिन्ताएं, रोग एवं निजी-जनों से अनबन, कारोबार में रुकावट आदि से परेशानी रखे। राहु-मंगल का समसप्तक धनहानि-कारक है। तीर्थयात्रा आदि में चोट आदि से सावधान रहें। 12 जुलाई के लगभग शनि के वक्री होने पर कार्यान्तर से आर्थिक हानि का योग बनेगा। जुलाई मास के लगभग धार्मिक उन्माद कहीं विक्षोभ पैदा कर सकता है। इस मास में बुध के अस्त होने पर प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग है।

श्रावणसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



कर्कसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
16 जुलाई, सन् 2025 ई.,
17 घं. 32 मि. (I.S.T.)

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष - मनोबल कमजोर रहे, धनस्थान में शुक्र आर्थिक स्थिति मजबूत करे, मित्र-बन्धुसुख ठीक, सम्पदालाभ, सन्तान पक्ष से कुछ चिन्ता, मन अशान्त, कारोबार मे गड़बड़। जुला. 16, 17, 24, 25, 26; अग. 3, 4, 12, 13 अशुभ।

वृष - सेहत ठीक, आर्थिक स्थिति मजबूत, निजीजनों से लाभ, रक्तविकार, संतानपक्ष कुछ शुभ, शत्रु कमजोर। जुला. 18, 19, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

मिथुन - स्वास्थ्य ठीक, आय-व्यय बराबर, मित्र-बन्धु से लाभ, धनहानिभय, पराक्रम बढ़े, संतानपक्ष कुछ शुभ, शत्रु कमजोर, स्त्रीपक्ष से लाभ। जुला. 20, 21, 29, 30; अग. 8, 9 अशुभ।

कर्क - सेहत ठीक-ठीक, घरेलू झगड़े, मानसिक कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, मित्र-बंधु का सहयोग मिले, नेत्रकष्ट, संततिसुख, सम्पदालाभ, परंतु अचानक खर्च। जुला. 22, 23, 31; अग. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

सिंह - क्रोध बढ़े, मानसिक कष्ट, धनलाभ होकर हानि, पारिवारिक झगड़े कुछ सुलझें, संतानपक्ष शुभ, संपत्ति-हानि। जुला. 16, 17, 24, 25, 26; अग. 3, 4, 12, 13 अशुभ।

कन्या - सेहत ठीक, लेकिन मानसिक कष्ट रहे, आय से व्यय अधिक, नेत्रकष्ट, भ्रातृकष्ट, सम्पदा-सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट। जुला. 18, 19, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ

तुला - सेहत ठीक ही रहे, मन परेशान, आर्थिक लाभ, मित्र-बन्धु से सुख, सम्पत्तिलाभ, संततिचिन्ता, स्त्रीसुख, रोगभय। जुला. 20, 21, 29, 30; अग. 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक - उदर-विकार, धनलाभ, परिवार-सुख, कारोबार ठीक, भ्रातृसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु व रोगभय, स्त्रीपक्ष से सुख। जुला. 22, 23, 31; अग. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

धनु - सेहत ठीक, धनलाभ, बन्धुकष्ट, सम्पदा-लाभ, संतति-सुख, शत्रु दबे रहें, कारोबार में हानि। जुला. 16, 17, 24, 25, 26; अग. 3, 4, 12, 13 अशुभ।

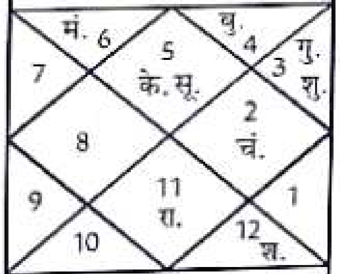
मकर - मानसिक व शारीरिक कष्ट, शनि-मंगल का दान करें। राजभय, मित्र-बन्धु से परेशानी, संतानपक्ष शुभ, स्त्री व परिवार का सुख कुछ कम, कारोबार ठीक-ठीक। जुला. 18, 19, 27, 28; अग. 5, 6, 7, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ - सेहत गड़बड़, स्त्रीकष्ट, मानसिक परेशानी, बन्धुसुख, धन व सम्पत्तिसुख, संतानपक्ष ठीक, कारोबार में लाभ। जुला. 20, 21, 29, 30; अग. 8, 9 अशुभ।

मीन - सेहत ठीक-ठीक, रोग व शत्रुभय, धनहानि, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष ठीक रहे। जुला. 22, 23, 31; अग. 1, 2, 10, 11 अशुभ।

भाद्रपद मास

भाद्रपदसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



सिंहसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
16/17 अग., 2025 ई.,
1 घं. 52 मि. (I.S.T.)

सिंह संक्रान्ति – सारे मास सूर्य-राहु का समसप्तक और सूर्य-शनि का षडष्टक मानसिक तनाव, निजीलोगों से मन-मुटाव, गुप्त चिन्ता, कारोबार-सम्बन्धित चिन्ता एवं परेशानियां करेगा। लेकिन राहु पर गुरु की दृष्टि होने से आय के साधन ठीक बनेंगे। शनि-मंगल का समसप्तक चोटभय-कारक है। यात्रा में सावधान रहें। अनावश्यक रूप से मित्र-बन्धुओं के साथ मन-मुटाव से बचें।

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष – सेहत ठीक रहे, मित्र-बन्धु का सहयोग मिले, यात्रा में कष्ट, जायदाद-सम्बन्धी विवाद सुलझें, सन्तान का सुख मिले, स्त्रीसुख, कारोबार में संघर्ष रहे। अग. 21, 22, 30, 31; सितं. 1, 9, 10 अशुभ।

वृष – सेहत ठीक रहे, मित्र-बन्धुसुख, सम्पत्ति-लाभ, सन्तानचिंता, रोग व शत्रुभय, पराक्रम बढ़े, स्त्रीपक्ष से सुख-लाभ, कारोबार में लाभ। अग. 23, 24; सितं. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मिथुन – स्वास्थ्य ठीक रहे, नेत्रकष्ट, निजीजनों से लाभ, सम्पत्ति-विवाद, संतानपक्ष से लाभ, स्त्रीपक्ष शुभ, वृथाव्यय। अग. 16, 17, 18, 25, 26, 27; सितं. 4, 5, 13, 14 अशुभ।

कर्क – रोगभय, क्रोध बढ़े, वातपीड़ा से परेशानी सम्भव, नई योजना से कार्यक्षेत्र में परेशानी, धनलाभ, संतानपक्ष ठीक, शुभ समाचार, स्त्रीसुख। अग. 19, 20, 28, 29; सितं. 6, 7, 8, 15 अशुभ।

सिंह – स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहे, किन्तु नेत्रकष्ट सम्भव, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख, सम्पदा-लाभ, संतानपक्ष से सुख, स्त्रीसुख में कमी, कारोबार में तरक्की। अग. 21, 22, 30, 31; सितं. 1, 9, 10 अशुभ।

कन्या – सेहत ठीक न रहे, घरेलू झगड़े सुलझें, मित्र-बन्धुसहयोग, सम्पदा मिले, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से परेशानी रहे, कारोबार में लाभ। अग. 23, 24; सितं. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

तुला – सेहत ठीक ही रहे, लेकिन उदर-विकार संभव, अपव्यय, पराक्रम व कार्यकुशलता से कारोबार में प्रगति हो, बन्धुसुख, संतान व स्त्रीपक्ष से चिन्ता। अग. 16, 17, 18, 25, 26, 27; सितं. 4, 5, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक – स्वास्थ्य ठीक रहे, आय-व्यय बराबर, बन्धुसुख, सम्पत्ति-विवाद, संतानपक्ष अशुभ, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख में कमी, कारोबार ठीक। अग. 19, 20, 28, 29; सितं. 6, 7, 8, 15 अशुभ।

धनु – सेहत ठीक रहे, धन व सम्पत्तिसुख-लाभ, भ्रातृसुख मिले, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष कुछ अशुभ, कारोबार ठीक न रहे। अग. 21, 22, 30, 31; सितं. 1, 9, 10 अशुभ।

मकर – रक्त-पितविकार, स्त्रीसुख, धन-सम्पत्तिसुख, मित्र-बन्धु से चिंता रहे, संतानपक्ष से अशुभ समाचार, कारोबार में रद्दोबदल। अग. 23, 24; सितं. 2, 3, 11, 12 अशुभ।

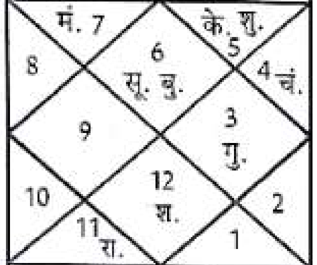
कुम्भ – स्वास्थ्य ठीक न रहे, धनहानिभय, मित्र-बन्धु से चिंता, सम्पत्ति-सम्बन्धी विवाद सुलझें, संतानपक्ष कुछ शुभ, रोगभय, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख। अग. 16, 17, 18, 25, 26, 27; सितं. 4, 5, 13, 14 अशुभ।

मीन – स्वास्थ्य ठीक न रहे, घरेलू झगड़े/वृथा व्यय हो, मित्र-बन्धु से सहयोग, संतानसुख, शनि-मंगल का दान करें। स्त्रीसुख-चिंता, कारोबार ठीक। अग. 19, 20, 28, 29; सितं. 6, 7, 8, 15 अशुभ।

आश्विन मास

कन्या संक्रान्ति – वर्षभर कन्या राशि पर शनि की दृष्टि एवं इस समय सूर्य के साथ शनि का समसप्तकयोग बना रहेगा। अतः अकारण मानसिक तनाव, चिन्ता एवं शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लगभग 30 सितं. को बुध के उदय होने से कारोबार की अड़चनें दूर होंगी। 2 अक्तूबर तक बुध की कन्या राशि में स्थिति मान-सम्मान की वृद्धि एवं धनलाभ के योग भी बनाएगी। 16 अक्तूबर तक सूर्य-बुध पर शनि की दृष्टि समस्यात्मक रहेगी। लेकिन गुरु केंद्र में स्थित होने से शनि हतप्रभ रहेगा, अतः सहयोगियों की मदद से मनोबल बना रहेगा। द्वितीयेश शुक्र व्ययस्थान में सखल होने से वृथा व्यय हो, लेकिन द्वितीयस्थ मंगल पर गुरुदृष्टि से लाभ के साधन बनते रहेंगे।

आश्विनसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



कन्यासंक्रान्ति-प्रवेशकाल
16/17 सितं., सन् 2025 ई.,
1 घं. 47 मि. (I.S.T.)

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष- पित्तविकार, शत्रु कमजोर, रोगभय, धनलाभ, नेत्रकष्ट, पराक्रम बढ़े, सम्पदालाभ, स्त्रीसुख में कमी, संतानपक्ष ठीक-ठीक रहे, कारोबार कमजोर। सितं. 17, 18, 27, 28; अक्तू. 6, 7, 14, 15, 16 अशुभ।

वृष - पारिवारिक सौहार्द, धनलाभ, भ्रातृपक्ष से लाभ, सम्पदा-सुख, संतानसुख, शत्रु हतप्रभ, स्त्रीसुख में कमी, कारोबार में लाभ। सितं. 19, 20, 21, 29, 30; अक्तू. 1, 8, 9 अशुभ।

मिथुन - सेहत ठीक, धनलाभ, भातृसुख में कमी, स्थिर सम्पत्ति-लाभ, सन्तानपक्ष से चिंता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। सितं. 22, 23; अक्तू. 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कर्क - नेत्रकष्ट, आय एवं व्यय बराबर, बन्धुसुख, सम्पत्ति-सुख में उलझनें, सन्तानपक्ष ठीक, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। सितं. 16, 24, 25, 26, अक्तू. 4, 5, 12, 13 अशुभ।

सिंह - सेहत गड़बड़, घरेलू झगड़े सुलझें, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ, संतानसुख, स्त्रीपक्ष से अनबन, कारोबर में हानिभय। सितं. 17, 18, 27, 28; अक्तू. 6, 7, 14, 15, 16 अशुभ।

कन्या - पेट में गड़बड, मन खुश, धनहानि, मित्र-बन्धु का सहयोग ठीक-ठीक, संतानपक्ष से चिन्ता, शत्रु-रोगभय, कारोबार ठीक। सितं. 19, 20, 21, 29, 30; अक्तू. 1, 8, 9 अशुभ।

तुला - सेहत गड़बड़, मानसिक परेशानी, धन व परिवार-सुख, भ्रातृपक्ष से सहयोग मिले, संतानपक्ष से चिन्ता, मित्रों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। सितं. 22, 23; अक्तू. 2, 3, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक - सेहत गड़बड़, आय-व्यय बराबर, भ्रातृसुख, सम्पत्ति-विवाद सुलझें, संतान पर खर्च, स्त्रीपक्ष से हानि, राजपक्ष शुभ। सितं. 16, 24, 25, 26; अक्तू. 4, 5, 12, 13 अशुभ।

धनु - सेहत ठीक, स्त्रीसुख, शनि का दान करें। धन-सम्पत्तिलाभ, संतानपक्ष शुभ, कारोबार ठीक, भ्रातृकष्ट। सितं. 17, 18, 27, 28, अक्तू. 6, 7, 14, 15, 16 अशुभ

मकर - स्वास्थ्य ठीक, धनहानि, मित्र-बन्धु से परेशानी, सम्पदा-हानिभय, संतान पक्ष अशुभ, कारोबर में प्रगति, स्त्रीपक्ष शुभ। सितं. 19, 20, 21, 29, 30; अक्तू. 1, 8, 9 अशुभ।

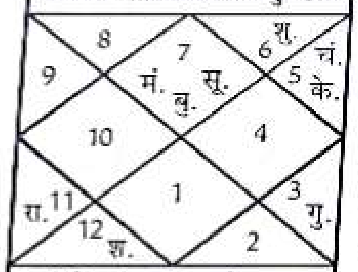
कुम्भ - स्वास्थ्य कमजोर, मानसिक कष्ट, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। सितं. 22, 23; अक्तू. 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मीन - सेहत ठीक न रहे, धन-सम्पत्तिसुख, परिवारसुख ठीक, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, मातृ-पितृसुख, स्त्रीपक्ष से कुछ चिंता, कारोबार ठीक। सितं. 16, 24, 25, 26; अक्तू. 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कार्त्तिक मास

तुला संक्रान्ति–वर्षारम्भ से 18 अक्तूबर तक गुरु की इस राशि पर विशेष दृष्टि होने से कारोबार में एवं निजीजनों के साथ उलझनों में कमी करे। विरोधी ग्रुप प्रबल रहें। बुध–सूर्य पर गुरु की दृष्टि होने से परिस्थितियों में सुधार संभव है। शुक्र–शनि का समसप्तकयोग सेहत में खराबी एवं मासमध्य में विपरीत परिस्थिति बना सकता है। कुम्भस्थ राहु सन्तानपक्ष से परेशानी बनाने वाला रहेगा।

कार्तिक-संक्रान्तिकालीन कुण्डली



कार्तिकसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
17 अक्तूबर, 2025 ई.,
13 घं. 46 मि. (I.S.T.)

कार्त्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष – रक्त–पित्तविकार, आर्थिक स्थिति कमजोर, भ्रातृसुख, सम्पत्तिहानि, संतानपक्ष से चिन्ता रहे, शत्रुओं से हानि सम्भव, स्त्री/पतिसुख में कमी, कारोबार ठीक न रहे। अक्तू. 24, 25; नवं. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

वृष – स्वास्थ्य की चिंता, नेत्रकष्ट सम्भव, धनलाभ ठीक–ठीक, मित्र–बन्धुसुख अस्थिर, सम्पदा–लाभ, सन्तानपक्ष से चिंता, शत्रु कमजोर, स्त्रीपीड़ा, कारोबार में लाभ। अक्तू. 17, 18, 26, 27, 28, नवं. 5, 6, 13, 14 अशुभ।

मिथुन – स्वास्थ्य ठीक, क्रोध बढ़े, धन–हानिभय, भ्रातृकष्ट, सम्पदा–सुख, कारोबार में प्रगति, स्त्रीसुख, सन्तानपक्ष से चिंता। अक्तू. 19, 20, 29, 30; नवं. 7, 8, 15 अशुभ।

कर्क – नेत्रकष्ट, घरेलू झगड़े, मित्र–बन्धुसुख में कमी, सन्तानपक्ष शुभ रहे, स्त्रीपक्ष से सुख मिले, शत्रु दबे रहें, कारोबार में कुछ रुकावट। अक्तू. 21, 22, 23, 31; नवं. 1, 9, 10 अशुभ।

सिंह – शरीरकष्ट, उदरविकार, धनलाभ होकर हानि हो, परिवार सुख में कमी, भ्रातृसुख में कमी, सम्पत्ति–हानि, संतानपक्ष शुभ, कारोबार कमजोर। अक्तू. 24, 25; नवं. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

कन्या – सेहत गड़बड़, धनहानि, परिवार सुख में कमी, मित्र–बन्धु सुख ठीक–ठीक, स्त्रीपक्ष से हानि, संतानपक्ष शुभ, रोग व शत्रुभय, कारोबार ठीक। अक्तू. 17, 18, 26, 27, 28; नवं. 5, 6, 13, 14 अशुभ।

तुला – सेहत गड़बड़, आर्थिक स्थिति सुधरे, भ्रातृसुख ठीक, सम्पदालाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रुपक्ष कमजोर, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। अक्तू. 19, 20, 29, 30; नवं. 7, 8, 15 अशुभ।

वृश्चिक – सेहत ठीक न रहे, धन व परिवार का सुख मिले, स्थिर सम्पत्ति–विवाद, संतानपक्ष की चिंता, शुभ समाचार, रोगभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट। अक्तू. 21, 22, 23, 31; नवं. 1, 9, 10 अशुभ।

धनु – स्वास्थ्य–सुख शुभ रहे, धन–सम्पत्ति से सुख–लाभ, बन्धुसुख, सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष से सहयोग, कारोबार में प्रगति। अक्तू. 24, 25; नवं. 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

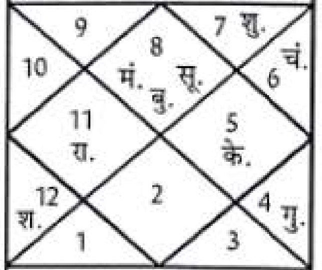
मकर – स्वास्थ्य ठीक रहे, घरेलू झंझट, धनहानि, मित्र–बन्धुकष्ट, संतानपक्ष अशुभ, शत्रु दबे रहें, स्त्रीसुख ठीक–ठीक, कारोबार कमजोर। अक्तू. 17, 18, 26, 27, 28; नवं. 5, 6, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ – उदरविकार, धन व परिवारसुख–लाभ, लेकिन चिंता भी, भ्रातृसुख, पराक्रम बना रहे, सम्पदा–सुख, संतानपक्ष कुछ शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। अक्तू. 19, 20, 29, 30; नवं. 7, 8, 15 अशुभ।

मीन – स्वास्थ्य ठीक न रहे, पारिवारिक कलह से बचें, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख में कमी, सम्पदालाभ, संतानपक्ष अशुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। अक्तू. 21, 22, 23, 31; नवं. 1, 9, 10 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

मार्गशीर्षसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



मार्गशीर्षसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
16 नवं., 2025 ई.,
13 घं. 37 मि. (I.S.T.)

वृश्चिक संक्रान्ति – वृश्चिक-राशीश मंगल एवं सूर्य-बुध पर गुरु की दृष्टि राजकीय कार्यों में सफलता प्रदान करे एवं मानसिक परेशानियों से मुक्ति भी प्रदान करेगी। संक्रान्ति से पहले ही लगभग 10 नवं. को बुध एवं 12 नवं. को गुरु वक्री हो रहे हैं, जोकि मानसिक परेशानी, वृथा विवाद एवं स्वास्थ्य-सम्बन्धित परेशानियों के सूचक हैं। 5वें मौजूद शनि पर गुरु की दृष्टि सन्तानपक्ष की परेशानी की निवारक मालूम देती है। लेकिन गु. वक्री गति से चल रहा है; अत: प्रगति में बाधक स्थिति बन सकती है।

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष – पित्त-वायुविकार, धनलाभ, लेकिन खर्च विशेष, बन्धुसुख की कमी, पराक्रम-हानि, माता-पिता को कष्ट, संतानपक्ष से चिंता, शत्रुप्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़। नवं. 20, 21, 22, 30; दिसं. 1, 8, 9, अशुभ।

वृष – सेहत ठीक, आय-व्यय ठीक-ठीक, बन्धुसुख, सम्पदासुख, संतानपक्ष ठीक-ठीक, स्त्रीपक्ष से हानि, कारोबार में लाभ। नवं. 23, 24; दिसं. 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मिथुन – शरीरकष्ट, ब्लड प्रैशर, घरेलू सुख, मित्र-बन्धु का सहयोग न मिले, सम्पदा-सुख, संतान एवं शुभकार्य पर खर्च, स्त्रीसुख-लाभ। नवं. 16, 17, 25, 26, 27; दिसं. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

कर्क – सेहत ठीक, धन व परिवार का सुख ठीक-ठीक, बन्धुसुख, संतानपक्ष ठीक, सम्पदालाभ, स्त्रीसुख, कारोबार में प्रगति। नवं. 18, 19, 28, 29; दिसं. 6, 7 अशुभ।

सिंह – सेहत ठीक, धनलाभ, भ्रातृसुख, पराक्रम बढ़े, सम्पदा मिले, संतानपक्ष शुभ ही रहे, स्त्रीपक्ष से सुख में कमी, कारोबार में प्रगति। नवं. 20, 21, 22, 30; दिसं. 1, 8, 9 अशुभ।

कन्या – सेहत ठीक, धन-सम्पत्तिलाभ, सुखलाभ, बन्धुसुख, संतानपक्ष शुभ, वृथाव्यय, स्त्रीपक्ष अशुभ, कारोबार ठीक-ठीक। नवं. 23, 24; दिसं. 2, 3, 10, 11 अशुभ।

तुला – सेहत ठीक रहे, धन-हानिभय, मित्र-बन्धुसुख, स्थिर सम्पदा-विवाद, योजनाओं में असफलता, संतानपक्ष की चिंता, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार की चिन्ता। नवं. 16, 17, 25, 26, 27; दिसं. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक – स्वास्थ्य ठीक, सद्व्यय हो, बन्धुसुख ठीक, स्त्री एवं संतानपक्ष शुभ, कारोबार में उन्नति। नवं. 18, 19, 28, 29; दिसं. 6, 7 अशुभ।

धनु – सेहत ठीक रहे, घरेलू झंझट सुलझें, मित्र-बन्धु का सहयोग मिले, संतानकष्ट, स्त्रीसुख में कमी, शुभकार्य सम्पन्न हों, कारोबार ठीक न रहे। नवं. 20, 21, 22, 30; दिसं. 1, 8, 9 अशुभ।

मकर – उदरविकार, परिवारसुख में कमी, बन्धुसुख, स्थिर सम्पदा-विवाद, संतानपक्ष शुभ, शत्रु-हानिभय, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। नवं. 23, 24; दिसं. 2, 3, 10, 11 अशुभ।

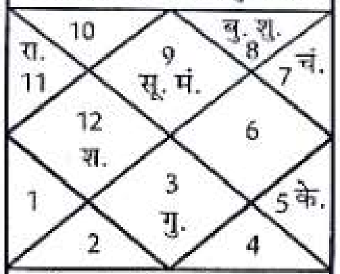
कुम्भ – सेहत ठीक न रहे, धन-सम्पत्तिलाभ में अस्थिरता, बन्धुसुख, पराक्रम बढ़े, संतानपक्ष ठीक, स्त्रीसुख में कमी, धर्म-कर्म में मन लगे। नवं. 16, 17, 25, 26, 27; दिसं. 4, 5, 12, 13, 14 अशुभ।

मीन – सेहत ठीक ही रहे, पारिवारिक कलह का निदान हो, *भ्रातृपक्ष से लाभ, मातृकष्ट, योजना सफल, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। नवं. 18, 19, 28, 29; दिसं. 6, 7 अशुभ।*

पौष मास

धनु संक्रान्ति – 2025 ई. दिसं. के शुरु से गुरु की दृष्टि पुनः धनु राशि पर बनी है। विपरीत परिस्थितियों में भी कठिन कार्य बनेंगे। घर में धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। परिवार की शुभ कर्म में प्रवृत्ति रहेगी। राजकीय कार्यों एवं जीवन में महत्त्वपूर्ण कार्यों में सफलता के योग बनेंगे। लग्नस्थ सूर्य-मंगल पर शनि की दृष्टि होने से यात्रा में धनहानि किंवा चोटभय का योग बनता है। मंगल की शनि पर दृष्टि निजीलोगों से अनबन एवं सम्बन्धों में कटुता ला सकती है। किसी परम्परा-विरोधी व्यक्ति से भेंट होगी, सावधान रहें। पीला पुखराज 5 रत्ती वीरवार के दिन गंगाजल-दूध से धोकर तर्जनी अंगुली में धारण करें।

पौषसंक्रान्ति-कालीन कुण्डली



पौषसंक्रान्ति-प्रवेशकाल 15/16 दिसं., 2025 ई., 4 घं. 20 मि. (I.S.T.).

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष – स्थान-परिवर्तन की योजना बने, कारोबार में हानि, धनलाभ होकर हानि, बन्धुकष्ट, सम्पदाहानि, सन्तानपक्ष कुछ शुभ, स्त्रीसुख। दिसं. 17, 18, 19, 27, 28, जन. 4, 5, 6 अशुभ।

वृष – सेहत ठीक रहे, घरेलू झंझट सुलझें, मित्र-बन्धु का सहयोग कम मिले, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीपक्ष शुभ, लेकिन चिंता भी रहे, शुभकार्यों पर खर्च, कारोबार में उथल-पुथल। दिसं. 20, 21, 29, 30, जन. 7, 8, अशुभ।

मिथुन – सिर व नेत्रकष्ट, क्रोध बढ़े, धन व परिवारसुख, बन्धुसुख, संतानपक्ष का सुख ठीक-ठीक, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। दिसं. 22, 23, 24, 31; जन. 1, 9, 10 अशुभ।

कर्क – सेहत गड़बड़, वृथाव्यय, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ में कमी, माता का सुख ठीक, स्त्रीपक्ष से लाभ, योजना असफल, कारोबार में चिंता। दिसं. 15, 16, 25, 26; जन. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

सिंह – सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, मित्रबन्धु-सहयोग, संतानपक्ष ठीक, शत्रु दबे रहें, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार ठीक। दिसं. 17, 18, 19, 27, 28; जन. 4, 5, 6 अशुभ।

कन्या – सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन-सहयोग, स्थिर सम्पत्ति-लाभ, संतान पक्ष से सुख, योजना सफल, स्त्रीकष्ट, कारोबार में परेशानी सम्भव। दिसं. 20, 21, 29, 30; जन. 7, 8, अशुभ।

तुला – सेहत ठीक रहे, धनसम्पत्ति-सुख-लाभ, बन्धुसुख, संतानपक्ष अशुभ, शत्रु कमजोर, स्त्रीसुख, कारोबार में प्रगति। दिसं. 22, 23, 24, 31; जन. 1, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक – स्वास्थ्य ठीक रहे, घरेलू झगड़े, मित्र-बन्धु-सहयोग, स्त्रीपक्ष से लाभ, संतानकष्ट, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार में रद्दोबदल। दिसं. 15, 16, 25, 26; जन. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

धनु – सेहत गड़बड़, पर उपचार से शुभ, धनलाभ, भ्रातृपक्ष से हानि, स्थिर सम्पत्ति-विवाद, योजना में सफलता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में कुछ हानि। दिसं. 17, 18, 19, 27, 28; जन. 4, 5, 6 अशुभ।

मकर – सेहत ठीक, नई योजना की सफलता से धन-सम्पत्तिलाभ, बन्धुकष्ट, शत्रुपक्ष कमजोर, स्त्रीसुखलाभ, कारोबार में विशेष प्रगति व सम्मान। दिसं. 20, 21, 29, 30; जन. 7, 8 अशुभ।

कुम्भ – सेहत गड़बड़, पारिवारिक कलह, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख में कमी, कारोबार ठीक रहे। दिसं. 22, 23, 24, 31; जन. 1, 9, 10 अशुभ।

मीन – सेहत कुछ गड़बड़, वायुविकार, धनलाभ, बन्धुसुख, स्थिर सम्पत्ति-लाभ, सन्तानपक्ष से चिंता, स्त्रीसुख, कारोबार में सुधार। दिसं. 15, 16, 25, 26; जन. 2, 3, 11, 12, 13 अशुभ।

चैत्र मास

मीन संक्रान्ति - वर्षभर इस राशि में शनि की स्थिति एवं यहां सूर्य-शनि का योग प्रगतिशील कार्यों में रुकावटें करेगा। आर्थिक संकट एवं निजीजनों से वैमनस्य रहे। धन के अपव्यय किंवा शारीरिक कष्ट से परेशानी संभव है। 14 मार्च से सूर्य इस राशि में आकर स्थिति को खराब करेगा। लेकिन 11 मार्च, 2026 ई. को गुरु मार्गी होकर हालात को ठीक करेगा। व्यय स्थान में मंगल-राहु का योग-नेत्रकष्ट किंवा रोगभय कारक है। पारिवारिक जीवन में कुछ परिवर्तन संभव है। ग्रहस्थिति चुनौतियों का सामना करने का संकेत देती है।

मीनसंक्रान्ति कालीन ग्रहस्थिति



मीनसंक्रान्ति-प्रवेशकाल
14/15 मार्च, 2026 ई.,
1 घं. 02 मि. (I.S.T.)

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

मेष - सेहत ठीक-ठीक, धन व परिवार का सुख गड़बड़, निजीजनों से मेल हो, सम्पदा-हानि, सन्तानपक्ष अशुभ, शत्रुभय, स्त्रीसुख में कमी, कारोबार में गड़बड़। मार्च 19, 20, 27, 28, 29; अप्रै. 6, 7 अशुभ।

वृष - सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन-हानि, सन्तति-सुख, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार में गड़बड़। मार्च 21, 22, 30, 31 अप्रै. 8, 9, 10 अशुभ।

मिथुन - स्वास्थ्य ठीक, धनलाभ में कमी, खर्च विशेष हो, निजीजन-सुख, सम्पदा-सुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 14, 15, 16, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 11, 12 अशुभ।

कर्क - सेहत ठीक, धन व सम्पदा-हानि, बन्धुकष्ट, कारोबार में हानि व सम्मान-हानि, स्त्रीसुख। मार्च 17, 18, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 13 अशुभ।

सिंह - सेहत गड़बड़, घरेलू झंझट, निजीजन-असहयोग, सम्पदा-सुख, सन्तानसुख ठीक, स्त्रीपक्ष अशुभ, कारोबार में गड़बड़। मार्च 19, 20, 27, 28, 29; अप्रै. 6, 7 अशुभ।

कन्या - उदरविकार, धन व परिवार-सुख, बन्धुसुख की कमी, सम्पदा मिले, सन्तानसुख की कमी, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक ही रहे। मार्च 21, 22, 30, 31; अप्रै. 8, 9, 10 अशुभ।

तुला - सेहत गड़बड़, मन प्रसन्न न रहे, धन एवं सम्पदासुख-लाभ, निजीजन-सहयोग न मिले, सन्तानपक्ष अशुभ, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार सामान्य। मार्च 14, 15, 16, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 11, 12 अशुभ।

वृश्चिक - सेहत ठीक, धनलाभ, पराक्रम बना रहे, सम्मानसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में हानिभय। मार्च 17, 18, 25, 26; अप्रैल 3, 4, 5, 13 अशुभ।

धनु - सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन-सहयोग, स्थिर सम्पत्ति-सुख, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रुप्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार की चिन्ता। मार्च 19, 20, 27, 28, 29; अप्रै. 6, 7 अशुभ।

मकर - वायुविकार, धनहानि, भ्रातृकष्ट, सम्पत्ति-विवाद सुलझें, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में तरक्की। मार्च 21, 22, 30, 31; अप्रै. 8, 9, 10 अशुभ।

कुम्भ - सेहत खराब, घरेलू झगड़े, निजीलोगों से मेल, सम्पदालाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। मार्च 14, 15, 16, 23, 24; अप्रै. 1, 2, 11, 12 अशुभ।

मीन - सेहत गड़बड़, उदरविकार, धनहानि, भ्रातृसुख ठीक-ठीक, सम्पदा-लाभ, सन्ततिसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। मार्च 17, 18, 25, 26; अप्रै. 3, 4, 5, 13 अशुभ।

अथ वर्षराजादि-फलादेश (संवत् २०८२ वि.)

(सन् २०२५-२६ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९१२६, सृष्टिसंवत् १९५५८८५१२६, श्रीविक्रम संवत् २०८२, शक संवत् १९४७, श्रीकृष्ण जन्मसंवत् ५२६१, कलिसंवत् ५१२६, सप्तर्षि संवत् ५१०१, श्री जैन महावीर निर्वाण संवत् २५५०-५१, श्रीबुद्ध संवत् २६४७-४८, हिज़री सन् १४४६-४७, फसली सन् १४३२-३३, ईसवी सन् २०२५-२६।

वर्षारम्भ में '**रुद्रविंशति**' का '**सिद्धार्थी**' संवत्सर है। **ध्यान रहे कि**- यह '**सिद्धार्थी**' संवत्सर १५ मार्च, २०२५ से १० मार्च, २०२६ ई. तक प्रभावी रहेगा। तदनन्तर २०२७ ई. ७ मार्च तक '**रौद्र**' नामक संवत्सर चलेगा। **ध्यान रहे**- संवत् २०८२ वि. में '**सिद्धार्थी**' संवत्सर को ही संकल्प में उच्चारण करना होगा।

संहिताग्रन्थ के अनुसार '**सिद्धार्थी**' संवत्सर का फल इसप्रकार लिखा है-

''तोयपूर्णाः भवेन्मेघाः बहुसस्या च मेदिनी।
सुखिनः पार्थिवाः सर्वे सिद्धार्थे वर-वर्णिनि।।''

अर्थात्- '**सिद्धार्थी**' संवत्सर में वर्षा अच्छी होगी, धान्यादि की उपज अच्छी होगी। शासन किंवा राजनैतिक स्थिरता बनी रहेगी।

किञ्च – कुछ प्रान्तों में अधिक जलवर्षण से जलाप्लाव की स्थिति भी संभव है। देश की प्रगति से शासक प्रसन्न रहें। धान्यादि (जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं) की उपलब्धता पर्याप्त हो।

'**वर्षप्रबोध**' ग्रंथानुसार **सिद्धार्थी** संवत्सर का फल इसप्रकार है:-

''सिद्धार्थे रविः स्वामी, सुभिक्षं सर्वदेशे, वसतिर्बहुला, अन्नविक्रयः, चैत्रे वैशाखे लोकपीड़ा, ज्येष्ठाषाढयोरुद्दण्ड-वायुः, श्रावणे दिनत्रये महावर्षणम्, सर्वान्न-महर्घता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, आश्विनेऽन्नसमता, कार्त्तिके धान्यनिष्पत्तिर्बहुला, मार्गादि-मासचतुष्टयमन्नं सारं सर्वत्र ग्राहकता उत्पातः क्वचिद्राज-विरोधो लोकसुखमश्वमूल्य-महर्घता स्यादिति।।''

संक्षेप में- चैत्र-वैशाख में जनता में रोगादि से परेशानी रहे, ज्येष्ठ-आषाढ़ में प्राकृतिक प्रकोप, श्रावण में भयंकर वर्षा से हानि, लेकिन राजनीतिज्ञों में परस्पर तालमेल रहे, परंतु मंहगाई से जनता परेशान रहे।

संवत् २०८२ वि. में राजा-मन्त्री आदि विचार-

सं. २०८२ वि. का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) सूर्य हैं। इस संवत् का मन्त्री भी सूर्य है। सस्येश बुध, धान्येश चन्द्र, मेघेश सूर्य, रसेश शुक्र, नीरसेश बुध, फलेश शनि, धनेश मंगल एवं दुर्गेश शनि हैं। ये सभी स्वभाव, राशिस्थिति आदि से वर्ष की कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं।

संवत्सर २०८२ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इसप्रकार है-

(१) राजा सूर्य का फल-

''सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीड़ा।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्नि-बाधा निधनं नृपाणाम्।।''

अर्थात् – वर्षा कम होने से फलादि कम हों, दुग्धादि रसपदार्थ कम हों, जनता में रोगादि से कष्ट हो, अन्नादि धान्य कम हों, चोरी किंवा प्राकृतिक उत्पात, अग्निकाण्ड, तूफान आदि से जन-धनहानि हो। राजनीतिज्ञों को कष्ट किंवा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति (राजनीतिज्ञ) के निधन से शोक व्याप्त हो।

यवनेश्वर मतानुसार सूर्य वर्षेश होने पर नेत्ररोग, संक्रामक रोग, अग्निकाण्ड, विष या रसायन-विस्फोट भय करता है। **समाससंहिता** में स्वयं आचार्य ने इस वर्ष में चोरी, डकैती, राहजनी ठगी आदि की वृद्धि भी मानी है-

''तीक्ष्णोऽर्कः स्वल्पसस्यश्च गतमेद्योऽतितस्करः।
बहुरोगव्याधिगणो भास्कराब्दो रणाकुलः।।'' -(समाससंहिता)

सं. २०८२ वि. में सूर्य ही मन्त्री है।

(२) मन्त्री सूर्य का फल

"नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचुर-धान्य-धनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः।।"

अर्थात् – फल-फूलादि की कमी रहे, सम्पूर्ण विश्व में फसलों की पैदावार कम हो, जनता रोग किंवा चौरादि से परेशान रहे। जन-जीवनोपयोगी वस्तुएं सहज उपलब्ध न हों, अग्निकाण्ड आदि से हानि के योग भी बनें। शासकगण परेशान रहें एवं किसी व्यक्ति की हानि (निधन) का भी भय है।

(३) सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) बुध का फल –

"जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुख-समृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणाः स्तुति-पाठरताः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने।।"

अर्थात् – वर्षा अधिक हो, अनेकत्र जलाप्लाव की स्थिति बने। देश में सुख-समृद्धि का माहौल रहे। सामाजिक स्थिति शान्तिपूर्ण रहे। बुद्धिजीवियों द्वारा शासकदल प्रशंसनीय रहें।

(४) धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) चन्द्र का फल –

"चन्द्रे धान्याधिपे जाते तोयपूर्णा वसुन्धरा।
वर्धन्ते सर्व-सस्यानि राजते विविधोत्सवैः।।"

अर्थात् – चन्द्र के धान्येश होने पर वर्षा पर्याप्त हो। धरती पर जल की स्थिति अच्छी रहे। फसलों की पैदावार अच्छी हो, लोग (जनता) में उत्साह (हर्षोल्लास) रहता है।

(५) मेघेश (मौसम-वर्षा-पानी के स्वामी) सूर्य का फल–

"रवौ मेघाधिपे जाते स्वल्प-तोयप्रदा घनाः।
स्वल्पो धान्योद्भवो लोके भयाडम्बर-पीड़नम्।।"

अर्थात् – सूर्य के मेघेश होने से अनेकत्र वर्षा की कमी से अनाज की पैदावार कम होगी। दुर्भिक्ष की स्थिति संभव है। जनता में अराजकता जैसी स्थिति होने से खलबली, भय, ढोंग व पाखण्ड बढ़ेगा।

(६) रसेश (गुड़-खाण्ड-रसकस आदि के स्वामी) शुक्र का फल–

"भृगुसुते रसनायकतां गते जनपदा जलशोषित-मानसाः।
सुख-सुभिक्ष-प्रमोदवती धरा धरणिपा नर-पालन-तत्पराः।।"

अर्थात् – शुक्र रसेश हो तो अच्छी वर्षा के कारण लोगों में संतोष, सुख एवं सुभिक्ष रहता है। शासक देश की व्यवस्था एवं नर-सन्तोषार्थ अच्छी व्यवस्था का अनुसरण करें।

(७) नीरसेश (सर्वविध धातु एवं व्यापार के स्वामी) बुध का फल–

"चित्र-वस्त्रादिकं चैव शंख-चन्दन-हाटकाः।
महर्घाः सन्ति वर्षे च नीरसेशो बुधो यदा।।"

अर्थात् – जिस वर्ष बुध नीरसेश हो तो उस वर्ष रंगीन व फैशन के कपड़े, शंख-चन्दन, सोना आदि पदार्थ महंगे होते हैं।

(८) फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) शनि का फल–

"अथ शनौ फलपे कलहो भवेत् वनज-पादप-पुष्पगणो घनः।
अपि च दुष्टकृतादिजं भयं जनपदा जनराशि-समाकुलाः।।"

अर्थात् – शनि फलेश हो तो लोगों में आपसी कलह रहे। जंगली पेड़ों व फूलों की अधिकता, दुष्टों से अराजकता किंवा सामान्यजनों को भय रहे। शहरों में जनसंख्या की वृद्धि हो।

(९) धनेश (धन-दौलत एवं खजाना के मालिक) मंगल का फल–

"धरणिपे धन-नायकतां गते शरदि ताम्रकरास्तुष-धान्यहा।
सकलदेश्य-जनाश्चलितास्तदा नरपतिर्नरशोक-विधायकाः।।"

अर्थात् – मंगल धनपति हो तो माघ (शरद ऋतु) में मीठी धूप पड़ते रहने किंवा वर्षा के अभाव से गेहूं आदि भूसे से पैदा होने वाले सभी अनाजों की उपज कम होगी। सारे देश में अस्थिरता का वातावरण रहे। शासक जनता से हितकारी व्यवहार न करें।

(१०) दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) शनि का फल-

''रविसुतो यदि दुर्गपतिर्भवेत् सकलदेश-जनाश्चलितास्तदा।
विविध-वैर-विशेषित-नागराः कृषिधनं लभते न जनः क्वचित्।।''

अर्थात् – शनि दुर्गेश हो तो सर्वत्र अराजकता किंवा सारे देश में अस्थिरता रहे। जनता में परस्पर वैरभाव रहे। प्राकृतिक प्रकोप किंवा दुर्भिक्ष आदि से कृषिकार्य दुःखद रहें एवं फसलों की स्थिति अच्छी न रहे।

नोट– यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः राजा का फल कश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; मन्त्री का फल आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में; सस्येश का पौण्ड्र, विदर्भ में; धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; मेघेश का मगध एवं बंगाल में; रसेश का कोंकण एवं गोवा में; नीरसेश का मालवा व बिहार में; धनेश का राजस्थान एवं बाड़मेर में; फलेश, दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षा आदि के विश्वामान

वर्षा-विश्वा ११, धान्य ११, तृण ५, शीत १३, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, धर्म ५, सत्य ३, निष्पत्ति-सिद्धि ११, क्षुधा ९, तृषा १५, निद्रा १५, आलस्य १५, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप १५, पुण्य ५, व्याधि ५, व्याधिनाश ५, आचार ३, अनाचार ९, मृत्यु ७, जन्म १७, देशोपद्रव ७, देशस्वास्थ्य १३, चौर ३, चौरनाश १३, अग्नि ११, अग्निशान्ति १५, उद्भिज्ज ११, जरायुज ३, अण्डज ७, स्वेदज ११, टिड्डी ९, तोता १३, मूषक १५, सोना ११, तांबा १५, स्वचक्र ९, परचक्र १५, वृष्टि १७, वृष्टिनाश ११ एवं कर्कसंक्रान्ति बुधवारी होने से संवत्-विश्वा १२ हैं।

वर्षा-विचारार्थ चतुर्मेघ-विचार

ध्यान रहे कि– मेघविचारणा में चतुर्मेघ-चिन्तन का अधिक महत्त्व है।

''आवर्तकादि चतुर्मेघों में इस संवत् (२०८२) में 'संवर्त' नामक मेघ है।

फल– ''संवर्ते वायुपीडनम्।''

अर्थात् – इस वर्ष '**संवर्त**' मेघ होने से वर्षा-वायुवेग आदि किंवा अनेकत्र तूफान से हानि संभव है। ''**संवर्ते जलपूरणम्**''- प्रमाणानुसार कुछ प्रान्तों में अधिक जलवर्षण से खड़ी फसलों को हानि एवं जनजीवन को परेशानी हो।

नवमेघ-विचार – इस संवत् में नवमेघों में '**नील**' नामक मेघ है। **फल-** दुग्धादि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। रुई, कपास की फसल अच्छी हो। वर्षा पर्याप्त हो-

''नील नाम्नि जलदे जलवृष्टिर्जायते।''
सकलमानव तुष्टिः........................।।''

संवत् २०८२ वि. में आवह आदि सप्तवायु-विचार

इस संवत् में '**वायुसप्तक**'-विचार से '**प्रवह**' नामक वायु का प्रभाव विश्वभर पर देखा जाएगा।

फल – '**प्रवह**' नामक वायु का प्रभाव उ.प्र., राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र के क्षेत्रों में अनेकत्र भयंकर अतिवर्षण किंवा कुछ भूभाग पर पेयजल की कमी के रूप में दिखाई देगा। हि.प्र., मेघालय किंवा जम्मू-कश्मीर में भूगत '**सीस्मिक वेव्स**' पृथ्वी के भीतर तरंगों को प्रभावित करके हिमस्खलन, समुद्री, तूफान, भूकम्प आदि से जन-जीवन को प्रभावित करे।

अनन्त आदि अष्टनाग-विचार– अनन्तादि अष्टनागों में इस वर्ष '**कर्कट**' नामक नाग है।

फल – अनेक प्रान्तों में वर्षा की कमी से अकाल की स्थिति बनेगी एवं जनता शासकों से खिन्न रहे तथा किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो-

**''यदा कर्कटो नाग जायेत च पवनाशनः।
तदा नाम्बुर्ददातीन्द्रो मरणं स्यान्महीयते।।''**

इस वर्ष समुद्री तूफान किंवा वायुवेग से अनेकत्र हानि हो।

सुबुध्नादि द्वादश नागविचार

इस वर्ष द्वादश नागों में '**वासुकी**' नामक नाग है।

फल – ''उदेति यत्र वत्सरे वासुकिर्भुजंगमः।
प्रभूत-धान्यदायकः सुवृष्टिकारकस्तथा।।''

अर्थात् – इस वर्ष '**वासुकी**' नाग होने से अच्छी वर्षा हो। सभी अनाजों (धान्यों) की फसल अच्छी हो। वासुकी नाग की स्थिति में कृषक-वर्ग प्रसन्न रहें एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता पर्याप्त रहे, जनता सुखी रहे।

संवत् २०८२ वि. का वाहन

इस वर्ष राजा '**सूर्य**' होने से संवत् (समय) का वाहन '**अश्व**' (घोड़ा) है।

फल –

''**राजानो विग्रहं यान्ति वृष्टिनाशो महर्घता।**
भूमिकम्पो भयं घोरं हयारूढ़े तु वत्सरे।।''

अर्थात् – इस संवत् का वाहन '**घोड़ा**' होने से राजनीतिज्ञ दोरंगी चाल चलेंगे। राजनैतिक मतभेद उजागर होंगे, कहीं राजनीतिज्ञों के कलह से सत्ता-परिवर्तन होगा। कुछ प्रान्तों में अवर्षण किंवा अत्यल्प वर्षा से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। भूकम्प एवं प्राकृतिक प्रकोप से अनेकत्र जनधनहानि एवं अराजकता का भय रहे। महंगाई से जनता परेशान रहे।

संवत्सर २०८२ वि. के मर्मस्थल (चतु:स्तम्भ विचार)

(१) जलस्तम्भ-(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ८५.३ प्रतिशत है।

(२) तृणस्तम्भ-(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) १०० प्रतिशत है।

(३) वायुस्तम्भ-(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) १०.७ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ-(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) २१.७ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल-क्षेम-ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं, क्योंकि संपूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी-बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है। इन स्तम्भों को ''वर्ष के मर्मस्थान'' माना जाता है।

(१) जलस्तम्भ – इस वर्ष जलस्तम्भ अर्थात् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन रेवती नक्षत्र का संयोग अधिक होने से यह स्तम्भ प्रबल है। अतः पेयजल की उपलब्धता एवं पर्याप्त वर्षा से अन्नादि पदार्थों की उपलब्धता से जन-जीवन खुशहाल रहे। शासनतन्त्र के प्रति जनता का सहयोग रहे। बहुजल-प्रधान चावलादि प्रचुर मात्रा में उपलबध हों, कृषक जन प्रसन्न रहें।

(२) तृणस्तम्भ -यह स्तंभ इस वर्ष शतप्रतिशत होने से उत्तम है। घास-फूसे में से निकलने वाले प्रमुख अनाज (चावल, गेहूं आदि) पर्याप्त हों। कृषि उपज, वनस्पतियां, जड़ी-बूटियां व अन्य पदार्थों की पैदावार व उपलब्धता खूब हो। पशुचारा फल एवं सब्जियां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगी।

(३) वायुस्तम्भ -इस वर्ष वायुस्तम्भ १०.७ प्रतिशत होने से बहुत क्षीण है। तूफान, बवम्बर किंवा भूकम्प आदि का प्रकोप अधिक रहेगा। अत: भारत व तमाम दक्षिण एशिया तूफान, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप, औद्योगिक गैस-उत्सर्जन आदि से प्रभावित हों एवं हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उड़ीसा, तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि में कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो। क्योंकि पृथ्वी के भीतर सीस्मोग्राफिक (वेवस) वायु से आकाश या शून्य में विद्यमान वायु के साथ जब संघर्ष होता है तो भूगर्भान्तर्गत प्लेटें हिलने से भूकम्प आदि दुर्घटनाएं घटित होती हैं। अत: इस वर्ष वायुस्तम्भ-मात्रा से अधिक क्षीण होने से कुछ प्रान्तों में वायुवेग व तूफान से चिन्तनीय स्थिति बन सकती है।

(४) अन्नस्तम्भ – अन्नस्तम्भ इस वर्ष क्षीण होने से घरेलू-उत्पाद में कमी, खड़ी फसलों की हानि तथा खाद्यान्न की कमी होने से जनता में परेशानी रहे।

निष्कर्ष– इस वर्ष दो स्तम्भ प्रबल होने से देश में समृद्धि एवं सुरक्षा सुव्यवस्थित रहेगी। लेकिन वायुस्तम्भ अधिक क्षीण होने से अनेकत्र वायुवेग से हानि, भूकम्प एवं समुद्री तूफान, पर्वतों के दरकने एवं अग्निकाण्ड आदि से

हानि के योग हैं। सरकार के प्रयत्नों के बावजूद जड़ी-बूटी-औषध-निर्माण एवं अन्न आदि की दृष्टि से देश प्रगतिपथ पर ही रहेगा।

आर्षमान–विचार (सं. २०८२ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) प्रथम आर्ष - वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को रोहिणी नक्षत्र ९४% है।

(२) द्वितीय आर्ष - (गत) संवत् २०८१ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र ८३.३ प्रतिशत है।

(३) तृतीय आर्ष (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ९८.९ प्रतिशत है।

(४) चतुर्थ आर्ष -(कार्त्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) का अभाव है।

नोट– उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, आर्थिक समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध-समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये भी संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।

(१) प्रथम आर्ष - यह रक्षा दुर्ग ९४% होने से पूर्ण सशक्त है। सुरक्षा-व्यवस्था सीमाप्रान्तों पर सुदृढ़ किंवा प्रशंसनीय रहेगी। जम्मू-कश्मीर, पाक, चीन एवं तुर्की आदि देश सीमाओं पर कुचेष्टा नहीं कर पाएंगे। विश्व में शांति, देश में सुख-समृद्धि, कानून-व्यवस्था एवं नैतिक मूल्यांकन से जनजीवन सशक्त रहे।

लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सं. २०८२ वि. के मध्य कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्री तूफान, भयंकर बाढ़, किंवा विस्फोट आदि से हानि के योग हैं। कुछ प्रान्तों में साम्प्रदायिक घटनाओं एवं महामारी के वातावरण से सरकार के लिए चिन्तनीय स्थिति रह सकती है।

(२) द्वितीय आर्ष - (गत संवत् २०८१ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र ८३.३ प्रतिशत है।)

फल – भारत के पूर्व एवं उत्तर दिशा से विरोधी देशों का प्रभाव क्षीण होगा। भारत अपनी गरिमा को यथावत् बनाए रखेगा। जनता में सुख-समृद्धि एवं आरोग्य रहे। जल किंवा वायुजन्य तूफान आदि से हानि न के बराबर रहे। प्राकृतिक आपदाओं से भी भय नहीं रहेगा।

(३) तृतीय आर्ष - इस संवत् में (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ९८.९ प्रतिशत है।

फल – देश-हितार्थ प्रगतिप्रद योजनाएं बनें। केन्द्रीय शासनसत्ता प्रशंसनीय कार्य करती रहे। देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहे एवं चीन, बंगलादेश, पाक आदि सीमाप्रान्त देश भारत की प्रगति से प्रभावित रहें।

(४) चतुर्थ आर्ष - (इस वर्ष कार्त्तिक-पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र का अभाव है)

चतुर्थ आर्ष के इस वर्ष नगण्य होने से सैन्यबल पर आकस्मिक शत्रुकृत प्रहार से हानि संभव है, एतदर्थ सरकार को सैन्यबल को प्रोत्साहित करना पड़ेगा। इस आर्षमानविचार से राजस्थान, तिब्बत-मिज़ोरम, अरुणाचल, नेपाल, कश्मीर आदि में शत्रुदेश से सावधान रहना होगा। उ. खण्ड, बिहार, मेघालय, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम आदि में उग्रवादजन्य गतिविधि एवं हिमस्खलन, भूकम्प आदि से जन-धनहानि का भय है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार स्तम्भचतुष्टय से स्पष्ट है कि-देश में इस संवत् के आरम्भ में एवं अक्तूबर से संवत् के अन्त तक भयंकर प्राकृतिक आपदाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

वर्ष-रक्षाकारक चार दुर्ग (आर्ष) एवं चारों स्तम्भ इस संवत् में देश की प्रगति में राजनैतिक पार्टियों के साहचर्यभाव, सुरक्षित सीमाप्रान्त एवं प्राकृतिक सौहार्दजन्य घटनाओं से भारी प्रगति के संकेत देते हैं, सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

दोहा–

''अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख विनाशै।''

संवत् २०८२ वि. में रोहिणी का वास

(वर्षा एवं जलवायु-विचारार्थ विशेष)

संवत् २०८२ वि. में १३/१४ अप्रैल, सन् २०२५ ई., रविवार / सोमवार को स्वाती नक्षत्र, वज्र योग एवं तुलास्थ चन्द्र के समय वैशाख कृष्ण प्रतिपदा के दिन मेष संक्रान्ति ३ घं. २० मि. पर लगेगी। अत: रोहिणी का वास इस संवत् में तट पर होगा।

रोहिणीवास प्रात:काल होने से देश में राजनैतिक स्थिति में महत्त्वपूर्ण शुभंकर योग बनते हैं।

'मेघ महोदयानुसार' इस वर्ष रोहिणी का वास **'तट'** पर रहेगा। तदनुसार बहुजलीय अन्न चावलादि की फसल अच्छी हो।

'मेघ महोदयानुसार' इस वर्ष रोहिणी का वास **'तट'** पर रहेगा। तदनुसार बहुजलीय अन्न चावलादि की फसल अच्छी हो।

समय (संवत्सर) का वास धोबी के घर रहेगा।

सं. २०८२ वि. में शनि की दृष्टि– वि. सं. २०८२ में सारा संवत् (अर्थात् ३० मार्च, २०२५ ई. से २९ मार्च, २०२६ ई. तक) शनि का संचार मीन राशि में रहेगा। अत: इस संवत् में शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ रहेगी। उत्तरी भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप, समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा चक्रवात आदि से जनधनहानि हो। शनि का मीन राशि में सञ्चार इस वर्ष सभी तेल, तिलहन, पैट्रोल, डीज़ल, क्रूड ऑयल किञ्च धान्य/खाद्य पदार्थ तेज करे।

कहीं प्राकृतिक भूकम्पादि प्रकोप से हानि का योग भी है। मकर नाम राशि वाले देशों एवं राजनीतिज्ञों के लिए शनि–मंगल का सम्बन्ध अशुभ है–

''मीनराशिंगत: सौरिर्वर्षमात्रं तदर्धकम्।
कालिन्द्या उपखण्डे च तत्र धान्य-महर्घता।।''

मीन राशिगत शनि कुछ देशों में परस्पर युद्धात्मक स्थिति बनाएगा–

''शनैश्चर: क्रमात् पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीड़येत्।
दुर्भिक्ष-देशभंगाद्यै: विग्रहो राजविड्वरै।।''

मीनस्थ शनि की वृष, कन्या, धनु राशियों पर दृष्टि रहेगी। अत: इन नाम/जन्मराशि वाले विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी आवश्यक है। भारत के उत्तरी भूभाग, जम्मू-कश्मीर, हि.प्र., पंजाब, हरियाणा, उ. खण्ड एवं उ.प्र., सुदूरस्थ U.S.A., ब्रिटेन, आयरलैंड, जर्मनी, फ्रांस एवं बैल्जियम, इराक, तुर्की, ईरान, रूस, यूक्रेन, इजरायल, फिलस्तीन, यमन आदि देशों में शस्त्रास्त्र-होड़, विचार-वैमत्य से कहीं युद्धाग्नि से विश्वशान्ति भंग होगी।

किञ्च– संवत् २०८२ के प्रारम्भिक दिनों में एवं जुलाई से संवतान्त तक गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार समय सुरक्षा की दृष्टि से भयावह है। सावधान रहें।

संवत् २०८२ वि. में स्नान-दानार्थ विशेष अमावस्याएं–

(१) इस संवत् में सोमवती अमा नहीं है।

(२) भौमवती अमाएं तीन हैं–

(i) ज्येष्ठ (२७ मई, २०२५ ई.)।

(ii) कार्त्तिक (२१ अक्तू., २०२५)।

(iii) फाल्गुन (१७ फर., २०२६ ई.)।

(३) शनैश्चरी अमावस एक ही है।

(i) भाद्रपद (२३ अग., २०२५ ई.)।

भौमवती (मंगलवारी) अमा का माहात्म्य

भौमवती अमा वाले दिन तीर्थस्थान पर पितृतर्पण, अन्न (गुड़, तिल एवं मीठा भोजन) आदि का भण्डारा कराना चाहिए। वस्त्र–कम्बल एवं शैय्यादान भी कराएं। भौमवती अमा के दिन गौशाला में गुड़ एवं अन्नादि का दान करें। मंगल ग्रह का मन्त्रजाप एवं गोपूजन करें। इस दिन लाल वस्त्र दान एवं तीर्थस्थान पर योग्य सच्चरित्र ब्राह्मण को स्वर्णदान करना भी शास्त्रविहित है–

''अमावास्ये भवेद् वारे यदा भूमिसुतस्य वै।
जाह्नवीस्नान-मात्रेण गोसहस्त्र-फलं लभेत।।''

शनैश्चरी अमा का माहात्म्य

'शनैश्चरी अमा' पूर्वजन्म-पापनाशनार्थ एवं ग्रहरोग-शान्त्यर्थ उपयोगी मानी गयी है।

इस दिन तिल, तेल, माह का दान एवं शनिमन्त्र का जाप किंवा तुलादान करना श्रेयस्कर लिखा है।

किञ्च– यदि किसी संवत् में सोमवती–भौमवती किंवा गुरुवारी अमावस भी हो तो यह योगत्रयी '**पुष्कर-योग**' के समान फलप्रद मानी है–

''अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारेऽपि वा भवेत्।
तत्पर्वं 'पुष्करं' नाम सूर्य-पर्व-शताधिकम्।।''

इन पर्वों पर गंगास्नान से सहस्र गायों के दान का फल प्राप्त होता है, ऐसा शास्त्रों में उल्लेख है।

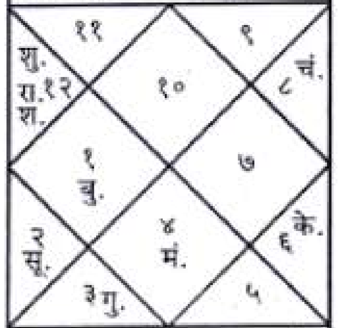
शरत्सस्य जातकविचार

ध्यान रहे– गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, ग्वार, गन्ना, मक्की आदि **''खरीफ फसलों''** को '**शरत्सस्य**' कहा जाता है। शरत्सस्य का विचार वृषस्थ सूर्य से किया जाता है।

शरत् सस्य जातक

संवत् २०८२ वि. में ज्येष्ठ कृष्ण, द्वितीया, बुधवार, तात्कालीन ज्येष्ठा नक्षत्र, शिवयोग एवं वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय १४/१५ मई, सन् २०२५ ई. की मध्यरात्रि ० घं. ११ मि. पर मकर लग्न के समय सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्य जातक कुण्डली



१४/१५ मई, सन् २०२५ ई., ० घं. ११ मि.,

विशेष नोट – सस्यजातक कुण्डलियों में तात्कालिक औदयिक लग्न से फलादेश-विचार उचित नहीं, सस्यजातक-विचारार्थ सूर्य को ही लग्न मानकर विभिन्न भावों के आधार पर फलविचार युक्तियुक्त माना है। अत: सूर्य को लग्न मानकर ही यहां फलप्रतिपादन किया गया है।

फल – शरत्सस्यजातक कुण्डली में शनि की सूर्य पर दृष्टि एवं मंगल नीचस्थ होने से और शनि-राहु का एकराशिसम्बन्ध खरीफ की फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानिकारक रहेगा। लगभग १२ जुलाई, २०२५ ई. से २८ नवं. के लगभग तक शनि की वक्रस्थिति में कृषिकर्म के लिए समय हानिकारक है। २३ फरवरी, २०२६ ई. से संवतान्त तक रा. मं. की स्थिति राजनैतिक दृष्टिकोण से अस्थिरता एवं भयावह स्थिति तथा प्राकृतिक प्रकोप से कष्टपद मालूम देती है–

''राशेर्यस्य क्रूराः पीड़ास्थानेषु संस्थिता बलिनः।
तत्प्रोक्त-द्रव्याणां महर्घता दुर्लभत्वं च।।''

ग्रीष्मसस्य जातकविचार

संवत् २०८२ वि. में मार्गशीर्ष कृष्ण, द्वादशी, रविवार, हस्त नक्षत्र, प्रीतियोग, कन्यास्थ चन्द्र के समय १६ नवम्बर, सन् २०२५ ई. को दिन में १३ घं. ३६ मि. पर कुम्भ लग्न के समय सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

ग्रीष्मसस्य जातक-कुण्डली



१६ नवंबर, सन् २०२५ ई., १३ घं. ३६ मि.,

फल – ग्रीष्मसस्य जातक-कुण्डली में कुम्भस्थ राहु पर मंगल की विशेष दृष्टि है, अत: ग्रीष्मान्न अच्छे होने पर भी कृषकों को निराशा हाथ लगेगी। शनि-चन्द्र का समसप्तक भी अच्छे परिणाम नहीं दर्शाता।

शनि द्वितीय भावस्थ होकर मंगल के साथ नवपंचम-सम्बन्ध बना रहा है। अत: फसलजन्य परिणाम के लिए शुभप्रद नहीं–

''अर्थस्थाने क्रूरः सौम्यैरनीक्षितः प्रथमं जातम्।
सस्यं निहन्ति पश्चादुप्तं निष्पादयेद् व्यक्तम्।।''

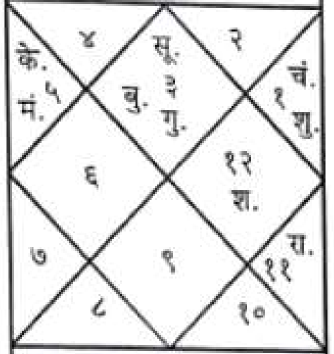
ग्रीष्मसस्य जातक-कुण्डली में वृश्चिक-कुम्भ-मीन में क्रूर ग्रहों की स्थिति भी उपज के चौथाई रह जाने का संकेत देती है–

''अलिप्रवेशे तपनस्य सिंह-कुम्भस्थयोः सौर-महीजयोश्च।
राहौ कुम्भस्थे घट-वृश्चिकस्थे वै ग्रैष्मिकान्नं भुवि शोषमेति।।''

सूर्य का आर्द्राप्रवेश

संवत् २०८२ वि. में २२ जून, सन् २०२५ ई., आषाढ़ कृष्ण द्वादशी, रविवार, भरणी नक्षत्र, सुकर्मा योग एवं मेषस्थ चन्द्र के समय प्रात: ६ घं. १८ मि. पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होंगे।

सूर्य-आर्द्राप्रवेश कुण्डली



२२ जून, सन् २०२५ ई., ६ घं. १८ मि. A.M.,

फल – आर्द्राप्रवेशकुण्डली में मंगल एवं राहु का समसप्तक एवं शनि-मंगल का षडष्टक योग किंवा संवत् २०८२ वि. में शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की ओर रहने से शनि के वक्रकाल में विशेषत: १२ जुलाई से २८ नवं., २०२५ ई. के मध्य एवं १२ नवं. के लगभग गुरु की वक्रावस्था में, ११ मार्च, २०२६ ई. के करीब एवं १४ मार्च, २०२६ ई. से संवत् के अन्त तक शनि-सूर्य का एकराशिसम्बन्ध भयंकर वर्षा, भूकम्प, तूफान, पर्वतों के दरकने किंवा हिमस्खलन आदि विपरीत परिस्थितियों से अनेक प्रांतों में भयावह आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। उल्लिखित समयावधियों में किसी विशिष्ट व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो।

सूर्य क्योंकि रविवार को आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा, अत: जनजीवन के लिए कष्टप्रद ही है–

''रवौ भौमे तथा मन्दे रौद्रभं याति भास्कर:।
तदा न शुभद: प्रोक्त: शुभद: शेष वासरे।।''

शनि के जलराशि में एवं चन्द्र-शुक्र के एकत्र होने से अनेकत्र अनुकूल किंवा समयोचित वर्षा होने से समय शुभ है–

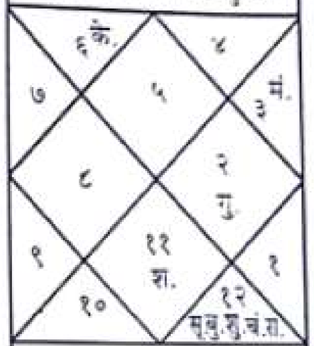
''जलवर्षणयोगेन धान्यादुपचयो भवेत्''।

आर्द्राप्रवेशकुण्डली में रा. मं. एवं श. मं. की स्थिति से उत्तर-दक्षिण के प्रान्तों में अत्यधिक वर्षा से हानि के लक्षण प्रतीत होते हैं। सर्वज्ञ तो प्रभु ही हैं।

संवत् २०८२ वि. का शुभारम्भ

सं. २०८१ वि. में चैत्र अमावस, शनिवार, तदनुसार २९ मार्च, सन् २०२५ ई. को उ.भा. नक्षत्र, ब्रह्म योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय संवत् २०८२ वि. का शुभारम्भ १६ घं. २९ मि. पर सिंह लग्न के वक्त होगा।

संवत् २०८२ वि. की वर्षप्रवेशकुण्डली



२९ अप्रैल., सन् २०२५ ई., १६ घं. २९ मि.,

फल – संवत् २०८२ वि. का शुभारम्भ सिंह लग्न में होने से दक्षिणी प्रान्तों में सर्पादि से कष्टभय रहे, ६ मास तक अनाज सस्ते रहें, बादल फटने एवं भयंकर वर्षा-पानी से अनेकत्र जन-धनहानि का भी भय है। पश्चिमी प्रान्तों किंवा देशों में स्वर्णादि धातुएं महंगी रहें। उत्तर में महावर्षा से हानि की घटनाएं हों। पूर्व में खेती को नुकसान पहुंचे। मध्यप्रदेश में राजनीतिज्ञों में मतभेद किंवा शासनसत्ता में उल्ट-फेर हो–

''सिंह लग्ने दक्षिणस्यां दंष्ट्राभयमुदीरयेत्।
धान्ये समर्घता मास-षट्कं यावद् घनो महान्।।
पश्चिमायां धातु-वस्तु-फलादीनां महर्घता।
उत्तरस्यां महावृष्टि: सुखं राज्ये प्रजासु च।।
पूर्वस्यामर्ध-निष्पत्ति: श्रेयोऽग्रे मासपंचकम्।
मध्यदेशे राज्ययुद्धं मास-पंचकमुद्धतम्।।''

कुण्डलीगत ग्रहस्थिति के अनुसार मीन राशि में सू. बु. शु. चं. एवं रा. की स्थिति भारत के कुछ प्रान्तों में भयंकर प्राकृतिक आपदा (वर्षा-पानी, भूकम्प, अग्निकाण्डादि) से जनधन-हानि का संकेत देती है। सप्तमस्थ शनि की लग्न पर दृष्टि भी जटिल समस्याओं वाली मालूम देती है।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार उत्तरी-दक्षिणी एवं पश्चिमी दिशा किंवा भारत के पूर्वी भाग से भी शत्रुकृत् कुचेष्टा से शासनतन्त्र को सचेत रहना होगा–

''मारिदक्षिण-देशे स्यात् तथा बंगेप्युपद्रव:।
लोके दु:खं विजानीयात् पश्चिमे ननु विग्रह:।।''

भारत देश की प्रभाव राशि मकर का स्वामी शनि स्वराशिस्थ होने से देश आर्थिक-सामाजिक एवं सर्वविध प्रगति की ओर अग्रेसर रहेगा- इसमें सन्देह नहीं।

वर्षेश / जगत् लग्न-विचार (सं. २०८२ वि.)

सूर्य जब निरयण मेष राशि में प्रविष्ट होता है, तात्कालिक लग्न ही 'जगत् लग्न' कहलाता है।

संवत् २०८२ वि. में वैशाख कृष्ण प्रतिपदा, रविवार, तदनुसार १३/१४ अप्रैल, सन् २०२५ ई., को स्वाती नक्षत्र, वज्र योग एवं तुलास्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव ३ घं. २० मि. I.S.T. पर मेष राशि में प्रविष्ट होंगे। इस समय लग्न कुम्भ होगा।

वर्षेश/जगत्लग्न कुण्डली



१३/१४ अप्रैल, सन् २०२५ ई., ३ घं. २० मि.,

फल – सं. २०८२ वि. में (वर्षेश) जगत् लग्न का उदय कुम्भ लग्न में हुआ है। लग्नेश शनि राहु, बुध एवं शुक्र- इन तीन मित्रग्रहों के साथ धनस्थान में है, अतः इस वर्ष देश में भारी-भरकम प्रयास आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करने के लिए बहुविध उद्योगों की स्थापना होगी। द्वितीयेश एवं आयेश गुरु केन्द्र (चतुर्थभाव) में स्थित हैं, अतः विश्व में भारत का व्यापारक्षेत्र प्रगति पर रहेगा-

''धने व्यये च सौम्यश्च केन्द्रे वा मेषसंक्रमे।
स्वर्क्षे शुभे सुहृद्दृष्टः सुभिक्षं व्यत्ययोऽन्यथा।।''

स्पष्ट है- ग्रहस्थिति विश्व के देशों, विशेषतः भारत में सुभिक्ष एवं खुशहाली का संकेत देती है।

लेकिन वर्षेश कुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि बालग्रह बुध (पंचमेश-अष्टमेश होकर) राहु के साथ है, अतः भारत को सीमाप्रान्तों पर (मिजोरम, लद्दाख, कश्मीर आदि के उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में) सैन्यबल को सुसन्नद्ध रखना होगा। शत्रुदेश की गतिविधि किंवा अवांछित घटनाएं अशान्ति का कारण बनेंगी। नीच मंगल की चन्द्र एवं कुम्भ लग्न पर दृष्टि आश्विन, पौष एवं कुछ अन्य मासों में महामारी से परेशानी का कारण बनेगी।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इसप्रकार जानिये–

(१) प्रथम भाव से शरीरसुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्रीसुख, (८) रोगभय/मृत्युभय, (९) धर्म-कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख-साधनप्राप्ति तथा (१२) बाहरवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें–

''जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु-पराजयः स्यात्।।
स्त्री-सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः।।
लाभे लाभः सुख-धनचयो दुःख-दारिद्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने।।''

यदि **'जगत् लग्न'** अपने **'जन्मलग्न'** से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किंचित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा, ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आये, वह भाव शुभ ग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो, उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो, तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बाहरवें हो, तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

गुर्रा-फल (सन् २०२५-२६ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार (उसी वार से सम्बन्धित ग्रह ही) साल का राजा होता है, जो "**गुर्रा**" नाम से जाना जाता है।

सं. २०८२ वि. में आषाढ़ शुक्ल द्वितीया शुक्रवार, तदनुसार २७ जून, सन् २०२५ ई. को एक (यकम) मुहर्रम के दिन हिजरी सन् १४४७ का आगाज़ हुआ था। इसलिए इस हिजरी सन् का बादशाह शुक्र ही है।

फल - **हिजरी सन् का मालिक शुक्र होने से** पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में मंहगाई भयंकर रूप धारण करेगी। खाद्य पदार्थ एवं जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं की उपल्बधता न होने से अनेकत्र अराजकता रहे। कुछ यावनराष्ट्र भयंकर युद्ध की चपेट में आने से क्षतिग्रस्त होंगे। अमेरिका आदि कई देशों की सहायता अपेक्षित रहेगी। मुस्लिम राष्ट्रों के कुछ प्रधान व्यक्ति षडयन्त्र के शिकार होंगे।

संवत् २०८२ वि. में लाभ-व्यय-चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

सं. २०८२ वि. का राजा सूर्य है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

लाभ-व्यय देखने की विधि– अपनी राशि के लाभ-व्यय-अंकों को जोड़कर, प्राप्तांक में से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १ बचे तो आमदन, २ बचे तो सुख-लाभ, ३ बचने पर क्लेश, ४ शेष रहने पर बीमारी से परेशानी, ५ शेष आने पर अपयश, ६ शेष बचने पर इज्जत, ७ शेष आने पर सफलता और ० (शून्य) शेष रहने पर हानि।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि तिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।।"

विशेष– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दस दिन तक नीम के कोमल पत्ते, नीम की मंजरी या निमौली का चूर्ण, सेंधा नमक, इमली, कालीमिर्च, हींग, अजवायन, जीरा, तुलसीदल–ये सब कूट-पीसकर, इच्छानुसार खाण्ड या शक्कर मिलाकर, शर्बत बनाकर प्रातः सेवन करने से रक्तविकार, वात-पित्त एवं कफजन्य कष्टों एवं कुष्ठरोग से मुक्ति मिलती है।

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली (मोहाली) पंजाब
के इन युवा-कर्मठ, विद्वान् कार्यकर्ताओं का
पंचांग-प्रकाशन में
भारी सहयोग वस्तुतः प्रशंसनीय है–

"**श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय कुराली**" के प्रबन्धक, हमारे पूज्यपिता जी के प्रिय शिष्य **चि. प्रेमचन्द शर्मा**; ग्राम सुन्हाड़-सौर (सोलन), (हि.प्र.) निवासी आचार्य श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य; एवं नालाबलोग (पंचकूला) निवासी **चि. सुरेशानन्द शर्मा**, B.A. श्रीमार्त्तण्ड पंचांग (हिन्दी), बटुक पंचांग एवं शिरोमणि तिथपत्रिका (पंजाबी) के गणित, पाण्डु-लिपिलेखन एवं प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी और आदरभाव से करते हैं। पंचांग के प्रकाशनकार्य में हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व से भरे इस उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय परम उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

-प्रियव्रत शर्मा, इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
(सम्पादक-श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग)

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(३० मार्च से १२ अप्रैल, सन् २०२५ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु)

पक्षारम्भ में ही श. पूर्व में उदित हो जाएगा। बु. भी, १ अप्रैल से पूर्व में दिखाई देना शुरू होगा। प्रात: शु. को पूर्व में देखें। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त के पास और गु. पश्चिमकपाल में होगा।

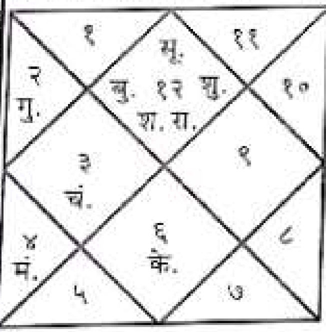
दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें अं. मार्च	तारीखें श. चैत्र	तारीखें मु. रमजान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	४६	१	र.	१६	१९	रेव.	२५	४२	ऐं.	२८	५९	ब.	१६	१९	१७	३०	९	२९	मेष	२५	४२	६	१८	१८	३६	११	१५	१९	४५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक समाप्त २५/४२, शनि उदित (A)
३०	५१	२	चं.	७	१६	अश्वि.	१८	४०	वै.	१८	४२	कौ.	७	१६	१८	३१	१०	श.१	मेष			६	१७	१८	३७	११	१६	१९	३	सूर्य रेव. में ११/१५, वक्री शुक्र पू.भा. में ५६/१०, (B)
अवम		३	चं.	५८	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३०	५५	४	मं.	५०	४२	भर.	१२	७	वि. प्री.	८ ५९	५० ३८	व.	२५	४	१९	अ.१	११	२	वृष	२५	३५	६	१५	१८	३७	११	१७	१८	१८	भ.२५/४ से ५०/४२ तक, बुध पूर्व में उदित ६ घं. (C)
३१	००	५	बु.	४३	५८	कृत्ति.	६	२८	आ.	५१	२७	ब.	१७	२०	२०	२	१२	३	वृष			६	१४	१८	३८	११	१८	१७	३२	मंगल कर्क में ४७/५८, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, (D)
३१	४	६	गु.	३८	४१	रोहि. मृग.	१ ५९	५९ ४	सौ.	४४	२९	कौ.	११	१९	२१	३	१३	४	मिथुन	३०	२१	६	१३	१८	३९	११	१९	१६	४३	वक्री बुध पू.भा. में ३१/१२, स्कन्द षष्ठी,
३१	९	७	शु.	३५	२	आर्द्रा	५७	५०	शो.	३८	५२	ग.	६	५१	२२	४	१४	५	मिथुन			६	१२	१८	३९	११	२०	१५	५२	भ. ३५/२ बाद, **सिद्धार्थी संवत्सर**
३१	१४	८	श.	३३	९	पुन.	५८	२२	अ.	३४	४०	वि	४	७	२३	५	१५	६	कर्क	४३	६	६	११	१८	४०	११	२१	१४	५८	भ. ४/७ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसुयोग),
३१	१८	९	र.	३३	४	पुष्य	६०	०	सु.	३१	५३	बा.	३	७	२४	६	१६	७	कर्क			६	९	१८	४१	११	२२	१४	३	श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
३१	२३	१०	चं.	३४	४०	पुष्य	०	३७	धृ.	३०	२५	तै.	३	५२	२५	७	१७	८	कर्क			६	८	१८	४१	११	२३	१३	४	बुध मार्गी २६/१५, नवरात्र-पारणा,
३१	२७	११	मं.	३७	४५	आश्ले.	४	२९	शू.	३०	७	व.	६	१५	२६	८	१८	९	सिंह	४	२९	६	७	१८	४२	११	२४	१२	४	भ. ६/१५ से ३७/४५ तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), (E)
३१	३२	१२	बु.	४२	४	मघा	९	३७	गं.	३०	४७	ब.	९	५५	२७	९	१९	१०	सिंह			६	६	१८	४३	११	२५	११	१	श्रीविष्णु-दमनोत्सव,
३१	३६	१३	गु.	४७	२०	पू.फा.	१५	४९	वृ.	३२	१४	कौ.	१४	४२	२८	१०	२०	११	कन्या	३२	२९	६	५	१८	४३	११	२६	९	५७	गुरु मृग. १ में ३०/३७, प्रदोषव्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, (F)
३१	४१	१४	शु.	५३	१५	उ.फा.	२२	४६	ध्रु.	३४	१३	ग.	२०	१७	२९	११	२१	१२	कन्या			६	३	१८	४४	११	२७	८	५०	भ. ५३/१५ बाद, बुध उ.भा. में, २८/३७, दमनक चतुर्दशी, (G)
३१	४५	१५	श.	५९	३३	हस्त	३०	१२	व्या.	३६	३३	वि.	२६	२८	३०	१२	२२	१३	कन्या			६	२	१८	४४	११	२८	७	४१	भ. २६/२८ तक, मंगल पुष्य में ०/५, चैत्री पूर्णिमा, (H)

(A) ६ घं.१८मि., चान्द्रसंवत्सर २०८२ वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, निंबपत्र-प्राशन, ध्वजारोहण, चंद्रव्रत, गुड़ी पड़वा, (B) गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, शव्वाल मु. प्रारम्भ, (C) १५ मि., अप्रैल प्रारम्भ, (D) नागपंचमी, हयव्रत, (E) दोलोत्सव, (F) श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), (G) श्रीशिवदमनोत्सव, (H) वैशाखस्नान प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्री हनुमान् जयन्ती (द.भा.),

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ५ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	३	११	१	११	११	११	५
२१	२०	०	२	२२	१	०	२	२
१४	५	४४	५३	२४	४३	४५	१८	१८
५८	३३	४७	४१	११	३०	२४	३४	३४
५९	७१३	२१	१०	९	१८	७	३	३
४	३२	१०	५१	४८	१८	५	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	व.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. २	पुन. १	पुन. ४	पू.भा. ४	रोहि. ४	पू.भा. ४	पू.भा. ४	पू.भा. ४	उ.फा. ३

कुण्डली सूर्योदय (५ अप्रै.)



लोकभविष्य-इस पक्ष में मीन राशि में पंचग्रही योग बन रहा है। सू.श. रा. शु. बु. का एकत्र होना नेष्ट फलप्रद है- "**एकराशौ यदा यान्ति चत्वार: पञ्च खेचरा:। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।।**" यावनराष्ट्रों में परस्पर टकराव एवं युद्धात्मक स्थिति से वातावरण अशान्त हो। साथ ही इस चान्द्रमास में पांच शनिवार भी हैं, अत: किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु हो किंवा भूकम्प आदि से जन-धनहानि भी संभव है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में रुई, तेल, तिलहन में मन्दी रहे, सभी अनाजों, गुड़, शक्कर, घी में तेजी रहे। ८ अप्रैल तक बाजार प्राय: मन्दे रहेंगे। १०,११ अप्रैल को चांदी, चावल, गेहूं आदि अनाज, गुड़, खाण्ड, घी, प्राय: तेज रहेंगे। पक्षान्त में सोने में मन्दी का झटका संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (१२ अप्रै.)



आकाश-लक्षण- अप्रैल २, ६, ७, १०, ११, १२ के लगभग आसाम, पू. बिहार, बंगाल एवं वर्मा के कुछ क्षेत्रों में बादलचाल किंवा खण्डवृष्टि के योग हैं।

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १२ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	३	११	१	११	११	११	५
२८	१७	३	३	२३	०	१	१	१
७	५	१९	३०	३४	२६	३४	५६	५६
४०	५३	२७	१७	५९	१०	२५	१९	१९
५८	७१०	२३	२५	१०	१	६	३	३
४९	४४	१५	१०	३१	१८	५४	११	११
-	-	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेव. ४	हस्त. ३	पुन. ४	उ.भा. १	मृग. १	पू.भा. ४	पू.भा. ४	पू.भा. ४	उ.फा. ३

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(१३ से २७ अप्रैल, सन् २०२५ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु)

प्रात: शु. श. बु. पूर्व में परस्पर काफी नज़दीक दिखाई देंगे। सायं मं. याम्योत्तरवृत्त के पास और गु. पश्चिम कपाल में होगा। २० अप्रैल को अगस्त्य तारा दिखाई देना बंद हो जाएगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (वैशाख)	तारीखें अं. (अप्रैल)	तारीखें श. (चैत्र)	तारीखें मु. (शव्वाल)	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	५०	१	र.	६०	०	चित्रा	३७	५३	ह.	३९	४	बा.	३२	४७	१	१३	२३	१४	तुला	४	३	६	१	१८	४५	११	२९	६	२९	सं. सूर्य अश्वि. मेष में ५३/२०, मु. १५, पुण्यकाल (A)
३१	५४	१	चं.	६	२	स्वाती	४५	३३	व.	४१	३४	कौ.	६	२	२	१४	२४	१५	तुला			६	०	१८	४६	०	०	५	१६	
३१	५९	२	मं.	१२	२१	विशा.	५२	५८	सि.	४३	५२	ग.	१२	२१	३	१५	२५	१६	वृश्चिक	३६	१०	५	५९	१८	४६	०	१	४	१	भ. ४५/१८ बाद,
३२	३	३	बु.	१८	१८	अनु.	५९	५२	व्य.	४५	४९	वि.	१८	१८	४	१६	२६	१७	वृश्चिक			५	५८	१८	४७	०	२	३	४४	भ. १८/१८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३२	७	४	गु.	२३	३७	ज्येष्ठा	६०	०	व.	४७	१२	बा.	२३	३७	५	१७	२७	१८	वृश्चिक			५	५७	१८	४८	०	३	१	२६	
३२	१२	५	शु.	२७	५९	ज्येष्ठा	६	२	प.	४७	४८	तै.	२७	५९	६	१८	२८	१९	धनु	६	२	५	५६	१८	४८	०	४	०	५	गुड फ्राईडे,
३२	१६	६	श.	३१	८	मूल	११	५	शि.	४७	२३	व.	३१	८	७	१९	२९	२०	धनु			५	५४	१८	४९	०	४	५८	४३	भ. ३१/८ बाद, सूर्य सायन वृष में ४८/५०, (B)
३२	२०	७	र.	३२	४८	पू.षा.	१४	४६	सि.	४५	४६	वि.	२	०	८	२०	३०	२१	मकर	३०	२७	५	५३	१८	५०	०	५	५७	१९	भ. २/० तक, अगस्त्य अस्त, ईस्टर सण्डे,
३२	२५	८	चं.	३२	४५	उ.षा.	१६	५१	सा.	४२	४८	बा.	२	४६	९	२१	वै.१	२२	मकर			५	५२	१८	५०	०	६	५५	५३	शक वैशाख प्रारम्भ
३२	२९	९	मं.	३०	५४	श्रव.	१७	११	शु.	३८	२३	तै.	१	४९	१०	२२	२	२३	कुम्भ	४६	३९	५	५१	१८	५१	०	७	५४	२६	भ. ५९/३ बाद, पंचक प्रारम्भ ४६/३९,
३२	३३	१०	बु.	२७	१२	धनि.	१५	४२	शु.	३२	३१	वि.	२७	१२	११	२३	३	२४	कुम्भ			५	५०	१८	५१	०	८	५२	५८	भ. २७/१२ तक,
३२	३७	११	गु.	२१	४८	शत.	१२	२९	ब्र.	२५	१५	बा.	२१	४८	१२	२४	४	२५	मीन	५४	०	५	४९	१८	५२	०	९	५१	२७	नेप्च्यून उ. भा. २ में ७/५४, वरूथिनी (C)
३२	४१	१२	शु.	१४	५१	पू.भा.	७	४२	ऐं.	१६	४५	तै.	१४	५१	१३	२५	५	२६	मीन			५	४८	१८	५३	०	१०	४९	५५	शुक्र उ.भा. में ४४/४०, प्रदोषव्रत,
३२	४५	१३	श.	६	४१	उ.भा.	१	३६	वै.	७	१४	व.	६	४१	१४	२६	६	२७	मेष	५४	३८	५	४७	१८	५३	०	११	४८	२२	भ. ६/४१ से ३२/१० तक, पंचक समाप्त ५४/३८,
						रेव.	५४	३८	वि.	५६	५८																			
अवम		१४	श.	५७	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३२	४९	३०	र.	४८	६	अश्वि.	४७	१०	प्री.	४६	२१	च.	२२	५२	१५	२७	७	२८	मेष			५	४६	१८	५४	०	१२	४६	४६	सूर्य भर. में ३३/३०, बुध रेव. में २४/२०,

(A) अगले दिन मध्याह्न तक, शुक्र मार्गी १/२०, मेष संक्रान्ति, वैशाखी (पं.), (B) ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (C) एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	३	११	२	११	११	११	५
६	६	६	९	२५	१	२	१	१
५५	८	५८	३९	१२	३६	३५	२७	२७
५३	२२	५	२३	५४	२६	०	४२	४२
५८	७८९	२५	५८	११	१८	६	३	३
३३	१७	३१	१०	१९	२२	३२	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	उ.षा. ३	पुष्य ३	उ.भा. ३	पुन. २	पू.भा. ४	पू.भा. ४	पू.भा. ४	उ.फा. ३

कुण्डली सूर्योदय (२१ अप्रै.)



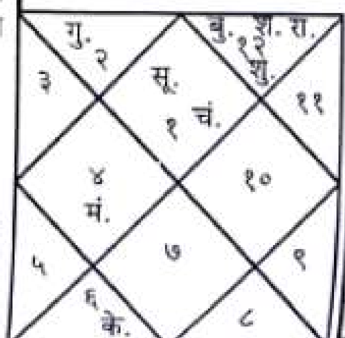
लोकभविष्य-चान्द्रमास वैशाख में पांच रविवार एवं पांच सोमवार होने से किसी प्रान्तविशेष में प्राकृतिक प्रकोप से दुर्भिक्ष किंवा शासकवर्ग के लिये आपदा का संकेत मिलता है। किसी राजनीतिज्ञ के अपदस्थ किंवा निधन से शोक व्याप्त हो-

"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंग: स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।"

पांच सोमवार होने से कुछ प्रान्तों में धन-धान्यसमृद्धि रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में तेल, तिलहन, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना-चांदी, अनाज तेज रहें। गुड़, घी के स्टॉक से आगे उत्तम लाभ रहे। २५ से २७ अप्रैल के मध्य सभी अनाज-दालें, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड से तुरन्त लाभ लें। चांदी, रुई, कपास मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२७ अप्रै.)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २७ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	३	११	२	११	११	११	५
१२	१	९	१६	२६	३	३	०	०
४६	१०	३४	९	२१	५३	१३	८	८
४५	२९	३१	१४	५९	२६	३२	३८	३८
५८	९१४	२६	७३	११	२८	६	३	३
२३	५७	४९	५०	४७	३९	१५	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ४	अश्वि. १	पुष्य ३	उ.भा. ४	पुन. २	उ.भा. १	पू.भा. ४	पू.भा. ४	उ.फा. ३

आकाश-लक्षण- अप्रैल १३, १४, २५, २६ एवं २७ अप्रैल के लगभग महाराष्ट्र, सिक्किम, आसाम, राजस्थान एवं उत्तरांचल में बादलचाल किंवा तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि के योग हैं। पक्षान्त में वायुवेग के साथ वर्षा भी हो।

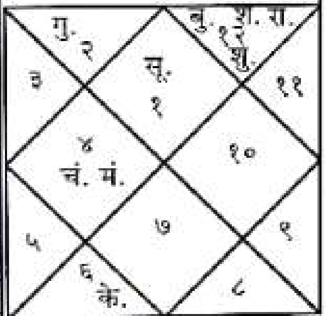
श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, वैशाख शुक्ल पक्ष ३																तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२८ अप्रैल से १२ मई, सन् २०२५ ई.) (उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु)
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. वैशाख	मु. शव्वाल				सूर्योदय		सूर्यास्त						प्रात: श. शु. बु. पूर्व में, सायं मं. याम्योत्तरवृत्तासन्न और गु. पश्चिम में होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	५४	१	चं.	३८	३४	भर.	३९	४०	आ.	३५	४१	किं.	१३	२०	१६	२८	८	२९	वृष	५२	४९	५	४५	१८	५५	०	१३	४५	९	गुरु मृग. २ में ३१/०, शनि उ.भा. १ में ६/२५,
३२	५८	२	मं.	२९	२७	कृत्ति.	३२	३६	सौ.	२५	२२	बा.	४	१	१७	२९	९	३०	वृष			५	४४	१८	५५	०	१४	४३	३०	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, श्रीपरशुराम जयन्ती, श्रीशिवाजी जयन्ती,
३३	२	३	बु.	२१	११	रोहि.	२६	२५	शो.	१५	४४	ग.	२१	११	१८	३०	१०	जि.१	मिथुन	५३	४७	५	४३	१८	५६	०	१५	४१	४९	भ. ४७/४२ बाद, अक्षय तृतीया (रोहिणीयोग (A)
३३	५	४	गु.	१४	१२	मृग.	२१	३४	अ. सु.	७ ५९	७ ४८	वि.	१४	१२	१९	म.१	११	२	मिथुन			५	४३	१८	५७	०	१६	४०	७	भ. १४/१२ तक, मई प्रारम्भ,
३३	९	५	शु.	८	५२	आर्द्रा	१८	२५	धृ.	५४	४	बा.	८	५२	२०	२	१२	३	मिथुन			५	४२	१८	५७	०	१७	३८	२२	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	१३	६	श.	५	२८	पुन.	१७	१२	शू.	४९	५८	तै.	५	२८	२१	३	१३	४	कर्क	२	१७	५	४१	१८	५८	०	१८	३६	३५	श्रीगंगा जन्म, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (उ.भा.),
३३	१७	७	र.	४	५	पुष्य	१८	३	गं.	४७	३३	व.	४	५	२२	४	१४	५	कर्क			५	४०	१८	५९	०	१९	३४	४६	भ. ४/५ से ३४/३० तक, प्लूटो वक्री ३८/१,
३३	२१	८	चं.	४	५२	आश्ले.	२०	५४	वृ.	४६	४०	ब.	४	५२	२३	५	१५	६	सिंह	२०	५४	५	३९	१८	५९	०	२०	३२	५५	श्रीजानकी जयन्ती,
३३	२४	९	मं.	७	३१	मघा	२५	३३	ध्रु.	४७	७	कौ.	७	३१	२४	६	१६	७	सिंह			५	३८	१९	०	०	२१	३१	३	बुध अश्वि. मेष में ५६/१०,
३३	२८	१०	बु.	११	४६	पू.फा.	३१	३८	व्या.	४८	३७	ग.	११	४६	२५	७	१७	८	कन्या	४८	२०	५	३७	१९	१	०	२२	२९	८	भ. ४४/२७ बाद,
३३	३२	११	गु.	१७	११	उ.फा.	३८	४३	ह.	५०	४९	वि.	१७	११	२६	८	१८	९	कन्या			५	३७	१९	१	०	२३	२७	१२	भ. १७/११ तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
३३	३५	१२	शु.	२३	२०	हस्त	४६	२२	व.	५३	२३	बा.	२३	२०	२७	९	१९	१०	कन्या			५	३६	१९	२	०	२४	२५	१३	प्रदोषव्रत, .
३३	३९	१३	श.	२९	४७	चित्रा	५४	९	सि.	५६	३	तै.	२९	४७	२८	१०	२०	११	तुला	२०	१७	५	३५	१९	३	०	२५	२३	१३	
३३	४२	१४	र.	३६	९	स्वाती	६०	०	व्य.	५८	३४	ग.	२	५८	२९	११	२१	१२	तुला			५	३४	१९	३	०	२६	२१	११	भ. ३६/९ बाद, सूर्य कृत्ति. में १९/२०, श्रीनृसिंह जयन्ती ,(B)
३३	४६	१५	चं.	४२	९	स्वाती	१	४६	व.	६०	०	वि.	९	९	३०	१२	२२	१३	वृश्चिक	५२	१३	५	३४	१९	४	०	२७	१९	८	भ. ९/९ तक, मंगल आश्ले. में ७/२७, वैशाखी पूर्णिमा ,(C)

(A) १६ घं. १८ मि. तक), **जिल्काद मु. प्रारम्भ**, (B) (देखें पृष्ठ 13), (C) **श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त,**

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ५ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २० ३२ ५५	३ २५ ३१ ४०	३ १३ १४ ३२	११ २७ १ ३१	१ २७ ५८ ९	११ ८ २१ २०	११ ४ २ ७	११ ० ४३ ११	५ ० ४३ ११
५८ ७	७५० ६	२८ २०	९० ५६	१२ १८	३९ ६	५ ५०	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	आश्ले. ३	पुष्य ३	रेव. ४	मृग. २	उ.भा. २	उ.भा. १	पू.भा. ४	उ.फा. २

कुण्डली सूर्योदय (५ मई)

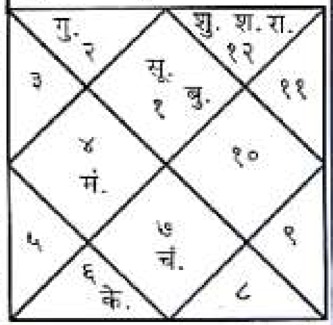


लोकभविष्य-मीनस्थ शुक्र-शनि-राहु की स्थिति एवं नीचस्थ मंगल रोग एवं राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य करेगा। पांच सोमवार होने से व्यापारी वर्ग को हानि से परेशानी रहे। वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र सुभिक्ष करे, मांगलिक कार्य हों-

''अक्षयाख्य-तृतीयायां सुभिक्षायैव रोहिणी शुभवासरे।
सर्वधान्यस्य निष्पत्तिर्भुवि मंगल-कर्मकृत्।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२८/२९ अप्रैल के लगभग व्यापारिक वस्तुओं में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज आएंगे- सावधान रहें। २० अप्रैल को सोना-चांदी में मन्दी के बाद तेजी होगी। ६ मई को तेल, तिलहन, घी, सोना, अनाज तेज रहें। यह तेजी १२ मई तक लाभ देगी। पश्चात् में झटके की मन्दी रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१२ मई)



आकाश-लक्षण- २८, २९, ३० अप्रैल एवं ६, ११, १२ मई को महाराष्ट्र, सिक्किम, आसाम, राजस्थान, पंजाब, हि.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल और वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो।

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १२ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
० २७ १९ ६	६ १९ ३६ ५०	३ १६ ३६ १६	० ८ १९ ५०	१ २९ २५ २८	११ १३ १६ ३२	११ ४ ४१ ३९	११ ० २० ५६	५ ० २० ५६
५७ ५५	७९४ ११	२९ २६	१०४ ४९	१२ ४२	४५ ५६	५ २५	३ ११	३ ११
-	-	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	स्वा. ४	पुष्य ४	अश्वि. ३	मृग. २	उ.भा. ३	उ.भा. १	पू.भा. ४	उ.फा. २

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(१३ से २७ मई, सन् २०२५ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	तारीखें अं. मई	तारीखें श. वैशाख	तारीखें मु. जिल्काद	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.
३३	४९	१	म.	४७	३६	विशा.	८	५९	व.	०	४६	बा.	१४	५२	३१	१३	२३	१४	वृश्चिक			५	३३	१९	५	०	२८	१७	३
३३	५२	२	बु.	५२	२२	अनु.	१५	३५	प.	२	३१	तै.	१९	५९	ज्ये.१	१४	२४	१५	वृश्चिक			५	३२	१९	५	०	२९	१४	५६
३३	५५	३	गु.	५६	१८	ज्येष्ठा	२१	२८	शि.	३	४२	व.	२४	५१	२	१५	२५	१६	धनु	२१	२८	५	३२	१९	६	१	०	१२	४८
३३	५९	४	शु.	५९	१६	मूल	२६	३०	सि.	४	१५	ब.	२७	४७	३	१६	२६	१७	धनु			५	३१	१९	७	१	१	१०	३८
३४	२	५	श.	६०	०	पू.षा.	३०	३२	सा.	४	३	कौ.	३०	१२	४	१७	२७	१८	मकर	४६	२३	५	३१	१९	७	१	२	८	२८
३४	५	५	र.	१	८	उ.षा.	३३	२५	शु.	२	५८	तै.	१	८	५	१८	२८	१९	मकर			५	३०	१९	८	१	३	६	१६
३४	८	६	चं.	१	४४	श्रव.	३५	०	शु. ब्र.	० ५७	५५ ४४	व.	१	४४	६	१९	२९	२०	मकर			५	२९	१९	९	१	४	४	२
३४	११	७	मं.	०	५५	धनि.	३५	७	ऐं.	५३	२२	ब.	०	५५	७	२०	३०	२१	कुम्भ	५	१५	५	२९	१९	९	१	५	१	४८
अवम		८	मं.	५८	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	१३	९	बु.	५४	४४	शत.	३३	४३	वै.	४७	४४	तै.	२६	४०	८	२१	३१	२२	कुम्भ			५	२८	१९	१०	१	५	५९	३३
३४	१६	१०	गु.	४९	२१	पू.भा.	३०	४७	वि.	४०	५२	व.	२२	१	९	२२	ज्ये.२	२३	मीन	१६	४०	५	२८	१९	१०	१	६	५७	१७
३४	१९	११	शु.	४२	३६	उ.भा.	२६	२६	प्री.	३२	५१	ब.	१५	५८	१०	२३	२	२४	मीन			५	२७	१९	११	१	७	५४	५९
३४	२२	१२	श.	३४	४३	रेव.	२०	५२	आ.	२३	५२	कौ.	८	४०	११	२४	३	२५	मेष	२०	५२	५	२७	१९	१२	१	८	५२	४१
३४	२४	१३	र.	२६	२	अश्वि.	१४	२३	सौ.	१४	८	व.	२६	२	१२	२५	४	२६	मेष			५	२७	१९	१२	१	९	५०	२२
३४	२७	१४	चं.	१६	५४	भर.	७	२३	शो. अ.	३ ५३	५७ ४०	श.	१६	५४	१३	२६	५	२७	वृष	२०	३३		२६	१९	१३	१	१०	४८	१
३४	२९	३०	मं.	७	४५	कृति. रोहि.	० ५३	१५ ३१	सु.	४३	३९	ना.	७	४५	१४	२७	६	२८	वृष			५	२६	१९	१३	१	११	४५	३९

पूर्व में दिखाई दे रहा बु. १९ मई को लुप्त हो जाएगा। प्रात: श. शु. पूर्व में, सायं मं. पश्चिमकपाल में और गु. पश्चिमक्षितिज में होगा।

सं. सूर्य वृष में ४७/४०, मु. १५, पुण्यकाल अगले दिन (A)
भ. २४/२१ से ५६/१८ तक,
शुक्र रेव. में १८/१२, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
राहु पू.भा. ३ कुम्भ, केतु उ.फा. १ सिंह में ३४/५७,
भ. १/४४ से ३१/२२ तक, बुध पूर्व में अस्त ५ घं. २९ मि.,
पंचक प्रारम्भ ५/१५, सूर्य सायन मिथुन में ४७/२१,
अष्टमी तिथिक्षय,
बुध कृत्ति. में ४२/५,
भ. २२/१ से ४९/२१ तक, यूरेनस कृति. ३ में १५/५, (B)
बुध वृष में १८/५२, अपरा एकादशी व्रत (स.), (C)
पंचक समाप्त २०/५२, शनिप्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 13),
भ. २६/२ से ५१/२५ तक, सूर्य रोहि. में १०/१०,
वटसावित्री व्रत (अमा पक्ष),
बुध रोहि. में ५९/७, भावुका अमा, भौमवती अमा, (D)

(A) मध्याह्न तक, वुध भर. में ४८/४५, गुरु मृग. ३ मिथुन में ४२/४०, (B) शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, (C) भद्रकाली एकादशी (पं.), (D) श्रीशनैश्चर जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २० मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	९	३	०	२	११	११	१०	४
५	२८	२०	२३	१	१९	५	२९	२९
१	५०	३५	१३	८	४५	२३	५५	५५
४७	४२	४६	५६	१७	४३	१	३०	३०
५७	८०७	३०	१२०	१३	५१	४	३	३
४५	६	३४	३०	३	४८	५२	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (२० मई)



लोकभविष्य–ज्येष्ठ चान्द्रमास में पांच मंगलवार एवं पांच बुधवार होने से कुछ प्रान्तों में उग्रवादजन्य अशान्ति किंवा यावनराष्ट्र–विशेष में कहीं रक्तपात एवं अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो–

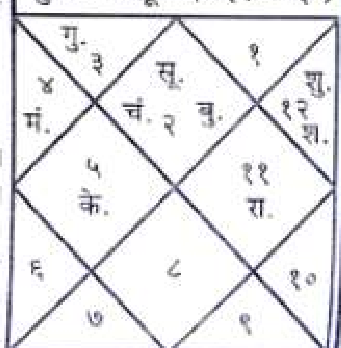
''यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासरा:'
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्वदा भवेत्।।''

पांच बुधवारों का प्रभाव भारतीय शासनतन्त्र के लिए श्रेयस्कर रहेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–कुम्भस्थ राहु पर मंगल की दृष्टि है। गेहूं, सूत एवं घी आदि में स्टॉकिस्टों को आगे उत्तम लाभ होगा;–

''यदा राहु: स्थित: कुम्भे क्रूरग्रहसमन्वित:। गृहीते सूत्र गोधूमे मासे षष्ठे चतुर्गुणम्।।'' १७ मई के लगभग रुई, कपास, सूत, सण, सोना, चांदी, तिल, तेल, घी, चावल, गुड़, खाण्ड तेज रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (२७ मई)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २७ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	३	१	२	११	११	१०	४
११	९	२४	७	२	२६	५	२९	२९
४५	५८	१२	५१	४०	०	५५	३३	३३
३८	३१	२४	४१	२६	२३	३१	१४	१४
५७	९००	३१	१३०	१३	५५	४	३	३
३८	४०	२७	३७	१८	३७	२०	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश-लक्षण– १४, १५, १७, १८, १९, २१, २३ से २७ मई के लगभग महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल, मिजोरम, शिलांग, काठमाण्डु, पंजाब, हरियाणा, जम्मू–कश्मीर एवं उ.प्र. के कुछ भाग वर्षा से प्रभावित रहेंगे। इन दिनों उ. खण्ड, बिहार, हि.प्र. आदि में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(२८ मई से ११ जून, सन् २०२५ ई.)
(उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु)

पक्षान्त में बु. सायं पश्चिम में दिखाई देना शुरु होगा और इसी दिन गु. अस्त हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्व में और श. पूर्वकपाल में होगा। मं. सायं पश्चिमकपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	तारीखें अं. मई	तारीखें श. ज्येष्ठ	तारीखें मु. ज़िल्काद	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.
अवम		१	मं.	५९	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	३१	२	बु.	५१	१२	मृग.	४७	३८	धृ.	३४	१६	बा.	२५	७	१५	२८	७	२९	मिथुन	२०	२५	५	२६	१९	१४	१	१२	४३	१७
३४	३३	३	गु.	४४	४२	आर्द्रा	४३	३	शू.	२५	५३	तै.	१७	५७	१६	२९	८	जि.१	मिथुन			५	२५	१९	१५	१	१३	४०	५२
३४	३६	४	शु.	३९	५४	पुन.	४०	९	गं.	१८	४८	व.	१२	१६	१७	३०	९	२	कर्क	२५	४२	५	२५	१९	१५	१	१४	३८	२७
३४	३८	५	श.	३७	६	पुष्य	३९	१५	वृ.	१३	१६	ब.	८	३०	१८	३१	१०	३	कर्क			५	२५	१९	१६	१	१५	३६	०
३४	४०	६	र.	३६	२८	आश्ले.	४०	२९	ध्रु.	९	२६	कौ.	६	४७	१९	जू.१	११	४	सिंह	४०	२९	५	२४	१९	१६	१	१६	३३	३२
३४	४१	७	चं.	३७	५७	मघा	४३	४७	व्या.	७	१९	ग.	७	१३	२०	२	१२	५	सिंह			५	२४	१९	१७	१	१७	३१	३
३४	४३	८	मं.	४१	२१	पू.फा.	४८	५५	ह.	६	४९	वि.	९	३७	२१	३	१३	६	सिंह			५	२४	१९	१७	१	१८	२८	३३
३४	४५	९	बु.	४६	१६	उ.फा.	५५	२८	व.	७	४१	बा.	१३	४९	२२	४	१४	७	कन्या	५	२७	५	२४	१९	१८	१	१९	२६	१
३४	४७	१०	गु.	५२	११	हस्त	६०	०	सि.	९	३३	तै.	१९	१३	२३	५	१५	८	कन्या			५	२४	१९	१८	१	२०	२३	२८
३४	४८	११	शु.	५८	३१	हस्त	२	५४	व्य.	१२	२	व.	२५	२०	२४	६	१६	९	तुला	३६	४८	५	२४	१९	१९	१	२१	२०	५४
३४	४९	१२	श.	६०	०	चित्रा	१०	४०	व.	१४	४३	ब.	३१	३८	२५	७	१७	१०	तुला			५	२३	१९	१९	१	२२	१८	१९
३४	५१	१२	र.	४	४६	स्वाती	१८	१५	प.	१७	१५	बा.	४	४६	२६	८	१८	११	तुला			५	२३	१९	२०	१	२३	१५	४२
३४	५२	१३	चं.	१०	३१	विशा.	२५	१८	शि.	१९	२१	तै.	१०	३१	२७	९	१९	१२	वृश्चिक	८	३७	५	२३	१९	२०	१	२४	१३	५
३४	५३	१४	मं.	१५	३१	अनु.	३१	३५	सि.	२०	५२	व.	१५	३१	२८	१०	२०	१३	वृश्चिक			५	२३	१९	२१	१	२५	१०	२६
३४	५४	१५	बु.	१९	३५	ज्येष्ठा	३६	५८	सा.	२१	४०	ब.	१९	३५	२९	११	२१	१४	धनु	३६	५८	५	२३	१९	२१	१	२६	७	४७

प्रतिपदा तिथिक्षय,
चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
गुरु मृग. ४ में ५८/२०, रम्भा तृतीया, (A)
भ. १२/१६ से ३९/५४ तक, (B)
शुक्र अश्वि. मेष में १५/२०,
विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी, जून प्रारम्भ,
भ. ३७/५७ बाद,
भ. ९/३७ तक, बुध मृग. में ३/५०,

गुरु अस्त १० जून

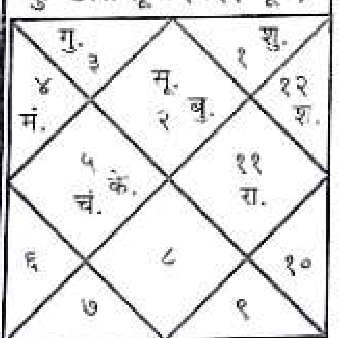
श्रीगंगा दशहरा,
भ. २५/२० से ५८/३१ तक, मंगल मघा सिंह में ५१/५२, (C)
शनि उ.भा. २ में २१/४५, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ (D)
सूर्य मृग. में ४/४८, प्रदोषव्रत,
बुध आर्द्रा में २३/५५,
भ. १५/३१ से ४७/३६ तक, बुध पश्चिम में उदित (E)

(A) श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), जिल्हिज मु. प्रारम्भ, (B) बलिदानदिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (C) बुध मिथुन में १०/७, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 13), (D) ११ घं. २१ मि., निर्जला एकादशी व्रत (वै.), चम्पा द्वादशी, (E) ११ घं., २१ मि., गुरु अस्त ११ घं. २१ मि., वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	३	१	२	०	११	१०	४
१८	१६	२७	२३	४	२	६	२९	२९
२८	४४	५४	१२	१४	३८	२४	१०	१०
३२	२	५८	१४	८	५३	१२	५८	५८
५९	७३३	३२	१३०	१३	५८	३	३	३
२८	८	१४	११	२९	३२	४६	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ३	पू.फा. २	आश्ले. ४	रोहि. ४	मृग. ४	अश्वि. १	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

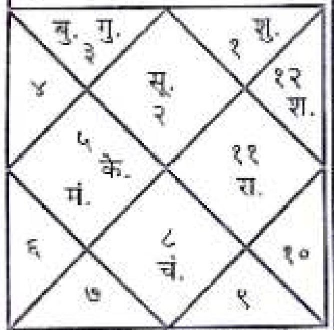
कुण्डली सूर्योदय (३ जून)



लोकभविष्य- चन्द्र-राहु एवं मंगल-राहु का समसप्तक एवं उ.भा. का शनि देश के कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़, वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोप से विशेष हानिकारक रहे। बुध-गुरु एवं शनैश्चर की स्थिति भी अनेकत्र दुर्भिक्ष का संकेत देती है। मई/जून में किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने का योग भी बनता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, जौ, चना आदि अनाज और घी में खास तेजी संभव है। तेल, तिलहन में कुछ मन्दी संभव है। ६ जून के लगभग मं. रा. का समसप्तक बाजारों में जोरदार तेजी का झटका लाएगा। यह तेजी ८ जून तक रहे। ९ से ११ जून तक बाजार अस्थिर/मन्दे रहेंगे।

कुण्डली सूर्योदय (११ जून)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ११ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	४	२	२	०	११	१०	४
२६	२२	२	९	६	१०	६	२८	२८
७	२९	१५	५१	२	३६	५१	४५	४५
४६	४१	४२	३३	३२	५४	५७	३१	३१
५७	७३८	३३	११६	१३	६१	३	३	३
२०	२८	२	१६	३७	११	५	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृग. १	ज्ये. २	मघा १	आर्द्रा १	मृग. ४	अश्वि. ४	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. १

आकाश-लक्षण- मई ३०, ३१, जून ३, ६, ७ से ११ के मध्य पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, उ.खण्ड, मेघालय, उड़ीसा, केरल, आसाम, बंगाल, उ.प्र., बंगाल आदि में कहीं जोरदार बाढ़, तूफान किंवा वायुवेग से हानि का योग हैं। भूस्खलन एवं भूकम्प आदि से कुछ प्रान्त प्रभावित हो सकते हैं।

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

तारीखें | **चन्द्रराशि प्रवेशकाल** | **चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)** | **स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)**

(१२ से २५ जून, सन् २०२५ ई.)
(उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु)

गु. अस्त है। प्रात: शु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा। सायं बु. पश्चिमक्षितिज में और मं. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा।

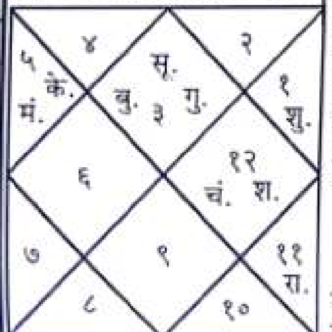
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. जिल्हिज्ज	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५५	१	गु.	२२	४१	मूल	४१	२३	शु.	२१	४३	कौ.	२२	४१	३०	१२	२२	१५	धनु			५	२३	१९	२१	१	२७	५	७	
३४	५६	२	शु.	२४	४९	पू.षा.	४४	५३	शु.	२१	०	ग.	२४	४९	३१	१३	२३	१६	धनु			५	२३	१९	२२	१	२८	२	२७	भ. ५५/२५ बाद, गुरु आर्द्रा १ में ४५/१५, (A)
३४	५७	३	श.	२५	५८	उ.षा.	४७	२५	ब्र.	१९	३२	वि.	२५	५८	३२	१४	२४	१७	मकर	०	३६	५	२३	१९	२२	१	२८	५९	४५	भ. २५/५८ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	५७	४	र.	२६	९	श्रव.	४९	०	ऐं.	१७	१८	बा.	२६	९	आ.१	१५	२५	१८	मकर			५	२३	१९	२२	१	२९	५७	३	सं. सूर्य मिथुन में ३/२२, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न तक,
३४	५८	५	चं.	२५	२०	धनि.	४९	३४	वै.	१४	१७	तै.	२५	२०	२	१६	२६	१९	कुम्भ	१९	२५	५	२४	१९	२३	२	०	५४	२१	पंचक प्रारम्भ १९/२५, बुध पुन. में २९/७,
३४	५८	६	मं.	२३	२७	शत.	४९	४	वि.	१०	२५	व.	२३	२७	३	१७	२७	२०	कुम्भ			५	२४	१९	२३	२	१	५१	३९	भ. २३/२७ से ५१/५७ तक,
३४	५९	७	बु.	२०	२७	पू.भा.	४७	२७	प्री. आ.	५ ५९	४० ५९	ब.	२०	२७	४	१८	२८	२१	मीन	३२	५७	५	२४	१९	२३	२	२	४८	५६	
३४	५९	८	गु.	१६	१९	उ.भा.	४४	४१	सौ.	५३	२४	कौ.	१६	१९	५	१९	२९	२२	मीन			५	२४	१९	२४	२	३	४६	१३	
३४	५९	९	शु.	११	३	रेव.	४०	५१	शो.	४५	५५	ग.	११	३	६	२०	३०	२३	मेष	४०	५१	५	२४	१९	२४	२	४	४३	२९	भ. ३७/५५ बाद, **पंचक समाप्त ४०/५१,**
३४	५९	१०	श.	४	४७	अश्वि.	३६	४	अ.	३७	४०	वि.	४	४७	७	२१	३१	२४	मेष			५	२४	१९	२४	२	५	४०	४६	भ. ४/४७ तक, **सूर्य सायन कर्क में ७/३, दक्षिणायन** (B)
अवम		११	श.	५७	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	**एकादशी तिथिक्षय,**
३४	५९	१२	र.	४९	५४	भर.	३०	३४	सु.	२८	५१	कौ.	२३	४६	८	२२	आ.१	२५	वृष	४४	५	५	२५	१९	२४	२	६	३८	२	**सूर्य आर्द्रा में २/१७, बुध कर्क में ४०/१७,** (C)
३४	५९	१३	चं.	४१	५२	कृत्ति.	२४	३९	धृ.	१९	४०	ग.	१५	५३	९	२३	२	२६	वृष			५	२५	१९	२४	२	७	३५	१८	भ. ४१/५२ बाद, **सोमप्रदोष व्रत,**
३४	५९	१४	मं.	३३	५६	रोहि.	१८	४२	शू.	१०	२५	वि.	७	५४	१०	२४	३	२७	मिथुन	४५	४९	५	२५	१९	२५	२	८	३२	३४	भ. ७/५४ तक, **बुध पुष्य में ५९/५,**
३४	५८	३०	बु.	२६	२९	मृग.	१३	७	गं. वृ.	१ ५३	२६ ३	च.	०	१२	११	२५	४	२८	मिथुन			५	२५	१९	२५	२	९	२९	५०	

(A) शुक्र भर. में ३९/३६, (B) **एवम् वर्षा ऋतु प्रारम्भ, योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.)** (देखें पृष्ठ 14), (C) **योगिनी एकादशी व्रत (वै.), शक आषाढ़ प्रारम्भ,**

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १९ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	४	२	२	०	११	१०	४
३	६	६	२४	७	१८	७	२८	२८
४६	१७	४२	१५	५१	५४	१४	२०	२०
१२	३८	३०	५७	४८	७	२	५	५
५७	७९२	३३	९७	१३	६३	२	३	३
१७	३०	४५	११	४१	१८	२१	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१९ जून)



लोकभविष्य-रा. मं. का समसप्तक व मंगल-शनि का षडष्टक इस पक्ष में भयंकर बाढ़-वर्षा किंवा वायुवेग आदि प्राकृतिक प्रकोप से अनेकत्र हानि के योग बनाता है। मिथुनस्थ सू.बु. एवं आर्द्रा नक्षत्र के सूर्य-गुरु देश में जोरदार वर्षा के योग बनाते हैं। तूफान, भयंकर बाढ़ आदि से जन-धनहानि भी संभव है। इस चान्द्रमास में पांच गुरुवार होने से पश्चिमी देशों में कहीं युद्धादि से अशान्ति हो-

''यत्र मासे पंचवारा: जायन्ते च बृहस्पते:।
विग्रह: पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में सोना, चांदी में घटाबढ़ी, के बाद तेजी, तेल-तिलहन एवं अनाजों में जोरदार तेजी रहे। १५ जून तक तेजी से लाभ लें। १६ से २१ जून तक बाजार कमजोर रहें। २२, २३ जून को तेल तिलहन गुड़, खाण्ड तेज; २४ जून को सोना, चांदी मन्दे रहें।

आकाश-लक्षण- जून १२, १३, १५, १६, १७, २२, २३ एवं २४ को पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., चण्डीगढ़, दिल्ली, राजस्थान, उ. प्रदेश आदि में जोरदार वर्षा के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२५ जून)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २५ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	४	३	२	०	११	१०	४
९	३	१०	३	९	२५	७	२८	२८
२९	३०	६	२१	१४	१७	२६	१	१
४९	४९	२३	३५	०	९	४०	०	०
५७	८०९	३४	८२	१३	६४	१	३	३
१५	४७	१७	२	४२	३३	४६	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जून	श. आषाढ़	मु. ज़िल्हिज	चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२६ जून से १० जुलाई, सन् २०२५ ई.) (दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु) ६ जुला. को गु. पूर्व में उदित हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा। सायं बु. पश्चिमक्षितिज में और मं. इससे काफी ऊपर दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५८	१	गु.	१९	५७	आर्द्रा	८	२१	ध्रु.	४५	३४	ब.	१९	५७	१२	२६	५	२९	कर्क	५०	३४	५	२६	१९	२५	२	१०	२७	५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, शुक्र कृत्ति. में १७/१०, (A)
३४	५७	२	शु.	१४	४३	पुन.	४	४९	व्या.	३९	१९	कौ.	१४	४३	१३	२७	६	मु.१	कर्क			५	२६	१९	२५	२	११	२४	२०	श्रीजगदीश रथोत्सव (रथयात्रा) पुरी (B)
३४	५६	३	श.	११	९	पुष्य	२	५३	ह.	३४	३१	ग.	११	९	१४	२८	७	२	कर्क			५	२६	१९	२५	२	१२	२१	३५	भ. ४०/२१ बाद, गुरु आर्द्रा २ में २१/४०,
३४	५६	४	र.	९	२९	आश्ले.	२	४९	व.	३१	१८	वि.	९	२९	१५	२९	८	३	सिंह	२	४९	५	२७	१९	२५	२	१३	१८	४९	भ. ९/२९ तक, शुक्र वृष में २१/४८,
३४	५५	५	चं.	९	५२	मघा	४	४४	सि.	२९	४२	बा.	९	५२	१६	३०	९	४	सिंह			५	२७	१९	२५	२	१४	१६	३	मंगल पू. फा. में ३७/५, कुमार षष्ठी,
३४	५४	६	मं.	१२	१३	पू.फा.	८	३५	व्य.	२९	३६	तै.	१२	१३	१७	जु.१	१०	५	कन्या	२४	५१	५	२७	१९	२५	२	१५	१३	१६	विवस्वत् सप्तमी, जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	७	बु.	१६	१६	उ.फा.	१४	७	व.	३०	४५	व.	१६	१६	१८	२	११	६	कन्या			५	२८	१९	२५	२	१६	१०	२९	भ. १६/१६ से ४८/५४ तक,
३४	५२	८	गु.	२१	३६	हस्त	२०	५५	प.	३२	४७	ब.	२१	३६	१९	३	१२	७	तुला	५४	३७	५	२८	१९	२५	२	१७	७	४२	श्रीदुर्गाष्टमी,
३४	५०	९	शु.	२७	३८	चित्रा	२८	२२	शि.	३५	१६	कौ.	२७	३८	२०	४	१३	८	तुला			५	२९	१९	२५	२	१८	४	५४	नेप्च्यून वक्री ५४/७, आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त,
३४	४९	१०	श.	३३	४४	स्वाती	३५	५४	सि.	३७	४५	तै.	०	४१	२१	५	१४	९	तुला			५	२९	१९	२५	२	१९	२	६	नवरात्र-पारणा,
३४	४८	११	र.	३९	२३	विशा.	४२	५९	सा.	३९	५३	व.	६	३३	२२	६	१५	१०	वृश्चिक	२६	१८	५	३०	१९	२५	२	१९	५९	१८	भ. ६/३३ से ३९/२३ तक, सूर्य पुन. में ०/४५ (C)
३४	४६	१२	चं.	४४	१०	अनु.	४९	१३	शु.	४१	२०	ब.	११	४६	२३	७	१६	११	वृश्चिक			५	३०	१९	२४	२	२०	५६	३०	बुध आश्ले. में ०/३७,
३४	४४	१३	मं.	४७	४९	ज्येष्ठा	५४	२०	शु.	४१	५५	कौ.	१५	५९	२४	८	१७	१२	धनु	५४	२०	५	३१	१९	२४	२	२१	५३	४२	शुक्र रोहि. में २७/१५, भौमप्रदोष व्रत,
३४	४३	१४	बु.	५०	१५	मूल	५८	१६	ब्र.	४१	३३	ग.	१९	२	२५	९	१८	१३	धनु			५	३१	१९	२४	२	२२	५०	५३	भ. ५०/१५ बाद, गुरुबाल्य समाप्त ५ घं. ३० मि.,
३४	४१	१५	गु	५१	२७	पू.षा.	६०	०	ऐं.	४०	१४	वि.	२०	५१	२६	१०	१९	१४	धनु			५	३२	१९	२४	२	२३	४८	४	भ. २०/५१ तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, श्रीगुरु पूर्णिमा (D)

गुरु उदित ६ जुलाई

(A) आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) (पुष्ययोग ७ घं. २२ मि. बाद), मुहर्रम (हिज़री सन् १४४७) मु. प्रारम्भ, (C) गुरु उदित ५ घं. ३० मि., हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु-शयनोत्सव, (D) (व्यासपूजा), चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, श्रीशिव-शयनोत्सव,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	४	३	२	१	११	१०	४
१७	१९	१४	१३	११	३	७	२७	२७
७	११	४२	१	३	५८	३८	३५	३५
४२	३७	५७	२८	२७	३२	१	३३	३३
५२	७९३	३४	६९	१३	६५	०	३	३
१२	८	५६	२५	३८	५६	५८	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	हस्त ३	पू.फा. २	पुष्य ३	आर्द्रा २	कृत्ति. ३	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. २

कुण्डली सूर्योदय (३ जुला.)



लोकभविष्य-मंगल की शनि पर दृष्टि होने से कहीं भयंकर अशान्ति का संकेत मिलता है। गतपक्ष में सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश दिन में होने से देश में कहीं अकाल की स्थिति से जनजीवन संकटापन्न रहे- **''दिवार्द्रां याति चेद् भानुर्जलभक्षणकारकः।''** सूर्य के साथ गुरु मिथुन में होने से राजनीतिज्ञों में परस्पर विद्वेष से कष्टप्रद घटनाएं होंगी-

''मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र..............................।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में अनाज, तिलहन, तेल, घी, सोना-चांदी मन्दे रहें। २८ से ३० जून के मध्य तेल, घी, तिलहन, सोना, चांदी में तेजी से तुरन्त लाभ लें। ६-७ जुलाई को सभी बाजारों में तेजी का उछाला आएगा, तुरन्त नफा बुक करें।

आकाश-लक्षण- जून, २६, २८, २९, ३०, जुलाई ६, ७, ८ को उ.खण्ड, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., म.प्र., हि.प्र., महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल एवं बिहार में अनेकत्र जोरदार वर्षा एवं वायु का प्रभाव रहे।

कुण्डली सूर्योदय (१० जुला.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १० जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	४	३	२	१	११	१०	४
२३	१३	१८	१८	१२	११	७	२७	२७
४८	४१	४९	४६	३८	४३	४२	१३	१३
४	१८	०	१७	३७	१२	४२	१७	१७
५७	७६४	३५	३४	१३	६६	०	३	३
१२	५१	२६	३४	३१	५८	१६	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	पू.षा. २	पू.फा. २	आश्ले. २	आर्द्रा २	रोहि. २	उ.भा. २	पू.भा. ३	उ.फा. २

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, श्रावण कृष्ण पक्ष ८															तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(११ से २४ जुलाई, सन् २०२५ ई.) (दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु)
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. आषाढ़	अं. जुलाई	श. आषाढ़	मु. मुहर्रम				सूर्योदय		सूर्यास्त						पक्षान्त में बु. पश्चिम में विलीन हो जाएगा। प्रात: गु. पूर्व में, शु. पूर्वकपाल में और श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा। सायं मं. पश्चिम में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	३९	१	शु.	५१	३१	पू.षा.	१	१	वै.	३८	०	बा.	२१	२९	२७	११	२०	१५	मकर	१६	३०	५	३२	१९	२४	२	२४	४५	१६	
३४	३७	२	श.	५०	३४	उ.षा.	२	४०	वि.	३४	५६	तै.	२१	२	२८	१२	२१	१६	मकर			५	३३	१९	२३	२	२५	४२	२८	अशून्य शयन व्रत,
३४	३५	३	र.	४८	४४	श्रव.	३	२०	प्री.	३१	८	व.	१९	४०	२९	१३	२२	१७	कुम्भ	३३	२०	५	३३	१९	२३	२	२६	३९	४०	भ. १९/४० से ४८/४४ तक, पंचक प्रारम्भ ३३/२०, (A)
३४	३३	४	चं.	४६	५	धनि.	३	९	आ.	२६	३९	ब.	१७	२४	३०	१४	२३	१८	कुम्भ			५	३४	१९	२३	२	२७	३६	५२	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	३१	५	मं.	४२	४२	शत.	२	११	सौ.	२१	३४	कौ.	१४	२३	३१	१५	२४	१९	मीन	४५	५९	५	३४	१९	२२	२	२८	३४	५	
३४	२८	६	बु.	३८	३८	पू.भा. उ.भा.	० ५८	३० ८	शो.	१५	५५	ग.	१०	४०	श्रा.१	१६	२५	२०	मीन			५	३५	१९	२२	२	२९	३१	१९	भ. ३८/३८ बाद, सं. सूर्य कर्क में २९/५२, मु. ४५, (B)
३४	२६	७	गु.	३३	५४	रेव.	५५	८	अ.	९	४३	वि.	६	१५	२	१७	२६	२१	मेष	५५	८	५	३५	१९	२२	३	०	२८	३३	भ. ६/१५ तक, पंचक समाप्त ५५/८,
३४	२३	८	शु.	२८	३५	अश्वि.	५१	३४	सु. धृ.	३ ५५	१ ५०	बा.	१	१४	३	१८	२७	२२	मेष			५	३६	१९	२१	३	१	२५	४८	बुध वक्री ११/३५,
३४	२१	९	श.	२२	४४	भर.	४७	३२	शू.	४८	१६	ग.	२२	४४	४	१९	२८	२३	मेष			५	३६	१९	२१	३	२	२३	३	भ. ४९/४० बाद, सूर्य पुष्य में ५९/२५,
३४	१८	१०	र.	१६	३०	कृत्ति.	४३	१०	गं.	४०	२७	वि.	१६	३०	५	२०	२९	२४	वृष	१	२८	५	३७	१९	२०	३	३	२०	१९	भ. १६/३० तक, शुक्र मृग. में १८/१७, राहु पू.भा. २, (C)
३४	१६	११	चं.	१०	३	रोहि.	३८	४३	वृ.	३२	३२	बा.	१०	३	६	२१	३०	२५	वृष			५	३८	१९	२०	३	४	१७	३६	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३४	१३	१२	मं.	३	४०	मृग.	३४	२६	ध्रु.	२४	४४	तै.	३	४०	७	२२	३१	२६	मिथुन	६	३१	५	३८	१९	१९	३	५	१४	५४	भ. ५७/३४ बाद, सूर्य सायन सिंह में ३३/२५, (D)
अवम		१३	मं.	५७	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३४	१०	१४	बु.	५२	५	आर्द्रा	३०	३८	व्या.	१७	१७	वि.	२४	४८	८	२३	श्रा.१	२७	मिथुन			५	३९	१९	१९	३	६	१२	१३	भ. २४/४८ तक, मंगल उ.फा. में ७/२२, बुध पश्चिम (E)
३४	७	३०	गु.	४७	३३	पुन.	२७	४०	ह.	१०	२७	च.	१९	४९	९	२४	२	२८	कर्क	१३	१८	५	३९	१९	१८	३	७	९	३२	हरियाली अमा,

(A) गुरु आर्द्रा ३ में ३/४५, शनि वक्री १०/१२, (B) पुण्यकाल सारा दिन, (C) केतु पू.फा. ४ में २७/४५, (D) भौमप्रदोष व्रत, (E) में अस्त १९ घं. १९ मि., श्रावण-शिवरात्रि, शक श्रावण प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १८ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ १ २५ ४८	० १ ५ २४	४ २३ ३४ ३१	३ २१ २१ २९	२ १४ २६ १२	१ २० ४२ ४३	११ ७ ४२ ०	१० २६ ४७ ५१	४ २६ ४७ ५१
५७ १५	७५१ ११	३६ ०	१ २८	१३ २१	६८ १	० ३२	३ ११	३ ११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	अश्वि. १	पू.फा. ४	आश्ले. ३	आर्द्रा ३	रोहि. ४	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय (१८ जुला.)



लोकभविष्य-इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं एवं श्रावण कृष्ण पक्ष नवमी के दिन भी शनिवार है। अत: देश में दुर्भिक्ष की स्थिति से कहीं जनता को स्थानान्तरण करना पड़े- **"दुर्भिक्षं पञ्च मन्देषु।"** नवमी के दिन शनिवार होने से कार्तिक में कहीं विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने से सत्ता-हस्तान्तरण हो- **"श्रावणे नवमीयुक्त: शनि: सन्तापकारक:। छत्रभंगं विजानीयादाश्विनान्ते न संशय:।।"**

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में सिक्का, कली, गेहूं आदि अनाज, चावल, दालवाना, घी, तेल, तिलहन एवं सीमेंट तेज रहें। सोना-चांदी में घटा-बढ़ी चले। १६ जुलाई को रुई, सूत, बादाम, सुपारी, गुड़, खाण्ड, तेल, तिलहन, सोना-चांदी, तेज रहें, अनाज-दालें मन्दी रहें। १८ से २३ जुलाई के मध्य बाजार प्राय: तेज रहें, फिर अचानक मन्दी बनेगी, सावधान रहें।

आकाश-लक्षण- जुलाई १३, १४ एवं १६ से २० जुलाई के अन्तराल में किंवा २३ जुलाई के लगभग अनेकत्र विशेषत: भारत के पश्चिमी भागों में वर्षा, बाढ़, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से विशेष जन-धनहानि के योग हैं।

कुण्डली सूर्योदय (२४ जुला.)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २४ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३ ७ ९ ३२	२ २६ ४८ १९	४ २७ ११ ४०	३ २० ० ३६	२ १५ ४५ ४७	१ २७ ३२ ३५	११ ७ ३७ १५	१० २६ २८ ४६	४ २६ २८ ४६
५७ १९	८३२ ५६	३६ २७	२९ २३	१३ ८	६८ ४३	१ ८	३ ११	३ ११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
-	-	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, श्रावण शुक्ल पक्ष ९

(२५ जुलाई से ९ अगस्त, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु)

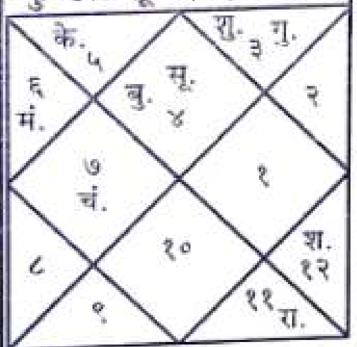
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				बु. अस्त रहेगा। प्रातः गु. शु. को पूर्व में और श. को पश्चिमकपाल में देखें। सायं मं. पश्चिम में दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	जुलाई	श्रावण	मुहर्रम		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४	१	शु.	४४	१७	पुष्य	२५	५१	व. सि.	४ ५९	३० ३८	किं.	१५	५५	१०	२५	३	२९	कर्क			५	४०	१९	१८	३	८	६	५१	
३४	१	२	श.	४२	३३	आश्ले.	२५	२८	व्य.	५६	२	बा.	१३	२५	११	२६	४	३०	सिंह	२५	२८	५	४१	१९	१७	३	९	४	१२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र मिथुन में ८/१०,
३३	५८	३	र.	४२	३२	मघा	२६	४४	व.	५३	४९	तै.	१२	३२	१२	२७	५	स.१	सिंह			५	४१	१९	१६	३	१०	१	३३	मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज), सफर मु. प्रारम्भ,
३३	५५	४	चं.	४४	१६	पू.फा.	२९	४३	प.	५२	५९	व.	१३	२२	१३	२८	६	२	कन्या	४५	४५	५	४२	१९	१६	३	१०	५८	५४	भ. १३/२२ से ४४/१६ तक, मंगल कन्या में ३५/४०, (A)
३३	५२	५	मं.	४७	४०	उ.फा.	३४	२२	शि.	५३	२४	ब.	१५	५८	१४	२९	७	३	कन्या			५	४२	१९	१५	३	११	५६	१६	वक्री बुध पुष्य में २६/४५, नागपंचमी,
३३	४८	६	बु.	५२	२६	हस्त	४०	२४	सि.	५४	५२	कौ.	२०	३	१५	३०	८	४	कन्या			५	४३	१९	१४	३	१२	५३	३९	यूरेनस कृत्ति. ४ में ४०/२२, श्रीकल्कि जयन्ती,
३३	४५	७	गु.	५८	७	चित्रा	४७	२४	सा.	५७	०	ग.	२५	१६	१६	३१	९	५	तुला	१३	४९	५	४४	१९	१४	३	१३	५१	२	भ. ५८/७ बाद, शुक्र आर्द्रा में ५५/३, (B)
३३	४२	८	शु.	६०	०	स्वाती	५४	५०	शु.	५९	२३	वि.	३१	६	१७	अ.१	१०	६	तुला			५	४४	१९	१३	३	१४	४८	२६	भ. ३१/६ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अगस्त प्रारम्भ,
३३	३८	८	श.	४	८	विशा.	६०	०	शु.	६०	०	ब.	४	८	१८	२	११	७	वृश्चिक	४५	११	५	४५	१९	१२	३	१५	४५	५०	सूर्य आश्ले. में ५५/५७,
३३	३५	९	र.	९	५२	विशा.	२	४	शु.	१	३७	कौ.	९	५२	१९	३	१२	८	वृश्चिक			५	४५	१९	११	३	१६	४३	१५	
३३	३१	१०	चं.	१४	४९	अनु.	८	३५	ब्र.	३	१७	ग.	१४	४९	२०	४	१३	९	वृश्चिक			५	४६	१९	११	३	१७	४०	४१	भ. ४६/४२ बाद,
३३	२८	११	मं.	१८	३४	ज्येष्ठा	१४	०	ऐं.	४	४	वि.	१८	३४	२१	५	१४	१०	धनु	१४	०	५	४७	१९	१०	३	१८	३८	७	भ. १८/३४ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३३	२४	१२	बु.	२०	५३	मूल	१८	१	वै.	३	४६	बा.	२०	५३	२२	६	१५	११	धनु			५	४७	१९	९	३	१९	३५	३४	प्रदोषव्रत,
३३	२०	१३	गु.	२१	४०	पू.षा.	२०	३३	वि. प्री.	२ ५९	१७ ३६	तै.	२१	४०	२३	७	१६	१२	मकर	३५	५७	५	४८	१९	८	३	२०	३३	२	
३३	१७	१४	शु.	२०	५९	उ.षा.	२१	३८	आ.	५५	४९	व.	२०	५९	२४	८	१७	१३	मकर			५	४९	१९	७	३	२१	३०	३१	भ. २०/५९ से ५०/० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
३३	१३	१५	श.	१८	५९	श्रव.	२१	२५	सौ.	५१	४	ब.	१८	५९	२५	९	१८	१४	कुम्भ	५०	५४	५	४९	१९	६	३	२२	२८	०	पंचक प्रारम्भ ५०/५४, श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन(C)

(A) गुरु आर्द्रा ४ में ८/७, (B) गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (C) (राखी) (देखें पृष्ठ 14), श्री अमरनाथ यात्रा (क.), ऋक् उपाकर्म, शुक्ल कृष्ण यजु उपाक्रम,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	५	३	२	२	११	१०	४
१४	९	२	१४	१७	६	७	२६	२६
४८	२	५	४७	२९	४५	२५	३	३
२७	४८	९	४	५०	३	२४	२०	२०
५७	७११	३६	४३	१२	६९	१	३	३
२४	३०	५९	५८	४९	३०	५४	११	११
–	–	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	स्वा. १	उ.फा. २	पुष्य ४	आर्द्रा ४	आर्द्रा १	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. ४

कुण्डली सूर्योदय (१ अग.)

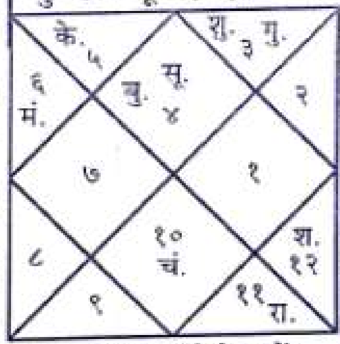


लोकभविष्य-इस पक्ष में शनि-मंगल का समसप्तक योग देश किंवा विश्व में उग्रवाद, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि से भयावह स्थिति का संकेत देता है। **''युद्धदौ शनि-माहेयौ''**-प्रमाणानुसार ये विश्व के किसी देश में युद्धात्मक वातावरण से जन-धनहानि करेंगे। कन्या राशि का मंगल चीन-ताइवान, अमेरिका आदि में प्रथित व्यक्तियों के लिए परेशानीकारक है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-गुरु-शुक्र दोनों के आर्द्रा नक्षत्र में होने पर भारी वर्षा आदि से हानि से बाजार महंगाई की ओर बढ़ेंगे। पक्षारम्भ में २९ जुलाई तक रुई, कपास, एरण्ड आदि में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज आएंगे। मोटे अनाज प्रायः तेज रहेंगे। रुई-चांदी में जोरदार तेजी का वातावरण रहे। ३१ जुलाई को बाजार अचानक मन्दे होंगे। २ अग. से पक्षान्त तक तेल, घी, तिलहन, गुड़, खाण्ड, सोना-चांदी तेज रहें।

आकाश-लक्षण- जुलाई २६, २७, २८, २९, ३१ एवं अगस्त ९, १० के लगभग श.मं. की स्थिति एवं अन्य ग्रहस्थिति से उ. भारत एवं पश्चिमी भागों में बाढ़, वर्षा, तूफान वायुवेगादि से हानिभय प्रतीत होता है।

कुण्डली सूर्योदय (९ अग.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ९ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	९	५	३	२	२	११	१०	४
२२	१८	७	१०	१९	१६	७	२५	२५
२८	२०	२	१९	१०	३	७	३७	३७
१	५४	५०	४१	५७	३८	३६	५३	५३
५७	८१२	३७	११	१२	७०	२	३	३
३०	२१	३०	५५	२४	१५	३७	११	११
–	–	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. २	श्रव. ३	उ.फा. ४	पुष्य ३	आर्द्रा ४	आर्द्रा ३	उ.भा. २	पू.भा. २	पू.फा. ४

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०

(१० से २३ अगस्त, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा-शरद ऋतु)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. सफर	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	पक्षारम्भ से ही बु. प्रातः पूर्व में दिखाई देना शुरु हो जाएगा। इस समय पूर्व में गु. शु. परस्पर काफी आमने दीखेंगे। म. पश्चिम कपाल में होगा। सायंकाल मं. पश्चिम में दिखाई देगा। २० अग. को प्रातः अरुणोदय से पहले पूर्व में गु. शु. के मध्य चन्द्रमा का मनमोहक दृश्य होगा।
३३	९	१	र.	१५	५१	धनि.	२०	६	शो.	४५	३०	कौ.	१५	५१	२६	१०	१९	१५	कुम्भ			५	५०	१९	५	३	२३	२५	३१	बुध पूर्व में उदित ५ घं. ५० मि.,
३३	५	२	चं.	११	४८	शत.	१७	५४	अ.	३९	१७	ग.	११	४८	२७	११	२०	१६	कुम्भ			५	५०	१९	४	३	२४	२३	३	भ. ३९/२८ बाद, बुध मार्गी १७/५२,
३३	१	३	मं.	७	५	पू.भा.	१५	२	सु.	३२	३६	वि.	७	५	२८	१२	२१	१७	मीन	०	४९	५	५१	१९	३	३	२५	२०	३६	भ. ७/५ तक, गुरु पुन. १ में ५८/७, शुक्र पुन. में २०/६२ (A)
३२	५७	४	बु.	१	५३	उ.भा.	११	४१	धृ.	२५	३३	बा.	१	५३	२९	१३	२२	२८	मीन			५	५२	१९	३	३	२६	१८	१०	मंगल हस्त में ४१/३९,
अवम		५	बु.	५६	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथिक्षय,
३२	५३	६	गु.	५०	३७	रेव.	८	३	शू.	१८	१९	ग.	२३	२८	३०	१४	२३	१९	मेष	८	३	५	५२	१९	२	३	२७	१५	४६	भ. ५०/३७ बाद, पंचक समाप्त ८/३,
३२	४९	७	शु.	४४	५२	अश्वि.	४	१७	गं.	१०	५८	वि.	१७	४३	३१	१५	२४	२०	मेष			५	५३	१९	१	३	२८	१३	२४	भ. १७/४३ तक, श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (B)
३२	४५	८	श.	३९	१३	भर.	०	३२	वृ.	३	४०	बा.	१२	२	भा.१	१६	२५	२१	वृष	१४	३४	५	५३	१९	००	३	२९	११	२	सं. सूर्य मघा सिंह में ४९/५८, मु. ३०, पुण्यकाल (C)
						कृत्ति.	५६	५२	ध्रु.	५६	२६																			
३२	४१	९	र.	३३	४६	रोहि.	५३	२८	व्या.	४९	२४	तै.	६	२९	२	१७	२६	२२	वृष			५	५४	१८	५९	४	०	८	४३	श्रीगुग्गानवमी,
३२	३७	१०	चं.	२८	४०	मृग.	५०	२७	ह.	४२	४२	वि.	१	९	३	१८	२७	२३	मिथुन	२१	५३	५	५५	१८	५७	४	१	६	२५	भ. १/९ से २८/४० तक, वक्री शनि उ.भा. १ में १८/३०,
३२	३३	११	मं.	२४	३	आर्द्रा	४८	०	व.	३६	२५	बा.	२४	३	४	१९	२८	२४	मिथुन			५	५५	१८	५६	४	२	४	८	अजा एकादशी व्रत (स.),
३२	२९	१२	बु.	२०	७	पुन.	४६	१७	सि.	३०	४३	तै.	२०	७	५	२०	२९	२५	कर्क	३१	३७	५	५६	१८	५५	४	३	१	५४	शुक्र कर्क में ४८/३०, प्रदोषव्रत,
३२	२५	१३	गु.	१७	१	पुष्य	४५	२९	व्य.	२५	४३	व.	१७	१	६	२१	३०	२६	कर्क			५	५६	१८	५४	४	३	५९	४०	भ. १७/१ से ४६/० तक, बुध आश्ले. में ५६/३, (D)
३२	२१	१४	शु.	१४	५७	आश्ले.	४५	४८	व.	२१	३४	श.	१४	५७	७	२२	३१	२७	सिंह	४५	४८	५	५७	१८	५३	४	४	५७	२८	सूर्य सायन कन्या में ५०/१८, शरद ऋतु प्रारम्भ,
३२	१६	३०	श.	१४	६	मघा	४७	२२	प.	१८	२४	ना.	१४	६	८	२३	भा.१	२८	सिंह			५	५७	१८	५२	४	५	५५	१८	शुक्र पुष्य में ३६/४०, शनैश्चरी अमा, कुशोत्पाटिनी (E)

(A) कज्जली तृतीया, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), बहुला चतुर्थी, (B) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), भारत स्वतन्त्रता दिवस, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (D) पर्युषण पर्व (जैन), (E) अमा, पिठोरी अमा, शक भाद्रपद प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १६ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	५	३	२	२	११	१०	४
२९	२६	११	११	२०	२४	६	२५	२५
११	१८	२६	१९	३६	१७	४७	१५	१५
३	५७	४१	२६	३१	१३	३२	३८	३८
५७	८५१	३७	३६	११	७०	३	३	३
४०	३२	५७	५३	५९	५२	१२	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

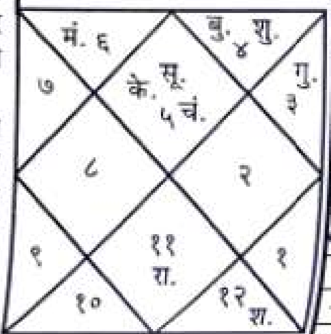
कुण्डली सूर्योदय (१६ अग.)



लोकभविष्य-इस पक्ष में राहु-मंगल का षडष्टक एवं शनि-मंगल का समसप्तक देश में कहीं राजनैतिक विप्लव किंवा उग्रवादजन्य अशान्ति का संकेत देते हैं। कहीं अग्निकाण्ड किंवा सीमावर्ती क्षेत्र पर अशान्ति से हानि भी संभव है। गुरु-शुक्र पुनर्वसु नक्षत्र में होने से देश के कुछ क्षेत्रों में अनावृष्टि से दुर्भिक्ष की स्थिति बनाएंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में १३ अगस्त तक सभी अनाज, घी, गुड़, खाण्ड, चीनी में जोरदार तेजी से लाभ लें। तेल, तिलहन, लाल मिर्च, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन में भी तेजी रहेगी। लेकिन १२ अगस्त को सोना, चांदी, रुई, सूत में मन्दी संभव है। १३ से २० अगस्त के मध्य रुई, चांदी, सोना, तिलहन, घी, दालवाना, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें। शेयर बाजार मन्दे रहें। २३ अग. के लगभग बाजार अचानक मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (२३ अग.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २३ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	२	३	११	१०	४
५	२	१५	१७	२१	२	६	२४	२४
५५	५१	५३	५९	५८	३५	२३	५३	५३
१८	१५	४५	४७	५६	१	४१	२२	२२
५७	७७५	३८	८२	११	७१	३	३	३
५१	५७	२५	१	२९	२६	४१	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश-लक्षण- अगस्त ११ से १४ एवं १६, १७, १८, १९, २०, २१, २३ अगस्त को भारत के अनेक प्रान्तों पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., उ. प्रदेश, चण्डीगढ़, उत्तराखण्ड एवं बिहार आदि में जोरदार वर्षा के योग हैं, कहीं बाढ़/वर्षा से हानि भी संभव है।

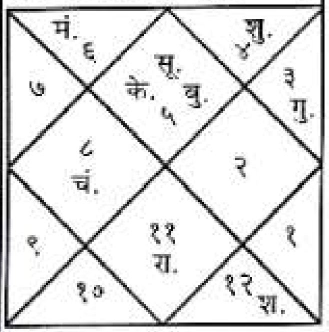
श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११															तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२४ अगस्त से ७ सितम्बर, सन् २०२५ ई.) (दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु)
दिनमान		तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		प्र. भाद्रपद	अं. अगस्त	श. भाद्रपद	मु. सफ़र				सूर्योदय		सूर्यास्त						३० अग. को बु. पूर्व में अस्त हो जाएगा। प्रातः गु. शु. को पूर्व में और श. को पश्चिम में देखें। सायं मं. पश्चिम में दिखाई देगा। ४ सितंबर से अगस्त्य तारा दृश्य होगा। ७ सितं. को खग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	१२	१	र.	१४	३५	पू.फा.	५०	१८	शि.	१६	१७	ब.	१४	३५	९	२४	२	२९	सिंह			५	५८	१८	५१	४	६	५३	९	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
३२	८	२	चं.	१६	३०	उ.फा.	५४	३७	सि.	१५	१७	कौ.	१६	३०	१०	२५	३	१.१	कन्या	६	१४	५	५९	१८	५०	४	७	५१	२	मेला श्री डेरा बाबा गोसाईंआणां, कुराली (पं.), (A)
३२	४	३	मं.	१९	४८	हस्त	६०	०	सा.	१५	२२	ग.	१९	४८	११	२६	४	२	कन्या			५	५९	१८	४९	४	८	४८	५६	भ. ५२/६ बाद, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, (B)
३१	५९	४	बु.	२४	२१	हस्त	०	१२	शु.	१६	२५	वि.	२४	२१	१२	२७	५	३	तुला	३३	२४	६	००	१८	४८	४	९	४६	५१	भ. २४/२१ तक, श्रीसिद्धिविनायक व्रत,
३१	५५	५	गु.	२९	५१	चित्रा	६	४७	शु.	१८	१३	बा.	२९	५१	१३	२८	६	४	तुला			६	००	१८	४६	४	१०	४४	४८	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
३१	५१	६	शु.	३५	५२	स्वाती	१४	३	ब्र.	२०	२८	कौ.	२	५२	१४	२९	७	५	तुला			६	१	१८	४५	४	११	४२	४६	सूर्यषष्ठी व्रत,
३१	४६	७	श.	४१	५२	विशा.	२१	२८	ऐं.	२२	४९	ग.	८	५२	१५	३०	८	६	वृश्चिक	४	३८	६	२	१८	४४	४	१२	४०	४५	भ. ४१/५२ बाद, सूर्य पू.फा. में ३१/१५, **बुध मघा सिंह** (C)
३१	४२	८	र.	४७	१९	अनु.	२८	३१	वै.	२४	५१	वि.	१४	३६	१६	३१	९	७	वृश्चिक			६	२	१८	४३	४	१३	३८	४६	भ. १४/३६ तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (D)
३१	३७	९	चं.	५१	४१	ज्येष्ठा	३४	४०	वि.	२६	११	बा.	१९	३०	१७	सि.१	१०	८	धनु	३४	४०	६	३	१८	४२	४	१४	३६	४८	श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव), सितम्बर प्रारम्भ,
३१	३३	१०	मं.	५४	३४	मूल	३९	२९	प्री.	२६	२९	तै.	२३	७	१८	२	११	९	धनु			६	३	१८	४०	४	१५	३४	५१	
३१	२८	११	बु.	५५	४५	पू.षा.	४२	४०	आ.	२५	३२	व.	२५	७	१९	३	१२	१०	मकर	५८	१३	६	४	१८	३९	४	१६	३२	५६	भ. २५/७ से ५५/४५ तक, मंगल चित्रा में २१/३०, (E)
३१	२४	१२	गु	५५	९	उ.षा.	४४	८	सौ.	२३	१२	ब.	२५	२७	२०	४	१३	११	मकर			६	४	१८	३८	४	१७	३१	२	श्रीवामन जयन्ती, अगस्त्य उदित, **खग्रास चन्द्रग्रहण 7 सितं.**
३१	१९	१३	शु.	५२	५०	श्रव.	४३	५३	शो.	१९	२८	कौ.	२३	५९	२१	५	१४	१२	मकर			६	५	१८	३७	४	१८	२९	१०	प्रदोषव्रत,
३१	१५	१४	श.	४८	५९	धनि.	४२	४	अ.	१४	२४	ग.	२०	५४	२२	६	१५	१३	कुम्भ	१३	८	६	५	१८	३५	४	१९	२७	१९	भ. ४८/५९ बाद, पंचक प्रारम्भ १३/८, बुध पू.फा. में (F)
३१	१०	१५	र.	४३	५१	शत.	३८	५७	सु.	८	१०	वि.	१६	२२	२३	७	१६	१४	कुम्भ			६	६	१८	३४	४	२०	२५	२९	भ. १६/२२ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा, (G)

(A) रवि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ, (B) श्रीवराह जयन्ती (देखें पृष्ठ 14), साम उपाकर्म, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त २० घं. २८ मि.), (C) में २६/४५, गुरु पुन. २ में ११/४५, बुध पूर्व में अस्त ६ घं. २ मि., मुस्ताभरण (संतान) सप्तमी व्रत, (D) दूर्वाष्टमी व्रत, (E) शुक्र आश्ले. में ४४/३०, पद्मा एकादशी व्रत (स.), (F) २६/३६, यूरेनस वक्री १०/४३, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, ग्रहणशूले, (G) पूर्णिमा का महालय श्राद्ध (देखें पृ. 21), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 20),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३१ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	५	४	२	३	११	१०	४
१३	१०	२१	०	२३	१२	५	२४	२४
३८	४२	२	५८	२८	८	५२	२७	२७
४६	५०	५३	२७	३१	३२	३३	५६	५६
५८	७९१	३८	१११	१०	७२	४	३	३
२	५०	५६	३५	४९	०	८	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. १	अनु. ३	हस्त ४	मघा १	पुन. २	पुष्य ३	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

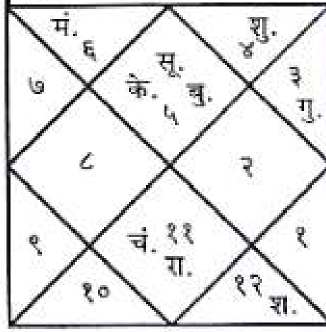
कुण्डली सूर्योदय (३१ अग.)



लोकभविष्य–इस चान्द्रमास में पांच रविवार होने से देश के किसी प्रान्त में अवर्षण से दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं प्रथित व्यक्ति का पद रिक्त हो–"**यत्र मासे रवेर्वारा: जायन्ते पञ्च संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च तदा तत्र महद्भयम्।।**" इस पक्ष की तृतीया को भौमवार होने से वर्षा की कमी से कृषिकर्म में परेशानी रहे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–२८, २९ अगस्त को जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूं, ज्वार, बाजरा, चावल, रुई, सूत तेज रहें। ३० अगस्त को पुन. २ का गुरु अनाजों, दालवाना एवं चांदी, रुई में मन्दीकारक है। ३ सितं. से ७ सितं. के मध्य अनाज-सोना-चांदी, तांबा, पीतल तेज हों, रुई, तूअर, चावल मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (७ सितं.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ७ सितं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	५	४	२	३	११	१०	४
२०	१०	२५	१४	२४	२०	५	२४	२४
२५	२९	३६	२१	४२	३४	२२	५	५
३०	३०	३९	५८	१७	२	४०	४१	४१
५८	८४४	३९	११६	१०	७२	४	३	३
१२	४९	२१	१०	१०	३०	२५	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. ३	शत. २	चित्रा १	पू.फा. १	पुन. २	आश्ले. २	उ.भा. १	पू.भा. २	पू.फा. ४

आकाश-लक्षण- अगस्त २४, २९, ३०, सितम्बर ३, ४, ६ एवं ७ को पंजाब, हरियाणा, उ. प्र., हि. प्र., उत्तराखण्ड, जम्मू-कश्मीर, दार्जीलिंग एवं चिरापूंजी में कहीं बादलचाल, कहीं खण्डवृष्टि किंवा कहीं वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं।

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(८ से २१ सितम्बर, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु)

बु. अस्त रहेगा। प्रातः शु. पूर्व में, गु. पूर्वकपाल में और श. पश्चिम में दिखाई देगा। मं. सायं पश्चिमकपाल में होगा।

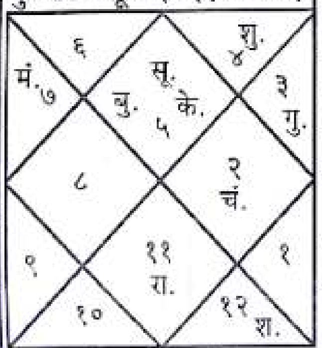
दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. र.उ.ले.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	६	१	चं.	३७	४३	पू.भा.	३४	४९	धृ.	०	५९	बा.	१०	४७	२४	८	१७	१५	मीन	२०	५४	६	७	१८	३३	४	२१	२३	४२	महालय (पितृपक्ष) प्रारम्भ, प्रतिपदा का श्राद्ध, ग्रहणशूल,
									शू.	५३	३																			
३१	१	२	मं.	३०	५५	उ.भा.	२९	५९	गं.	४४	३७	तै.	४	१९	२५	९	१८	१६	मीन			६	७	१८	३२	४	२२	२१	५६	भ. ५७/२० बाद, द्वितीया का श्राद्ध, ग्रहणशूल,
३०	५७	३	बु.	२३	४५	रेव.	२४	४८	वृ.	३५	५८	वि.	२३	४५	२६	१०	१९	१७	मेष	२४	४८	६	८	१८	३०	४	२३	२०	१२	भ. २३/४५ तक, पंचक समाप्त २४/४८, तृतीया का श्राद्ध, (A)
३०	५२	४	गु.	१६	३३	अश्वि.	१९	३३	ध्रु.	२७	२०	बा.	१६	३३	२७	११	२०	१८	मेष			६	८	१८	२९	४	२४	१८	३०	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
३०	४८	५	शु.	९	३४	भर.	१४	३३	व्या.	१८	५५	तै.	९	३४	२८	१२	२१	१९	वृष	२८	२२	६	९	१८	२८	४	२५	१६	५०	षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
३०	४३	६	श.	३	६	कृत्ति.	१०	४	ह.	१०	५६	व.	३	६	२९	१३	२२	२०	वृष			६	९	१८	२७	४	२६	१५	१३	भ. ३/६ से ३०/१० तक, सूर्य उ.फा. में २३/४९, (B)
अवम		७	श.	५७	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३०	३९	८	र.	५२	२०	रोहि.	६	१७	व.	३	३२	बा.	२४	४८	३०	१४	२३	२१	मिथुन	३४	४३	६	१०	१८	२५	४	२७	१३	३७	शुक्र मघा सिंह में ४५/१६, अष्टमी का श्राद्ध, (C)
									सि.	५६	५२																			
३०	३४	९	चं.	४८	२२	मृग.	३	२२	व्य.	५०	५८	तै.	२०	२१	३१	१५	२४	२२	मिथुन			६	११	१८	२४	४	२८	१२	३	बुध कन्या में १२/२२, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
३०	२९	१०	मं.	४५	२७	आर्द्रा	१	२८	व.	४५	५६	व.	१६	५२	आ.१	१६	२५	२३	कर्क	४५	४३	६	११	१८	२३	४	२९	१०	३२	भ. १६/५२ से ४५/२७ तक, सं. सूर्य कन्या में ४९/०, (D)
३०	२५	११	बु.	४३	४०	पुन.	०	३६	प.	४१	४७	ब.	१४	३४	२	१७	२६	२४	कर्क			६	१२	१८	२२	५	०	९	३	एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.),
३०	२०	१२	गु.	४३	०	पुष्य	०	५१	शि.	३८	३१	कौ.	१३	२०	३	१८	२७	२५	कर्क			६	१२	१८	२०	५	१	७	३६	वक्री नेप्च्यून उ.भा. १ में ५७/१०, द्वादशी का श्राद्ध, (E)
३०	१६	१३	शु.	४३	३०	आश्ले.	२	१३	सि.	३६	१०	ग.	१३	१५	४	१९	२८	२६	सिंह	२	१३	६	१३	१८	१९	५	२	६	११	भ. ४३/३० बाद, गुरु पुन. ३ में १७/१५, (F)
३०	११	१४	श.	४५	८	मघा	४	४०	सा.	३४	४२	वि.	१४	२०	५	२०	२९	२७	सिंह			६	१३	१८	१८	५	३	४	४८	भ. १४/२० तक, बुध हस्त में ४६/३९, चतुर्दशी (G)
३०	६	३०	र.	४७	५४	पू.फा.	८	१५	शु.	३४	६	च.	१६	३१	६	२१	३०	२८	कन्या	२४	१९	६	१४	१८	१६	५	४	३	२७	राहु पू.भा १, केतु पू.फा. ३ में २०/२५, सर्वपितृ अमा, (H)

(A) चतुर्थी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 15), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, ग्रहणशूल, (B) मंगल तुला में ३८/३, बुध उ.फा. में २४/४२, सप्तमी का श्राद्ध, (C) श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, (D) मु. ४५, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, दशमी का श्राद्ध, (E) संन्यासियों का श्राद्ध, (F) त्रयोदशी का श्राद्ध, मघा श्राद्ध, प्रदोषव्रत, (G) (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध, (H) चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय (पितृपक्ष) समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १४ सितं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	६	४	२	३	११	१०	४
२७	२१	०	२७	२५	२९	४	२३	२३
१३	२७	१३	४२	५१	२	५१	४३	४३
३७	४०	२८	५५	१४	५५	७	२६	२६
५८	८६२	३९	१११	९	७२	४	३	३
२७	२	४८	१२	२५	५७	३६	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

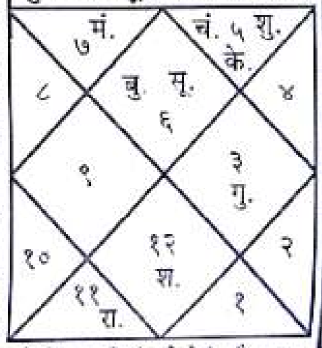
कुण्डली सूर्योदय (१४ सितं.)



लोकभविष्य–कन्या राशि में सूर्य-बुध का संगम जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में मंहगाईकारक है। शनि-मंगल का षडष्टक कहीं आन्तरिक उपद्रव किंवा भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप का कारण बनेगा। मीनस्थ शनि की गुरु पर विशेष दृष्टि होने से देश में राजनैतिक परिप्रेक्ष्य से समय चिन्तनीय रहेगा। १५ सितं. के बाद सूर्य-बुध का शनि के साथ समसप्तक योग विशिष्ट राजनीतिज्ञ के लिए कष्टप्रद रहेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में ग्रहण का फल विशेष दिखाई देगा। १३, १४, १५, १८ सितं. को सभी अनाज, हल्दी, सोना, तेल, सभी तिलहन, गुड़, घी आदि में जोरदार तेजी से लाभ रहे, शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक रहेगी। २० सितं. के लगभग बाजार मन्दे रहें, बाजार का रुख देखकर काम करें। २१, २२ सितं. को बाजार तेज रहें। २३ से २५ सितं. के मध्य बाजारों में उठापटक रहेगी। २७ सितं. को गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, सूत, हल्दी तेज रहे। **आकाश-लक्षण**- सितं. ३, ६, १३, १४, १९, २०, २१, २२, २५ एवं २७ सितम्बर को हि.प्र., कश्मीर, उ.खण्ड, दार्जीलिंग एवं चिरापूंजी में कहीं बादलचाल, कहीं खण्डवृष्टि एवं कहीं वायुवेग के साथ वर्षा हो।

कुण्डली सूर्योदय (२१ सितं.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ सितं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	५	२	४	११	१०	४
४	२४	४	१०	२६	७	४	२३	२३
३	३४	५३	२०	५४	३४	१८	२१	२१
२७	९	२६	१३	४४	५८	३९	११	११
५८	७४४	४०	१०४	८	७३	४	३	३
४१	३३	१५	७	३६	२३	४०	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(२२ सितम्बर से ७ अक्तूबर, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु)

पक्षमध्य (३० सितं.) से बु. सायं पश्चिम में उदित हो जाएगा। इससे ऊपर मं. नजर आएगा। प्रातः शु. पूर्व में, गु. पूर्वकपाल में और श. पश्चिमक्षितिज में होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	आश्विन	सितंबर	भाद्रपद	र.उ.अ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३०	२	१	चं.	५१	४४	उ.फा.	१२	५३	शु.	३४	१९	किं.	१९	४९	७	२२	३१	२९	कन्या			६	१४	१८	१५	५	५	२	८	सूर्य सायन तुला में ४४/०, दक्षिणगोल प्रारम्भ, विषुवदिन,(A)
२९	५७	२	मं.	५६	३१	हस्त	१८	३१	ब्र.	३५	१८	बा.	२४	७	८	२३	आ.१	३०	तुला	५१	४२	६	१५	१८	१४	५	६	०	५१	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल स्वा. में ३६/४५, (B)
२९	५३	३	बु.	६०	०	चित्रा	२५	१	ऐं.	३६	५६	तै.	२९	१९	९	२४	२	र.१	तुला			६	१६	१८	१३	५	६	५९	३६	रवि उस्सानी मु. प्रारम्भ,
२९	४८	३	गु.	२	६	स्वाती	३२	१०	वै.	३९	२	ग.	२	६	१०	२५	३	२	तुला			६	१६	१८	११	५	७	५८	२३	भ. ३५/७ बाद, शुक्र पू.फा. में ३९/४६,
२९	४३	४	शु.	८	१०	विशा.	३९	४०	वि.	४१	२२	वि.	८	१०	११	२६	४	३	वृश्चिक	२२	४७	६	१७	१८	१०	५	८	५७	१२	भ. ८/१० तक, श्री उपाङ्गललिता व्रत,
२९	३९	५	श.	१४	२५	अनु.	४७	६	प्री.	४३	४०	बा.	१४	२५	१२	२७	५	४	वृश्चिक			६	१७	१८	९	५	९	५६	२	सूर्य हस्त में २/६,
२९	३४	६	र.	२०	२२	ज्येष्ठा	५४	१	आ.	४५	३३	तै.	२०	२२	१३	२८	६	५	धनु	५४	१	६	१८	१८	८	५	१०	५४	५४	बुध चित्रा में ४२/०,
२९	२९	७	चं.	२५	३२	मूल	५९	५६	सौ.	४६	४३	व.	२५	३२	१४	२९	७	६	धनु			६	१९	१८	६	५	११	५३	४८	भ. २५/३२ से ५७/३० तक, सरस्वती आवाहन,
२९	२५	८	मं.	२९	२७	पू.षा.	६०	०	शो.	४६	४८	ब.	२९	२७	१५	३०	८	७	धनु			६	१९	१८	५	५	१२	५२	४४	बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ५ मि., सरस्वती-पूजन,(C)
२९	२०	९	बु.	३१	४३	पू.षा.	४	२५	अ.	४५	३४	बा.	०	३५	१६	अ.१	९	८	मकर	२०	१८	६	२०	१८	४	५	१३	५१	४२	सरस्वती के लिए बलिदान, महानवमी (पूजा, उपवास(D)
२९	१६	१०	गु.	३२	६	उ.षा.	७	११	सु.	४२	४९	तै.	१	५५	१७	२	१०	९	मकर			६	२०	१८	३	५	१४	५०	४१	बुध तुला में ४५/५८, नवरात्र-पारणा, सरस्वती विसर्जन,(E)
२९	११	११	शु.	३०	३०	श्रव.	८	२	धृ.	३८	३१	व.	१	१८	१८	३	११	१०	कुम्भ	३७	४५	६	२१	१८	१	५	१५	४९	४२	भ. १/१८ से ३०/३० तक, पंचक प्रारम्भ ३७/४५, (F)
२९	६	१२	श.	२६	५९	धनि.	६	५८	शू.	३२	४१	बा.	२६	५९	१९	४	१२	११	कुम्भ			६	२२	१८	०	५	१६	४८	४४	शनिप्रदोष व्रत,
२९	२	१३	र.	२१	४४	शत. पू.भा.	४ ५९	६ ४३	गं.	२५	२८	तै.	२१	४४	२०	५	१३	१२	मीन	४५	५६	६	२२	१७	५९	५	१७	४७	४९	
२८	५७	१४	चं.	१५	२	उ.भा.	५४	६	वृ.	१७	५	व.	१५	२	२१	६	१४	१३	मीन			६	२३	१७	५८	५	१८	४६	५५	भ. १५/२ से ४१/७ तक, शुक्र उ.फा. में २९/१८, शरत्(G)
२८	५३	१५	मं.	७	१४	रेव.	४७	४०	ध्रु. व्या.	७ ५७	४९ ५८	ब.	७	१४	२२	७	१५	१४	मेष	४७	४०	६	२३	१७	५६	५	१९	४६	४	पंचक समाप्त ४७/४०, बुध स्वा. में १४/४८, (H)

(A) नाना-नानी का श्राद्ध, शारद (आश्विन) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (B) शक आश्विन प्रारम्भ, (C)श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, (D) एवम् बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, अक्तूबर प्रारम्भ, (E) विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (F) वक्री शनि पू.भा. ४ में ४३/२५, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), भरत-मिलाप, (G) पूर्णिमा, कोजागर व्रत (लक्ष्मी-इन्द्र पूजा), श्रीसत्यनारायण व्रत, (H) श्रीवाल्मीकि जयन्ती, कार्त्तिकस्नान प्रारम्भ, श्रीपराशर जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३० सितं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	६	५	२	४	११	१०	४
१२	१२	१०	२५	२८	१८	३	२२	२२
५२	५५	५८	२२	७	३७	३६	५२	५२
४४	५४	१	३२	२१	२१	५९	३४	३४
५८	७४२	४०	९५	७	७३	४	३	३
५८	३६	४९	४०	२४	५०	३३	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त १	मूल ४	स्वा. २	चित्रा १	पुन. ३	पू.फा. २	उ.भा. १	पू.भा. १	पू.फा. ३

कुण्डली सूर्योदय (३० सितं.)



लोकभविष्य–सूर्य-शनि का समसप्तक, शनि-मंगल का षडष्टक एवं मंगल-राहु का नवपंचमयोग विश्व में अघटित घटनाओं का कारण बनेगा। किसी देश में छत्रभंग किंवा प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त हो। किसी भूभाग पर भयंकर आकाल की स्थिति बने– **''छत्रस्य भंगः सलिलस्य नाशो लोकेषु पीड़ा पशुवित्तहानिः।''** वक्री शनि पू.भा. में होने से धान्यादि महंगे हो एवं वर्षा की भारी कमी हो–

''पूर्वाभाद्रपदस्थोऽपि यदा स्याद्भानुनन्दनः।
तदा सस्यमहर्घं स्यादल्पवृष्टिः प्रजायते।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ से ३० सितं. तक अनाज, तिलहन, तेल, सोना, गुड़, खाण्ड, घी, रुई, हल्दी में तेजी से लाभ रहे। २ अक्तूबर को सोना-चांदी तेज; तेल, तिलहन आदि मन्दे रहें। ३ से ६ अक्तूबर के मध्य गेहूं आदि अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, दालवाना तेज रहें।

आकाश-लक्षण– सितं. २३, २५, २७, २८, ३०, अक्तूबर २, ३, ६ एवं ७ अक्तूबर के लगभग श्रीलंका, आसाम, बंगलादेश, एवं उ. भारत में कहीं बादलचाल एवं कहीं वायुवेग के साथ मौसम में परिवर्तन हो।

कुण्डली सूर्योदय (७ अक्तू.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ७ अक्तू.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	६	६	२	४	११	१०	४
१९	१७	१५	६	२८	२७	३	२२	२२
४६	३४	४५	१४	५६	१५	५	३०	३०
४	४४	१	३२	३	१३	४३	१९	१९
५९	८९८	४१	८९	६	७४	४	३	३
११	४९	१५	५१	२२	१०	२०	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त ३	रेव. १	स्वा. ३	चित्रा ४	पुन. ३	उ.फा. १	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, कार्त्तिक कृष्ण पक्ष १४

(८ से २१ अक्तूबर, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु)

प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में, गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न और श. पश्चिमक्षितिज में होगा। सायं मं. बु. पश्चिमक्षितिज में परस्पर परमासन्न देखे जा सकते हैं।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	अं. अक्तूबर	श. आश्विन	मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	मं.	५८	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२८	४८	२	बु.	४९	५६	अश्वि.	४०	५१	ह.	४७	५१	तै.	२४	२०	२३	८	१६	१५	मेष			६	२४	१७	५५	५	२०	४५	१४	
२८	४३	३	गु.	४१	१४	भर.	३४	४	व.	३७	४८	व.	१५	३१	२४	९	१७	१६	वृष	४७	२४	६	२५	१७	५४	५	२१	४४	२७	भ. १५/३१ से ४१/१४ तक, शुक्र कन्या में १०/५७,
२८	३९	४	शु.	३३	२	कृत्ति.	२७	४४	सि.	२८	९	ब.	७	८	२५	१०	१८	१७	वृष			६	२५	१७	५३	५	२२	४३	४१	सूर्य चित्रा में ३४/२७, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (A)
२८	३४	५	श.	२५	४३	रोहि.	२२	१४	व्य.	१९	११	तै.	२५	४३	२६	११	१९	१८	मिथुन	४९	५४	६	२६	१७	५२	५	२३	४२	५८	
२८	३०	६	र.	१९	३५	मृग.	१७	५४	व.	११	१०	व.	१९	३५	२७	१२	२०	१९	मिथुन			६	२७	१७	५१	५	२४	४२	१८	भ. १९/३५ से ४७/१२ तक,
२८	२५	७	चं.	१४	५२	आर्द्रा	१४	५८	प. शि.	४ ५८	१६ ३९	ब.	१४	५२	२८	१३	२१	२०	कर्क	५८	४८	६	२७	१७	४९	५	२५	४१	३९	मंगल विशा. में ७/४, अहोई अष्टमी (श्रीमहाकाली-पूजन),
२८	२१	८	मं.	११	४४	पुन.	१३	३५	सि.	५४	१६	कौ.	११	४४	२९	१४	२२	२१	कर्क			६	२८	१७	४८	५	२६	४१	३	वक्री यूरेनस कृत्ति. ३ में ४/२२, प्लूटो मार्गी ४/३९,
२८	१६	९	बु.	१०	१२	पुष्य	१३	४७	सा.	५१	९	ग.	१०	१२	३०	१५	२३	२२	कर्क			६	२९	१७	४७	५	२७	४०	२९	भ. ४०/१५ बाद,
२८	१२	१०	गु.	१०	१५	आश्ले.	१५	३१	शु.	४९	१२	वि.	१०	१५	३१	१६	२४	२३	सिंह	१५	३१	६	२९	१७	४६	५	२८	३९	५८	भ. १०/१५ तक, बुध विशा. में ३१/३३,
२८	७	११	शु.	११	४५	मघा	१८	३८	शु.	४८	१६	बा.	११	४५	का.१	१७	२५	२४	सिंह			६	३०	१७	४५	५	२९	३९	२९	सं. सूर्य तुला में १८/१०, मु. ३०, पुण्यकाल सारा दिन,(B)
२८	३	१२	श.	१४	३१	पू.फा.	२२	५६	ब्र.	४८	१२	तै.	१४	३१	२	१८	२६	२५	कन्या	३९	१२	६	३१	१७	४४	६	०	३९	२	गुरु पुन. ४ कर्क में ३३/०, शनिप्रदोष व्रत, (C)
२७	५८	१३	र.	१८	२०	उ.फा.	२८	१५	ऐं.	४८	५१	व.	१८	२०	३	१९	२७	२६	कन्या			६	३१	१७	४३	६	१	३८	३७	भ. १८/२० से ५०/४५ तक, धन-त्रयोदशी, (D)
२७	५४	१४	चं.	२३	२	हस्त	३४	२१	वै.	५०	६	श.	२३	२	४	२०	२८	२७	कन्या			६	३२	१७	४२	६	२	३८	१४	नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली),
२७	४९	३०	मं.	२८	२४	चित्रा	४१	४	वि.	५१	४७	ना.	२८	२४	५	२१	२९	२८	तुला	७	३७	६	३३	१७	४१	६	३	३७	५४	दीपावली (देखें पृष्ठ 15), श्रीमहालक्ष्मी-पूजन, (E)

(A) (देखें पृष्ठ 15), करक चतुर्थी (करवा चौथ) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ ११), (B) शुक्र हस्त में १४/३३, रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी, (C) यम-प्रीत्यर्थ दीपदान, (D) श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (E) भौमवती अमा, श्रीमहावीरनिर्वाण दिवस (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १४ अक्तू.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	६	६	२	५	११	१०	४
२६	२९	२०	१६	२९	५	२	२२	२२
४१	४३	३५	२६	३७	५५	३६	८	८
३	५२	३	२०	१८	१८	२०	४	४
५९	८०२	४१	८४	५	७४	४	३	३
२७	३५	४०	१	१५	२८	०	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (१४ अक्तू.)

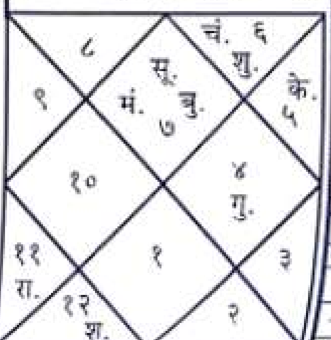


लोकभविष्य-सूर्य-शनि के प्रतियोग से चालू कार्यों में गतिरोध होगा। सामाजिक मतभेद बढ़ेंगे। राजनैतिक झगड़े उजागर होंगे। अमा के दिन मंगलवार होने से देश के किसी प्रान्तविशेष में घोर दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं भयंकर अग्निकाण्ड से हानि हो-

''कार्त्तिके चेदमावस्यायां भौमवारो भवेद्यदि।
भौमे भूमौ महावह्नि रविर्युद्धाय भूभृताम्।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख-कन्यास्थ शुक्र-सूर्य का शनि के साथ समसप्तक खड़ी फसलों की हानि होने से चावलादि धान्य महंगे होंगे- **''कन्याराशिं गते शुक्रे सर्वं सस्यं विनश्यति। तत्र धान्य-महर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः।।''** मंगलवारी दीपावली भी घोर दुर्भिक्ष का संकेत देती है। अनाज, घी, तेल, तिलहन सभी बहुत महंगे रहेंगे। कर्कराशि में गुरु के आने पर कहीं दुर्भिक्ष से जनजीवन त्रस्त हो;-**''कर्कराशिं गते जीवे दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्धतत्पराः।।''** महंगाई से जनता परेशान रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२१ अक्तू.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २१ अक्तू.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	६	३	५	११	१०	४
३	२७	२५	२५	०	१४	२	२१	२१
३७	५७	२८	५३	१०	३७	९	४५	४५
५४	९	१३	३१	२७	२२	३६	४८	४८
५९	७९७	४२	७६	४	७४	३	३	३
४२	२८	८	२८	२	४३	३३	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.

आकाश-लक्षण- अक्तूबर ९, १०, ११, १३, १४, १६, १७, १८, १९ एवं २१ अक्तूबर के लगभग कुछ प्रान्तों में वायुवेग

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(२२ अक्तूबर से ५ नवम्बर, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु)

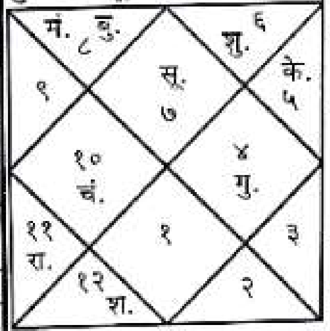
दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तूबर	श. आश्विन	मु. र.उ.सा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	सायंकाल पश्चिम में दिखाई दे रहा मं. पक्षान्त में लुप्त हो जाएगा। इस समय बु. भी बहुत कम समय के लिए दृष्टिगोचर होगा। श. सायंकाल पूर्व में उदित होकर पूरी रात दीखेगा। प्रातः शुक्र पूर्व में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा।
२७	४५	१	बु.	३४	१८	स्वाती	४८	१४	प्री.	५३	४९	किं.	१	२१	६	२२	३०	२९	तुला			६	३४	१७	४०	६	४	३७	३५	गोक्रीड़ा, गोवर्धनपूजा, अन्नकूट, बलिपूजा,
२७	४१	२	गु.	४०	३१	विशा.	५५	४१	आ.	५६	२	बा.	७	२५	७	२३	का.१	३०	वृश्चिक	३८	४८	६	३४	१७	३९	६	५	३७	१९	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, सूर्य सायन वृश्चिक में ६/५७, (A)
२७	३६	३	शु.	४६	५१	अनु.	६०	०	सौ.	५८	१७	तै.	१३	४१	८	२४	२	ज.१	वृश्चिक			६	३५	१७	३८	६	६	३७	४	सूर्य स्वा. में ०/१३, बुध वृश्चिक में १५/६, (B)
२७	३२	४	श.	५३	१	अनु.	३	८	शो.	६०	०	व.	१९	५५	९	२५	३	२	वृश्चिक			६	३६	१७	३७	६	७	३६	५२	भ. १९/५५ से ५३/१ तक,
२७	२८	५	रा.	५८	४०	ज्येष्ठा	१०	२४	शो.	०	२३	ब.	२५	५०	१०	२६	४	३	धनु	१०	२४	६	३७	१७	३६	६	८	३६	४१	ज्ञानपंचमी (जैन),
२७	२४	६	चं.	६०	०	मूल	१७	४	अ.	२	३	कौ.	३१	२	११	२७	५	४	धनु			६	३७	१७	३५	६	९	३६	३२	मंगल वृश्चिक में २२/४२, बुध अनु. में ७/१६, शुक्र चित्रा (C)
२७	१९	६	मं.	३	२४	पू.षा.	२२	४६	सु.	३	०	तै.	३	२४	१२	२८	६	५	मकर	३९	२	६	३८	१७	३४	६	१०	३६	२४	
२७	१५	७	बु.	६	५०	उ.षा.	२७	६	धृ.	२	५९	व.	६	५०	१३	२९	७	६	मकर			६	३९	१७	३३	६	११	३६	१८	भ. ६/५० से ३७/४२ तक,
२७	११	८	गु.	८	३७	श्रव.	२९	४४	शू. गं.	१ ५८	४४ ५८	ब.	८	३७	१४	३०	८	७	मकर			६	४०	१७	३२	६	१२	३६	१४	गोपाष्टमी, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
२७	७	९	शु.	८	२८	धनि.	३०	२६	वृ.	५४	३७	कौ.	८	२८	१५	३१	९	८	कुम्भ	०	२१	६	४०	१७	३१	६	१३	३६	१२	पंचक प्रारम्भ ०/२१,
२७	३	१०	श.	६	१६	शत.	२९	८	ध्रु.	४८	४०	ग.	६	१६	१६	न.१	१०	९	कुम्भ			६	४१	१७	३०	६	१४	३६	११	भ. ३४/१३ बाद, मंगल अनु. में ४/०, देवप्रबोधिनी (D)
२६	५९	११	र.	२	४	पू.भा.	२५	५४	व्या.	४१	१०	वि.	२	४	१७	२	११	१०	मीन	११	५१	६	४२	१७	२९	६	१५	३६	११	भ. २/४ तक, शुक्र तुला में १६/२२, देवप्रबोधिनी (E)
अवम		१२	र.	५६	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२६	५५	१३	चं.	४८	२८	उ.भा.	२०	५६	ह.	३२	२०	कौ.	२२	१३	१८	३	१२	११	मीन			६	४३	१७	२९	६	१६	३६	१३	सोमप्रदोष व्रत,
२६	५१	१४	मं.	३९	४२	रेव.	१४	३६	व.	२२	२७	ग.	१४	५	१९	४	१३	१२	मेष	१४	३६	६	४४	१७	२८	६	१७	३६	१७	भ.३९/४२ बाद, पंचक समाप्त १४/३६, वैकुण्ठ चतुर्दशी (F)
२६	४७	१५	बु.	३०	११	अश्वि भर	७ ५९	१९ ३३	सि.	११	४८	वि.	४	५८	२०	५	१४	१३	मेष			६	४४	१७	२७	६	१८	३६	२३	भ. ४/५८ तक, मंगल अस्त १७ घं. २७ मि., कार्त्तिक (G)

(A) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, श्रीविश्वकर्मा-पूजा, यम द्वितीया/भाईदूज, शक कार्त्तिक प्रारम्भ, (B) जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ, (C) में ५६/२४, सूर्य षष्ठी (छठ) बिहार, (D) एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 16), भीष्म पंचक प्रारम्भ, नवम्बर प्रारम्भ, (E) एकादशी व्रत (वै.), देवप्रबोधोत्सव, त्रिस्पृशा महाद्वादशी, तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, (F) (देखें पृष्ठ 16), (G) पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, भीष्म पंचक समाप्त, कार्त्तिक स्नान समाप्त, श्रीगुरु नानक जयन्ती, मेला पुष्करराज (राज.),

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३० अक्तू.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	७	७	३	५	११	१०	४
१२	१६	१	६	०	२५	१	२१	२१
३६	२०	४९	१९	४०	५०	४०	१७	१७
१४	२४	३७	२८	१३	५१	१७	११	११
५९	७७६	४२	५७	२	७४	२	३	३
५८	५०	४१	५९	२२	५७	५२	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. २	श्रव. २	विशा. ४	अनु. १	पुन. ४	चित्रा १	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

कुण्डली सूर्योदय (३० अक्तू.)



लोकभविष्य-वृश्चिकस्थ मंगल की राहु पर विशेष दृष्टि है, सूर्य-शनि का षडष्टक शुभंकर नहीं-''यदा वृश्चिक-राशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घं सर्व-द्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्।।''

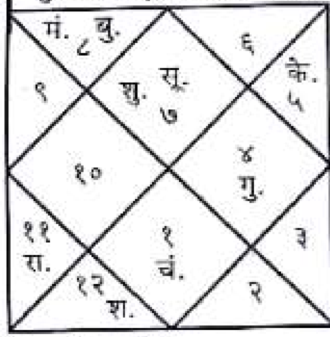
लेकिन पक्षान्त के लगभग तुलाराशि में शुक्र के आने पर देश में सुख-शान्ति रहे, कहीं राजनीतिज्ञों में विरोध भी रहे-

''यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशिं प्रवर्तते।
मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किञ्चित् किंचित् विरोधकृत्।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख-२३, २४ अक्तूबर के लगभग घी, तेल, तिलहन, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, मिर्च, हींग एवं अनाज तेज रहें। २७ अक्तू. को मंगल के वृश्चिक में आने पर गुड़, घी, रुई, सोना, चांदी तेज रहें लेकिन अनाज, दालें मन्दी रहें। १ से ३ नवं. के मध्य रुई, कपास, गेहूं, लाल मिर्च, चांदी, अफीम, सोना, गुड़, खाण्ड में तेजी मन्दी के झटके आएंगे।

आकाश-लक्षण- अक्तू. २४, २७, २८ एवं नवम्बर १,२ एवं ५ नवं. के लगभग भारत में कहीं बादलचाल एवं वायुवेग के साथ मौसम में परिवर्तन होगा।

कुण्डली सूर्योदय (५ नवं.)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ५ नवं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	७	७	३	६	११	१०	४
१८	१०	६	११	०	३	१	२०	२०
३६	४१	६	९	५१	२०	२४	५८	५८
२४	१०	३४	४५	३५	५५	२७	७	७
६०	९९८	४३	३१	१	७५	२	३	३
७	४	२	३८	१४	५	११	११	११
–	–	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
–	–	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ४	अश्वि. ४	अनु. २	अनु. ३	पुन. ४	चित्रा ४	पू.भा. ४	पू.भा. १	पू.फा. ३

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(६ से २० नवम्बर, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु)

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. कार्तिक	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)			
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.
२६	४३	१	गु.	२०	२४	कृत्ति.	५१	४६	व्य. व.	० ४९	५० ४९	कौ.	२०	२४	२१	६	१५	१४	वृष	१२	३२	६	४५	१७	२६	६	१९	३६	३१
२६	३९	२	शु.	१०	४८	रोहि.	४४	२७	प.	३९	१२	ग.	१०	४८	२२	७	१६	१५	वृष			६	४६	१७	२६	६	२०	३६	४०
२६	३५	३	श.	१	५३	मृग.	३८	७	शि.	२९	२१	वि.	१	५३	२३	८	१७	१६	मिथुन	११	७	६	४७	१७	२५	६	२१	३६	५१
अवम		४	श.	५४	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२६	३१	५	र.	४७	४८	आर्द्रा	३३	११	सि.	२०	३५	कौ.	२०	५७	२४	९	१८	१७	मिथुन			६	४८	१७	२४	६	२२	३७	४
२६	२८	६	चं.	४३	१८	पुन.	२९	५७	सा.	१३	१०	ग.	१५	३३	२५	१०	१९	१८	कर्क	१५	३५	६	४९	१७	२४	६	२३	३७	१९
२६	२४	७	मं.	४०	४८	पुष्य	२८	४०	शु.	७	१६	वि.	१२	१	२६	११	२०	१९	कर्क			६	४९	१७	२३	६	२४	३७	३७
२६	२०	८	बु.	४०	२०	आश्ले.	२९	२१	शु.	२	५९	बा.	१०	३४	२७	१२	२१	२०	सिंह	२९	२१	६	५०	१७	२२	६	२५	३७	५६
२६	१७	९	गु.	४१	४७	मघा	३१	५६	ब्र. ऐं.	० ५८	१७ ५९	तै.	११	३	२८	१३	२२	२१	सिंह			६	५१	१७	२२	६	२६	३८	१७
२६	१३	१०	शु.	४४	५४	पू.फा.	३६	१०	वै.	५८	५३	व.	१३	१९	२९	१४	२३	२२	कन्या	५२	२८	६	५२	१७	२१	६	२७	३८	४०
२६	१०	११	श.	४९	२१	उ.फा.	४१	४३	वि.	५९	४२	ब.	१७	७	३०	१५	२४	२३	कन्या			६	५३	१७	२१	६	२८	३९	५
२६	७	१२	र.	५४	४५	हस्त	४८	१२	प्री.	६०	०	कौ.	२२	३	मा.१	१६	२५	२४	कन्या			६	५४	१७	२०	६	२९	३९	३१
२६	३	१३	चं.	६०	०	चित्रा	५५	१७	प्री.	१	१	ग.	२७	४४	२	१७	२६	२५	तुला	२१	४१	६	५५	१७	२०	७	०	४०	०
२६	०	१३	मं.	०	४४	स्वाती	६०	०	आ.	३	३	व.	०	४४	३	१८	२७	२६	तुला			६	५५	१७	१९	७	१	४०	३०
२५	५७	१४	बु.	६	५८	स्वाती	२	३७	सौ.	५	९	श.	६	५८	४	१९	२८	२७	वृश्चिक	५३	१३	६	५६	१७	१९	७	२	४१	२
२५	५४	३०	गु.	१३	१९	विशा.	१०	३	शो.	७	१८	ना.	१३	१९	५	२०	२९	२८	वृश्चिक			६	५७	१७	१९	७	३	४१	३६

मं. अस्त है। बु. भी १४ नवं. को पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः शु. पूर्वक्षितिज में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा। सायं श. पूर्व में होगा।

सूर्य विशा. में २०/१८, पद्मक योग (१४ घं. ५२ मि. (A)
भ. ३६/१९ बाद, शुक्र स्वा. में ३५/५२,
भ. १/५३ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
चतुर्थी तिथिक्षय,
बुध वक्री ४४/१९,
भ. ४३/१८ बाद,
भ. १२/१ तक, गुरु वक्री ३८/३०,
श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
भ. १३/१९ से ४४/५४ तक, बुध पश्चिम में अस्त (B)
उत्पन्ना एकादशीव्रत (स.),
स. सूर्य वृश्चिक में १६/४८, मु. ३०, पुण्यकाल सारा दिन,
सोमप्रदोष व्रत,
भ. ०/४४ से ३३/५२ तक, शुक्र विशा. में १३/२७,
सूर्य अनु. में ३५/०, मंगल ज्ये. में ३१/२२,
वक्री बुध विशा. में ४५/४५,

(A) से सूर्यास्त तक), पुष्करस्नान-माहात्म्य (देखें पृष्ठ 16), (B) १७ घं. २१ मि.,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १२ नवं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	७	७	३	६	११	१०	४
२५	२२	११	१२	०	१२	१	२०	२०
३७	५२	९	१६	५६	६	१०	३५	३५
५६	२१	२	६	०	५८	१२	५१	५१
६०	७७९	४३	२५	०	७५	१	३	३
२१	१०	२७	५५	१०	१४	३९	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१२ नवं.)



लोकभविष्य-इस पक्ष में पांच गुरुवार हैं। पश्चिमी भूभाग पर कहीं युद्ध से वातावरण अशान्त रहेगा। इस पक्ष में त्रयोदशी तिथिवृद्धि होने से भी विश्व में कहीं युद्धादि से वातावरण अशान्त रहेगा-

"मार्गशीर्षे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिश्च जायते।
तदा युद्धाकुला पृथ्वी प्रजा क्रंदंति नित्यशः॥"

इस पक्ष में बुध-गुरु का वक्रत्व-योग एवं वृश्चिक में सूर्य-बुध-मंगल का योग भी देश में १६ नवं. के लगभग भयंकर अग्निकांड आदि से अशान्ति का सूचक है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में अनाज, दालें, तिलहन, तेल, घी, गेहूं, अलसी में जोरदार तेजी हो। ७ से १० नवं. तक गुड़, खाण्ड तेज, अनाज मन्दे रहें। १२ से १६ नवं. एवं १९ नवं. को सोना-चांदी तेज, २० नवं. को जोरदार मन्दी के झटके बाजारों में संभव।

कुण्डली सूर्योदय (२० नवं.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २० नवं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	७	३	६	११	१०	४
३	०	१६	४	०	२२	०	२०	२०
४१	३७	५८	३७	४९	९	५९	१०	१०
३७	४३	१९	६	४	१९	५१	२५	२५
६०	७९१	४३	८१	१	७५	०	३	३
३५	५८	५५	२१	४६	२१	४९	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
–	–	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश-लक्षण- नवं. ६, ७, १०, ११, १२, १४, १६, १८, १९ एवं २० नवं. के लगभग व्यापक बादलचाल, खण्डवृष्टि एवं वर्षा के योग हैं। पंजाब, हिमाचल प्रदेश एवं हरियाणा आदि में शीत किंवा धुन्ध से यातायात बाधित होने के आसार हैं।

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७	तारीखें	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)	(२१ नवम्बर से ४ दिसम्बर, सन् २०२५ ई.) (दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु)

मं. अस्त रहेगा। बु. २७ नवं. को प्रातः पूर्व में उदित हो जाएगा। इस समय शु. पूर्वक्षितिज में बु. के समीप होगा। गु. पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। सायं श. पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. कार्तिक	मु. ज.उ.अ.	चन्द्रराशि	घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	५१	१	शु.	१९	३३	अनु.	१७	२४	अ.	९	२२	ब.	१९	३३	६	२१	३०	२९	वृश्चिक			६	५८	१७	१८	७	४	४२	११	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२५	४८	२	श.	२५	३१	ज्येष्ठा	२४	२९	सु.	११	१६	कौ.	२५	३१	७	२२	मा.१	ज.१	धनु	२४	२९	६	५९	१७	१८	७	५	४२	४८	सूर्य सायन धनु में ०/१८, जमद-उल्सानी मु. प्रारम्भ,(A)
२५	४५	३	र.	३१	२	मूल	३१	९	धृ.	१२	५१	ग.	३१	२	८	२३	२	२	धनु			७	०	१७	१८	७	६	४३	२६	वक्री बुध तुला में ३३/३४, राहु शत. ४, केतु पू.फा.(B)
२५	४२	४	चं.	३५	५४	पू.षा.	३७	१२	शू.	१३	५९	व.	३	२४	९	२४	३	३	मकर	५३	३५	७	१	१७	१७	७	७	४४	५	भ. ३/२४ से ३५/५४ तक,
२५	३९	५	मं.	३९	४९	उ.षा.	४२	२०	गं.	१४	२९	ब.	७	५२	१०	२५	४	४	मकर			७	१	१७	१७	७	८	४४	४६	बलिदानदिन श्री गुरु तेग बहादुर जी,
२५	३७	६	बु.	४२	२९	श्रव.	४६	१५	वृ.	१४	९	कौ.	११	९	११	२६	५	५	मकर			७	२	१७	१७	७	९	४५	२८	शुक्र वृश्चिक में १०/४८, चम्पा षष्ठी, स्कंद/गुह षष्ठी,
२५	३४	७	गु.	४३	३७	धनि.	४८	४१	ध्रु.	१२	४४	ग.	१३	३	१२	२७	६	६	कुम्भ	१७	४०	७	३	१७	१७	७	१०	४६	१०	भ. ४३/३७ बाद, पंचक प्रारम्भ १७/४०, बुध पूर्व में (C)
२५	३२	८	शु.	४२	५८	शत.	४९	२३	व्या.	१०	२	वि.	१३	१५	१३	२८	७	७	कुम्भ			७	४	१७	१७	७	११	४६	५४	भ. १३/१५ तक, शुक्र अनु. में ४९/४९, शनि मार्गी ५/४६,
२५	२९	९	श.	४०	२६	पू.भा.	४८	१३	ह.	५	५४	बा.	११	४२	१४	२९	८	८	मीन	३३	४१	७	५	१७	१६	७	१२	४७	३९	बुध मार्गी ४०/७,
२५	२७	१०	र.	३५	५९	उ.भा.	४५	१२	व. सि.	० ५३	१८ १०	तै.	८	१२	१५	३०	९	९	मीन			७	६	१७	१६	७	१३	४८	२४	
२५	२५	११	चं.	२९	४७	रेव.	४०	२९	व्य.	४४	४०	व.	२	५२	१६	दि.१	१०	१०	मेष	४०	२९	७	६	१७	१६	७	१४	४९	११	भ. २/५२ से २९/४७ तक, पंचक समाप्त ४०/२९, (D)
२५	२२	१२	मं.	२२	५	अश्वि.	३४	२०	व.	३५	२	बा.	२२	५	१७	२	११	११	मेष			७	७	१७	१६	७	१५	४९	५८	सूर्य ज्ये. में ४५/१६, भौमप्रदोष व्रत,
२५	२०	१३	बु.	१३	१५	भर.	२७	९	प.	२४	३२	तै.	१३	१५	१८	३	१२	१२	वृष	४०	१३	७	८	१७	१६	७	१६	५०	४७	
२५	१९	१४	गु.	३	४२	कृत्ति.	१९	२३	शि.	१३	३२	व.	३	४२	१९	४	१३	१३	वृष			७	९	१७	१६	७	१७	५१	३६	भ. ३/४२ से २८/४९ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)
अवम		१५	गु.	५३	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथिक्षय,

(A) शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ, (B) २ में १२/४२, (C) उदित ७ घं. ३ मि., मित्र सप्तमी, (D) मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती, दिसम्बर प्रारम्भ, (E) श्रीदत्त जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २८ नवं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	७	६	३	७	११	१०	४
११	८	२२	२६	०	२	०	१९	१९
४६	१६	५१	४५	२९	१२	५६	४४	४४
५४	३७	१६	५३	२५	२५	१६	५८	५८
६०	७९३	४४	१३	३	७५	०	३	३
४५	६	२२	४२	२०	२५	२	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. ३	श्रव. २	ज्ये. २	विशा. ३	पुन. ४	विशा. ४	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय (२८ नवं.)



लोकभविष्य-इस पक्ष में पूर्णिमा तिथिक्षय होने से किसी देश या प्रान्तविशेष में विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होगा। किञ्च-दुर्भिक्ष की स्थिति से जनता परेशान हो-

''मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं च समादिशेत्॥''

सूर्य के साथ शुक्र-मंगल का योग एवं अष्टमी में राहु-चन्द्र योग राजनीति में विक्षोभकारक है, उठापटक के साथ कहीं विशेष परिवर्तन संभव है। शनि, मंगल का नव-पंचमयोग भी दुर्घटना आदि का संकेत देता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख- २३ से २६ नवं. के मध्य चावल, गुड़, खाण्ड, घी, रुई, सूत, सोना, चांदी, अलसी आदि तिलहन, तेल, में तेजी, गुड़ आदि रस पदार्थ ५-६ दिन मन्दे रहें। २९ नवं. को चांदी आदि में घटाबढ़ी रहे। पक्षान्त में २ दिसं. के लगभग सोना-चांदी, चावलादि अनाज, गुड़, खाण्ड तेज रहें।

आकाश-लक्षण- नवंबर २३, २६, २८, २९ एवं २ दिसम्बर के लगभग व्यापक बादलचाल, धुन्ध किंवा कहीं खण्डवृष्टि के योग हैं। शीत से भी जन-जीवन किंवा यातायात बाधित होगा।

कुण्डली सूर्योदय (४ दिसं.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ४ दिसं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	७	६	३	७	११	१०	४
१७	३	२७	२७	०	९	०	१९	१९
५१	५९	१८	५६	६	४५	५८	२५	२५
३७	४२	१४	३८	४१	१	५	५३	५३
६०	९२०	४४	४१	४	७५	०	३	३
५१	२२	४०	४८	२५	२७	४१	११	११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ज्ये. १	कृत्ति. ३	ज्ये. ४	विशा. ३	पुन. ४	अनु. २	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, पौष कृष्ण पक्ष १८

(५ से ११ दिसम्बर, सन् २०२५ ई.)
(दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु)

मं. अस्त रहेगा। शु. भी १३ दिसं. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा। प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में और गु. पश्चिम में होगा। सायं श. पूर्वकपाल में दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प. मार्गशीर्ष	तारीखें अं. दिसंबर	तारीखें श. मार्गशीर्ष	तारीखें मु. जु. अ. सा.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१७	१	शु.	४४	२५	रोहि.	११	३१	सि. / सा.	२ / ५१	२६ / ३७	बा.	१९	११	२०	५	१४	१४	मिथुन	३७	४२	७	१०	१७	१६	७	१८	५२	२७	वक्री गुरु पुन. ३ मिथुन में २५/४२,
२५	१५	२	श.	३५	३८	मृग. / आर्द्रा	४ / ५७	५ / ३७	शु.	४१	२७	तै.	१०	१	२१	६	१५	१५	मिथुन			७	१०	१७	१६	७	१९	५३	१९	बुध वृश्चिक में ३३/९,
२५	१३	३	र.	२८	४	पुन.	५२	३०	शु.	३२	१९	वि.	१	३७	२२	७	१६	१६	कर्क	३८	३७	७	११	१७	१६	७	२०	५४	१२	भ. १/३७ से २८/४ तक, मंगल मूल धनु में ३२/४३, (A)
२५	१२	४	चं.	२२	८	पुष्य	४९	११	ब्र.	२४	३२	बा.	२२	८	२३	८	१७	१७	कर्क			७	१२	१७	१७	७	२१	५५	६	
२५	१०	५	मं.	१८	१०	आश्ले.	४७	५४	ऐं.	१८	२०	तै.	१८	१०	२४	९	१८	१८	सिंह	४७	५४	७	१३	१७	१७	७	२२	५६	१	बुध अनु. में ४८/७, शुक्र ज्ये. में २५/३१,
२५	९	६	बु.	१६	२३	मघा	४८	४६	वै.	१३	५१	व.	१६	२३	२५	१०	१९	१९	सिंह			७	१३	१७	१७	७	२३	५६	५७	भ. १६/२३ से ४६/ ३७ तक, नेप्च्यून मार्गी २६/४, (B)
२५	८	७	गु.	१६	४७	पू.फा.	५१	४३	वि.	११	४	ब.	१६	४७	२६	११	२०	२०	सिंह			७	१४	१७	१७	७	२४	५७	५४	**शुक्र अस्त १३ दिसं.**
२५	७	८	शु.	१९	१५	उ.फा.	५६	२८	प्री.	९	५२	कौ.	१९	१५	२७	१२	२१	२१	कन्या	७	४४	७	१५	१७	१७	७	२५	५८	५३	
२५	६	९	श.	२३	२६	हस्त	६०	०	आ.	१०	१	ग.	२३	२६	२८	१३	२२	२२	कन्या			७	१५	१७	१८	७	२६	५९	५३	भ. ५६/१२ बाद, शुक्र पूर्व में अस्त ७ घं. १५ मि.,
२५	५	१०	र.	२८	५४	हस्त	२	३५	सौ.	११	१२	वि.	२८	५४	२९	१४	२३	२३	तुला	३६	४	७	१६	१७	१८	७	२८	०	५४	भ. २८/५४ तक,
२५	४	११	चं.	३५	८	चित्रा	९	३९	शो.	१३	०२	ब.	२	१	पौ.१	१५	२४	२४	तुला			७	१७	१७	१८	७	२९	१	५५	सं. सूर्य मूल धनु में ५२/३७, मु. १५, पुण्यकाल अगले(C)
२५	३	१२	मं.	४१	४०	स्वाती	१७	१०	अ.	१५	१३	कौ.	८	२४	२	१६	२५	२५	तुला			७	१७	१७	१९	८	०	२	५८	
२५	३	१३	बु.	४८	७	विशा.	२४	४३	सु.	१७	२६	ग.	१४	५३	३	१७	२६	२६	वृश्चिक	७	५०	७	१८	१७	१९	८	१	४	२	भ. ४८/७ बाद, प्रदोषव्रत,
२५	२	१४	गु.	५४	१२	अनु.	३२	०	धृ.	१९	२७	वि.	२१	१०	४	१८	२७	२७	वृश्चिक			७	१८	१७	१९	८	२	५	६	भ. २१/१० तक,
२५	२	३०	शु.	५९	४८	ज्येष्ठा	३८	५०	शू.	२१	८	च.	२६	५८	५	१९	२८	२८	धनु	३८	५०	७	१९	१७	२०	८	३	६	१२	बुध ज्ये. में ५७/४,

(A) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 17), (B) शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ ७ घं. १५ मि., (C) दिन मध्याह्न तक, सफला एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १२ दिसं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	८	७	२	७	११	१०	४
२५	२७	३	५	२९	१९	१	१९	१९
५८	२९	१७	५०	२६	४८	६	०	०
५४	२३	६	५६	३५	४८	३२	२७	२७
६१	७४०	४५	७५	५	७५	१	३	३
०	३३	६	५	४५	३०	३२	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१२ दिसं.)

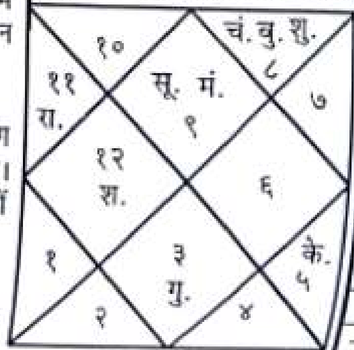


लोकभविष्य-५ दिसंबर को गुरु वक्रगति से मिथुन राशि में आता है। परिणामस्वरूप जनता को प्राकृतिक उत्पात से कष्ट, राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य रहे एवं कुछ प्रान्तों में वर्षा की कमी से किसानादि परेशान रहें- **"मिथुने च गुरुर्याति तत्राब्दे दारुणं भयम्।**
नृपाणां विग्रहस्तत्र स्वल्पं तोयं भविष्यति।।"

धनुराशिस्थ मंगल की शनि पर दृष्टि एवं सूर्य-मंगल-योग जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई होने से जनता में परेशानी करे। लेकिन धनुराशिस्थ सूर्य-मंगल पर गुरु की दृष्टि होने से कुछ प्रान्तों में सुभिक्ष से शासनतन्त्र स्थिति को नियन्त्रित कर सकेंगे-
"धनुराशिस्थितो भानुः सुभिक्षं तत्र जायते।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख-पक्षारम्भ में ५ से ९ दिसं. तक गुड़, रुई में जोरदार मन्दी, सोना, चांदी, तेल, घी, तिलहन पांच महीने तेज रहें। १५ से १८ दिसं. के मध्य बाजारों में जोरदार उठापटक रहेगी। पक्षान्त में २० दिसं. के लगभग बाजारों एवं शेयरों में तेजी से लाभ मिलेगा। **आकाश-लक्षण**- दिसं. ५ से ९ के मध्य एवं १४ से २० दिसं. के मध्य पंजाब, उ.प्र., हि.प्र. हरियाणा, जम्मू-कश्मीर एवं भूटान आदि में अनेकत्र [illegible] होगी। शीतलहर एवं [illegible]

कुण्डली सूर्योदय (११ दिसं.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ११ दिसं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	८	७	२	७	११	१०	४
३	२१	८	१५	२८	२८	१	१८	१८
६	२०	३३	१२	४३	३७	१९	३८	३८
१३	१४	५०	२६	२१	२४	२८	११	११
६१	७११	४५	८५	६	७५	२	३	३
६	४८	२६	१३	४३	३२	१६	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

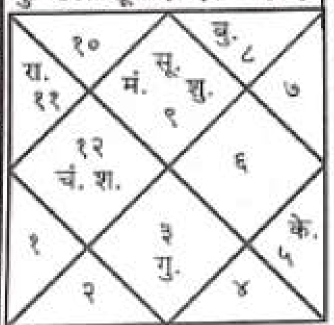
श्री वि. सं.२०८२, शाक १९४७, पौष शुक्ल पक्ष १९																तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(२० दिसं., २०२५ ई. से ३ जन., २०२६ ई.) (दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु)
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. पौष	अं. दिसंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. ज.उ.सा.				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. शु. अस्त हैं। बु. भी ३० दिसं. को अस्त हो जाएगा। सायं श. याम्योत्तरवृत्त में होगा और गु. इस समय पूर्व में उदय होकर सारी रात दिखाई देगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२	१	श.	६०	०	मूल	४५	४	गं.	२२	२३	किं.	३२	१०		६	२०	२९	२९	धनु			७	२०	१७	२०	८	४	७	१८	शुक्र मूल धनु में १/३,
२५	२	१	र.	४	३७	पू.षा.	५०	३९	वृ.	२३	८	ब.	४	३७		७	२१	३०	३०	धनु			७	२०	१७	२१	८	५	८	२४	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य सायन मकर में ३३/३, (A)
२५	२	२	चं.	८	४८	उ.षा.	५५	२८	ध्रु.	२३	१९	कौ.	८	४८		८	२२	पौ.१	र.१	मकर	६	५५	७	२१	१७	२१	८	६	९	३१	रजब मु. प्रारम्भ, शक पौष प्रारम्भ,
२५	२	३	मं.	१२	९	श्रव.	५९	२५	व्या.	२२	५२	ग.	१२	९		९	२३	२	२	मकर			७	२१	१७	२२	८	७	१०	३९	भ. ४३/२२ बाद,
२५	२	४	बु.	१४	३४	धनि.	६०	०	ह.	२१	४०	वि.	१४	३४		१०	२४	३	३	कुम्भ	३१	२	७	२२	१७	२२	८	८	११	४६	भ. १४/३४ तक, पंचक प्रारम्भ ३१/२,
२५	३	५	गु.	१५	५२	धनि.	२	२०	व.	१९	३७	बा.	१५	५२		११	२५	४	४	कुम्भ			७	२२	१७	२३	८	९	१२	५४	मंगल पू.षा. में १२/९, क्रिसमस डे,
२५	३	६	शु.	१५	५३	शत.	४	४	सि.	१६	३५	तै.	१५	५३		१२	२६	५	५	मीन	४९	३०	७	२२	१७	२४	८	१०	१४	२	जोड़मेला फतेहगढ़ साहब (पं.),
२५	४	७	श.	१४	२८	पू.भा.	४	२६	व्य.	१२	२६	व.	१४	२८		१३	२७	६	६	मीन			७	२३	१७	२४	८	११	१५	१०	भ. १४/२८ से ४३/० तक, अवतारदिन श्रीगुरु गोबिन्द(B)
२५	४	८	र.	११	३१	उ.भा.	३	२०	व.	७	५	ब.	११	३१		१४	२८	७	७	मीन			७	२३	१७	२५	८	१२	१६	१८	सूर्य पू.षा. में ५७/४८,
२५	५	९	चं.	७	२	रेव. अश्वि.	० ५६	४३ ४१	प. शि.	० ५२	३१ ४९	कौ.	७	२		१५	२९	८	८	मेष	०	४३	७	२३	१७	२५	८	१३	१७	२६	पंचक समाप्त ०/४३, बुध मूल धनु में ०/३,
२५	६	१०	मं.	१	८	भर.	५१	२६	सि.	४४	५	ग.	१	८		१६	३०	९	९	मेष			७	२४	१७	२६	८	१४	१८	३४	भ. २७/३४ से ५४/२ तक, शुक्र पू.षा. में २६/३०, (C)
अवम		११	मं.	५४	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५	७	१२	बु.	४६	०	कृत्ति.	४५	१४	सा.	३४	३३	ब.	२०	१		१७	३१	१०	१०	वृष	४	५६	७	२४	१७	२७	८	१५	१९	४१	पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.),
२५	८	१३	गु.	३७	२५	रोहि.	३८	२९	शु.	२४	३०	कौ.	११	४३		१८	ज.१	११	११	वृष			७	२४	१७	२८	८	१६	२०	४९	प्रदोषव्रत, जनवरी (इंग्लिश नववर्ष २०२६ ई.) प्रारम्भ,
२५	९	१४	शु.	२८	४२	मृग.	३१	३७	शु.	१४	१५	ग.	३	४		१९	२	१२	१२	मिथुन	५	२	७	२४	१७	२८	८	१७	२१	५६	भ. २८/४२ से ५४/३० तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (D)
२५	११	१५	श.	२०	१९	आर्द्रा	२५	७	ब्र. ऐं.	४ ५४	१० ३७	ब.	२०	१९		२०	३	१३	१३	मिथुन			७	२५	१७	२९	८	१८	२३	४	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,

(A) उत्तरायण एवम् शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (B) सिंह जी, (C) बुध पूर्व में अस्त ७ घं. २४ मि., पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 17), (D) (देखें पृष्ठ 17),

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २८ दिसं.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	८	७	२	८	११	१०	४
१२	१४	१५	२८	२७	९	१	१८	१८
१६	४९	२४	२२	३९	५७	४३	९	९
१९	३२	२६	३६	०	६	३०	३३	३३
६१	८३३	४५	९०	७	७५	३	३	३
८	४२	५१	१४	३७	३०	१०	११	११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मूल ४	उ.भा. ४	पू.षा. १	ज्ये. ४	पुन. ३	मूल ३	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

कुण्डली सूर्योदय (२८ दिसं.)



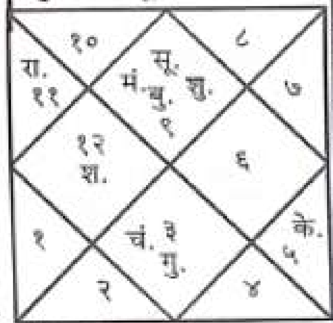
लोकभविष्य-इस चांद्रमास में पांच शनिवार होने से मुस्लिम राष्ट्र विशेष में कहीं भयंकर युद्ध किंवा भूकम्प एवं भयावह अग्निकाण्ड से जनधनहानि होगी। 5 शुक्रवार भारत में सुभिक्ष एवं सुख-समृद्धि करें;-"**शुक्रस्य पंचवारा: स्युर्यत्रमासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि: सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते ।।**" पौष कृष्ण अमावस वाले दिन शनिवार होने से प्रान्तविशेष में कहीं उग्रवादजन्य भय एवं जनजीवनोपयोगी वस्तुओं की उपलब्धता कठिन हो,-

"**अमावास्या सहस्यास्य शनि-सूर्यारवासरे।**
यदि स्याद्भयमादेश्यं तदा सस्यमहर्घता ।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख-सूर्य-शुक्र-मंगल धनु:स्थ हैं, लेकिन गुरु की इन पर दृष्टि है। अनाजादि की उपज कम होने पर भी शासनतन्त्र जनता को परेशान न होने देगा। मं. सू. एवं शु. ये तीनों पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में होने से देश में धन-धान्यसमृद्धि रहे एवं इन पर गुरु की दृष्टि कृषक वर्ग के लिए लाभप्रद रहे।

आकाश-लक्षण- दिसं. २०, २१, २५ दिसं. से १ जनवरी के मध्य शीतलहर एवं धुन्ध से जनजीवन त्रस्त रहे। अनेकत्र खण्डवृष्टि किंवा अतिवर्षा, कहीं अवर्षण से खड़ी फसलों को हानि पहुँचे।

कुण्डली सूर्योदय (३ जन.)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३ जन.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	८	८	२	८	११	१०	४
१८	१२	२०	७	२६	१७	२	१७	१७
२३	३३	०	२९	५२	३०	३	५०	५०
५	५५	४	३५	२१	५	५४	२८	२८
६१	८९१	४६	९२	७	७५	३	३	३
८	२३	४	२५	५७	३०	४४	११	११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. २	आर्द्रा २	पू.षा. ३	मूल ३	पुन. ३	पू.षा. २	पू.भा. ४	शत. ४	पू.फा. २

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, माघ कृष्ण पक्ष २०															तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				(४ से १८ जनवरी, सन् २०२६ ई.) (उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु)
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. पौष	अं. जनवरी	श. पौष	मु. रजब				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. बु. शु. अस्त हैं। सायं श. को पश्चिम कपाल में और गु. को पूर्व में देखिए।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	१२	१	र.	१२	४३	पुन.	१९	२५	वै.	४५	५५	कौ.	१२	४३	२१	४	१४	१४	कर्क	५	४४	७	२५	१७	३०	८	१९	२४	१२	वक्री गुरु पुन. २ में २८/१५,
२५	१४	२	चं.	६	१९	पुष्य	१४	५९	वि.	३८	२४	ग.	६	१९	२२	५	१५	१५	कर्क			७	२५	१७	३१	८	२०	२५	१९	भ. ३३/५४ बाद,
२५	१६	३	मं.	१	३१	आश्ले	१२	१०	प्री.	३२	१९	वि.	१	३१	२३	६	१६	१६	सिंह	१२	१०	७	२५	१७	३१	८	२१	२६	२७	भ. १/३१ तक, बुध पू.षा. में ४१/२७, श्रीगणेश (A)
अवम		४	मं.	५८	३८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२५	१७	५	बु.	५७	५१	मघा	११	१७	आ.	२७	५०	कौ.	२८	१४	२४	७	१७	१७	सिंह			७	२५	१७	३२	८	२२	२७	३५	
२५	१९	६	गु.	५९	१०	पू.फा.	१२	२७	सौ.	२५	०	ग.	२८	३१	२५	८	१८	१८	कन्या	२८	५	७	२५	१७	३३	८	२३	२८	४३	भ. ५९/१० बाद,
२५	२१	७	शु.	६०	०	उ.फा.	१५	३८	शो.	२३	४५	वि.	३०	४६	२६	९	१९	१९	कन्या			७	२५	१७	३४	८	२४	२९	५१	भ. ३०/४६ तक, जन्मदिन स्वामी श्रीविवेकानन्द जी,
२५	२३	७	श.	२	२६	हस्त	२०	३५	अ.	२३	५२	च.	२	२६	२७	१०	२०	२०	तुला	५३	३८	७	२५	१७	३५	८	२५	३०	५८	शुक्र उ.षा. में १२/२०,
२५	२५	८	र.	७	१७	चित्रा	२६	५६	सु.	२५	३	कौ.	७	१७	२८	११	२१	२१	तुला			७	२५	१७	३५	८	२६	३२	६	सूर्य उ.षा. में २/५७, मंगल उ.षा. में ३४/२०,
२५	२८	९	चं.	१३	१४	स्वाती	३४	९	धृ.	२६	५६	ग.	१३	१४	२९	१२	२२	२२	तुला			७	२५	१७	३६	८	२७	३३	१४	भ. ४६/३० बाद, शुक्र मकर में ५१/२२,
२५	३०	१०	मं.	१९	४२	विशा.	४१	४३	शू.	२९	८	वि.	१९	४२	३०	१३	२३	२३	वृश्चिक	२४	५०	७	२५	१७	३७	८	२८	३४	२२	भ. १९/४२ तक, लोहड़ी (पं., हरि.,हि.प्र.,ज.क.),
२५	३२	११	बु.	२६	९	अनु.	४९	६	गं.	३१	१६	बा.	२६	९	मा.१	१४	२४	२४	वृश्चिक			७	२५	१७	३८	८	२९	३५	३०	सं. सूर्य मकर में १९/१५, मु. ३०, पुण्यकाल (B)
२५	३५	१२	गु.	३२	९	ज्येष्ठा	५५	५६	वृ.	३३	२	तै.	३२	९	२	१५	२५	२५	धनु	५५	५६	७	२५	१७	३९	९	०	३६	३८	मंगल मकर में ५२/३५, बुध उ.षा. में ४/४२,
२५	३८	१३	शु.	३७	२२	मूल	६०	०	ध्रु.	३४	१३	ग.	४	४६	३	१६	२६	२६	धनु			७	२५	१७	४०	९	१	३७	४५	भ. ३७/२२ बाद, प्रदोषव्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
२५	४०	१४	श.	४१	३८	मूल	१	५९	व्या.	३४	४३	वि.	९	३३	४	१७	२७	२७	धनु			७	२४	१७	४१	९	२	३८	५२	भ. ९/३३ तक, बुध मकर में ७/२७,
२५	४३	३०	र.	४४	५३	पू.षा.	७	४	ह.	३४	२६	च.	१३	१५	५	१८	२८	२८	मकर	२३	११	७	२४	१७	४१	९	३	३९	५९	मौनी अमा,

(A) (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), (B) ८ घं. ४३ मि. बाद, मकर संक्रान्ति, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ११ जन.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	८	२	८	११	१०	४
२६	०	२६	१९	२५	२७	२	१७	१७
३२	१८	९	५९	४७	३३	३६	२५	२५
७	५८	४६	२९	५७	५५	१०	२	२
६१	७१८	४६	९५	८	७५	४	३	३
८	१४	२३	३४	६	२८	२५	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

कुण्डली सूर्योदय (११ जन.)

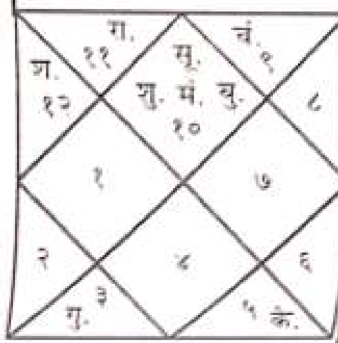


लोकभविष्य- भारत की प्रभावराशि मकर में सू. बु. शु. मं. की स्थिति कहीं प्राकृतिक प्रकोप से अनाजों की फसलों को हानि करेगी। कृषक परेशान हों, लेकिन शासन का सहयोग रहने से स्थिति ठीक रहेगी। सूर्य-मंगल उ.षा. नक्षत्र में रहने से कहीं अग्निकाण्ड व भूकम्प आदि से हानि भी संभव है। इस चान्द्रमास में पांच रविवार होने से किसी प्रान्तविशेष में दुर्भिक्ष एवं प्रथित व्यक्ति का पद रिक्त हो-

"यत्र मासे रविवारा: जायन्ते पंच सन्ततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंग: स्यात्तदा तत्र महद्भयम्।।"

ग्रहचाल और बाजार का रुख-४ से ९ जनवरी के मध्य अनाज, रुई एवं सोना, चांदी में जोरदार मन्दी का झटका आएगा। १०, ११, १४, १५, १७ जनवरी को गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, घी, तेल, तिलजन, चावल आदि अनाजों में जोरदार तेजी से लाभ मिल सकता है। बाजार का रुख देखकर काम करें।

कुण्डली सूर्योदय (१८ जन.)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १८ जन.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	८	९	९	२	९	११	१०	४
३	२४	१	१	२४	६	३	१७	१७
४०	१३	३५	१८	५१	२२	८	२	२
०	४२	११	२८	४२	७	४९	४६	४६
६१	७८६	४६	९९	७	७५	४	३	३
७	२८	३८	२	५३	२६	५९	११	११
-	-	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.

आकाश-लक्षण- जनवरी ४, ६, १० से १८ जनवरी के मध्य जबरदस्त शीत, धुन्ध किंवा प्राकृतिक प्रकोप से खड़ी फसलों को हानि पहुंचेगी एवं यातायात में दुर्घटनाएं संभव हैं, सावधान रहें।

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, माघ शुक्ल पक्ष २१

(१९ जनवरी से १ फरवरी, सन् २०२६ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु)

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				
															प्र. माघ	अं. जनवरी	श. पौष	मु. रजब				सूर्योदय		सूर्यास्त						मं. बु. अस्त रहेंगे। शु. ३० जन. को सायं पश्चिम में उदित हो जाएगा। इस समय श. पश्चिमकपाल में और गु. पूर्व में चमक रहा होगा।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	४६	१	चं.	४७	५	उ.षा.	११	१०	व.	३३	२२	किं.	१५	५९	६	१९	२९	२९	मकर			७	२४	१७	४२	९	४	४१	६	सूर्य सायन कुम्भ में ५९/३७, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
२५	४९	२	मं.	४८	१७	श्रव.	१४	१७	सि.	३१	३२	बा.	१७	४१	७	२०	३०	३०	कुम्भ	४५	२८	७	२४	१७	४३	९	५	४२	११	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक प्रारम्भ ४५/२८, शुक्र श्रव. में(A)
२५	५२	३	बु.	४८	२९	धनि.	१६	२६	व्य.	२८	५६	तै.	१८	२३	८	२१	मा.१	शा.१	कुम्भ			७	२३	१७	४४	९	६	४३	१६	गौरी तृतीया (गौंतरी), शावान मु. प्रारम्भ, शक माघ प्रारम्भ,
२५	५५	४	गु.	४७	४३	शत.	१७	२९	व.	२५	३६	व.	१८	६	९	२२	२	२	कुम्भ			७	२३	१७	४५	९	७	४४	२१	भ. १८/६ से ४७/४३ तक, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
२५	५८	५	शु.	४५	५८	पू.भा.	१७	५५	प.	२१	३०	ब.	१६	५०	१०	२३	३	३	मीन	२	५७	७	२३	१७	४६	९	८	४५	२४	बुध श्रव. में ७/३३, श्रीपंचमी/वसन्त पंचमी (B)
२६	२	६	श.	४३	१४	उ.भा.	१७	१३	शि.	१६	३७	कौ.	१४	३६	११	२४	४	४	मीन			७	२२	१७	४७	९	९	४६	२६	सूर्य श्रव. में ८/३९,
२६	५	७	र.	३९	३१	रेव.	१५	३४	सि.	१०	५९	ग.	११	२२	१२	२५	५	५	मेष	१५	३४	७	२२	१७	४८	९	१०	४७	२८	भ. ३९/३१ बाद, पंचक समाप्त १५/३४, राहु शत. ३, (C)
२६	८	८	चं.	३४	५१	अश्वि.	१२	५८	सा. शु.	४ ५७	३४ २५	वि.	७	१२	१३	२६	६	६	मेष			७	२१	१७	४९	९	११	४८	२८	भ. ७/१२ तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, भारत गणतन्त्र दिवस, **शुक्र उदित ३० जनवरी,**
२६	१२	९	मं.	२९	२१	भर.	९	२९	शु.	४९	३९	बा.	२	६	१४	२७	७	७	वृष	२३	२८	७	२१	१७	५०	९	१२	४९	२७	गुप्त नवरात्र समाप्त,
२६	१५	१०	बु.	२३	९	कृत्ति.	५	१५	ब्र.	४१	२३	ग.	२३	९	१५	२८	८	८	वृष			७	२०	१७	५०	९	१३	५०	२५	भ. ४९/५१ बाद, मंगल श्रव. में ४३/१३, नवरात्र-पारणा,
२६	१९	११	गु.	१६	२८	रोहि. मृग.	० ५५	२९ २३	ऐं.	३२	४८	वि.	१६	२८	१६	२९	९	९	मिथुन	२७	५५	७	२०	१७	५१	९	१४	५१	२२	भ. १६/२८ तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
२६	२२	१२	शु.	९	३५	आर्द्रा	५०	१९	वै.	२४	७	बा.	९	३५	१७	३०	१०	१०	मिथुन			७	१९	१७	५२	९	१५	५२	१७	बुध धनि में ५०/१५, वक्री गुरु पुन. १ में ११/१९, (D)
२६	२६	१३	श.	२	४७	पुन.	४५	३७	वि.	१५	३६	तै.	२	४७	१८	३१	११	११	कर्क	३१	४३	७	१९	१७	५३	९	१६	५३	१२	भ. ५६/२४ बाद, शुक्र धनि. में २५/४५,
अवम		१४	श.	५६	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
२६	३०	१५	र.	५०	५१	पुष्य	४१	३९	प्री.	७	३०	वि.	२३	४०	१९	फ.१	१२	१२	कर्क			७	१८	१७	५४	९	१७	५४	५	भ. २३/४० तक, माघी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, (E)

(A) ४८/३५, शनि उ.भा. १ में ८/३७, वक्री यूरेनस कृत्ति. २ में ६/१९, (B) (लक्ष्मी-सरस्वती पूजन), (C) केतु पू.फा. १ में ४/५४, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन), (D)शुक्र पश्चिम में उदित १७ घं. ५२ मि., प्रदोषव्रत, (E) श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त, फरवरी प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २६ जन.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ ११ ४८ २९	० ९ १३ ११	९ ७ ४८ ५७	९ १४ ४६ २६	२ २३ ५० २४	९ १६ २५ २१	११ ३ ५० ४४	१० १६ ३७ २०	४ १६ ३७ २०
६० ५९	८३६ ०	४६ ८१	१०३ ३४	७ १८	७५ २१	५ ३४	३ ११	३ ११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. २	अश्वि. ३	उ.षा. ४	श्रव. २	पुन. २	श्रव. २	उ.भा. १	शत. ३	पू.फा. १

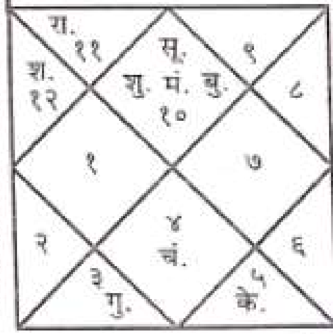
कुण्डली सूर्योदय (२६ जन.)



लोकभविष्य-इस पक्ष में सूर्य-शुक्र एवं मंगल भारत की प्रभावराशि मकर में हैं और तीनों श्रवण नक्षत्र में हैं। अनेक प्रकार के संक्रामक रोगों किंवा अनावृष्टि से जनजीवन त्रस्त रहे। धान्य, चावल आदि सहज सुलभ न हों- **"धान्यं महर्घं मकरे तथा।"** श्रवण नक्षत्र (देवगण) में शुक्र का उदय खेती के नाश एवं महारोग का सूचक है। एतदर्थ सरकार को विशेष ऐहतिहात बर्तने होंगे। पक्षान्त में धनिष्ठा नक्षत्र (राक्षसगण) का शुक्र देश को महामारी से चिंतित कर सकता है। विदेशों से यातायात प्रभावित होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-जनवरी १९, २०, २३, २४, २५, २८ एवं ३०, ३१ जनवरी को दालवाना एवं चावल आदि मोटे अनाजों में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज आएंगे, बाजार का रुख देखकर काम करें। इस पक्ष में विशेषतः जनवरी २०, २३, २४, २५ एवं २८ जनवरी को गेहूं, जौ, तिलहन, घी, तेल में अच्छी तेजी बनेगी। ३० जनवरी को सोना-चांदी, रुई, घी, गुड़, खाण्ड मन्दे रहें।

कुण्डली सूर्योदय (१ फर.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १ फर.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ १७ ५४ ६	३ ५ ४१ ३१	९ १२ ३० १८	९ २५ १४ ५९	२ २३ ८ १३	९ २३ ५७ १६	११ ४ २५ २	१० १६ १८ १५	४ १६ १८ १५
६० ५२	८५४ ७	४६ ५९	१०६ ८	६ ३८	७५ १७	५ ५७	३ ११	३ ११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ३	पुष्य १	श्रव. १	धनि. १	पुन. १	धनि. १	उ.भा. १	शत. ३	पू.फा. १

आकाश-लक्षण- जनवरी २०, २३, २४, २५, २८ एवं ३०, ३१ जनवरी को विपरीत जलवायु एवं प्राकृतिक प्रकोप अवर्षणादि से खड़ी फसलों को हानि पहुंचे। २३ जनवरी के बाद मौसम में परिवर्तन (ऋतु-परिवर्तन) अनुभव होने लगेगा।

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(२ से १७ फरवरी, सन् २०२६ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु)

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. माघ	अं. फरवरी	श. माघ	मु. शाबान	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.	मं. अस्त ही है। बु. ८ फर. से सायं पश्चिम में शु. के साथ दिखाई देना शुरु होगा। इस समय श. पश्चिम में और गु. पूर्व में दीखेगा।
२६	३३	१	चं.	४६	२७	आश्ले.	३८	४४	आ. सौ.	० ५३	५ ३९	बा.	१८	३९	२०	२	१३	१३	सिंह	३८	४४	७	१७	१७	५५	९	१८	५४	५७	शुक्र-बाल्य समाप्त १७ घं. ५२ मि.,
२६	३७	२	मं.	४३	२९	मघा	३७	१४	शो.	४८	२४	तै.	१४	५८	२१	३	१४	१४	सिंह			७	१७	१७	५६	९	१९	५५	४९	बुध कुम्भ में ३६/२८,
२६	४१	३	बु.	४२	१३	पू.फा.	३७	२०	अ.	४४	३०	व.	१२	५२	२२	४	१५	१५	कन्या	५२	३८	७	१६	१७	५७	९	२०	५६	३९	भ. १२/५२ से ४२/१३ तक, यूरेनस मार्गी २/०,
२६	४५	४	गु.	४२	४७	उ.फा.	३९	१३	सु.	४२	०	ब.	१२	३०	२३	५	१६	१६	कन्या			७	१५	१७	५८	९	२१	५७	२८	शुक्र कुम्भ में ४४/४९, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२६	४९	५	शु.	४५	९	हस्त	४२	५२	धृ.	४०	५५	कौ.	१३	५८	२४	६	१७	१७	कन्या			७	१५	१७	५८	९	२२	५८	१६	सूर्य धनि. में १७/०३,
२६	५३	६	श.	४९	१०	चित्रा	४८	५	शू.	४१	५	ग.	१७	१०	२५	७	१८	१८	तुला	१५	२०	७	१४	१७	५९	९	२३	५९	४	भ. ४९/१० बाद, बुध शत. में, २३/१०,
२६	५७	७	र.	५४	३०	स्वाती	५४	३३	गं.	४२	१६	वि.	२१	५२	२६	८	१९	१९	तुला			७	१३	१८	०	९	२४	५९	५०	भ. २१/५२ तक, बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ० मि.,
२७	१	८	चं.	६०	०	विशा.	६०	०	वृ.	४४	७	बा.	२७	३४	२७	९	२०	२०	वृश्चिक	४४	५७	७	१२	१८	१	९	२६	०	३५	
२७	५	८	मं.	०	३७	विशा	१	४८	ध्रु.	४६	१५	कौ.	०	३७	२८	१०	२१	२१	वृश्चिक			७	१२	१८	२	९	२७	१	१९	
२७	१०	९	बु.	६	५९	अनु.	९	१४	व्या.	४८	१६	ग.	६	५९	२९	११	२२	२२	वृश्चिक			७	११	१८	३	९	२८	२	३	भ. ३९/५८ बाद, शुक्र शत. में ४/१३,
२७	१४	१०	गु.	१३	०	ज्येष्ठा	१६	२०	ह.	४९	४८	वि.	१३	०	फा.१	१२	२३	२३	धनु	१६	२०	७	१०	१८	३	९	२९	२	४५	भ. १३/० तक, सं. सूर्य कुम्भ में ५२/२४, मु. ३०, (A)
२७	१८	११	शु.	१८	१२	मूल	२२	३८	व.	५०	३४	बा.	१८	१२	२	१३	२४	२४	धनु			७	९	१८	४	१०	०	३	२६	विजया एकादशी व्रत (स.),
२७	२२	१२	श.	२२	१३	पू.षा.	२७	४९	सि.	५०	२३	तै.	२२	१३	३	१४	२५	२५	मकर	४३	५४	७	८	१८	५	१०	१	४	६	मंगल धनि. में ४३/४३, शनिप्रदोष व्रत,
२७	२७	१३	र.	२४	५३	उ.षा.	३१	४१	व्य.	४९	७	व.	२४	५३	४	१५	२६	२६	मकर			७	७	१८	६	१०	२	४	४४	भ. २४/५३ से ५५/३० तक, बुध पू.भा. में ३६/२४,(B)
२७	३१	१४	चं.	२६	९	श्रव.	३४	१२	व.	४६	४८	श.	२६	९	५	१६	२७	२७	मकर			७	६	१८	७	१०	३	५	२२	
२७	३५	३०	मं.	२६	३	धनि.	३५	२६	प.	४३	२७	ना.	२६	३	६	१७	२८	२८	कुम्भ	४	५९	७	५	१८	८	१०	४	५	५८	पंचक प्रारम्भ ४/५९, प्लूटो श्रव. १ में ४९/५२, (C)

(A) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (B) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (C) भौमवती अमा,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ९ फर.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	९	१०	२	१०	११	१०	४
२६	२०	१८	९	२२	३	५	१५	१५
०	१३	४६	२०	१८	५९	१४	५२	५२
३६	४४	३७	४७	५६	८	७	४९	४९
६०	७१६	४७	१०२	५	७५	६	३	३
४४	३२	८	४१	३२	११	२३	११	११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. १	विशा. १	श्रव. ३	शत. १	पुन. १	धनि. ४	उ.भा. १	शत. ३	पू.फा.१

कुण्डली सूर्योदय (९ फर.)



लोकभविष्य–इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने से किसी देशविशेष में सत्ता-परिवर्तन एवं रक्तपात हो–
"यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्च वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥"
किञ्च–इस पक्ष में बुध-शुक्र, सूर्य एवं राहु कुम्भ राशिस्थ होने से "**तदा भूपाः विनश्यन्ति पृथ्वी शोणित-पूरिता।**"– प्रमाणानुसार विदेश में मुस्लिम राष्ट्रविशेष में कहीं रक्तपातसहित सत्ता-परिवर्तन संभव है। इस वर्ष कुम्भ संक्रान्ति गुरुवारी होने से अनाज एवं खाद्य पदार्थ बहुत महंगे होंगे तथा उग्रवाद आदि के भय से जनता परेशान रहे–
"**पृथ्वीभयं धान्य-महर्घता स्यात् तदा जनानामतिशय-दुःखम्।**"
ग्रहचाल और बाजार का रुख–पक्षारम्भ में ६ फरवरी तक चांदी, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, तिलहन, सोना, चांदी, मोटे अनाज एवं दालों, रुई में तेजी के व्यापार से लाभ मिलेगा। ११, १२, १३ एवं १५ फरवरी को खाण्ड, शक्कर, रुई, पाट, एरण्ड आदि तिलहन में मन्दी का झटका आ सकता है। घी, तेल में सामान्यतः तेजी रहे, अनाज मंदे रहें।
आकाश-लक्षण– फरवरी ३,५,६,७ को मौसम में गर्माहट महसूस होगी। भारत के कुछ प्रान्तों में बादलचाल खण्डवृष्टि भी हो। ८ फर. को बुध के उदय होने पर प्राकृतिक प्रकोप से कहीं हानि हो– **नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो व्रजत्युदयम्।**" ११, १२, १४ एवं १७ फर. को खण्डवृष्टि से तापमान गिरे।

कुण्डली सूर्योदय (१७ फर.)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १७ फर.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	९	१०	२	१०	११	१०	४
४	२८	२५	२१	२१	१४	६	१५	१५
५	२	४	४८	३९	०	६	२७	२७
५९	४९	३	३	२८	१०	३१	२२	२२
६०	७९०	४७	७४	४	७५	६	३	३
३५	४	१४	३९	१०	४	४५	११	११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	धनि. २	धनि. १	पू.भा. १	पुन. १	शत. ३	पू.भा. १	शत. ३	पू.फा.१

श्री वि. सं. २०८२, शाक १९४७, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

(१८ फरवरी से ३ मार्च, सन् २०२६ ई.)
(उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु)

मं अस्त ही है। सायं पश्चिम में दिखाई दे रहा बु. २८ फर. को लुप्त हो जाएगा। सायंकाल श. पश्चिमक्षितिज में और इसके ऊपर शु. दिखाई देगा। इस समय गु. आधीरात्रि से पूर्व की ओर दिखाई देगा। ३ मार्च की रात्रि में खग्रास चन्द्रग्रहण दिखाई देगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. फरवरी	श. माघ	मु. शावान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.) रा.	अं.	क.	वि.
२७	४०	१	बु.	२४	४२	शत.	३५	२८	शि.	३९	११	ब.	२४	४२	७	१८	२९	२९	कुम्भ			७	५	१८	८	१०	५	६	३३
२७	४४	२	गु.	२२	१८	पू.भा.	३४	३०	सि.	३४	६	कौ.	२२	१८	८	१९	३०	३०	मीन	१९	५०	७	४	१८	९	१०	६	७	६
२७	४९	३	शु.	१९	०	उ.भा.	३२	४१	सा.	२८	२१	ग.	१९	०	९	२०	फा.१	र.१	मीन			७	३	१८	१०	१०	७	७	३७
२७	५३	४	श.	१४	५८	रेव.	३०	१३	शु.	२२	३	वि.	१४	५८	१०	२१	२	२	मेष	३०	१३	७	२	१८	११	१०	८	८	७
२७	५७	५	र.	१०	२३	अश्वि.	२७	१४	शु.	१५	१९	बा.	१०	२३	११	२२	३	३	मेष			७	१	१८	१२	१०	९	८	३४
२८	२	६	चं.	५	२४	भर.	२३	५४	ब्र.	८	१७	तै.	५	२४	१२	२३	४	४	वृष	३८	०	७	०	१८	१२	१०	१०	९	०
२८	७	७	मं.	०	६	कृत्ति.	२०	२१	ऐं. वै.	० ५३	५९ ३८	व.	०	६	१३	२४	५	५	वृष			६	५८	१८	१३	१०	११	९	२४
अवम		८	मं.	५४	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	११	९	बु.	४९	१९	रोहि.	१६	४२	वि.	४६	१७	बा.	२२	१	१४	२५	६	६	मिथुन	४४	५२	६	५७	१८	१४	१०	१२	९	४६
२८	१६	१०	गु	४४	३	मृग.	१३	७	प्री.	३९	२	तै.	१६	४१	१५	२६	७	७	मिथुन			६	५६	१८	१५	१०	१३	१०	६
२८	२०	११	शु.	३९	४	आर्द्रा	९	४३	आ.	३२	०	व.	११	३४	१६	२७	८	८	कर्क	५२	२२	६	५५	१८	१५	१०	१४	१०	२४
२८	२५	१२	श.	३४	३३	पुन.	६	४१	सौ.	२५	१९	ब.	६	४९	१७	२८	९	९	कर्क			६	५४	१८	१६	१०	१५	१०	४०
२८	२९	१३	र.	३०	४०	पुष्य	४	१२	शो.	१९	८	कौ.	२	३७	१८	मा.१	१०	१०	कर्क			६	५३	१८	१७	१०	१६	१०	५४
२८	३४	१४	चं.	२७	३९	आश्ले.	२	२८	अ.	१३	३७	व.	२७	३९	१९	२	११	११	सिंह	२	२८	६	५२	१८	१८	१०	१७	१०	७
२८	३९	१५	मं.	२५	४१	मघा	१	४१	सु.	८	५३	ब.	२५	४१	२०	३	१२	१२	सिंह			६	५१	१८	१८	१०	१८	११	१७

यूरेनस कृत्ति. ३ में ५३/३७, सूर्य सायन मीन में ३५/४३,(A)
चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य शत. में २८/४२, अवतारदिन(B)
भ. ४६/५७ बाद, **रमज़ान मु. प्रारम्भ, शक फाल्गुन प्रारम्भ,**
भ. १४/५८ तक, **पंचक समाप्त** ३०/१३, शुक्र पू.भा. (C)

मंगल कुम्भ में १२/३, **खग्रास चन्द्रग्रहण ३ मार्च**
भ. ०/६ से २७/२७ तक, नेप्च्यून उ.भा. २ में ३७/१५,(D)

अष्टमी तिथिक्षय, **होलाष्टक २४ फर. से ३ मार्च**

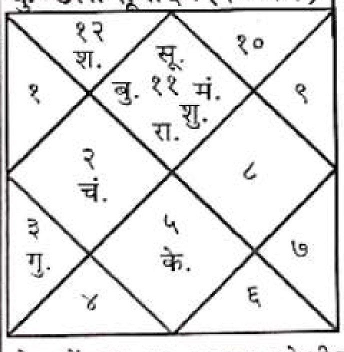
बुध वक्री १३/२५,
भ. ११/३४ से ३९/४ तक, **आमलकी एकादशी व्रत (स.),**
बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. १६ मि., गोविन्द द्वादशी,
शुक्र मीन में ४५/७, प्रदोषव्रत, मार्च प्रारम्भ,
भ. २७/३९ से ५६/४२ तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत,** (E)
मंगल शत. में ४०/७, होलिकादहन (प्रदोष में) (F)

(A) **वसन्त ऋतु प्रारम्भ**, (B) **श्रीरामकृष्ण परमहंस**, (C) में ४३/५८, **शनि उ.भा. २ में ५०/१८**, (D) **होलाष्टम प्रारम्भ**, (E) ग्रहणशूल, (F) (**देखें पृष्ठ 17**), **खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 20), होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,**

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) २४ फर.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	१०	१०	२	१०	११	१०	४
११	४	०	२७	२१	२२	६	१५	१५
९	१८	३४	५४	१४	४५	५४	५	५
२५	४८	४९	४८	१३	९	३६	७	७
६०	८५२	४७	१७	२	७४	७	३	३
२२	४	१७	३२	५२	५८	१	११	११
–	–	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व	व.
–	–	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. २	कृत्ति. ३	धनि. ३	पू.भा. ३	पुन. १	पू.भा. १	उ.भा. २	शत. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय (२४ फर.)



लोकभविष्य–कुम्भ राशि में सूर्य-बुध-शुक्र एवं मंगल-राहु की स्थिति देश के प्रान्तविशेष में प्राकृतिक आपदा की सूचक है। कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा अग्निकाण्ड आदि से जनधनहानि-भय है। मार्च के शुरु में शुक्र का क्रूर ग्रहों से मेल अनाज आदि में भारी महंगाई होने से सरकार के प्रति जनाक्रोश करेगा। शतभिषा नक्षत्र के सूर्य-राहु भी राजनीतिज्ञों में मतभेद बढ़ाएंगे।

इस पक्ष में सू.बु.शु. का एक साथ होना अनावृष्टि आदि से खड़ी फसलों को हानि करें–

''एकराशौ यदा ह्येते सौम्य-शुक्र-दिनाधिपाः।
सर्वधान्यमहर्घत्वं मेघाः स्वल्प-जलप्रदाः।।''

ग्रहचाल और बाजार का रुख–१९, २०, २२ फरवरी को सोना, चांदी, सूत, तिल, तिलहन, घी, तेल, गेहूं, छुहारा, दाख, गेहूं आदि तेज रहें। २२, २३, २६ फर. को भी बाज़ार तेज रहें। मार्च १ से ३ के मध्य सोना-चांदी, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन में जोरदार तेजी-मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। बाजार के रुख को देखकर काम करें। **आकाश-लक्षण**- फर. १९, २१, २२, २३, २६, २८ एवं मार्च १ से ३ के मध्य वायुवेग से पर्वतीय भूभाग किंवा भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाओं के साथ खण्डवृष्टि हो, कहीं ओलावृष्टि भी संभव है।

कुण्डली सूर्योदय (३ मार्च)



ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ३ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	१०	१०	२	११	११	१०	४
१८	१२	६	२६	२०	१	७	१४	१४
११	१२	५	३६	५८	२८	४४	४२	४२
१८	१३	४४	५३	१६	५८	२०	५२	५२
६०	७९७	४७	४५	१	७४	७	३	३
८	१७	१७	१	३०	४४	१३	११	११
–	–	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
–	–	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ४	मघा ४	धनि. ४	पू.भा.२	पुन. १	पू.भा.४	उ.भा.२	शत. ३	पू.फा. १

श्री वि. सं.२०८२, शाक १९४७, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(४ से १९ मार्च, सन् २०२६ ई.) (उत्तरायण, दक्षिणगोल,वसन्त ऋतु)

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें				चन्द्रराशि	प्रवेशकाल		चण्डीगढ़ (भा.स्टैं.टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रात: ५ घं. ३० मि. (भा.स्टैं.टा.)				मं. अस्त ही रहेगा। १४ मार्च को बु. प्रात: पूर्व में प्रकट हो जाएगा। सायंकाल शु. श. पश्चिमक्षितिज में परस्पर आसन्न दीखेंगे और इस समय गु. याम्योत्तरवृत्त के पास होगा।
															प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
															फाल्गुन	मार्च	फाल्गुन	रमजान												
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	४३	१	बु.	२४	५८	पू.फा.	२	२	धृ.	५	६	कौ.	२४	५८	२१	४	१३	१३	कन्या	१७	१९	६	५०	१८	१९	१०	१९	११	२६	सूर्य पू.भा. में ४५/७, शुक्र उ.भा. में २५/५१, वसन्तोत्सव,(A)
२८	४८	२	गु.	२५	३८	उ.फा.	३	४२	शू.	२	२२	ग.	२५	३८	२२	५	१४	१४	कन्या			६	४९	१८	२०	१०	२०	११	३२	भ. ५६/३७ बाद, ग्रहणशूल,
२८	५२	३	शु.	२७	४५	हस्त	६	४५	गं.	०	४१	वि.	२७	४५	२३	६	१५	१५	तुला	३८	४८	६	४७	१८	२०	१०	२१	११	३७	भ. २७/४५ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 18),(B)
२८	५७	४	श.	३१	१७	चित्रा	११	१२	वृ.	०	११	बा.	३१	१७	२४	७	१६	१६	तुला			६	४६	१८	२१	१०	२२	११	४१	शनि अस्त १८ घं. २१ मि.
२९	२	५	र.	३६	५	स्वाती	१६	५५	ध्रु.	०	४३	कौ.	३	४१	२५	८	१७	१७	तुला			६	४५	१८	२२	१०	२३	११	४२	
२९	६	६	चं.	४१	४८	विशा.	२३	३८	व्या.	२	८	ग.	८	५६	२६	९	१८	१८	वृश्चिक	६	५४	६	४४	१८	२२	१०	२४	११	४२	भ. ४१/४८ बाद,
२९	११	७	मं.	४७	५९	अनु.	३०	५५	ह.	४	५	वि.	१४	५२	२७	१०	१९	१९	वृश्चिक			६	४३	१८	२३	१०	२५	११	४०	भ. १४/५२ तक, वक्री बुध शत. में ३/१,
२९	१६	८	बु.	५४	५	ज्येष्ठा	३८	१६	व.	६	१५	बा.	२१	२	२८	११	२०	२०	धनु	३८	१६	६	४१	१८	२४	१०	२६	११	३७	गुरु मार्गी ५/५१, श्रीशीतलाष्टमी,
२९	२१	९	गु.	४९	३२	मूल	४५	७	सि.	८	१५	तै.	२६	४८	२९	१२	२१	२१	धनु			६	४०	१८	२४	१०	२७	११	३२	मेला श्रीशीतला माता कुराली (मोहाली) पं.,
२९	२५	१०	शु.	६०	०	पू.षा.	५०	५९	व्य.	९	४०	व.	३१	४२	३०	१३	२२	२२	धनु			६	३९	१८	२५	१०	२८	११	२५	भ. ३१/४२ बाद,
२९	३०	१०	श.	३	५२	उ.षा.	५५	२७	व.	१०	१०	वि.	३	५२	चै.१	१४	२३	२३	मकर	७	१७	६	३८	१८	२६	१०	२९	११	१७	भ. ३/५२ तक, सं. सूर्य मीन में ४६/०, मु. ४५, पुण्यकाल(C)
२९	३५	११	र.	६	३९	श्रव.	५८	१८	प.	९	३१	बा.	६	३९	२	१५	२४	२४	मकर			६	३७	१८	२६	११	०	११	७	शुक्र रेव. में १०/१, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
२९	३९	१२	चं.	७	४३	धनि.	५९	२६	शि.	७	३२	तै.	७	४३	३	१६	२५	२५	कुम्भ	२९	६	६	३५	१८	२७	११	१	१०	५५	पंचक प्रारम्भ २९/६, सोमप्रदोष व्रत,
२९	४४	१३	मं.	७	२	शत.	५८	५६	सि. सा.	४ ५९	११ २९	व.	७	२	४	१७	२६	२६	कुम्भ			६	३४	१८	२८	११	२	१०	४२	भ. ७/२ से ३५/४९ तक, वारुणी योग (९ घं. २३ मि. तक),(D)
२९	४९	१४	बु.	४	४१	पू.भा.	५७	०	शु.	५३	४०	श.	४	४१	५	१८	२७	२७	मीन	४२	३६	६	३३	१८	२८	११	३	१०	२६	सूर्य उ.भा. में ६/५७,
२९	५३	३०	गु.	०	५०	उ.भा.	५३	५२	शु.	४६	५२	ना.	०	५०	६	१९	२८	२८	मीन			६	३२	१८	२९	११	४	१०	९	चान्द्र संवत्सर २०८२ वि. पूर्ण, चान्द्र संवत्सर २०८३ वि.(E)
अवम		१	गु.	५५	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,

(A) होला महल्ला श्रीआनन्दपुर साहब (पं.), ग्रहणशूल, (B) ग्रहणशूल, (C) अगले दिन मध्याह्न तक, बुध पूर्व में उदित ६ घं. ३८ मि., (D) मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.), (E) प्रारम्भ (देखें पृष्ठ 18), वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, घट स्थापन, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन,

ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ११ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१०	२	११	११	१०	४
२६	२१	१२	१९	२०	११	८	१४	१४
११	४९	२३	८	५१	२६	४२	१७	१७
३७	२४	५३	२३	४५	६	४०	२६	२६
५९	७१४	४७	५४	०	७४	७	३	३
५५	१८	१५	५	४	३२	२३	११	११
-	-	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (११ मार्च)



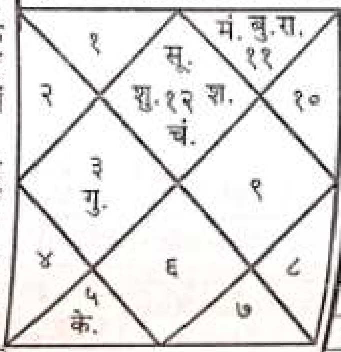
लोकभविष्य-इस पक्ष में सूर्य-शुक्र एवं शनि की मीन राशि में सन्निधि देश में रोग का प्रकोप एवं राजनैतिक संकट का कारण बन सकती है। किन्तु-कुम्भ राशि में राहु-मंगल-सूर्य का योग प्राकृतिक प्रकोप एवं भयंकर अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि से किसी प्रान्त में परेशानी का कारण बनेगा। ११ मार्च को गुरु मार्गी होगा। राजनीतिज्ञों में देश-हितार्थ विशेष योगदान की प्रवृत्ति का संकेत देता है।

मिथुन राशिस्थ गुरु की राहु-मंगल-बुध पर विशेष दृष्टि होने से नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी। बुध का पूर्व में उदय पूर्वी प्रान्तविशेष में कहीं उत्पात का कारण बनेगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख-मार्च ४, ८ एवं १० मार्च को चावल, चांदी, नमक, खाण्ड, रुई, कपास एवं सोना-चांदी में मन्दी का प्रभाव रहेगा। मार्च ११, १४ को तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना तेज रहें। मार्च १५ के लगभग रसकस, गेहूं, तिलहन, घी, अनाज तेज रहेंगे।

आकाश-लक्षण- मार्च ४, ८, १०, १४, १५ एवं १८ मार्च को भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में तेज हवाएं चलेंगी एवं गर्म ऋतु का प्रभाव बढ़ने लगेगा। इन दिनों वायुवेग के साथ कुछ प्रान्तों में खण्डवृष्टि भी होगी।

कुण्डली सूर्योदय (१९ मार्च)



ग्रह स्पष्ट, प्रात: ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १९ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१०	१०	२	११	११	१०	४
४	३	१८	१४	२०	२१	९	१३	१३
१०	२०	४१	२५	५७	२१	४२	५२	५२
१०	१४	४१	५७	४५	३७	५	०	०
५९	८४५	४७	७	१	७४	७	३	३
४०	१५	१०	५८	३७	१८	२८	११	११
-	-	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
-	-	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	व्रत, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है।)
पौष शुक्ल	1	2	बु.	26	24	उ.षा.	23	46	व्या.	12	6	मकर			7	24	17	27	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	चन्द्रदर्शन, मु. 45, इंग्लिश नववर्ष 2025 ई. प्रारम्भ,
	2	3	गु.	25	8	श्रव.	23	10	ह.	14	57	मकर			7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	
	3	4	शु.	23	40	धनि.	22	21	व.	12	37	कुम्भ	10	47	7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	भ. 12/24 से 23/40 तक, पंचक प्रारम्भ 10/47, (A)
	4	5	श.	22	1	शत.	21	23	सि.	10	7	कुम्भ			7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	बुध मूल धनु में 12/3,
	5	6	र.	20	15	पू.भा.	20	17	व्य.	7	32	मीन	14	34	7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	
									व.	28	50																					
	6	7	चं.	18	24	उ.भा.	19	6	प.	26	5	मीन			7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 18/24 से 29/25 तक, अवतारदिन श्रीगुरु (B)
	7	8	मं.	16	27	रेव.	17	50	शि.	23	15	मेष	17	50	7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	पंचक समाप्त 17/50,
	8	9	बु.	14	26	अश्वि.	16	29	सि.	20	23	मेष			7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	
	9	10	गु.	12	23	भर.	15	7	सा.	17	29	वृष	20	46	7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 23/21 बाद,
	10	11	शु.	10	20	कृत्ति.	13	45	शु.	14	36	वृष			7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	भ. 10/20 तक, सूर्य उ.षा. में 26/22, पुत्रदा एकादशी व्रत (स.),
	11	12	श.	8	22	रोहि.	12	29	शु.	11	48	मिथुन	23	55	7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	शनिप्रदोष व्रत,
		13		30	34																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	12	14	र.	29	3	मृग.	11	24	ब्र.	9	9	मिथुन			7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	भ. 29/3 बाद, वक्री मंगल पुन. में 24/13, राहु उ.भा. 1, (C)
									ऐं.	30	44																					
	13	15	चं.	27	56	आर्द्रा	10	38	वै.	28	38	कर्क	28	19	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	भ. 16/29 तक, बुध पू.षा. में 20/36, माघस्नान प्रारम्भ, (D)
माघ कृष्ण	14	1	मं.	27	21	पुन.	10	17	वि.	26	58	कर्क			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मं. सूर्य मकर में 8/55, मु. 45, (E)
	15	2	बु.	27	23	पुष्य	10	28	प्री.	25	46	कर्क			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	
	16	3	गु.	28	6	आश्ले.	11	16	आ.	25	5	सिंह	11	16	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 15/44 से 28/6 तक,
	17	4	शु.	29	30	मघा	12	44	सौ.	24	56	सिंह			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	शुक्र पू.भा. में 7/41, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत
	18	5	श.	-	-	पू.फा.	14	51	शो.	25	15	कन्या	21	28	7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	18	
	19	5	र.	7	31	उ.फा.	17	30	अ.	25	57	कन्या			7	24	17	43	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	सूर्य श्रवण कुम्भ में 25/30, बुध पूर्व में अस्त 7/24,
	20	6	चं.	9	58	हस्त	20	30	सु.	26	52	कन्या			7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	भ. 9/58 से 23/19 तक,
	21	7	मं.	12	40	चित्रा	23	36	धृ.	27	49	तुला	10	3	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	21	वक्री मंगल मिथुन में 9/59, जन्मदिन स्वामी विवेकानन्द जी,
	22	8	बु.	15	18	स्वाती	26	34	शू.	28	37	तुला			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	बुध उ.षा. में 14/49,
	23	9	गु.	17	38	विशा.	29	8	गं.	29	6	वृश्चि.	22	32	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	58	6	48	17	32	23	भ. 30/31 बाद, गुरु कृत. में 28/44,
	24	10	शु.	19	25	अनु.	31	7	वृ.	29	8	वृश्चि.			7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	भ. 19/25 तक, बुध मकर में 17/38,
	25	11	श.	20	32	ज्येष्ठा	-	-	ध्रु.	28	37	वृश्चि.			7	22	17	48	7	16	17	50	7	19	17	59	6	47	17	33	25	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	26	12	र.	20	55	ज्येष्ठा	8	26	व्या.	27	33	धनु	8	26	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	13	चं.	20	35	मूल	9	2	ह.	25	57	धनु			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	भ. 20/35 बाद, शुक्र मीन में 31/0, सोमप्रदोष व्रत, (G)
	28	14	मं.	19	36	पू.षा.	8	58	व.	23	51	मकर	14	51	7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	2	6	46	17	35	28	भ. 8/5 तक,
	29	30	बु.	18	6	उ.षा.	8	20	सि.	21	21	मकर			7	20	17	52	7	15	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	29	मौनी अमा, महाकुम्भ पर्व (प्रयागराज) (H)
						श्रव.	31	15																								
मा. शु.	30	1	गु.	16	11	धनि.	29	50	व्य.	18	33	कुम्भ	18	35	7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, पंचक प्रारम्भ 18/35, (I)
	31	2	शु.	13	59	शत.	28	14	व.	15	32	कुम्भ			7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	चन्द्रदर्शन, मु. 15,

कुम्भ महापर्व
प्रयागराज 29 जन.

(A) शुक्र शत. में 28/38, (B) गोविन्द सिंह जी, (C) केतु उ.फा. 3 में 24/8, (D) पौषी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, लोहड़ी (पं., हरि., हि.प्र., ज.क.), (E) पुण्यकाल सारा दिन, नेप्च्यून उ.भा. 1 में 26/0, मकर संक्रान्ति, (G) मेरु त्रयोदशी (जैन), (H) (प्रमुखशाही स्नान) (I) बुध श्रव. में 22/4, यूरेनस मार्गी 21/53, माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,

श्री वि.सं. 2081 | तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) | फरवरी, सन् 2025 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ शुक्ल	1	3	श.	11	38	पू.भा.	26	33	प.	12	24	मीन	20	58	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	भ. 22/26 बाद, शुक्र उ.भा. में 8/25, गौरी तृतीया (A)
	2	4	र.	9	14	उ.भा.	24	52	शि.	9	14	मीन			7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	भ. 9/14 तक, शनि पू.भा. 2 में 7/27, श्रीपञ्चमी/(B)
		5		30	53				सि.	30	5																					पंचमी तिथिक्षय,
	3	6	चं.	28	37	रेव.	23	16	सा.	27	2	मेष	23	16	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	पंचक समाप्त 23/16,
	4	7	मं.	26	31	अश्वि.	21	49	शु.	24	6	मेष			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	40	4	भ. 26/31 बाद, गुरु मार्गी 15/11, रथ सप्तमी (C)
	5	8	बु.	24	36	भर.	20	33	शु.	21	18	वृष	26	16	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	भ. 13/34 तक, भीष्माष्टमी,
	6	9	गु.	22	54	कृत्ति.	19	29	ब्र.	18	41	वृष			7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	सूर्य धनि. में 7/49, गुप्त नवरात्र समाप्त,
	7	10	शु.	21	26	रोहि.	18	40	ऐं.	16	16	मिथुन	30	21	7	14	17	59	7	9	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	बुध धनि. में 18/32, नवरात्र-पारणा,
	8	11	श.	20	16	मृग.	18	7	वै.	14	4	मिथुन			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 8/51 से 20/16 तक, जया एकादशी व्रत (स.),
	9	12	र.	19	25	आर्द्रा	17	53	वि.	12	6	मिथुन			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	9	भीष्मद्वादशी,
	10	13	चं.	18	57	पुन.	18	0	प्री.	10	26	कर्क	11	56	7	11	18	2	7	7	18	4	7	11	18	11	6	40	17	45	10	सोमप्रदोष व्रत,
	11	14	मं.	18	56	पुष्य	18	34	आ.	9	5	कर्क			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 18/56 से 31/9 तक, बुध कुम्भ में 12/54,
	12	15	बु.	19	23	आश्ले.	19	35	सौ.	8	6	सिंह	19	35	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 21/56, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न (D)
फाल्गुन कृष्ण	13	1	गु.	20	22	मघा	21	7	शो.	7	31	सिंह			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	13	6	38	17	47	13	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ,
	14	2	शु.	21	52	पू.फा.	23	9	अ.	7	20	कन्या	29	44	7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	बुध शत. में 29/5,
	15	3	श.	23	52	उ.फा.	25	39	सु.	7	32	कन्या			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ 10/52 से 23/52 तक,
	16	4	र.	26	16	हस्त	28	31	धृ.	8	5	कन्या			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	17	5	चं.	28	53	चित्रा	-	-	शू.	8	54	तुला	18	2	7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	
	18	6	मं.	-	-	चित्रा	7	35	गं.	9	51	तुला			7	4	18	9	7	1	18	9	7	4	18	17	6	34	17	50	18	सूर्य सायन मीन में 15/37, वसन्त ऋतु प्रारम्भ,
	19	6	बु.	7	32	स्वाती	10	39	वृ.	10	48	वृश्चि.	30	49	7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	भ. 7/32 से 20/45 तक, सूर्य शत. में 12/26,
	20	7	गु.	9	58	विशा.	13	30	ध्रु.	11	33	वृश्चि.			7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	20	
	21	8	शु.	11	58	अनु.	15	54	व्या.	11	58	वृश्चि.			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	52	21	
	22	9	श.	13	19	ज्येष्ठा	17	40	ह.	11	55	धनु	17	40	7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	20	6	31	17	52	22	भ. 25/37 बाद, बुध पू.भा. में 9/50,
	23	10	र.	13	56	मूल	18	42	व.	11	18	धनु			6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	भ. 13/56 तक, शनि अस्त 18/12,
	24	11	चं.	13	45	पू.षा.	18	59	सि.	10	5	मकर	24	55	6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	मंगल मार्गी 7/31, विजया एकादशी व्रत (स.),
	25	12	मं.	12	48	उ.षा.	18	31	व्य.	8	14	मकर			6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	बुध पश्चिम में उदित 18/14, भौमप्रदोष व्रत,
									व.	29	50																					
	26	13	बु.	11	9	श्रव.	17	23	प.	26	57	कुम्भ	28	37	6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	भ. 11/9 से 22/2 तक, पंचक प्रारम्भ 28/37, (E)
	27	14	गु.	8	55	धनि.	15	43	शि.	23	41	कुम्भ			6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	27	बुध मीन में 23/45,
		30		30	14																											अमावस तिथिक्षय,
फा.शु.	28	1	शु.	27	16	शत.	13	40	सि.	20	7	मीन	29	58	6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	25	17	55	28	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारंभ,

(A) (गौतरी), वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी, (B) वसन्त पञ्चमी (लक्ष्मी-सरस्वती पूजन), (C) (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन), *(D)* बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त, (E) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,

श्री वि.सं. 2081-82															तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टै. टा.)																	मार्च, सन् 2025 ई.
मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन शुक्ल	1	2	श.	24	9	पू.भा.	11	22	सा.	16	24	मीन			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	25	17	56	1	चन्द्रदर्शन, मु. 45, बुध उ.भा. में 26/16, शुक्र वक्री 30/7 (A)
	2	3	र.	21	2	उ.भा.	8	59	शु.	12	39	मेष	30	39	6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	24	6	24	17	57	2	पंचक समाप्त 30/39, शनि पू.भा. 3 में 18/5,
						रेव.	30	39																								
	3	4	चं.	18	2	अश्वि.	28	29	शु.	8	57	मेष			6	51	18	18	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	भ. 7/32 से 18/2 तक,
									ब्र.	29	24																					
	4	5	मं.	15	17	भर.	26	37	ऐं.	26	6	मेष			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	सूर्य पू.भा. में 18/40
	5	6	बु.	12	51	कृत्ति.	25	8	वै.	23	7	वृष	8	13	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	
	6	7	गु.	10	51	रोहि.	24	5	वि.	20	29	वृष			6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	भ. 10/51 से 22/5 तक,
	7	8	शु.	9	19	मृग.	23	32	प्री.	18	14	मिथुन	11	45	6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	होलाष्टक प्रारम्भ,
	8	9	श.	8	16	आर्द्रा	23	28	आ.	16	24	मिथुन			6	45	18	22	6	42	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	होलाष्टक 7 से 14 मार्च
	9	10	र.	7	45	पुन.	23	55	सौ.	14	58	कर्क	17	45	6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	भ. 19/45 बाद,
	10	11	चं.	7	45	पुष्य	24	51	शो.	13	56	कर्क			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 7/45 तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.), गोविन्द द्वादशी,
	11	12	मं.	8	14	आश्ले.	26	15	अ.	13	17	सिंह	26	15	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	भौमप्रदोष व्रत,
	12	13	बु.	9	12	मघा	28	5	सु.	13	0	सिंह			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	
	13	14	गु.	10	36	पू.फा.	30	19	धृ.	13	2	सिंह			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	31	6	13	18	2	13	भ. 10/36 से 23/30 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (B)
	14	15	शु.	12	24	उ.फा.	-	-	शू.	13	23	कन्या	12	56	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	सं. सूर्य मीन में 18/50, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद (C)
चैत्र कृष्ण	15	1	श.	14	33	उ.फा.	8	54	गं.	13	59	कन्या			6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	चैत्र कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध वक्री 12/16, वसन्तोत्सव, (D)
	16	2	र.	16	58	हस्त	11	45	वृ.	14	48	तुला	25	15	6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	भ. 30/16 बाद, राहु पू.भा. 4, केतु उ.फा. 2 में 21/45, (E)
	17	3	चं.	19	33	चित्रा	14	47	ध्रु.	15	44	तुला			6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	भ. 19/33 तक, सूर्य उ.भा. में 27/12, शुक्र-वार्धक्य (F)
	18	4	मं.	22	9	स्वाती	17	51	व्या.	16	43	तुला			6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	यूरेनस कृत्ति. 2 वृष में 29/44,
	19	5	बु.	24	37	विशा.	20	50	ह.	17	37	वृश्चि.	14	6	6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	7	18	5	19	गुरु रोहि. 4 में 18/13,
	20	6	गु.	26	45	अनु.	23	31	व.	18	19	वृश्चि.			6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	6	18	5	20	भ. 26/45 बाद, सूर्य सायन मेष में 14/32, उत्तर गोल प्रारम्भ, (G)
	21	7	शु.	28	24	ज्येष्ठा	25	45	सि.	18	41	धनु	25	45	6	29	18	31	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	भ. 15/34 तक,
	22	8	श.	29	23	मूल	27	23	व्य.	18	36	धनु			6	28	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	श्रीशीतलाष्टमी, शक संवत् 1947 प्रारंभ,
	23	9	र.	29	38	पू.षा.	28	18	व.	17	58	धनु			6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	शुक्र पूर्व में उदित 6/26, शुक्र अस्त 20 मार्च
	24	10	चं.	29	5	उ.षा.	28	26	प.	16	44	मकर	10	24	6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	भ. 17/21 से 29/5 तक,
	25	11	मं.	27	46	श्रव.	27	49	शि.	14	53	मकर			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.), शुक्र उदित 23 मार्च
	26	12	बु.	25	43	धनि.	26	29	सि.	12	25	कुम्भ	15	14	6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	पंचक प्रारम्भ 15/14, शुक्रबाल्य समाप्त 6/26, (H)
	27	13	गु.	23	4	शत.	24	33	सा.	9	25	कुम्भ			6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	भ. 23/4 बाद, प्रदोषव्रत, वारुणी योग (सूर्यास्त तक),
									शु.	29	56																					
	28	14	शु.	19	56	पू.भा.	22	9	शु.	26	7	मीन	16	47	6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	भ. 9/30 तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरियाणा),
	29	30	श.	16	28	उ.भा.	19	26	ब्र.	22	3	मीन			6	19	18	36	6	18	18	34	6	25	18	39	5	56	18	9	29	शनि पू.भा. 4 मीन में 21/43, शनैश्चरी अमा, चान्द्र (I)
चै. शु.	30	1	र.	12	50	रेव.	16	35	ऐं.	17	53	मेष	16	35	6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक समाप्त (J)
	31	2	चं.	9	11	अश्वि.	13	45	वै.	13	46	मेष			6	17	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	सूर्य रेव. में 13/59, व. शुक्र पू.भा. में 28/45, गौरी तृतीया (K)
		3		29	42																											तृतीया तिथिक्षय,

(A)अवतारदिन श्रीरामकृष्ण परमहंस, (B) होलिका दहन (23/30 बाद), (C) होली, होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, (D) होला महल्ला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.), (E)बुध पश्चिम में अस्त 18/27, (F) प्रारम्भ 18/30, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (G) महाविषुव दिन, शुक्र पश्चिम में अस्त 18/30, मेला श्रीशीतला माता कुराली (पं.), (H) पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.), (I) संवत्सर 2081 वि. पूर्ण, (J) 16/35, शनि उदित 6/18, चान्द्र संवत्सर 2082 वि. प्रारम्भ, वासन्त (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, निम्बपत्र-प्राशन, ध्वजारोहण, चन्द्रव्रत, गुड़ी पड़वा, (K)(गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,

श्री वि. सं. 2082 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अप्रैल, सन् 2025 ई.

मास पक्ष	अंग्रेजी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ सूर्योदय		चण्डीगढ़ सूर्यास्त		दिल्ली सूर्योदय		दिल्ली सूर्यास्त		जयपुर सूर्योदय		जयपुर सूर्यास्त		वाराणसी सूर्योदय		वाराणसी सूर्यास्त		तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
चैत्र शुक्ल	1	4	मं.	26	32	भर.	11	6	वि.	9	47	वृष	16	30	6	15	18	37	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	भ. 16/7 से 26/32 तक, बुध पूर्व में उदित 6/15,
									प्री.	30	7																					
	2	5	बु.	23	50	कृत्ति.	8	49	आ.	26	49	वृष			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	मंगल कर्क में 25/25, श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	3	6	गु.	21	41	रोहि.	7	2	सौ.	24	1	मिथुन	18	21	6	13	18	39	6	13	18	36	6	19	18	41	5	51	18	11	3	व. बुध पू.भा. में 18/42, स्कन्द षष्ठी,
						मृग.	29	51																								
	4	7	शु.	20	13	आर्द्रा	29	20	शो.	21	45	मिथुन			6	12	18	39	6	12	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	भ. 20/13 बाद,
	5	8	श.	19	26	पुन.	29	32	अ.	20	3	कर्क	23	25	6	11	18	40	6	10	18	37	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 7/50 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी (पुनर्वसु-योग),
	6	9	र.	19	23	पुष्य	--	--	सु.	18	55	कर्क			6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	श्रीरामनवमी, नवरात्र-समाप्त,
	7	10	चं.	20	0	पुष्य	6	24	धृ.	18	18	कर्क			6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	बुध मार्गी 16/38, नवरात्र-पारणा,
	8	11	मं.	21	13	आश्ले.	7	55	शू.	18	10	सिंह	7	55	6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	भ. 8/37 से 21/13 तक, कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव,
	9	12	बु.	22	56	मघा	9	57	गं.	18	25	सिंह			6	6	18	43	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	श्रीविष्णु-दमनोत्सव,
	10	13	गु.	25	1	पू.फा.	12	24	वृ.	18	58	कन्या	19	4	6	5	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	गुरु मृग. 1 में 18/55 , प्रदोषव्रत, अनङ्ग त्रयोदशी, (A)
	11	14	शु.	27	22	उ.फा.	15	10	ध्रु.	19	45	कन्या			6	3	18	44	6	4	18	41	6	11	18	45	5	43	18	15	11	भ. 27/22 बाद, बुध उ.भा. में 17/30, दमनक चतुर्दशी, (B)
	12	15	श.	29	52	हस्त	18	7	व्या.	20	40	कन्या			6	2	18	44	6	3	18	41	6	10	18	46	5	42	18	15	12	भ. 16/37 तक, मंगल पुष्य में 6/4, चैत्री पूर्णिमा, वैशाख (C)
वैशाख कृष्ण	13	1	र.	--	--	चित्रा	21	10	ह.	21	39	तुला	7	38	6	1	18	45	6	2	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	13	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य अश्वि. मेष में 27/21, (D)
	14	1	चं.	8	25	स्वाती	24	13	व.	22	38	तुला			6	0	18	46	6	1	18	42	6	8	18	47	5	40	18	16	14	
	15	2	मं.	10	55	विशा.	27	10	सि.	23	32	वृश्चि.	20	27	5	59	18	46	5	59	18	43	6	7	18	47	5	39	18	17	15	भ. 24/6 बाद,
	16	3	बु.	13	17	अनु.	29	55	व्य.	24	18	वृश्चि.			5	58	18	47	5	58	18	44	6	6	18	48	5	38	18	17	16	भ. 13/17 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	17	4	गु.	15	23	ज्येष्ठा	--	--	व.	24	50	वृश्चि.			5	57	18	48	5	57	18	44	6	5	18	48	5	37	18	18	17	
	18	5	शु.	17	7	ज्येष्ठा	8	21	प.	25	3	धनु	8	21	5	56	18	48	5	56	18	45	6	4	18	49	5	36	18	18	18	गुड फ्राई डे,
	19	6	श.	18	22	मूल	10	21	शि.	24	52	धनु			5	54	18	49	5	55	18	45	6	3	18	49	5	36	18	19	19	भ. 18/22 बाद, सूर्य सायन वृष में 25/26 , ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ,
	20	7	र.	19	1	पू.षा.	11	48	सि.	24	12	मकर	18	4	5	53	18	50	5	54	18	46	6	2	18	50	5	35	18	19	20	भ. 06/41 तक, अगस्त्य अस्त, ईस्टर संडे,
	21	8	चं.	18	59	उ.षा.	12	37	सा.	23	0	मकर			5	52	18	50	5	53	18	46	6	1	18	50	5	34	18	20	21	
	22	9	मं.	18	13	श्रव.	12	44	शु.	21	13	कुम्भ	24	31	5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	भ. 29/28 बाद, पंचक प्रारम्भ 24/31,
	23	10	बु.	16	43	धनि.	12	7	शु.	18	51	कुम्भ			5	50	18	51	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	भ. 16/43 तक,
	24	11	गु.	14	32	शत.	10	49	ब्र.	15	55	मीन	27	25	5	49	18	52		50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	नेप्च्यून उ.भा. 2 में 8/59, वरूथिनी एकादशी व्रत (स.),(E)
	25	12	शु.	11	45	पू.भा.	8	53	ऐं.	12	30	मीन			5	48	18	53	5	50	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	शुक्र उ.भा. में 23/40, प्रदोषव्रत,
	26	13	श.	8	28	उ.भा.	6	27	वै.	8	41	मेष	27	39	5	47	18	53	5	49	18	49	5	56	18	53	5	30	18	22	26	भ. 8/28 से 18/39 तक, पंचक समाप्त 27/39,
		14		28	50	रेव.	27	39	वि.	28	35																					चतुर्दशी तिथिक्षय,
	27	30	र.	25	1	अश्वि.	24	39	प्री.	24	19	मेष			5	46	18	54	5	48	18	50	5	56	18	53	5	29	18	23	27	सूर्य भर. में 19/10, बुध रेव. में 15/30,
वै. शु.	28	1	चं.	21	11	भर.	21	37	आ.	20	2	वृष	26	53	5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गुरु मृग. 2 में 18/9, शनि उ.भा.(F)
	29	2	मं.	17	31	कृत्ति.	18	47	सौ.	15	53	वृष			5	44	18	55	5	46	18	51	5	54	18	54	5	27	18	24	29	चन्द्रदर्शन मु. 45, श्रीपरशुराम जयन्ती, श्री शिवाजी जयंती,
	30	3	बु.	14	12	रोहि.	16	18	शो.	12	1	मिथुन	27	15	5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	भ. 24/48 बाद, अक्षय तृतीया (रोहिणीयोग 16/18 तक),

(A) श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), (B) श्रीशिवदमनोत्सव, (C) स्नान प्रारम्भ, श्रीहनुमान् जयन्ती (द.भा.), श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, शुक्र मार्गी 6/33, मेष संक्रान्ति, वैशाखी (पं.), (E) श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती, (F) 1 में 8/19,

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशिनक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
वैशाख शुक्ल	1	4	गु.	11	24	मृग.	14	20	अ.	8	34	मिथुन			5	43	18	57	5	44	18	52	5	52	18	56	5	26	18	25	1	भ. 11/24 तक,
									सु.	29	38																					
	2	5	शु.	9	15	आर्द्रा	13	4	धृ.	27	19	मिथुन			5	42	18	57	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	2	आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
	3	6	श.	7	52	पुन.	12	34	शू.	25	40	कर्क	6	37	5	41	18	58	5	43	18	54	5	51	18	57	5	24	18	26	3	श्रीगंगा जन्म, श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती (ड.भा.),
	4	7	र.	7	19	पुष्य	12	53	गं.	24	41	कर्क			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	4	भ. 7/19 से 19/28 तक, प्लूटो वक्री 20/53.
	5	8	चं.	7	36	आश्ले.	14	1	वृ.	24	19	सिंह	14	1	5	39	18	59	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	श्रीजानकी जयन्ती,
	6	9	मं.	8	39	मघा	15	52	ध्रु.	24	29	सिंह			5	38	19	0	5	40	18	55	5	49	18	58	5	22	18	27	6	बुध अश्वि. मेष में 28/6,
	7	10	बु.	10	20	पू.फा.	18	17	व्या.	25	4	कन्या	24	57	5	37	19	1	5	40	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	7	भ. 23/24 बाद,
	8	11	गु.	12	29	उ.फा.	21	6	ह.	25	56	कन्या			5	37	19	1	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	भ. 12/29 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत (स.),**
	9	12	शु.	14	56	हस्त	24	*9	व.	26	57	कन्या			5	36	19	2	5	38	18	57	5	47	19	0	5	20	18	29	9	**प्रदोषव्रत,**
	10	13	श.	17	30	चित्रा	27	15	सि.	28	0	तुला	13	42	5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	0	5	20	18	29	10	
	11	14	र.	20	2	स्वाती	--	--	व्य.	29	0	तुला			5	34	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	भ. 20/2 बाद, सूर्य कृत्ति. में 13/18, **श्रीनृसिंह जयन्ती** (A)
	12	15	चं.	22	26	स्वाती	6	17	व.	--	--	वृश्चि.	26	27	5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	19	18	30	12	भ. 9/14 तक, मंगल आश्ले. में 8/33, **वैशाखी पूर्णिमा,** (B)
ज्येष्ठ कृष्ण	13	1	मं.	24	36	विशा.	9	9	व.	5	52	वृश्चि.			5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	**ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,**
	14	2	बु.	26	29	अनु.	11	47	प.	6	33	वृश्चि.			5	32	19	5	5	35	19	0	5	44	19	3	5	17	18	31	14	**सं. सूर्य वृष में 24/12, मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन** (C)
	15	3	गु.	28	3	ज्येष्ठा	14	7	शि.	7	1	धनु	14	7	5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	भ. 15/16 से 28/3 तक,
	16	4	शु.	29	14	मूल	16	7	सि.	7	14	धनु			5	31	19	7	5	34	19	1	5	42	19	4	5	16	18	32	16	शुक्र रेव. में 12/48, **श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,**
	17	5	श.	--	--	पू.षा.	17	44	सा.	7	8	मकर	24	3	5	31	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	
	18	5	र.	5	58	उ.षा.	18	52	शु.	6	42	मकर			5	30	19	8	5	33	19	3	5	41	19	5	5	16	18	33	18	**राहु पू.भा. 3 कुम्भ, केतु उ.फा. 1 सिंह में** 19/29.
	19	6	चं.	6	12	श्रव.	19	29	शु.	5	52	मकर			5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	5	5	15	18	34	19	भ. 6/12 से 18/02 तक, **बुध पूर्व में अस्त** 5/29.
									ब्र.	28	35																					
	20	7	मं.	5	52	धनि.	19	32	ऐं.	26	50	कुम्भ	7	35	5	29	19	9	5	32	19	4	5	41	19	6	5	15	18	34	20	**पंचक प्रारम्भ** 7/35, **सूर्य सायन मिथुन में** 24/25.
		8		28	55																											**अष्टमी तिथिक्षय,**
	21	9	बु.	27	22	शत.	18	58	वै.	24	34	कुम्भ			5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	7	5	14	18	35	21	बुध कृत्ति. में 22/18,
	22	10	गु.	25	12	पू.भा.	17	47	वि.	21	49	मीन	12	8	5	28	19	10	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	भ. 14/17 से 25/12 तक, **यूरेनस कृत्ति.** 3 में 11/30.
	23	11	शु.	22	30	उ.भा.	16	2	प्री.	18	36	मीन			5	27	19	11	5	30	19	5	5	39	19	8	5	14	18	36	23	**बुध वृष में** 13/0, **अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली** (D)
	24	12	श.	19	20	रेव.	13	48	आ.	15	0	मेष	13	48	5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	**पंचक समाप्त** 13/48, **शनिप्रदोष व्रत (देखें पृष्ठ 13),**
	25	13	र.	15	51	अश्वि.	11	12	सौ.	11	6	मेष			5	27	19	12	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	25	भ. 15/51 से 26/01 तक, **सूर्य रोहि. में** 9/31.
	26	14	चं.	12	12	भर.	8	23	शो.	7	1	वृष	13	40	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	**वटसावित्री व्रत (अमापक्ष),**
									अ.	26	54																					
	27	30	मं.	8	32	कृत्ति.	5	32	सु.	22	54	वृष			5	26	19	13	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	बुध रोहि. में 29/5, **भौमवती अमा, भावुका अमा,** (E)
						रोहि.	26	50																								
ज्ये. शु.		1		29	3																											**ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,**
	28	2	बु.	25	55	मृग.	24	29	धृ.	19	8	मिथुन	13	36	5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	**चन्द्रदर्शन, मु.** 30.
	29	3	गु.	23	18	आर्द्रा	22	38	शू.	15	46	मिथुन			5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	**गुरु मृग.** 4 में 28/45, **रम्भा तृतीया, श्रीमहाराणा प्रताप** (F)
	30	4	शु.	21	23	पुन.	21	29	गं.	12	56	कर्क	15	42	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	भ. 10/20 से 21/23 तक, **बलिदानदिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी,**
	31	5	श.	20	15	पुष्य	21	7	वृ.	10	43	कर्क			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	शुक्र अश्वि. मेष में 11/33.

(A) (देखें पृष्ठ 13), (B) **श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, श्रीबुद्ध जयन्ती, वैशाखस्नान समाप्त,** (C) मध्याह्न तक, बुध भर. में 25/2, गुरु मृग. 3 मिथुन में 22/36. (D) एकादशी (पं.), (E) **श्रीशनैश्चर जयन्ती,** (F) जयन्ती (राज.),

श्री वि. सं. 2082 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — जून, सन् 2025 ई.

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
ज्येष्ठ शुक्ल	1	6	र.	20	0	आश्ले.	21	36	ध्रु.	9	11	सिंह	21	36	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्यषष्ठी,
	2	7	चं.	20	35	मघा	22	55	व्या.	8	20	सिंह			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	2	भ. 20/35 बाद,
	3	8	मं.	21	56	पू.फा.	24	58	ह.	8	8	सिंह			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 09/15 तक, बुध मृग. में 6/56,
	4	9	बु.	23	54	उ.फा.	27	35	व.	8	28	कन्या	7	35	5	24	19	18	5	27	19	12	5	37	19	14	5	11	18	41	4	
	5	10	गु.	26	16	हस्त	--	--	सि.	9	13	कन्या			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	श्रीगंगा दशहरा,
	6	11	शु.	28	48	हस्त	6	33	व्य.	10	12	तुला	20	6	5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	14	5	11	18	42	6	भ. 15/32 से 28/48 तक, मंगल मघा सिंह में 26/9. (A)
	7	12	श.	--	--	चित्रा	9	39	व.	11	17	तुला			5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	शनि उ.भा. 2 में 14/5, गुरु-वार्धक्य प्रारम्भ 19/21. (B)
	8	12	र.	7	18	स्वाती	12	42	प.	12	17	तुला			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	8	सूर्य मृग. में 7/18, प्रदोषव्रत, **गुरु अस्त 10 जून**
	9	13	चं.	9	36	विशा.	15	31	शि.	13	8	वृश्चि.	8	50	5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	बुध आर्द्रा में 14/57,
	10	14	मं.	11	36	अनु.	18	1	सि.	13	44	वृश्चि.			5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	भ. 11/36 से 24/25 तक, बुध पश्चिम में उदित 19/21. (C)
	11	15	बु.	13	13	ज्येष्ठा	20	10	सा.	14	3	धनु	20	10	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	
आषाढ़ कृष्ण	12	1	गु.	14	28	मूल	21	57	शु.	14	4	धनु			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	12	आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	13	2	शु.	15	19	पू.षा.	23	20	शु.	13	47	धनु			5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	भ. 27/33 बाद, गुरु आर्द्रा 1 में 23/29, शुक्र भर. में 21/13,
	14	3	श.	15	47	उ.षा.	24	21	ब्र.	13	12	मकर	5	38	5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	17	5	11	18	45	14	भ. 15/47 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	15	4	र.	15	51	श्रव.	24	59	ऐं.	12	19	मकर			5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	45	15	सं. सूर्य मिथुन में 6/44, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक,
	16	5	चं.	15	32	धनि.	25	13	वै.	11	6	कुम्भ	13	9	5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	पंचक प्रारम्भ 13/9, बुध पुन. में 17/3,
	17	6	मं.	14	47	शत.	25	1	वि.	9	34	कुम्भ			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	17	भ. 14/47 से 26/11 तक,
	18	7	बु.	13	35	पू.भा.	24	23	प्री.	7	40	मीन	18	35	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	
									आ.	29	24																					
	19	8	गु.	11	56	उ.भा.	23	17	सौ.	26	46	मीन			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	
	20	9	शु.	9	50	रेव.	21	44	शो.	23	46	मेष	21	44	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	भ. 20/34 बाद, पंचक समाप्त 21/44.
	21	10	श.	7	19	अश्वि.	19	50	अ.	20	29	मेष			5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	21	भ. 7/19 तक, सूर्य सायन कर्क में 8/13, दक्षिणायन एवं (D)
		11		28	28																											एकादशी तिथिक्षय,
	22	12	र.	25	22	भर.	17	38	सु.	16	57	वृष	23	3	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	सूर्य आर्द्रा में 6/20, बुध कर्क में 21/32, योगिनी (E)
	23	13	चं.	22	10	कृत्ति.	15	17	धृ.	13	17	वृष			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 22/10 बाद, सोमप्रदोष व्रत,
	24	14	मं.	19	0	रोहि.	12	54	शू.	9	35	मिथुन	23	45	5	25	19	25	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	भ. 08/35 तक, बुध पुष्य में 29/3,
	25	30	बु.	16	1	मृग.	10	40	गं.	6	0	मिथुन			5	25	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	25	
									वृ.	26	39																					
आ. शु.	26	1	गु.	13	25	आर्द्रा	8	46	ध्रु.	23	40	कर्क	25	39	5	26	19	25	5	29	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	26	आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45, शुक्र कृत्ति.(F)
	27	2	शु.	11	19	पुन.	7	22	व्या.	21	10	कर्क			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	श्रीजगदीश रथोत्सव (रथयात्रा) पुरी (पुष्ययोग 7/22)(G)
	28	3	श.	9	54	पुष्य	6	35	ह.	19	15	कर्क			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	भ. 21/34 बाद, गुरु आर्द्रा 2 में 14/6,
	29	4	र.	9	15	आश्ले.	6	34	व.	17	58	सिंह	6	34	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ. 9/15 तक, शुक्र वृष में 14/10,
	30	5	चं.	9	24	मघा	7	20	सि.	17	20	सिंह			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	30	मंगल पू.फा. में 20/17, कुमार षष्ठी,

(A) बुध मिथुन में 9/27, निर्जला एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 13) (B) निर्जला एकादशी व्रत (वै.), चम्पा द्वादशी, (C) गुरु अस्त 19/21, वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा पक्ष), श्रीसत्यनारायण व्रत, (D) वर्षा ऋतु प्रारम्भ, योगिनी एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 14), (E) एकादशी व्रत (वै.), (F) में 12/18, आषाढ़ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (G) बाद, हिजरी सन् 1447 प्रारम्भ,

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	दिल्ली सूर्योदय मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	दिल्ली सूर्यास्त मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	जयपुर सूर्योदय मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	जयपुर सूर्यास्त मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	वाराणसी सूर्योदय मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	वाराणसी सूर्यास्त मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
आषाढ़ शुक्ल	1	6	मं.	10	21	पू.फा.	8	53	व्य.	17	18	कन्या	15	23	5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	21	5	15	18	48	1	विवस्वत् सप्तमी,
	2	7	बु.	11	58	उ.फा.	11	7	व.	17	46	कन्या			5	28	19	25	5	31	19	19	5	41	19	21	5	15	18	48	2	भ. 11/58 से 25/02 तक, **गुरु उदित 6 जुलाई**
	3	8	गु.	14	7	हस्त	13	50	प.	18	35	तुला	27	19	5	28	19	25	5	32	19	19	5	41	19	21	5	16	18	48	3	श्रीदुर्गाष्टमी,
	4	9	शु.	16	32	चित्रा	16	50	शि.	19	35	तुला			5	29	19	25	5	32	19	19	5	42	19	20	5	16	18	48	4	नेप्च्यून वक्री 27/8, आषाढ़ गुप्त नवरात्र समाप्त,
	5	10	श.	18	59	स्वाती	19	51	सि.	20	35	तुला			5	29	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	5	नवरात्र-पारणा,
	6	11	र.	21	15	विशा.	22	41	सा.	21	27	वृश्चि.	16	0	5	30	19	25	5	33	19	19	5	42	19	20	5	17	18	48	6	भ. 08/07 से 21/15 तक, सूर्य पुन. में 5/48, गुरु उदित (A)
	7	12	चं.	23	10	अनु.	25	11	शु.	22	2	वृश्चि.			5	30	19	24	5	33	19	18	5	43	19	20	5	17	18	48	7	बुध आश्ले. में 5/45,
	8	13	मं.	24	38	ज्येष्ठा	27	15	शु.	22	17	धनु	27	15	5	31	19	24	5	34	19	18	5	43	19	20	5	18	18	48	8	शुक्र रोहि. में 16/25, भौमप्रदोष व्रत,
	9	14	बु.	25	37	मूल	28	50	ब्र.	22	8	धनु			5	31	19	24	5	34	19	18	5	44	19	20	5	18	18	48	9	भ. 25/37 बाद, गुरु-बाल्य समाप्त 5/30,
	10	15	गु.	26	6	पू.षा.	--	--	ऐं.	21	37	धनु			5	32	19	24	5	35	19	18	5	44	19	20	5	19	18	48	10	भ. 13/52 तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, श्रीगुरु पूर्णिमा (व्यासपूजा), (B)
श्रावण कृष्ण	11	1	शु.	26	9	पू.षा.	5	56	वै.	20	44	मकर	12	8	5	32	19	24	5	35	19	18	5	45	19	20	5	19	18	48	11	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	12	2	श.	25	46	उ.षा.	6	36	वि.	19	31	मकर			5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	19	18	47	12	अशून्य शयनव्रत,
	13	3	र.	25	3	श्रव.	6	53	प्री.	18	0	कुम्भ	18	53	5	33	19	23	5	36	19	17	5	45	19	19	5	20	18	47	13	भ. 13/25 से 25/3 तक, पंचक प्रारम्भ 18/53, गुरु आर्द्रा 3(C)
	14	4	चं.	24	0	धनि.	6	49	आ.	16	13	कुम्भ			5	34	19	23	5	37	19	17	5	46	19	19	5	20	18	47	14	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	15	5	मं.	22	39	शत.	6	26	सौ.	14	12	मीन	23	58	5	34	19	22	5	37	19	17	5	46	19	19	5	21	18	47	15	
	16	6	बु.	21	2	पू.भा.	5	46	शो.	11	57	मीन			5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	21	18	46	16	भ. 21/2 बाद, सं. सूर्य कर्क में 17/32, मु. 45, (D)
						उ.भा.	28	50																								
	17	7	गु.	19	9	रेव.	27	39	अ.	9	28	मेष	27	39	5	35	19	22	5	38	19	16	5	47	19	18	5	22	18	46	17	भ. 08/05 तक, पंचक समाप्त 27/39,
	18	8	शु.	17	2	अश्वि.	26	14	सु.	6	48	मेष			5	36	19	21	5	39	19	16	5	48	19	18	5	22	18	46	18	बुध वक्री 10/14,
									धृ.	27	56																					
	19	9	श.	14	42	भर.	24	37	शू.	24	55	मेष			5	36	19	21	5	39	19	15	5	48	19	17	5	23	18	45	19	भ. 25/28 बाद, सूर्य पुष्य में 29/22,
	20	10	र.	12	13	कृत्ति.	22	53	गं.	21	48	वृष	6	12	5	37	19	20	5	40	19	15	5	49	19	17	5	23	18	45	20	भ. 12/13 तक, शुक्र मृग. में 12/56, राहु पू.भा. 2, (E)
	21	11	चं.	9	39	रोहि.	21	7	वृ.	18	38	वृष			5	38	19	20	5	40	19	14	5	49	19	17	5	24	18	45	21	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	22	12	मं.	7	6	मृग.	19	25	ध्रु.	15	32	मिथुन	8	15		38	19	19	5	41	19	14	5	50	19	16	5	24	18	44	22	भ. 28/40 बाद, सूर्य सायन सिंह में 19/00, भौमप्रदोष व्रत,
		13		28	40																											त्रयोदशी तिथिक्षय,
	23	14	बु.	26	29	आर्द्रा	17	54	व्या.	12	34	मिथुन			5	39	19	19	5	42	19	13	5	50	19	16	5	25	18	44	23	भ. 15/34 तक, मंगल उ.फा. में 8/36, बुध पश्चिम में (F)
	24	30	गु.	24	41	पुन.	16	43	ह.	9	50	कर्क	10	59	5	39	19	18	5	42	19	13	5	51	19	15	5	25	18	43	24	हरियाली अमा,
श्रावण शुक्ल	25	1	शु.	23	23	पुष्य	16	0	व.	7	28	कर्क			5	40	19	18	5	43	19	12	5	51	19	15	5	26	18	43	25	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
									सि.	29	31																					
	26	2	श.	22	42	आश्ले.	15	52	व्य.	28	5	सिंह	15	52	5	41	19	17	5	43	19	12	5	52	19	14	5	26	18	43	26	चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र मिथुन में 8/57,
	27	3	र.	22	42	मघा	16	23	व.	27	13	सिंह			5	41	19	16	5	44	19	11	5	52	19	14	5	26	18	42	27	मधुस्रवा तृतीया (संधारा तीज),
	28	4	चं.	23	24	पू.फा.	17	35	प.	26	53	कन्या	24	0	5	42	19	16	5	44	19	11	5	53	19	13	5	27	18	42	28	भ. 11/03 से 23/24 तक, मंगल कन्या में 19/58, गुरु आर्द्रा (G)
	29	5	मं.	24	47	उ.फा.	19	27	शि.	27	4	कन्या			5	42	19	15	5	45	19	10	5	54	19	12	5	27	18	41	29	व. बुध पुष्य में 16/24, नागपंचमी,
	30	6	बु.	26	42	हस्त	21	53	सि.	27	40	कन्या			5	43	19	14	5	45	19	9	5	54	19	12	5	28	18	40	30	यूरेनस कृत्ति. 4 में 21/52, श्रीकल्कि जयन्ती,
	31	7	गु.	28	58	चित्रा	24	41	सा.	28	32	तुला	11	15	5	44	19	14	5	46	19	9	5	55	19	11	5	28	18	40	31	भ. 28/58 बाद, शुक्र आर्द्रा में 27/45, (H)

(A) 5/30, हरिशयनी एकादशी व्रत (स.), श्रीविष्णु-शयनोत्सव, (B) चातुर्मास्य व्रत-नियमादि प्रारम्भ, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, श्रीशिवशयनोत्सव, (C) में 7/3, शनि वक्री 9/38, (D) पुण्यकाल सारा दिन, (E) केतु पू.फा. 4 में 16/43, (F) अस्त 19/19, श्रावण-शिवरात्रि, (G) 4 में 8/57, (H) गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती,

श्री वि. सं. 2082 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अगस्त, सन् 2025 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
श्रावण शुक्ल	1	8	शु.	--	--	स्वाती	27	40	शु.	29	30	तुला			5	44	19	13	5	47	19	8	5	55	19	11	5	29	18	39	1	भ. 18/10 तक, श्रीदुर्गाष्टमी,
	2	8	श.	7	23	विशा.	--	--	शु.	--	--	वृश्चि.	23	52	5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	29	18	39	2	सूर्य आश्ले. में 28/8,
	3	9	र.	9	42	विशा.	6	35	शु.	6	24	वृश्चि.			5	45	19	11	5	48	19	7	5	56	19	9	5	30	18	38	3	
	4	10	चं.	11	42	अनु.	9	12	ब्र.	7	4	वृश्चि.			5	46	19	11	5	48	19	6	5	57	19	9	5	30	18	37	4	भ. 24/27 बाद,
	5	11	मं.	13	12	ज्येष्ठा	11	22	ऐं.	7	24	धनु	11	22	5	47	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	भ. 13/12 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	6	12	बु.	14	8	मूल	13	0	वै.	7	17	धनु			5	47	19	9	5	49	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	6	प्रदोषव्रत,
	7	13	गु.	14	28	पू.षा.	14	1	वि.	6	42	मकर	20	11	5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	7	
									प्री.	29	38																					
	8	14	शु.	14	12	उ.षा.	14	28	आ.	28	8	मकर			5	49	19	7	5	50	19	3	5	59	19	6	5	32	18	35	8	भ. 14/12 से 25/49 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	9	15	श.	13	25	श्रव.	14	23	सौ.	26	15	कुम्भ	26	11	5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	33	18	34	9	पंचक प्रारम्भ 26/11, रक्षाबन्धन (राखी) (देखें पृष्ठ 14),(A)
भाद्रपद कृष्ण	10	1	र.	12	10	धनि.	13	52	शो.	24	2	कुम्भ			5	50	19	5	5	52	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	10	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध पूर्व में उदित 5/50,
	11	2	चं.	10	34	शत.	13	0	अ.	21	33	कुम्भ			5	50	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	32	11	भ. 31/37 बाद, बुध मार्गी 12/59,
	12	3	मं.	8	41	पू.भा.	11	52	सु.	18	53	मीन	6	10	5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	32	12	भ. 8/41 तक, गुरु पुन. 1 में 29/6, शुक्र पुन. में 14/8, (B)
	13	4	बु.	6	36	उ.भा.	10	32	धृ.	16	5	मीन			5	52	19	3	5	53	18	58	6	1	19	2	5	34	18	31	13	मंगल हस्त में 22/32,
		5		28	24																											पञ्चमी तिथिक्षय,
	14	6	गु.	26	7	रेव.	9	6	शू.	13	12	मेष	9	6	5	52	19	2	5	54	18	57	6	2	19	1	5	35	18	30	14	भ. 26/7 बाद, पंचक समाप्त 9/6,
	15	7	शु.	23	50	अश्वि.	7	36	गं.	10	16	मेष			5	53	19	1	5	54	18	56	6	2	19	0	5	35	18	29	15	भ. 12/58 तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.) (C)
	16	8	श.	21	35	भर.	6	6	वृ.	7	21	वृष	11	43	5	53	19	0	5	55	18	56	6	3	18	59	5	36	18	28	16	सं. सूर्य मघा सिंह में 25/52, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन(D)
						कृत्ति.	28	38	ध्रु.	28	28																					
	17	9	र.	19	24	रोहि.	27	17	व्या.	25	40	वृष			5	54	18	59	5	55	18	55	6	3	18	58	5	36	18	27	17	श्रीगुग्गा नवमी,
	18	10	चं.	17	23	मृग.	26	6	ह.	22	59	मिथुन	14	40	5	55	18	57	5	56	18	54	6	3	18	57	5	37	18	27	18	भ. 6/23 से 17/23 तक, व. शनि उ.भा. 1 में 13/19.
	19	11	मं.	15	33	आर्द्रा	25	7	व.	20	29	मिथुन			5	55	18	56	5	56	18	53	6	4	18	56	5	37	18	26	19	अजा एकादशी व्रत (स.),
	20	12	बु.	13	59	पुन.	24	27	सि.	18	13	कर्क	18	35	5	56	18	55	5	57	18	52	6	4	18	55	5	37	18	25	20	शुक्र कर्क में 25/20, प्रदोषव्रत,
	21	13	गु.	12	45	पुष्य	24	8	व्य.	16	14	कर्क			5	56	18	54	5	57	18	51	6	5	18	54	5	38	18	24	21	भ. 12/45 से 24/20 तक, बुध आश्ले. में 28/21, पर्युषण (E)
	22	14	शु.	11	56	आश्ले.	24	16	व.	14	35	सिंह	24	16	5	57	18	53	5	58	18	50	6	5	18	53	5	38	18	23	22	सूर्य सायन कन्या में 26/4, शरद् ऋतु प्रारम्भ,
	23	30	श.	11	36	मघा	24	54	प.	13	19	सिंह			5	57	18	52	5	58	18	49	6	6	18	52	5	39	18	22	23	शुक्र पुष्य में 20/37, शनैश्चरी अमा, कुशोत्पाटिनी अमा,(F)
भाद्रपद शुक्ल	24	1	र.	11	48	पू.फा.	26	5	शि.	12	29	सिंह			5	58	18	51	5	59	18	47	6	6	18	51	5	39	18	21	24	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30,
	25	2	चं.	12	35	उ.फा.	27	49	सि.	12	6	कन्या	8	28	5	59	18	50	5	59	18	46	6	7	18	50	5	39	18	20	25	मेला श्री डेरा बाबा गोसाईआणां (कुराली) पं.,
	26	3	मं.	13	55	हस्त	--	--	सा.	12	8	कन्या			5	59	18	49	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	26	भ. 26/49 बाद, गौरी तृतीया, हरितालिका तृतीया, श्रीवराह (G)
	27	4	बु.	15	44	हस्त	6	4	शु.	12	34	तुला	19	21	6	0	18	48	6	0	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	27	भ. 15/44 तक, श्रीसिद्धिविनायक व्रत,
	28	5	गु.	17	57	चित्रा	8	43	शु.	13	18	तुला			6	0	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	28	ऋषि पंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन),
	29	6	शु.	20	22	स्वाती	11	38	ब्र.	14	12	तुला			6	1	18	45	6	1	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	29	सूर्यषष्ठी व्रत,
	30	7	श.	22	47	विशा.	14	37	ऐं.	15	9	वृश्चि.	7	53	6	2	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	भ. 22/47 बाद, सूर्य पू.फा. में 21/44, बुध मघा सिंह में (H)
	31	8	र.	24	58	अनु.	17	27	वै.	15	58	वृश्चि.			6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	भ. 11/52 तक, श्रीराधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, (I)

(A) श्रावणी पूर्णिमा, श्रीअमरनाथ यात्रा (कश्मीर), ऋक् उपाकर्म, शुक्ल-कृष्ण-यजु-उपाकर्म, (B) कज्जली तृतीया, श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), बहुला चतुर्थी, (C) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), भारत स्वतन्त्रता दिवस, (D) मध्याह्न तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.), गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), (E) पर्व (जैन), (F) पिठोरी अमा, (G) जयन्ती (देखें पृष्ठ 14), साम उपाकर्म, कलंक चतुर्थी (चन्द्रदर्शन निषिद्ध) (चन्द्रास्त 20/28), (H) 16/44, गुरु पुन. 2 में 10/44, बुध पूर्व में अस्त 6/2, मुक्ताभरण (संतान) सप्तमी व्रत, (I) दूर्वाष्टमी व्रत,

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
भाद्रपद शुक्ल	1	9	चं.	26	43	ज्येष्ठा	19	55	वि.	16	31	धनु	19	55	6	3	18	42	6	3	18	39	6	10	18	43	5	42	18	13	1	श्रीचन्दनवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
	2	10	मं.	27	53	मूल	21	51	प्री.	16	39	धनु			6	3	18	40	6	3	18	38	6	10	18	42	5	43	18	12	2	
	3	11	बु.	28	22	पू.षा.	23	8	आ.	16	17	मकर	29	21	6	4	18	39	6	4	18	36	6	11	18	41	5	43	18	11	3	भ. 16/07 से 28/22 तक, मंगल चित्रा में 17/52, (A)
	4	12	गु.	28	8	उ.षा.	23	44	सौ.	15	21	मकर			6	4	18	38	6	4	18	35	6	11	18	40	5	43	18	10	4	श्रीवामन जयन्ती, अगस्त्य उदित, **खग्रास चन्द्रग्रहण 7 सितंबर**
	5	13	शु.	27	13	श्रव.	23	38	शो.	13	52	मकर			6	5	18	37	6	5	18	34	6	12	18	39	5	44	18	9	5	प्रदोष व्रत,
	6	14	श.	25	41	धनि.	22	55	अ.	11	51	कुम्भ	11	21	6	5	18	35	6	5	18	33	6	12	18	38	5	44	18	8	6	भ. 25/41 बाद, पंचक प्रारम्भ 11/21, बुध पू.फा. में (B)
	7	15	र.	23	38	शत.	21	41	सु.	9	22	कुम्भ			6	6	18	34	6	6	18	32	6	12	18	36	5	44	18	7	7	भ. 12/39 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा,(C)
आश्विन कृष्ण	8	1	चं.	21	12	पू.भा.	20	2	धृ.	6	30	मीन	14	29	6	7	18	33	6	6	18	31	6	13	18	35	5	45	18	6	8	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, महालय/पितृपक्ष प्रारम्भ, (D)
									शू.	27	20																					
	9	2	मं.	18	29	उ.भा.	18	7	गं.	23	58	मीन			6	7	18	32	6	7	18	29	6	13	18	34	5	45	18	5	9	भ. 29/3 बाद, द्वितीया का श्राद्ध, ग्रहणशूल
	10	3	बु.	15	38	रेव.	16	3	वृ.	20	31	मेष	16	3	6	8	18	30	6	7	18	28	6	14	18	33	5	46	18	4	10	भ. 15/38 तक, पंचक समाप्त 16/3, तृतीया का श्राद्ध, (E)
	11	4	गु.	12	46	अश्वि.	13	58	ध्रु.	17	4	मेष			6	8	18	29	6	8	18	27	6	14	18	32	5	46	18	3	11	पंचमी का श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
	12	5	शु.	9	59	भर.	11	58	व्या.	13	43	वृष	17	30	6	9	18	28	6	8	18	26	6	15	18	31	5	46	18	2	12	षष्ठी का श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
	13	6	श.	7	23	कृत्ति.	10	11	ह.	10	32	वृष			6	9	18	27	6	9	18	25	6	15	18	30	5	47	18	0	13	भ. 7/23 से 18/13 तक, सूर्य उ.फा. में 15/41, मंगल तुला (F)
		7		29	4																											सप्तमी तिथिक्षय,
	14	8	र.	27	6	रोहि.	8	41	व.	7	35	मिथुन	20	3	6	10	18	25	6	9	18	23	6	15	18	29	5	47	17	59	14	शुक्र मघा सिंह में 24/17, अष्टमी का श्राद्ध, (G)
									सि.	28	55																					
	15	9	चं.	25	31	मृग.	7	31	व्य.	26	34	मिथुन			6	11	18	24	6	10	18	22	6	16	18	27	5	47	17	58	15	बुध कन्या में 11/8, नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
	16	10	मं.	24	22	आर्द्रा	6	46	व.	24	34	कर्क	24	28	6	11	18	23	6	10	18	21	6	16	18	26	5	48	17	57	16	भ. 12/56 से 24/22 तक, सं. सूर्य कन्या में 25/47, मु. 45,(H)
	17	11	बु.	23	40	पुन.	6	26	प.	22	54	कर्क			6	12	18	22	6	11	18	20	6	17	18	25	5	48	17	56	17	एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी व्रत (स.),
	18	12	गु.	23	24	पुष्य	6	32	शि.	21	37	कर्क			6	12	18	20	6	11	18	19	6	17	18	24	5	49	17	55	18	व. नेप्च्यून उ.भा. 1 में 29/4, द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों(I)
	19	13	शु.	23	37	आश्ले.	7	5	सि.	20	41	सिंह	7	5	6	13	18	19	6	12	18	17	6	18	18	23	5	49	17	54	19	भ. 23/37 बाद, गुरु पुन. 3 में 13/7, त्रयोदशी का श्राद्ध, (J)
	20	14	श.	24	17	मघा	8	5	सा.	20	6	सिंह			6	13	18	18	6	12	18	16	6	18	18	22	5	49	17	53	20	भ. 11/57 तक, बुध हस्त में 24/53, चतुर्दशी (अपमृत्यु वालों)(K)
	21	30	र.	25	24	पू.फा.	9	32	शु.	19	52	कन्या	15	57	6	14	18	16	6	13	18	15	6	18	18	21	5	50	17	52	21	राहु पू.भा. 1, केतु पू.फा. 3 में 14/24, सर्वपितृ अमा,(L)
आश्विन शुक्ल	22	1	चं.	26	56	उ.फा.	11	24	शु.	19	58	कन्या			6	14	18	15	6	13	18	14	6	19	18	19	5	50	17	51	22	आश्विन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन तुला में 23/50, (M)
	23	2	मं.	28	52	हस्त	13	40	ब्र.	20	23	तुला	26	56	6	15	18	14	6	14	18	13	6	19	18	18	5	50	17	50	23	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल स्वा. में 20/57,
	24	3	बु.	--	--	चित्रा	16	16	ऐं.	21	2	तुला			6	16	18	13	6	14	18	11	6	20	18	17	5	51	17	48	24	
	25	3	गु.	7	6	स्वाती	19	8	वै.	21	53	तुला			6	16	18	11	6	15	18	10	6	20	18	16	5	51	17	47	25	भ. 20/19 बाद, शुक्र पू.फा. में 22/11,
	26	4	शु.	9	33	विशा.	22	9	वि.	22	50	वृश्चि.	15	23	6	17	18	10	6	15	18	9	6	21	18	15	5	52	17	46	26	भ. 9/33 तक, श्री उपाङ्गललिता व्रत,
	27	5	श.	12	4	अनु.	25	8	प्री.	23	45	वृश्चि.			6	17	18	9	6	16	18	8	6	21	18	14	5	52	17	45	27	सूर्य हस्त में 7/7,
	28	6	र.	14	27	ज्येष्ठा	27	54	आ.	24	31	धनु	27	54	6	18	18	8	6	16	18	7	6	22	18	13	5	52	17	44	28	बुध चित्रा में 23/6,
	29	7	चं.	16	32	मूल	30	17	सौ.	25	0	धनु			6	19	18	6	6	17	18	6	6	22	18	12	5	53	17	43	29	भ. 16/32 से 29/19 तक, सरस्वती आवाहन,
	30	8	मं.	18	6	पू.षा.	--	--	शो.	25	3	धनु			6	19	18	5	6	17	18	4	6	22	18	10	5	53	17	42	30	बुध पश्चिम में उदित 18/5, सरस्वती पूजन, (N)

(A) शुक्र आश्ले. में 23/52, पद्मा एकादशी व्रत (स.), (B) 16/43, यूरेनस वक्री 10/22, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत, ग्रहणशूल, (C) पूर्णिमा का महालय श्राद्ध (देखें पृष्ठ 21), खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 20), (D) प्रतिपदा का श्राद्ध, ग्रहणशूल, (E) चतुर्थी का श्राद्ध (देखें पृष्ठ 15), श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (F) में 21/22, बुध उ.फा. में 16/02, सप्तमी का श्राद्ध, (G)श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, (H)पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, दशमी का श्राद्ध, (I) का श्राद्ध, (J) मघा श्राद्ध, प्रदोष व्रत, (K) का श्राद्ध, (L) चतुर्दशी/अमा/अज्ञात मृत्युतिथि वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय/पितृपक्ष समाप्त, (M) दक्षिणगोल प्रारम्भ, विषुवदिन, नाना-नानी का श्राद्ध, आश्विन (शारद) नवरात्र प्रारम्भ, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, (N) श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी,

श्री वि. सं. 2082 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — अक्तूबर, सन् 2025 ई.

मास पक्ष	अक्तूबर	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	समाप्ति-काल मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
आश्विन शुक्ल	1	9	बु.	19	1	पू.षा.	8	6	अ.	24	33	मकर	14	27	6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41	1	सरस्वती के लिए बलिदान, महानवमी (पूजा, उपवास (A)
	2	10	गु.	19	11	उ.षा.	9	13	सु.	23	28	मकर			6	20	18	3	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40	2	बुध तुला में 24/43, नवरात्र-पारणा, सरस्वती विसर्जन,(B)
	3	11	शु.	18	33	श्रव.	9	34	धृ.	21	45	कुम्भ	21	27	6	21	18	1	6	19	18	1	6	24	18	7	5	54	17	39	3	भ. 6/52 से 18/33 तक, पंचक प्रारम्भ 21/27, व. शनि पू.भा.(C)
	4	12	श.	17	9	धनि.	9	9	शू.	19	26	कुम्भ			6	22	18	0	6	19	18	0	6	24	18	6	5	55	17	38	4	शनिप्रदोष व्रत,
	5	13	र.	15	4	शत.	8	1	गं.	16	34	मीन	24	45	6	22	17	59	6	20	17	59	6	25	18	5	5	55	17	37	5	
						पू.भा.	30	16																								
	6	14	चं.	12	24	उ.भा.	28	1	वृ.	13	13	मीन			6	23	17	58	6	21	17	57	6	25	18	4	5	56	17	36	6	भ. 12/24 से 22/50 तक, शुक्र उ.फा. में 18/6, शरत् पूर्णिमा,(D)
	7	15	मं.	9	17	रेव.	25	28	ध्रु.	9	31	मेष	25	28	6	23	17	56	6	21	17	56	6	26	18	3	5	56	17	35	7	पंचक समाप्त 25/28, बुध स्वा. में 12/18, श्रीवाल्मीकि जयन्ती,(E)
									व्या.	29	35																					
कार्तिक कृष्ण		1		29	53																											कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	8	2	बु.	26	23	अश्वि.	22	45	ह.	25	32	मेष			6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	2	5	57	17	34	8	
	9	3	गु.	22	54	भर.	20	2	व.	21	32	वृष	25	23	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	1	5	57	17	33	9	भ. 12/38 से 22/54 तक, शुक्र कन्या में 10/48,
	10	4	शु.	19	38	कृत्ति.	17	31	सि.	17	41	वृष			6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	18	0	5	58	17	32	10	सूर्य चित्रा में 20/12, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 15),(F)
	11	5	श.	16	43	रोहि.	15	20	व्य.	14	7	मिथुन	26	24	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	59	5	58	17	31	11	
	12	6	र.	14	17	मृग.	13	36	व.	10	55	मिथुन			6	27	17	51	6	24	17	51	6	28	17	58	5	58	17	30	12	भ. 14/17 से 25/20 तक,
	13	7	चं.	12	24	आर्द्रा	12	27	प.	8	10	कर्क	29	58	6	27	17	49	6	24	17	50	6	29	17	56	5	59	17	29	13	मंगल विशा. में 9/17, अहोई अष्टमी (श्रीमहाकाली-पूजन),
									शि.	29	55																					
	14	8	मं.	11	10	पुन.	11	54	सि.	28	11	कर्क			6	28	17	48	6	25	17	49	6	29	17	55	5	59	17	28	14	व. यूरेनस कृत्ति. 3 में 8/13, प्लूटो मार्गी 8/20,
	15	9	बु.	10	34	पुष्य	12	0	सा.	26	56	कर्क			6	29	17	47	6	26	17	48	6	30	17	54	6	0	17	27	15	भ. 22/35 बाद,
	16	10	गु.	10	36	आश्ले.	12	42	शु.	26	10	सिंह	12	42	6	29	17	46	6	26	17	46	6	31	17	54	6	0	17	26	16	भ. 10/36 तक, बुध विशा. में 19/06,
	17	11	शु.	11	12	मघा	13	57	शु.	25	48	सिंह			6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	53	6	1	17	25	17	सं. सूर्य तुला में 13/46, मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन, शुक्र(G)
	18	12	श.	12	19	पू.फा.	15	41	ब्र.	25	48	कन्या	22	11	6	31	17	44	6	28	17	44	6	32	17	52	6	1	17	24	18	गुरु पुन. 4 कर्क में 19/43, शनिप्रदोष व्रत, यम-प्रीत्यर्थ दीपदान,
	19	13	र.	13	52	उ.फा.	17	49	ऐं.	26	4	कन्या			6	31	17	43	6	28	17	43	6	32	17	51	6	2	17	23	19	भ. 13/52 से 26/49 तक, धनत्रयोदशी, श्रीहनुमान् (H)
	20	14	चं.	15	45	हस्त	20	16	वै.	26	34	कन्या			6	32	17	42	6	29	17	42	6	33	17	50	6	3	17	22	20	नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली),
	21	30	मं.	17	55	चित्रा	22	58	वि.	27	16	तुला	9	36	6	33	17	41	6	29	17	41	6	33	17	49	6	3	17	22	21	दीपावली (देखें पृ. 15) श्रीमहालक्ष्मी पूजन, भौमावती अमा,(I)
कार्तिक शुक्ल	22	1	बु.	20	17	स्वाती	25	51	प्री.	28	5	तुला			6	34	17	40	6	30	17	41	6	34	17	48	6	4	17	21	22	कार्त्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गोक्रीड़ा, गोवर्धन पूजा, (J)
	23	2	गु.	22	47	विशा.	28	51	आ.	28	59	वृश्चि.	22	5	6	34	17	39	6	31	17	40	6	35	17	47	6	4	17	20	23	चन्द्रदर्शन, मु. 45, सूर्य सायन वृश्चिक में 9/21, (K)
	24	3	शु.	25	19	अनु.	--	--	सौ.	29	54	वृश्चि.			6	35	17	38	6	31	17	39	6	35	17	46	6	5	17	19	24	सूर्य स्वा. में 6/40, बुध वृश्चिक में 12/37,
	25	4	श.	27	48	अनु.	7	51	शो.	--	--	वृश्चि.			6	36	17	37	6	32	17	38	6	36	17	45	6	5	17	18	25	भ. 14/34 से 27/48 तक,
	26	5	र.	30	5	ज्येष्ठा	10	46	शो.	6	45	धनु	10	46	6	37	17	36	6	33	17	37	6	36	17	44	6	6	17	17	26	ज्ञान पंचमी (जैन),
	27	6	चं.	--	--	मूल	13	27	अ.	7	26	धनु			6	37	17	35	6	33	17	36	6	37	17	44	6	6	17	17	27	मंगल वृश्चिक में 15/42, बुध अनु. में 9/32, शुक्र चित्रा में(L)
	28	6	मं.	8	0	पू.षा.	15	45	सु.	7	50	मकर	22	14	6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16	28	
	29	7	बु.	9	23	उ.षा.	17	29	धृ.	7	50	मकर			6	39	17	33	6	35	17	34	6	38	17	42	6	8	17	15	29	भ. 9/23 से 21/44 तक,
	30	8	गु.	10	6	श्रव.	18	33	शू.	7	20	मकर			6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14	30	गोपाष्टमी, अक्षय नवमी, कूष्माण्ड नवमी,
									गं.	30	15																					
	31	9	शु.	10	4	धनि.	18	51	वृ.	28	31	कुम्भ	6	48	6	40	17	31	6	36	17	33	6	40	17	41	6	9	17	14	31	पंचक प्रारम्भ 6/48,

(A) एवं बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, (B) विजयादशमी (दशहरा), आयुध पूजा, अपराजिता पूजन, सीमोल्लघंन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (C) 4 में 23/43, पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), भरत-मिलाप, (D) कोजागर व्रत (लक्ष्मी-इन्द्रपूजा), श्रीसत्यनारायण व्रत, (E) कार्त्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीपराशर जयन्ती, (F) करक चतुर्थी (करवाचौथ) (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), (G) हस्त में 12/19, रमा एकादशी व्रत (स.), गोवत्स द्वादशी, (H) जयन्ती (उ.भा.), (I) श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन), (J) अन्नकूट, बलिपूजा, (K) हेमंत ऋतु प्रारम्भ, यम द्वितीया/भाईदूज, श्रीविश्वकर्मा पूजा, (L) 29/11, सूर्यषष्ठी (छठ) बिहार.

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति काल		चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक शुक्ल	1	10	श.	9	12	शत.	18	20	ध्रु.	26	9	कुम्भ			6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	9	17	13	1	भ. 20/22 बाद, मंगल अनु. में 8/17, देवप्रबोधिनी एकादशी (A)
	2	11	र.	7	32	पू.भा.	17	4	व्या.	23	10	मीन	11	26	6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	2	भ. 7/32 तक, शुक्र तुला में 13/15, देवप्रबोधिनी एकादशी (B)
		12		29	7																											द्वादशी तिथिक्षय,
	3	13	चं.	26	6	उ.भा.	15	5	ह.	19	39	मीन			6	43	17	29	6	38	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	3	सोमप्रदोष व्रत,
	4	14	मं.	22	36	रेव.	12	34	व.	15	42	मेष	12	34	6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	भ. 22/36 बाद, पंचक समाप्त 12/34, वैकुंठ चतुर्दशी, (देखें पृष्ठ 16),
	5	15	बु.	18	49	अश्वि.	9	40	सि.	11	28	मेष			6	44	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	11	5	भ. 8/43 तक, मंगल अस्त 17/27, कार्तिक पूर्णिमा, (C)
						भर.	30	34																								
मार्गशीर्ष कृष्ण	6	1	गु.	14	55	कृत्ति.	27	28	व्य.	7	4	वृष	11	47	6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	6	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य विशा. में 14/52, पद्मक(D)
									व.	26	41																					
	7	2	शु.	11	5	रोहि.	24	33	प.	22	27	वृष			6	46	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	9	7	भ. 21/18 बाद, शुक्र स्वा. में 21/7,
	8	3	श.	7	32	मृग.	22	2	शि.	18	31	मिथुन	11	14	6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	भ. 7/32 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
		4		28	26																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	9	5	र.	25	55	आर्द्रा	20	4	सि.	15	2	मिथुन			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	बुध वक्री 24/32,
	10	6	चं.	24	8	पुन.	18	48	सा.	12	4	कर्क	13	3	6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	भ. 24/8 बाद,
	11	7	मं.	23	9	पुष्य	18	17	शु.	9	44	कर्क			6	49	17	23	6	45	17	25	6	47	17	34	6	16	17	7	11	भ. 11/38 तक, गुरु वक्री 22/13,
	12	8	बु.	22	58	आश्ले.	18	35	शु.	8	2	सिंह	18	35	6	50	17	22	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	श्रीभैरवाष्टमी (कालाष्टमी),
	13	9	गु.	23	34	मघा	19	38	ब्र.	6	57	सिंह			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	17	17	7	13	
									ऐं.	30	27																					
	14	10	शु.	24	50	पू.फा.	21	20	वै.	30	25	कन्या	27	51	6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	भ. 12/12 से 24/50 तक, बुध पश्चिम में अस्त 17/21,
	15	11	श.	26	37	उ.फा.	23	34	वि.	30	46	कन्या			6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.)
	16	12	र.	28	48	हस्त	26	11	प्री.	--	--	कन्या			6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	16	सं. सूर्य वृश्चिक में 13/37, मु. 30, पुण्यकाल सारा दिन,
	17	13	चं.	--	--	चित्रा	29	1	प्री.	7	22	तुला	15	35	6	55	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	सोमप्रदोष व्रत,
	18	13	मं.	7	12	स्वाती	--	--	आ.	8	9	तुला			6	55	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	भ. 7/12 से 20/28 तक, शुक्र विशा. में 12/18,
	19	14	बु.	9	44	स्वाती	7	59	सौ.	9	0	वृश्चि.	28	14	6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	30	6	22	17	5	19	सूर्य अनु. में 20/56, मंगल ज्ये. में 19/29,•
	20	30	गु.	12	17	विशा.	10	58	शो.	9	52	वृश्चि.			6	57	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	22	17	4	20	व. बुध विशा. में 28/15,
मार्गशीर्ष शुक्ल	21	1	शु.	14	47	अनु.	13	55	अ.	10	43	वृश्चि.			6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,
	22	2	श.	17	11	ज्येष्ठा	16	46	सु.	11	29	धनु	16	46	6	59	17	18	6	53	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	सूर्य सायन धनु में 7/6,
	23	3	र.	19	25	मूल	19	28	धृ.	12	8	धनु			7	0	17	18	6	54	17	20	6	56	17	29	6	25	17	4	23	व. बुध तुला में 20/26, राहु शत. 4, केतु पू.फा. 2 में 12/5,
	24	4	चं.	21	22	पू.षा.	21	53	शू.	12	36	मकर	28	26	7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	24	भ. 8/23 से 21/22 तक,
	25	5	मं.	22	57	उ.षा.	23	57	गं.	12	49	मकर			7	1	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	बलिदानदिन गुरु तेगबहादुर जी,
	26	6	बु.	24	2	श्रव.	25	32	वृ.	12	42	मकर			7	2	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	शुक्र वृश्चिक में 11/21, चम्पा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी, गुह षष्ठी,
	27	7	गु.	24	30	धनि.	26	32	ध्रु.	12	9	कुम्भ	14	7	7	3	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	28	17	3	27	भ. 24/30 बाद, पंचक प्रारम्भ 14/7, बुध पूर्व में उदित (E)
	28	8	शु.	24	15	शत.	26	49	व्या.	11	5	कुम्भ			7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	भ. 12/22 तक, शुक्र अनु. में 27/00, शनि मार्गी 9/23,
	29	9	श.	23	15	पू.भा.	26	22	ह.	9	27	मीन	20	33	7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	बुध मार्गी 23/8,
	30	10	र.	21	29	उ.भा.	25	11	व.	7	12	मीन			7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	30	
									सि.	28	22																					

(A) व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 16), भीष्म पंचक प्रारम्भ, (B) व्रत (वै.), देव-प्रबोधोत्सव, त्रिस्पृशा महाद्वादशी, तुलसी-विवाह, चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, (C) श्रीसत्यनारायण व्रत, त्रिपुरोत्सव, भीष्मपंचक समाप्त, कार्त्तिकस्नान समाप्त, श्री गुरु नानक जयन्ती, मेला पुष्करराज (राज.), (D) योग (14/52 से सूर्यास्त तक) (देखें पृष्ठ 16), पुष्करस्नान माहात्म्य, (E) 7/3, मित्र सप्तमी,

श्री वि. सं. 2082 — तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) — दिसंबर, सन् 2025 ई.

मास पक्ष	दिनांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मार्ग. शुक्ल	1	11	चं.	19	1	रेव.	23	18	व्य.	24	59	मेष	23	18	7	6	17	16	7	1	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	1	भ. 8/15 से 19/1 तक, पंचक समाप्त 23/18, (A)
	2	12	मं.	15	57	अश्वि.	20	51	व.	21	8	मेष			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	सूर्य ज्ये. में 25/14, भौमप्रदोष व्रत,
	3	13	बु.	12	26	भर.	18	0	प.	16	57	वृष	23	14	7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	
	4	14	गु.	8	38	कृत्ति.	14	54	शि.	12	34	वृष			7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	4	भ. 8/38 से 18/41 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती, पूर्णिमा तिथिक्षय,
		15		28	44																											
पौष कृष्ण	5	1	शु.	24	56	रोहि.	11	46	सि.	8	8	मिथुन	22	15	7	10	17	16	7	4	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	5	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, व. गुरु पुन. 3 मिथुन में 17/27,
									सा.	27	49																					
	6	2	श.	21	26	मृग.	8	48	शु.	23	45	मिथुन			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	बुध वृश्चिक में 20/26,
						आर्द्रा	30	13																								
	7	3	र.	18	25	पुन.	28	11	शु.	20	7	कर्क	22	38	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	7	भ. 7/50 से 18/25 तक, मंगल मूल धनु में 20/16, (B)
	8	4	चं.	16	3	पुष्य	26	52	ब्र.	17	1	कर्क			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	29	6	35	17	4	8	
	9	5	मं.	14	29	आश्ले.	26	22	ऐं.	14	33	सिंह	26	22	7	13	17	17	7	6	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	बुध अनु. में 26/28, शुक्र ज्ये. में 17/29,
	10	6	बु.	13	46	मघा	26	44	वै.	12	46	सिंह			7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	4	10	भ. 13/46 से 25/52 तक, नेप्च्यून मार्गी 17/39, (C)
	11	7	गु.	13	57	पू.फा.	27	55	वि.	11	40	सिंह			7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	37	17	5	11	
	12	8	शु.	14	57	उ.फा.	29	50	प्री.	11	12	कन्या	10	20	7	15	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	
	13	9	श.	16	38	हस्त	--	--	आ.	11	16	कन्या			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	13	भ. 29/44 बाद, शुक्र पूर्व में अस्त 7/15,
	14	10	र.	18	50	हस्त	8	18	सौ.	11	45	तुला	21	41	7	16	17	18	7	10	17	22	7	11	17	31	6	39	17	6	14	भ. 18/50 तक,
	15	11	चं.	21	20	चित्रा	11	8	शो.	12	30	तुला			7	17	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	सं. सूर्य मूल धनु में 28/20, मु. 15, पुण्यकाल अगले दिन(D)
	16	12	मं.	23	57	स्वाती	14	9	अ.	13	23	तुला			7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	6	16	शुक्र अस्त 13 दिसं.
	17	13	बु.	26	33	विशा.	17	11	सु.	14	16	वृश्चि.	10	26	7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	भ. 26/33 बाद, प्रदोषव्रत,
	18	14	गु.	28	59	अनु.	20	7	धृ.	15	5	वृश्चि.			7	18	17	19	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	18	भ. 15/46 तक,
	19	30	शु.	31	13	ज्येष्ठा	22	51	शू.	15	46	धनु	22	51	7	19	17	20	7	13	17	23	7	14	17	33	6	42	17	8	19	बुध ज्ये. में 30/9,
पौष शुक्ल	20	1	श.	--	--	मूल	25	21	गं.	16	17	धनु			7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	43	17	8	20	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, शुक्र मूल धनु में 7/45,
	21	1	र.	9	11	पू.षा.	27	36	वृ.	16	35	धनु			7	20	17	21	7	14	17	24	7	15	17	34	6	43	17	9	21	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य सायन मकर में 20/33, (E)
	22	2	चं.	10	52	उ.षा.	29	32	ध्रु.	16	40	मकर	10	6	7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	44	17	9	22	
	23	3	मं.	12	13	श्रव.	31	7	व्या.	16	30	मकर			7	21	17	22	7	15	17	25	7	16	17	35	6	44	17	10	23	भ. 24/42 बाद,
	24	4	बु.	13	11	धनि.	--	--	ह.	16	2	कुम्भ	19	46	7	22	17	22	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	24	भ. 13/11 तक, पंचक प्रारम्भ 19/46,
	25	5	गु.	13	43	धनि.	8	18	व.	15	13	कुम्भ			7	22	17	23	7	16	17	27	7	17	17	36	6	45	17	11	25	मंगल पू.षा. में 12/14, क्रिसमस डे,
	26	6	शु.	13	44	शत.	9	0	सि.	14	0	मीन	27	10	7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	45	17	11	26	जोड़मेला श्रीफतेहगढ़ साहब (पं.),
	27	7	श.	13	10	पू.भा.	9	9	व्य.	12	21	मीन			7	23	17	24	7	16	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	भ. 13/10 से 24/35 तक, अवतारदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,
	28	8	र.	12	0	उ.भा.	8	43	व.	10	13	मीन			7	23	17	25	7	17	17	28	7	19	17	38	6	46	17	13	28	सूर्य पू.षा. में 30/30,
	29	9	चं.	10	12	रेव.	7	41	प.	7	36	मेष	7	41	7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	13	29	पंचक समाप्त 7/41, बुध मूल धनु में 7/24,
						अश्वि.	30	4	शि.	28	31																					
	30	10	मं.	7	51	भर.	27	58	सि.	25	2	मेष			7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	भ. 18/26 से 29/1 तक, शुक्र पू.षा. में 22/0, बुध पूर्व में (F) एकादशी तिथिक्षय,
		11		29	1																											
	31	12	बु.	25	48	कृत्ति	25	30	सा.	21	13	वृष	9	22	7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	14	31	पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.),

(A) मोक्षदा एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती, (B) श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृष्ठ 17), (C) शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ 7/15, (D) मध्याह्न तक, सफला एकादशी व्रत (स.), (E) उत्तरायण एवम् शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (F) अस्त 7/24, पुत्रदा एकादशी व्रत (स्मा.) (देखें पृष्ठ 17),

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टै. टा. दिया गया है)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
पौष शुक्ल	1	13	गु.	22	22	रोहि.	22	48	शु.	17	12	वृष			7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	40	6	48	17	15	1	प्रदोषव्रत, इंग्लिश नववर्ष 2026 ई. प्रारम्भ,
	2	14	शु.	18	53	मृग.	20	4	शु.	13	7	मिथुन	9	25	7	24	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 18/53 से 29/12 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृष्ठ 17),
	3	15	श.	15	32	आर्द्रा	17	28	ब्र.	9	5	मिथुन			7	25	17	29	7	19	17	32	7	20	17	42	6	48	17	16	3	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
									ऐं.	29	15																					
माघ कृष्ण	4	1	र.	12	30	पुन.	15	11	वै.	25	47	कर्क	9	43	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, व. गुरु पुन. 2 में 18/43.
	5	2	चं.	9	57	पुष्य	13	25	वि.	22	47	कर्क			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	भ. 20/59 बाद,
	6	3	मं.	8	2	आश्ले.	12	17	प्री.	20	21	सिंह	12	17	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	भ. 8/2 तक, बुध पू.षा. में 24/0, श्रीगणेश (संकष्ट) (A)
		4		30	53																											चतुर्थी तिथिक्षय,
	7	5	बु.	30	34	मघा	11	56	आ.	18	33	सिंह			7	25	17	32	7	19	17	35	7	21	17	45	6	49	17	19	7	
	8	6	गु.	31	5	पू.फा.	12	24	सौ.	17	25	कन्या	18	39	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	20	8	भ. 31/5 बाद,
	9	7	शु.	--	--	उ.फा.	13	40	शो.	16	55	कन्या			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	भ. 19/44 तक, जन्मदिन स्वामी श्रीविवेकानन्द जी,
	10	7	श.	8	24	हस्त	15	39	अ.	16	58	तुला	28	52	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	21	10	शुक्र उ.षा. में 12/21.
	11	8	र.	10	20	चित्रा	18	12	सु.	17	27	तुला			7	25	17	35	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	सूर्य उ.षा. में 8/36, मंगल उ.षा. में 21/9.
	12	9	चं.	12	43	स्वाती	21	5	धृ.	18	12	तुला			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	49	6	49	17	23	12	भ. 26/1 बाद, शुक्र मकर में 27/58.
	13	10	मं.	15	18	विशा.	24	6	शू.	19	4	वृश्चि.	17	21	7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	24	13	भ. 15/18 तक, लोहड़ी (पं., हरि., हि. प्र.,ज. क.),
	14	11	बु.	17	53	अनु.	27	3	गं.	19	55	वृश्चि.			7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	24	14	सं. सूर्य मकर में 15/7. मु. 30, पुण्यकाल 8/43 बाद, (B)
	15	12	गु.	20	16	ज्येष्ठा	29	47	वृ.	20	38	धनु	29	47	7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	मंगल मकर में 28/27, बुध उ.षा. में 9/18.
	16	13	शु.	22	22	मूल	--	--	ध्रु.	21	6	धनु			7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	भ. 22/22 बाद, प्रदोष व्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
	17	14	शं.	24	4	मूल	8	12	व्या.	21	18	धनु			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	भ. 11/13 तक, बुध मकर में 10/23,
	18	30	र.	25	21	पू.षा.	10	14	ह.	21	11	मकर	16	40	7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	28	18	मौनी अमा,
माघ शुक्ल	19	1	चं.	26	14	उ.षा.	11	52	व.	20	45	मकर			7	24	17	42	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, सूर्य सायन कुम्भ में 31/15. (C)
	20	2	मं.	26	42	श्रव.	13	6	सि.	20	1	कुम्भ	25	35	7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ 25/35, शुक्र श्रव. में 26/50 (D)
	21	3	बु.	26	47	धनि.	13	58	व्य.	18	58	कुम्भ			7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	49	17	30	21	गौरी तृतीया (गौंतरी),
	22	4	गु.	26	28	शत.	14	27	व.	17	37	कुम्भ			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	भ. 14/37 से 26/28 तक, वरद-तिल-कुन्द चतुर्थी,
	23	5	शु.	25	46	पू.भा.	14	33	प.	15	59	मीन	8	33	7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	31	23	बुध श्रव. में 10/24, श्रीपंचमी/वसन्त पंचमी (E)
	24	6	श.	24	40	उ.भा.	14	16	शि.	14	1	मीन			7	22	17	47	7	17	17	49	7	19	17	58	6	48	17	32	24	सूर्य श्रव. में 10/50,
	25	7	र.	23	10	रेव.	13	35	सि.	11	45	मेष	13	35	7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	48	17	33	25	भ. 23/10 बाद, पंचक समाप्त 13/35, राहु शत. 3, (F)
	26	8	चं.	21	18	अश्वि.	12	32	सा.	9	11	मेष			7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 10/14 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, भारत गणतन्त्र दिवस,
									शु.	30	19																					शुक्र उदित 30 जन.
	27	9	मं.	19	5	भर.	11	9	शु.	27	13	वृष	16	44	7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	34	27	गुप्त नवरात्र समाप्त,
	28	10	बु.	16	36	कृत्ति.	9	27	ब्र.	23	54	वृष			7	20	17	50	7	15	17	53	7	18	18	1	6	47	17	35	28	भ. 27/16 बाद, मंगल श्रव. में 24/37, नवरात्र-पारणा,
	29	11	गु.	13	55	रोहि.	7	31	ऐं.	20	27	मिथुन	18	31	7	20	17	51	7	15	17	54	7	18	18	2	6	46	17	36	29	भ. 13/55 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्मद्वादशी,
						मृग.	29	29							7																	
	30	12	शु.	11	9	आर्द्रा	27	27	वै.	16	58	मिथुन			7	19	17	52	7	14	17	54	7	17	18	3	6	46	17	37	30	बुध धनि. में 27/25, व. गुरु पुन. 1 में 11/51. शुक्र पश्चिम (G)
	31	13	श.	8	26	पुन.	25	34	वि.	13	33	कर्क	20	1	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	37	31	भ. 29/53 बाद, शुक्र धनि. में 17/37.
		14		29	53																											चतुर्दशी तिथिक्षय,

(A) चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय देखें पृष्ठ 11), (B) मकर संक्रान्ति, षट्तिला एकादशी व्रत (स.), (C) माघ गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (D) शनि उ.भा. 1 में 10/51. व. यूरेनस कृत्ति. 2 में 9/56, (E) (लक्ष्मी-सरस्वती पूजन), (F) केतु पू.फा. 1 में 9/20, रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य सप्तमी, मर्यादा महोत्सव (जैन), (G) में उदित 17/52, प्रदोषव्रत,

श्री वि. सं. 2082												तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)																फरवरी, सन् 2026 ई.				
मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
मा.शु.	1	15	र.	27	39	पुष्य	23	58	प्री.	10	18	कर्क			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	भ. 16/46 तक, माघी पूर्णिमा, श्रीसत्यनारायण व्रत, (A)
फाल्गुन कृष्ण	2	1	चं.	25	52	आश्ले.	22	47	आ.	7	20	सिंह	22	47	7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्रबाल्य समाप्त 17/52,
									सौ.	28	45																					
	3	2	मं.	24	41	मघा	22	10	शो.	26	39	सिंह			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	बुध कुम्भ में 21/52,
	4	3	बु.	24	10	पू.फा.	22	12	अ.	25	4	कन्या	28	19	7	16	17	57	7	12	17	59	7	15	18	7	6	43	17	40	4	भ. 12/25 से 24/10 तक, यूरेनस मार्गी 8/4,
	5	4	गु.	24	22	उ.फा.	22	57	सु.	24	4	कन्या			7	15	17	58	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	शुक्र कुम्भ में 25/11, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	6	5	शु.	25	19	हस्त	24	23	धृ.	23	37	कन्या			7	15	17	58	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	सूर्य धनि. में 14/4,
	7	6	श.	26	54	चित्रा	26	28	शू.	23	40	तुला	13	21	7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 26/54 बाद, बुध शत. में 16/30,
	8	7	र.	29	1	स्वाती	29	2	गं.	24	8	तुला			7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	भ. 15/58 तक, बुध पश्चिम में उदित 18/0,
	9	8	चं.	--	--	विशा.	-	--	वृ.	24	51	वृश्चि.	25	11	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	10	6	41	17	44	9	
	10	8	मं.	7	27	विशा.	7	55	ध्रु.	25	42	वृश्चि.			7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
	11	9	बु.	9	59	अनु.	10	52	व्या.	26	29	वृश्चि.			7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	भ. 23/10 बाद, शुक्र शत. में 8/52,
	12	10	गु.	12	22	ज्येष्ठा	13	42	ह.	27	5	धनु	13	42	7	10	18	3	7	6	18	5	7	9	18	13	6	39	17	46	12	भ. 12/22 तक, सं. सूर्य कुम्भ में 28/8, मु. 30, (B)
	13	11	शु.	14	26	मूल	16	12	व.	27	23	धनु			7	9	18	4	7	5	18	6	7	9	18	13	6	38	17	46	13	विजया एकादशी व्रत (स.),
	14	12	श.	16	2	पू.षा.	18	16	सि.	27	17	मकर	24	42	7	8	18	5	7	4	18	6	7	8	18	14	6	37	17	47	14	मंगल धनि. में 24/37, शनिप्रदोष व्रत,
	15	13	र.	17	5	उ.षा.	19	48	व्य.	26	46	मकर			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	भ. 17/5 से 29/19 तक, बुध पू.भा. में 21/41, (C)
	16	14	चं.	17	34	श्रव.	20	47	व.	25	50	मकर			7	6	18	7	7	3	18	8	7	6	18	15	6	36	17	48	16	
	17	30	मं.	17	31	धनि.	21	16	प.	24	28	कुम्भ	9	5	7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	पंचक प्रारम्भ 9/5, प्लूटो श्रव. 1 में 27/2, भौमवती अमा,
फाल्गुन शुक्ल	18	1	बु.	16	58	शत.	21	16	शि.	22	45	कुम्भ			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	17	6	34	17	50	18	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, यूरेनस कृत्ति. 3 में 28/32, (D)
	19	2	गु.	15	59	पू.भा.	20	52	सि.	20	42	मीन	15	0	7	4	18	9	7	0	18	10	7	4	18	17	6	33	17	50	19	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य शत. में 18/33, अवतारदिन (E)
	20	3	शु.	14	39	उ.भा.	20	7	सा.	18	23	मीन			7	3	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	33	17	51	20	भ. 25/50 बाद,
	21	4	श.	13	1	रेव.	19	7	शु.	15	51	मेष	19	7	7	2	18	11	6	58	18	11	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 13/1 तक, पंचक समाप्त 19/7, शुक्र पू.भा. में 24/37, (F)
	22	5	र.	11	10	अश्वि.	17	54	शु.	13	8	मेष			7	1	18	12	6	57	18	12	77	1	18	19	6	31	17	52	22	
	23	6	चं.	9	9	भर.	16	33	ब्र.	10	18	वृष	22	12	7	0	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	मंगल कुम्भ में 11/49,
	24	7	मं.	7	2	कृत्ति.	15	7	ऐं.	7	23	वृष			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भ. 7/2 से 17/57 तक, नेप्च्यून उ.भा. 2 में 21/52, (G)
		8		28	52				वै.	28	26																					अष्टमी तिथिक्षय, **होलाष्टक प्रारम्भ 24 फरवरी**
	25	9	बु.	26	41	रोहि.	13	38	वि.	25	28	मिथुन	24	54	6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	
	26	10	गु.	24	33	मृग.	12	11	प्री.	22	33	मिथुन			6	56	18	15	6	53	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	बुध वक्री 12/18,
	27	11	शु.	22	33	आर्द्रा	10	49	आ.	19	43	कर्क	27	52	6	55	18	15	6	52	18	16	6	57	18	22	6	27	17	55	27	भ. 11/33 से 22/33 तक, आमलकी एकादशी व्रत (स.),
	28	12	श.	20	43	पुन.	9	35	सौ.	17	2	कर्क			6	54	18	16	6	51	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	बुध पश्चिम में अस्त 18/16, गोविन्द द्वादशी,

(A) श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघस्नान समाप्त, (B) पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, (C) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (D) सूर्य सायन मीन में 21/22, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, (E) श्रीरामकृष्ण परमहंस, (F) शनि उ.भा. 2 में 27/9, (G) होलाष्टक प्रारम्भ,

श्री वि. सं. 2082 | तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.) | मार्च, सन् 2026 ई.

मास पक्ष	तारीख	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि-नक्षत्रप्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है)
फा. शु.	1	13	र.	19	9	पुष्य	8	34	शो.	14	33	कर्क			6	53	18	17	6	50	18	17	6	55	18	24	6	25	17	56	1	शुक्र मीन में 24/56, प्रदोषव्रत,
	2	14	चं.	17	56	आश्ले.	7	51	अ.	12	19	सिंह	7	51	6	52	18	18	6	49	18	18	6	54	18	24	6	24	17	56	2	भ. 17/56 से 29/31 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (A)
	3	15	मं.	17	7	मघा	7	31	सु.	10	24	सिंह			6	51	18	18	6	48	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	3	मंगल शत. में 22/54, होलिकादहन (प्रदोष में), (B)
चैत्र कृष्ण	4	1	बु.	16	49	पू.फा.	7	39	धृ.	8	52	कन्या	13	45	6	50	18	19	6	47	18	19	6	52	18	25	6	22	17	57	4	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य पू.भा. में 24/53, शुक्र उ.भा. में(C)
	5	2	गु.	17	4	उ.फा.	8	17	शू.	7	45	कन्या			6	49	18	20	6	46	18	19	6	51	18	26	6	21	17	58	5	भ. 29/28 बाद, ग्रहणशूल,
	6	3	शु.	17	53	हस्त	9	30	गं.	7	5	तुला	22	18	6	47	18	20	6	45	18	20	6	50	18	27	6	20	17	59	6	भ. 17/53 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (देखें पृष्ठ 18), ग्रहणशूल,
	7	4	श.	19	17	चित्रा	11	15	वृ.	6	52	तुला			6	46	18	21	6	44	18	21	6	49	18	27	6	19	17	59	7	शनि अस्त 18/21,
	8	5	र.	21	11	स्वाती	13	31	ध्रु.	7	3	तुला			6	45	18	22	6	43	18	21	6	48	18	28	6	18	18	0	8	
	9	6	चं.	23	27	विशा.	16	11	व्या.	7	35	वृश्चि.	9	29	6	44	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	17	18	0	9	भ. 23/27 बाद,
	10	7	मं.	25	54	अनु.	19	5	ह.	8	21	वृश्चि.			6	43	18	23	6	41	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	भ. 12/40 तक, व. बुध शत. में 7/56,
	11	8	बु.	28	19	ज्येष्ठा	22	0	व.	9	12	धनु	22	0	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	गुरु मार्गी 9/1, श्रीशीतलाष्टमी,
	12	9	गु.	30	29	मूल	24	43	सि.	9	58	धनु			6	40	18	24	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	1	12	मेला श्री शीतला माता कुराली (मोहाली) पं.,
	13	10	शु.	--	--	पू.षा.	27	3	व्य.	10	31	धनु			6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	भ. 19/20 बाद,
	14	10	श.	8	11	उ.षा.	28	49	व.	10	42	मकर	9	33	6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	2	14	भ. 8/11 तक, सं. सूर्य मीन में 25/2, मु. 45, पुण्यकाल अगले(D)
	15	11	र.	9	17	श्रव.	29	56	प.	10	25	मकर			6	37	18	26	6	35	18	26	6	40	18	31	6	11	18	3	15	शुक्र रेव. में 10/38, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.),
	16	12	चं.	9	41	धनि.	30	22	शि.	9	36	कुम्भ	18	14	6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	पंचक प्रारम्भ 18/14, सोमप्रदोष व्रत,
	17	13	मं.	9	23	शत.	30	9	सि.	8	15	कुम्भ			6	34	18	28	6	33	18	27	6	38	18	32	6	9	18	4	17	भ. 9/23 से 20/54 तक, वारुणी योग (9/23 तक), (E)
									सा.	30	22																					
	18	14	बु.	8	26	पू.भा.	29	21	शु.	28	1	मीन	23	36	6	33	18	28	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	सूर्य उ.भा. में 9/20,
	19	30	गु.	6	53	उ.भा.	28	5	शु.	25	17	मीन			6	32	18	29	6	30	18	28	6	36	18	33	6	7	18	5	19	चान्द्र संवत्सर 2082 वि. पूर्ण, चान्द्र संवत्सर 2083 वि. प्रारम्भ(F)
चै.शु.		1		28	52																											चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,

खग्रास चंद्रग्रहण 3 मार्च

होलाष्टक समाप्त 3 मार्च

(A) ग्रहणशूल, (B) (देखें पृष्ठ 17) होलाष्टक समाप्त, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु, खग्रास चन्द्रग्रहण (भारत में दृश्य) (देखें पृष्ठ 20), (C) 17/10, वसन्तोत्सव, होला महल्ला श्रीआनन्दपुर साहब (पं.), ग्रहणशूल, (D) दिन मध्याह्न तक, बुध पूर्व में उदित 6/38, (E) मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.), (F) (देखें पृष्ठ 18), वासंत (चैत्र) नवरात्र प्रारम्भ, घटस्थापन, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निंबपत्र-प्राशन,

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	उ.षा.	0	3	6	1	11	57	17	52
1/2	श्रव.	23	46	5	38	11	30	17	20
2/3	धनि .	23	10	4	59	10	47	16	35
3/4	शत .	22	21	4	8	9	53	15	38
4/5	पू.भा.	21	23	3	7	8	51	14	34
5/6	उ.भा.	20	17	2	0	7	42	13	24
6/7	रेव.	19	6	0	47	6	28	12	9
7/8	अश्वि.	17	49	23	30	5	10	10	49
8/9	भर.	16	29	22	9	3	48	9	27
9/10	कृत्ति.	15	7	20	46	2	25	8	5
10/11	रोहि.	13	45	19	25	1	6	6	47
11/12	मृग.	12	29	18	11	23	55	5	39
12/13	आर्द्रा.	11	24	17	10	22	58	4	47
13/14	पुन.	10	38	16	30	22	23	4	19
14/15	पुष्य	10	16	16	16	22	18	4	21
15/16	आश्ले.	10	28	16	36	22	47	5	0
16/17	मघा.	11	16	17	34	23	55	6	19
17/18	पू.फा.	12	44	19	13	1	43	8	16
18/19	उ.फा.	14	51	21	28	4	7	10	48
19/20	हस्त	17	30	0	13	6	58	13	43
20/21	चित्रा	20	29	3	16	10	3	16	50
21/22	स्वाती	23	36	6	22	13	7	19	51
23	विशा.	2	34	9	15	15	54	22	32
24/25	अनु.	5	8	11	41	18	12	0	41
25/26	ज्येष्ठा	7	7	13	31	19	52	2	10
26/27	मूल	8	26	14	38	20	49	2	57
27/28	पू.षा.	9	2	15	4	21	5	3	2
28/29	उ.षा.	8	58	14	51	20	43	2	32
29/30	श्रव.	8	20	14	6	19	50	1	33
30/31	धनि .	7	15	12	55	18	35	0	13
31	शत .	5	50	11	27	17	3	22	39

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पू.भा.	4	14	9	49	15	24	20	58
2	उ.भा.	2	33	8	7	13	42	19	17
3	रेव.	0	52	6	27	12	3	17	40
3/4	अश्वि.	23	16	4	54	10	32	16	10
4/5	भर.	21	49	3	29	9	9	14	51
5/6	कृत्ति.	20	33	2	16	7	59	13	44
6/7	रोहि.	19	29	1	15	7	2	12	50
7/8	मृग.	18	40	0	30	6	21	12	13
8/9	आर्द्रा.	18	7	0	1	5	57	11	54
9/10	पुन.	17	52	23	52	5	53	11	56
10/11	पुष्य	18	0	0	6	6	14	12	23
11/12	आश्ले.	18	34	0	46	7	1	13	17
12/13	मघा.	19	35	1	55	8	17	14	41
13/14	पू.फा.	21	7	3	34	10	4	16	36
14/15	उ.फा.	23	9	5	44	12	21	18	59
16	हस्त	1	39	8	20	15	3	21	46
17/18	चित्रा	4	31	11	16	18	2	0	48
18/19	स्वाती	7	35	14	22	21	8	3	54
19/20	विशा.	10	39	17	24	0	7	6	49
20/21	अनु.	13	30	20	9	2	46	9	21
21/22	ज्येष्ठा	15	53	22	24	4	52	11	17
22/23	मूल	17	40	24	0	6	17	12	31
23/24	पू.षा.	18	42	0	51	6	56	12	59
24/25	उ.षा.	18	58	0	55	6	50	12	41
25/26	श्रव.	18	30	0	17	6	1	11	43
26/27	धनि .	17	23	23	1	4	37	10	11
27/28	शत .	15	43	21	14	2	44	8	12

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/1	पू.भा.	13	40	19	7	0	32	5	58
1/2	उ.भा.	11	22	16	47	22	11	3	35
2/3	रेव.	8	59	14	23	19	48	1	13
3	अश्वि.	6	39	12	5	17	32	23	0
4	भर.	4	29	9	59	15	31	21	3
5	कृत्ति.	2	37	8	13	13	49	19	28
6	रोहि.	1	8	6	50	12	33	18	18
7	मृग.	0	5	5	54	11	45	17	37
7/8	आर्द्रा.	23	31	5	28	11	26	17	26
8/9	पुन.	23	28	5	32	11	38	17	45
9/10	पुष्य	23	55	6	6	12	19	18	34
11	आश्ले.	0	51	7	9	13	30	19	51
12	मघा.	2	15	8	40	15	7	21	35
13	पू.फा.	4	5	10	36	17	9	23	43
14/15	उ.फा.	6	19	12	56	19	34	2	13
15/16	हस्त	8	54	15	35	22	17	5	1
16/17	चित्रा	11	45	18	29	1	15	8	1
17/18	स्वाती	14	47	21	33	4	19	11	5
18/19	विशा.	17	51	0	37	7	22	14	6
19/20	अनु.	20	50	3	32	10	13	16	53
20/21	ज्येष्ठा	23	31	6	8	12	42	19	15
22	मूल	1	45	8	14	14	39	21	2
23	पू.षा.	3	23	9	41	15	56	22	8
24	उ.षा.	4	18	10	24	16	28	22	29
25	श्रव.	4	26	10	21	16	13	22	2
26	धनि .	3	49	9	33	15	14	20	53
27	शत .	2	29	8	3	13	35	19	5
28	पू.भा.	0	33	6	0	11	24	16	47
28/29	उ.भा.	22	9	3	30	8	49	14	8
29/30	रेव.	19	26	0	44	6	1	11	18
30/31	अश्वि.	16	35	21	52	3	9	8	26

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टै. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	भर.	13	45	19	4	0	24	5	44
1/ 2	कृत्ति.	11	6	16	30	21	55	3	21
2/ 3	रोहि.	8	49	14	19	19	52	1	26
3/ 4	मृग.	7	2	12	40	18	21	0	5
4	आर्द्रा.	5	51	11	39	17	30	23	24
5	पुन.	5	20	11	19	17	20	23	25
6/ 7	पुष्य	5	32	11	41	17	53	0	7
7/ 8	आश्ले.	6	24	12	44	19	5	1	29
8/ 9	मघा.	7	55	14	22	20	52	3	23
9/10	पू.फा.	9	57	16	31	23	8	5	45
10/11	उ.फा.	12	24	19	4	1	45	8	27
11/12	हस्त	15	10	21	53	4	37	11	22
12/13	चित्रा	18	7	0	53	7	38	14	24
13/14	स्वाती	21	10	3	56	10	42	17	28
15	विशा.	0	13	6	58	13	43	20	27
16	अनु.	3	10	9	53	16	34	23	15
17/18	ज्येष्ठा	5	55	12	33	19	10	1	46
18/19	मूल	8	21	14	53	21	24	3	53
19/20	पू.षा.	10	21	16	46	23	9	5	29
20/21	उ.षा.	11	48	18	4	0	17	6	28
21/22	श्रव.	12	37	18	42	0	45	6	46
22/23	धनि .	12	44	18	38	0	31	6	20
23/24	शत .	12	7	17	51	23	33	5	12
24/25	पू.भा.	10	49	16	23	21	55	3	25
25/26	उ.भा.	8	53	14	19	19	43	1	6
26	रेव.	6	27	11	46	17	5	22	22
27	अश्वि.	3	39	8	54	14	9	19	24
28	भर.	0	38	5	53	11	7	16	22
28/29	कृत्ति.	21	37	2	53	8	10	13	28
29/30	रोहि.	18	47	0	7	5	29	10	52

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	मृग.	16	18	21	45	3	15	8	46
1/ 2	आर्द्रा.	14	20	19	57	1	37	7	19
2/ 3	पुन.	13	4	18	52	0	43	6	37
3/ 4	पुष्य	12	34	18	34	0	37	6	44
4/ 5	आश्ले.	12	53	19	6	1	21	7	40
5/ 6	मघा.	14	1	20	25	2	51	9	20
6/ 7	पू.फा.	15	51	22	25	5	0	11	38
7/ 8	उ.फा.	18	17	0	57	7	39	14	22
8/ 9	हस्त	21	6	3	51	10	36	17	22
10	चित्रा	0	8	6	55	13	42	20	28
11	स्वाती	3	15	10	1	16	47	23	32
12/13	विशा.	6	17	13	1	19	44	2	27
13/14	अनु.	9	9	15	50	22	30	5	9
14/15	ज्येष्ठा	11	47	18	23	0	59	7	34
15/16	मूल	14	7	20	39	3	10	9	39
16/17	पू.षा.	16	7	22	34	4	59	11	22
17/18	उ.षा.	17	43	0	3	6	21	12	38
18/19	श्रव.	18	52	1	4	7	15	13	23
19/20	धनि .	19	29	1	33	7	35	13	35
20/21	शत .	19	32	1	27	7	19	13	10
21/22	पू.भा.	18	58	0	43	6	27	12	8
22/23	उ.भा.	17	47	23	24	4	58	10	31
23/24	रेव.	16	2	21	31	2	58	8	24
24/25	अश्वि.	13	48	19	11	0	32	5	53
25/26	भर.	11	12	16	30	21	49	3	6
26/27	कृत्ति.	8	23	13	40	18	57	0	15
27	रोहि.	5	32	10	50	16	9	21	29
28	मृग.	2	50	8	12	13	36	19	2
29	आर्द्रा.	0	29	5	58	11	29	17	3
29/30	पुन.	22	39	4	17	9	58	15	42
30/31	पुष्य	21	29	3	19	9	12	15	8

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	आश्ले.	21	7	3	9	9	15	15	24
1/ 2	मघा.	21	36	3	51	10	10	16	31
2/ 3	पू.फा.	22	55	5	22	11	52	18	24
4	उ.फा.	0	58	7	35	14	13	20	53
5	हस्त	3	35	10	18	17	2	23	47
6/ 7	चित्रा	6	33	13	20	20	6	2	53
7/ 8	स्वाती	9	39	16	26	23	11	5	57
8/ 9	विशा.	12	41	19	25	2	8	8	50
9/10	अनु.	15	31	22	10	4	49	11	26
10/11	ज्येष्ठा	18	1	0	36	7	9	13	40
11/12	मूल	20	10	2	39	9	6	15	32
12/13	पू.षा.	21	57	4	20	10	41	17	2
13/14	उ.षा.	23	20	5	38	11	54	18	8
15	श्रव.	0	21	6	33	12	43	18	52
16	धनि .	0	59	7	5	13	9	19	12
17	शत .	1	13	7	13	13	11	19	7
18	पू.भा.	1	1	6	54	12	45	18	35
19	उ.भा.	0	22	6	9	11	53	17	35
19/20	रेव.	23	16	4	56	10	33	16	10
20/21	अश्वि.	21	44	3	18	8	50	14	20
21/22	भर.	19	50	1	18	6	46	12	12
22/23	कृत्ति.	17	38	23	3	4	28	9	52
23/24	रोहि.	15	16	20	40	2	5	7	29
24/25	मृग.	12	54	18	19	23	45	5	12
25/26	आर्द्रा.	10	40	16	9	21	40	3	12
26/27	पुन.	8	46	14	22	20	0	1	39
27/28	पुष्य	7	21	13	6	18	53	0	43
28/29	आश्ले.	6	35	12	31	18	29	0	30
29/30	मघा.	6	34	12	41	18	51	1	4

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	पू.फा.	7	20	13	39	20	1	2	26
1/2	उ.फा.	8	53	15	23	21	56	4	30
2/3	हस्त	11	7	17	45	0	25	7	7
3/4	चित्रा	13	50	20	34	3	19	10	4
4/5	स्वाती	16	50	23	35	6	21	13	6
5/6	विशा.	19	51	2	35	9	18	16	0
6/7	अनु.	22	41	5	21	11	59	18	36
8	ज्येष्ठा	1	11	7	45	14	16	20	46
9	मूल	3	15	9	41	16	6	22	28
10	पू.षा.	4	49	11	9	17	26	23	42
11/12	उ.षा.	5	56	12	8	18	19	0	28
12/13	श्रव.	6	36	12	42	18	47	0	50
13/14	धनि .	6	53	12	53	18	53	0	51
14/15	शत .	6	49	12	45	18	39	0	33
15	पू.भा.	6	26	12	18	18	8	23	58
16	उ.भा.	5	46	11	34	17	20	23	5
17	रेव.	4	50	10	34	16	16	21	58
18	अश्वि.	3	39	9	19	14	58	20	36
19	भर.	2	13	7	50	13	26	19	2
20	कृत्ति.	0	37	6	12	11	46	17	19
20/21	रोहि.	22	53	4	26	10	0	15	33
21/22	मृग.	21	7	2	40	8	15	13	49
22/23	आर्द्रा.	19	24	1	1	6	37	12	15
23/24	पुन.	17	54	23	34	5	16	10	59
24/25	पुष्य	16	43	22	30	4	18	10	8
25/26	आश्ले.	16	0	21	55	3	51	9	50
26/27	मघा.	15	52	21	56	4	2	10	11
27/28	पू.फा.	16	23	22	37	4	54	11	13
28/29	उ.फा.	17	35	24	0	6	26	12	56
29/30	हस्त	19	27	2	1	8	36	15	14
30/31	चित्रा	21	53	4	33	11	15	17	58

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	स्वाती	0	41	7	26	14	10	20	55
2	विशा.	3	40	10	25	17	9	23	52
3/4	अनु.	6	35	13	16	19	56	2	35
4/5	ज्येष्ठा	9	12	15	48	22	21	4	53
5/6	मूल	11	22	17	50	0	15	6	39
6/7	पू.षा.	12	59	19	18	1	35	7	49
7/8	उ.षा.	14	1	20	11	2	18	8	24
8/9	श्रव.	14	28	20	29	2	29	8	27
9/10	धनि .	14	23	20	18	2	11	8	2
10/11	शत .	13	52	19	41	1	28	7	15
11/12	पू.भा.	13	0	18	44	0	28	6	10
12/13	उ.भा.	11	52	17	33	23	13	4	53
13/14	रेव.	10	32	16	11	21	50	3	28
14/15	अश्वि.	9	6	14	43	20	21	1	58
15/16	भर.	7	36	13	13	18	50	0	28
16	कृत्ति.	6	5	11	43	17	21	23	0
17	रोहि.	4	38	10	17	15	57	21	37
18	मृग.	3	17	8	58	14	40	20	22
19	आर्द्रा.	2	6	7	50	13	34	19	20
20	पुन.	1	7	6	55	12	44	18	35
21	पुष्य	0	27	6	20	12	14	18	10
22	आश्ले.	0	8	6	7	12	9	18	11
23	मघा.	0	16	6	23	12	31	18	42
24	पू.फा.	0	54	7	9	13	26	19	45
25	उ.फा.	2	5	8	28	14	53	21	20
26	हस्त	3	49	10	20	16	53	23	28
27/28	चित्रा	6	4	12	42	19	21	2	1
28/29	स्वाती	8	43	15	26	22	9	4	53
29/30	विशा.	11	38	18	23	1	8	7	53
30/31	अनु.	14	37	21	21	4	4	10	46

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	ज्येष्ठा	17	27	0	6	6	44	13	20
1/2	मूल	19	55	2	27	8	57	15	25
2/3	पू.षा.	21	51	4	14	10	34	16	52
3/4	उ.षा.	23	8	5	21	11	31	17	38
4/5	श्रव.	23	43	5	46	11	46	17	43
5/6	धनि .	23	38	5	31	11	21	17	9
6/7	शत .	22	55	4	39	10	21	16	2
7/8	पू.भा.	21	41	3	18	8	54	14	29
8/9	उ.भा.	20	2	1	35	7	6	12	37
9/10	रेव.	18	7	23	36	5	5	10	34
10/11	अश्वि.	16	3	21	31	3	0	8	29
11/12	भर.	13	58	19	27	0	57	6	27
12/13	कृत्ति.	11	58	17	30	23	3	4	35
13/14	रोहि.	10	11	15	47	21	23	3	1
14/15	मृग.	8	41	14	21	20	3	1	46
15/16	आर्द्रा.	7	31	13	18	19	5	0	55
16/17	पुन.	6	46	12	38	18	32	0	28
17/18	पुष्य	6	26	12	25	18	25	0	28
18/19	आश्ले.	6	32	12	38	18	45	0	54
19/20	मघा.	7	5	13	18	19	32	1	48
20/21	पू.फा.	8	5	14	24	20	45	3	8
21/22	उ.फा.	9	32	15	57	22	25	4	53
22/23	हस्त	11	24	17	56	0	29	7	4
23/24	चित्रा	13	40	20	17	2	56	9	35
24/25	स्वाती	16	16	22	58	5	41	12	24
25/26	विशा.	19	8	1	53	8	38	15	23
26/27	अनु.	22	9	4	54	11	39	18	24
28	ज्येष्ठा	1	8	7	51	14	33	21	14
29	मूल	3	54	10	33	17	9	23	44
30/1	पू.षा.	6	17	12	48	19	16	1	42

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टै. टा.)

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	पू.षा.	6	17	12	48	19	16	1	42
1/ 2	उ.षा.	8	6	14	27	20	45	3	0
2/ 3	श्रव.	9	13	15	22	21	29	3	33
3/ 4	धनि .	9	34	15	32	21	27	3	19
4/ 5	शत .	9	9	14	56	20	40	2	21
5/ 6	पू.भा.	8	1	13	38	19	12	0	45
6	उ.भा.	6	16	11	44	17	11	22	37
7	रेव.	4	1	9	24	14	46	20	7
8	अश्वि.	1	28	6	47	12	6	17	26
8/ 9	भर.	22	45	4	3	9	22	14	42
9/10	कृत्ति.	20	2	1	23	6	44	12	7
10/11	रोहि.	17	31	22	56	4	22	9	50
11/12	मृग.	15	20	20	51	2	24	7	59
12/13	आर्द्रा.	13	36	19	15	0	57	6	40
13/14	पुन.	12	26	18	15	0	5	5	58
14/15	पुष्य	11	54	17	52	23	52	5	55
15/16	आश्ले.	11	59	18	7	0	16	6	28
16/17	मघा.	12	42	18	58	1	15	7	35
17/18	पू.फा.	13	57	20	21	2	46	9	13
18/19	उ.फा.	15	41	22	11	4	43	11	15
19/20	हस्त	17	49	0	24	7	1	13	38
20/21	चित्रा	20	16	2	56	9	36	16	17
21/22	स्वाती	22	58	5	41	12	24	19	7
23	विशा.	1	51	8	36	15	20	22	5
24/25	अनु.	4	51	11	36	18	21	1	6
25/26	ज्येष्ठा	7	51	14	36	21	20	4	3
26/27	मूल	10	46	17	28	0	9	6	49
27/28	पू.षा.	13	27	20	4	2	39	9	13
28/29	उ.षा.	15	45	22	14	4	42	11	7
29/30	श्रव.	17	29	23	49	6	7	12	21
30/31	धनि .	18	33	0	42	6	48	12	51

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	शत .	18	51	0	47	6	41	12	32
1/ 2	पू.भा.	18	20	0	5	5	47	11	26
2/ 3	उ.भा.	17	3	22	37	4	9	9	38
3/ 4	रेव.	15	5	20	30	1	53	7	14
4/ 5	अश्वि.	12	34	17	52	23	9	4	25
5/ 6	भर.	9	40	14	54	20	8	1	21
6	कृत्ति.	6	34	11	47	17	0	22	14
7	रोहि.	3	28	8	42	13	58	19	15
8	मृग.	0	33	5	53	11	14	16	37
8/ 9	आर्द्रा.	22	2	3	29	8	58	14	30
9/10	पुन.	20	4	1	41	7	20	13	3
10/11	पुष्य	18	48	0	36	6	27	12	21
11/12	आश्ले.	18	17	0	17	6	20	12	26
12/13	मघा.	18	35	0	47	7	1	13	18
13/14	पू.फा.	19	38	2	0	8	24	14	51
14/15	उ.फा.	21	20	3	51	10	24	16	58
15/16	हस्त	23	34	6	11	12	50	19	30
17	चित्रा	2	10	8	52	15	35	22	17
18/19	स्वाती	5	1	11	45	18	29	1	14
19/20	विशा.	7	59	14	44	21	29	4	14
20/21	अनु.	10	58	17	43	0	27	7	12
21/22	ज्येष्ठा	13	55	20	39	3	22	10	4
22/23	मूल	16	46	23	28	6	9	12	48
23/24	पू.षा.	19	27	2	5	8	43	15	19
24/25	उ.षा.	21	53	4	26	10	58	17	29
25/26	श्रव.	23	57	6	24	12	49	19	12
27	धनि .	1	32	7	51	14	7	20	20
28	शत .	2	32	8	40	14	46	20	49
29	पू.भा.	2	49	8	47	14	41	20	33
30	उ.भा.	2	22	8	8	13	52	19	32

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2025 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	रेव.	1	10	6	46	12	19	17	49
1/ 2	अश्वि.	23	18	4	44	10	8	15	30
2/ 3	भर.	20	51	2	10	7	28	12	44
3/ 4	कृत्ति.	17	59	23	14	4	28	9	41
4/ 5	रोहि.	14	54	20	7	1	19	6	32
5/ 6	मृग.	11	46	17	0	22	15	3	31
6/ 7	आर्द्रा.	8	48	14	7	19	27	0	49
7	पुन.	6	13	11	39	17	7	22	38
8	पुष्य	4	11	9	47	15	26	21	8
9	आश्ले.	2	52	8	40	14	31	20	25
10	मघा.	2	22	8	23	14	27	20	34
11	पू.फा.	2	44	8	57	15	14	21	33
12	उ.फा.	3	55	10	20	16	48	23	17
13/14	हस्त	5	50	12	24	19	0	1	38
14/15	चित्रा	8	18	14	59	21	41	4	24
15/16	स्वाती	11	8	17	53	0	38	7	24
16/17	विशा.	14	9	20	55	3	40	10	26
17/18	अनु.	17	11	23	56	6	40	13	23
18/19	ज्येष्ठा	20	6	2	49	9	30	16	11
19/20	मूल	22	51	5	30	12	8	18	45
21	पू.षा.	1	21	7	56	14	31	21	4
22	उ.षा.	3	36	10	6	16	36	23	5
23/24	श्रव.	5	32	11	58	18	22	0	45
24/25	धनि .	7	7	13	27	19	46	2	3
25/26	शत .	8	18	14	31	20	43	2	52
26/27	पू.भा.	9	0	15	5	21	9	3	10
27/28	उ.भा.	9	9	15	6	21	1	2	53
28/29	रेव.	8	43	14	31	20	16	1	59
29/30	अश्वि.	7	41	13	19	18	56	0	31
30	भर.	6	4	11	35	17	4	22	32
31	कृत्ति.	3	58	9	22	14	46	20	8

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2026 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	रोहि.	1	30	6	50	12	10	17	29
1/ 2	मृग.	22	48	4	7	9	25	14	44
2/ 3	आर्द्रा.	20	4	1	23	6	44	12	5
3/ 4	पुन.	17	28	22	51	4	16	9	43
4/ 5	पुष्य	15	11	20	41	2	13	7	48
5/ 6	आश्ले.	13	25	19	4	0	46	6	30
6/ 7	मघा.	12	17	18	8	0	1	5	57
7/ 8	पू.फा.	11	56	17	58	0	4	6	12
8/ 9	उ.फा.	12	24	18	39	0	56	7	17
9/10	हस्त	13	40	20	6	2	35	9	6
10/11	चित्रा	15	39	22	15	4	52	11	31
11/12	स्वाती	18	12	0	53	7	37	14	20
12/13	विशा.	21	5	3	50	10	35	17	21
14	अनु.	0	6	6	51	13	36	20	20
15	ज्येष्ठा	3	3	9	46	16	27	23	8
16/17	मूल	5	47	12	25	19	2	1	38
17/18	पू.षा.	8	12	14	44	21	16	3	45
18/19	उ.षा.	10	14	16	40	23	6	5	30
19/20	श्रव.	11	52	18	13	0	32	6	50
20/21	धनि .	13	6	19	21	1	35	7	47
21/22	शत .	13	58	20	7	2	15	8	22
22/23	पू.भा.	14	27	20	30	2	32	8	33
23/24	उ.भा.	14	33	20	30	2	27	8	22
24/25	रेव.	14	16	20	8	1	58	7	48
25/26	अश्वि.	13	35	19	22	1	7	6	50
26/27	भर.	12	32	18	13	23	53	5	31
27/28	कृत्ति.	11	8	16	44	22	19	3	53
28/29	रोहि.	9	26	14	59	20	30	2	1
29	मृग.	7	31	13	1	18	31	24	0
30	आर्द्रा.	5	29	10	58	16	27	21	57
31	पुन.	3	27	8	57	14	29	20	1

चन्द नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2026 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पुष्य	1	34	7	8	12	43	18	20
1/ 2	आश्ले.	23	58	5	37	11	19	17	2
2/ 3	मघा.	22	47	4	35	10	24	16	16
3/ 4	पू.फा.	22	10	4	7	10	6	16	8
4/ 5	उ.फा.	22	12	4	19	10	29	16	42
5/ 6	हस्त	22	57	5	15	11	35	17	58
7	चित्रा	0	23	6	51	13	21	19	54
8	स्वाती	2	28	9	4	15	42	22	21
9/10	विशा.	5	2	11	44	18	27	1	11
10/11	अनु.	7	55	14	39	21	24	4	8
11/12	ज्येष्ठा	10	52	17	36	0	19	7	1
12/13	मूल	13	42	20	22	3	0	9	37
13/14	पू.षा.	16	12	22	46	5	18	11	48
14/15	उ.षा.	18	16	0	42	7	6	13	28
15/16	श्रव.	19	48	2	6	8	22	14	35
16/17	धनि .	20	47	2	57	9	5	15	11
17/18	शत .	21	16	3	18	9	19	15	18
18/19	पू.भा.	21	16	3	12	9	6	15	0
19/20	उ.भा.	20	52	2	42	8	32	14	20
20/21	रेव.	20	7	1	53	7	39	13	23
21/22	अश्वि.	19	7	0	50	6	32	12	13
22/23	भर.	17	54	23	35	5	15	10	54
23/24	कृत्ति.	16	33	22	12	3	50	9	29
24/25	रोहि.	15	7	20	45	2	23	8	0
25/26	मृग.	13	38	19	16	0	54	6	33
26/27	आर्द्रा.	12	11	17	50	23	29	5	8
27/28	पुन.	10	48	16	29	22	10	3	52

चन्द नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2026 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
28/ 1	पुष्य	9	35	15	18	21	2	2	48
1/ 2	आश्ले.	8	34	14	21	20	10	2	0
2/ 3	मघा.	7	51	13	44	19	38	1	34
3/ 4	पू.फा.	7	31	13	30	19	31	1	34
4/ 5	उ.फा.	7	39	13	45	19	54	2	5
5/ 6	हस्त	8	17	14	32	20	49	3	8
6/ 7	चित्रा	9	30	15	53	22	18	4	46
7/ 8	स्वाती	11	15	17	47	0	20	6	55
8/ 9	विशा.	13	31	20	9	2	49	9	29
9/10	अनु.	16	11	22	54	5	37	12	21
10/11	ज्येष्ठा	19	5	1	49	8	33	15	17
11/12	मूल	22	0	4	42	11	24	18	4
13	पू.षा.	0	43	7	21	13	57	20	31
14	उ.षा.	3	3	9	33	16	0	22	26
15	श्रव.	4	49	11	9	17	27	23	43
16/17	धनि .	5	56	12	6	18	14	0	19
17/18	शत .	6	22	12	22	18	20	0	15
18	पू.भा.	6	9	12	0	17	49	23	36
19	उ.भा.	5	21	11	4	16	46	22	26
20	रेव.	4	5	9	42	15	18	20	53
21	अश्वि.	2	27	8	1	13	33	19	6
22	भर.	0	37	6	9	11	40	17	11
22/23	कृत्ति.	22	42	4	14	9	45	15	17
23/24	रोहि.	20	49	2	22	7	55	13	30
24/25	मृग.	19	5	0	40	6	17	11	54
25/26	आर्द्रा.	17	33	23	13	4	54	10	36
26/27	पुन.	16	19	22	3	3	49	9	36
27/28	पुष्य	15	24	21	13	3	4	8	56
28/29	आश्ले.	14	50	20	45	2	41	8	38
29/30	मघा.	14	37	20	38	2	40	8	43
30/31	पू.फा.	14	48	20	54	3	1	9	10

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2025 ई. को अयनांश 24° 12' 23"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	43	36	8	16	36	28	8	29	42	42	3	7	42	37	7	25	39	51	1	19	0	32	10	3	30	24	10	20	19	4	11	7	17	27	11	6	40	17	-23	0	-25	52	-4	37
2	6	47	33	8	17	37	38	9	13	15	15	3	7	22	38	7	26	57	46	1	18	54	13	10	4	34	40	10	20	23	38	11	7	14	16	11	6	29	19	-22	55	-22	17	-4	1
3	6	51	29	8	18	38	49	9	26	57	44	3	7	2	6	7	28	17	6	1	18	48	2	10	5	38	38	10	20	28	18	11	7	11	6	11	6	21	13	-22	49	-17	28	-3	12
4	6	55	26	8	19	39	59	10	10	47	37	3	6	41	2	7	29	37	41	1	18	42	1	10	6	42	17	10	20	33	1	11	7	7	55	11	6	16	14	-22	43	-11	42	-2	10
5	6	59	22	8	20	41	9	10	24	42	58	3	6	19	29	8	0	59	24	1	18	36	8	10	7	45	36	10	20	37	50	11	7	4	44	11	6	14	4	-22	36	-5	19	-1	1
6	7	3	19	8	21	42	18	11	8	42	34	3	5	57	30	8	2	22	8	1	18	30	25	10	8	48	34	10	20	42	43	11	7	1	33	11	6	13	46	-22	29	1	22	0	13
7	7	7	15	8	22	43	27	11	22	45	42	3	5	35	6	8	3	45	49	1	18	24	52	10	9	51	11	10	20	47	41	11	6	58	22	11	6	14	3	-22	22	8	0	1	27
8	7	11	12	8	23	44	36	0	6	51	50	3	5	12	21	8	5	10	21	1	18	19	28	10	10	53	27	10	20	52	43	11	6	55	11	11	6	13	30	-22	14	14	16	2	35
9	7	15	9	8	24	45	44	0	21	0	2	3	4	49	17	8	6	35	42	1	18	14	14	10	11	55	19	10	20	57	49	11	6	52	1	11	6	10	57	-22	6	19	48	3	34
10	7	19	5	8	25	46	52	1	5	8	35	3	4	25	56	8	8	1	48	1	18	9	11	10	12	56	47	10	21	3	0	11	6	48	50	11	6	5	42	-21	57	24	14	4	20
11	7	23	2	8	26	47	59	1	19	14	44	3	4	2	22	8	9	28	35	1	18	4	18	10	13	57	51	10	21	8	15	11	6	45	39	11	5	57	39	-21	48	27	12	4	50
12	7	26	58	8	27	49	6	2	3	14	46	3	3	38	37	8	10	56	4	1	17	59	36	10	14	58	29	10	21	13	34	11	6	42	28	11	5	47	18	-21	38	28	27	5	2
13	7	30	55	8	28	50	12	2	17	4	28	3	3	14	44	8	12	24	10	1	17	55	4	10	15	58	41	10	21	18	58	11	6	39	17	11	5	35	41	-21	28	27	53	4	56
14	7	34	51	8	29	51	18	3	0	39	46	3	2	50	45	8	13	52	54	1	17	50	43	10	16	58	25	10	21	24	25	11	6	36	7	11	5	24	0	-21	18	25	38	4	34
15	7	38	48	9	0	52	24	3	13	57	28	3	2	26	44	8	15	22	14	1	17	46	33	10	17	57	41	10	21	29	56	11	6	32	56	11	5	13	29	-21	7	22	2	3	57
16	7	42	44	9	1	53	29	3	26	55	48	3	2	2	44	8	16	52	8	1	17	42	34	10	18	56	27	10	21	35	32	11	6	29	45	11	5	5	3	-20	56	17	25	3	8
17	7	46	41	9	2	54	34	4	9	34	39	3	1	38	46	8	18	22	38	1	17	38	46	10	19	54	43	10	21	41	11	11	6	26	34	11	4	59	13	-20	44	12	9	2	11
18	7	50	38	9	3	55	38	4	21	55	33	3	1	14	54	8	19	53	41	1	17	35	10	10	20	52	28	10	21	46	54	11	6	23	23	11	4	56	1	-20	32	6	32	1	9
19	7	54	34	9	4	56	42	5	4	1	30	3	0	51	10	8	21	25	18	1	17	31	45	10	21	49	40	10	21	52	40	11	6	20	12	11	4	55	1	-20	20	0	47	0	5
20	7	58	31	9	5	57	46	5	15	56	36	3	0	27	38	8	22	57	29	1	17	28	32	10	22	46	19	10	21	58	30	11	6	17	2	11	4	55	26	-20	7	-4	55	-0	59
21	8	2	27	9	6	58	49	5	27	45	45	3	0	4	20	8	24	30	13	1	17	25	30	10	23	42	23	10	22	4	24	11	6	13	51	11	4	56	19	-19	54	-10	24	-1	59
22	8	6	24	9	7	59	52	6	9	34	19	2	29	41	18	8	26	3	32	1	17	22	40	10	24	37	51	10	22	10	22	11	6	10	40	11	4	56	39	-19	40	-15	31	-2	55
23	8	10	20	9	9	0	54	6	21	27	44	2	29	18	35	8	27	37	26	1	17	20	2	10	25	32	42	10	22	16	23	11	6	7	29	11	4	55	36	-19	26	-20	5	-3	43
24	8	14	17	9	10	1	56	7	3	31	15	2	28	56	15	8	29	11	55	1	17	17	36	10	26	26	54	10	22	22	27	11	6	4	18	11	4	52	34	-19	12	-23	54	-4	22
25	8	18	13	9	11	2	58	7	15	49	32	2	28	34	18	9	0	46	59	1	17	15	22	10	27	20	27	10	22	28	35	11	6	1	8	11	4	47	20	-18	57	-26	44	-4	50
26	8	22	10	9	12	3	59	7	28	26	15	2	28	12	48	9	2	22	41	1	17	13	20	10	28	13	17	10	22	34	46	11	5	57	57	11	4	40	4	-18	42	-28	18	-5	5
27	8	26	7	9	13	4	59	8	11	23	46	2	27	51	48	9	3	58	59	1	17	11	30	10	29	5	25	10	22	41	0	11	5	54	46	11	4	31	23	-18	27	-28	23	-5	4
28	8	30	3	9	14	5	59	8	24	42	45	2	27	31	19	9	5	35	55	1	17	9	53	10	29	56	48	10	22	47	17	11	5	51	35	11	4	22	7	-18	11	-26	51	-4	48
29	8	34	0	9	15	6	58	9	8	21	58	2	27	11	23	9	7	13	30	1	17	8	27	11	0	47	24	10	22	53	37	11	5	48	24	11	4	13	17	-17	55	-23	43	-4	14
30	8	37	56	9	16	7	56	9	22	18	26	2	26	52	2	9	8	51	45	1	17	7	14	11	1	37	12	10	23	0	1	11	5	45	14	11	4	5	51	-17	39	-19	9	-3	25
31	8	41	53	9	17	8	52	10	6	27	52	2	26	33	18	9	10	30	40	1	17	6	14	11	2	26	9	10	23	6	27	11	5	42	3	11	4	0	29	-17	22	-13	28	-2	23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2025 ई. को अयनांश 24° 12' 28"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द्र क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	8	45	49	9	18	9	48	10	20	45	20	2	26	15	14	9	12	10	16	1	17	5	25	11	3	14	14	10	23	12	56	11	5	38	52	11	3	57	28	-17	5	-7	1	-1	11
2	8	49	46	9	19	10	43	11	5	5	59	2	25	57	50	9	13	50	35	1	17	4	49	11	4	1	24	10	23	19	28	11	5	35	41	11	3	56	38	-16	46	-0	11	0	6
3	8	53	42	9	20	11	36	11	19	25	43	2	25	41	7	9	15	31	37	1	17	4	26	11	4	47	36	10	23	26	2	11	5	32	30	11	3	57	21	-16	31	6	39	1	23
4	8	57	39	9	21	12	28	0	3	41	26	2	25	25	6	9	17	13	22	1	17	4	15	11	5	32	50	10	23	32	40	11	5	29	20	11	3	58	42	-16	13	13	7	2	34
5	9	1	36	9	22	13	18	0	17	51	2	2	25	9	53	9	16	55	52	1	17	4	16	11	6	17	1	10	23	39	19	11	5	26	9	11	3	59	41	-15	55	18	52	3	35
6	9	5	32	9	23	14	7	1	1	53	9	2	24	55	22	9	20	39	7	1	17	4	29	11	7	0	8	10	23	46	1	11	5	22	58	11	3	59	27	-15	36	23	32	4	23
7	9	9	29	9	24	14	55	1	15	46	46	2	24	41	38	9	22	23	6	1	17	4	55	11	7	42	7	10	23	52	46	11	5	19	47	11	3	57	28	-15	18	26	48	4	55
8	9	13	25	9	25	15	40	1	29	31	0	2	24	28	39	9	24	7	54	1	17	5	33	11	8	22	57	10	23	59	33	11	5	16	37	11	3	53	37	-14	59	28	26	5	9
9	9	17	22	9	26	16	25	2	13	4	48	2	24	16	28	9	25	53	26	1	17	6	23	11	9	2	33	10	24	6	22	11	5	13	26	11	3	48	14	-14	40	28	20	5	6
10	9	21	18	9	27	17	8	2	26	26	57	2	24	5	4	9	27	39	43	1	17	7	25	11	9	40	54	10	24	13	13	11	5	10	15	11	3	41	55	-14	20	26	34	4	47
11	9	25	15	9	28	17	49	3	9	36	14	2	23	54	27	9	29	26	46	1	17	8	39	11	10	17	58	10	24	20	6	11	5	7	4	11	3	35	29	-14	1	23	22	4	12
12	9	29	11	9	29	18	29	3	22	31	38	2	23	44	38	10	1	14	32	1	17	10	5	11	10	53	36	10	24	27	1	11	5	3	53	11	3	29	43	-13	41	19	4	3	24
13	9	33	8	10	0	19	8	4	5	12	37	2	23	35	37	10	3	3	1	1	17	11	43	11	11	27	51	10	24	33	59	11	5	0	43	11	3	25	14	-13	21	13	59	2	28
14	9	37	5	10	1	19	45	4	17	39	21	2	23	27	24	10	4	52	10	1	17	13	32	11	12	0	38	10	24	40	58	11	4	57	32	11	3	22	23	-13	0	8	25	1	25
15	9	41	1	10	2	20	21	4	29	52	54	2	23	19	58	10	6	41	56	1	17	15	34	11	12	31	54	10	24	47	59	11	4	54	21	11	3	21	14	-12	40	2	38	0	19
16	9	44	58	10	3	20	56	5	11	55	13	2	23	13	20	10	8	32	16	1	17	17	47	11	13	1	34	10	24	55	1	11	4	51	10	11	3	21	33	-12	19	-3	9	-0	47
17	9	48	54	10	4	21	29	5	23	49	12	2	23	7	29	10	10	23	5	1	17	20	12	11	13	29	37	10	25	2	6	11	4	48	0	11	3	22	54	-11	58	-8	46	-1	50
18	9	52	51	10	5	22	1	6	5	38	28	2	23	2	26	10	12	14	17	1	17	22	49	11	13	55	57	10	25	9	12	11	4	44	49	11	3	24	45	-11	37	-14	2	-2	48
19	9	56	47	10	6	22	32	6	17	27	20	2	22	58	9	10	14	5	45	1	17	25	37	11	14	20	32	10	25	16	20	11	4	41	38	11	3	26	31	-11	16	-18	48	-3	39
20	10	0	44	10	7	23	1	6	29	20	32	2	22	54	40	10	15	57	19	1	17	28	36	11	14	43	16	10	25	23	29	11	4	38	27	11	3	27	43	-10	54	-22	52	-4	21
21	10	4	40	10	8	23	29	7	11	23	1	2	22	51	57	10	17	48	48	1	17	31	47	11	15	4	11	10	25	30	40	11	4	35	16	11	3	27	59	-10	33	-26	1	-4	52
22	10	8	37	10	9	23	56	7	23	39	41	2	22	49	59	10	19	40	1	1	17	35	9	11	15	23	8	10	25	37	52	11	4	32	6	11	3	27	9	-10	11	-28	2	-5	10
23	10	12	34	10	10	24	22	8	6	15	1	2	22	48	48	10	21	30	42	1	17	38	43	11	15	40	5	10	25	46	5	11	4	28	55	11	3	25	16	-9	49	-28	41	-5	14
24	10	16	30	10	11	24	46	8	19	12	38	2	22	48	22	10	23	20	34	1	17	42	27	11	15	54	58	10	25	52	19	11	4	25	44	11	3	22	36	-9	27	-27	47	-5	3
25	10	20	27	10	12	25	9	9	2	34	45	2	22	48	40	10	25	9	17	1	17	46	23	11	16	7	44	10	25	59	35	11	4	22	33	11	3	19	32	-9	5	-25	18	-4	35
26	10	24	23	10	13	25	30	9	16	21	46	2	22	49	43	10	26	56	29	1	17	50	30	11	16	18	16	10	26	6	52	11	4	19	23	11	3	16	33	-8	42	-21	17	-3	51
27	10	28	20	10	14	25	49	10	0	31	50	2	22	51	30	10	28	41	45	1	17	54	47	11	16	26	38	10	26	14	10	11	4	16	12	11	3	14	6	-8	20	-15	57	-2	51
28	10	32	16	10	15	26	7	10	15	0	53	2	22	54	0	11	0	24	37	1	17	59	16	11	16	32	39	10	26	21	29	11	4	13	1	11	3	12	29	-7	57	-9	38	-1	39

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 मार्च 2025 ई. को अयनांश 24° 12' 32"

तारीख	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां		चन्द क्रां		चन्द्रशर	
	घ.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	10	36	13	10	16	26	23	10	29	42	57	2	22	57	12	11	2	4	36	1	18	3	55	11	16	36	20	10	26	28	48	11	4	9	50	11	3	11	50	-7	34	-2	42	-0	19
2	10	40	9	10	17	26	37	11	14	30	59	2	23	1	7	11	3	41	10	1	18	8	45	11	16	37	36	10	26	36	9	11	4	6	40	11	3	12	4	-7	12	4	25	1	2
3	10	44	6	10	18	26	50	11	29	17	44	2	23	5	42	11	5	13	45	1	18	13	45	11	16	36	25	10	26	43	30	11	4	3	29	11	3	12	55	-6	49	11	17	2	20
4	10	48	3	10	19	27	0	0	13	56	46	2	23	10	59	11	6	41	46	1	18	18	55	11	16	32	46	10	26	50	52	11	4	0	18	11	3	14	2	-6	26	17	29	3	27
5	10	51	59	10	20	27	8	0	28	23	5	2	23	16	55	11	8	4	38	1	18	24	16	11	16	26	36	10	26	58	14	11	3	57	7	11	3	15	3	-6	2	22	37	4	20
6	10	55	56	10	21	27	14	1	12	33	27	2	23	23	30	11	9	21	47	1	18	29	47	11	16	17	56	10	27	5	37	11	3	53	57	11	3	15	40	-5	39	26	19	4	57
7	10	59	52	10	22	27	18	1	26	26	14	2	23	30	44	11	10	32	40	1	18	35	28	11	16	6	43	10	27	13	0	11	3	50	46	11	3	15	44	-5	16	28	20	5	15
8	11	3	49	10	23	27	20	2	10	1	10	2	23	38	35	11	11	36	45	1	18	41	19	11	15	53	0	10	27	20	24	11	3	47	35	11	3	15	16	-4	52	28	37	5	15
9	11	7	45	10	24	27	20	2	23	18	53	2	23	47	3	11	12	33	32	1	18	47	20	11	15	36	48	10	27	27	47	11	3	44	24	11	3	14	23	-4	29	27	13	4	58
10	11	11	42	10	25	27	17	3	6	20	32	2	23	56	7	11	13	22	37	1	18	53	30	11	15	18	9	10	27	35	12	11	3	41	14	11	3	13	19	-4	6	24	21	4	26
11	11	15	38	10	26	27	13	3	19	7	32	2	24	5	46	11	14	3	36	1	18	59	50	11	14	57	7	10	27	42	36	11	3	38	3	11	3	12	17	-3	42	20	21	3	41
12	11	19	35	10	27	27	6	4	1	41	20	2	24	15	59	11	14	36	14	1	19	6	19	11	14	33	48	10	27	50	0	11	3	34	52	11	3	11	28	-3	18	15	29	2	46
13	11	23	32	10	28	26	57	4	14	3	24	2	24	26	46	11	15	0	17	1	19	12	58	11	14	8	16	10	27	57	24	11	3	31	41	11	3	10	56	-2	55	10	5	1	44
14	11	27	28	10	29	26	46	4	26	15	12	2	24	38	6	11	15	15	40	1	19	19	45	11	13	40	39	10	28	4	49	11	3	28	31	11	3	10	43	-2	31	4	22	0	38
15	11	31	25	11	0	26	34	5	8	18	17	2	24	49	58	11	15	22	22	1	19	26	42	11	13	11	6	10	28	12	13	11	3	25	20	11	3	10	44	-2	7	-1	26	-0	28
16	11	35	21	11	1	26	19	5	20	14	26	2	25	2	21	11	15	20	31	1	19	33	48	11	12	39	47	10	28	19	37	11	3	22	9	11	3	10	53	-1	44	-7	8	-1	33
17	11	39	18	11	2	26	2	6	2	5	46	2	25	15	15	11	15	10	22	1	19	41	2	11	12	6	53	10	28	27	1	11	3	18	58	11	3	11	2	-1	20	-12	32	-2	34
18	11	43	14	11	3	25	44	6	13	54	50	2	25	28	39	11	14	52	16	1	19	48	25	11	11	32	35	10	28	34	24	11	3	15	48	11	3	11	6	-0	56	-17	29	-3	28
19	11	47	11	11	4	25	24	6	25	44	38	2	25	42	33	11	14	26	46	1	19	55	57	11	10	57	7	10	28	41	47	11	3	12	37	11	3	11	3	-0	33	-21	47	-4	12
20	11	51	7	11	5	25	2	7	7	38	40	2	25	56	55	11	13	54	30	1	20	3	37	11	10	20	42	10	28	49	10	11	3	9	26	11	3	10	53	-0	9	-25	13	-4	47
21	11	55	4	11	6	24	38	7	19	40	54	2	26	11	45	11	13	16	15	1	20	11	26	11	9	43	35	10	28	56	33	11	3	6	16	11	3	10	39	0	15	-27	35	-5	9
22	11	59	1	11	7	24	13	8	1	55	33	2	26	27	4	11	12	32	57	1	20	19	23	11	9	6	1	10	29	3	54	11	3	3	5	11	3	10	30	0	38	-28	40	-5	17
23	12	2	57	11	8	23	46	8	14	26	57	2	26	42	49	11	11	45	35	1	20	27	28	11	8	28	15	10	29	11	15	11	2	59	54	11	3	10	30	1	2	-28	20	-5	11
24	12	6	54	11	9	23	17	8	27	19	11	2	26	59	1	11	10	55	15	1	20	35	41	11	7	50	32	10	29	18	36	11	2	56	43	11	3	10	45	1	26	-26	29	-4	50
25	12	10	50	11	10	22	46	9	10	35	39	2	27	15	39	11	10	3	2	1	20	44	3	11	7	13	7	10	29	25	56	11	2	53	33	11	3	11	16	1	49	-23	9	-4	12
26	12	14	47	11	11	22	14	9	24	18	28	2	27	32	42	11	9	10	5	1	20	52	32	11	6	36	15	10	29	33	15	11	2	50	22	11	3	11	57	2	13	-18	26	-3	20
27	12	18	43	11	12	21	39	10	8	27	54	2	27	50	11	11	8	17	26	1	21	1	9	11	6	0	11	10	29	40	33	11	2	47	11	11	3	12	39	2	37	-12	35	-2	13
28	12	22	40	11	13	21	3	10	23	1	43	2	28	8	4	11	7	26	14	1	21	9	53	11	5	25	8	10	29	47	50	11	2	44	0	11	3	13	9	3	0	-5	54	-0	56
29	12	26	36	11	14	20	25	11	7	55	1	2	28	26	21	11	6	37	19	1	21	18	45	11	4	51	18	10	29	55	6	11	2	40	50	11	3	13	15	3	23	1	15	0	26
30	12	30	33	11	15	19	45	11	23	0	25	2	28	45	1	11	5	51	33	1	21	27	45	11	4	18	55	11	0	2	21	11	2	37	39	11	3	12	47	3	47	8	25	1	48
31	12	34	30	11	16	19	3	0	8	8	52	2	29	4	4	11	5	9	37	1	21	36	52	11	3	48	8	11	0	9	35	11	2	34	28	11	3	11	44	4	10	15	8	3	2

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 अप्रैल, 2025 ई. को अयनांश 24° 12′ 36″

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 38 26	11 17 18 18	0 23 11 2	2 29 23 30	11 4 32 8	1 21 46 6	11 3 19 8	11 0 16 47	11 2 31 17	11 3 10 12	4 33	20 54	4 3
2	12 42 23	11 18 17 32	1 7 58 36	2 29 43 18	11 3 59 30	1 21 55 27	11 2 52 3	11 0 23 59	11 2 28 7	11 3 8 26	4 56	25 16	4 46
3	12 46 19	11 19 16 43	1 22 25 25	3 0 3 27	11 3 32 6	1 22 4 55	11 2 27 1	11 0 31 8	11 2 24 56	11 3 6 45	5 19	27 55	5 11
4	12 50 16	11 20 15 51	2 6 28 2	3 0 23 57	11 3 10 7	1 22 14 29	11 2 4 8	11 0 38 17	11 2 21 45	11 3 5 32	5 42	28 42	5 16
5	12 54 12	11 21 14 58	2 20 5 33	3 0 44 47	11 2 53 41	1 22 24 11	11 1 43 30	11 0 45 24	11 2 18 34	11 3 5 0	6 5	27 41	5 2
6	12 58 9	11 22 14 2	3 3 19 5	3 1 5 57	11 2 42 50	1 22 33 59	11 1 25 12	11 0 52 29	11 2 15 24	11 3 5 17	6 28	25 7	4 33
7	13 2 5	11 23 13 4	3 16 11 12	3 1 27 27	11 2 37 33	1 22 43 54	11 1 9 16	11 0 59 33	11 2 12 13	11 3 6 19	6 51	21 20	3 51
8	13 6 2	11 24 12 4	3 28 45 7	3 1 49 15	11 2 37 44	1 22 53 54	11 0 55 45	11 1 6 35	11 2 9 2	11 3 7 48	7 13	16 40	2 59
9	13 9 59	11 25 11 1	4 11 4 21	3 2 11 22	11 2 43 16	1 23 4 2	11 0 44 40	11 1 13 35	11 2 5 51	11 3 9 21	7 35	11 25	1 59
10	13 13 55	11 26 9 56	4 23 12 15	3 2 33 46	11 2 53 59	1 23 14 15	11 0 36 3	11 1 20 33	11 2 2 41	11 3 10 30	7 58	5 49	0 55
11	13 17 52	11 27 8 49	5 5 11 52	3 2 56 28	11 3 9 43	1 23 24 34	11 0 29 53	11 1 27 30	11 1 59 30	11 3 10 50	8 20	0 4	-0 11
12	13 21 48	11 28 7 40	5 17 5 53	3 3 19 27	11 3 30 17	1 23 34 59	11 0 26 10	11 1 34 25	11 1 56 19	11 3 10 0	8 42	-5 38	-1 16
13	13 25 45	11 29 6 29	5 28 56 37	3 3 42 42	11 3 55 27	1 23 45 30	11 0 24 52	11 1 41 17	11 1 53 8	11 3 7 50	9 4	-11 7	-2 17
14	13 29 41	0 0 5 15	6 10 46 8	3 4 6 14	11 4 25 2	1 23 56 6	11 0 25 57	11 1 48 8	11 1 49 58	11 3 4 24	9 25	-16 12	-3 12
15	13 33 38	0 1 4 0	6 22 36 25	3 4 30 2	11 4 58 50	1 24 6 49	11 0 29 23	11 1 54 56	11 1 46 47	11 2 59 54	9 47	-20 40	-3 59
16	13 37 34	0 2 2 43	7 4 29 29	3 4 54 5	11 5 36 38	1 24 17 36	11 0 35 7	11 2 1 43	11 1 43 36	11 2 54 48	10 8	-24 20	-4 35
17	13 41 31	0 3 1 24	7 16 27 35	3 5 18 24	11 6 18 16	1 24 28 29	11 0 43 7	11 2 8 27	11 1 40 25	11 2 49 36	10 29	-26 59	-5 0
18	13 45 28	0 4 0 4	7 28 33 20	3 5 42 58	11 7 3 31	1 24 39 28	11 0 53 18	11 2 15 9	11 1 37 15	11 2 44 54	10 50	-28 25	-5 11
19	13 49 24	0 4 58 42	8 10 49 45	3 6 7 46	11 7 52 14	1 24 50 31	11 1 5 37	11 2 21 48	11 1 34 4	11 2 41 14	11 11	-28 29	-5 9
20	13 53 21	0 5 57 18	8 23 20 14	3 6 32 48	11 8 44 14	1 25 1 40	11 1 20 2	11 2 28 25	11 1 30 53	11 2 38 57	11 32	-27 7	-4 52
21	13 57 17	0 6 55 53	9 6 8 22	3 6 58 5	11 9 39 23	1 25 12 54	11 1 36 26	11 2 35 0	11 1 27 42	11 2 38 9	11 52	-24 19	-4 21
22	14 1 14	0 7 54 26	9 19 17 39	3 7 23 36	11 10 37 33	1 25 24 13	11 1 54 48	11 2 41 32	11 1 24 32	11 2 38 36	12 13	-20 12	-3 35
23	14 5 10	0 8 52 57	10 2 51 4	3 7 49 21	11 11 38 34	1 25 35 37	11 2 15 2	11 2 48 1	11 1 21 21	11 2 39 49	12 33	-14 56	-2 36
24	14 9 7	0 9 51 27	10 16 50 28	3 8 15 19	11 12 42 22	1 25 47 5	11 2 37 5	11 2 54 28	11 1 18 10	11 2 41 6	12 52	-8 44	-1 25
25	14 13 3	0 10 49 55	11 1 15 49	3 8 41 30	11 13 48 48	1 25 58 39	11 3 0 52	11 3 0 52	11 1 14 59	11 2 41 41	13 12	-1 55	-0 8
26	14 17 0	0 11 48 21	11 16 4 25	3 9 7 54	11 14 57 47	1 26 10 17	11 3 26 21	11 3 7 13	11 1 11 48	11 2 40 54	13 32	5 11	1 12
27	14 20 57	0 12 46 45	0 1 10 29	3 9 34 31	11 16 9 14	1 26 21 59	11 3 53 26	11 3 13 32	11 1 8 38	11 2 38 22	13 51	12 7	2 29
28	14 24 53	0 13 45 8	0 16 25 26	3 10 1 20	11 17 23 4	1 26 33 46	11 4 22 5	11 3 19 47	11 1 5 27	11 2 34 5	14 10	18 25	3 35
29	14 28 50	0 14 43 29	1 1 38 57	3 10 28 21	11 18 39 12	1 26 45 37	11 4 52 13	11 3 26 0	11 1 2 16	11 2 28 25	14 29	23 31	4 26
30	14 32 46	0 15 41 48	1 16 40 39	3 10 55 35	11 19 57 35	1 26 57 32	11 5 23 48	11 3 32 9	11 0 59 5	11 2 22 5	14 47	26 59	4 58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 मई, 2025 ई. को अयनांश 24° 12' 40"

ता.	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	14	36	43	0	16	40	6	2	1	21	51	3	11	23	0	11	21	18	10	1	27	9	32	11	5	56	45	11	3	38	15	11	0	55	55	11	2	15	57	15	5	28	31	5	9
2	14	40	39	0	17	38	21	2	15	36	37	3	11	50	37	11	22	40	53	1	27	21	35	11	6	31	2	11	3	44	18	11	0	52	44	11	2	10	48	15	23	28	4	5	1
3	14	44	36	0	18	36	34	2	29	22	29	3	12	18	24	11	24	5	42	1	27	33	43	11	7	6	35	11	3	50	18	11	0	49	33	11	2	7	14	15	41	25	54	4	35
4	14	48	32	0	19	34	45	3	12	39	56	3	12	46	23	11	25	32	35	1	27	45	54	11	7	43	22	11	3	56	14	11	0	46	22	11	2	5	29	15	59	22	21	3	55
5	14	52	29	0	20	32	55	3	25	31	40	3	13	14	32	11	27	1	31	1	27	58	9	11	8	21	20	11	4	2	7	11	0	43	11	11	2	5	21	16	16	17	49	3	5
6	14	56	26	0	21	31	2	4	8	1	46	3	13	42	52	11	28	32	27	1	28	10	27	11	9	0	26	11	4	7	57	11	0	40	1	11	2	6	18	16	33	12	39	2	6
7	15	0	22	0	22	29	7	4	20	14	54	3	14	11	22	0	0	5	23	1	28	22	49	11	9	40	37	11	4	13	43	11	0	36	50	11	2	7	30	16	50	7	6	1	4
8	15	4	19	0	23	27	11	5	2	15	49	3	14	40	2	0	1	40	19	1	28	35	14	11	10	21	51	11	4	19	26	11	0	33	39	11	2	8	6	17	6	1	23	-0	1
9	15	8	15	0	24	25	12	5	14	8	55	3	15	8	51	0	3	17	14	1	28	47	43	11	11	4	6	11	4	25	5	11	0	30	28	11	2	7	14	17	22	-4	18	-1	4
10	15	12	12	0	25	23	12	5	25	58	5	3	15	37	50	0	4	56	7	1	29	0	15	11	11	47	19	11	4	30	40	11	0	27	18	11	2	4	18	17	38	-9	49	-2	5
11	15	16	8	0	26	21	10	6	7	46	31	3	16	6	58	0	6	36	59	1	29	12	50	11	12	31	28	11	4	36	12	11	0	24	7	11	1	59	0	17	53	-14	58	-2	59
12	15	20	5	0	27	19	6	6	19	36	50	3	16	36	16	0	8	19	50	1	29	25	28	11	13	16	32	11	4	41	39	11	0	20	56	11	1	51	22	18	9	-19	35	-3	46
13	15	24	1	0	28	17	1	7	1	31	1	3	17	5	42	0	10	4	39	1	29	38	10	11	14	2	28	11	4	47	4	11	0	17	45	11	1	41	50	18	24	-23	27	-4	24
14	15	27	58	0	29	14	55	7	13	30	40	3	17	35	17	0	11	51	28	1	29	50	54	11	14	49	14	11	4	52	24	11	0	14	34	11	1	31	7	18	38	-26	21	-4	49
15	15	31	55	1	0	12	46	7	25	37	9	3	18	5	1	0	13	40	17	2	0	3	41	11	15	36	48	11	4	57	40	11	0	11	24	11	1	20	9	18	53	-28	5	-5	3
16	15	35	51	1	1	10	37	8	7	51	50	3	18	34	54	0	15	31	4	2	0	16	31	11	16	25	9	11	5	2	53	11	0	8	13	11	1	9	58	19	7	-28	27	-5	2
17	15	39	48	1	2	8	26	8	20	16	20	3	19	4	54	0	17	23	51	2	0	29	24	11	17	14	14	11	5	8	1	11	0	5	2	11	1	1	27	19	20	-27	25	-4	47
18	15	43	44	1	3	6	14	9	2	52	40	3	19	35	3	0	19	18	36	2	0	42	19	11	18	4	3	11	5	13	5	11	0	1	51	11	0	55	14	19	34	-24	58	-4	18
19	15	47	41	1	4	4	1	9	15	43	13	3	20	5	21	0	21	15	19	2	0	55	17	11	18	54	33	11	5	18	5	10	29	58	40	11	0	51	31	19	47	-21	14	-3	36
20	15	51	37	1	5	1	47	9	28	50	42	3	20	35	46	0	23	13	56	2	1	8	17	11	19	45	43	11	5	23	1	10	29	55	30	11	0	50	3	19	59	-16	23	-2	42
21	15	55	34	1	5	59	32	10	12	17	48	3	21	6	20	0	25	14	26	2	1	21	20	11	20	37	31	11	5	27	53	10	29	52	19	11	0	50	5	20	12	-10	38	-1	37
22	15	59	30	1	6	57	16	10	26	6	49	3	21	37	1	0	27	16	44	2	1	34	26	11	21	29	56	11	5	32	41	10	29	49	8	11	0	50	32	20	24	-4	13	-0	25
23	16	3	27	1	7	54	58	11	10	18	50	3	22	7	50	0	29	20	46	2	1	47	33	11	22	22	56	11	5	37	24	10	29	45	57	11	0	50	12	20	35	2	34	0	50
24	16	7	24	1	8	52	40	11	24	53	2	3	22	38	47	1	1	26	24	2	2	0	43	11	23	16	30	11	5	42	2	10	29	42	46	11	0	48	5	20	46	9	23	2	4
25	16	11	20	1	9	50	21	0	9	45	50	3	23	9	52	1	3	33	33	2	2	13	55	11	24	10	37	11	5	46	36	10	29	39	35	11	0	43	33	20	57	15	50	3	11
26	16	15	17	1	10	48	0	0	24	50	40	3	23	41	4	1	5	42	2	2	2	27	10	11	25	5	15	11	5	51	6	10	29	36	25	11	0	36	30	21	8	21	25	4	6
27	16	19	13	1	11	45	38	1	9	58	31	3	24	12	24	1	7	51	41	2	2	40	26	11	26	0	23	11	5	55	31	10	29	33	14	11	0	27	24	21	18	25	37	4	43
28	16	23	10	1	12	43	16	1	24	59	11	3	24	43	51	1	10	2	18	2	2	53	44	11	26	56	0	11	5	59	51	10	29	30	3	11	0	17	13	21	28	27	59	5	1
29	16	27	6	1	13	40	51	2	9	43	7	3	25	15	25	1	12	13	38	2	3	7	4	11	27	52	4	11	6	4	7	10	29	26	52	11	0	7	6	21	37	28	20	4	58
30	16	31	3	1	14	38	26	2	24	2	59	3	25	47	6	1	14	25	28	2	3	20	25	11	28	48	36	11	6	8	17	10	29	23	41	10	29	58	10	21	47	26	45	4	36
31	16	34	59	1	15	36	0	3	7	54	36	3	26	18	54	1	16	37	30	2	3	33	49	11	29	45	33	11	6	12	23	10	29	20	31	10	29	51	16	21	55	23	33	3	58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 जून, 2025 ई. को अयनांश 24° 12′45″

ता.	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	16	38	56	1	16	33	32	3	21	17	5	3	26	50	49	1	18	49	30	2	3	47	13	0	0	42	56	11	6	16	24	10	29	17	20	10	29	46	47	22	4	19	12	3	9
2	16	42	53	1	17	31	3	4	4	12	18	3	27	22	50	1	21	1	10	2	4	0	40	0	1	40	43	11	6	20	20	10	29	14	9	10	29	44	32	22	12	14	4	2	11
3	16	46	49	1	18	28	32	4	16	44	2	3	27	54	58	1	23	12	14	2	4	14	8	0	2	38	53	11	6	24	12	10	29	10	58	10	29	43	54	22	19	8	31	1	8
4	10	50	46	1	19	26	0	4	28	57	10	3	28	27	12	1	25	22	25	2	4	27	37	0	3	37	25	11	6	27	58	10	29	7	47	10	29	43	55	22	26	2	47	0	4
5	16	54	42	1	20	23	27	5	10	57	0	3	28	59	33	1	27	31	31	2	4	41	7	0	4	36	20	11	6	31	39	10	29	4	36	10	29	43	30	22	33	-2	57	-0	59
6	16	58	39	1	21	20	53	5	22	48	46	3	29	32	0	1	29	39	15	2	4	54	38	0	5	35	36	11	6	35	15	10	29	1	26	10	29	41	37	22	39	-8	31	-1	59
7	17	2	35	1	22	18	18	6	4	37	18	4	0	4	33	2	1	45	27	2	5	8	11	0	6	35	12	11	6	38	46	10	28	58	15	10	29	37	28	22	45	-13	46	-2	53
8	17	6	32	1	23	15	41	6	16	26	43	4	0	37	11	2	3	49	55	2	5	21	45	0	7	35	9	11	6	42	12	10	28	55	4	10	29	30	38	22	51	-18	30	-3	40
9	17	10	28	1	24	13	4	6	28	20	22	4	1	9	56	2	5	52	31	2	5	35	19	0	8	35	25	11	6	45	32	10	28	51	53	10	29	21	8	22	56	-22	33	-4	18
10	17	14	25	1	25	10	26	7	10	20	47	4	1	42	46	2	7	53	6	2	5	48	55	0	9	36	0	11	6	48	47	10	28	48	42	10	29	9	22	23	1	-25	42	-4	44
11	17	18	22	1	26	7	46	7	22	29	41	4	2	15	42	2	9	51	33	2	6	2	32	0	10	36	54	11	6	51	57	10	28	45	31	10	28	56	11	23	5	-27	43	-4	58
12	17	22	18	1	27	5	6	8	4	48	9	4	2	48	44	2	11	47	49	2	6	16	9	0	11	38	5	11	6	55	2	10	28	42	21	10	28	42	38	23	9	-28	24	-4	58
13	17	26	15	1	28	2	26	8	17	16	45	4	3	21	51	2	13	41	49	2	6	29	47	0	12	39	34	11	6	58	1	10	28	39	10	10	28	29	54	23	13	-27	39	-4	44
14	17	30	11	1	28	59	44	8	29	55	51	4	3	55	4	2	15	33	29	2	6	43	26	0	13	41	20	11	7	0	55	10	28	35	59	10	28	19	3	23	16	-25	29	-4	16
15	17	34	8	1	29	57	3	9	12	45	57	4	4	28	22	2	17	22	48	2	6	57	5	0	14	43	23	11	7	3	44	10	28	32	48	10	29	10	52	23	19	-21	59	-3	35
16	17	38	4	2	0	54	20	9	25	47	50	4	5	1	46	2	19	9	43	2	7	10	45	0	15	45	41	11	7	6	27	10	28	29	37	10	29	5	38	23	21	-17	22	-2	41
17	17	42	1	2	1	51	38	10	9	2	44	4	5	35	15	2	20	54	14	2	7	24	25	0	16	48	15	11	7	9	4	10	28	26	27	10	28	3	5	23	23	-11	51	-1	39
18	17	45	57	2	2	48	55	10	22	32	10	4	6	8	50	2	22	36	19	2	7	38	6	0	17	51	4	11	7	11	36	10	28	23	16	10	28	2	26	23	24	-5	41	-0	29
19	17	49	54	2	3	46	12	11	6	17	38	4	6	42	30	2	24	15	57	2	7	51	48	0	18	54	7	11	7	14	2	10	28	20	5	10	28	2	31	23	25	0	52	0	44
20	17	53	51	2	4	43	29	11	20	20	8	4	7	16	15	2	25	53	8	2	8	5	29	0	19	57	25	11	7	16	23	10	28	16	54	10	28	2	2	23	26	7	30	1	55
21	17	57	47	2	5	40	45	0	4	39	29	4	7	50	6	2	27	27	50	2	8	19	11	0	21	0	56	11	7	18	38	10	28	13	43	10	27	59	49	23	26	13	53	3	1
22	18	1	44	2	6	38	2	0	19	13	37	4	8	24	2	2	29	0	3	2	8	32	53	0	22	4	40	11	7	20	47	10	28	10	32	10	27	55	10	23	26	19	37	3	56
23	18	5	40	2	7	35	18	1	3	58	11	4	8	58	4	3	0	29	46	2	8	46	36	2	23	8	37	11	7	22	51	10	28	7	22	10	27	47	55	23	26	24	14	4	36
24	18	9	37	2	8	32	34	1	18	46	36	4	9	32	11	3	1	56	57	2	9	0	18	0	24	12	47	11	7	24	48	10	28	4	11	10	27	38	29	23	25	27	16	4	57
25	18	13	33	2	9	29	49	2	3	30	49	4	10	6	23	3	3	21	35	2	9	14	0	0	25	17	9	11	7	26	40	10	28	1	0	10	27	27	50	23	23	28	24	4	59
26	18	17	30	2	10	27	4	2	18	2	36	4	10	40	40	3	4	43	37	2	9	27	42	0	26	21	42	11	7	28	26	10	27	57	49	10	27	17	7	23	21	27	33	4	42
27	18	21	26	2	11	24	20	3	2	14	56	4	11	15	2	3	6	3	2	2	9	41	24	0	27	26	26	11	7	30	6	10	27	54	38	10	27	7	33	23	19	24	54	4	7
28	18	25	23	2	12	21	34	3	16	3	4	4	11	49	29	3	7	19	47	2	9	55	6	0	28	31	21	11	7	31	40	10	27	51	27	10	26	59	59	23	17	20	51	3	18
29	18	29	20	2	13	18	49	3	29	25	2	4	12	24	1	3	8	33	48	2	10	8	47	0	29	36	27	11	7	33	8	10	27	48	17	10	26	54	53	23	13	15	51	2	20
30	18	33	16	2	14	16	2	4	12	21	29	4	12	58	38	3	9	45	4	2	10	22	28	1	0	41	44	11	7	34	30	10	27	45	6	10	26	52	10	23	10	10	17	1	16

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 जुलाई, 2025 ई. को अयनांश 24° 12' 51"

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	18	37	13	2	15	13	16	4	24	55	8	4	13	33	20	3	10	53	28	2	10	36	8	1	1	47	10	11	7	35	46	10	27	41	55	10	26	51	18	23	6	4	27	0	10
2	18	41	9	2	16	10	29	5	7	10	11	4	14	8	6	3	11	58	58	2	10	49	48	1	2	52	46	11	7	36	56	10	27	38	44	10	26	51	23	23	2	-1	23	-0	55
3	18	45	6	2	17	7	42	5	19	11	37	4	14	42	57	3	13	1	28	2	11	3	27	1	3	58	32	11	7	38	1	10	27	35	33	10	26	51	25	22	57	-7	4	-1	56
4	18	49	2	2	18	4	54	6	1	4	45	4	15	17	53	3	14	0	53	2	11	17	5	1	5	4	28	11	7	38	59	10	27	32	22	10	26	50	26	22	52	-12	27	-2	51
5	18	52	59	2	19	2	6	6	12	54	51	4	15	52	53	3	14	57	6	2	11	30	43	1	6	10	33	11	7	39	51	10	27	29	12	10	26	47	38	22	47	-17	21	-3	39
6	18	56	55	2	19	59	18	6	24	46	42	4	16	27	57	3	15	50	1	2	11	44	19	1	7	16	47	11	7	40	37	10	27	26	1	10	26	42	35	22	41	-21	36	-4	18
7	19	0	52	2	20	56	30	7	6	44	26	4	17	3	6	3	16	39	31	2	11	57	55	1	8	23	10	11	7	41	17	10	27	22	50	10	26	35	13	22	35	-25	0	-4	45
8	19	4	49	2	21	53	41	7	18	51	23	4	17	38	20	3	17	25	29	2	12	11	30	1	9	29	42	11	7	41	51	10	27	19	39	10	26	25	51	22	28	-27	20	-5	0
9	19	8	45	2	22	50	53	8	1	9	52	4	18	13	38	3	18	7	47	2	12	25	4	1	10	36	22	11	7	42	19	10	27	16	28	10	26	15	9	22	21	-28	23	-5	2
10	19	12	42	2	23	48	4	8	13	41	18	4	18	49	0	3	18	46	17	2	12	38	37	1	11	43	12	11	7	42	42	10	27	13	17	10	26	4	4	22	14	-28	1	-4	49
11	19	16	38	2	24	45	16	8	26	26	9	4	19	24	26	3	19	20	51	2	12	52	8	1	12	50	10	11	7	42	58	10	27	10	7	10	25	53	36	22	6	-26	10	-4	22
12	19	20	35	2	25	42	28	9	9	24	4	4	19	59	56	3	19	51	21	2	13	5	39	1	13	57	16	11	7	43	7	10	27	6	56	10	25	44	42	21	58	-22	55	-3	40
13	19	24	31	2	26	39	40	9	22	34	17	4	20	35	31	3	20	17	38	2	13	19	8	1	15	4	30	11	7	43	11	10	27	3	45	10	25	38	4	21	49	-18	27	-2	47
14	19	28	28	2	27	36	52	10	5	55	54	4	21	11	11	3	20	39	35	2	13	32	35	1	16	11	53	11	7	43	9	10	27	0	34	10	25	34	1	21	40	-13	2	-1	43
15	19	32	24	2	28	34	5	10	19	28	11	4	21	46	54	3	20	57	3	2	13	46	2	1	17	19	24	11	7	43	1	10	26	57	23	10	25	32	20	21	31	-6	55	-0	32
16	19	36	21	2	29	31	19	11	3	10	42	4	22	22	42	3	21	9	56	2	13	59	27	1	18	27	3	11	7	42	47	10	26	54	12	10	25	32	23	21	21	-0	25	0	41
17	19	40	18	3	0	28	33	11	17	3	12	4	22	58	34	3	21	18	6	2	14	12	50	1	19	34	49	11	7	42	26	10	26	51	2	10	25	33	14	21	11	6	11	1	53
18	19	44	14	3	1	25	48	0	1	5	24	4	23	34	31	3	21	21	29	2	14	26	12	1	20	42	43	11	7	42	0	10	26	47	51	10	25	33	48	21	1	12	34	2	59
19	19	48	11	3	2	23	3	0	15	16	35	4	24	10	31	3	21	20	1	2	14	39	33	1	21	50	44	11	7	41	28	10	26	44	40	10	25	33	6	20	50	18	21	3	54
20	19	52	7	3	3	20	19	0	29	35	0	4	24	46	36	3	21	13	40	2	14	52	51	1	22	58	52	11	7	40	49	10	26	41	29	10	25	30	30	20	39	23	11	4	36
21	19	56	4	3	4	17	36	1	13	58	6	4	25	22	46	3	21	2	28	2	15	6	8	1	24	7	8	11	7	40	5	10	26	38	18	10	25	25	51	20	28	26	37	5	1
22	20	0	0	3	5	14	54	1	28	21	28	4	25	59	0	3	20	46	27	2	15	19	23	1	25	15	30	11	7	39	14	10	26	35	8	10	25	19	28	20	16	28	20	5	6
23	20	3	57	3	6	12	12	2	12	40	2	4	26	35	18	3	20	25	46	2	15	32	36	1	26	24	0	11	7	38	18	10	26	31	57	10	25	12	4	20	4	28	8	4	53
24	20	7	53	3	7	9	32	2	26	48	19	4	27	11	40	3	20	0	36	2	15	45	47	1	27	32	35	11	7	37	15	10	26	28	46	10	25	4	34	19	51	26	6	4	21
25	20	11	50	3	8	6	51	3	10	41	15	4	27	48	7	3	19	31	13	2	15	58	55	1	28	41	18	11	7	36	7	10	26	25	35	10	24	57	52	19	38	22	31	3	35
26	20	15	47	3	9	4	12	3	24	15	4	4	28	24	38	3	18	57	59	2	16	12	2	1	29	50	6	11	7	34	53	10	26	22	24	10	24	52	42	19	25	17	47	2	37
27	20	19	43	3	10	1	33	4	7	27	45	4	29	1	13	3	18	21	18	2	16	25	6	2	0	59	1	11	7	33	32	10	26	19	14	10	24	49	26	19	12	12	19	1	32
28	20	23	40	3	10	58	55	4	20	19	8	4	29	37	52	3	17	41	42	2	16	38	8	2	2	8	2	11	7	32	6	10	26	16	3	10	24	48	5	18	58	6	28	0	24
29	20	27	36	3	11	56	17	5	2	50	51	5	0	14	35	3	16	59	47	2	16	51	7	2	3	17	8	11	7	30	34	10	26	12	52	10	24	48	17	18	44	0	30	-0	44
30	20	31	33	3	12	53	39	5	15	5	55	5	0	51	23	3	16	16	13	2	17	4	4	2	4	26	21	11	7	28	57	10	26	9	41	10	24	49	26	18	30	-5	21	-1	48
31	20	35	29	3	13	51	3	5	27	8	20	5	1	28	14	3	15	31	43	2	17	16	58	2	5	35	39	11	7	27	13	10	26	6	30	10	24	50	49	18	15	-10	54	-2	46

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 अगस्त, 2025 ई. को अयनांश 24° 12′ 56″

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 39 26	3 14 48 27	6 9 2 48	5 2 5 9	3 14 47 4	2 17 29 50	2 6 45 3	11 7 25 24	10 26 3 20	10 24 51 44	18 0	-16 0	-3 37
2	20 43 22	3 15 45 51	6 20 54 18	5 2 42 8	3 14 3 6	2 17 42 39	2 7 54 33	11 7 23 30	10 26 0 9	10 24 51 37	17 45	-20 29	-4 18
3	20 47 19	3 16 43 16	7 2 47 49	5 3 19 11	3 13 20 37	2 17 55 25	2 9 4 9	11 7 21 30	10 25 56 58	10 24 50 6	17 29	-24 10	-4 48
4	20 51 16	3 17 40 41	7 14 48 0	5 3 56 18	3 12 40 26	2 18 8 8	2 10 13 50	11 7 19 24	10 25 53 47	10 24 47 5	17 13	-26 50	-5 6
5	20 55 12	3 18 38 8	7 26 58 58	5 4 33 29	3 12 3 21	2 18 20 48	2 11 23 36	11 7 17 13	10 25 50 36	10 24 42 45	16 57	-28 19	-5 11
6	20 59 9	3 19 35 35	8 9 24 4	5 5 10 44	3 11 30 6	2 18 33 25	2 12 33 28	11 7 14 57	10 25 47 26	10 24 37 28	16 41	-28 24	-5 1
7	21 3 5	3 20 33 2	8 22 5 34	5 5 48 2	3 11 1 20	2 18 45 58	2 13 43 26	11 7 12 35	10 25 44 15	10 24 31 49	16 24	-27 0	-4 36
8	21 7 2	3 21 30 31	9 5 4 34	5 6 25 24	3 10 37 41	2 18 58 29	2 14 53 29	11 7 10 8	10 25 41 4	10 24 26 26	16 7	-24 9	-3 57
9	21 10 58	3 22 28 1	9 18 20 54	5 7 2 50	3 10 19 41	2 19 10 57	2 16 3 38	11 7 7 36	10 25 37 53	10 24 21 55	15 50	-19 58	-3 4
10	21 14 55	3 23 25 31	10 1 53 15	5 7 40 20	3 10 7 46	2 19 23 21	2 17 13 53	11 7 4 59	10 25 34 43	10 24 18 44	15 33	-14 41	-1 59
11	21 18 51	3 24 23 3	10 15 39 23	5 8 17 54	3 10 2 18	2 19 35 41	2 18 24 13	11 7 2 17	10 25 31 32	10 24 17 3	15 15	-8 36	-0 47
12	21 22 48	3 25 20 36	10 29 36 34	5 8 55 31	3 10 3 35	2 19 47 59	2 19 34 38	11 6 59 29	10 25 28 21	10 24 16 47	14 57	-2 0	0 29
13	21 26 45	3 26 18 11	11 13 41 50	5 9 33 13	3 10 11 50	2 20 0 12	2 20 45 9	11 6 56 37	10 25 25 10	10 24 17 35	14 39	4 44	1 44
14	21 30 41	3 27 15 47	11 27 52 21	5 10 10 58	3 10 27 10	2 20 12 22	2 21 55 45	11 6 53 40	10 25 21 59	10 24 18 54	14 21	11 17	2 54
15	21 34 38	3 28 13 24	0 12 5 30	5 10 48 47	3 10 49 42	2 20 24 29	2 23 6 26	11 6 50 38	10 28 18 49	10 24 20 8	14 2	17 17	3 53
16	21 38 34	3 29 11 3	0 26 18 57	5 11 26 41	3 11 19 26	2 20 36 31	2 24 17 13	11 6 47 32	10 28 15 38	10 24 20 44	13 43	22 20	4 37
17	21 42 31	4 0 8 43	1 10 30 29	5 12 4 38	3 11 56 19	2 20 48 30	2 25 28 5	11 6 44 20	10 28 12 27	10 24 20 23	13 24	26 5	5 5
18	21 46 27	4 1 6 25	1 24 37 53	5 12 42 39	3 12 40 16	2 21 0 25	2 26 39 2	11 6 41 5	10 25 9 16	10 24 18 58	13 5	28 11	5 14
19	21 50 24	4 2 4 9	2 8 38 52	5 13 20 44	3 13 31 9	2 21 12 16	2 27 50 4	11 6 37 45	10 25 6 6	10 24 16 40	12 45	28 29	5 4
20	21 54 20	4 3 1 54	2 22 30 59	5 13 58 53	3 14 28 48	2 21 24 2	2 29 1 11	11 6 34 20	10 25 2 55	10 24 13 52	12 26	26 58	4 37
21	21 58 17	4 3 59 40	3 6 11 49	5 14 37 7	3 15 32 57	2 21 35 44	3 0 12 23	11 6 30 51	10 24 59 44	10 24 10 59	12 6	23 52	3 54
22	22 2 14	4 4 57 28	3 19 39 8	5 15 15 24	3 16 43 23	2 21 47 22	3 1 23 40	11 6 27 18	10 24 56 33	10 24 8 30	11 46	19 31	2 59
23	22 6 10	4 5 55 18	4 2 51 15	5 15 53 45	3 17 59 47	2 21 58 56	3 2 35 1	11 6 23 41	10 24 53 22	10 24 6 43	11 25	14 17	1 55
24	22 10 7	4 6 53 9	4 15 47 12	5 16 32 10	3 19 21 48	2 22 10 25	3 3 46 27	11 6 20 0	10 24 50 12	10 24 5 48	11 5	8 31	0 46
25	22 14 3	4 7 51 2	4 28 26 58	5 17 10 39	3 20 49 3	2 22 21 49	3 4 57 58	11 6 16 15	10 24 47 1	10 24 5 46	10 44	2 33	-0 24
26	22 18 0	4 8 48 56	5 10 51 32	5 17 49 12	3 22 21 9	2 22 33 8	3 6 9 33	11 6 12 27	10 24 43 50	10 24 6 25	10 24	-3 25	-1 31
27	22 21 56	4 9 46 51	5 23 2 52	5 18 27 48	3 23 57 39	2 22 44 23	3 7 21 12	11 6 8 35	10 24 40 39	10 24 7 30	10 3	-9 8	-2 33
28	22 25 53	4 10 44 48	6 5 3 50	5 19 6 29	3 25 38 5	2 22 55 33	3 8 32 56	11 6 4 39	10 24 37 29	10 24 8 44	9 41	-14 27	-3 28
29	22 29 49	4 11 42 46	6 16 58 0	5 19 45 13	3 27 22 1	2 23 6 37	3 9 44 43	11 6 0 40	10 24 34 18	10 24 9 49	9 20	-19 11	-4 12
30	22 33 46	4 12 40 46	6 28 49 30	5 20 24 1	3 29 8 57	2 23 17 37	3 10 56 36	11 5 56 38	10 24 31 7	10 24 10 35	8 59	-23 9	-4 46
31	22 37 43	4 13 38 46	7 10 42 50	5 21 2 53	4 0 58 27	2 23 28 31	3 12 8 32	11 5 52 33	10 24 27 56	10 24 10 53	8 37	-26 10	-5 8

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 सितंबर, 2025 ई. को अयनांश 24° 13' 1"

सितम्बर	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	41	39	4	14	36	48	7	22	42	40	5	21	41	49	4	2	50	2	2	23	39	20	3	13	20	32	11	5	48	25	10	24	24	46	10	24	10	44	8	16	-28	3	-5	16
2	22	45	36	4	15	34	52	8	4	53	36	5	22	20	48	4	4	43	17	2	23	50	4	3	14	32	37	11	5	44	14	10	24	21	35	10	24	10	12	7	54	-28	37	-5	11
3	22	49	32	4	16	32	56	8	17	19	51	5	22	59	51	4	6	37	49	2	24	0	42	3	15	44	46	11	5	40	0	10	24	18	24	10	24	9	25	7	32	-27	46	-4	51
4	22	53	29	4	17	31	2	9	0	4	54	5	23	38	57	4	8	33	16	2	24	11	14	3	16	56	59	11	5	35	44	10	24	15	13	10	24	8	35	7	10	-25	28	-4	17
5	22	57	25	4	18	29	10	9	13	11	10	5	24	18	7	4	10	29	18	2	24	21	41	3	18	9	16	11	5	31	25	10	24	12	3	10	24	7	52	6	48	-21	46	-3	28
6	23	1	22	4	19	27	19	9	26	39	37	5	24	57	21	4	12	25	36	2	24	32	2	3	19	21	37	11	5	27	4	10	24	8	52	10	24	7	21	6	25	-16	51	-2	26
7	23	5	18	4	20	25	30	10	10	29	30	5	25	36	39	4	14	21	58	2	24	42	17	3	20	34	2	11	5	22	40	10	24	5	41	10	24	7	5	6	3	-10	57	-1	15
8	23	9	15	4	21	23	42	10	24	38	19	5	26	16	0	4	16	18	8	2	24	52	27	3	21	46	32	11	5	18	15	10	24	2	30	10	24	7	2	5	40	-4	22	0	3
9	23	13	12	4	22	21	57	11	9	1	53	5	26	55	25	4	18	13	56	2	25	2	30	3	22	59	5	11	5	13	48	10	23	59	20	10	24	7	7	5	18	2	33	1	22
10	23	17	8	4	23	20	13	11	23	34	52	5	27	34	54	4	20	9	13	2	25	12	27	3	24	11	43	11	5	9	19	10	23	56	9	10	24	7	11	4	55	9	23	2	36
11	23	21	5	4	24	18	31	0	8	11	17	5	28	14	27	4	22	3	50	2	25	22	19	3	25	24	25	11	5	4	48	10	23	52	58	10	24	7	11	4	32	15	46	3	41
12	23	25	1	4	25	16	51	0	22	45	21	5	28	54	3	4	23	57	43	2	25	32	3	3	26	37	11	11	5	0	16	10	23	49	47	10	24	7	4	4	9	21	14	4	31
13	23	28	58	4	26	15	13	1	7	12	4	5	29	33	43	4	25	50	46	2	25	41	42	3	27	50	1	11	4	55	42	10	23	46	37	10	24	6	52	3	47	25	23	5	3
14	23	32	54	4	27	13	37	1	21	27	40	6	0	13	28	4	27	42	55	2	25	51	14	3	29	2	55	11	4	51	7	10	23	43	26	10	24	6	41	3	24	27	55	5	17
15	23	36	51	4	28	12	4	2	5	29	42	6	0	53	16	4	29	34	7	2	26	0	39	4	0	15	52	11	4	46	31	10	23	40	15	10	24	6	39	3	1	28	37	5	11
16	23	40	47	4	29	10	32	2	19	16	54	6	1	33	8	5	1	24	21	2	26	9	57	4	1	28	54	11	4	41	54	10	23	37	4	10	24	6	52	2	37	27	31	4	47
17	23	44	44	5	0	9	3	3	2	48	54	6	2	13	3	5	3	13	34	2	26	19	9	4	2	42	0	11	4	37	16	10	23	33	54	10	24	7	20	2	14	24	48	4	8
18	23	48	41	5	1	7	36	3	16	5	58	6	2	53	3	5	5	1	46	2	26	28	13	4	3	55	9	11	4	32	37	10	23	30	43	10	24	8	1	1	51	20	47	3	16
19	23	52	37	5	2	6	11	3	29	8	41	6	3	33	7	5	6	48	56	2	26	37	11	4	5	8	22	11	4	27	58	10	23	27	32	10	24	8	45	1	28	15	51	2	14
20	23	56	34	5	3	4	48	4	11	57	47	6	4	13	14	5	8	35	5	2	26	46	1	4	6	21	38	11	4	23	19	10	23	24	22	10	24	9	21	1	4	10	17	1	7
21	0	0	30	5	4	3	27	4	24	34	9	6	4	53	26	5	10	20	13	2	26	54	44	4	7	34	58	11	4	18	39	10	23	21	11	10	24	9	35	0	41	4	24	-0	2
22	0	4	27	5	5	2	8	5	6	58	42	6	5	33	41	5	12	4	20	2	27	3	20	4	8	48	21	11	4	13	59	10	23	18	0	10	24	9	18	0	18	-1	33	-1	10
23	0	8	23	5	6	0	51	5	19	12	35	6	6	14	1	5	13	47	27	2	27	11	48	4	10	1	48	11	4	9	20	10	23	14	49	10	24	8	23	-0	6	-7	22	-2	14
24	0	12	20	5	6	59	36	6	1	17	16	6	6	54	24	5	15	29	35	2	27	20	8	4	11	15	18	11	4	4	40	10	23	11	39	10	24	6	51	-0	29	-12	50	-3	11
25	0	16	16	5	7	58	23	6	13	14	38	6	7	34	51	5	17	10	44	2	27	28	20	4	12	28	51	11	4	0	2	10	23	8	28	10	24	4	50	-0	52	-17	46	-3	59
26	0	20	13	5	8	57	12	6	25	7	8	6	8	15	21	5	18	50	56	2	27	36	25	4	13	42	27	11	3	55	23	10	23	5	17	10	24	2	34	-1	16	-21	59	-4	36
27	0	24	10	5	9	56	2	7	6	57	45	6	8	55	56	5	20	30	12	2	27	44	21	4	14	56	6	11	3	50	46	10	23	2	6	10	24	0	19	-1	39	-25	19	-5	2
28	0	28	6	5	10	54	55	7	18	50	1	6	9	36	34	5	22	8	33	2	27	52	10	4	16	9	48	11	3	46	9	10	22	58	56	10	23	58	24	-2	2	-27	33	-5	14
29	0	32	3	5	11	53	49	8	0	47	56	6	10	17	15	5	23	45	59	2	27	59	50	4	17	23	33	11	3	41	33	10	22	55	45	10	23	57	5	-2	26	-28	34	-5	1[illegible]
30	0	35	59	5	12	52	44	8	12	55	54	6	10	58	1	5	25	22	32	2	28	7	21	4	18	37	21	11	3	36	59	10	22	52	34	10	23	56	35	-2	49	-28	13	-4	5[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 अक्तूबर, 2025 ई. को अयनांश 24° 13′ 04″

अक्तूबर	साम्पातिक काल 0.0h GMT घं.	मि.	से.	सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	चन्द्र रा.	अं.	क.	वि.	मंगल रा.	अं.	क.	वि.	बुध रा.	अं.	क.	वि.	गुरु रा.	अं.	क.	वि.	शुक्र रा.	अं.	क.	वि.	शनि रा.	अं.	क.	वि.	मध्यम राहु रा.	अं.	क.	वि.	स्पष्ट राहु रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य क्रां. अं.	क.	चन्द्र क्रां. अं.	क.	चन्द्रशर अं.	क.
1	0	39	56	5	13	51	42	8	25	18	30	6	11	38	50	5	26	58	12	2	28	14	45	4	19	51	11	11	3	32	26	10	22	49	23	10	23	56	55	-3	12	-26	28	-4	29
2	0	43	52	5	14	50	41	9	8	0	8	6	12	19	43	5	28	33	0	2	28	22	0	4	21	5	5	11	3	27	54	10	22	46	13	10	23	57	59	-3	36	-23	21	-3	47
3	0	47	49	5	15	49	42	9	21	4	35	6	13	0	39	6	0	6	58	2	28	29	6	4	22	19	1	11	3	23	24	10	22	43	2	10	23	59	26	-3	59	-18	59	-2	52
4	0	51	45	5	16	48	45	10	4	34	31	6	13	41	39	6	1	40	5	2	28	36	4	4	23	33	0	11	3	18	56	10	22	39	51	10	24	0	52	-4	22	-13	32	-1	45
5	0	55	42	5	17	47	49	10	18	30	53	6	14	22	43	6	3	12	23	2	28	42	52	4	24	47	1	11	3	14	29	10	22	36	40	10	24	1	47	-4	45	-7	15	-0	30
6	0	59	39	5	18	46	56	11	2	52	18	6	15	3	50	6	4	43	52	2	28	49	32	4	26	1	6	11	3	10	5	10	22	33	30	10	24	1	44	-5	8	-0	25	0	48
7	1	3	35	5	19	46	4	11	17	34	44	6	15	45	1	6	6	14	32	2	28	56	3	4	27	15	13	11	3	5	43	10	22	30	19	10	24	0	28	-5	31	6	36	2	6
8	1	7	32	5	20	45	15	0	2	31	33	6	16	26	16	6	7	44	23	2	29	2	25	4	28	29	23	11	3	1	23	10	22	27	8	10	23	57	56	-5	54	13	21	3	16
9	1	11	28	5	21	44	27	0	17	34	14	6	17	7	34	6	9	13	26	2	29	8	37	4	29	43	35	11	2	57	6	10	22	23	57	10	23	54	25	-6	17	19	22	4	12
10	1	15	25	5	22	43	42	1	2	33	39	6	17	48	57	6	10	41	40	2	29	14	41	5	0	57	51	11	2	52	51	10	22	20	47	10	23	50	26	-6	39	24	9	4	51
11	1	19	21	5	23	42	59	1	17	21	25	6	18	30	23	6	12	9	6	2	29	20	34	5	2	12	8	11	2	48	39	10	22	17	36	10	23	46	36	-7	2	27	18	5	11
12	1	23	18	5	24	42	18	2	1	51	8	6	19	11	52	6	13	35	41	2	29	26	18	5	3	26	29	11	2	44	30	10	22	14	25	10	23	43	34	-7	25	28	32	5	9
13	1	27	14	5	25	41	40	2	15	59	2	6	19	53	26	6	15	1	26	2	29	31	53	5	4	40	52	11	2	40	24	10	22	11	14	10	23	41	47	-7	47	27	51	4	49
14	1	31	11	5	26	41	3	2	29	43	52	6	20	35	3	6	16	26	20	2	29	37	18	5	5	55	18	11	2	36	20	10	22	8	4	10	23	41	24	-8	10	25	28	4	13
15	1	35	8	5	27	40	30	3	13	6	27	6	21	16	45	6	17	50	21	2	29	42	33	5	7	9	46	11	2	32	20	10	22	4	53	10	23	42	15	-8	32	21	43	3	24
16	1	39	4	5	28	39	58	3	26	8	54	6	21	58	30	6	19	13	26	2	29	47	37	5	8	24	16	11	2	28	24	10	22	1	42	10	23	43	52	-8	54	16	59	2	25
17	1	43	1	5	29	39	29	4	8	54	3	6	22	40	19	6	20	35	35	2	29	52	32	5	9	38	49	11	2	24	31	10	21	58	31	10	23	45	31	-9	16	11	36	1	20
18	1	46	57	6	0	39	2	4	21	24	52	6	23	22	12	6	21	56	43	2	29	57	16	5	10	53	24	11	2	20	42	10	21	55	21	10	23	46	26	-9	38	5	52	0	13
19	1	50	54	6	1	38	37	5	3	44	7	6	24	4	8	6	23	16	48	3	0	1	50	5	12	8	1	11	2	16	56	10	21	52	10	10	23	45	56	-10	0	-0	1	-0	54
20	1	54	50	6	2	38	14	5	15	54	12	6	24	46	9	6	24	35	45	3	0	6	14	5	13	22	40	11	2	13	14	10	21	48	59	10	23	43	32	-10	21	-5	48	-1	57
21	1	58	47	3	3	37	54	5	27	57	9	6	25	28	13	6	25	53	31	3	0	10	27	5	14	37	22	11	2	9	36	10	21	45	48	10	23	39	4	-10	43	-11	20	-2	55
22	2	2	43	6	4	37	36	6	9	54	37	6	26	10	21	6	27	9	59	3	0	14	29	5	15	52	5	11	2	6	3	10	21	42	38	10	23	32	41	-11	4	-16	24	-3	44
23	2	6	40	6	5	37	19	6	21	48	9	6	26	52	33	6	28	25	4	3	0	18	21	5	17	6	50	11	2	2	33	10	21	39	27	10	23	24	50	-11	25	-20	49	-4	23
24	2	10	37	6	6	37	5	7	3	39	23	6	27	34	48	6	29	38	39	3	0	22	1	5	18	21	37	11	1	59	9	10	21	36	16	10	23	16	13	-11	46	-24	24	-4	50
25	2	14	33	6	7	36	52	7	15	30	11	6	28	17	8	7	0	50	35	3	0	25	31	5	19	36	25	11	1	55	48	10	21	33	5	10	23	7	37	-12	7	-26	56	-5	5
26	2	18	30	6	8	36	41	7	27	22	56	6	28	59	30	7	2	0	44	3	0	28	50	5	20	51	15	11	1	52	32	10	21	29	54	10	22	59	53	-12	27	-28	16	-5	7
27	2	22	26	6	9	36	32	8	9	20	31	6	29	41	57	7	3	8	55	3	0	31	57	5	22	6	7	11	1	49	21	10	21	26	44	10	22	53	42	-12	48	-28	19	-4	55
28	2	26	23	6	10	36	24	8	21	26	30	7	0	24	27	7	4	14	55	3	0	34	54	5	23	21	0	11	1	46	15	10	21	23	33	10	22	49	32	-13	8	-27	0	-4	30
29	2	30	19	6	11	36	19	9	3	44	59	7	1	7	0	7	5	18	32	3	0	37	39	5	24	35	55	11	1	43	13	10	21	20	22	10	22	47	27	-13	28	-24	22	-3	53
30	2	34	16	6	12	36	14	9	16	20	24	7	1	49	37	7	6	19	28	3	0	40	13	5	25	50	51	11	1	40	17	10	21	17	11	10	22	47	11	-13	48	-20	32	-3	3
31	2	38	12	6	13	36	12	9	29	17	14	7	2	32	18	7	7	17	27	3	0	42	35	5	27	5	48	11	1	37	25	10	21	14	1	10	22	48	4	-14	7	-15	37	-2	3

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 नवंबर, 2025 ई. को अयनांश 24° 13′ 8″

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	2 42 9	6 14 36 11	10 12 39 27	7 3 15 2	7 8 12 9	3 0 44 46	5 28 20 47	11 1 34 39	10 21 10 50	10 22 49 8	-14 26	-9 50	-0 54
2	2 46 6	6 15 36 12	10 26 29 49	7 3 57 50	7 9 3 10	3 0 46 46	5 29 35 47	11 1 31 58	10 21 7 39	10 22 49 23	-14 45	-3 23	0 20
3	2 50 2	6 16 36 14	11 10 49 1	7 4 40 41	7 9 50 6	3 0 48 34	6 0 50 48	11 1 29 23	10 21 4 28	10 22 47 54	-15 4	3 27	1 35
4	2 53 59	6 17 36 18	11 25 34 44	7 5 23 36	7 10 32 28	3 0 50 10	6 2 5 51	11 1 26 52	10 21 1 17	10 22 44 8	-15 23	10 18	2 46
5	2 57 55	6 18 36 24	0 10 41 10	7 6 6 34	7 11 9 45	3 0 51 35	6 3 20 55	11 1 24 27	10 20 58 7	10 22 38 0	-15 41	16 43	3 47
6	3 1 52	6 19 36 31	0 25 59 14	7 6 49 36	7 11 41 23	3 0 52 49	6 4 36 0	11 1 22 8	10 20 54 56	10 22 29 58	-15 59	22 10	4 33
7	3 5 48	6 20 36 41	1 11 17 51	7 7 32 41	7 12 6 45	3 0 53 50	6 5 51 7	11 1 19 54	10 20 51 45	10 22 20 54	-16 17	26 7	4 59
8	3 9 45	6 21 36 52	1 26 25 46	7 8 15 50	7 12 25 10	3 0 54 40	6 7 6 15	11 1 17 46	10 20 48 34	10 22 11 57	-16 35	28 9	5 3
9	3 13 41	6 22 37 5	2 11 13 35	7 8 59 3	7 12 35 59	3 0 55 18	6 8 21 24	11 1 15 44	10 20 45 24	10 22 4 12	-16 52	28 7	4 48
10	3 17 38	6 23 37 20	2 25 35 7	7 9 42 19	7 12 38 29	3 0 55 44	6 9 36 34	11 1 13 47	10 20 42 13	10 21 58 29	-17 9	26 10	4 14
11	3 21 35	6 24 37 37	3 9 27 50	7 10 25 38	7 12 32 3	3 0 55 58	6 10 51 46	11 1 11 56	10 20 39 2	10 21 55 8	-17 26	22 40	3 26
12	3 25 31	6 25 37 56	3 22 52 21	7 11 9 2	7 12 16 6	3 0 56 0	6 12 6 58	11 1 10 12	10 20 35 51	10 21 53 57	-17 42	18 4	2 28
13	3 29 28	6 26 38 17	4 5 51 31	7 11 52 29	7 11 50 11	3 0 55 50	6 13 22 12	11 1 8 33	10 20 32 40	10 21 54 12	-17 58	12 46	1 25
14	3 33 24	6 27 38 40	4 18 29 24	7 12 35 59	7 11 14 6	3 0 55 28	6 14 37 28	11 1 7 0	10 20 29 30	10 21 54 50	-18 14	7 4	0 18
15	3 37 21	6 28 39 5	5 0 50 30	7 13 19 34	7 10 27 54	3 0 54 54	6 15 52 44	11 1 5 33	10 20 26 19	10 21 54 38	-18 29	1 14	-0 47
16	3 41 17	6 29 39 32	5 12 59 11	7 14 3 12	7 9 32 2	3 0 54 8	6 17 8 1	11 1 4 12	10 20 23 8	10 21 52 33	-18 44	-4 32	-1 49
17	3 45 14	7 0 40 0	5 24 59 21	7 14 46 53	7 8 27 23	3 0 53 10	6 18 23 19	11 1 2 58	10 20 19 57	10 21 47 47	-18 59	-10 5	-2 46
18	3 49 10	7 1 40 31	6 6 54 14	7 15 30 38	7 7 15 22	3 0 52 0	6 19 38 38	11 1 1 49	10 20 16 46	10 21 40 1	-19 14	-15 13	-3 35
19	3 53 7	7 2 41 3	6 18 46 24	7 16 14 27	7 5 57 50	3 0 50 38	6 20 53 58	11 1 0 47	10 20 13 36	10 21 29 24	-19 28	-19 46	-4 13
20	3 57 4	7 3 41 37	7 0 37 43	7 16 58 19	7 4 37 6	3 0 49 4	6 22 9 19	11 0 59 51	10 20 10 25	10 21 16 33	-19 42	-23 31	-4 41
21	4 1 0	7 4 42 12	7 12 29 41	7 17 42 14	7 3 15 45	3 0 47 18	6 23 24 40	11 0 59 2	10 20 7 14	10 21 2 24	-19 55	-26 18	-4 57
22	4 4 57	7 5 42 49	7 24 23 33	7 18 26 13	7 1 56 30	3 0 45 20	6 24 40 2	11 0 58 19	10 20 4 3	10 20 48 8	-20 8	-27 55	-4 59
23	4 8 53	7 6 43 27	8 6 20 43	7 19 10 15	7 0 41 58	3 0 43 10	5 25 55 25	11 0 57 42	10 20 0 52	10 20 34 58	-20 21	-28 15	-4 49
24	4 12 50	7 7 44 6	8 18 22 53	7 19 54 21	6 29 34 31	3 0 40 48	6 27 10 48	11 0 57 12	10 19 57 41	10 20 23 54	-20 33	-27 15	-4 26
25	4 16 46	7 8 44 46	9 0 32 19	7 20 38 30	6 28 36 3	3 0 38 15	6 28 26 12	11 0 56 48	10 19 54 31	10 20 15 40	-20 45	-24 57	-3 50
26	4 20 43	7 9 45 28	9 12 51 58	7 21 22 42	6 27 47 58	3 0 35 29	6 29 41 36	11 0 56 31	10 19 51 20	10 20 10 29	-20 57	-21 27	-3 3
27	4 24 39	7 10 46 11	9 25 25 24	7 22 6 58	6 27 11 7	3 0 32 33	7 0 57 0	11 0 56 20	10 19 48 9	10 20 8 1	-21 8	-16 56	-2 7
28	4 28 36	7 11 46 54	10 8 16 37	7 22 51 16	6 26 45 53	3 0 29 25	7 2 12 25	11 0 56 16	10 19 44 58	10 20 7 26	-21 18	-11 33	-1 2
29	4 32 33	7 12 47 39	10 21 29 43	7 23 35 38	6 26 32 11	3 0 26 5	7 3 27 50	11 0 56 18	10 19 41 47	10 20 7 32	-21 29	-5 31	0 7
30	4 36 29	7 13 48 25	11 5 8 17	7 24 20 3	6 26 29 38	3 0 22 34	7 4 43 16	11 0 56 26	10 19 38 37	10 20 6 59	-21 39	0 57	1 18

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 दिसंबर, 2025 ई. को अयनांश 24° 13′ 13″

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0h GMT (घं. मि. से.)	सूर्य (रा. अं. क. वि.)	चन्द्र (रा. अं. क. वि.)	मंगल (रा. अं. क. वि.)	बुध (रा. अं. क. वि.)	गुरु (रा. अं. क. वि.)	शुक्र (रा. अं. क. वि.)	शनि (रा. अं. क. वि.)	मध्यम राहु (रा. अं. क. वि.)	स्पष्ट राहु (रा. अं. क. वि.)	सूर्य क्रां. (अं. क.)	चन्द्र क्रां. (अं. क.)	चन्द्रशर (अं. क.)
1	4 40 26	7 14 49 12	11 19 14 30	7 25 4 31	6 26 37 38	3 0 18 52	7 5 58 41	11 0 56 41	10 19 35 26	10 20 4 34	-21 48	7 34	2 27
2	4 44 22	7 15 49 59	0 3 48 9	7 25 49 2	6 26 55 22	3 0 14 59	7 7 14 7	11 0 57 3	10 19 32 15	10 19 59 29	-21 57	14 1	3 29
3	4 48 19	7 16 50 48	0 18 45 38	7 26 33 36	6 27 21 59	3 0 10 56	7 8 29 34	11 0 57 31	10 19 29 4	10 19 51 33	-22 6	19 49	4 17
4	4 52 15	7 17 51 37	1 3 59 42	7 27 18 14	6 27 56 38	3 0 6 41	7 9 45 1	11 0 58 5	10 19 25 53	10 19 41 14	-22 14	24 27	4 49
5	4 56 12	7 18 52 28	1 19 20 4	7 28 2 54	6 28 38 26	3 0 2 16	7 11 0 28	11 0 58 46	10 19 22 42	10 19 29 32	-22 22	27 23	5 0
6	5 0 8	7 19 53 20	2 4 34 59	7 28 47 38	6 29 26 35	2 29 57 40	7 12 15 55	11 0 59 33	10 19 19 32	10 19 17 45	-22 30	28 15	4 49
7	5 4 5	7 20 54 13	2 19 33 25	7 29 32 25	7 0 20 18	2 29 52 54	7 13 31 23	11 1 0 27	10 19 16 21	10 19 7 14	-22 36	27 1	4 19
8	5 8 2	7 21 55 7	3 4 6 58	8 0 17 15	7 1 18 55	2 29 47 58	7 14 46 51	11 1 1 27	10 19 13 10	10 18 59 1	-22 43	23 58	3 33
9	5 11 58	7 22 56 2	3 18 10 56	8 1 2 8	7 2 21 49	2 29 42 52	7 16 2 20	11 1 2 34	11 19 9 59	10 18 53 34	-22 49	19 33	2 34
10	5 15 55	7 23 56 58	4 1 44 19	8 1 47 4	7 3 28 26	2 29 37 36	7 17 17 49	11 1 3 47	10 19 6 48	10 18 50 48	-22 55	14 16	1 29
11	5 19 51	7 24 57 55	4 14 49 9	8 2 32 3	7 4 38 16	2 29 32 10	7 18 33 18	11 1 5 6	10 19 3 38	10 18 49 59	-23 0	8 31	0 21
12	5 23 48	7 25 58 54	4 27 29 23	8 3 17 6	7 5 50 56	2 29 26 35	7 19 48 48	11 1 6 32	10 19 0 27	10 18 50 2	-23 5	2 35	-0 45
13	5 27 44	7 26 59 54	5 9 49 56	8 4 2 12	7 7 6 1	2 29 20 50	7 21 4 18	11 1 8 4	10 18 57 16	10 18 49 40	-23 9	-3 16	-1 48
14	5 31 41	7 28 0 54	5 21 56 0	8 4 47 20	7 8 23 14	2 29 14 57	7 22 19 48	11 1 9 42	10 18 54 5	10 18 47 41	-23 13	-8 54	-2 45
15	5 35 37	7 29 1 56	6 3 52 33	8 5 32 32	7 9 42 16	2 29 8 54	7 23 35 19	11 1 11 27	10 18 50 54	10 18 43 12	-23 16	-14 7	-3 34
16	5 39 34	8 0 2 59	6 15 43 59	8 6 17 47	7 11 2 54	2 29 2 43	7 24 50 50	11 1 13 18	10 18 47 43	10 18 35 46	-23 19	-18 48	-4 13
17	5 43 31	8 1 4 3	6 27 33 58	8 7 3 5	7 12 24 55	2 28 56 24	7 26 6 21	11 1 15 15	10 18 44 33	10 18 25 26	-3 21	-22 44	-4 41
18	5 47 27	8 2 5 7	7 9 25 22	8 7 48 26	7 13 48 9	2 28 49 56	7 27 21 52	11 1 17 19	10 18 41 22	10 18 12 46	-23 23	-25 44	-4 57
19	5 51 24	8 3 6 13	7 21 20 14	8 8 33 50	7 15 12 26	2 28 43 21	7 28 37 24	11 1 19 28	10 18 38 11	10 17 58 40	-23 25	-27 37	-4 59
20	5 55 20	8 4 7 19	8 3 20 2	8 9 19 16	7 16 37 39	2 28 36 38	7 29 52 56	11 1 21 44	10 18 35 0	10 17 44 17	-23 26	-28 14	-4 49
21	5 59 17	8 5 8 25	8 15 25 48	8 10 4 46	7 18 3 41	2 28 29 48	8 1 8 27	11 1 24 6	10 18 31 49	10 17 30 52	-23 26	-27 30	-4 26
22	6 3 13	8 6 9 32	8 27 38 27	8 10 50 18	7 19 30 27	2 28 22 51	8 2 23 59	11 1 26 35	10 18 28 38	10 17 19 29	-23 26	-25 27	-3 50
23	6 7 10	8 7 10 39	9 9 59 0	8 11 35 53	7 20 57 51	2 28 15 47	8 3 39 30	11 1 29 9	10 18 25 28	10 17 10 54	-23 26	-22 10	-3 3
24	6 11 6	8 8 11 47	9 22 28 57	8 12 21 31	7 22 25 50	2 28 8 37	8 4 55 2	11 1 31 50	10 18 22 17	10 17 5 25	-23 25	-17 50	-2 6
25	6 15 3	8 9 12 55	10 5 10 16	8 13 7 11	7 23 54 20	2 28 1 21	8 6 10 33	11 1 34 36	10 18 19 6	10 17 2 48	-23 24	-12 40	-1 3
26	6 19 0	8 10 14 3	10 18 5 33	8 13 52 53	7 25 23 19	2 27 53 59	8 7 26 4	11 1 37 28	10 18 15 55	10 17 2 19	-23 22	-6 51	0 6
27	6 22 56	8 11 15 11	11 1 17 42	8 14 38 39	7 26 52 45	2 27 46 32	8 8 41 35	11 1 40 26	10 18 12 44	10 17 2 52	-23 19	-0 38	1 15
28	6 26 53	8 12 16 19	11 14 49 32	8 15 24 26	7 28 22 36	2 27 39 0	8 9 57 6	11 1 43 30	10 18 9 33	10 17 3 8	-23 17	5 46	2 22
29	6 30 49	8 13 17 27	11 28 43 14	8 16 10 17	7 29 52 50	2 27 31 23	8 11 12 36	11 1 46 40	10 18 6 23	10 17 2 0	-23 14	12 3	3 23
30	6 34 46	8 14 18 34	0 12 59 27	8 16 56 9	8 1 23 28	2 27 23 42	8 12 28 7	11 1 49 56	10 18 3 12	10 16 58 37	-23 10	17 54	4 12
31	6 38 42	8 15 19 42	0 27 36 33	8 17 42 4	8 2 54 27	2 27 15 57	8 13 43 37	11 1 53 17	10 18 0 1	10 16 52 45	-23 6	22 50	4 47

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 जनवरी, 2026 ई. को अयनांश 24° 13′ 19″

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	42	39	8	16	20	50	1	12	29	56	8	18	28	2	8	4	25	48	2	27	8	8	8	14	59	7	11	1	56	44	10	17	56	50	10	16	44	42	-23	1	26	24	5	3
2	6	46	35	8	17	21	58	1	27	32	11	8	19	14	2	8	5	57	31	2	27	0	16	8	16	14	36	11	2	0	16	10	17	53	39	10	16	35	18	-22	56	28	9	4	58
3	6	50	32	8	18	23	5	2	12	33	55	8	20	0	4	8	7	29	35	2	26	52	21	8	17	30	5	11	2	3	54	10	17	50	28	10	16	25	42	-22	50	27	49	4	33
4	6	54	29	8	19	24	13	2	27	25	18	8	20	46	8	8	9	2	0	2	26	44	24	8	18	45	35	11	2	7	38	10	17	47	18	10	16	17	3	-22	44	25	29	3	50
5	6	58	25	8	20	25	20	3	11	57	44	8	21	32	15	8	10	34	46	2	26	36	24	8	20	1	4	11	2	11	27	10	17	44	7	10	16	10	16	-22	38	21	30	2	52
6	7	2	22	8	21	26	28	3	26	5	14	8	22	18	24	8	12	7	55	2	26	28	22	8	21	16	32	11	2	15	21	10	17	40	56	10	16	5	54	-22	31	16	22	1	45
7	7	6	18	8	22	27	36	4	9	44	57	8	23	4	36	8	13	41	26	2	26	20	19	8	22	32	1	11	2	19	20	10	17	37	45	10	16	3	55	-22	24	10	35	0	34
8	7	10	15	8	23	28	44	4	22	57	1	8	23	50	50	8	15	15	21	2	26	12	14	8	23	47	30	11	2	23	25	10	17	34	34	10	16	3	51	-22	16	4	30	-0	37
9	7	14	11	8	24	29	52	5	5	43	53	8	24	37	6	8	16	49	39	2	26	4	9	8	25	2	58	11	2	27	35	10	17	31	23	10	16	4	51	-22	8	-1	34	-1	44
10	7	18	8	8	25	30	59	5	18	9	35	8	25	23	25	8	18	24	21	2	25	56	3	8	26	18	26	11	2	31	50	10	17	28	13	10	16	5	57	-21	59	-7	24	-2	44
11	7	22	4	8	26	32	7	6	0	18	58	8	26	9	46	8	19	59	29	2	25	47	57	8	27	33	55	11	2	36	10	10	17	25	2	10	16	6	10	-21	50	-12	50	-3	35
12	7	26	1	8	27	33	15	6	12	17	12	8	26	56	9	8	21	35	3	2	25	39	51	8	28	49	23	11	2	40	35	10	17	21	51	10.16		4	46	-21	41	-17	43	-4	16
13	7	29	58	8	28	34	23	6	24	9	17	8	27	42	34	8	23	11	5	2	25	31	46	9	0	4	51	11	2	45	5	10	17	18	40	10	16	1	21	-21	31	-21	52	-4	46
14	7	33	54	8	29	35	31	7	5	59	51	8	28	29	1	8	24	47	34	2	25	23	42	9	1	20	18	11	2	49	41	10	17	15	29	10	15	55	52	-21	20	-25	8	-5	3
15	7	37	51	9	0	36	39	7	17	52	47	8	29	15	31	8	26	24	32	2	25	15	39	9	2	35	46	11	2	54	21	10	17	12	19	10	15	48	37	-21	10	-27	19	-5	7
16	7	41	47	9	1	37	46	7	29	51	17	9	0	2	2	8	28	2	0	2	25	7	38	9	3	51	13	11	2	59	5	10	17	9	8	10	15	40	14	-20	58	-28	16	-4	58
17	7	45	44	9	2	38	54	8	11	57	44	9	0	48	36	8	29	39	59	2	24	59	39	9	5	6	40	11	3	3	55	10	17	5	57	10	15	31	29	-20	47	-27	53	-4	36
18	7	49	40	9	3	40	0	8	24	13	42	9	1	35	11	9	1	18	28	2	24	51	42	9	6	22	7	11	3	8	49	10	17	2	46	10	15	23	15	-20	35	-26	8	-4	0
19	7	53	37	9	4	41	7	9	6	40	10	9	2	21	49	9	2	57	30	2	24	43	49	9	7	37	33	11	3	13	48	10	16	59	35	10	15	16	18	-20	23	-23	6	-3	13
20	7	57	33	9	5	42	12	9	19	17	34	9	3	8	28	9	4	37	5	2	24	35	58	9	8	52	59	11	3	18	52	10	16	56	24	10	15	11	14	-20	10	-18	56	-2	16
21	8	1	30	9	6	43	17	10	2	6	10	9	3	55	9	9	6	17	13	2	24	28	11	9	10	8	24	11	3	24	0	10	16	53	14	10	15	8	18	-19	57	-13	50	-1	10
22	8	5	27	9	7	44	21	10	15	6	14	9	4	41	51	9	7	57	55	2	24	20	29	9	11	23	48	11	3	29	12	10	16	50	3	10	15	7	23	-19	43	-8	4	0	0
23	8	9	23	9	8	45	25	10	28	18	15	9	5	28	36	9	9	39	11	2	24	12	50	9	12	39	12	11	3	34	29	10	16	46	52	10	15	8	2	-19	29	-1	53	1	11
24	8	13	20	9	9	46	27	11	11	42	56	9	6	15	21	9	11	21	2	2	24	5	16	9	13	54	36	11	3	39	50	10	16	43	41	10	15	9	33	-19	15	4	30	2	20
25	8	17	16	9	10	47	28	11	25	21	4	9	7	2	9	9	13	3	27	2	23	57	48	9	15	9	59	11	3	45	15	10	16	40	30	10	15	11	05	-19	1	10	46	3	22
26	8	21	13	9	11	48	29	0	9	13	11	9	7	48	57	9	14	46	26	2	23	50	24	9	16	25	21	11	3	50	44	10	16	37	20	10	15	11	53	-18	46	16	37	4	13
27	8	25	9	9	12	49	28	0	23	19	11	9	8	35	48	9	16	29	58	2	23	43	6	9	17	40	42	11	3	56	18	10	16	34	9	10	15	11	24	-18	31	21	42	4	50
28	8	29	6	9	13	50	26	1	7	37	50	9	9	22	39	9	18	14	3	2	23	35	54	9	18	56	2	11	4	1	55	10	16	30	58	10	15	9	24	-18	15	25	35	5	10
29	8	33	2	9	14	51	23	1	22	6	25	9	10	9	32	9	19	58	37	2	23	28	49	9	20	11	22	11	4	7	36	10	16	27	47	10	15	6	5	-17	59	27	52	5	10
30	8	36	59	9	15	52	18	2	6	40	32	9	10	56	26	9	21	43	40	2	23	21	50	9	21	26	41	11	4	13	21	10	16	24	36	10	15	1	54	-17	43	28	17	4	50
31	8	40	56	9	16	53	13	2	21	14	23	9	11	43	22	9	23	29	9	2	23	14	58	9	22	41	59	11	4	19	10	10	16	21	26	10	14	57	30	-17	26	26	43	4	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 फरवरी, 2026 ई. को अयनांश 24° 13′ 24″

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 44 52	9 17 54 6	3 5 41 31	9 12 30 18	9 25 14 59	2 23 8 13	9 23 57 16	11 4 25 2	10 16 18 15	10 14 53 33	-17 9	23 24	3 18
2	8 48 49	9 18 54 58	3 19 55 38	9 13 17 17	9 27 1 7	2 23 1 35	9 25 12 33	11 4 30 59	10 16 15 4	10 14 50 36	-16 52	18 42	2 12
3	8 52 45	9 19 55 50	4 3 51 40	9 14 4 16	9 28 47 26	2 22 55 5	9 26 27 49	11 4 36 58	10 16 11 53	10 14 48 58	-16 35	13 4	1 0
4	8 56 42	9 20 56 40	4 17 26 17	9 14 51 16	10 0 33 50	2 22 48 42	9 27 43 4	11 4 43 1	10 16 8 42	10 14 48 39	-16 17	6 58	-0 14
5	9 0 38	9 21 57 29	5 0 38 12	9 15 38 18	10 2 20 9	2 22 42 28	9 28 58 18	11 4 49 8	10 16 5 32	10 14 49 25	-15 59	0 44	-1 26
6	9 4 35	9 22 58 17	5 13 28 4	9 16 25 21	10 4 6 14	2 22 36 22	10 0 13 32	11 4 55 18	10 16 2 21	10 14 50 53	-15 41	-5 22	-2 31
7	9 8 31	9 23 59 4	5 25 58 8	9 17 12 25	10 5 51 52	2 22 30 25	10 1 28 45	11 5 1 31	10 15 59 10	10 14 52 34	-15 22	-11 6	-3 28
8	9 12 28	9 24 59 51	6 8 11 56	9 17 59 31	10 7 36 49	2 22 24 36	10 2 43 57	11 5 7 48	10 15 55 59	10 14 53 59	-15 3	-16 16	-4 13
9	9 16 25	9 26 0 36	6 20 13 44	9 18 46 37	10 9 20 47	2 22 18 56	10 3 59 8	11 5 14 7	10 15 52 49	10 14 54 48	-14 44	-20 44	-4 47
10	9 20 21	9 27 1 20	7 2 8 16	9 19 33 45	10 11 3 28	2 22 13 26	10 5 14 19	11 5 20 30	10 15 49 38	10 14 54 50	-14 25	-24 19	-5 8
11	9 24 18	9 28 2 4	7 14 0 22	9 20 20 53	10 12 44 28	2 22 8 5	10 6 29 29	11 5 26 56	10 15 46 27	10 14 54 2	-14 5	-26 52	-5 15
12	9 28 14	9 29 2 46	7 25 54 41	9 21 8 3	10 14 23 22	2 22 2 54	10 7 44 38	11 5 33 25	10 15 43 16	10 14 52 30	-13 46	-28 13	-5 10
13	9 32 11	10 0 3 27	8 7 55 25	9 21 55 13	10 15 59 42	2 21 57 52	10 8 59 46	11 5 39 56	10 15 40 5	10 14 50 31	-13 26	-28 16	-4 50
14	9 36 7	10 1 4 7	8 20 6 13	9 22 42 25	10 17 32 56	2 21 53 1	10 10 14 53	11 5 46 31	10 15 36 55	10 14 48 20	-13 5	-26 56	-4 18
15	9 40 4	10 2 4 46	9 2 29 55	9 23 29 37	10 19 2 30	2 21 48 19	10 11 30 0	11 5 53 8	10 15 33 44	10 14 46 18	-12 45	-24 17	-3 33
16	9 44 0	10 3 5 23	9 15 8 29	9 24 16 49	10 20 27 45	2 21 43 48	10 12 45 6	11 5 59 48	10 15 30 33	10 14 44 40	-12 24	-20 25	-2 36
17	9 47 57	10 4 5 59	9 28 2 49	9 25 4 3	10 21 48 3	2 21 39 28	10 14 0 10	11 6 6 31	10 15 27 22	10 14 43 35	-12 3	-15 31	-1 31
18	9 51 54	10 5 6 34	10 11 12 53	9 25 51 17	10 23 2 42	2 21 35 18	10 15 15 14	11 6 13 16	10 15 24 12	10 14 43 8	-11 42	-9 49	-0 19
19	9 55 50	10 6 7 6	10 24 37 46	9 26 38 32	10 24 11 1	2 21 31 20	10 16 30 16	11 6 20 4	10 15 21 1	10 14 43 15	-11 21	-3 34	0 55
20	9 59 47	10 7 7 38	11 8 15 55	9 27 25 47	10 25 12 18	2 21 27 32	10 17 45 17	11 6 26 54	10 15 17 50	10 14 43 44	-11 0	2 56	2 7
21	10 3 43	10 8 8 7	11 22 5 20	9 28 13 2	10 26 5 54	2 21 23 55	10 19 0 17	11 6 33 46	10 15 14 39	10 14 44 23	-10 38	9 23	3 13
22	10 7 40	10 9 8 35	0 6 3 48	9 29 0 17	10 26 51 12	2 21 20 30	10 20 15 16	11 6 40 41	10 15 11 29	10 14 45 0	-10 16	15 26	4 8
23	10 11 36	10 10 9 1	0 20 9 2	9 29 47 33	10 27 27 39	2 21 17 16	10 21 30 13	11 6 47 37	10 15 8 18	10 14 45 25	-9 54	20 44	4 48
24	10 15 33	10 11 9 25	1 4 18 48	10 0 34 49	10 27 54 48	2 21 14 13	10 22 45 9	11 6 54 36	10 15 5 7	10 14 45 35	-9 32	24 54	5 12
25	10 19 29	10 12 9 47	1 18 30 52	10 1 22 6	10 28 12 20	2 21 11 21	10 24 0 3	11 7 1 37	10 15 1 56	10 14 45 32	-9 10	27 33	5 16
26	10 23 26	10 13 10 7	2 2 42 57	10 2 9 22	10 28 20 2	2 21 8 41	10 25 14 56	11 7 8 40	10 14 58 46	10 14 45 21	-8 48	28 26	5 2
27	10 27 23	10 14 10 25	2 16 52 37	10 2 56 38	10 28 17 53	2 21 6 13	10 26 29 47	11 7 15 44	10 14 55 35	10 14 45 11	-8 25	27 26	4 29
28	10 31 19	10 15 10 41	3 0 57 10	10 3 43 55	10 28 6 2	2 21 3 57	10 27 44 37	11 7 22 51	10 14 52 24	10 14 45 6	-8 3	24 42	3 40

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि.), (भा. स्टैं. टा.) 1 मार्च, 2026 ई. को अयनांश 24° 13' 28"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0h GMT			सूर्य				चन्द्र			
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	10	35	16	10	16	10	55	3	14	53	48
2	10	39	12	10	17	11	7	3	28	39	39
3	10	43	9	10	18	11	18	4	12	12	13
4	10	47	5	10	19	11	26	4	25	29	30
5	10	51	2	10	20	11	33	5	8	30	18
6	10	54	58	10	21	11	38	5	21	14	26
7	10	58	55	10	22	11	41	6	3	42	44
8	11	2	52	10	23	11	43	6	15	57	8
9	11	6	48	10	24	11	42	6	28	0	32
10	11	10	45	10	25	11	41	7	9	56	32
11	11	14	41	10	26	11	37	7	21	49	24
12	11	18	38	10	27	11	32	8	3	43	42
13	11	22	34	10	28	11	26	8	15	44	10
14	11	26	31	10	29	11	18	8	27	55	24
15	11	30	27	11	0	11	8	9	10	21	33
16	11	34	24	11	1	10	56	9	23	6	4
17	11	38	21	11	2	10	42	10	6	11	15
18	11	42	17	11	3	10	27	10	19	37	56
19	11	46	14	11	4	10	10	11	3	25	14
20	11	50	10	11	5	9	50	11	17	30	29
21	11	54	7	11	6	9	29	0	1	49	23
22	11	58	3	11	7	9	5	0	16	16	30
23	12	2	0	11	8	8	39	1	0	46	4
24	12	5	56	11	9	8	11	1	15	12	43
25	12	9	53	11	10	7	41	1	29	32	7
26	12	13	50	11	11	7	8	2	13	41	16
27	12	17	46	11	12	6	33	2	27	38	27
28	12	21	43	11	13	5	56	3	11	22	56
29	12	25	39	11	14	5	16	3	24	54	38
30	12	29	36	11	15	4	34	4	8	13	49
31	12	33	32	11	16	3	50	4	21	20	45

मार्च	मंगल				बुध				गुरु				शुक्र			
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.
1	10	4	31	11	10	27	44	50	2	21	1	51	10	28	59	26
2	10	5	18	28	10	27	14	52	2	20	59	58	11	0	14	13
3	10	6	5	44	10	26	36	53	2	20	58	16	11	1	28	58
4	10	6	53	1	10	25	51	52	2	20	56	46	11	2	43	42
5	10	7	40	17	10	25	0	58	2	20	55	28	11	3	58	24
6	10	8	27	33	10	24	5	29	2	20	54	22	11	5	13	5
7	10	9	14	50	10	23	6	47	2	20	53	27	11	6	27	44
8	10	10	2	6	10	22	6	21	2	20	52	44	11	7	42	22
9	10	10	49	21	10	21	5	35	2	20	52	13	11	8	56	58
10	10	11	36	37	10	20	5	50	2	20	51	53	11	10	11	33
11	10	12	23	53	10	19	8	23	2	20	51	45	11	11	26	6
12	10	13	11	8	10	18	14	18	2	20	51	49	11	12	40	38
13	10	13	58	23	10	17	24	32	2	20	52	5	11	13	55	8
14	10	14	45	37	10	16	39	49	2	20	52	32	11	15	9	37
15	10	15	32	51	10	16	0	42	2	20	53	12	11	16	24	4
16	10	16	20	4	10	15	27	35	2	20	54	2	11	17	38	30
17	10	17	7	17	10	15	0	42	2	20	55	5	11	18	52	54
18	10	17	54	29	10	14	40	10	2	20	56	19	11	20	7	16
19	10	18	41	41	10	14	25	57	2	20	57	45	11	21	21	37
20	10	19	28	51	10	14	17	59	2	20	59	22	11	22	35	55
21	10	20	16	1	10	14	16	6	2	21	1	10	11	23	50	12
22	10	21	3	10	10	14	20	6	2	21	3	11	11	25	4	27
23	10	21	50	17	10	14	29	45	2	21	5	22	11	26	18	40
24	10	22	37	24	10	14	44	48	2	21	7	45	11	27	32	51
25	10	23	24	30	10	15	4	58	2	21	10	18	11	28	47	0
26	10	24	11	34	10	15	30	0	2	21	13	3	0	0	1	6
27	10	24	58	37	10	15	59	38	2	21	15	59	0	1	15	11
28	10	25	45	39	10	16	33	37	2	21	19	6	0	2	29	13
29	10	26	32	40	10	17	11	42	2	21	22	23	0	3	43	13
30	10	27	19	39	10	17	53	39	2	21	25	51	0	4	57	11
31	10	28	6	37	10	18	39	16	2	21	29	30	0	6	11	6

मार्च	शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	11	7	29	59	10	14	49	13	10	14	45	8	-7	40	20	31	2	38
2	11	7	37	9	10	14	46	3	10	14	45	15	-7	17	15	16	1	28
3	11	7	44	20	10	14	42	52	10	14	45	21	-6	54	9	22	0	14
4	11	7	51	33	10	14	39	41	10	14	45	17	-6	31	3	10	-0	59
5	11	7	58	47	10	14	36	30	10	14	44	58	-6	8	-3	2	-2	8
6	11	8	6	3	10	14	33	20	10	14	44	21	-5	45	-8	59	-3	9
7	11	8	13	20	10	14	30	9	10	14	43	27	-5	22	-14	27	-3	59
8	11	8	20	38	10	14	26	58	10	14	42	24	-4	58	-19	15	-4	38
9	11	8	27	58	10	14	23	47	10	14	41	22	-4	35	-23	12	-5	3
10	11	8	35	18	10	14	20	37	10	14	40	32	-4	11	-26	8	-5	15
11	11	8	42	40	10	14	17	26	10	14	40	5	-3	48	-27	55	-5	14
12	11	8	50	3	10	14	14	15	10	14	40	9	-3	24	-28	24	-4	59
13	11	8	57	27	10	14	11	4	10	14	40	45	-3	1	-27	34	-4	31
14	11	9	4	51	10	14	7	54	10	14	41	49	-2	37	-25	25	-3	51
15	11	9	12	17	10	14	4	43	10	14	43	7	-2	13	-22	0	-2	59
16	11	9	19	43	10	14	1	32	10	14	44	22	-1	50	-17	30	-1	57
17	11	9	27	10	10	13	58	21	10	14	45	14	-1	26	-12	4	-0	47
18	11	9	34	37	10	13	55	11	10	14	45	22	-1	2	-5	56	0	27
19	11	9	42	5	10	13	52	0	10	14	44	34	-0	38	0	37	1	41
20	11	9	49	33	10	13	48	49	10	14	42	48	-0	15	7	15	2	51
21	11	9	57	2	10	13	45	38	10	14	40	12	0	9	13	38	3	51
22	11	10	4	31	10	13	42	28	10	14	37	9	0	33	19	21	4	37
23	11	10	12	0	10	13	39	17	10	14	34	7	0	57	23	56	5	5
24	11	10	19	29	10	13	36	6	10	14	31	37	1	20	27	2	5	14
25	11	10	26	59	10	13	32	55	10	14	30	4	1	44	28	20	5	3
26	11	10	34	28	10	13	29	45	10	14	29	39	2	7	27	46	4	34
27	11	10	41	57	10	13	26	34	10	14	30	18	2	31	25	26	3	49
28	11	10	49	27	10	13	23	23	10	14	31	39	2	54	21	39	2	52
29	11	10	56	56	10	13	20	12	10	14	33	9	3	18	16	45	1	46
30	11	11	4	24	10	13	17	2	10	14	34	7	3	41	11	8	0	35
31	11	11	11	53	10	13	13	51	10	14	33	59	4	4	5	7	-0	37

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें (सं. 2082 वि.)

मास →	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2025 ई.)	चन्द्रदर्शन (2026 ई.)	△ चन्द्रदर्शन (2026 ई.)
+ 5°	30 मार्च	29 अप्रै.	28 मई	26 जून	26 जुलाई	24 अगस्त	23सितम्बर	23अक्तूबर	21 नवम्बर	21दिसम्बर	20जनवरी	18 फरवरी
+ 15°	30 "	29 "	28 "	26 "	26 "	24 "	23 "	23 "	21 "	21 "	20 "	18 "
+ 25°	30 "	29 "	28 "	26 "	26 "	24 "	23 "	23 "	22 "	21 "	20 "	19 "
+ 35°	30 "	29 "	28 "	26 "	26 "	*25 "	23 "	23 "	22 "	21 "	20 "	19 "

* 35° उत्तर अक्षांशीय स्थलों पर 25 अगस्त, 2025 ई. को चन्द्रदर्शन की अत्यल्प सम्भावना है।

△ दक्षिण भारत के अधिकतर प्रदेशों में 18 फरवरी, 2026 को चन्द्रदर्शन की पर्याप्त सम्भावना है।

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त-काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2025 ई.

तारीख	जनवरी				फरवरी				मार्च				अप्रैल				मई				जून				जुलाई				अगस्त				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	8	39	18	53	9	5	21	7	7	34	19	57	7	51	22	20	8	18	23	25	10	25	–	–	11	8	23	35	12	38	23	24	1
2	9	22	20	1	9	36	22	13	8	6	21	5	8	38	23	32	9	23	–	–	11	25	0	12	12	3	24	00	13	35	23	58	2
3	10	00	21	7	10	8	23	20	8	40	22	15	9	32	–	–	10	30	0	20	12	23	0	42	12	58	–	–	14	33	–	–	3
4	10	33	22	12	10	41	–	–	9	16	23	26	10	33	0	39	11	35	1	4	13	18	1	8	13	52	0	27	15	31	0	38	4
5	11	4	23	16	11	18	0	27	9	58	–	–	11	37	1	37	12	36	1	41	14	12	1	34	14	48	0	55	16	27	1	24	5
6	11	34	–	–	12	00	1	36	10	46	0	37	12	41	2	25	13	35	2	12	15	5	1	59	15	46	1	26	17	20	2	17	6
7	12	6	0	21	12	49	2	45	11	40	1	45	13	43	3	6	14	30	2	40	16	0	2	25	16	44	2	2	18	7	3	16	7
8	12	39	1	27	13	46	3	51	12	41	2	47	14	43	3	40	15	24	3	6	16	57	2	54	17	42	2	44	18	49	4	19	8
9	13	18	2	35	14	48	4	51	13	44	3	41	15	40	4	9	16	17	3	30	17	55	3	27	18	37	3	33	19	26	5	25	9
10	14	3	3	45	15	52	5	43	14	48	4	26	16	35	4	36	17	11	3	56	18	53	4	5	19	28	4	29	20	00	6	30	10
11	14	55	4	54	16	56	6	26	15	49	5	4	17	29	5	1	18	7	4	23	19	50	4	49	20	13	6	34	20	31	7	35	11
12	15	55	6	00	17	58	7	3	16	49	5	37	18	22	5	55	19	4	4	53	20	44	5	40	20	52	6	33	21	1	8	39	12
13	17	0	6	58	18	57	7	35	17	45	6	6	19	17	5	52	20	2	6	9	21	32	6	37	21	27	7	37	21	32	9	44	13
14	18	6	7	48	19	53	8	3	18	40	6	32	20	13	6	20	21	00	6	7	22	15	7	39	21	59	8	41	22	6	10	50	14
15	19	10	8	30	20	48	8	29	19	34	6	57	21	10	6	51	21	56	6	53	22	52	8	42	22	29	9	44	22	44	11	58	15
16	20	11	9	5	21	42	8	54	20	28	7	22	22	8	7	26	22	47	7	45	23	25	9	45	22	58	10	47	23	28	13	8	16
17	21	9	9	35	22	36	9	20	21	23	7	49	23	6	8	8	23	34	8	43	23	56	10	48	23	30	11	51	–	–	14	18	17
18	22	4	10	2	23	32	9	47	22	20	8	17	–	–	8	55	–	–	9	45	–	–	11	50	–	–	12	57	0	20	15	25	18
19	22	58	10	28	–	–	10	17	23	17	8	49	0	1	9	50	0	15	10	48	0	26	12	54	0	4	14	6	1	20	16	25	19
20	23	52	10	53	0	29	10	51	–	–	9	27	0	51	10	49	0	51	11	51	0	56	13	59	0	44	15	17	2	25	17	16	20
21	–	–	11	19	1	28	11	31	0	16	10	10	1	36	11	53	1	23	12	55	1	29	15	7	1	32	16	28	3	33	18	00	21
22	0	46	11	47	2	27	12	18	1	13	11	1	2	16	12	58	1	54	13	59	2	6	16	19	2	28	17	34	4	39	18	36	22
23	1	43	12	19	3	24	13	13	2	7	11	59	2	52	14	3	2	25	15	5	2	50	17	33	3	31	18	33	5	42	19	7	23
24	2	41	12	56	4	18	14	15	2	57	13	2	3	25	15	10	2	57	16	14	3	42	18	44	4	39	19	22	6	43	19	35	24
25	3	41	13	40	5	7	15	22	3	41	14	08	3	56	16	17	3	32	17	27	4	42	19	49	5	48	20	3	7	40	20	2	25
26	4	41	14	31	5	49	16	31	4	21	15	16	4	28	17	26	4	13	18	42	5	50	20	45	6	54	20	38	8	36	20	28	26
27	5	38	15	31	6	27	17	40	4	56	16	24	5	3	18	39	5	2	19	56	6	59	21	30	7	57	21	8	9	32	20	55	27
28	6	30	16	36	7	2	18	48	6	4	17	33	5	41	19	54	5	59	21	6	8	7	22	8	8	56	21	35	10	27	21	24	28
29	7	16	17	44					6	1	18	42	6	26	21	9	7	3	22	6	9	11	22	40	9	52	22	1	11	24	21	56	29
30	7	57	18	53					6	35	19	53	7	18	22	21	8	12	22	57	10	11	23	9	10	47	22	27	12	22	22	33	30
31	8	33	20	1					7	11	21	6					9	20	23	38					11	42	22	54	13	19	23	15	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त-काल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2025-26 ई.

तारीख	सितंबर				अक्तूबर				नवंबर				दिसंबर				जनवरी				फरवरी				मार्च				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	14	16	–	–	14	36	–	–	14	52	1	42	14	22	2	38	15	10	5	2	17	24	6	50	16	15	6	7	1
2	15	10	0	5	15	16	0	48	15	23	2	46	14	58	3	46	16	14	6	14	18	32	7	32	17	20	6	4	2
3	15	59	1	1	15	52	1	52	15	55	3	52	15	40	4	58	17	24	7	19	19	37	8	7	18	22	6	36	3
4	16	43	2	2	16	25	2	57	16	29	5	0	16	31	6	14	18	37	8	15	20	39	8	38	19	22	7	5	4
5	17	22	3	6	16	57	4	2	17	9	6	12	17	31	7	29	19	48	9	1	21	37	9	6	20	21	7	33	5
6	17	57	4	12	17	28	5	8	17	55	7	28	18	40	8	39	20	54	9	39	22	35	9	33	21	18	8	0	6
7	18	29	5	18	18	1	6	16	18	51	8	44	19	51	9	39	21	56	10	11	23	32	10	1	22	16	8	29	7
8	19	0	6	23	18	38	7	27	19	54	9	56	21	02	10	29	22	55	10	40	–	–	10	31	23	15	9	1	8
9	19	32	7	30	19	20	8	40	21	3	11	00	22	9	11	10	23	51	11	7	0	29	11	3	–	–	9	36	9
10	20	5	8	37	20	9	9	54	22	12	11	53	23	11	11	44	–	–	11	34	1	27	11	40	0	13	10	16	10
11	20	43	9	47	21	6	11	7	23	18	12	37	–	–	12	13	0	47	12	2	2	24	12	22	1	9	11	1	11
12	21	26	10	58	22	10	12	13	–	–	13	13	0	9	12	40	1	43	12	32	3	20	13	10	2	3	11	52	12
13	22	16	12	10	23	16	13	10	0	21	13	44	1	6	13	6	2	40	13	6	4	13	14	4	2	53	12	49	13
14	23	14	13	18	–	–	13	58	1	20	14	12	2	0	13	33	3	37	13	44	5	1	15	2	3	38	13	48	14
15	–	–	14	20	0	23	14	38	2	16	14	38	2	55	14	1	4	34	14	29	5	44	16	4	4	17	14	50	15
16	0	18	15	14	1	27	15	12	3	11	15	3	3	51	14	32	6	23	15	19	6	22	17	6	4	53	15	52	16
17	1	24	15	59	2	27	15	41	4	6	15	30	4	48	15	7	6	20	16	15	6	56	18	8	5	25	16	54	17
18	2	30	16	36	3	25	16	8	5	1	15	59	5	45	15	48	7	7	17	15	7	27	19	10	5	55	17	57	18
19	3	33	17	9	4	21	16	34	5	57	16	31	6	42	16	34	7	47	18	16	7	56	20	12	6	25	19	0	19
20	4	33	17	37	5	16	17	00	6	54	17	8	7	36	17	27	8	23	19	18	8	26	21	15	6	56	20	7	20
21	5	31	18	4	6	11	17	27	7	52	17	50	8	25	18	24	8	56	20	19	8	56	22	20	7	30	21	15	21
22	6	27	18	30	7	7	17	57	8	48	18	38	9	9	19	23	9	25	21	19	9	30	23	27	8	7	22	26	22
23	7	22	18	56	8	3	18	30	9	40	19	32	9	48	20	24	9	54	22	20	10	9	–	–	8	52	23	38	23
24	8	18	19	24	9	1	19	8	10	27	20	29	10	22	21	24	10	23	23	22	10	54	0	37	9	44	–	–	24
25	9	14	19	55	9	58	19	52	11	10	21	29	10	53	22	24	10	54	-	-	11	48	1	47	10	43	0	46	25
26	10	11	20	30	10	53	20	42	11	47	22	30	11	22	23	24	11	29	0	27	12	50	2	53	11	49	1	48	26
27	11	9	21	10	11	44	21	37	12	20	23	30	11	51	–	–	12	9	1	35	13	57	3	53	12	57	2	42	27
28	12	6	21	56	12	30	22	36	12	51	–	–	12	21	0	26	12	58	2	46	15	6	4	44	14	5	3	26	28
29	13	0	22	49	13	11	23	37	13	20	0	31	12	53	1	30	13	56	3	56					15	9	4	4	29
30	13	50	23	47	13	48	–	–	13	50	1	33	13	31	2	37	15	2	5	2					16	11	4	37	30
31					14	21	0	39					14	16	3	49	16	12	6	1					17	11	5	6	31

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेपच्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेपच्यून				प्लूटो			
										क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
2025 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
जन. 1	0	29	26	11	3	6	9	6	51	23	33	3	55	-21	57	1	7	21	47	-0	36	-13	35	-1	24	-7	55	-1	59	18	26	-0	15	-2	15	-1	17	-23	7	-3	16
4	0	29	22	11	3	8	9	6	57	23	53	4	1	-22	36	0	42	21	46	-0	35	-12	16	-1	11	-7	49	-1	58	18	25	-0	15	-2	14	-1	17	-23	6	-3	17
7	0	29	18	11	3	11	9	7	3	24	12	4	6	-23	8	0	17	21	44	-0	35	-10	54	-0	57	-7	43	-1	58	18	24	-0	15	-2	13	-1	17	-23	5	-3	17
10	0	29	14	11	3	14	9	7	8	24	31	4	11	-23	31	-0	6	21	43	-0	34	-9	31	-0	41	-7	37	-1	58	18	24	-0	15	-2	11	-1	17	-23	4	-3	17
13	0	29	11	11	3	18	9	7	14	24	50	4	15	-23	44	-0	28	21	41	-0	34	-8	7	-0	24	-7	30	-1	57	18	23	-0	15	-2	10	-1	17	-23	2	-3	17
16	0	29	9	11	3	21	9	7	20	25	6	4	17	-23	47	-0	48	21	40	-0	33	-6	42	-0	5	-7	24	-1	57	18	22	-0	15	-2	8	-1	17	-23	1	-3	17
19	0	29	7	11	3	25	9	7	26	25	22	4	19	-23	37	-1	6	21	40	-0	32	-5	17	0	15	-7	17	-1	57	18	22	-0	15	-2	7	-1	17	-23	0	-3	18
22	0	29	5	11	3	30	9	7	31	25	35	4	20	-23	16	-1	23	21	39	-0	32	-3	52	0	38	-7	10	-1	56	18	22	-0	15	-2	5	-1	16	-22	59	-3	18
25	0	29	4	11	3	34	9	7	37	25	47	4	19	-22	43	-1	37	21	39	-0	31	-2	27	0	58	-7	2	-1	56	18	21	-0	15	-2	3	-1	16	-22	58	-3	18
28	0	29	3	11	3	39	9	7	43	25	56	4	18	-21	57	-1	48	21	39	-0	30	-1	4	1	22	-6	55	-1	56	18	21	-0	15	-2	1	-1	16	-22	57	-3	18
31	0	29	3	11	3	44	9	7	49	26	3	4	16	-20	59	-1	57	21	39	-0	30	0	19	1	48	-6	47	-1	56	18	21	-0	15	-1	59	-1	16	-22	56	-3	19
फर. 1	0	29	3	11	3	46	9	7	51	26	5	4	15	-20	36	-1	59	21	39	-0	30	0	46	1	56	-6	44	-1	55	18	21	-0	15	-1	58	-1	16	-22	56	-3	19
4	0	29	4	11	3	51	9	7	56	26	10	4	13	-19	20	-2	4	21	39	-0	29	2	6	2	24	-6	37	-1	55	18	21	-0	14	-1	56	-1	16	-22	55	-3	19
7	0	29	5	11	3	56	9	8	2	26	13	4	9	-17	51	-2	5	21	40	-0	28	3	23	2	52	-6	29	-1	55	18	22	-0	14	-1	54	-1	16	-22	54	-3	19
10	0	29	6	11	4	2	9	8	8	26	14	4	5	-16	9	-2	2	21	41	-0	28	4	38	3	21	-6	20	-1	55	18	22	-0	14	-1	52	-1	16	-22	53	-3	20
13	0	29	8	11	4	8	9	8	13	26	14	4	0	-14	13	-1	55	21	42	-0	27	5	48	3	52	-6	12	-1	55	18	23	-0	14	-1	49	-1	16	-22	52	-3	20
16	0	29	10	11	4	14	9	8	19	26	12	3	56	-12	6	-1	43	21	44	-0	26	6	54	4	23	-6	4	-1	55	18	23	-0	14	-1	47	-1	16	-22	51	-3	20
19	0	29	13	11	4	20	9	8	24	26	9	3	51	-9	46	-1	25	21	45	-0	26	7	55	4	55	-5	55	-1	55	18	24	-0	14	-1	44	-1	16	-22	50	-3	21
22	0	29	16	11	4	26	9	8	29	26	5	3	45	-7	18	-1	2	21	47	-0	25	8	49	5	28	-5	47	-1	55	18	25	-0	14	-1	42	-1	16	-22	49	-3	21
25	0	29	20	11	4	32	9	8	34	25	59	3	40	-4	43	-0	33	21	49	-0	25	9	37	6	0	-5	38	-1	55	18	26	-0	14	-1	39	-1	16	-22	48	-3	21
28	0	29	24	11	4	39	9	8	39	25	53	3	34	-2	7	0	1	21	51	-0	24	10	16	6	32	-5	30	-1	55	18	27	-0	14	-1	37	-1	16	-22	48	-3	22
मार्च 1	0	29	26	11	4	41	9	8	41	25	51	3	33	-1	16	0	14	21	52	-0	24	10	27	6	42	-5	27	-1	55	18	27	-0	14	-1	36	-1	16	-22	47	-3	22
4	0	29	30	11	4	48	9	8	45	25	44	3	27	1	11	0	54	21	55	-0	23	10	53	7	12	-5	18	-1	55	18	29	-0	14	-1	33	-1	16	-22	47	-3	22
7	0	29	36	11	4	54	9	8	50	25	36	3	22	3	21	1	35	21	57	-0	23	11	7	7	39	-5	9	-1	55	18	30	-0	14	-1	31	-1	16	-22	46	-3	23
10	0	29	41	11	5	1	9	8	54	25	27	3	16	5	5	2	16	22	0	-0	22	11	9	8	2	-5	1	-1	55	18	31	-0	14	-1	28	-1	16	-22	45	-3	23
13	0	29	47	11	5	8	9	8	59	25	18	3	11	6	17	2	51	22	3	-0	22	10	57	8	20	-4	52	-1	55	18	33	-0	14	-1	25	-1	16	-22	45	-3	24
16	0	29	53	11	5	15	9	9	3	25	7	3	6	6	49	3	18	22	6	-0	21	10	32	8	31	-4	43	-1	55	18	35	-0	14	-1	23	-1	16	-22	44	-3	24
19	0	29	60	11	5	21	9	9	6	24	56	3	1	6	40	3	31	22	9	-0	21	9	54	8	34	-4	35	-1	55	18	36	-0	14	-1	20	-1	16	-22	44	-3	25
22	1	0	7	11	5	28	9	9	10	24	45	2	56	5	52	3	28	22	13	-0	20	9	5	8	29	-4	26	-1	55	18	38	-0	14	-1	17	-1	16	-22	44	-3	25
25	1	0	14	11	5	35	9	9	14	24	32	2	51	4	35	3	9	22	16	-0	20	8	8	8	15	-4	18	-1	56	18	40	-0	13	-1	14	-1	16	-22	43	-3	26
28	1	0	22	11	5	42	9	9	17	24	19	2	46	3	2	2	36	22	19	-0	19	7	5	7	53	-4	9	-1	56	18	42	-0	13	-1	12	-1	16	-22	43	-3	26
31	1	0	30	11	5	49	9	9	20	24	5	2	41	1	28	1	52	22	23	-0	19	6	0	7	25	-4	1	-1	56	18	44	-0	13	-1	9	-1	16	-22	43	-3	27

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेपच्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेपच्यून				प्लूटो			
										क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
2025 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
अप्रेल 1	1	0	33	11	5	51	9	9	21	24	0	2	40	0	59	1	37	22	24	-0	18	5	39	7	14	-3	58	-1	56	18	44	-0	13	-1	8	-1	16	-22	43	-3	27
4	1	0	41	11	5	57	9	9	23	23	45	2	35	-0	18	0	49	22	27	-0	18	4	37	6	39	-3	50	-1	56	18	47	-0	13	-1	6	-1	16	-22	43	-3	27
7	1	0	50	11	6	4	9	9	26	23	29	2	31	-1	13	0	3	22	30	-0	18	3	40	6	0	-3	42	-1	57	18	49	-0	13	-1	3	-1	16	-22	43	-3	28
10	1	0	59	11	6	11	9	9	28	23	12	2	27	-1	45	-0	40	22	34	-0	17	2	50	5	20	-3	34	-1	57	18	51	-0	13	-1	1	-1	16	-22	43	-3	29
13	1	1	8	11	6	17	9	9	30	22	54	2	23	-1	55	-1	16	22	37	-0	17	2	9	4	40	-3	26	-1	57	18	53	-0	13	-0	58	-1	16	-22	43	-3	29
16	1	1	17	11	6	23	9	9	31	22	36	2	18	-1	43	-1	47	22	40	-0	16	1	36	4	0	-3	18	-1	58	18	55	-0	13	-0	56	-1	16	-22	43	-3	30
19	1	1	27	11	6	30	9	9	33	22	16	2	15	-1	12	-2	12	22	43	-0	16	1	13	3	21	-3	10	-1	58	18	58	-0	13	-0	53	-1	16	-22	43	-3	30
22	1	1	36	11	6	36	9	9	34	21	56	2	11	-0	23	-2	31	22	47	-0	15	0	58	2	44	-3	3	-1	59	19	0	-0	13	-0	51	-1	16	-22	43	-3	31
25	1	1	46	11	6	42	9	9	35	21	34	2	7	0	40	-2	44	22	50	-0	15	0	52	2	9	-2	55	-1	59	19	2	-0	13	-0	49	-1	16	-22	43	-3	31
28	1	1	56	11	6	47	9	9	36	21	12	2	3	1	58	-2	51	22	52	-0	15	0	54	1	38	-2	48	-2	0	19	5	-0	13	-0	46	-1	17	-22	44	-3	32
मई 1	1	2	6	11	6	53	9	9	36	20	48	2	0	3	27	-2	53	22	55	-0	14	1	4	1	6	-2	42	-2	0	19	7	-0	13	-0	44	-1	17	-22	44	-3	32
4	1	2	17	11	6	59	9	9	36	20	24	1	56	5	7	-2	49	22	58	-0	14	1	20	0	37	-2	35	-2	1	19	10	-0	13	-0	42	-1	17	-22	45	-3	33
7	1	2	27	11	7	4	9	9	36	19	59	1	53	6	56	-2	41	23	0	-0	14	1	43	0	11	-2	28	-2	1	19	12	-0	13	-0	40	-1	17	-22	45	-3	34
10	1	2	37	11	7	9	9	9	36	19	32	1	50	8	53	-2	27	23	3	-0	13	2	11	-0	13	-2	22	-2	2	19	14	-0	13	-0	38	-1	17	-22	46	-3	34
13	1	2	48	11	7	14	9	9	35	19	5	1	46	10	55	-2	9	23	5	-0	13	2	45	-0	35	-2	16	-2	2	19	17	-0	13	-0	36	-1	17	-22	47	-3	35
16	1	2	58	11	7	18	9	9	34	18	37	1	43	13	2	-1	47	23	7	-0	12	3	23	-0	54	-2	10	-2	3	19	19	-0	13	-0	35	-1	17	-22	47	-3	35
19	1	3	9	11	7	23	9	9	33	18	8	1	40	15	11	-1	20	23	9	-0	12	4	4	-1	12	-2	5	-2	4	19	22	-0	13	-0	33	-1	17	-22	48	-3	36
22	1	3	19	11	7	27	9	9	32	17	38	1	37	17	19	-0	51	23	10	-0	12	4	50	-1	28	-2	0	-2	4	19	24	-0	13	-0	31	-1	17	-22	49	-3	36
25	1	3	30	11	7	31	9	9	30	17	7	1	34	19	20	-0	20	23	12	-0	11	5	38	-1	42	-1	55	-2	5	19	26	-0	13	-0	30	-1	18	-22	50	-3	37
28	1	3	40	11	7	35	9	9	29	16	35	1	31	21	11	0	12	23	13	-0	11	6	28	-1	55	-1	50	-2	5	19	29	-0	13	-0	29	-1	18	-22	51	-3	37
31	1	3	50	11	7	38	9	9	27	16	2	1	28	22	46	0	42	23	14	-0	11	7	21	-2	6	-1	46	-2	6	19	31	-0	13	-0	27	-1	18	-22	52	-3	38
जून 1	1	3	54	11	7	39	9	9	26	15	51	1	27	23	13	0	52	23	15	-0	11	7	39	-2	9	-1	44	-2	6	19	32	-0	13	-0	27	-1	18	-22	52	-3	38
4	1	4	4	11	7	42	9	9	24	15	17	1	24	24	19	1	18	23	15	-0	10	8	34	-2	18	-1	40	-2	7	19	34	-0	13	-0	26	-1	18	-22	53	-3	39
7	1	4	14	11	7	45	9	9	21	14	42	1	22	25	1	1	39	23	16	-0	10	9	29	-2	25	-1	37	-2	8	19	36	-0	13	-0	25	-1	18	-22	54	-3	39
10	1	4	24	11	7	48	9	9	19	14	7	1	19	25	18	1	53	23	17	-0	10	10	25	-2	31	-1	34	-2	9	19	39	-0	13	-0	24	-1	18	-22	55	-3	40
13	1	4	34	11	7	50	9	9	16	13	30	1	16	25	12	2	0	23	17	-0	10	11	22	-2	35	-1	31	-2	9	19	41	-0	13	-0	23	-1	18	-22	56	-3	40
16	1	4	44	11	7	52	9	9	13	12	53	1	13	24	47	2	1	23	17	-0	9	12	18	-2	39	-1	28	-2	10	19	43	-0	13	-0	23	-1	19	-22	58	-3	40
19	1	4	53	11	7	54	9	9	9	12	15	1	11	24	4	1	56	23	16	-0	9	13	13	-2	41	-1	26	-2	11	19	45	-0	13	-0	22	-1	19	-22	59	-3	41
22	1	5	3	11	7	55	9	9	6	11	36	1	8	23	9	1	44	23	16	-0	9	14	8	-2	41	-1	24	-2	12	19	47	-0	13	-0	22	-1	19	-23	0	-3	41
25	1	5	12	11	7	56	9	9	3	10	57	1	6	22	3	1	26	23	15	-0	8	15	1	-2	41	-1	22	-2	13	19	49	-0	13	-0	21	-1	19	-23	1	-3	42
28	1	5	21	11	7	57	9	8	59	10	17	1	3	20	50	1	3	23	14	-0	8	15	53	-2	40	-1	21	-2	13	19	51	-0	13	-0	21	-1	19	-23	3	-3	42

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन् 2025 ई.	यूरेनस रा.	अं.	क.	नेपच्यून रा.	अं.	क.	प्लूटो रा.	अं.	क.	मंगल क्रांति अं.	क.	मंगल शर अं.	क.	बुध क्रांति अं.	क.	बुध शर अं.	क.
जुलाई 1	1	5	30	11	7	57	9	8	55	9	36	1	1	19	33	0	34
4	1	5	38	11	7	58	9	8	51	8	54	0	58	18	14	0	2
7	1	5	46	11	7	58	9	8	47	8	12	0	56	16	57	-0	35
10	1	5	54	11	7	57	9	8	43	7	30	0	54	15	43	-1	15
13	1	6	2	11	7	57	9	8	39	6	46	0	51	14	37	-1	57
16	1	6	9	11	7	56	9	8	35	6	3	0	49	13	40	-2	40
19	1	6	16	11	7	54	9	8	31	5	18	0	47	12	57	-3	22
22	1	6	23	11	7	53	9	8	27	4	34	0	44	12	30	-4	1
25	1	6	29	11	7	51	9	8	22	3	49	0	42	12	22	-4	32
28	1	6	35	11	7	49	9	8	18	3	3	0	40	12	32	-4	52
31	1	6	41	11	7	47	9	8	14	2	17	0	38	13	1	-4	58
अगस्त 1	1	6	42	11	7	46	9	8	12	2	2	0	37	13	14	-4	56
4	1	6	47	11	7	43	9	8	8	1	16	0	35	14	1	-4	41
7	1	6	52	11	7	41	9	8	4	0	29	0	33	14	54	-4	11
10	1	6	56	11	7	37	9	7	60	-0	17	0	30	15	47	-3	29
13	1	7	0	11	7	34	9	7	56	-1	4	0	28	16	33	-2	40
16	1	7	3	11	7	31	9	7	52	-1	51	0	26	17	7	-1	49
19	1	7	6	11	7	27	9	7	48	-2	38	0	24	17	23	-0	59
22	1	7	9	11	7	23	9	7	44	-3	25	0	22	17	18	-0	12
25	1	7	11	11	7	19	9	7	41	-4	12	0	20	16	47	0	28
28	1	7	13	11	7	15	9	7	37	-4	59	0	18	15	49	1	1
31	1	7	14	11	7	10	9	7	34	-5	46	0	16	14	27	1	25
सितं 1	1	7	14	11	7	9	9	7	33	-6	2	0	15	13	55	1	31
4	1	7	15	11	7	4	9	7	30	-6	49	0	13	12	5	1	43
7	1	7	15	11	6	59	9	7	27	-7	35	0	11	10	1	1	47
10	1	7	14	11	6	55	9	7	24	-8	21	0	9	7	46	1	45
13	1	7	14	11	6	50	9	7	22	-9	7	0	7	5	26	1	38
16	1	7	12	11	6	45	9	7	19	-9	53	0	5	3	4	1	26
19	1	7	11	11	6	40	9	7	17	-10	38	0	3	0	41	1	12
22	1	7	9	11	6	35	9	7	15	-11	23	0	1	-1	40	0	54
25	1	7	6	11	6	30	9	7	14	-12	7	-0	1	-3	58	0	35
28	1	7	3	11	6	25	9	7	12	-12	50	-0	3	-6	12	0	15

तारीख सन् 2025 ई.	गुरु क्रांति अं.	क.	गुरु शर अं.	क.	शुक्र क्रांति अं.	क.	शुक्र शर अं.	क.	शनि क्रांति अं.	क.	शनि शर अं.	क.
जुलाई 1	23	13	-0	8	18	42	-2	38	-1	20	-2	14
4	23	12	-0	7	17	29	-2	34	-1	19	-2	15
7	23	10	-0	7	18	13	-2	30	-1	19	-2	16
10	23	9	-0	7	18	55	-2	25	-1	19	-2	17
13	23	7	-0	7	19	32	-2	20	-1	20	-2	17
16	23	5	-0	6	20	7	-2	13	-1	21	-2	18
19	23	2	-0	6	20	37	-2	7	-1	22	-2	19
22	23	0	-0	6	21	3	-1	59	-1	24	-2	20
25	22	57	-0	6	21	24	-1	51	-1	26	-2	21
28	22	54	-0	5	21	41	-1	43	-1	28	-2	21
31	22	51	-0	5	21	52	-1	34	-1	31	-2	22
अगस्त 1	22	50	-0	5	21	55	-1	31	-1	32	-2	22
4	22	47	-0	5	22	0	-1	22	-1	35	-2	23
7	22	44	-0	4	22	0	-1	12	-1	38	-2	24
10	22	41	-0	4	21	54	-1	3	-1	42	-2	25
13	22	37	-0	4	21	43	-0	53	-1	46	-2	25
16	22	33	-0	3	21	27	-0	43	-1	50	-2	26
19	22	30	-0	3	21	5	-0	33	-1	54	-2	27
22	22	26	-0	3	20	38	-0	24	-1	59	-2	27
25	22	22	-0	3	20	5	-0	14	-2	4	-2	28
28	22	18	-0	2	19	28	-0	5	-2	9	-2	28
31	22	14	-0	2	18	45	0	5	-2	14	-2	29
सितं 1	22	13	-0	2	18	30	0	8	-2	16	-2	29
4	22	9	-0	2	17	41	0	16	-2	21	-2	29
7	22	5	-0	1	16	48	0	25	-2	27	-2	30
10	22	1	-0	1	15	50	0	33	-2	32	-2	30
13	21	57	-0	1	14	48	0	41	-2	38	-2	30
16	21	53	-0	0	13	43	0	48	-2	44	-2	30
19	21	49	-0	0	12	33	0	55	-2	49	-2	30
22	21	46	0	0	11	21	1	1	-2	55	-2	31
25	21	42	0	1	10	6	1	7	-3	1	-2	31
28	21	39	0	1	8	48	1	13	-3	6	-2	31

तारीख सन् 2025 ई.	यूरेनस क्रांति अं.	क.	यूरेनस शर अं.	क.	नेपच्यून क्रांति अं.	क.	नेपच्यून शर अं.	क.	प्लूटो क्रांति अं.	क.	प्लूटो शर अं.	क.
जुलाई 1	19	53	-0	13	-0	21	-1	19	-23	4	-3	43
4	19	55	-0	13	-0	21	-1	20	-23	5	-3	43
7	19	57	-0	13	-0	21	-1	20	-23	6	-3	43
10	19	58	-0	13	-0	22	-1	20	-23	8	-3	44
13	20	0	-0	13	-0	22	-1	20	-23	9	-3	44
16	20	1	-0	13	-0	22	-1	20	-23	10	-3	44
19	20	3	-0	13	-0	23	-1	20	-23	12	-3	45
22	20	4	-0	13	-0	24	-1	20	-23	13	-3	45
25	20	6	-0	13	-0	25	-1	21	-23	14	-3	45
28	20	7	-0	13	-0	26	-1	21	-23	15	-3	45
31	20	8	-0	13	-0	27	-1	21	-23	16	-3	46
अगस्त 1	20	8	-0	13	-0	27	-1	21	-23	17	-3	46
4	20	9	-0	13	-0	28	-1	21	-23	18	-3	46
7	20	10	-0	13	-0	29	-1	21	-23	19	-3	46
10	20	11	-0	13	-0	31	-1	21	-23	20	-3	46
13	20	12	-0	13	-0	32	-1	21	-23	21	-3	46
16	20	13	-0	13	-0	34	-1	22	-23	22	-3	47
19	20	13	-0	13	-0	35	-1	22	-23	23	-3	47
22	20	14	-0	13	-0	37	-1	22	-23	24	-3	47
25	20	14	-0	13	-0	39	-1	22	-23	25	-3	47
28	20	14	-0	13	-0	40	-1	22	-23	26	-3	47
31	20	15	-0	13	-0	42	-1	22	-23	27	-3	47
सितं 1	20	15	-0	13	-0	43	-1	22	-23	27	-3	47
4	20	15	-0	13	-0	45	-1	22	-23	28	-3	47
7	20	15	-0	13	-0	47	-1	22	-23	29	-3	47
10	20	15	-0	13	-0	49	-1	22	-23	29	-3	47
13	20	15	-0	13	-0	51	-1	22	-23	30	-3	47
16	20	14	-0	13	-0	53	-1	22	-23	30	-3	47
19	20	14	-0	13	-0	55	-1	22	-23	31	-3	47
22	20	14	-0	13	-0	57	-1	22	-23	31	-3	47
25	20	13	-0	13	-0	59	-1	22	-23	32	-3	47
28	20	12	-0	13	-1	1	-1	22	-23	32	-3	47

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेपच्यून			प्लूटो			मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेपच्यून		प्लूटो	
										क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2025 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	1	6	59	11	6	20	9	7	11	-13 33	-0 5	-8 22	-0 6	21 35	0 1	7 27	1 17	-3 12	-2 31	20 12	-0 13	-1 2	-1 22	-23 32	-3 47
4	1	6	56	11	6	15	9	7	10	-14 15	-0 7	-10 26	-0 28	21 32	0 2	6 5	1 21	-3 17	-2 31	20 11	-0 13	-1 4	-1 22	-23 32	-3 47
7	1	6	51	11	6	10	9	7	9	-14 56	-0 9	-12 24	-0 49	21 29	0 2	4 41	1 25	-3 22	-2 30	20 10	-0 13	-1 6	-1 22	-23 32	-3 47
10	1	6	47	11	6	6	9	7	9	-15 37	-0 10	-14 16	-1 10	21 26	0 2	3 15	1 27	-3 27	-2 30	20 9	-0 13	-1 8	-1 22	-23 32	-3 47
13	1	6	42	11	6	1	9	7	9	-16 16	-0 12	-16 0	-1 31	21 24	0 3	1 48	1 30	-3 32	-2 30	20 8	-0 13	-1 10	-1 22	-23 32	-3 47
16	1	6	37	11	5	56	9	7	9	-16 54	-0 14	-17 37	-1 50	21 21	0 3	0 21	1 31	-3 36	-2 30	20 7	-0 13	-1 12	-1 22	-23 32	-3 47
19	1	6	31	11	5	52	9	7	9	-17 32	-0 16	-19 6	-2 8	21 19	0 3	-1 7	1 32	-3 41	-2 30	20 6	-0 13	-1 14	-1 22	-23 32	-3 47
22	1	6	25	11	5	48	9	7	10	-18 8	-0 18	-20 25	-2 24	21 17	0 4	-2 35	1 32	-3 45	-2 29	20 5	-0 13	-1 15	-1 22	-23 32	-3 46
25	1	6	19	11	5	43	9	7	10	-18 43	-0 19	-21 34	-2 37	21 16	0 4	-4 3	1 32	-3 48	-2 29	20 3	-0 13	-1 17	-1 22	-23 32	-3 46
28	1	6	12	11	5	39	9	7	11	-19 16	-0 21	-22 32	-2 47	21 15	0 5	-5 30	1 31	-3 52	-2 28	20 2	-0 13	-1 18	-1 22	-23 31	-3 46
31	1	6	6	11	5	36	9	7	13	-19 48	-0 23	-23 17	-2 53	21 14	0 5	-6 56	1 29	-3 55	-2 28	20 1	-0 13	-1 20	-1 22	-23 31	-3 46
नव. 1	1	6	4	11	5	34	9	7	13	-19 59	-0 24	-23 29	-2 54	21 13	0 5	-7 25	1 28	-3 56	-2 28	20 0	-0 13	-1 20	-1 22	-23 31	-3 46
4	1	5	57	11	5	31	9	7	15	-20 29	-0 25	-23 54	-2 52	21 13	0 6	-8 49	1 26	-3 59	-2 27	19 59	-0 13	-1 22	-1 22	-23 30	-3 46
7	1	5	49	11	5	28	9	7	17	-20 57	-0 27	-24 0	-2 41	21 12	0 6	-10 12	1 23	-4 1	-2 27	19 57	-0 13	-1 23	-1 22	-23 30	-3 46
10	1	5	42	11	5	25	9	7	19	-21 24	-0 29	-23 45	-2 19	21 13	0 6	-11 33	1 19	-4 3	-2 26	19 56	-0 12	-1 24	-1 22	-23 29	-3 46
13	1	5	35	11	5	22	9	7	22	-21 49	-0 30	-23 2	-1 45	21 13	0 7	-12 51	1 15	-4 4	-2 26	19 54	-0 12	-1 25	-1 22	-23 29	-3 46
16	1	5	27	11	5	19	9	7	24	-22 13	-0 32	-21 49	-0 56	21 14	0 7	-14 7	1 11	-4 6	-2 25	19 53	-0 12	-1 26	-1 22	-23 28	-3 46
19	1	5	20	11	5	17	9	7	27	-22 34	-0 34	-20 7	0 4	21 15	0 8	-15 19	1 6	-4 6	-2 25	19 51	-0 12	-1 27	-1 22	-23 27	-3 46
22	1	5	12	11	5	15	9	7	30	-22 54	-0 35	-18 15	1 4	21 16	0 8	-16 28	1 0	-4 7	-2 24	19 49	-0 12	-1 27	-1 21	-23 26	-3 46
25	1	5	5	11	5	13	9	7	34	-23 11	-0 37	-16 39	1 53	21 18	0 9	-17 33	0 55	-4 7	-2 23	19 48	-0 12	-1 28	-1 21	-23 26	-3 46
28	1	4	57	11	5	12	9	7	37	-23 27	-0 38	-15 42	2 23	21 20	0 9	-18 34	0 49	-4 6	-2 23	19 46	-0 12	-1 28	-1 21	-23 25	-3 46
दिसं. 1	1	4	50	11	5	11	9	7	41	-23 40	-0 40	-15 27	2 36	21 22	0 10	-19 30	0 42	-4 6	-2 22	19 45	-0 12	-1 29	-1 21	-23 24	-3 46
4	1	4	42	11	5	10	9	7	45	-23 51	-0 41	-15 49	2 35	21 25	0 10	-20 22	0 36	-4 5	-2 21	19 43	-0 12	-1 29	-1 21	-23 23	-3 46
7	1	4	35	11	5	9	9	7	49	-24 0	-0 43	-16 35	2 24	21 28	0 11	-21 8	0 29	-4 3	-2 21	19 42	-0 12	-1 29	-1 21	-23 22	-3 46
10	1	4	28	11	5	9	9	7	53	-24 7	-0 44	-17 35	2 7	21 31	0 11	-21 48	0 22	-4 1	-2 20	19 40	-0 12	-1 29	-1 21	-23 21	-3 46
13	1	4	21	11	5	9	9	7	58	-24 11	-0 46	-18 41	1 47	21 34	0 11	-22 23	0 15	-3 59	-2 19	19 39	-0 12	-1 29	-1 21	-23 20	-3 46
16	1	4	15	11	5	10	9	8	3	-24 13	-0 47	-19 47	1 25	21 38	0 12	-22 52	0 7	-3 56	-2 19	19 37	-0 12	-1 29	-1 21	-23 19	-3 46
19	1	4	8	11	5	10	9	8	8	-24 13	-0 48	-20 51	1 2	21 41	0 12	-23 15	0 0	-3 53	-2 18	19 36	-0 12	-1 28	-1 20	-23 18	-3 46
22	1	4	2	11	5	11	9	8	13	-24 10	-0 49	-21 49	0 38	21 45	0 13	-23 31	-0 7	-3 50	-2 18	19 35	-0 12	-1 28	-1 20	-23 17	-3 46
25	1	3	56	11	5	13	9	8	18	-24 5	-0 51	-22 39	0 15	21 49	0 13	-23 40	-0 14	-3 46	-2 17	19 33	-0 12	-1 27	-1 20	-23 16	-3 46
28	1	3	51	11	5	14	9	8	23	-23 57	-0 52	-23 20	-0 7	21 53	0 14	-23 44	-0 21	-3 42	-2 16	19 32	-0 12	-1 28	-1 20	-23 15	-3 46
31	1	3	45	11	5	16	9	8	28	-23 47	-0 53	-23 52	-0 27	21 57	0 14	-23 40	-0 28	-3 37	-2 16	19 31	-0 12	-1 25	-1 20	-23 13	-3 46

यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस			नेपच्यून			प्लूटो			मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				यूरेनस				नेपच्यून				प्लूटो			
										क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर		क्रांति		शर	
2026 ई.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	रा.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
जन. 1	1	3	44	11	5	17	9	8	30	-23	43	-0	53	-24	0	-0	34	21	59	0	14	-23	37	-0	30	-3	36	-2	16	19	31	-0	12	-1	25	-1	20	-23	13	-3	45
4	1	3	39	11	5	20	9	8	36	-23	30	-0	55	-24	17	-0	53	22	3	0	15	-23	25	-0	37	-3	31	-2	15	19	30	-0	12	-1	24	-1	20	-23	12	-3	45
7	1	3	34	11	5	22	9	8	41	-23	14	-0	56	-24	23	-1	11	22	7	0	15	-23	6	-0	43	-3	26	-2	14	19	29	-0	12	-1	23	-1	20	-23	11	-3	46
10	1	3	30	11	5	25	9	8	47	-22	56	-0	57	-24	16	-1	26	22	11	0	16	-22	41	-0	49	-3	20	-2	14	19	28	-0	12	-1	22	-1	20	-23	10	-3	47
13	1	3	27	11	5	28	9	8	52	-22	36	-0	58	-23	57	-1	39	22	15	0	16	-22	10	-0	55	-3	14	-2	13	19	27	-0	12	-1	20	-1	19	-23	8	-3	47
16	1	3	24	11	5	32	9	8	58	-22	13	-0	59	-23	25	-1	50	22	19	0	16	-21	32	-1	0	-3	8	-2	13	19	26	-0	12	-1	19	-1	19	-23	7	-3	47
19	1	3	21	11	5	36	9	9	4	-21	48	-0	59	-22	40	-1	59	22	23	0	17	-20	49	-1	5	-3	2	-2	12	19	26	-0	12	-1	17	-1	19	-23	6	-3	47
22	1	3	19	11	5	40	9	9	10	-21	21	-1	0	-21	41	-2	4	22	26	0	17	-20	0	-1	10	-2	56	-2	12	19	25	-0	11	-1	15	-1	19	-23	5	-3	47
25	1	3	17	11	5	44	9	9	15	-20	52	-1	1	-20	28	-2	5	22	30	0	18	-19	6	-1	14	-2	49	-2	11	19	25	-0	11	-1	14	-1	19	-23	4	-3	48
28	1	3	16	11	5	49	9	9	21	-20	21	-1	2	-19	2	-2	3	22	33	0	18	-18	7	-1	18	-2	42	-2	11	19	25	-0	11	-1	12	-1	19	-23	3	-3	48
31	1	3	15	11	5	53	9	9	27	-19	48	-1	2	-17	22	-1	56	22	36	0	18	-17	3	-1	21	-2	35	-2	11	19	25	-0	11	-1	10	-1	19	-23	2	-3	48
फर. 1	1	3	14	11	5	55	9	9	29	-19	36	-1	3	-16	46	-1	53	22	37	0	18	-16	41	-1	22	-2	32	-2	10	19	25	-0	11	-1	9	-1	19	-23	1	-3	48
4	1	3	14	11	6	0	9	9	34	-19	0	-1	3	-14	49	-1	39	22	40	0	19	-15	31	-1	24	-2	25	-2	10	19	25	-0	11	-1	7	-1	19	-23	0	-3	49
7	1	3	14	11	6	5	9	9	40	-18	22	-1	4	-12	41	-1	20	22	42	0	19	-14	18	-1	26	-2	17	-2	10	19	25	-0	11	-1	5	-1	19	-22	59	-3	49
10	1	3	15	11	6	11	9	9	46	-17	43	-1	4	-10	25	-0	54	22	45	0	19	-13	1	-1	27	-2	9	-2	9	19	25	-0	11	-1	3	-1	19	-22	58	-3	49
13	1	3	16	11	6	16	9	9	51	-17	1	-1	5	-8	5	-0	22	22	47	0	19	-11	41	-1	28	-2	1	-2	9	19	25	-0	11	-1	0	-1	19	-22	57	-3	50
16	1	3	18	11	6	22	9	9	57	-16	19	-1	5	-5	47	0	16	22	49	0	20	-10	19	-1	28	-1	53	-2	9	19	26	-0	11	-0	58	-1	19	-22	56	-3	50
19	1	3	20	11	6	28	9	10	2	-15	34	-1	5	-3	40	1	0	22	50	0	20	-8	53	-1	27	-1	45	-2	8	19	26	-0	11	-0	55	-1	19	-22	55	-3	50
22	1	3	23	11	6	34	9	10	7	-14	48	-1	5	-1	55	1	46	22	52	0	20	-7	26	-1	26	-1	36	-2	8	19	27	-0	11	-0	53	-1	18	-22	54	-3	51
25	1	3	26	11	6	41	9	10	12	-14	1	-1	6	-0	43	2	30	22	53	0	20	-5	57	-1	25	-1	28	-2	8	19	28	-0	11	-0	50	-1	18	-22	53	-3	51
28	1	3	29	11	6	47	9	10	17	-13	13	-1	6	-0	10	3	8	22	54	0	21	-4	27	-1	22	-1	19	-2	8	19	28	-0	11	-0	48	-1	18	-22	53	-3	51
मार्च 1	1	3	30	11	6	49	9	10	19	-12	56	-1	6	-0	9	3	18	22	54	0	21	-3	56	-1	22	-1	16	-2	8	19	29	-0	11	-0	47	-1	18	-22	52	-3	52
4	1	3	35	11	6	56	9	10	24	-12	6	-1	6	-0	35	3	38	22	55	0	21	-2	25	-1	18	-1	7	-2	8	19	30	-0	11	-0	44	-1	18	-22	52	-3	52
7	1	3	39	11	7	2	9	10	28	-11	15	-1	6	-1	38	3	40	22	56	0	21	-0	52	-1	15	-0	59	-2	8	19	31	-0	11	-0	42	-1	18	-22	51	-3	53
10	1	3	44	11	7	9	9	10	33	-10	23	-1	6	-3	3	3	23	22	56	0	21	0	40	-1	11	-0	50	-2	8	19	32	-0	11	-0	39	-1	18	-22	50	-3	53
13	1	3	49	11	7	16	9	10	37	-9	30	-1	5	-4	33	2	51	22	56	0	21	2	13	-1	6	-0	41	-2	7	19	33	-0	11	-0	36	-1	18	-22	50	-3	53
16	1	3	55	11	7	22	9	10	41	-8	37	-1	5	-5	55	2	11	22	56	0	22	3	45	-1	1	-0	32	-2	7	19	35	-0	11	-0	34	-1	18	-22	49	-3	54
19	1	4	1	11	7	29	9	10	45	-7	42	-1	5	-7	0	1	26	22	56	0	22	5	17	-0	55	-0	23	-2	7	19	36	-0	10	-0	31	-1	18	-22	49	-3	54
22	1	4	8	11	7	36	9	10	49	-6	47	-1	4	-7	43	0	42	22	55	0	22	6	48	-0	49	-0	14	-2	7	19	37	-0	10	-0	28	-1	18	-22	48	-3	55
25	1	4	15	11	7	43	9	10	52	-5	52	-1	4	-8	4	0	1	22	55	0	22	8	17	-0	43	-0	6	-2	7	19	39	-0	10	-0	26	-1	18	-22	48	-3	55
28	1	4	22	11	7	50	9	10	56	-4	56	-1	3	-8	5	-0	36	22	54	0	22	9	44	-0	36	0	3	-2	8	19	41	-0	10	-0	23	-1	18	-22	48	-3	56
31	1	4	30	11	7	56	9	10	59	-4	0	-1	3	-7	47	-1	9	22	53	0	22	11	10	-0	29	0	12	-2	8	19	42	-0	10	-0	20	-1	18	-22	47	-3	57

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

सूर्य-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.	तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.	तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.	तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.
जनवरी 1		पू.षा.	2	6	53	अप्रैल 14	मेष	अश्वि.	1	3	21	जुलाई 30		पुष्य	4	16	31	नवंबर 13		विशा.	3	6	11
4		पू.षा.	3	13	21	17		अश्वि.	2	13	06	अगस्त 3		आश्ले.	1	4	8	16	वृश्चिक	विशा.	4	13	37
7		पू.षा.	4	19	51	20		अश्वि.	3	23	0	6		आश्ले.	2	15	42	19		अनु.	1	20	56
11		उ.षा.	1	2	22	24		अश्वि.	4	9	1	10		आश्ले.	3	3	12	23		अनु.	2	4	8
14	मकर	उ.षा	2	8	55	27		भर.	1	19	10	13		आश्ले.	4	14	36	26		अनु.	3	11	15
17		उ.षा.	3	15	30	मई 1		भर.	2	5	28	17	सिंह	मघा	1	1	52	29		अनु.	4	18	17
20		उ.षा.	4	22	6	4		भर.	3	15	55	20		मघा	2	13	1	दिसंबर 3		ज्येष्ठा	1	1	14
24		श्रव.	1	4	44	8		भर.	4	2	32	24		मघा	3	0	3	6		ज्येष्ठा	2	8	8
27		श्रव.	2	11	24	11		कृत्ति.	1	13	18	27		मघा	4	10	57	9		ज्येष्ठा	3	14	57
30		श्रव.	3	18	8	15	वृष	कृत्ति.	2	0	12	30		पू.फा.	1	21	44	12		ज्येष्ठा	4	21	40
फरवरी 3		श्रव.	4	0	56	18		कृत्ति.	3	11	13	सितंबर 3		पू.फा.	2	8	25	16	धनु	मूल	1	4	20
6		धनि.	1	7	49	21		कृत्ति.	4	22	19	6		पू.फा.	3	18	59	19		मूल	2	10	55
9		धनि.	2	14	49	25		रोहि.	1	9	31	10		पू.फा.	4	5	25	22		मूल	3	17	28
12	कुम्भ	धनि.	3	21	56	28		रोहि.	2	20	48	13		उ.फा.	1	15	41	25		मूल	4	23	59
16		धनि.	4	5	8	जून 1		रोहि.	3	8	12	17	कन्या	उ.फा.	2	1	47	29		पू.षा.	1	6	30
19		शत.	1	12	26	4		रोहि.	4	19	42	20		उ.फा.	3	11	43	सन् 2026 ई.					
22		शत.	2	19	49	8		मृग.	1	7	18	24		उ.फा.	4	21	30	जनवरी 1		पू.षा.	2	13	2
26		शत.	3	3	19	11		मृग.	2	18	59	27		हस्त	1	7	7	4		पू.षा.	3	19	33
मार्च 1		शत.	4	10	55	15	मिथुन	मृग.	3	6	44	30		हस्त	2	16	36	8		पू.षा.	4	2	4
4		पू.भा.	1	18	40	18		मृग.	4	18	31	अक्तूबर 4		हस्त	3	1	57	11		उ.षा.	1	8	36
8		पू.भा.	2	2	34	22		आर्द्रा	1	6	20	7		हस्त	4	11	9	14	मकर	उ.षा.	2	15	7
11		पू.भा.	3	10	37	25		आर्द्रा	2	18	9	10		चित्रा	1	20	12	17		उ.षा.	3	21	39
14	मीन	पू.भा.	4	18	50	29		आर्द्रा	3	6	0	14		चित्रा	2	5	4	21		उ.षा.	4	4	12
18		उ.भा.	1	3	12	जुलाई 2		आर्द्रा	4	17	53	17	तुला	चित्रा	3	13	46	24		श्रव.	1	10	50
21		उ.भा.	2	11	41	6		पुन.	1	5	48	20		चित्रा	4	22	18	27		श्रव.	2	17	31
24		उ.भा.	3	20	19	9		पुन.	2	17	43	24		स्वाती	1	6	40	31		श्रव.	3	0	18
28		उ.भा.	4	5	4	13		पुन.	3	5	39	27		स्वाती	2	14	54	फरवरी 3		श्रव.	4	7	9
31		रेव.	1	13	59	16	कर्क	पुन.	4	17	32	30		स्वाती	3	23	1	6		धनि.	1	14	4
अप्रैल 3		रेव.	2	23	4	20		पुष्य	1	5	22	नवंबर 3		स्वाती	4	7	0	9		धनि.	2	21	4
7		रेव.	3	8	19	23		पुष्य	2	17	8	6		विशा.	1	14	52	13	कुम्भ	धनि.	3	4	8
10		रेव.	4	17	45	27		पुष्य	3	4	51	9		विशा.	2	22	36	16		धनि.	4	11	17

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

सूर्यचार (सन् 2026 ई.)

तारीख 2026 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि. भा.स्टैं.टा.
फरवरी 19		शत.	1	18	33
23		शत.	2	1	55
26		शत.	3	9	26
मार्च 1		शत.	4	17	6
5		पू.भा.	1	0	53
8		पू.भा.	2	8	49
11		पू.भा.	3	16	52
15	मीन	पू.भा.	4	1	2
18		उ.भा.	1	9	20
21		उ.भा.	2	17	47
25		उ.भा.	3	2	24
28		उ.भा.	4	11	11
31		रेव.	1	20	9

मंगल चार (सन् 2025 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जन. 4		पुष्य	1	6	40
13		पुन.	4	0	13
21	मिथुन	पुन.	3	9	59
30		पुन.	2	20	50
फर. 15		पुन.	1	5	23
24	मार्गी			7	31
मार्च 5		पुन.	2	17	2
23		पुन.	3	1	16
अप्रै. 3	कर्क	पुन.	4	1	25
12		पुष्य	1	6	4
20		पुष्य	2	12	21
28		पुष्य	3	4	19
मई 5		पुष्य	4	10	8
12		आश्ले.	1	8	33
19		आश्ले.	2	1	16

मंगल–चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि. भा.स्टैं.टा.
मई 25		आश्ले.	3	13	18
31		आश्ले.	4	21	23
जून 7	सिंह	मघा	1	2	9
13		मघा	2	4	10
19		मघा	3	3	43
25		मघा	4	1	2
30		पू.फा.	1	20	17
जुला. 6		पू.फा.	2	13	44
12		पू.फा.	3	5	32
17		पू.फा.	4	19	49
23		उ.फा.	1	8	36
28	कन्या	उ.फा.	2	19	58
अग. 3		उ.फा.	3	6	1
8		उ.फा.	4	14	52
13		हस्त	1	22	32
19		हस्त	2	5	2
24		हस्त	3	10	23
29		हस्त	4	14	39
सितं. 3		चित्रा	1	17	52
8		चित्रा	2	20	7
13	तुला	चित्रा	3	21	22
18		चित्रा	4	21	39
23		स्वा.	1	20	57
28		स्वा.	2	19	20
अक्तू. 3		स्वा.	3	16	50
8		स्वा.	4	13	29
13		विशा.	1	9	17
18		विशा.	2	4	15
22		विशा.	3	22	22
27	वृश्चिक	विशा.	4	15	42

तारीख 2025-26 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि. भा.स्टैं.टा.
नवं. 1		अनु.	1	8	17
6		अनु.	2	0	9
10		अनु.	3	15	18
15		अनु.	4	5	44
19		ज्ये.	1	19	29
24		ज्ये.	2	8	34
28		ज्ये.	3	21	3
दिसं. 3		ज्ये.	4	8	56
7	धनु	मूल	1	20	16
12		मूल	2	7	3
16		मूल	3	17	16
21		मूल	4	2	59
25		पू.षा.	1	12	14
29		पू.षा.	2	21	3
सन् 2026 ई.					
जन. 3		पू.षा.	3	5	28
7		पू.षा.	4	13	30
11		उ.षा.	1	21	9
16	मकर	उ.षा.	2	4	27
20		उ.षा.	3	11	26
24		उ.षा.	4	18	9
29		श्रव.	1	0	37
फर. 2		श्रव.	2	6	54
6		श्रव.	3	12	58
10		श्रव.	4	18	52
15		धनि.	1	0	37
19		धनि.	2	6	15
23	कुम्भ	धनि.	3	11	49
27		धनि.	4	17	22

तारीख 2026 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि. भा.स्टैं.टा.
मार्च 3		शत.	1	22	54
8		शत.	2	4	26
12		शत.	3	10	0
16		शत.	4	15	38
20		पू.भा.	1	21	21
25		पू.भा.	2	3	13
29		पू.भा.	3	9	15

बुध–चार (सन् 2025 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जन. 2		ज्ये.	4	0	2
4	धनु	मूल	1	12	3
6		मूल	2	22	6
9		मूल	3	6	42
11		मूल	4	14	7
13		पू.षा.	1	20	36
16		पू.षा.	2	2	16
18		पू.षा.	3	7	9
20		पू.षा.	4	11	20
22		उ.षा.	1	14	49
24	मकर	उ.षा.	2	17	38
26		उ.षा.	3	19	47
28		उ.षा.	4	21	16
30		श्रव.	1	22	4
फर. 1		श्रव.	2	22	11
3		श्रव.	3	21	38

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2025 ई.)

तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.	तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.	तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.	तारीख 2025 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. भा.स्टैं.टा.	मि.
फर. 5		श्रव.	4	20	24	मई 7	मेष	अश्वि.	1	4	6	जुला. 3		पुष्य	4	12	59	अक्तू. 3	तुला	चित्रा	3	0	43
7		धनि.	1	18	32	9		अश्वि.	2	6	10	7		आश्ले.	1	5	45	5		चित्रा	4	7	30
9		धनि.	2	16	1	11		अश्वि.	3	6	12	12		आश्ले.	2	13	24	7		स्वा.	1	12	18
11	कुम्भ	धनि.	3	12	54	13		अश्वि.	4	4	26	18	वक्री			10	14	9		स्वा.	2	18	10
13		धनि.	4	9	14	15		भर.	1	1	2	24		आश्ले.	1	5	59	12		स्वा.	3	1	9
15		शत.	1	5	5	16		भर.	2	20	10	29		पुष्य	4	16	24	14		स्वा.	4	9	24
17		शत.	2	0	30	18		भर.	3	14	1	अग. 3		पुष्य	3	5	52	16		विशा.	1	19	6
18		शत.	3	19	39	20		भर.	4	6	42	11	मार्गी			12	59	19		विशा.	2	6	28
20		शत.	4	14	41	21		कृत्ति.	1	22	18	19		पुष्य	4	0	14	21		विशा.	3	20	5
22		पू.भा.	1	9	50	23	वृष	कृत्ति.	2	13	0	22		आश्ले.	1	4	21	24	वृश्चिक	विशा.	4	12	37
24		पू.भा.	2	5	23	25		कृत्ति.	3	2	57	24		आश्ले.	2	16	0	27		अनु.	1	9	32
26		पू.भा.	3	1	49	26		कृत्ति.	4	16	14	26		आश्ले.	3	20	8	30		अनु.	2	14	0
27	मीन	पू.भा.	4	23	45	28		रोहि.	1	5	5	28		आश्ले.	4	19	48	नवं. 3		अनु.	3	11	6
मार्च 2		उ.भा.	1	0	14	29		रोहि.	2	17	35	30	सिंह	मघा	1	16	44	10	वक्री			0	32
4		उ.भा.	2	5	1	31		रोहि.	3	5	57	सितं. 1		मघा	2	11	51	15		अनु.	2	17	29
6		उ.भा.	3	18	26	जून 1		रोहि.	4	18	21	3		मघा	3	5	57	18		अनु.	1	16	27
10		उ.भा.	4	4	13	3		मृग.	1	6	56	4		मघा	4	23	26	21		विशा.	4	4	15
15	वक्री			12	16	4		मृग.	2	19	55	6		पू.फा.	1	16	43	23	तुला	विशा.	3	20	26
21		उ.भा.	3	3	9	6	मिथुन	मृग.	3	9	27	8		पू.फा.	2	10	2	28		विशा.	2	15	48
25		उ.भा.	2	2	6	7		मृग.	4	23	44	10		पू.फा.	3	3	35	29	मार्गी			23	8
29		उ.भा.	1	4	11	9		आर्द्रा	1	14	57	11		पू.फा.	4	21	33	दिसं. 1		विशा.	3	8	43
अप्रै. 3		पू.भा.	4	18	42	11		आर्द्रा	2	7	15	13		उ.फा.	1	16	2	6	वृश्चिक	विशा.	4	20	26
7	मार्गी			16	38	13		आर्द्रा	3	0	54	15	कन्या	उ.फा.	2	11	8	10		अनु.	1	2	28
11		उ.भा.	1	17	30	14		आर्द्रा	4	20	6	17		उ.फा.	3	6	56	12		अनु.	2	21	11
17		उ.भा.	2	17	2	16		पुन.	1	17	3	19		उ.फा.	4	3	30	15		अनु.	3	10	47
21		उ.भा.	3	14	0	18		पुन.	2	16	1	21		हस्त	1	0	53	17		अनु.	4	21	23
24		उ.भा.	4	19	6	20		पुन.	3	17	25	22		हस्त	2	23	7	20		ज्ये.	1	6	9
27		रेव.	1	15	30	22	कर्क	पुन.	4	21	32	24		हस्त	3	22	12	22		ज्ये.	2	13	37
30		रेव.	2	6	13	25		पुष्य	1	5	3	26		हस्त	4	22	12	24		ज्ये.	3	20	11
मई 2		रेव.	3	16	34	27		पुष्य	2	17	4	28		चित्रा	1	23	6	27		ज्ये.	4	2	5
4		रेव.	4	23	42	30		पुष्य	3	10	44	अक्तू. 1		चित्रा	2	0	56	29	धनु	मूल	1	7	24
																		31		मूल	2	12	13

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

बुध-चार (सन् 2026 ई.)

तारीख 2026 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
					भा.स्टैं.टा.	
जन.	2		मूल	3	16	35
	4		मूल	4	20	30
	6		पू.षा.	1	24	0
	9		पू.षा.	2	3	3
	11		पू.षा.	3	5	38
	13		पू.षा.	4	7	43
	15		उ.षा.	1	9	18
	17	मकर	उ.षा.	2	10	23
	19		उ.षा.	3	10	55
	21		उ.षा.	4	10	56
	23		श्रव.	1	10	24
	25		श्रव.	2	9	21
	27		श्रव.	3	7	49
	29		श्रव.	4	5	49
	31		धनि.	1	3	25
फर.	2		धनि.	2	0	44
	3	कुम्भ	धनि.	3	21	52
	5		धनि.	4	19	2
	7		शत.	1	16	30
	9		शत.	2	14	40
	11		शत.	3	14	7
	13		शत.	4	15	52
	15		पू.भा.	1	21	41
	18		पू.भा.	2	11	35
	21		पू.भा.	3	23	34
	26	वक्री			12	18
मार्च	3		पू.भा.	2	3	32
	7		पू.भा.	1	0	6
	10		शत.	4	7	56
मार्च	14		शत.	3	5	24
	21	मार्गी			1	2
	28		शत.	4	9	31

गुरु-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2026 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
					भा.स्टैं.टा.	
फर.	4	मार्गी			15	11
मार्च	19		रोहि.	4	18	13
अप्रै.	10		मृग.	1	18	55
	28		मृग.	2	18	9
मई	14	मिथुन	मृग.	3	22	36
	30		मृग.	4	4	45
जून	13		आर्द्रा	1	23	29
	28		आर्द्रा	2	14	6
जुला.	13		आर्द्रा	3	7	3
	28		आर्द्रा	4	8	57
अग.	13		पुन.	1	5	6
	30		पुन.	2	10	44
सितं.	19		पुन.	3	13	7
अक्तू.	18	कर्क	पुन.	4	19	43
नवं.	11	वक्री			22	13
दिसं.	5	मिथुन	पुन.	3	17	27
जन.	4		पुन.	2	18	43
	30		पुन.	1	11	51
मार्च	11	मार्गी			9	1

शुक्र-चार (सन् 2025 ई.)

तारीख 2025 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
					भा.स्टैं.टा.	
जन.	1		धनि.	4	1	37
	4		शत.	1	4	38
	7		शत.	2	8	53
	10		शत.	3	14	36

तारीख 2025 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
					भा.स्टैं.टा.	
जन.	13		शत.	4	22	5
	17		पू.भा.	1	7	41
	20		पू.भा.	2	19	53
	24		पू.भा.	3	11	21
	28	मीन	पू.भा.	4	7	0
फर.	1		उ.भा.	1	8	25
	5		उ.भा.	2	18	13
	10		उ.भा.	3	17	46
	16		उ.भा.	4	21	7
मार्च	2	वक्री			6	7
	14		उ.भा.	3	22	26
	20		उ.भा.	2	18	56
	26		उ.भा.	1	3	3
अप्रै.	1		पू.भा.	4	4	45
	13	मार्गी			6	33
	25		उ.भा.	1	23	40
मई	2		उ.भा.	2	11	38
	7		उ.भा.	3	16	52
	12		उ.भा.	4	7	20
	16		रेव.	1	12	48
	20		रेव.	2	12	9
	24		रेव.	3	7	3
	27		रेव.	4	22	37
	31	मेष	अश्वि.	1	11	33
जून	3		अश्वि.	2	22	22
	7		अश्वि.	3	7	25
	10		अश्वि.	4	14	58
	13		भर.	1	21	13
	17		भर.	2	2	21
	20		भर.	3	6	29
	23		भर.	4	9	46

तारीख 2025 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
					भा.स्टैं.टा.	
जून	26		कृत्ति.	1	12	18
	29	वृष	कृत्ति.	2	14	10
जुला.	2		कृत्ति.	3	15	27
	5		कृत्ति.	4	16	11
	8		रोहि.	1	16	25
	11		रोहि.	2	16	11
	14		रोहि.	3	15	30
	17		रोहि.	4	14	24
	20		मृग.	1	12	56
	23		मृग.	2	11	6
	26	मिथुन	मृग.	3	8	57
	29		मृग.	4	6	30
अग.	1		आर्द्रा	1	3	45
	4		आर्द्रा	2	0	44
	6		आर्द्रा	3	21	28
	9		आर्द्रा	4	17	56
	12		पुन.	1	14	8
	15		पुन.	2	10	6
	18		पुन.	3	5	50
	21	कर्क	पुन.	4	1	20
	23		पुष्य	1	20	37
	26		पुष्य	2	15	42
	29		पुष्य	3	10	36
सितं.	1		पुष्य	4	5	19
	3		आश्ले.	1	23	52
	6		आश्ले.	2	18	13
	9		आश्ले.	3	12	25
	12		आश्ले.	4	6	26
	15	सिंह	मघा	1	0	17
	17		मघा	2	17	58
	20		मघा	3	11	31
	23		मघा	4	4	55

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार (1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

शुक्र-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
सितं.	25		पू.फा.	1	22	11
	28		पू.फा.	2	15	20
अक्तू.	1		पू.फा.	3	8	22
	4		पू.फा.	4	1	17
	6		उ.फा.	1	18	6
	9	कन्या	उ.फा.	2	10	48
	12		उ.फा.	3	3	24
	14		उ.फा.	4	19	55
	17		हस्त	1	12	19
	20		हस्त	2	4	38
	22		हस्त	3	20	53
	25		हस्त	4	13	4
	28		चित्रा	1	5	11
	30		चित्रा	2	21	14
नवं.	2	तुला	चित्रा	3	13	15
	5		चित्रा	4	5	12
	7		स्वा.	1	21	7
	10		स्वा.	2	12	59
	13		स्वा.	3	4	48
	15		स्वा.	4	20	34
	18		विशा.	1	12	18
	21		विशा.	2	4	1
	23		विशा.	3	19	42

तारीख 2025 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
नवं.	26	वृश्चिक	विशा.	4	11	21
	29		अनु.	1	3	0
दिसं.	1		अनु.	2	18	39
	4		अनु.	3	10	16
	7		अनु.	4	1	53
	9		ज्ये.	1	17	29
	12		ज्ये.	2	9	4
	15		ज्ये.	3	0	38
	17		ज्ये.	4	16	12
	20	धनु	मूल	1	7	45
	22		मूल	2	23	18
	25		मूल	3	14	51
	28		मूल	4	6	25
	30		पू.षा.	1	22	0

सन् 2026 ई.

जन.	2		पू.षा.	2	13	34
	5		पू.षा.	3	5	10
	7		पू.षा.	4	20	45
	10		उ.षा.	1	12	21
	13	मकर	उ.षा.	2	3	58
	15		उ.षा.	3	19	34
	18		उ.षा.	4	11	11

तारीख 2026 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
जन.	21		श्रव.	1	2	50
	23		श्रव.	2	18	29
	26		श्रव.	3	10	10
	29		श्रव.	4	1	53
	31		धनि.	1	17	37
फर.	3		धनि.	2	9	23
	6	कुम्भ	धनि.	3	1	11
	8		धनि.	4	17	0
	11		शत.	1	8	52
	14		शत.	2	0	45
	16		शत.	3	16	40
	19		शत.	4	8	37
	22		पू.भा.	1	0	37
	24		पू.भा.	2	16	40
	27		पू.भा.	3	8	46
मार्च	2	मीन	पू.भा.	4	0	56
	4		उ.भा.	1	17	10
	7		उ.भा.	2	9	27
	10		उ.भा.	3	1	47
	12		उ.भा.	4	18	11
	15		रेव.	1	10	38
	18		रेव.	2	3	9
	20		रेव.	3	19	44
	23		रेव.	4	12	24
	26	मेष	अश्वि.	1	5	8
	28		अश्वि.	2	21	58
	31		अश्वि.	3	14	53

शनि-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025 ई.		राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
फर.	2		पू.भा.	2	7	27
मार्च	2		पू.भा.	3	18	5
	29	मीन	पू.भा.	4	21	43
अप्रै.	28		उ.भा.	1	8	19
जून	7		उ.भा.	2	14	5
जुला.	13	वक्री			9	38
अग.	18		उ.भा.	1	13	19
अक्तू.	3		पू.भा.	4	23	43
नवं.	28	मार्गी			9	23

सन् 2026 ई.

जन.	20		उ.भा.	1	10	51
फर.	22		उ.भा.	2	3	9
मार्च	21		उ.भा.	3	15	2

राहु-चार (सन् 2025-26 ई.)

जन.	13		उ.भा.	1	0	8
मार्च	16		पू.भा.	4	21	45
मई	18	कुम्भ	पू.भा.	3	19	29
जुला.	20		पू.भा.	2	16	43
सितं.	21		पू.भा.	1	14	24
नवं.	23		शत.	4	12	5
जन.	25		शत.	3	9	20
मार्च	29		शत.	2	7	4

ग्रहों के निरयण राशि-नक्षत्रचरण-चार
(1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

केतु-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025-26 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
जन. 13		उ.फा.	3	0	8
मार्च 16		उ.फा.	2	21	45
मई 18	सिंह	उ.फा.	1	19	29
जुला. 20		पू.फा.	4	16	43
सितं. 21		पू.फा.	3	14	24
नवं. 23		पू.फा.	2	12	5
जन. 25		पू.फा.	1	9	20
मार्च 29		मघा	4	7	4

नेप्च्यून-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025-26 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
जन. 15		उ.भा.	1	2	0
अप्रै. 24		उ.भा.	2	8	59
जुला. 5	वक्री			3	8
सितं. 19		उ.भा.	1	5	4
दिसं. 10	मार्गी			17	39
फर. 24		उ.भा.	2	21	52

यूरेनस-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025-26 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
जन. 30	मार्गी			21	53
मार्च 19	वृष	कृत्ति.	2	5	44
मई 22		कृत्ति.	3	11	30
जुला. 30		कृत्ति.	4	21	52
सितं. 6	वक्री			10	22
अक्तू. 14		कृत्ति.	3	8	13
जन. 20		कृत्ति.	2	9	56
फर. 4	मार्गी			8	4
फर. 19		कृत्ति.	3	4	32

प्लूटो-चार (सन् 2025-26 ई.)

तारीख 2025-26 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. भा.स्टैं.टा.
मई 4	वक्री			20	53
अक्तू. 14	मार्गी			8	20
फर. 18		श्रव.	1	3	2
--	--	--	--		--

ग्रहों के वक्र-मार्ग / उदयास्त की तारीखें
(1 जनवरी, 2025 से 19 मार्च, 2026 ई. तक)

ग्रह	वक्र/मार्ग	तारीख
मंगल	मार्गी	24 फर., 2025 ई.
नोटः- सं. 2082 वि. में मंगल सारा साल मार्गी रहेगा।		
बुध	वक्री	15 मार्च, 2025 ई.
बुध	मार्गी	7 अप्रै., 2025 ई.
बुध	वक्री	18 जुला., 2025 ई.
बुध	मार्गी	11 अग., 2025 ई.
बुध	वक्री	10 नवं., 2025 ई.
बुध	मार्गी	29 नवं., 2025 ई.
बुध	वक्री	26 फर., 2026 ई.
बुध	मार्गी	21 मार्च, 2026 ई.
गुरु	मार्गी	4 फर., 2025 ई.
गुरु	वक्री	11 नवं., 2025 ई.
गुरु	मार्गी	11 मार्च, 2026 ई.
शुक्र	वक्री	2 मार्च, 2025 ई.
शुक्र	मार्गी	13 अप्रै., 2025 ई.
शनि	वक्री	13 जुला., 2025 ई.
शनि	मार्गी	28 नवं., 2025 ई.
यूरेनस	मार्गी	30 जन., 2025 ई.
यूरेनस	वक्री	6 सितं., 2025 ई.
यूरेनस	मार्गी	4 फर., 2026 ई.
नेप्च्यून	वक्री	5 जुला., 2025 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	10 दिसं., 2025 ई.
प्लूटो	वक्री	4 मई, 2025 ई.
प्लूटो	मार्गी	14 अक्तू., 2025 ई.

ग्रह	उदय/अस्त	तारीख
मंगल	अस्त	5 नवं., 2025 ई.
मंगल	उदित	26 मार्च, 2026 ई.
बुध	पू. में अस्त	19 जन., 2025 ई.
बुध	प. में उदित	25 फर., 2025 ई.
बुध	प. में अस्त	16 मार्च, 2025 ई.
बुध	पू. में उदित	1 अप्रै., 2025 ई.
बुध	पू. में अस्त	19 मई, 2025 ई.
बुध	प. में उदित	10 जून, 2025 ई.
बुध	प. में अस्त	23 जुला., 2025 ई.
बुध	पू. में उदित	10 अग., 2025 ई.
बुध	पू. में अस्त	30 अग., 2025 ई.
बुध	प. में उदित	30 सितं., 2025 ई.
बुध	प. में अस्त	14 नवं., 2025 ई.
बुध	पू. में उदित	27 नवं., 2025 ई.
बुध	पू. में अस्त	30 दिसं., 2025 ई.
बुध	प. में उदित	8 फर., 2026 ई.
बुध	प. में अस्त	28 फर., 2026 ई.
बुध	पू. में उदित	14 मार्च, 2026 ई.
गुरु	अस्त	10 जून, 2025 ई.
गुरु	उदित	6 जुला., 2025 ई.
शुक्र	पश्चिम में अस्त	20 मार्च, 2025 ई.
शुक्र	पूर्व में उदित	23 मार्च, 2025 ई.
शुक्र	पूर्व में अस्त	13 दिसं., 2025 ई.
शुक्र	पश्चिम में उदित	30 जन., 2026 ई.
शनि	अस्त	23 फर., 2025 ई.
शनि	उदित	30 मार्च, 2025 ई.
शनि	अस्त	7 मार्च, 2026 ई.

विश्व के नगरों का सूर्योदयास्तकाल

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित "गणकमार्त्तण्ड" से उद्धृत)

आज के इस वैज्ञानिक युग में जहां वायुयान जैसे द्रुतगति वाहनों, रेडियो, टी. वी., Wireless, Fax आदि के प्रयोग ने राष्ट्र के नगरों, ग्रामों की दूरी को लगभग समाप्त ही कर डाला है, वहां स्थानीयकाल (या स्थानीय मध्यमकाल L.M.T.) का प्रयोग अनेक समस्याएं उत्पन्न करता है। क्योंकि यह काल प्रत्येक स्थान (नगर–ग्राम) के लिए लगभग भिन्न–भिन्न होता है, अतः आज के वैज्ञानिक नक्षत्रविदों ने एक ऐसे काल का सिद्धान्त अपनाया हैं, जो एक राष्ट्र के नगरों, ग्रामों मे एकरूप में प्रयुक्त होता है। इसी काल को स्टैण्डर्ड टाईम का नाम दिया गया है। अब विश्व के सभी राष्ट्रों मे स्टैं. टा. (स्टैण्डर्ड टाईम) का ही सर्वत्र प्रयोग होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपने क्षेत्र (Area) के किसी लगभग मध्यस्थान (केन्द्रस्थल) के स्थानीयकाल(स्था.म.का.) को, जिसे उस देश का स्टैण्डर्ड टाईम कहा जाता है, अपने समस्त प्रान्तों, नगरों, ग्रामों में सभी जगह एकरूप में प्रयोग में लाता है और उसी काल को उस देश की सभी घड़ियां बतलाती हैं। जैसे–भारत का केन्द्रस्थल, जहां का स्था.म.का. (स्थानीय मध्यमकाल) पूरे भारत में भा. स्टैं. टा. के रूप में प्रयुक्त होता है, 82°/30' (पूर्व) रेखांश वाला स्थल है। जिस स्थल का स्था. म. का. स्टैण्डर्ड टाईम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, उस स्थल के रेखांश (Longitude) को उस देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (Standard Time Meridian) कहा जाता है। इस प्रकार भारत की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन का रेखांश 82°/30' (पूर्व) है।

क्योंकि सभी जनव्यवहार स्टैं. टा. के अनुसार ही होता है, रेलगाड़ियां, वायुयान, टी.वी., रेडियो, ऑफिस, कालेज, स्कूल आदि से सम्बद्ध शत–प्रतिशत कालव्यवहार में इसी (स्टैं.टा.) को ही सरकार एवं जनसाधारण प्रयोग में लाते हैं, अतः यह भी आवश्यक है कि, सूर्योदय, सूर्यास्त को बतलाने वाला काल भी, भले ही वह किसी स्थान (नगर, ग्राम) विशेष से ही सम्बन्ध रखता है, इसी स्टैं. टा. में ही प्रयुक्त किया जाए, अन्यथा इस के लिए स्था.म.का. को प्रयुक्त करने पर इसके (सूर्योदयास्त के) काल का स्टैं. टा. से (जिसे हमारी सभी घड़ियां बतलाती हैं) समन्वय (co-ordination) नहीं हो पाएगा। उदाहरणार्थ – यदि हम प्रत्येक नगर–ग्राम का सूर्योदय, सूर्यास्त उस नगर–ग्राम के स्थानीयकाल में ही इस्तेमाल करने लग जाएं तो हम स्टैं. टा. बतलाने वाली अपनी घडी से उस काल को समझ नहीं सकेंगे; अतः सूर्योदय, सूर्यास्त जैसी स्थानीय घटनाओं को भी हम स्टैं. टा. में ही प्रकट करते हैं, ताकि हम इन स्थानीय आकाशीय घटनाओं के काल को भी अपनी इन (स्टैं. टा. बतलाने वाली) घड़ियों से जान सकें । प्रत्येक देश में रहने वाले लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली घड़ियां उस देश के स्टैं. टा. को ही बतलाया करती हैं,–यह ध्यान में रखें। जैसे–भारतीय जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां भा.स्टैं.टा. को और जापान की जनता द्वारा प्रयोग में लाई जा रही घड़ियां जापानी स्टैं. टा. को बतलाती हैं।

विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्टैं. टा. में जानने के लिए सबसे पहले हमें निम्नलिखित तीन पदार्थ ज्ञात होने चाहिएं:–

(1) अभीष्ट नगर के अक्षांश, रेखांश ।

(2) अभीष्ट नगर, जिस देश में स्थित है, उस देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन।

(3) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर ।

इन तीनों पदार्थों को ज्ञात करने का प्रकार यह है :–

(1) **नगर के अक्षांश–रेखांश** :– अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश–रेखांश किसी प्रामाणिक एटलस से ज्ञात करने होंगे। इसके लिए ऑक्सफोर्ड, मैकमिलन, Britannica एवम् Philip's आदि के एटलसों का प्रयोग किया जा सकता है। इन एटलसों के अन्त में विश्व के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांशों की सूची दी रहती है। यहां हमने आगे अलग से भारत के सभी लगभग 1,000 प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश दिए हैं। यहां विदेशी प्रसिद्ध कुछ नगरों के अक्षांश, रेखांश भी अलग से दिए गए हैं।

(2) **देश की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन** :– यहां आगे हमने 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' दी है। इसमें विश्व के खास–खास अनेक देशों के स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियनों के रेखांश दिए गए हैं। इससे अपने अभीष्ट देश की स्टैं. मेरिडियन के रेखांश ज्ञात कर लें । *जैसे–जापान की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश, जैसा कि सारणी में लिखा है, 135 अंश 00 कला (पूर्व)*

है। अर्थात् जापान में सर्वत्र प्रयोग में लाया जाने वाला जापानी स्टैं. टा. इसी रेखांश वाले स्थान का स्था.म.का. है।

अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि बड़े–बड़े देशों को सुविधार्थ चार–चार, पांच–पांच आदि कालक्षेत्रों (Time Zones) में बांटा गया है। इन कालक्षेत्रों में अलग–अलग स्टैं.टा. प्रयोग में आते हैं। जैसे– अमेरिका 4 कालक्षेत्रों में बंटा है। इन कालक्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कालों (स्टैं. टा) के नाम ये हैं :–

(1) E.T.(Eastern Time)
(2) C.T. (Central Time)
(3) M.T. (Mountain Time)
(4) P.T. (Pacific Time)

यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में इन बड़े देशों के कालक्षेत्रों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियनों के रेखांश अलग–अलग दिए गए हैं। किस कालक्षेत्र में कौन–कौन से नगर/प्रदेश पड़ते हैं, यह जानना भी जरूरी है। जैसे–अमेरिका के कैलिफोर्निया, नेवाडा आदि राज्य 'P.T.' कालक्षेत्र में और डेलावेयर, फ्लोरिडा आदि 'E.T.' कालक्षेत्र में पड़ते हैं। सभी बड़े देशों (अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि) के भिन्न–भिन्न कालक्षेत्रों में पड़ने वाले प्रदेशों का विस्तृत विवरण हमने अपनी **'विश्वलग्न सारणी'** पुस्तक में दिया है। इन बड़े देशों मे उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्री आदि बनाने हेतु वहां के सूर्योदयास्त आदि का स्टैं. टा. जानने के लिए यह ज्ञात करना जरूरी है कि– वह नगर उस बड़े देश के किस ' कालक्षेत्र ' में पड़ता है। उसका कालक्षेत्र जानकर उस कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश **'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी '** से ज्ञात कर लेने चाहिएं। **जैसे**–कोई बच्चा न्यूयार्क (अमेरिका) में उत्पन्न हुआ है। न्यूयार्क E.T.(ईस्टर्न टाईम) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है, अतः इस बच्चे की जन्मपत्री बनाने के लिए "स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' से इस नगर के कालक्षेत्र (E.T.) की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 75°/00' (प.) लेने होंगे। स्टैं. टा. में न्यूयार्क का सूर्योदयास्त जानने के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाएगा । इस स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी 'में यह भी बतलाया गया है कि– इस देश या देश के कालक्षेत्र के टाईम से भा. स्टैं. टा. कितना आगे (+) या पीछे (–) रहता है। इन कालक्षेत्रों के किसी भी नगर में उत्पन्न बच्चे का जन्मकाल (E.T., P.T. आदि) बतलाने वाला व्यक्ति यह भी आपको (दैवज्ञ को) बतलाएगा (अथवा आप स्वयं भी उससे यह पूछ सकते है) कि– बच्चे के जन्म का यह विदेशीकाल भा. स्टैं. टा. से कितना आगे या पीछे रहता है। यह ज्ञात हो जाने पर आप 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में दिए गए उस विदेशी काल और भा.स्टैं.टा. के अन्तर से यह जान सकेंगे कि– उस बच्चे के जन्म का समय उस देश के किस कालक्षेत्र का है। उदाहरणार्थ – मान लीजिए–कोई बच्चा अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को (कैलिफोर्निया) में उत्पन्न हुआ। कैलिफोर्निया अमेरिका के किस कालक्षेत्र में पड़ता है, यह हमें मालूम नहीं है। लेकिन यह हमें ज्ञात है कि– सेनफ्रांसिस्को में इस्तेमाल होने वाला टाईम भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम से 13 घण्टा 30 मिनट पीछे है। इतना ज्ञात होने से हमें मालूम हो जाएगा, कि– सेनफ्रांसिस्को शहर "P.T."(Pacific Time) के कालक्षेत्र में है, क्योंकि यहां दी गई 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में लिखा है कि– अमेरिका देश के "P.T." कालक्षेत्र के टाईम से भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम 13 घण्टा 30 मिनट आगे है।

(3) नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर :–अभीष्ट देश या कालक्षेत्र के स्टैण्डर्ड मेरिडियन ज्ञात हो जाने पर उस देश या कालक्षेत्र के किसी भी नगर का " स्टैण्डर्ड अन्तर " जानना आसान है। अभीष्ट नगर के रेखांश और उस नगर के देश या कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर करने पर जो अंश–कलाएं मिलें, उन्हें 4 से गुणा करें। गुणनफल मिनट और सेकण्ड होंगे (अंशों को 4 से गुणा करने पर मिनट और कलाओं को 4 से गुणा करने पर सैकण्ड मिलेंगे)।

जैसे–टोकियो (जापान) का स्टैण्डर्ड अन्तर ज्ञात करना है । टोकियो के रेखांश 139 अंश 33 कला (पूर्व) हैं और स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी में जापान की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश 135 अंश 00 कला (पूर्व) हैं। इन दोनों रेखांशों का अन्तर 4 अंश 33 कला है । इसे 4 से गुणा करने पर 18 मिनट 12 सेकण्ड मिले। यह टोकियो का स्टैं. अन्तर है। यदि नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है तो उसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला, अन्यथा ऋण (–) चिह्न वाला होगा। नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है या पश्चिम में, इसका निर्णय मानचित्र (नक्शा) देखकर किया जा सकता है। **वैसे इसे जानने का दूसरा प्रकार यह भी है**– यदि नगर के रेखांश पूर्व दिशा वाले हों और वे रेखांश स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश से अधिक हों तो वह नगर स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में होगा, अन्यथा **पश्चिम में। पश्चिम** रेखांश वाले नगरों के लिए इससे

उल्टा समझना चाहिए। इस नियम से स्पष्ट है कि– टोकियो अपने देश (जापान) की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से पूर्व में है। क्योंकि, इसके रेखांश पूर्व हैं और ये जापान की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन से अधिक हैं, अतः इसका स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला होगा ।

स्टैण्डर्ड अन्तर जानने का एक और उदाहरण – उस नगर का ले लेते हैं, जो अनेक कालक्षेत्रों में बंटी अमेरिका का है। हम यहां लॉस एंजलस का स्टैं. अन्तर निकालेंगे। यह शहर अमेरिका के कैलिफोर्निया स्टेट में स्थित है। इस स्टेट में "P.T." (Pacific Time) प्रयोग में आता है। अर्थात् यह नगर "P.T." कालक्षेत्र में पड़ता है। 'स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी' में "P.T." कालक्षेत्र की स्टैण्डर्ड मेरिडियन के रेखांश 120 अंश 00 कला (प.) हैं । लॉस एंजलस के रेखांश 118 अंश 17 कला (प.) हैं। इन दोनों का अन्तर 1 अंश 43 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 6 मिनट 52 सेकण्ड मिले । यह लॉस एंजलस का स्टैं. अन्तर है। क्योंकि, लॉस एंजलस अपने कालक्षेत्र की स्टैं. मेरिडियन से पूर्व में स्थित है, अतः इसके स्टैं. अन्तर का चिह्न धन (+) होगा।

यहां हमने 'स्थानीय मध्यमकाल' **(L.M.T.)** और क्षेत्रीय स्टैं. टा. के अन्तर को 'स्टैण्डर्ड अन्तर' (स्टैं. अं.) की संज्ञा दी है। भारत के सभी (लगभग 1,000) प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर तथा विदेशी प्रसिद्ध नगरों के स्टैं. अन्तर भी इनके अक्षांश–रेखांशों के साथ अलग–अलग कोष्ठकों में दिए गए हैं।

स्टैं. टा. में सूर्योदयास्तकाल जानना

उपरोक्त तीन पदार्थ (अक्षांश, स्टैं. टाईम मेरिडियन, स्टैं. अन्तर) ज्ञात हो जाने पर अभीष्ट नगर का सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल उस देश या कालक्षेत्र के स्टैं. टाईम में नीचे लिखे प्रकार से सरलतापूर्वक जाना जा सकता है।

आगे विश्व के सभी अक्षांशों के दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त का स्थानीय मध्यमकाल (स्था. म. का.) बतलाने वाली सूर्योदय एवं सूर्यास्तसारणी दी गई है। इसमें कुछ सूर्योदयास्तकाल 10–10 अक्षांशों के अन्तर पर और कुछ 5–5 तथा अन्य 2–2 अक्षांशों के अन्तर पर दिए गए हैं। ये तीन–तीन दिनों के अन्तर पर हैं। इस सारणी से आप अपने अभीष्ट अक्षांश एवम् तारीख का सूर्योदय–सूर्यास्त मौखिक त्रैराशिक (अनुपात) द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। (गणक मार्त्तण्ड में दी गई सूर्योदय एवम् सूर्यास्तकाल सारणी में एक–एक दिन के अन्तर पर सूर्योदय–सूर्यास्तकाल दिया गया है।)

इस सारणी से प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल स्था.म.का. में होगा, जो जनव्यवहार में नहीं आता। अतः इनमें स्टैं. अन्तर का संस्कार (जोड़, घटाव) करके उन्हें स्टैं. टाईम मे बदलना जरूरी है। क्योंकि– जनव्यवहार में सभी जगह स्टैं. टाईम से ही काम होता है, अतः हमारी घड़ियां भी हमेशा स्टैं. टा. ही बतलाती हैं। यदि अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन (+) चिह्न वाला है तो उसे सूर्योदय, सूर्यास्त के स्था. म. का. में से घटाने, अन्यथा जोड़ने पर सूर्योदय, सूर्यास्तकाल स्थानीय (उस देश / कालक्षेत्र के) स्टैं. टा. में बदल जाएंगे।

सूर्योदय, सूर्यास्त के इस स्टैं टाईम में एक और छोटा सा संस्कार करना होगा। यहां आगे एक **'सूर्य केन्द्र उदयास्त संस्कार सारणी '** दी गई है। इस सारणी से अपनी अभीष्ट तारीख, मास और नगर के अक्षांशों द्वारा संस्कार–मिनट प्राप्त करें। इन्हें सूर्योदयकाल में जोड़ें और सूर्यास्तकाल में से घटाएं। इस प्रकार प्राप्त होने वाला सूर्योदय–सूर्यास्तकाल ज्योतिष–शास्त्रीय (जन्मपत्र आदि की) गणित में इस्तेमाल करने योग्य हो जाएगा। इसी सूर्योदय–सूर्यास्त से जन्मकालिक इष्टकाल आदि बनाना चाहिए।

इस उपरोक्त विधि से उत्तर अक्षांश वाले नगरों का सूर्योदय, सूर्यास्तकाल ज्ञात होता है। दक्षिणी अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए आगे दी गई **"दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी"** प्रयोग में लाइए। जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांशीय नगर का सूर्योदयास्त जानना है, उस 'दक्षिण अक्षांशीय तारीख' के आगे इस सारणी में लिखी 'उ. अक्षांश तारीख' का सूर्योदयास्तकाल " सूर्योदय एवम् सूर्यास्त सारणी " से ज्ञात कर लें। इसमें इस **"दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी"** से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपकी अभीष्ट तारीख का अभीष्ट दक्षिण अक्षांशीय नगर के सूर्योदयास्त का स्था.म.का. ज्ञात हो जाएगा। इसमें अभीष्ट नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर का संस्कार (जोड़–घटाव) पूर्वोक्तवत् कर देने पर सूर्योदयास्त का स्था. म. काल स्टैं. टा. में बदल जाएगा। इनमें 'सूर्यकेंद्रोदयास्त संस्कार सारणी' से प्राप्त मिनटों का भी उपरोक्त प्रकार से संस्कार करना होगा।

स्पष्टता के लिए हम नीचे कुछ उदाहरण दे रहे हैं—

उदाहरण (1) :–लुधियाना (पंजाब) में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार सूर्योदय और सूर्यास्तकाल जानना है। लुधियाना के अक्षांश 30°–55' (उ.) और रेखांश 75°– 54' (पू.) तथा स्टैं. अन्तर –26 मि. 24 से.

है। 1 मार्च को अक्षांश 30°–55' (उ.) का सूर्योदय 6 घं. 27 मि. 43 से. और सूर्यास्त 17 घं. 57 मि. 27 से. सूर्योदय–सूर्यास्तसारणी से अनुपात (त्रैराशिक) द्वारा प्राप्त किए। ये स्था. म. का. में हैं । लुधियाना का स्टैं. अन्तर 26 मि. 24 से. **ऋण** (–). है। अतः स्था. म. का. वाले सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल में इसे चिह्न के विपरीत जोड़ देने पर 6 घं 54 मि. 7 से. और 18 घं. 23 मि. 51 से. मिले, जो लुधियाना में 1 मार्च को भा. स्टैं. टा. के अनुसार क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं। 'सूर्य केंद्रोदयास्त संस्कारसारणी' से 1 मार्च को 30° अक्षांश का संस्कार 3 मि. 41 से. मिला, इसे सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में से घटा देने पर 6 घं. 57 मि. 48से. और 18 घं. 20 मि. 10 से. मिले। जो ज्योतिषशास्त्रीय (इष्टकाल/लग्नादि साधन के लिए उपयोगी) सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हैं।

उदाहरण (2) :– काबुल (अफगानिस्तान) में 10 अप्रैल को सूर्योदय–सूर्यास्तकाल (अफगान स्टैं. टा.) में जनना है। काबुल के अक्षांश 34 अंश 33 कला (उत्तर) और रेखांश 69 अंश 12 कला (पूर्व) हैं। काबुल का स्टैं. अन्तर +6 मिनट 48 से. है (काबुल का यह स्टैं. अं. काबुल के रेखांश और अफगानिस्तान की स्टैं. टाईम मेरिडियन के रेखांशों के अन्तर से पूर्वोक्त विधि द्वारा बनाया गया है)। सूर्योदयास्तसारणी से 10 अप्रैल को 34 अंश 33 कला का सूर्योदय 5 घं. 36 मि. 27 से. और सूर्यास्त 18 घं. 27 मि. 38 से. मिला । यह **स्था. मध्यमकाल** है। इसमें से काबुल का स्टैं. अन्तर 6 मि. 48 से. **धन** (+) होने से चिह्न के विपरीत घटाया, तो 5 घं. 29 मि. 39 से. और 18 घं. 20 मि. 50 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल हुए। **'सूर्यकेन्द्रोदय संस्कारसारणी'** से काबुल के अक्षांश 35 अंश और 10 अप्रैल द्वारा प्राप्त 3 मि. 52 से. सूर्योदय में जोड़ने और सूर्यास्त में से घटाने पर काबुल में 10 अप्रैल को 5 घं. 33 मि. 31 से. और 18 घं. 16 मि. 58 से. क्रमशः सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल प्राप्त हुए। यह काल अफगानिस्तान के स्टैं. टा. में है।

उदाहरण (3) :– न्यूयार्क (U.S.A.) में 1 मार्च को सूर्योदयास्तकाल ज्ञात करना है। न्यूयार्क के अक्षांश 40°/43'(उ.), रेखांश 74°/00' (प.) हैं। न्यूयार्क (अमेरिका) E.T. (Eastern Time) वाले कालक्षेत्र में पड़ता है। E.T. के कालक्षेत्र की स्टैं. टाईम मेरिडियन के रेखांश 75°/00'(प.) हैं। न्यूयार्क और E.T. की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांशों का अन्तर 1 अंश 0 कला है। इसे 4 से गुणा करने पर 4 मि. 00 से. न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर हुआ। न्यूयार्क शहर E.T. (Eastern Time) की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन के रेखांश से पूर्व में स्थित है। इसलिए इसका स्टैं. अन्तर **धन (+)** चिह्न वाला होगा।

अब सूर्योदयास्तसारणी से अक्षांश 40 अंश 43 कला और तारीख 1 मार्च द्वारा सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 35 मि. 43 से. और 17 घं. 50मि. 17 से. प्राप्त किए। इनमें न्यूयार्क का स्टैण्डर्ड अन्तर +4 मिनट चिह्न के विपरीत घटाने पर सूर्योदय और सूर्यास्तकाल क्रमशः 6 घं. 31 मि. 43 से. तथा 17 घं. 46 मि. 17 से. हुए। न्यूयार्क के अक्षांश 41° और 1 मार्च द्वारा 'सूर्य केन्द्रोदय संस्कार सारणी' से प्राप्त 4 मि. 14 से. उपरोक्त नियमानुसार सूर्योदयकाल में जोड़ने और सूर्यास्तकाल में से घटाने पर ज्योतिष–गणितोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्त क्रमशः 6 घं. 35 मि. 57 से. तथा 17 घं. 42 मि. 03 से. हुए। ये काल E.S.T. (Eastern Standard Time) में हैं।

उदाहरण (4) नैरोबी (केन्या, पूर्वी अफ्रीका) में 6 मई को सूर्योदय सूर्यास्तकाल (केन्या स्टैं. टाईम में) जानना है। नैरोबी के अक्षांश 1°/18'(द.) और रेखांश 36°/52' (पू.) हैं। इसका स्टैं. अं. –32 मि. 32 से. है। सूर्योदयास्तसारणी से 1 अंश 18 कला अक्षांश और 8 नवं. से सूर्योदय और सूर्यास्त क्रमशः 5 घं. 41 मि. 34 से. और 17 घं. 45 मि. 26 से. मिले। (ध्यान दें– क्योंकि, नैरोबी के अक्षांश दक्षिण दिशा के हैं, अतः आगे दी गई "दक्षिण अक्षांश संस्कार सारणी" के अनुसार यहां 6 मई के स्थान पर 8 नवं. को प्रयोग में लाया गया है।) अतः इन दोनों उदयास्तकालों में 6 मई का दक्षिण अक्षांश संस्कार +13 मि. चिह्नानुसार जोड़ा तो उदय और अस्तकाल क्रमशः 5 घं. 54 मि. 34 से. और 17 घं. 58 मि. 26 से. हुए। इनमें नैरोबी का स्टैण्डर्ड अन्तर –32 मि. 32 से. चिह्न के विपरीत जोड़ने पर 6 घं. 27 मि. 6 से. और 18 घं. 30 मि. 58 से. केन्या स्टैं. टा. में क्रमशः उदय एवं अस्तकाल हुए। इनमें नैरोबी के अक्षांश 1 अंश और 6 मई द्वारा "सूर्य–केन्द्रोदयास्त संस्कारसारणी" से प्राप्त 3 मि. 17 से. उदयकाल में जोड़ने और अस्तकाल में से घटाने पर 6 घं. 30 मि. 23 से. और 18 घं. 27 मि. 41 से. नैरोबी में 6 मई को लग्नादि साधनोपयोगी सूर्योदय एवं सूर्यास्तकाल निकल आए।

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	5 59	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 19	8 32	8 46	9 03
4	6 01	6 18	6 36	6 57	7 09	7 22	7 39	7 59	8 08	8 19	8 31	8 45	9 02
7	6 02	6 19	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 58	8 07	8 18	8 30	8 43	8 59
10	6 04	6 20	6 37	6 57	7 09	7 22	7 38	7 57	8 06	8 16	8 28	8 41	8 56
13	6 05	6 21	6 38	6 57	7 08	7 21	7 36	7 55	8 04	8 14	8 25	8 38	8 52
16	6 06	6 21	6 38	6 57	7 08	7 20	7 35	7 53	8 02	8 11	8 22	8 34	8 48
19	6 07	6 22	6 38	6 56	7 07	7 19	7 33	7 50	7 59	8 08	8 18	8 30	8 43
22	6 08	6 22	6 38	6 56	7 06	7 17	7 31	7 47	7 56	8 04	8 14	8 25	8 38
25	6 09	6 23	6 38	6 54	7 04	7 15	7 28	7 44	7 52	8 00	8 09	8 20	8 32
28	6 09	6 23	6 37	6 53	7 02	7 13	7 26	7 41	7 48	7 56	8 04	8 14	8 26
31	6 10	6 23	6 36	6 52	7 00	7 11	7 22	7 37	7 43	7 51	7 59	8 08	8 19
फर. 1	6 10	6 23	6 36	6 51	7 00	7 10	7 21	7 35	7 42	7 49	7 57	8 06	8 17
4	6 10	6 22	6 35	6 49	6 58	7 07	7 18	7 31	7 37	7 44	7 51	8 00	8 10
7	6 11	6 22	6 34	6 47	6 55	7 04	7 14	7 26	7 32	7 38	7 45	7 53	8 02
10	6 11	6 21	6 32	6 45	6 52	7 00	7 10	7 22	7 27	7 33	7 39	7 46	7 55
13	6 11	6 21	6 31	6 43	6 49	6 57	7 06	7 16	7 21	7 26	7 32	7 39	7 47
16	6 11	6 20	6 29	6 40	6 46	6 53	7 01	7 11	7 15	7 20	7 26	7 32	7 39
19	6 11	6 19	6 28	6 37	6 43	6 49	6 57	7 05	7 10	7 14	7 19	7 24	7 30
22	6 10	6 18	6 26	6 35	6 40	6 45	6 52	7 00	7 03	7 07	7 12	7 17	7 22
25	6 10	6 17	6 24	6 32	6 36	6 41	6 47	6 54	6 57	7 00	7 04	7 09	7 14
28	6 09	6 15	6 22	6 28	6 32	6 37	6 42	6 48	6 51	6 54	6 57	7 01	7 05
मार्च 1	6 09	6 15	6 21	6 27	6 31	6 35	6 40	6 46	6 48	6 51	6 54	6 58	7 02
4	6 09	6 14	6 18	6 24	6 27	6 31	6 35	6 40	6 42	6 44	6 47	6 50	6 53
7	6 08	6 12	6 16	6 21	6 23	6 26	6 30	6 33	6 35	6 37	6 39	6 42	6 44
10	6 07	6 10	6 14	6 17	6 19	6 21	6 24	6 27	6 28	6 30	6 31	6 33	6 35
13	6 06	6 09	6 11	6 14	6 15	6 17	6 18	6 20	6 21	6 22	6 24	6 25	6 26
16	6 06	6 07	6 09	6 10	6 11	6 12	6 13	6 14	6 15	6 15	6 16	6 16	6 17
19	6 05	6 05	6 06	6 07	6 07	6 07	6 07	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08	6 08
22	6 04	6 04	6 03	6 03	6 03	6 02	6 02	6 01	6 01	6 00	6 00	6 00	5 59
25	6 03	6 02	6 01	5 59	5 58	5 57	5 56	5 54	5 54	5 53	5 52	5 51	5 50
28	6 02	6 00	5 58	5 56	5 54	5 52	5 50	5 48	5 47	5 46	5 44	5 43	5 41
31	6 01	5 58	5 56	5 52	5 50	5 48	5 45	5 41	5 40	5 38	5 36	5 34	5 32

स्थानीय मध्यमकाल = स्था. म. का.

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जन. 1	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 48	15 35	15 21	15 04
4	18 08	17 51	17 34	17 13	17 01	16 47	16 31	16 11	16 02	15 51	15 39	15 25	15 08
7	18 10	17 53	17 36	17 15	17 04	16 50	16 34	16 14	16 05	15 55	15 43	15 30	15 14
10	18 11	17 55	17 38	17 18	17 06	16 53	16 38	16 18	16 09	15 59	15 48	15 35	15 19
13	18 12	17 56	17 39	17 20	17 09	16 56	16 41	16 22	16 14	16 04	15 53	15 40	15 26
16	18 13	17 58	17 41	17 23	17 12	16 59	16 45	16 27	16 18	16 09	15 58	15 46	15 32
19	18 14	17 59	17 43	17 25	17 15	17 03	16 49	16 31	16 23	16 14	16 04	15 52	15 39
22	18 15	18 01	17 45	17 28	17 18	17 06	16 52	16 36	16 28	16 20	16 10	15 59	15 46
25	18 16	18 02	17 47	17 30	17 21	17 10	16 57	16 41	16 34	16 25	16 16	16 06	15 54
28	18 17	18 03	17 49	17 33	17 24	17 13	17 01	16 46	16 39	16 31	16 22	16 13	16 01
31	18 17	18 04	17 51	17 36	17 27	17 17	17 05	16 51	16 44	16 37	16 29	16 20	16 09
फर. 1	18 17	18 05	17 52	17 36	17 28	17 18	17 06	16 53	16 46	16 39	16 31	16 22	16 12
4	18 18	18 06	17 53	17 39	17 31	17 22	17 11	16 58	16 52	16 45	16 38	16 29	16 20
7	18 18	18 07	17 55	17 42	17 34	17 25	17 15	17 03	16 57	16 51	16 44	16 36	16 28
10	18 18	18 08	17 56	17 44	17 37	17 29	17 19	17 08	17 03	16 57	16 51	16 44	16 35
13	18 18	18 08	17 58	17 46	17 40	17 32	17 24	17 13	17 08	17 03	16 57	16 51	16 43
16	18 18	18 09	17 59	17 49	17 43	17 36	17 28	17 18	17 14	17 09	17 04	16 58	16 51
19	18 18	18 09	18 01	17 51	17 46	17 40	17 32	17 24	17 20	17 15	17 10	17 05	16 59
22	18 17	18 10	18 02	17 53	17 48	17 43	17 36	17 29	17 25	17 21	17 17	17 12	17 07
25	18 17	18 10	18 03	17 56	17 51	17 46	17 40	17 34	17 31	17 27	17 23	17 19	17 14
28	18 16	18 10	18 04	17 58	17 54	17 50	17 44	17 39	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22
मार्च 1	18 16	18 10	18 05	17 58	17 55	17 51	17 46	17 40	17 38	17 35	17 32	17 28	17 25
4	18 15	18 11	18 06	18 00	17 57	17 54	17 50	17 45	17 43	17 41	17 38	17 35	17 32
7	18 15	18 11	18 07	18 03	18 00	17 57	17 54	17 50	17 49	17 47	17 45	17 42	17 40
10	18 14	18 11	18 08	18 04	18 02	18 00	17 58	17 55	17 54	17 52	17 51	17 49	17 47
13	18 13	18 11	18 09	18 06	18 05	18 04	18 02	18 00	17 59	17 58	17 57	17 56	17 55
16	18 12	18 11	18 10	18 08	18 08	18 07	18 06	18 05	18 04	18 04	18 03	18 03	18 02
19	18 12	18 11	18 11	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 10	18 09
22	18 10	18 11	18 11	18 12	18 12	18 13	18 14	18 14	18 15	18 15	18 16	18 16	18 17
25	18 10	18 11	18 12	18 14	18 15	18 16	18 17	18 19	18 20	18 21	18 22	18 23	18 24
28	18 09	18 11	18 13	18 16	18 17	18 19	18 21	18 24	18 25	18 26	18 28	13 30	18 31
31	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 22	18 25	18 28	18 30	18 32	18 34	18 36	18 39

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रै. 1	6 01	5 58	5 55	5 51	5 48	5 46	5 43	5 39	5 38	5 36	5 34	5 31	5 29
4	6 00	5 56	5 52	5 47	5 44	5 41	5 37	5 33	5 31	5 28	5 26	5 23	5 20
7	5 59	5 54	5 50	5 44	5 40	5 36	5 32	5 26	5 24	5 21	5 18	5 14	5 10
10	5 58	5 53	5 47	5 41	5 36	5 32	5 26	5 20	5 17	5 14	5 10	5 06	5 02
13	5 57	5 51	5 45	5 37	5 32	5 27	5 21	5 14	5 10	5 07	5 02	4 58	4 53
16	5 57	5 50	5 42	5 33	5 28	5 22	5 16	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50	4 44
19	5 56	5 48	5 40	5 30	5 24	5 18	5 10	5 01	4 57	4 52	4 47	4 42	4 35
22	5 55	5 47	5 38	5 27	5 21	5 14	5 05	4 55	4 51	4 46	4 40	4 34	4 26
25	5 55	5 45	5 35	5 24	5 17	5 10	5 00	4 50	4 44	4 39	4 33	4 26	4 18
28	5 54	5 44	5 33	5 21	5 14	5 05	4 56	4 44	4 38	4 32	4 25	4 18	4 09
मई 1	5 54	5 43	5 32	5 18	5 10	5 02	4 51	4 38	4 32	4 26	4 18	4 10	4 01
4	5 53	5 42	5 30	5 16	5 07	4 58	4 46	4 33	4 27	4 20	4 12	4 03	3 53
7	5 53	5 41	5 28	5 13	5 04	4 54	4 42	4 28	4 21	4 14	4 05	3 56	3 45
10	5 53	5 40	5 26	5 11	5 01	4 51	4 38	4 23	4 16	4 08	3 59	3 49	3 37
13	5 53	5 40	5 26	5 09	4 59	4 48	4 34	4 18	4 11	4 02	3 53	3 42	3 29
16	5 53	5 39	5 24	5 07	4 56	4 45	4 31	4 14	4 06	3 57	3 47	3 36	3 22
19	5 53	5 38	5 23	5 05	4 54	4 42	4 28	4 10	4 02	3 52	3 42	3 30	3 16
22	5 53	5 38	5 22	5 03	4 52	4 40	4 25	4 06	3 58	3 48	3 37	3 24	3 09
25	5 53	5 38	5 21	5 02	4 50	4 38	4 22	4 03	3 54	3 44	3 32	3 19	3 03
28	5 53	5 38	5 20	5 01	4 49	4 36	4 20	4 00	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57
31	5 54	5 38	5 20	5 00	4 48	4 34	4 18	3 57	3 48	3 37	3 24	3 10	2 52
जून 1	5 54	5 38	5 20	4 59	4 47	4 34	4 17	3 56	3 47	3 36	3 23	3 08	2 50
4	5 54	5 38	5 20	4 59	4 46	4 32	4 16	3 54	3 44	3 33	3 20	3 05	2 46
7	5 55	5 38	5 20	4 58	4 46	4 31	4 14	3 53	3 42	3 31	3 17	3 02	2 43
10	5 55	5 38	5 20	4 58	4 45	4 31	4 13	3 51	3 41	3 29	3 15	2 59	2 40
13	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 13	3 50	3 40	3 28	3 14	2 57	2 37
16	5 56	5 39	5 20	4 58	4 45	4 30	4 12	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 36
19	5 57	5 40	5 21	4 59	4 46	4 30	4 13	3 50	3 39	3 27	3 12	2 56	2 35
22	5 58	5 40	5 21	4 59	4 46	4 31	4 13	3 50	3 39	3 27	3 13	2 56	2 35
25	5 58	5 41	5 22	5 00	4 47	4 32	4 14	3 51	3 40	3 28	3 14	2 57	2 36
28	5 59	5 42	5 23	5 01	4 48	4 33	4 15	3 52	3 42	3 29	3 15	2 58	2 38

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश	0°	+10°	+20°	+30°	+35°	+40°	+45°	+50°	+52°	+54°	+56°	+58°	+60°
तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रै. 1	18 08	18 11	18 14	18 18	18 20	18 23	18 26	18 30	18 32	18 34	18 36	18 38	18 41
4	18 07	18 10	18 15	18 20	18 23	18 26	18 30	18 35	18 37	18 40	18 42	18 45	18 48
7	18 06	18 10	18 16	18 22	18 25	18 29	18 34	18 39	18 42	18 45	18 48	18 52	18 56
10	18 05	18 10	18 16	18 24	18 28	18 32	18 38	18 44	18 47	18 50	18 54	18 58	19 03
13	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 42	18 49	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
16	18 03	18 10	18 18	18 27	18 32	18 38	18 45	18 54	18 58	19 02	19 06	19 12	19 18
19	18 03	18 11	18 19	18 29	18 35	18 41	18 49	18 58	19 03	19 07	19 12	19 18	19 25
22	18 02	18 11	18 20	18 31	18 37	18 44	18 53	19 03	19 08	19 13	19 19	19 25	19 33
25	18 02	18 11	18 21	18 33	18 40	18 47	18 57	19 08	19 13	19 18	19 25	19 32	19 40
28	18 01	18 11	18 22	18 35	18 42	18 50	19 00	19 12	19 18	19 24	19 31	19 39	19 47
मई 1	18 01	18 12	18 23	18 37	18 44	18 53	19 04	19 17	19 23	19 30	19 37	19 45	19 55
4	18 00	18 12	18 24	18 38	18 47	18 56	19 08	19 21	19 28	19 35	19 43	19 52	20 02
7	18 00	18 12	18 25	18 40	18 49	18 59	19 12	19 26	19 33	19 40	19 49	19 58	20 10
10	18 00	18 13	18 26	18 42	18 52	19 02	19 15	19 30	19 38	19 46	19 55	20 05	20 17
13	18 00	18 13	18 28	18 44	18 54	19 05	19 19	19 35	19 42	19 51	20 01	20 12	20 24
16	18 00	18 14	18 29	18 46	18 56	19 08	19 22	19 39	19 47	19 56	20 06	20 18	20 31
19	18 00	18 14	18 30	18 48	18 59	19 11	19 25	19 43	19 52	20 01	20 12	20 24	20 38
22	18 00	18 15	18 31	18 50	19 01	19 14	19 29	19 47	19 56	20 06	20 17	20 30	20 45
25	18 00	18 16	18 32	18 52	19 03	19 16	19 32	19 51	20 00	20 10	20 22	20 36	20 52
28	18 01	18 17	18 34	18 54	19 05	19 19	19 35	19 55	20 04	20 15	20 27	20 41	20 58
31	18 01	18 17	18 35	18 55	19 07	19 21	19 37	19 58	20 08	20 19	20 31	20 46	21 04
जून 1	18 01	18 18	18 35	18 56	19 08	19 22	19 38	19 59	20 09	20 20	20 33	20 48	21 05
4	18 02	18 18	18 36	18 57	19 10	19 24	19 41	20 02	20 12	20 24	20 37	20 52	21 10
7	18 02	18 19	18 38	18 59	19 11	19 26	19 43	20 05	20 15	20 27	20 40	20 56	21 15
10	18 03	18 20	18 38	19 00	19 13	19 28	19 45	20 07	20 18	20 30	20 43	20 59	21 19
13	18 03	18 21	18 40	19 01	19 14	19 29	19 47	20 09	20 20	20 32	20 46	21 02	21 22
16	18 04	18 22	18 40	19 02	19 15	19 30	19 48	20 11	20 22	20 34	20 48	21 05	21 25
19	18 05	18 22	18 41	19 03	19 16	19 31	19 49	20 12	20 23	20 35	20 50	21 06	21 27
22	18 05	18 23	18 42	19 04	19 17	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 28
25	18 06	18 24	18 42	19 04	19 18	19 32	19 50	20 13	20 24	20 36	20 51	21 07	21 28
28	18 06	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 51	20 13	20 24	20 36	20 50	21 07	21 27

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जुला.1	6 00	5 42	5 24	5 02	4 49	4 34	4 16	3 54	3 43	3 31	3 17	3 01	2 41
4	6 00	5 43	5 25	5 03	4 50	4 36	4 18	3 56	3 45	3 34	3 20	3 04	2 44
7	6 01	5 44	5 26	5 04	4 52	4 37	4 20	3 58	3 48	3 36	3 23	3 07	2 48
10	6 01	5 45	5 27	5 06	4 53	4 39	4 22	4 01	3 51	3 39	3 26	3 11	2 52
13	6 02	5 45	5 28	5 07	4 55	4 41	4 24	4 04	3 54	3 43	3 30	3 15	2 57
16	6 02	5 46	5 29	5 09	4 57	4 43	4 27	4 07	3 58	3 47	3 34	3 20	3 03
19	6 02	5 47	5 30	5 10	4 59	4 46	4 30	4 10	4 01	3 51	3 39	3 25	3 09
22	6 03	5 48	5 31	5 12	5 01	4 48	4 33	4 14	4 05	3 55	3 44	3 31	3 15
25	6 03	5 48	5 32	5 14	5 03	4 51	4 36	4 18	4 09	4 00	3 49	3 36	3 22
28	6 03	5 49	5 33	5 16	5 05	4 53	4 39	4 22	4 14	4 05	3 54	3 42	3 28
31	6 03	5 49	5 34	5 18	5 08	4 56	4 43	4 26	4 18	4 10	4 00	3 48	3 35
अग. 1	6 03	5 49	5 35	5 18	5 08	4 57	4 44	4 27	4 20	4 11	4 01	3 51	3 38
4	6 03	5 50	5 36	5 20	5 10	5 00	4 47	4 32	4 24	4 16	4 07	3 57	3 45
7	6 02	5 50	5 37	5 22	5 13	5 03	4 51	4 36	4 29	4 21	4 13	4 03	3 52
10	6 02	5 50	5 38	5 24	5 15	5 06	4 54	4 40	4 34	4 27	4 19	4 10	3 59
13	6 02	5 51	5 39	5 25	5 17	5 08	4 58	4 45	4 39	4 32	4 24	4 16	4 06
16	6 01	5 51	5 40	5 27	5 20	5 11	5 01	4 49	4 44	4 37	4 30	4 22	4 14
19	6 00	5 51	5 41	5 29	5 22	5 14	5 05	4 54	4 48	4 43	4 36	4 29	4 21
22	6 00	5 51	5 42	5 31	5 24	5 17	5 08	4 58	4 53	4 48	4 42	4 36	4 28
25	5 59	5 51	5 42	5 32	5 26	5 20	5 12	5 03	4 58	4 53	4 48	4 42	4 35
28	5 58	5 51	5 43	5 34	5 29	5 23	5 16	5 07	5 03	4 59	4 54	4 48	4 42
31	5 57	5 51	5 44	5 36	5 31	5 25	5 19	5 12	5 08	5 04	5 00	4 55	4 50
सितं.1	5 57	5 51	5 44	5 36	5 32	5 26	5 20	5 13	5 10	5 06	5 02	4 57	4 52
4	5 56	5 51	5 45	5 38	5 34	5 29	5 24	5 18	5 14	5 11	5 08	5 04	4 59
7	5 55	5 50	5 45	5 40	5 36	5 32	5 28	5 22	5 19	5 17	5 14	5 10	5 06
10	5 54	5 50	5 46	5 41	5 38	5 35	5 31	5 26	5 24	5 22	5 19	5 16	5 13
13	5 53	5 50	5 47	5 43	5 40	5 38	5 35	5 31	5 29	5 27	5 25	5 23	5 20
16	5 52	5 50	5 47	5 44	5 43	5 41	5 38	5 35	5 34	5 33	5 31	5 29	5 27
19	5 51	5 50	5 48	5 46	5 45	5 44	5 42	5 40	5 39	5 38	5 37	5 36	5 34
22	5 50	5 49	5 49	5 48	5 47	5 46	5 46	5 44	5 44	5 43	5 43	5 42	5 41
25	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 49	5 48	5 48
28	5 48	5 49	5 50	5 51	5 52	5 52	5 53	5 54	5 54	5 54	5 55	5 55	5 56

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
जुला.1	18 07	18 24	18 43	19 05	19 18	19 33	19 50	20 13	20 23	20 35	20 49	21 06	21 26
4	18 08	18 25	18 43	19 05	19 18	19 32	19 50	20 12	20 22	20 34	20 48	21 04	21 24
7	18 08	18 25	18 43	19 05	19 17	19 32	19 49	20 10	20 21	20 32	20 46	21 01	21 20
10	18 09	18 25	18 43	19 04	19 16	19 31	19 48	20 09	20 19	20 30	20 43	20 58	21 17
13	18 09	18 25	18 43	19 03	19 16	19 29	19 46	20 06	20 16	20 27	20 40	20 55	21 12
16	18 09	18 25	18 42	19 02	19 14	19 28	19 44	20 04	20 13	20 24	20 36	20 51	21 08
19	18 10	18 25	18 42	19 01	19 13	19 26	19 42	20 01	20 10	20 20	20 32	20 46	21 02
22	18 10	18 25	18 41	19 00	19 11	19 24	19 39	19 58	20 06	20 16	20 28	20 41	20 56
25	18 10	18 24	18 40	18 58	19 09	19 21	19 36	19 54	20 02	20 12	20 23	20 35	20 50
28	18 10	18 24	18 39	18 56	19 07	19 19	19 33	19 50	19 58	20 07	20 18	20 29	20 43
31	18 10	18 23	18 38	18 55	19 04	19 16	19 29	19 46	19 54	20 02	20 12	20 23	20 36
अग. 1	18 10	18 23	18 37	18 54	19 04	19 15	19 28	19 44	19 52	20 00	20 10	20 21	20 33
4	18 09	18 22	18 36	18 52	19 01	19 12	19 24	19 40	19 47	19 55	20 04	20 14	20 26
7	18 09	18 21	18 34	18 49	18 58	19 08	19 20	19 35	19 41	19 49	19 58	20 07	20 18
10	18 09	18 20	18 32	18 47	18 55	19 05	19 16	19 29	19 36	19 43	19 51	20 00	20 10
13	18 08	18 19	18 30	18 44	18 52	19 01	19 11	19 24	19 30	19 37	19 44	19 52	20 02
16	18 08	18 18	18 28	18 41	18 48	18 57	19 06	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45	19 54
19	18 07	18 16	18 26	18 38	18 45	18 53	19 02	19 13	19 18	19 24	19 30	19 37	19 45
22	18 06	18 15	18 24	18 35	18 41	18 48	18 57	19 07	19 12	19 17	19 23	19 29	19 36
25	18 06	18 13	18 22	18 32	18 38	18 44	18 52	19 01	19 05	19 10	19 15	19 21	19 28
28	18 05	18 12	18 19	18 28	18 34	18 40	18 46	18 55	18 59	19 03	19 08	19 13	19 19
31	18 04	18 10	18 17	18 25	18 30	18 35	18 41	18 48	18 52	18 56	19 00	19 05	19 10
सितं.1	18 03	18 09	18 16	18 24	18 28	18 33	18 39	18 46	18 50	18 53	18 57	19 02	19 07
4	18 02	18 08	18 13	18 20	18 24	18 28	18 34	18 40	18 43	18 46	18 50	18 54	18 58
7	18 02	18 06	18 11	18 16	18 20	18 24	18 28	18 34	18 36	18 39	18 42	18 45	18 49
10	18 00	18 04	18 08	18 13	18 16	18 19	18 22	18 27	18 29	18 31	18 34	18 37	18 40
13	17 59	18 02	18 05	18 09	18 11	18 14	18 17	18 21	18 22	18 24	18 26	18 28	18 31
16	17 58	18 00	18 03	18 05	18 07	18 09	18 11	18 14	18 15	18 16	18 18	18 20	18 22
19	17 57	17 58	18 00	18 02	18 03	18 04	18 05	18 07	18 08	18 09	18 10	18 11	18 12
22	17 56	17 57	17 57	17 58	17 58	17 59	18 00	18 01	18 01	18 02	18 02	18 03	18 03
25	17 55	17 55	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54	17 54
28	17 54	17 53	17 52	17 50	17 50	17 49	17 48	17 47	17 47	17 46	17 46	17 46	17 45

सूर्योदय सारणी

सूर्योदयकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
अक्तू. 1	5 47	5 49	5 51	5 53	5 54	5 55	5 56	5 58	5 59	6 00	6 01	6 02	6 03
4	5 46	5 49	5 51	5 54	5 56	5 58	6 00	6 03	6 04	6 05	6 07	6 08	6 10
7	5 45	5 48	5 52	5 56	5 58	6 01	6 04	6 07	6 09	6 11	6 13	6 15	6 17
10	5 44	5 48	5 53	5 58	6 01	6 04	6 08	6 12	6 14	6 16	6 19	6 21	6 24
13	5 43	5 48	5 54	6 00	6 03	6 07	6 12	6 17	6 19	6 22	6 25	6 28	6 32
16	5 43	5 49	5 55	6 02	6 06	6 10	6 16	6 22	6 24	6 28	6 31	6 35	6 39
19	5 42	5 49	5 56	6 04	6 08	6 13	6 19	6 26	6 30	6 33	6 37	6 42	6 46
22	5 41	5 49	5 57	6 06	6 11	6 17	6 23	6 31	6 35	6 39	6 43	6 48	6 54
25	5 41	5 50	5 58	6 08	6 14	6 20	6 28	6 36	6 40	6 45	6 50	6 55	7 02
28	5 41	5 50	5 59	6 10	6 16	6 23	6 32	6 41	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09
31	5 40	5 50	6 01	6 12	6 19	6 27	6 36	6 46	6 51	6 56	7 02	7 09	7 17
नवं. 1	5 40	5 50	6 01	6 13	6 20	6 28	6 37	6 48	6 53	6 58	7 05	7 12	7 19
4	5 40	5 51	6 02	6 16	6 23	6 31	6 41	6 53	6 58	7 04	7 11	7 18	7 27
7	5 40	5 52	6 04	6 18	6 26	6 35	6 45	6 58	7 04	7 10	7 17	7 26	7 35
10	5 40	5 53	6 06	6 20	6 29	6 38	6 49	7 03	7 09	7 16	7 24	7 32	7 42
13	5 41	5 54	6 07	6 23	6 32	6 42	6 53	7 08	7 14	7 22	7 30	7 39	7 50
16	5 41	5 55	6 09	6 25	6 34	6 45	6 58	7 13	7 20	7 28	7 36	7 46	7 58
19	5 42	5 56	6 11	6 28	6 37	6 48	7 02	7 18	7 25	7 33	7 42	7 53	8 05
22	5 42	5 57	6 13	6 30	6 40	6 52	7 06	7 22	7 30	7 39	7 48	8 00	8 12
25	5 43	5 58	6 14	6 33	6 43	6 55	7 09	7 27	7 35	7 44	7 54	8 06	8 20
28	5 44	6 00	6 16	6 35	6 46	6 58	7 13	7 31	7 40	7 49	8 00	8 12	8 26
दिसं. 1	5 45	6 01	6 18	6 38	6 49	7 02	7 17	7 35	7 44	7 54	8 05	8 18	8 33
4	5 46	6 03	6 20	6 40	6 51	7 05	7 20	7 39	7 48	7 58	8 10	8 23	8 39
7	5 48	6 04	6 22	6 42	6 54	7 08	7 24	7 43	7 52	8 03	8 14	8 28	8 44
10	5 49	6 06	6 24	6 44	6 56	7 10	7 27	7 46	7 56	8 07	8 19	8 33	8 49
13	5 50	6 07	6 26	6 46	6 59	7 13	7 29	7 49	7 59	8 10	8 22	8 37	8 54
16	5 52	6 09	6 27	6 48	7 01	7 15	7 32	7 52	8 02	8 13	8 25	8 40	8 57
19	5 53	6 10	6 29	6 50	7 03	7 17	7 34	7 54	8 04	8 15	8 28	8 43	9 00
22	5 55	6 12	6 31	6 52	7 04	7 18	7 35	7 56	8 06	8 17	8 30	8 45	9 02
25	5 56	6 13	6 32	6 53	7 06	7 20	7 37	7 57	8 07	8 18	8 31	8 46	9 04
28	5 58	6 15	6 33	6 55	7 07	7 21	7 38	7 58	8 08	8 19	8 32	8 47	9 04
31	5 59	6 16	6 35	6 56	7 08	7 22	7 38	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 04
32	6 00	6 17	6 35	6 56	7 08	7 22	7 39	7 59	8 08	8 20	8 32	8 46	9 03

सूर्यास्त सारणी

सूर्यास्तकाल (स्था. म. का.) (बिम्बशीर्ष दृश्य)

अक्षांश / तारीख	0° घं. मि.	+10° घं. मि.	+20° घं. मि.	+30° घं. मि.	+35° घं. मि.	+40° घं. मि.	+45° घं. मि.	+50° घं. मि.	+52° घं. मि.	+54° घं. मि.	+56° घं. मि.	+58° घं. मि.	+60° घं. मि.
अक्तू. 1	17 53	17 51	17 49	17 47	17 46	17 44	17 43	17 41	17 40	17 39	17 38	17 37	17 36
4	17 52	17 49	17 46	17 43	17 42	17 39	17 37	17 34	17 33	17 32	17 30	17 29	17 27
7	17 51	17 48	17 44	17 40	17 37	17 35	17 32	17 28	17 26	17 24	17 22	17 20	17 18
10	17 50	17 46	17 41	17 36	17 33	17 30	17 26	17 22	17 20	17 17	17 15	17 12	17 09
13	17 50	17 44	17 39	17 33	17 29	17 25	17 21	17 15	17 13	17 10	17 07	17 04	17 00
16	17 49	17 43	17 37	17 29	17 25	17 21	17 15	17 09	17 06	17 03	17 00	16 56	16 51
19	17 48	17 42	17 34	17 26	17 22	17 16	17 10	17 03	17 00	16 56	16 52	16 48	16 43
22	17 48	17 40	17 32	17 23	17 18	17 12	17 05	16 57	16 53	16 49	16 45	16 40	16 34
25	17 48	17 39	17 30	17 20	17 14	17 08	17 00	16 51	16 47	16 43	16 38	16 32	16 26
28	17 47	17 38	17 28	17 17	17 11	17 04	16 56	16 46	16 41	16 36	16 31	16 24	16 18
31	17 47	17 37	17 27	17 15	17 08	17 00	16 51	16 40	16 36	16 30	16 24	16 17	16 10
नवं. 1	17 47	17 37	17 26	17 14	17 07	16 59	16 50	16 39	16 34	16 28	16 22	16 15	16 07
4	17 47	17 36	17 25	17 12	17 04	16 56	16 46	16 34	16 28	16 22	16 15	16 08	15 59
7	17 47	17 36	17 23	17 09	17 01	16 52	16 42	16 29	16 23	16 16	16 09	16 01	15 52
10	17 48	17 35	17 22	17 07	16 59	16 49	16 38	16 24	16 18	16 11	16 03	15 54	15 44
13	17 48	17 35	17 21	17 06	16 57	16 46	16 34	16 20	16 13	16 06	15 58	15 48	15 37
16	17 48	17 35	17 20	17 04	16 55	16 44	16 31	16 16	16 09	16 01	15 52	15 42	15 31
19	17 49	17 35	17 20	17 03	16 53	16 42	16 28	16 12	16 05	15 57	15 47	15 37	15 24
22	17 50	17 35	17 19	17 02	16 51	16 40	16 26	16 09	16 01	15 53	15 43	15 32	15 19
25	17 51	17 35	17 19	17 01	16 50	16 38	16 24	16 06	15 58	15 49	15 39	15 27	15 13
28	17 51	17 36	17 19	17 00	16 49	16 37	16 22	16 04	15 55	15 46	15 35	15 23	15 08
दिसं. 1	17 52	17 36	17 19	17 00	16 49	16 36	16 20	16 02	15 53	15 43	15 32	15 19	15 04
4	17 54	17 37	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	16 00	15 51	15 41	15 30	15 16	15 00
7	17 55	17 38	17 20	17 00	16 48	16 35	16 19	15 59	15 50	15 39	15 27	15 14	14 57
10	17 56	17 39	17 21	17 00	16 48	16 35	16 18	15 58	15 49	15 38	15 26	15 12	14 55
13	17 58	17 40	17 22	17 01	16 49	16 35	16 18	15 58	15 48	15 38	15 25	15 11	14 54
16	17 59	17 42	17 23	17 02	16 50	16 36	16 19	15 58	15 49	15 38	15 25	15 10	14 53
19	18 00	17 43	17 25	17 03	16 51	16 37	16 20	15 59	15 49	15 38	15 25	15 11	14 53
22	18 02	17 44	17 26	17 05	16 52	16 38	16 21	16 00	15 50	15 39	15 27	15 12	14 54
25	18 03	17 46	17 28	17 06	16 54	16 40	16 23	16 02	15 52	15 41	15 28	15 14	14 56
28	18 05	17 48	17 29	17 08	16 56	16 42	16 25	16 04	15 54	15 43	15 31	15 16	14 59
31	18 06	17 49	17 31	17 10	16 58	16 44	16 27	16 07	15 57	15 46	15 34	15 19	15 02
32	18 07	17 50	17 32	17 11	16 59	16 45	16 28	16 08	15 58	15 47	15 35	15 21	15 04

सूर्यकेन्द्रोदयास्त–संस्कार सारणी

उत्तर या दक्षिण अक्षांश→	0		10°		20°		30°		35°		40°		45°		50°		52°		54°		56°		58°		60°	
तारीख	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.	मि.	से.
22 दिसं.	3	25	3	29	3	41	4	05	4	22	4	47	5	22	6	13	6	41	7	16	8	01	9	01	10	29
21 जन.	3	20	3	24	3	35	3	56	4	13	4	34	5	04	5	46	6	07	6	33	7	05	7	44	8	35
9 फर.	3	15	3	18	3	28	3	47	4	02	4	21	4	46	5	19	5	36	5	57	6	19	6	47	7	20
24 फर.	3	11	3	14	3	24	3	42	3	55	4	12	4	34	5	04	5	18	5	35	5	54	6	16	6	41
8 मार्च	3	09	3	12	3	21	3	38	3	51	4	07	4	28	4	55	5	08	5	24	5	41	5	59	6	22
21 मार्च	3	08	3	11	3	20	3	37	3	50	4	05	4	26	4	53	5	05	5	20	5	36	5	55	6	16
2 अप्रै.	3	09	3	12	3	21	3	38	3	51	4	07	4	28	4	55	5	08	5	24	5	41	5	59	6	22
16 अप्रै.	3	11	3	14	3	24	3	42	3	55	4	12	4	34	5	04	5	18	5	35	5	54	6	16	6	41
1 मई	3	15	3	18	3	28	3	47	4	02	4	21	4	46	5	19	5	36	5	57	6	19	6	47	7	20
20 मई	3	20	3	24	3	35	3	56	4	13	4	34	5	04	5	46	6	07	6	33	7	05	7	44	8	35
21 जून	3	25	3	29	3	41	4	05	4	22	4	47	5	22	6	13	6	41	7	16	8	01	9	01	10	29
23 जुला.	3	20	3	24	3	35	3	56	4	13	4	34	5	04	5	46	6	07	6	33	7	05	7	44	8	35
12 अग.	3	15	3	18	3	28	3	47	4	02	4	21	4	46	5	19	5	36	5	57	6	19	6	47	7	20
27 अग.	3	11	3	14	3	24	3	42	3	55	4	12	4	34	5	04	5	18	5	35	5	54	6	16	6	41
10 सितं.	3	09	3	12	3	21	3	38	3	51	4	07	4	28	4	55	5	08	5	24	5	41	5	59	6	22
23 सितं.	3	08	3	11	3	20	3	37	3	50	4	05	4	26	4	53	5	05	5	20	5	36	5	55	6	16
6 अक्तू.	3	09	3	12	3	21	3	38	3	51	4	07	4	28	4	55	5	08	5	24	5	41	5	59	6	22
19 अक्तू.	3	11	3	14	3	24	3	42	3	55	4	12	4	34	5	04	5	18	5	35	5	54	6	16	6	41
3 नवं.	3	15	3	18	3	28	3	47	4	02	4	21	4	46	5	19	5	36	5	57	6	19	6	47	7	20
22 नवं.	3	20	3	24	3	35	3	56	4	13	4	34	5	04	5	46	6	07	6	33	7	05	7	44	8	35
22 दिसं.	3	25	3	29	3	41	4	05	4	22	4	47	5	22	6	13	6	41	7	16	8	01	9	01	10	29

गत पृष्ठों पर दी गई सूर्योदय– सूर्यास्तसारणी से सूर्यबिम्ब के ऊपरी कोर का उदयास्त ज्ञात होता है, इसलिए इसे 'बिम्बशीर्ष दृश्य' उदयास्तकाल कहा जाता है। यह उदयास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्कार से संस्कृत भी है। पृथ्वी के वातावरण के कारण उत्पन्न किरणवक्रीभवन (Refraction) से सूर्य का बिम्ब वास्तविक सूर्योदयकाल से कुछ मिनट पहले ही पूर्वी क्षितिज में दीखने लग जाता है और इसी कारण वह वास्तविक सूर्यास्तकाल के कुछ मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज में भी दीखता रहता है। किरणवक्रीभवन के कारण सूर्यबिम्ब की ऊपरी कोर जब पूर्वी एवं पश्चिमी क्षितिज में दिखाई पड़ रही होती है तब सूर्यबिम्ब का केन्द्र वस्तुतः क्षितिज से लगभग 47 कला नीचे होता है। लग्नआदि साधन के लिए, इष्टकाल बनाने के लिए वास्तविक सूर्यबिम्ब के केन्द्रोदयास्त का काल अपेक्षित होता है। इस 'सूर्यकेन्द्रोदयास्त संस्कार सारणी' में दिया गया संस्कार किरणवक्रीभवन संस्कार से युक्त सूर्योदयास्तकाल (सूर्योदयास्तकाल सारणी में दिए गए सूर्योदयास्तकाल) में कर देने से वास्तविक सूर्यकेन्द्रोदयास्तकाल ज्ञात हो जाता है। यह संस्कार सूर्योदय में जोड़ा और सूर्यास्त में से घटाया जाता है। इस प्रकार प्राप्त सूर्योदयास्तकाल को *गणितागत अथवा ज्योतिष–शास्त्रीय सूर्योदयास्त– काल भी कहते हैं।*

दक्षिण-अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 1)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जन. 1	जुला. 3	00	जन. 31	अग. 3	+07	मार्च 2	सितं. 4	+13	अप्रै. 1	अक्तू. 5	+15	मई 1	नवं. 3	+ 13	मई 31	दिसं. 2	+ 08	जून 30	दिसं. 30	+ 01
2	4	00	फर. 1	5	08	3	5	13	2	6	15	2	4	13	जून 1	3	08	जुला. 1	31	01
3	5	00	2	6	08	4	6	13	3	7	15	3	5	13	2	4	08	2	जन. 1	01
4	6	00	3	7	08	5	7	13	4	7	15	4	6	13	3	5	07	3	1	00
5	7	+ 01	4	8	08	6	8	14	5	8	15	5	7	13	4	5	07	4	2	00
6	8	01	5	9	09	7	9	14	6	9	15	6	8	13	5	6	07	5	3	00
7	9	01	6	10	09	8	10	14	7	10	15	7	9	13	6	7	07	6	4	− 01
8	10	02	7	11	09	9	11	14	8	11	15	8	10	12	7	8	07	7	5	01
9	11	02	8	12	09	10	12	14	9	12	15	9	11	12	8	9	07	8	6	01
10	12	02	9	13	09	11	13	14	10	13	15	10	12	12	9	10	06	9	7	01
11	13	02	10	14	10	12	14	14	11	14	15	11	13	12	10	11	06	10	8	02
12	14	02	11	15	10	13	15	14	12	15	15	12	14	12	11	12	06	11	9	02
13	15	03	12	16	10	14	16	14	13	16	15	13	15	12	12	13	06	12	10	02
14	16	03	13	17	10	15	17	14	14	17	15	14	16	12	13	14	05	13	11	02
15	17	03	14	18	10	16	18	15	15	18	15	15	17	11	14	15	05	14	12	03
16	19	03	15	19	11	17	19	15	16	19	15	16	17	11	15	16	05	15	13	03
17	20	04	16	20	11	18	20	15	17	20	15	17	18	11	16	17	04	16	14	03
18	21	04	17	21	11	19	21	15	18	21	15	18	19	11	17	18	04	17	15	03
19	22	04	18	22	11	20	22	15	19	22	15	19	20	11	18	19	04	18	15	03
20	23	05	19	23	11	21	23	15	20	23	15	20	21	11	19	20	04	19	16	04
21	24	05	20	25	12	22	24	15	21	24	14	21	22	10	20	21	04	20	17	04
22	25	05	21	26	12	23	25	15	22	25	14	22	23	10	21	21	03	21	18	04
23	26	06	22	27	12	24	26	15	23	26	14	23	24	10	22	22	03	22	19	04
24	27	06	23	28	12	25	27	15	24	27	14	24	25	10	23	23	03	23	20	05
25	28	06	24	29	12	26	29	15	25	28	14	25	26	10	24	24	03	24	21	05
26	29	06	25	30	13	27	30	15	26	29	14	26	27	09	25	25	02	25	22	05
27	30	07	26	31	13	28	अक्तू. 1	15	27	30	14	27	28	09	26	26	02	26	23	06
28	31	07	27	सितं. 1	13	29	2	15	28	31	14	28	29	09	27	27	02	27	24	06
29	अग. 1	07	28	2	13	30	3	15	29	नवं. 1	14	29	30	09	28	28	01	28	25	06
30	2	+ 07	मार्च 1	3	+ 13	31	4	+ 15	30	2	+ 14	30	दिसं. 1	+ 09	29	29	+ 01	29	26	− 06

दक्षिण अक्षांशीय सूर्योदयास्तसाधन सहायकसारणी (भाग 2)

दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट	दक्षिण अक्षांश तारीख	उत्तर अक्षांश तारीख	संस्कार मिनट
जुला.30	जन. 27	− 07	अग. 30	फर 25	− 13	सितं. 30	मार्च 27	− 15	अक्तु. 31	अप्रै. 28	− 14	दिसं. 1	मई 30	− 08
31	28	07	31	26	13	अक्तू. 1	28	15	नवं. 1	29	14	2	31	08
अग. 1	29	07	सितं. 1	27	13	2	29	15	2	30	14	3	जून 1	08
2	30	07	2	28	13	3	31	15	3	मई 1	13	4	2	08
3	30	07	3	मार्च 1	13	4	31	15	4	2	13	5	3	07
4	31	08	4	2	13	5	अप्रै. 1	15	5	3	13	6	4	07
5	फर 1	08	5	3	13	6	2	15	6	4	13	7	6	07
6	2	08	6	4	14	7	3	15	7	5	13	8	7	07
7	3	08	7	5	14	8	4	15	8	6	13	9	8	07
8	4	08	8	6	14	9	5	15	9	7	13	10	9	07
9	5	09	9	7	14	10	6	15	10	8	12	11	10	06
10	6	09	10	8	14	11	7	15	11	9	12	12	11	06
11	7	09	11	9	14	12	9	15	12	10	12	13	12	06
12	8	09	12	10	14	13	10	15	13	11	12	14	13	05
13	9	09	13	11	14	14	11	15	14	12	12	15	14	05
14	10	10	14	12	14	15	12	15	15	13	12	16	15	05
15	11	10	15	13	14	16	13	15	16	14	11	17	16	04
16	12	10	16	14	14	17	14	15	17	15	11	18	17	04
17	13	10	17	15	15	18	15	15	18	17	11	19	18	04
18	14	10	18	16	15	19	16	15	19	18	11	20	19	04
19	15	11	19	17	15	20	17	15	20	19	11	21	21	03
20	16	11	20	18	15	21	18	15	21	20	11	22	22	03
21	17	11	21	19	15	22	19	15	22	21	10	23	23	03
22	18	11	22	20	15	23	20	15	23	22	10	24	24	03
23	19	11	23	21	15	24	21	14	24	23	10	25	25	02
24	19	12	24	22	15	25	22	14	25	24	10	26	26	02
25	20	12	25	23	15	26	23	14	26	25	10	27	27	02
26	21	12	26	24	15	27	24	14	27	26	09	28	28	02
27	22	12	27	25	15	28	25	14	28	27	09	29	29	01
28	23	12	28	26	15	29	26	14	29	28	09	30	30	01
29	24	− 12	29	26	− 15	30	27	− 14	30	29	− 09	31	जुला. 1	− 01
												32	2	00

गत पृष्ठों पर सूर्योदयसारणी एवं सूर्यास्तसारणी में दिया गया सूर्योदयास्त–काल केवल उत्तरी अक्षांशों के लिए है। दक्षिण अक्षांश वाले स्थलों का सूर्योदयास्तकाल जानने के लिए ऊपर दिए गए इस कोष्ठक का प्रयोग कीजिए । जिस तारीख के लिए दक्षिण अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल जानना है, उस 'द. अक्षांशीय तारीख' के आगे इस कोष्ठक में लिखी 'उ.अक्षांशीय तारीख' का सूर्योदयास्त पिछले पृष्ठों पर दी गई सूर्योदय–सूर्यास्त–सारणी से ही ज्ञात कर लें। इसमें इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार के मिनटों को चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से आपके अभीष्ट तारीख का अभीष्ट द.अक्षांशीय सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. का.) ज्ञात हो जाएगा। **जैसे** :– 10 मार्च को द. अक्षांश 20° के स्थल का सूर्योदयास्त जानने के लिए इस कोष्ठक के अनुसार हमें 12 सितम्बर का सूर्योदयास्त 'उ. अक्षांशीय सारणी से ही लेना होगा। जो कि क्रमशः 5 घं 46 मि. और 18 घं 6 मि. है। इन दोनों में इस कोष्ठक से प्राप्त संस्कार मिनट +14 चिह्नानुसार जोड़ने पर 10 मार्च को 20° द. अक्षांश का सूर्योदयास्तकाल (स्था. म. काल) क्रमशः 6 घं. 00 मि. और 18 घं. 20 मि. प्राप्त हुआ। इनमें अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़ने या घटाने से यह सूर्योदयास्तकाल क्षेत्रीय स्टैं. टा. में बदल जाएगा।

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश, छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12	अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00	आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	–20 56
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	–37 52	अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	–30 20	आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	–15 56
अकोला	(म.)	20 40	77 05	–21 40	अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	– 2 40	आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	–37 56
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	–31 00	अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	–25 32	आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	–23 56
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00	अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	–22 32	आनी	(हि.)	31 27	77 25	–20 20
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	–27 28	अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	–17 00	आबू	(रा.)	24 40	72 45	–39 00
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16	अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48	आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	–29 04	अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	– 1 12	आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	–26 48	अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	–12 40	आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	–30 48	अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	–11 20	आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	–32 36
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	–31 12	अर्की	(हि.)	31 09	76 58	–22 08	इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	–31 40	अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	–16 48	इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	–19 00
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	–18 04	अररिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36	इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	–13 52
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	–29 20	अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	–11 20	इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	–26 40
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	–19 36	अलवर	(रा.)	27 34	76 38	–23 28	इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	–27 20
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	–22 40	अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	–13 16	इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	–37 36	अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	–17 40	इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	–
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	–16 56	अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20	ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	–33 16	अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56	ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	–18 28
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	– 3 00	अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	–38 20	उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	–27 52	अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	– 6 04	उगाला	(ह.)	30 11	76 59	–22 04
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	–19 00	अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	–19 08	उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	–27 08
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	– 8 40	अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	–31 04	उड़ी	(का.)	34 05	74 01	–33 56
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	–44 48	अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	–39 20	उडुपी	(क.)	13 23	74 45	–31 00
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	–16 04	अहवा	(गु.)	20 44	73 41	–35 16	उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	–16 12
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	– 1 48	आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	–17 56	उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	–25 04	आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44	उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	— —
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्प्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोठागुडम	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोधरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गौंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	73 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़ाचांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	—	जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44	टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48	जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56	टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36	जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28	टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00	जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36	टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28	जिरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08	ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00	जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44	ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08	ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04	डगशाई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56	जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14	डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56	जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44	डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44	जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12	डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04	जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28	डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48	जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24	डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16	जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56	डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
जण्डयाला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48	जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44	डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32	जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48	डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20	जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44	डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04	ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32	डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40	ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44	डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40	झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24	डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08	झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28	डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52	झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36	डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24	झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40	ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36	झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20	ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32	झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24	तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24	झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20	तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
जलपाईगुड़ी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56	टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28	तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20	टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44	तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48	टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52	तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48	टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00	ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12	टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28	तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40	टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52	ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36	टुंकुरें	(क.)	13 21	77 05	−21 40	तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08	टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16	तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28	दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20	नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20	देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04	नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08	देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44	नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20	देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48	नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40	देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32	नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44	देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16	नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52	देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08	नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16	देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32	नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36	देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36	नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08	देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08	नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16	देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52	नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04	देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44	नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें –	तिरुवनन्तपुरम्		दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52	नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20	दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36	नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
थानेघार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44	द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56	नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16	द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52	नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12	धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00	नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32	धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20	नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08	धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44	नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04	धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52	नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48	धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52	नान्देड़	(म.)	19 1[illegible]	77 21	−20 36
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28	धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28	नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48	ध्रांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04	नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20	धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40	नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04	धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44	नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32	धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52	नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12	धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36	नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08	धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28	नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52	नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40	नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32	नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04	नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00	नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28	नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52	नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32	नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
					नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40	नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40	पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	82 28	+ 3 52	फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00	पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24	फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44	पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32	पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00	फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16	पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16	फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20	पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04	फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24	पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48	फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04	पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40	फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12	पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40	फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12	पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56	फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00	पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32	फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04	पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20	फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04	पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08	फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56	पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28	फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00	पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32	बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36	पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48	बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36	बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16	पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00	बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40	पुदुकोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44	बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52	पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04	बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20	पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28	बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36	पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28	बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48	पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48	बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12	पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28	बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24	पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36	बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04	पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52	बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36	पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00	बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52	बंबई	(म.)	देखें –	मुम्बई	
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40	प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04	बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40	प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52	बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36	प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24	बरौनी	(बि.)	25 30	85 58	+13 52
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24	प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40	बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36	फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56	बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40	बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52	ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44	बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52	भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32	बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16	भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52	बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08	भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32	बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40	भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36	बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00	भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52	बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56	भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44	बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40	भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36	बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56	भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48	बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44	भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
बांकुरा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16	बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28	भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
बाघपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08	बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52	भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00	बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52	भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20	बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04	भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40	बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36	भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00	बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16	भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08	बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20	भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04	बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04	भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20	बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32	भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12	बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12	भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40	बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36	भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56	बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28	भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56	बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56	भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16	बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24	भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
बालामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28	बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12	भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36	बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32	भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36	बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36	भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
बालूरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04	बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40	मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56	बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04	मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04	बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52	मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24	बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00	मंगालादै	(आसा.)	26 23	92 02	+38 08
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28	बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28	मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24	ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40	मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	− 8 32	माहे	(पां.)	11 42	75 32	−27 52	मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	−17 44
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	−22 20	मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24	मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	−22 08	मिराज	(म.)	16 51	74 42	−31 12	मोहाना	(म.)	25 54	77 45	−19 00
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	−20 36	मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20	मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	−23 12
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	−19 16	मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	−34 36	यनम्	(पां.)	16 44	82 13	− 1 08
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	−17 20	मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	−31 56	यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	−20 48
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	− 8 48	मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	−27 32	यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	−17 28
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36	मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28	योल	(हि.)	32 11	76 23	−24 28
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20	मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00	रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08	मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	−19 16	रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	−21 20	मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48	रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	−29 32
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	−29 36	मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	−36 00	रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	−31 24
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	−17 32	मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	−19 40	रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	−36 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	−22 36	मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	−50 48	राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	−22 32	मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	−38 24	रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	−32 04	मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	− 8 32	राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	−46 28
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	−18 20	मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	−14 52	राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	−23 00
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	−18 04	मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16	राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	− 5 40
महवा	(रा.)	27 03	76 56	−22 16	मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	−21 48	राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	−19 44
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	− 9 12	मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04	राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	−23 36
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	−35 08	मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	−18 36	राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	−42 48	मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	−17 00	राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	− 2 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	−25 24	मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	−19 12	राजुला	(गु.)	21 01	71 26	−44 16
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	−40 08	मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	−21 12	राजौरी	(का.)	33 22	74 17	−32 52
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	−25 16	मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	−13 56	रादौर	(ह.)	30 01	77 08	−21 28
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	−49 28	मैसूर	(क.)	12 18	76 37	−23 32	राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	−43 36
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	−52 08	मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	− 7 00	रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	−28 28	मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08	रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	−12 20
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	−11 20	मोगा	(पं.)	30 48	75 10	−29 20	रापर	(गु.)	23 33	70 38	−47 28
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	−35 36	मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48	राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36	मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	−46 40	रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	−14 28
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	−31 28	मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	−17 04	रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	−13 52
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	−26 32	मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	−24 00	रामबन	(का.)	33 15	75 15	−29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−15 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपादू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्वर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर	नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन	अक्षांश	रेखांश	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर
		अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.			अं. क.	अं. क.	अं. क.	मि. से.	घं. मि.
*Abadan	Iran	52 30 पू.	30 20 उ.	48 16 पू.	−16 56	+02 00	*Birmingham	England	00 00	52 30 उ.	01 50 प.	−07 20	+05 30
*Abbottabad	Pakistan	75 00 पू.	34 09 उ.	73 13 पू.	−07 08	+00 30	Bogota	Colombia	75 00 प.	04 36 उ.	74 05 प.	+03 40	+10 30
Abu Dhabi	U.A.E.	60 00 पू.	24 28 उ.	54 22 पू.	−22 32	+01 30	Bogra	Bangladesh	90 00 पू.	24 51 उ.	89 22 पू.	−02 32	−00 30
Accra	Ghana	00 00	05 33 उ.	00 13 प.	−00 52	+05 30	*Bonn	Germany	15 00 पू.	50 44 उ.	07 04 पू.	−31 44	+04 30
Addis Ababa	Ethiopia	45 00 पू.	09 02 उ	38 44 पू.	−25 04	+02 30	*Boston	U.S.A.	75 00 प.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	+10 30
Aden	Yemen	45 00 पू.	12 45 उ.	45 04 पू.	+00 16	+02 30	*Brasilia	Brazil	45 00 प.	15 47 द.	47 55 प.	−11 40	+08 30
Akyab	Myanmar	97 30 पू.	20 09 उ.	92 55 पू.	−18 20	−01 00	*Bratislava	Slovakia	15 00 पू.	48 09 उ.	17 07 पू.	+08 28	+04 30
*Alexandria	Egypt	30 00 पू.	31 12 उ.	29 53 पू.	−00 28	+03 30	Brazzaville	Congo	15 00 पू.	04 16 द.	15 17 पू.	+01 08	+04 30
Algiers	Algeria	15 00 पू.	36 47 उ.	03 03 पू.	−47 48	+04 30	*Brisbane	Australia	150 00पू.	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	−04 30
*Amman	Jordan	30 00 पू.	31 57 उ	35 56 पू.	+23 44	+03 30	*Brussels	Belgium	15 00 पू.	50 52 उ.	04 22 पू.	−42 32	+04 30
*Amsterdam	Netherlands	15 00 पू.	52 22 उ.	04 53 पू.	−40 28	+04 30	*Bucharest	Romania	30 00 पू.	44 25 उ.	26 07 पू.	−15 32	+03 30
*Angmagssalik	Greenland	45 00 प.	65 36 उ.	37 41 प.	+29 16	+08 30	*Budapest	Hungary	15 00 पू.	47 29 उ.	19 03 पू.	+16 12	+04 30
*Ankara	Turkey	30 00 पू.	39 57 उ.	32 54 पू.	+11 36	+03 30	Buenos Aires	Argentina	45 00 प.	34 35 द.	58 27 प.	−53 48	+08 30
Anuradhapur	Sri Lanka	82 30 पू.	08 21 उ.	80 23 पू.	−08 28	00 00	*Buffalo (N.Y.)	U.S.A.	75 00 प.	42 55 उ.	78 50 प.	−15 20	+10 30
*Athens	Greece	30 00 पू.	37 54 उ	23 43 पू.	−25 08	+03 30	*Cairo	Egypt	30 00 पू.	30 03 उ.	31 14 पू.	+04 56	+03 30
*Auckland	New Zealand	180 00 पू.	36 52 द.	174 42 पू.	−21 12	−06 30	*California City	U.S.A.	120 00प.	35 07 उ.	117 59प.	+08 04	+13 30
*Austin (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	30 16 उ.	97 44 प.	−30 56	+11 30	*Canberra	Australia	150 00पू.	35 19 द.	149 08पू.	−03 28	−04 30
Bacolod	Phill.	120 00 पू.	10 40 उ.	122 57 पू.	+11 48	−02 30	*Cape Town	South Africa	30 00 पू.	33 56 द.	18 22 पू.	−46 32	+03 30
*Baghdad	Iraq	45 00 पू.	33 20 उ.	44 27 पू.	−02 12	+02 30	Caracas	Venezuela	60 00 प.	10 30 उ.	66 56 प.	−39 44	+09 30
*Bahawalpur	Pakistan	75 00 पू.	29 59 उ	73 16 पू.	−06 56	+00 30	*Charlotti Amali	Virgin Is (U.K.)	60 00 प.	18 21 उ.	64 56 प.	−19 44	+09 30
Bangkok	Thailand	105 00 पू.	13 44 उ.	100 30 पू.	−18 00	−01 30	*Chicago	U.S.A.	90 00 प.	41 53 उ.	87 38 प.	+09 28	+11 30
Batticoloa	Sri Lanka	82 30 पू.	07 43 उ.	81 45 पू.	−03 00	00 00	Chittagong	Bangla.	90 00 पू.	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	−00 30
Beijing	China	120 00 पू.	39 55 उ.	116 25 पू.	−14 20	−02 30	*Cleveland (Ohio)	U.S.A.	75 00 प.	41 30 उ.	81 41 प.	−26 44	+10 30
*Beirut	Lebanon	30 00 पू.	33 50 उ.	35 25 पू.	+21 40	+03 30	Colombo	Sri Lanka	82 30 पू.	06 56 उ.	79 51 पू.	−10 36	00 00
*Belgrade	Yugoslavia	15 00 पू.	44 50 उ.	20 30 पू.	+22 00	+04 30	Comilla	Bangladesh	90 00 पू.	23 27 उ.	91 12 पू.	+04 48	−00 30
*Berlin	Germany	15 00 पू.	52 32 उ.	13 25 पू.	−06 20	+04 30	*Copenhagen	Denmark	15 00 पू.	55 40 उ.	12 35 पू.	−09 40	+04 30
*Berne	Switzerland	15 00 पू.	46 57 उ.	07 26 पू.	−30 16	+04 30	Dakar	Senegal	00 00	14 40 उ.	17 26 प.	−69 44	+05 30
Biratnagar	Nepal	86 15 पू.	26 29 उ.	87 17 पू.	+04 08	−00 15	*Dallas (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	32 47 उ.	96 48 प.	−27 12	+11 30

*इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर घं. मि.	नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन अं. क.	अक्षांश अं. क.	रेखांश अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) मि. से.	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर घं. मि.
*Damascus	Syria	30 00 पू.	33 30 उ.	36 18 पू.	+25 12	+03 30	*Houston (Texas)	U.S.A.	90 00 प.	29 45 उ.	95 21 प.	−21 24	+11 30
Dar-es-salaam	Tanzania	45 00 पू.	06 50 द.	39 17 पू.	−22 52	+02 30	*Hyderabad	Pakistan	75 00 पू.	25 22 उ.	68 22 पू.	−26 32	+00 30
*Detroit (Mich.)	U.S.A.	75 00 प.	42 23 उ.	83 05 प.	−32 20	+10 30	*Isfahan	Iran	52 30 पू.	32 40 उ.	51 38 पू.	−03 28	+02 00
*Dhaka	Bangla.	90 00 पू.	23 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	−00 30	*Islamabad	Pakistan	75 00 पू.	33 42 उ.	73 10 पू.	−07 20	+00 30
Djibouti	Djibouti	45 00 पू.	11 36 उ.	43 09 पू.	−07 24	+02 30	*Istanbul	Turkey	30 00 पू.	41 00 उ.	29 00 पू.	−04 00	+03 30
Dinajpur	Bangla.	90 00 पू.	25 38 उ.	88 38 पू.	−05 28	−00 30	Jaffna	Sri Lanka	82 30 पू.	09 40 उ.	80 00 पू.	−10 00	00 00
Doha	Qatar	45 00 पू.	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	+02 30	Jakarta	Indonesia	105 00 पू.	06 10 द.	106 49 पू.	+07 16	−01 30
*Dublin	Ireland	00 00	53 20 उ.	06 15 प.	−25 00	+05 30	Jamaica	West Indies	75 00 प.	18 00 उ.	76 48 प.	−07 12	+10 30
Dubai	U.A.E.	60 00 पू.	25 18 उ.	55 18 पू.	−18 48	+01 30	*Jerusalem	Israel	30 00 पू.	31 46 उ.	35 14 पू.	+20 56	+03 30
*Edinburgh	Scotland	00 00	55 56 उ.	03 11 प.	−12 44	+05 30	Jessore	Bangla	90 00 पू.	23 10 उ.	89 13 पू.	−03 08	−00 30
*Edmonton	Canada	105 00 प.	53 33 उ.	113 28 प.	−33 52	+12 30	Johannesburg	South Africa	30 00 पू.	26 15 द.	28 00 पू.	−08 00	+03 30
*Florida City	U.S.A.	75 00 प.	25 27 उ.	80 29 प.	−21 56	+10 30	Kabul	Afghanistan	67 30 पू.	34 33 उ.	69 12 पू.	+06 48	+01 00
*Frankfurt	Germany	15 00 पू.	50 06 उ.	08 40 पू.	−25 20	+04 30	Kampala	Uganda	45 00 पू.	00 19 उ.	32 25 पू.	−50 20	+02 30
Fukuoka	Japan	135 00 पू.	35 34 उ.	137 27 पू.	+09 48	−03 30	Kandahar	Afghanistan	67 30 पू.	31 32 उ.	65 30 पू.	−08 00	+01 00
Galle	Sri Lanka	82 30 पू.	06 02 उ.	80 13 पू.	−09 08	00 00	Kandy	SriLanka	82 30 पू.	07 18 उ.	80 38 पू.	−07 28	00 00
Guatemala	Guatemala	90 00 प.	14 38 उ.	90 31 प.	−02 04	+11 30	*Karachi	Pakistan	75 00 पू.	24 52 उ.	67 03 पू.	−31 48	+00 30
*Geneva	Switzerland	15 00 पू.	46 12 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30	Kathmandu	Nepal	86 15 पू.	27 43 उ.	85 19 पू.	−03 44	−00 15
*Glasgow	Scotland	00 00	55 52 उ.	04 15 प.	−17 00	+05 30	Khartoum	Sudan	30 00 पू.	15 35 उ.	32 35 पू.	+10 20	+03 30
*Greenwich	England	00 00	51 29 उ.	00 00	00 00	+05 30	*Kingston*	*Jamaica*	75 00 प.	18 00 उ.	76 46 प.	−07 12	+10 30
Guiyang	China	120 00 पू.	26 35 उ.	106 43 पू.	−53 08	−02 30	Khulna	Bangla.	90 00 पू.	22 48 उ.	89 33 पू.	−01 48	−00 30
*Hamilton	Canada	75 00 प.	43 15 उ.	79 50 प.	−19 20	+10 30	Kuala Lumpur	Malaysia	120 00 पू.	03 09 उ.	101 43 पू.	−73 08	−02 30
Hanoi	North Vietnam	105 00 पू.	21 02 उ.	105 52 पू.	+03 28	−01 30	Kushtia	Bangla.	90 00 पू.	23 55 उ.	89 07 पू.	−03 32	−00 30
*Havana	Cuba	75 00 प.	23 08 उ.	82 22 प.	−29 28	+10 30	Kuwait	Kuwait	45 00 पू.	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	+02 30
*Heidelberg	Germany	15 00 पू.	49 24 उ.	08 43 पू.	−25 08	+04 30	Kwangchow	China	120 00 पू.	23 06 उ.	113 16 पू.	−26 56	−02 30
*Helsinki	Finland	30 00 पू.	60 09 उ.	24 57 पू.	−20 12	+03 30	Lagos	Nigeria	15 00 पू.	06 25 उ.	03 27 पू.	−46 12	+04 30
Hiroshima	Japan	135 00 पू.	34 24 उ.	132 27 पू.	−10 12	−03 30	*Leeds	England	00 00	53 50 उ.	01 35 प.	−06 20	+05 30
Hongkong	China	120 00 पू.	22 18 उ.	114 10 पू.	−23 20	−02 30	*Leipzig	Germany	15 00 पू.	51 20 उ.	12 23 पू.	−10 28	+04 30
Honolulu	Hawai Island	150 00 प.	21 19 उ.	157 52 प.	−31 28	+15 30	*Leningrad	Russia	30 00 पू.	59 57 उ.	30 18 पू.	+01 12	+03 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय(*Summer Time*) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर (घं. मि.)
Leopoldville	Zaire	15 00 पू.	04 18 द.	15 18 पू.	+01 12	+04 30
Lhasa	China	120 00 पू.	29 40 उ.	91 07 पू.	−115 32	−02 30
Lima	Peru	75 00 प.	12 02 द.	77 02 प.	−08 08	+10 30
*Lisbon	Portugal	00 00	38 43 उ.	09 11 प.	−36 44	+05 30
*Liverpool	England	00 00	53 25 उ.	02 55 प.	−11 40	+05 30
*London	England	00 00	51 32 उ.	00 05 प.	−00 20	+05 30
*Long Beach,Ca.	U.S.A.	120 00 प.	33 46 उ.	118 12 प.	+07 12	+13 30
*Los Angeles	U.S.A.	120 00 प.	34 03 उ.	118 14 प.	+07 04	+13 30
Luanda	Angola	15 00 पू.	08 48 द.	13 14 पू.	−07 04	+04 30
Lusaka	Zambia	30 00 पू.	15 25 द.	28 17 पू.	−06 52	+03 30
*Luxembourg	Luxembourg	15 00 पू.	49 36 उ.	06 09 पू.	−35 24	+04 30
*Madrid	Spain	15 00 पू.	40 25 उ.	03 41 प.	−74 44	+04 30
*Manchester	England	00 00	53 30 उ.	02 15 प.	−09 00	+05 30
Mandlay	Myanmar	97 30 पू.	22 00 उ.	96 05 पू.	−05 40	−01 00
Manila	Philippines	120 00 पू.	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	−02 30
Mecca	SaudiArabia	45 00 पू.	21 25 उ.	39 54 पू.	−20 24	+02 30
*Melbourne	Australia	150 00 पू.	37 50 द.	144 59 पू.	−20 04	−04 30
*Mexico City	Mexico	90 00 प.	19 26 उ.	99 10 प.	−36 40	+11 30
*Milan	Italy	15 00 पू.	45 28 उ.	09 11 पू.	−23 16	+04 30
Mombasa	Kenya	45 00 पू.	04 00 द	39 40 पू.	−21 20	+02 30
*Montreal	Canada	75 00 प.	45 30 उ.	73 34 प.	+05 44	+10 30
*Moscow	Russia	45 00 पू.	55 45 उ.	37 34 पू.	−29 44	+02 30
Moulmein	Myanmar	97 30 पू.	16 30 उ.	97 38 पू.	+00 32	−01 00
*Multan	Pakistan	75 00 पू.	30 11 उ.	71 29 पू.	−14 04	+00 30
*Munich	Germany	15 00 पू.	48 08 उ.	11 35 पू.	−13 40	+04 30
Muscat	Oman	60 00 पू.	23 37 उ.	58 35 पू.	−05 40	+01 30
Mymensingh	Bangla.	90 00 पू.	24 45 उ.	90 24 पू.	+01 36	−00 30
Nagoya	Japan	135 00 पू.	35 10 उ.	136 55 पू.	+07 40	−03 30

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर (घं. मि.)
Nairobi	Kenya	45 00 पू.	01 18 द.	36 52 पू.	−32 32	+02 30
*New Castle	England	00 00	52 27 उ.	03 06 प.	−12 24	+05 30
*New Orleans	U.S.A.	90 00 प.	29 57 उ.	90 04 प.	−00 16	+11 30
*New York	U.S.A.	75 00 प.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	+10 30
Noakhali	Bangla.	90 00 पू.	22 49 उ.	91 06 पू.	+04 24	−00 30
*Nuuk	Greenland	45 00 प.	64 11 उ.	51 44 प.	+26 56	+08 30
Osaka	Japan	135 00 पू.	34 40 उ.	135 30 पू.	+02 00	−03 30
*Oslo	Norway	15 00 पू.	59 54 उ.	10 45 पू.	−17 00	+04 30
*Ottawa	Canada	75 00 प.	45 24 उ.	75 43 प.	−02 52	+10 30
Pabna	Bangla.	90 00 पू.	24 00 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Paramaribo	Suriname	45 00 प.	05 50 उ.	55 10 प.	−40 40	+08 30
*Paris	France	15 00 पू.	48 50 उ.	02 20 पू.	−50 40	+04 30
Pegu	Myanmar	97 30 पू.	17 20 उ.	96 29 पू.	−04 04	−01 00
Peking	China	देखें —	Beijing	—	—	—
Penang	Malaysia	120 00 पू.	05 25 उ.	100 20 पू.	−78 40	−02 30
Perth	Australia	120 00 पू.	32 00 द.	115 50 पू.	−16 40	−02 30
*Peshawar	Pakistan	75 00 पू.	34 01 उ.	71 33 पू.	−13 48	+00 30
*Philadelphia, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	39 58 उ.	75 10 प.	−00 40	+10 30
Phnom penh	Cambodia	105 00 पू.	11 35 उ.	104 57 पू.	−00 12	−01 30
*Pittsburgh, Pa.	U.S.A.	75 00 प.	40 25 उ.	79 55 प.	−19 40	+10 30
Port Elizabeth	South Africa	30 00 पू.	33 58 द.	25 40 पू.	−17 20	+03 30
Port Louis	Mauritius	60 00 पू.	20 10 द.	57 30 पू.	−10 00	+01 30
Port of Spain	Trinidad and Tobago	60 00 प.	10 39 उ.	61 31 प.	−06 04	+09 30
*Prague	Czecho.	15 00 पू.	50 05 उ.	14 24 पू.	−02 24	+04 30
Prome	Myanmar	97 30 पू.	18 47 उ.	95 15 पू.	−09 00	−01 00
Punakha	Bhutan	90 00 पू.	27 42 उ.	89 52 पू.	−00 32	−00 30
*Quetta	Pakistan	75 00 पू.	30 12 उ.	67 00 पू.	−32 00	+00 30
Rabat*	Morocco	00 00	34 02 उ.	06 51 प.	−27 24	+05 30

• इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

कुछ विदेशी प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश आदि

नगर	देश	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (अं. क.)	अक्षांश (अं. क.)	रेखांश (अं. क.)	स्टैण्डर्ड अन्तर (क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. म. का. का अन्तर) (मि. से.)	भा. स्टै. टा. का क्षेत्रीय स्टै. टा. से अन्तर (घं मि.)
Rangoon	Myanmar	97 30 पू.	16 47 उ.	96 10 पू.	−05 20	−01 00
Rangpur	Bangla.	90 00 पू.	25 45 उ.	89 15 पू.	−03 00	−00 30
Rajshahi	Bangla.	90 00 पू.	24 22 उ.	88 36 पू.	−05 36	−00 30
*Rawalpindi	Pakistan	75 00 पू.	33 36 उ.	73 04 पू.	−07 44	+00 30
Riyadh	Saudi Arabia	45 00 पू.	24 39 उ.	46 41 पू.	+06 44	+02 30
Road Town	Virgin Is. (U.K.)	60 00 प.	18 27 उ.	64 37 प.	−18 28	+09 30
*Rome	Italy	15 00 पू.	41 55 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
Saigon	SouthVietnam	105 00 पू.	10 49 उ.	106 41 पू.	+06 44	−01 30
Salisbury (Harare)	Zimbabwe	30 00 पू.	17 50 द.	31 03 पू.	+04 12	+03 30
San'a'	Yeman	45 00 पू.	15 23 उ.	44 12 पू.	−03 12	+02 30
*San Diego, Ca.	U.S.A.	120 00 प.	32 43 उ.	117 10 प.	+10 40	+13 30
*San Francisco	U.S.A.	120 00 प.	37 48 उ.	122 25 प.	−09 40	+13 30
*San Juan	Puetro Rico	60 00 प.	18 28 उ.	66 07 प.	−24 28	+09 30
Santiago	Chile	60 00 प.	33 27 द.	70 40 प.	−42 40	+09 30
*Seattle	U.S.A	120 00 प.	47 41 उ.	122 15 प	−09 00	+13 30
Seoul	South Korea	135 00 पू.	37 31 उ.	126 58 पू.	−32 08	−03 30
Shanghai	China	120 00 पू.	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	−02 30
Sharjah	U.A.E.	60 00 पू.	25 20 उ.	55 24 पू.	−18 24	+01 30
Singapore	Singapore	120 00 पू.	01 17 उ.	103 54 पू.	−64 24	−02 30
*Sofia	Bulgaria	30 00 पू.	42 41 उ.	23 21 पू.	−26 36	+03 30
*Stanley	Falkland Is.	60 00 प.	51 42 द.	57 51 प.	+08 36	+09 30
*Stockholm	Sweden	15 00 पू.	59 20 उ.	18 00 पू.	+12 00	+04 30
*Sukkur	Pakistan	75 00 पू.	27 42 उ.	68 52 पू.	−24 32	+00 30
Suva	Fiji	180 00 पू.	18 08 द.	178 25 पू.	−06 20	−06 30
*Sydney	Australia	150 00 पू.	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	−04 30
Sylhet	Bangla.	90 00 पू.	24 54 उ.	91 52 पू.	+07 28	−00 30
Taipei	Taiwan	120 00 पू.	25 03 उ.	121 30 पू.	+06 00	−02 30
Taskent	Uzbekistan	75 00 पू.	41 20 उ.	69 18 पू.	−22 48	+00 30
*Tehran	Iran	52 30 पू.	35 41 उ.	51 26 पू.	−04 16	+02 00
Thimpu	Bhutan	90 00 पू.	27 28 उ.	89 39 पू.	−01 24	−00 30
*Tirane	Albania	15 00 पू.	41 20 उ.	19 50 पू.	+19 20	+04 30
Tokyo	Japan	135 00 पू.	35 40 उ.	139 46 पू.	+19 04	−03 30
*Toronto	Canada	75 00 प.	43 39 उ.	79 23 प.	−17 32	+10 30
Trincomalee	Sri Lanka	82 30 पू.	08 31 उ.	81 14 पू.	−05 04	00 00
Tripoli	Libya	30 00 पू.	32 54 उ.	13 15 पू.	−67 00	+03 30
*Ulan Bator	Mongolia	105 00 पू.	47 55 उ..	106 53 पू.	+07 32	−01 30
*Vancouver	Canada	120 00 प.	49 16 उ.	123 07 प.	−12 28	+13 30
Vatican City	Vatican City	15 00 पू.	41 54 उ.	12 27 पू.	−10 12	+04 30
*Vienna	Austria	15 00 पू.	48 12 उ.	16 22 पू.	+05 28	+04 30
*Volgograd	Russia	45 00 पू.	48 44 उ.	44 25 पू.	−02 20	+02 30
Wakayama	Japan	135 00 पू.	34 13 उ.	135 11 पू.	+00 44	−03 30
*Warsaw	Poland	15 00 पू.	52 12 उ.	21 00 पू.	+24 00	+04 30
*Washington (D.C.)	U.S.A.	75 00 प.	38 55 उ.	77 04 प.	−08 16	+10 30
*Wellington	New Zealand	180 00 पू.	41 16 द.	174 47 पू.	−20 52	−06 30
Yokohama	Japan	135 00 पू.	35 27 उ.	139 39 पू.	+18 36	−03 30
Zanzibar	Tanzania	45 00 पू.	06 10 द.	39 11 पू.	−23 16	+02 30
*Zurich	Switzerland	15 00 पू.	47 23 उ.	08 32 पू.	−25 52	+04 30

* इन नगरों में ग्रीष्मकालीन समय (Summer Time) प्रचलित है। ग्रीष्मकालीन समय क्षेत्रीय स्टै. टा. से एक घण्टा आगे रहता है।

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Afghanistan	67 30 पू.	+ 01 00
*Albania	15 00 पू.	+ 04 30
Algeria	15 00 पू.	+ 04 30
Angola	15 00 पू.	+ 04 30
Argentina	45 00 प.	+ 08 30
*AUSTRALIA यह देश इन 3 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Victoria, Tasmania आदि क्षेत्र आते है)	150 00 पू.	– 04 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में South Australia, Broken Hill Area आदि आते है।)	142 30 पू.	– 04 00
(iii) **W.S.T.** (इस कालक्षेत्र में Western Australia आता है)	120 00 पू.	– 02 30
*Austria	15 00 पू.	+ 04 30
Bahrain	45 00 पू.	+ 02 30
Bangladesh	90 00 पू.	– 00 30
*Belgium	15 00 पू.	+ 04 30
Bhutan	90 00 पू.	– 00 30
Bolivia	60 00 प.	+ 09 30
*Bulgaria	30 00 पू.	+ 03 30
Burundi	30 00 पू.	+ 03 00
Cameroon	15 00 पू.	+ 04 30
*CANADA यह देश मुख्यत: इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है –		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) इस काल-क्षेत्र में N.W. Territories और Ontario का पू. भाग पड़ता है।	75 00 प.	+ 10 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) इसमें N.W. Territories का मध्यभाग और Ontario का प. भाग पड़ता है।	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time इसमें N.W. Territories का कुछ प. भाग तथा Alberta आदि प्रान्त पड़ते है।	105 00 प.	+12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) इस कालक्षेत्र में N.W. Territories का अन्तिम प. भाग तथा B.Columbia पड़ता है।	120 00 प.	+ 13 30
*Chile	60 00 प.	+ 09 30
China	120 00 पू.	– 02 30
Colombia	75 00 प.	+ 10 30
Congo	15 00 पू.	+ 04 30
*Cuba	75 00 प.	+ 10 30
Ceylon	देखें ——	Sri Lanka
Cyprus	30 00 पू.	+ 03 30
*Denmark	15 00 पू.	+ 04 30
Ecuador	75 00 प.	+ 10 30
*Egypt	30 00 पू.	+ 03 30
*England(U.K.)	00 00	+ 05 30
Ethiopia	45 00 पू.	+ 02 30
*Falkland Islands	60 00 प.	+ 09 30
Fiji	180 00 पू.	– 06 30
*Finland	30 00 पू.	+ 03 30
*France	15 00 पू.	+ 04 30
Gambia	00 00	+ 05 30
*Germany	15 00 पू.	+ 04 30
Ghana	00 00	+ 05 30
*Greece	30 00 पू.	+ 03 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Guatemala	90 00 प.	+ 11 30
Honduras	90 00 प.	+ 11 30
Hong Kong	120 00 पू.	– 02 30
*Iceland	00 00	+ 06 30
India	82 30 पू.	00 00
INDONESIA, REPUBLIC OF:- यह देश छोटे–बड़े 13000 से भी अधिक द्वीपों से बना है। पहिले यह 30–30 मिनटों के अन्तर वाले छ: कालक्षेत्रों में विभाजित था। अब इसे एक–एक घण्टा के अन्तर वाले इन तीन कालक्षेत्रों में विभाजित किया गया है–		
(i) Bali, Bangka, Enggano, Java, Madura एवम् Sumatra द्वीप;...........................	105 00 पू.	– 1 30
(ii) Alore, Borneo, Celebes (Sulawesi), Flores, Kabaena, Lombok, Sangihe, Talaud, Sumba, Sumbawa (Soembawa) और Timor (Timur) (द्वीपसमूह)	120 00 पू.	– 2 30
(iii) Aru, Babar, Buru, Cerem (Seram), Irian Jaya (West Irian), Larat, Maluku(Moluccas = Molukken), Schouten, Tanah Merah और Tanimbar (द्वीपसमूह)...	135 00 पू.	– 3 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी

(विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों/कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	मा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Iran	52 30 पू.	+ 02 00
*Iraq	45 00 पू.	+ 02 30
*Irish Republic	00 00	+ 05 30
*Israel	30 00 पू.	+ 03 30
*Italy	15 00 पू.	+ 04 30
*Jamaica	75 00 प.	+ 10 30
Japan	135 00 पू.	− 03 30
*Jordan	30 00 पू.	+ 03 30
***KAZAKHSTAN –** यह देश, जो पहिले Soviet Union का भाग था, इन तीन कालक्षेत्रों में बंटा है:–		
(i) Kazakhstan (West) .	60 00 पू.	+ 01 30
(ii) Kazakhstan (Central)..	75 00 पू.	+ 0 30
(iii) Kazakhstan (East) ..	90 00 पू.	− 0 30
Kumpuchia	105 00 पू.	− 01 30
Kenya	45 00 पू.	+ 02 30
Korea	135 00 पू.	− 03 30
Kuwait	45 00 पू.	+ 02 30
Laos	105 00 पू.	− 01 30
* Lebanon	30 00 पू.	+ 03 30
Libya	30 00 पू.	+ 03 30
Macao	120 00 पू.	− 02 30
Madagascar	45 00 पू.	+ 02 30/
Malaysia	120 00 पू.	− 02 30
Maldive Islands	75 00 पू.	+ 00 30
Maurtius	60 00 पू.	+ 01 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	मा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
***KYRGHIZSTAN (KIRGIZSTAN= KIRGHIZIA= KIRGIZIA)** (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	0 00 पू.	+ 0 30
*MEXICO यह देष इन 3 कालक्षेत्रों में बंटा है–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Compeche, Chiapas आदि प्रान्त आते हैं)	90 00 प.	+ 11 30
(ii) **C.S.T.** (Central St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California, Sur, Nayarit आदि पड़ते हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iii) **W.S.T.** (Western St. Time) (इस कालक्षेत्र में Baja California- Norte आते हैं)	120 00 प.	+ 13 30
Morocco	00 00	+ 05 30
Mozambique	30 00 पू.	+ 03 30
Myanmar (Burma)	97 30 पू.	− 01 00
Nepal	86 15 पू.	− 00 15
Netherlands	15 00 पू.	+ 04 30
*New Zealand	180 00 पू.	− 06 30
Nicaragua	90 00 प.	+ 11 30
Nigeria	15 00 पू.	+ 04 30
*Northern Ireland (U.K.)	00 00	+ 05 30
*Norway	15 00 पू.	+ 04 30
Oman (Muscat and Oman)	60 00 पू.	+ 01 30
*Pakistan	75 00 पू.	+ 00 30
Panama	75 00 प.	+ 10 30

देश/प्रदेश/कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	मा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*Paraguay	60 00 प.	+ 09 30
Peru	75 00 प.	+ 10 30
Philippines	120 00 पू.	− 02 30
*Poland	15 00 पू.	+ 04 30
*Portugal	00 00	+ 05 30
Qatar	45 00 पू.	+ 02 30
Rwanda	30 00 पू.	+ 03 30
Romania	30 00 पू.	+ 03 30
*RUSSIA यह महादेश, जो Soviet Union का मूल घटक राष्ट्र रहा है, यह इन ग्यारह कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i)कालक्षेत्र Kaliningrad area	30 00 पू.	+ 3 30
(ii) कालक्षेत्र Novaja Zemla, European RSFSR (पश्चिमी भाग)....	45 00 पू.	+ 2 30
(iii) कालक्षेत्र European RSFSR (मध्य भाग)...............	60 00 पू.	+ 1 30
(iv) कालक्षेत्र European RSFSR (पू. भाग), Asian RSFSR (प. भाग)	75 00 पू.	+ 0 30
(v) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	90 00 पू.	− 0 30
(vi) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Severnaja Zemla	105 00 पू.	− 1 30
(vii) कालक्षेत्र Asian RSFSR ...	120 00 पू.	− 2 30
(viii) कालक्षेत्र Asian RSFSR...	135 00 पू.	− 3 30
(ix) कालक्षेत्र Asian RSFSR, Novosibirskije Ostrova	150 00 पू.	− 4 30
(x) कालक्षेत्र Asian RSFSR (पू. भाग) , Ostrov Sachalin, Kuril Islands	165 00 पू.	− 5 30
(xi) कालक्षेत्र Asian RSFSR (अन्तिम पूर्वी छोर), Komandorskije Ostrova...	180 00 पू.	− 6 30

स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन सारणी (विश्व के लगभग सभी मुख्य देशों / कालक्षेत्रों की स्टैंडर्ड टाईम मेरिडियन्स)

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
Saudi Arabia	45 00 पू.	+ 02 30
*Scotland (U.K.)	00 00	+ 05 30
Singapore	120 00 पू.	− 02 30
South Africa	30 00 पू.	+ 03 30
*Spain	15 00 पू.	+ 04 30
Sri Lanka	82 30 पू.	00 00
Sudan	30 00 पू.	+ 03 30
Suriname	45 00 प.	+ 08 30
*Sweden	15 00 पू.	+ 04 30
*Switzerland	15 00 पू.	+ 04 30
*Syria	30 00 पू.	+ 03 30
TAJIKISTAN (TADZHIKISTAN) (यह पहिले Soviet Union का भाग था)......	75 00 पू.	+ 00 30
Taiwan	120 00 पू.	− 02 30
Tanzania	45 00 पू.	+ 02 30
Thailand	105 00 पू.	− 01 30
Trinidad andTobago	60 00 प.	+ 09 30
Tunisia	15 00 पू.	+ 04 30
*Turkey	30 00 पू.	+ 03 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
U.A.E. (UNITED ARAB EMIRATES) .[Abu Dhabi, Ajman, Dubai, Fujairah, Ras-al-Khaimah, .Sharjah, और Umma-al-Quiwain) ……	60 00 पू.	+ 01 30
Uganda	45 00 पू.	+ 02 30
*U.K.	00 00	+ 05 30
Uruguay	45 00 प.	+ 08 30
UKRAIN यह पहिले Soviet Union का भाग था। यह इन दो कालक्षेत्रों में बँटा है–		
(i) इस कालक्षेत्र में Ukraine का प्रमुख भाग [Black और Azov Sea से घिरे दक्षिणी भाग (द्वीप) को छोड़ कर शेष पूरा भाग आता है।……………………	30 00 पू.	+ 03 30
(ii) इसमें Black और Azov Sea से घिरा इसका केवल दक्षिणी भाग (द्वीप) आता है।....	45 00 पू.	+ 02 30
UZBEKISTAN.................. (यह पहले Soviet Union का भाग था)	75 00 पू.	+ 00 30

देश / प्रदेश / कालक्षेत्र	स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन (रेखांश) अं. क.	भा. स्टैं. टा. का क्षेत्रीय स्टैं. टा. से अन्तर घं. मि.
*U.S.A. यह देश इन 4 कालक्षेत्रों (Time Zones) में बंटा है :–		
(i) **E.S.T.** (Eastern St. Time) (इस कालक्षेत्र में Delaware, Florida, Ohio आदि States पडती हैं।)	75 00 प.	+ 10 30
(ii) **C.S.T.** (Centrar St. Time) (इस कालक्षेत्र मे Alabama, Illinois आदि States पडती हैं।)	90 00 प.	+ 11 30
(iii) **M.S.T.** (Mountain St. Time) (इस कालक्षेत्र में Arizona, Colorado आदि States पडती हैं।)	105 00 प.	+ 12 30
(iv) **P.S.T.** (Pacific St. Time) (इस कालक्षेत्र में California, Nevada आदि States पड़ती हैं।)	120 00 प.	+ 13 30
Vatican State	15 00 पू.	+ 04 30
Venezuela	60 00 प.	+ 09 30
Vietnam	105 00 पू.	− 01 30
*Wales(U.K.)	00 00	+ 05 30
*Yugoslavia	15 00 पू.	+ 04 30
Zamibia	30 00 पू.	+ 03 30
Zaire	30 00 पू.	+ 03 30
Zimbabwe	30 00 पू.	+ 03 30

* इन देशों में ग्रीष्मकालीन समय (**Summer Time**) प्रचलित है। **Summer Time** के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक " विश्वलग्न सारणी " देखें।

धन (+) चिह्न वाले 'अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर ' का अर्थ है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से आगे है। इसी प्रकार ऋण (–) चिह्न वाला "अभीष्ट स्टैं. टा. अन्तर" बतलाता है, कि भा. स्टैं. टा. अभीष्ट स्थानीय (देश / कालक्षेत्रीय) स्टैं. टा. से पीछे है।

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

अंग्रेज़ी तारीख		प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	[illegible]	५ ३४											

ज्येष्ठ

अंग्रेज़ी तारीख		प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४२	१५ ५९	१८ २१	२० ४२	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४२	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४४	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	[illegible]	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

अंग्रेज़ी तारीख		प्रविष्टे	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
जून	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
जुलाई	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	मा.१	५ ३५											

श्रावण

अंग्रेज़ी तारीख		प्रविष्टे	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
जुलाई	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
अगस्त	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	३१	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	मा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

मास	अंग्रेज़ी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

मास	अंग्रेज़ी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्टूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

कार्तिक

अंग्रेज़ी तारीख		कार्तिक तिथि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्टूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१०-२४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १४	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मार्गशीर्ष

अंग्रेज़ी तारीख		मार्गशीर्ष तिथि	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	६ ५३
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	६ ४९
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	६ ४५
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	६ ४१
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	६ ३७
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	६ ३३
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	६ २९
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	६ २५
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	६ २१
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	६ १७
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१ २२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीख		कृष्ण तिथि	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४१	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीख		शुक्ल तिथि	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५२९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३४	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४०
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में १ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। १ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे +१९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में १ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	-८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+३४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जींद	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	±३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-२९	-२०	-११	-२
नाभा	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	[illegible]	+२	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	[illegible]	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	[illegible]
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित मे शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए. नगरो के अक्षांश-रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए. किञ्च भिन्न-भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की जरुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी जरुरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई **"अक्षांशादि सारणी"** से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:-

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घडी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी-पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को **"सहायक सारणी"** (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला-विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला-विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घडीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम **"अभीष्ट घड़ी-पल"** कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी-पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घडी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी- पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घडी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें **"सारणीस्थ घड़ी-पल"** कहा जाएगा। "सारणीस्थ घडी-पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी-पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी-पलों का "सारणीस्थ घड़ी-पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी-पलों" और "अभीष्ट घड़ी-पलों "का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला- विकला मिले, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण- मान लीजिए- वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा. 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी-पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी-पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घड़ी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी-पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी-पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी-पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोडने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३४	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३६
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुंभ घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुंभ घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरण:– वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	− ७	२०४७	− १३	२०५५	− २०	२०६३	−२६	२०७१	−३३
२०२४	+ ६	२०३२	− १	२०४०	− ८	२०४८	− १४	२०५६	− २१	२०६४	−२७	२०७२	−३४
२०२५	+ ५	२०३३	− २	२०४१	− ९	२०४९	− १५	२०५७	− २२	२०६५	−२८	२०७३	−३५
२०२६	+ ४	२०३४	− ३	२०४२	− ९	२०५०	− १६	२०५८	−२२	२०६६	−२९	२०७४	−३६
२०२७	+ ३	२०३५	− ४	२०४३	−१०	२०५१	− १७	२०५९	−२३	२०६७	−३०	२०७५	−३६
२०२८	+ २	२०३६	− ४	२०४४	−११	२०५२	− १८	२०६०	−२४	२०६८	−३१	२०७६	−३७
२०२९	+ १	२०३७	− ५	२०४५	−१२	२०५३	− १८	२०६१	−२५	२०६९	−३१	२०७७	−३८
२०३०	+ १	२०३८	− ६	२०४६	− १३	२०५४	− १९	२०६२	−२६	२०७०	−३२	२०७८	−३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधि दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने 'साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम "साम्पातिककाल क्या है"- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल)से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों)से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें -

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर(+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष- यदि "**अक्षांशादि सारणी**" में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के **स्वदेशीय स्टैण्डर्ड** - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के **स्टैण्डर्ड** - अन्तर के **मिनटादि(या घण्टादि)** को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का "**स्थानीयमध्यमकाल**" बन जाता है । यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता है ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.)में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)]अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखा अंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२)से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोड़ने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२)से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३)से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोड़ें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल(जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोड़ें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४)से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै.टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.)में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व)एवं स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१)से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२)सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.)जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्ठक नं.(३)वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४)से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक है अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१)यदि धन (+)चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.)के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.)भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व)और स्टैं. अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६से. हुए यह २४ घं. से ज्यादा हो गया है, अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ के आगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोड़ने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त ८ से. चिह्न के अनुसार घटाए, तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं., २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोड़ने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टै. टा. में स्टै. अन्तर के मिनट जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अतः उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम को स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सा. का. बनाते समय दूसरा ध्यान यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टै. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टै. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टै. टा. में २४ घंटे जोड़ कर स्टै. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा. का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व) और स्टै अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टै टा. के घं. मि. में से स्टै. अं. ज्यादा है, अतः स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टै अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४३ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टै. टा. हमारे नगर के ऋण स्टै. अं. से कम था अतः यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेंगे । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए, १५ मार्च सन् १९८४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९८४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है, इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९८४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधिः-

ऊपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाई और वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अतः अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मि. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न को अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न'' बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षांशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश-कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षांशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षांशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरणः-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रातः १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है । लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगे १८० अं.० क. लिखा है । इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घ. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं। इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न ''हुआ ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ अ}

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अक्षांश ८°(उ.) लग्न		अक्षांश ११°(उ.) लग्न		अक्षांश १४°(उ.) लग्न		अक्षांश १७°(उ.) लग्न		अक्षांश २०°(उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४
०	३०	८	१०	१००	३	१०१	१५	१०२	२७	१०३	४१	१०४	५७
१	०	१६	१७	१०६	५४	१०८	३	१०९	१३	११०	२४	१११	३६
१	३०	२४	१८	११३	४७	११४	५३	११५	५९	११७	६	११८	१४
२	०	३२	११	१२०	४३	१२१	४५	१२२	४७	१२३	५०	१२४	५२
२	३०	३९	५५	१२७	४५	१२८	४३	१२९	४०	१३०	३६	१३१	३३
३	०	४७	२८	१३४	५४	१३५	४५	१३६	३६	१३७	२७	१३८	१८
३	३०	५४	५१	१४२	१०	१४२	५५	१४३	३९	१४४	२२	१४५	६
४	०	६२	५	१४९	३३	१५०	१०	१५०	४६	१५१	२३	१५१	५८
४	३०	६९	१२	१५७	३	१५७	३१	१५८	०	१५८	२७	१५८	५५
५	०	७६	११	१६४	३८	१६४	५८	१६५	१७	१६५	३६	१६५	५४
५	३०	८३	७	१७२	१८	१७२	२८	१७२	३८	१७२	४७	१७२	५७
६	०	९०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८७	४२	१८७	३२	१८७	२२	१८७	१३	१८७	३
७	०	१०३	४९	१९५	२२	१९५	२	१९४	४३	१९४	२४	१९४	६
७	३०	११०	४८	२०२	५७	२०२	२९	२०२	०	२०१	३३	२०१	५
८	०	११७	५५	२१०	२७	२०९	५०	२०९	१४	२०८	३७	२०८	२
८	३०	१२५	९	२१७	५०	२१७	५	२१६	२१	२१५	३८	२१४	५४
९	०	१३२	३२	२२५	६	२२४	१५	२२३	२४	२२२	३३	२२१	४२
९	३०	१४०	५	२३२	१५	२३१	१७	२३०	२०	२२९	२४	२२८	२७
१०	०	१४७	४९	२३९	१७	२३८	१५	२३७	१३	२३६	१०	२३५	८
१०	३०	१५५	४२	२४६	१३	२४५	७	२४४	१	२४२	५४	२४१	४६
११	०	१६३	४३	२५३	६	२५१	५७	२५०	४७	२४९	३६	२४८	२४
११	३०	१७१	५०	२५९	५७	२५८	४५	२५७	३३	२५६	१९	२५५	३
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६

साम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए दशम		अक्षांश ८°(उ.) लग्न		अक्षांश ११°(उ.) लग्न		अक्षांश १४°(उ.) लग्न		अक्षांश १७°(उ.) लग्न		अक्षांश २०°(उ.) लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	०	२६६	४८	२६५	३५	२६४	२०	२६३	४	२६१	४६
१२	३०	१८८	१०	२७३	४१	२७२	२७	२७१	११	२६९	५३	२६८	३३
१३	०	१९६	१७	२८०	३९	२७९	२५	२७८	९	२७६	५०	२७५	२९
१३	३०	२०४	१८	२८७	४३	२८६	३०	२८५	१५	२८३	५७	२८२	३५
१४	०	२१२	११	२९४	५७	२९३	४६	२९२	३३	२९१	१६	२८९	५५
१४	३०	२१९	५५	३०२	२१	३०१	१४	३००	४	२९८	५०	२९७	३२
१५	०	२२७	२८	३०९	५८	३०८	५६	३०७	५१	३०६	४२	३०५	२८
१५	३०	२३४	५१	३१७	४९	३१६	५४	३१५	५५	३१४	५३	३१३	४५
१६	०	२४२	५	३२५	५४	३२५	७	३२४	१७	३२३	२३	३२२	२५
१६	३०	२४९	१२	३३४	१२	३३३	३५	३३२	५५	३३२	१२	३३१	२६
१७	०	२५६	११	३४२	४१	३४२	१५	३४१	४८	३४१	१८	३४०	४५
१७	३०	२६३	७	३५१	१८	३५१	५	३५०	५१	३५०	३६	३५०	२१
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	८	४१	८	५५	९	९	९	२४	९	३९
१९	०	२८३	४९	१७	१९	१७	४५	१८	१२	१८	४२	१९	१५
१९	३०	२९०	४८	२५	४८	२६	२५	२७	५	२७	४८	२८	३४
२०	०	२९७	५५	३४	६	३४	५३	३५	४३	३६	३७	३७	३५
२०	३०	३०५	९	४२	११	४३	६	४४	५	४५	७	४६	१४
२१	०	३१२	३२	५०	२	५१	४	५२	९	५३	१८	५४	३२
२१	३०	३२०	५	५७	३९	५८	४६	५९	५६	६१	१०	६२	२८
२२	०	३२७	४९	६५	३	६६	१४	६७	२७	६८	४४	७०	५
२२	३०	३३५	४२	७२	१७	७३	३०	७४	४५	७६	३	७७	२५
२३	०	३४३	४३	७९	२१	८०	३५	८१	५१	८३	१०	८४	३१
२३	३०	३५१	५०	८६	१९	८७	३३	८८	४९	९०	७	९१	२७
२४	०	०	०	९३	१२	९४	२५	९५	४०	९६	५६	९८	१४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमशः १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अतः यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अतः इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६क. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा.४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रातः १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर हो चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालम में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमशः ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें- यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुतः अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

साम्पातिक काल घं.	मि.	सभी स्थानों के लिए दशम अं. क.	अंक्षाश २३° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २६° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश २९° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३२° (उ.) लग्न अं. क.	अंक्षाश ३५° (उ.) लग्न अं. क.
०	०	० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४
०	३०	८ १०	१०६ १४	१०७ ३४	१०८ ५७	११० २४	१११ ५३
१	०	१६ १७	११२ ४९	११४ ४	११५ २२	११६ ४३	११८ ७
१	३०	२४ १८	११९ २२	१२० ३३	१२१ ४५	१२३ ०	१२४ १७
२	०	३२ ११	१२५ ५६	१२७ ०	१२८ ७	१२९ १७	१३० २५
२	३०	३९ ५५	१३२ ३१	१३३ २९	१३४ २९	१३५ ३०	१३६ ३२
३	०	४७ २८	१३९ ३	१४० ००	१४० ५२	१४१ ४५	१४२ ४०
३	३०	५४ ५१	१४५ ४०	१४६ ३४	१४७ १८	१४८ ४	१४८ ५०
४	०	६२ ५	१५२ ३४	१५३ १०	१५३ ४७	१५४ २४	१५५ १
४	३०	६९ १२	१५९ २२	१५९ ५०	१६० १७	१६० ४६	१६१ १४
५	०	७६ ११	१६६ १३	१६६ ३२	१६६ ५०	१६७ ९	१६७ २८
५	३०	८३ ७	१७३ ६	१७३ १५	१७३ २५	१७३ ३४	१७३ ४४
६	०	९० ०	१८० ००	१८० ००	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६	३०	९६ ५३	१८६ ५४	१८६ ४५	१८६ ३५	१८६ २६	१८६ १६
७	०	१०३ ४९	१९३ ४७	१९३ २८	१९३ १०	१९२ ५१	१९२ ३२
७	३०	११० ४८	२०० ३८	२०० १०	१९९ ४३	१९९ १४	१९८ ४६
८	०	११७ ५५	२०७ २६	२०६ ५०	२०६ १३	२०५ ३६	२०४ ५९
८	३०	१२५ ५९	२१४ १०	२१३ २६	२१२ ४२	२११ ५६	२११ १०
९	०	१३२ ३२	२२० ५१	२२० ००	२१९ ८	२१८ १५	२१७ २०
९	३०	१४० ५	२२७ २९	२२६ ३१	२२५ ३१	२२४ ३०	२२३ २८
१०	००	१४७ ४९	२३४ ४	२३३ ०	२३१ ५३	२३० ४५	२२९ ३५
१०	३०	१५५ ४२	२४० ३८	२३९ २७	२३८ १५	२३७ ०	२३५ ४३
११	०	१६३ ४३	२४७ ११	२४५ ५६	२४४ ३८	२४३ १७	२४१ ५३
११	३०	१७१ ५०	२५३ ४६	२५२ २६	२५१ ३	२४९ ३६	२४८ ७
१२	०	१८० ००	२६० २५	२५९ ३	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२	०	१८० ००	२६० २५	२५९ १	२५७ ३४	२५६ ३	२५४ २६
१२	३०	१८८ १०	२६७ १०	२६५ ४३	२६४ १२	२६२ ३६	२६० ५४
१३	०	१९६ १७	२७४ ३	२७२ ३४	२७१ ०	२६९ २१	२६७ ३३
१३	३०	२०४ १८	२८१ ९	२७९ ३९	२७८ २	२७६ १९	२७४ २९
१४	०	२१२ ११	२८८ ३०	२८६ ५९	२८५ २२	२८३ ३६	२८१ ४५
१४	३०	२१९ ५५	२९६ ९	२९४ ४०	२९३ ४	२९१ २०	२८९ २६
१५	०	२२७ २८	३०४ १०	३०२ ४४	३०१ १२	२९९ २८	२९७ ३८
१५	३०	२३४ ५१	३१२ ३३	३११ १५	३०९ ४८	३०८ १३	३०६ २५
१६	०	२४२ ५	३२१ २२	३२० १३	३१८ ५६	३१७ ३०	३१५ ५४
१६	३०	२४९ १२	३३० ३५	३२९ ३९	३२८ ३६	३२७ २५	३२६ ४
१७	०	२५६ ११	३४० ९	३३९ ३०	३३८ ४५	३३७ ५४	३३६ ५५
१७	३०	२६३ ७	३५० ००	३४९ ४०	३४९ १६	३४८ ४९	३४८ १९
१८	०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८	३०	२७६ ५३	१० ०	१४ २०	१० ४४	११ ११	११ ४१
१९	०	२८३ ४९	१९ ५१	२० ३०	२१ १५	२२ ६	२३ ४
१९	३०	२९० ४८	२९ २५	३० २१	३१ २४	३२ ३५	३३ ५६
२०	०	२९७ ५५	३८ ३८	३९ ४७	४१ ४	४२ ३०	४४ ६
२०	३०	३०५ ९	४७ २७	४८ ४५	५० १२	५१ ४७	५३ ३५
२१	०	३१२ ३२	५५ ४०	५७ १६	५८ ४८	६० ३२	६२ २२
२१	३०	३२० ५	६३ ५१	६५ २०	६६ ५६	६८ ४०	७० ३४
२२	०	३२७ ४९	७१ ३०	७३ १	७४ ३८	७६ २४	७८ १५
२२	३०	३३५ ४२	७८ ५१	८० २१	८१ ५८	८३ ४१	८५ ३१
२३	०	३४३ ४३	८५ ५६	८७ २६	८९ ०	९० ३९	९२ २६
२३	३०	३५१ ५०	९२ ५०	९४ १७	९५ ४८	९७ २४	९९ ६
२४	०	००० ०	९९ ३५	१०० ५९	१०२ २६	१०३ ५७	१०५ ३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.	सन्	घं. मि. से.
१९७१	६ ३९ ०७	१९७८	६ ४० १९	१९८५	६ ४१ ३२	१९९२	६ ३८ ४७	१९९९	६ ३९ ५९	२००६	६ ४१ ११	२०१३	६ ४२ २३	२०२०	६ ३९ ३९
१९७२	६ ३८ १०	१९७९	६ ३९ २२	१९८६	६ ४० ३५	१९९३	६ ४१ ४६	२०००	६ ३९ ०२	२००७	६ ४० १४	२०१४	६ ४१ २६	२०२१	६ ४२ ३८
१९७३	६ ४१ १०	१९८०	६ ३८ २४	१९८७	६ ३९ ३८	१९९४	६ ४० ४९	२००१	६ ४२ ०१	२००८	६ ३९ १७	२०१५	६ ४० २९	२०२२	६ ४१ ४०
१९७४	६ ४० १२	१९८१	६ ४१ २३	१९८८	६ ३८ ४०	१९९५	६ ३९ ५२	२००२	६ ४१ ०४	२००९	६ ४२ १६	२०१६	६ ३९ ३१	२०२३	६ ४० ४३
१९७५	६ ३९ १५	१९८२	६ ४० २६	१९८९	६ ४१ ३९	१९९६	६ ३८ ५४	२००३	६ ४० ०७	२०१०	६ ४१ १९	२०१७	६ ४२ ३१	२०२४	६ ३९ ४६
१९७६	६ ३८ १७	१९८३	६ ३९ २९	१९९०	६ ४० ४१	१९९७	६ ४१ ५३	२००४	६ ३९ ०९	२०११	६ ४० २१	२०१८	६ ४१ ३३	२०२५	६ ४२ ४५
१९७७	६ ४१ १६	१९८४	६ ३८ ३२	१९९१	६ ३९ ४४	१९९८	६ ४० ५६	२००५	६ ४२ ०९	२०१२	६ ३९ २४	२०१९	६ ४० ३६	२०२६	६ ४१ ४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून			जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१	११	५३	३८	१३	५५	५०	१५	५८	४	१७	५६	२२	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७	११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४	१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०	१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७	१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३	१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०	१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६	१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३	१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९	१२	२९	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
११	०	३९	२५	२	४१	३१	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६	१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२	१२	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९	१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५	१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२	१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८	१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५	१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१	१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८	१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	२१	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५	१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	१२	१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८	१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५	१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१	१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
२५	१	३४	३७	३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८	१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४	१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
२७	१	४२	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१	१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७	१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४	१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१	१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४				१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
																																		२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०°	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१५९	+१५६	+१४३	+१२९	+११६	+१०२	+८९	+७६	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि. / घं.	० मि. से.	५ मि. से.	१० मि. से.	१५ मि. से.	२० मि. से.	२५ मि. से.	३० मि. से.	३५ मि. से.	४० मि. से.	४५ मि. से.	५० मि. से.	५५ मि. से.
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २.	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	- ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश अं. क. वि.	ई. सन्	अयनांश अं. क. वि.	ई. सन्	अयनांश अं. क. वि.
१९६९	२३ २५ २६	१९९०	२३ ४३ ०२	२०११	२४ ०० ३८
१९७०	२३ २६ १६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१२	२४ ०१ २८
१९७१	२३ २७ ०७	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१३	२४ ०२ १८
१९७२	२३ २७ ५७	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१४	२४ ०३ ०९
१९७३	२३ २८ ४७	१९९४	२३ ४६ २३	२०१५	२४ ०३ ५९
१९७४	२३ २९ ३७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१६	२४ ०४ ४९
१९७५	२३ ३० २८	१९९६	२३ ४८ ०३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७६	२३ ३१ १७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७७	२३ ३२ ०८	१९९८	२३ ४९ ४४	२०१९	२४ ०७ २०
१९७८	२३ ३२ ५९	१९९९	२३ ५० ३४	२०२०	२४ ०८ १०
१९७९	२३ ३३ ४९	२०००	२३ ५१ २४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९८०	२३ ३४ ३९	२००१	२३ ५२ १५	२०२२	२४ ०९ ५१
१९८१	२३ ३५ २९	२००२	२३ ५३ ०५	२०२३	२४ १० ४१
१९८२	२३ ३६ २०	२००३	२३ ५३ ५५	२०२४	२४ ११ ३२
१९८३	२३ ३७ १०	२००४	२३ ५४ ४६	२०२५	२४ १२ २२
१९८४	२३ ३८ ००	२००५	२३ ५५ ३६	२०२६	२४ १३ १२
१९८५	२३ ३८ ५१	२००६	२३ ५६ २६	२०२७	२४ १४ ०२
१९८६	२३ ३९ ४१	२००७	२३ ५७ १७	२०२८	२४ १४ ५३
१९८७	२३ ४० ३१	२००८	२३ ५८ ०७	२०२९	२४ १५ ४३
१९८८	२३ ४१ २१	२००९	२३ ५८ ५७	२०३०	२४ १६ ३३
१९८९	२३ ४२ १२	२०१०	२३ ५९ ४८	२०३१	२४ १७ २४

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४२
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

विंशोत्तरीदशा साधन

(जन्म के समय विंशोत्तरीदशा का भोग्य–भुक्त)

जातक के जन्मकालिक स्पष्टचन्द्रमा के राशि, अंश, कला द्वारा नीचे दी गई " विंशोत्तरीदशा–भोग्यकाल सारणी " से विंशोत्तरी दशा के जन्मकालिक दशेश (महादशा के स्वामी ग्रह) एवं उसकी भोग्यदशा के वर्ष आदि सरलता से इस प्रकार जाने जा सकते हैं :–

इस सारणी में जन्मकालिक स्पष्टचन्द्र की राशि के नीचे चन्द्र की अंश, कला के आगे जन्मकालिक दशेश और उसकी दशा के भोग्य वर्षादि लिखे हैं। इन भोग्य वर्षादि में से चन्द्र की शेष कलाओं द्वारा आगे दी गई " **भोग्यदशासाधन सहायक सारणी** " से स्पष्टचन्द्र की शेष कलाओं के आगे दशेश ग्रह के नीचे लिखे, मासादि लेकर घटाने पर जन्मकालिक दशा के भोग्य वर्ष आदि ज्ञात हो जाते हैं। नीचे दिया गया उदाहरण देखें :–

उदाहरण :– जन्मकालीन स्पष्टचन्द्र 5 रा. 10 अं. 30 क. है। " **विंशोत्तरीदशा भोग्यकाल सारणी** " से कन्या राशि के नीचे 10 अंश 20 कला के आगे चन्द्र की दशा का भोग्यकाल 9 वर्ष 9 मास 0 दिन मिला। " **भोग्यदशासाधन सहायक सारणी** " में दशेश चन्द्र के नीचे चन्द्र की शेष कला 10 के आगे 1 मास 15 दिन मिले। इन्हें 9 वर्ष 9 मास 0 दिन में से घटाने पर 9 वर्ष 7 मास 15 दिन प्राप्त हुए। यह जन्म के समय चन्द्रदशा का भोग्य (शेष बचा) काल है। इसे चन्द्र के पूर्णदशाकाल (10 वर्ष) में से घटाने पर 4 मास 15 दिन चन्द्रदशा का जन्मकालिक भुक्त काल हुआ।

विंशोत्तरीदशा-भोग्यकाल सारणी (भाग 1)

(स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि के अनुसार)

स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु .	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन,	स्पष्ट चन्द्र	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु ,	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर,	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ,	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन,
अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	अं. क.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.	व. मा. दि.
0 00	केतु 07 00 00	सूर्य 04 06 00	मंगल 03 06 00	गुरु 04 00 00	6 40	केतु 03 06 00	सूर्य 01 06 00	राहु 18 00 00	शनि 14 03 00
0 20	06 09 27	04 04 06	03 03 27	03 07 06	7 00	03 03 27	01 04 06	17 06 18	13 09 09
0 40	06 07 24	04 02 12	03 01 24	03 02 12	7 20	03 01 24	01 02 12	17 01 06	13 03 18
1 00	06 05 21	04 00 18	02 11 21	02 09 18	7 40	02 11 21	01 00 18	16 07 24	12 09 27
1 20	06 03 18	03 10 24	02 09 18	02 04 24	8 00	02 09 18	00 10 24	16 02 12	12 04 06
1 40	06 01 15	03 09 00	02 07 15	02 00 00	8 20	02 07 15	00 09 00	15 09 00	11 10 15
2 00	05 11 12	03 07 06	02 05 12	01 07 06	8 40	02 05 12	00 07 06	15 03 18	11 04 24
2 20	05 09 09	03 05 12	02 03 09	01 02 12	9 00	02 03 09	00 05 12	14 10 06	10 11 03
2 40	05 07 06	03 03 18	02 01 06	00 09 18	9 20	02 01 06	00 03 18	14 04 24	10 05 12
3 00	05 05 03	03 01 24	01 11 03	00 04 24	9 40	01 11 03	00 01 24	13 11 12	09 11 21
3 20	05 03 00	03 00 00	01 09 00	शनि 19 00 00	10 00	01 09 00	चन्द्र 10 00 00	13 06 00	09 06 00
3 40	05 00 27	02 10 06	01 06 27	18 06 09	10 20	01 06 27	09 09 00	13 00 18	09 00 09
4 00	04 10 24	02 08 12	01 04 24	18 00 18	10 40	01 04 24	09 06 00	12 07 06	08 06 18
4 20	04 08 21	02 06 18	01 02 21	17 06 27	11 00	01 02 21	09 03 00	12 01 24	08 00 27
4 40	04 06 18	02 04 24	01 00 18	17 01 06	11 20	01 00 18	09 00 00	11 08 12	07 07 06
5 00	04 04 15	02 03 00	00 10 15	16 07 15	11 40	00 10 15	08 09 00	11 03 00	07 01 15
5 20	04 02 12	02 01 06	00 08 12	16 01 24	12 00	00 08 12	08 06 00	10 09 18	06 07 24
5 40	04 00 09	01 11 12	00 06 09	15 08 03	12 20	00 06 09	08 03 00	10 04 06	06 02 03
6 00	03 10 06	01 09 18	00 04 06	15 02 12	12 40	00 04 06	08 00 00	09 10 24	05 08 12
6 20	03 08 03	01 07 24	00 02 03	14 08 21	13 00	00 02 03	07 09 00	09 05 12	05 02 21

विंशोत्तरीदशा–भोग्यकाल सारणी (भाग 2)

(स्पष्ट चन्द्र की राश्यादि के अनुसार)

स्पष्ट चन्द्र अं. क.	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु , व. मा. दि.	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर, व. मा. दि.	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ, व. मा. दि.	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन, व. मा. दि.
13 20	शुक्र 20 00 00	चन्द्र 07 06 00	राहु 09 00 00	शनि 04 09 00
13 40	19 06 00	07 03 00	08 06 18	04 03 09
14 00	19 00 00	07 00 00	08 01 06	03 09 18
14 20	18 06 00	06 09 00	07 07 24	03 03 27
14 40	18 00 00	06 06 00	07 02 12	02 10 06
15 00	17 06 00	06 03 00	06 09 00	02 04 15
15 20	17 00 00	06 00 00	06 03 18	01 10 24
15 40	16 06 00	05 09 00	05 10 06	01 05 03
16 00	16 00 00	05 06 00	05 04 24	00 11 12
16 20	15 06 00	05 03 00	04 11 12	00 05 21
16 40	15 00 00	05 00 00	04 06 00	बुध 17 00 00
17 00	14 06 00	04 09 00	04 00 18	16 06 27
17 20	14 00 00	04 06 00	03 07 06	16 01 24
17 40	13 06 00	04 03 00	03 01 24	15 08 21
18 00	13 00 00	04 00 00	02 08 12	15 03 18
18 20	12 06 00	03 09 00	02 03 00	14 10 15
18 40	12 00 00	03 06 00	01 09 18	14 05 12
19 00	11 06 00	03 03 00	01 04 06	14 00 09
19 20	11 00 00	03 00 00	00 10 24	13 07 06
19 40	10 06 00	02 09 00	00 05 12	13 02 03
20 00	10 00 00	02 06 00	गुरु 16 00 00	12 09 00
20 20	09 06 00	02 03 00	15 07 06	12 03 27
20 40	09 00 00	02 00 00	15 02 12	11 10 24
21 00	08 06 00	01 09 00	14 09 18	11 05 21
21 20	08 00 00	01 06 00	14 04 24	11 00 18
21 40	07 06 00	01 03 00	14 00 00	10 07 15
22 00	07 00 00	01 00 00	13 07 06	10 02 12
22 20	06 06 00	00 09 00	13 02 12	09 09 09
22 40	06 00 00	00 06 00	12 09 18	09 04 06
23 00	05 06 00	00 03 00	12 04 24	08 11 03

स्पष्ट चन्द्र अं. क.	चन्द्रराशि– मेष, सिंह, धनु , व. मा. दि.	चन्द्रराशि– वृष, कन्या, मकर, व. मा. दि.	चन्द्रराशि– मिथुन, तुला, कुम्भ, व. मा. दि.	चन्द्रराशि– कर्क, वृश्चिक, मीन, व. मा. दि.
23 20	शुक्र 05 00 00	मंगल 07 00 00	गुरु 12 00 00	बुध 08 06 00
23 40	04 06 00	06 09 27	11 07 06	08 00 27
24 00	04 00 00	06 07 24	11 02 12	07 07 24
24 20	03 06 00	06 05 21	10 09 18	07 02 21
24 40	03 00 00	06 03 18	10 04 24	06 09 18
25 00	02 06 00	06 01 15	10 00 00	06 04 15
25 20	02 00 00	05 11 12	09 07 06	05 11 12
25 40	01 06 00	05 09 09	09 02 12	05 06 09
26 00	01 00 00	05 07 06	08 09 18	05 01 06
26 20	00 06 00	05 05 03	08 04 24	04 08 03
26 40	सूर्य 06 00 00	05 03 00	08 00 00	04 03 00
27 00	05 10 06	05 00 27	07 07 06	03 09 27
27 20	05 08 12	04 10 24	07 02 12	03 04 24
27 40	05 06 18	04 08 21	06 09 18	02 11 21
28 00	05 04 24	04 06 18	06 04 24	02 06 18
28 20	05 03 00	04 04 15	06 00 00	02 01 15
28 40	05 01 06	04 02 12	05 07 06	01 08 12
29 00	04 11 12	04 00 09	05 02 12	01 03 09
29 20	04 09 18	03 10 06	04 09 18	00 10 06
29 40	04 07 24	03 08 03	04 04 24	00 05 03
30 00	04 06 00	03 06 00	04 00 00	00 00 00

भोग्य दशासाधन सहायक सारणी

स्पष्ट चन्द्र की शेष कलाएं	दशेश केतु (7 वर्ष)	दशेश शुक्र (20 वर्ष)	दशेश सूर्य (6 वर्ष)	दशेश चन्द्र (10 वर्ष)	दशेश मंगल (7 वर्ष)	दशेश राहु (18 वर्ष)	दशेश गुरु (16 वर्ष)	दशेश शनि (19 वर्ष)	दशेश बुध (17 वर्ष)	स्पष्ट चन्द्र की शेष कलाएं
	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	मा. दि.	
1	00 03	00 09	00 03	00 05	00 03	00 08	00 07	00 09	00 08	1
2	00 06	00 18	00 05	00 09	00 06	00 16	00 14	00 17	00 15	2
3	00 09	00 27	00 08	00 14	00 09	00 24	00 22	00 26	00 23	3
4	00 13	01 06	00 11	00 18	00 13	01 02	00 29	01 04	01 01	4
5	00 16	01 15	00 14	00 23	00 16	01 11	01 06	01 13	01 08	5
6	00 19	01 24	00 16	00 27	00 19	01 19	01 13	01 21	01 16	6
7	00 22	02 03	00 19	01 02	00 22	01 27	01 20	02 00	01 24	7
8	00 25	02 12	00 22	01 06	00 25	02 05	01 28	02 08	02 01	8
9	00 28	02 21	00 24	01 11	00 28	02 13	02 05	02 17	02 09	9
10	01 01	03 00	00 27	01 15	01 01	02 21	02 12	02 26	02 17	10
11	01 04	03 09	00 29	01 20	01 05	02 29	02 20	03 04	02 24	11
12	01 07	03 18	01 02	01 24	01 08	03 07	02 27	03 13	03 02	12
13	01 10	03 27	01 05	01 29	01 11	03 15	03 04	03 21	03 10	13
14	01 13	04 06	01 08	02 03	01 14	03 24	03 11	04 00	03 17	14
15	01 17	04 15	01 11	02 08	01 17	04 02	03 18	04 08	03 25	15
16	01 20	04 24	01 13	02 12	01 20	04 10	03 25	04 17	04 03	16
17	01 23	05 03	01 16	02 17	01 23	04 18	04 02	04 26	04 11	17
18	01 26	05 12	01 18	02 21	01 27	04 26	04 09	05 04	04 18	18
19	01 29	05 21	01 21	02 25	02 00	05 04	04 16	05 12	04 25	19
20	02 03	06 00	01 24	03 00	02 03	05 12	04 24	05 21	05 03	20

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घडी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घडी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घडी में ११४ दिन	बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४८ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उ.फा. उ.षा.	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पू.भा.	पु. अनु. उ.भा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पू.फा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उफा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	अन्तर्दशा के मास, दिन
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट–घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश–सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म–वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म–वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन–प्रकारः– (१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि–मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी में जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी–कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जाने। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु. २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री–ग्रह–बल– स्त्रीग्रह (चं. बु. शु. श.) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू. मं. बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रि बल–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि–ज्ञान और फल

∴ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ∴ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।∴ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।∴ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६।८।१२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक–दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से [illegible] मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते है, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टै. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टै. टा.) ८घ. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टै. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, विकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–*प्रियव्रत शर्मा*

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	मिथुन	धनु	उच्चराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	परमोच्चांशाः
तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धनु	मिथुन	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	१५	१५	नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्ण	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्ण	अपराह्ण	अपराह्ण	अपराह्ण	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्ददशा (मास–दिन)

मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग—

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र**–तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घडी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घडी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घडी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. ५ गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में, रवि, गुरु और भौम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियां में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मृ., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

भूम्युपवेशन–मुहूर्त

पांचवें महीने में पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त

कर्णविधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधान काल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मृ., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो "**यथा कुलधर्म वः**"– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड–आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (**गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः**) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों; वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्त्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। *यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।*

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखकः- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाईं ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के २ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों की एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कंन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का पहिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का पहिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की है,अतः इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे,** दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्ठक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशी या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है। कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसंख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नूटर का भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर,कन्या के नाम के आदिम वर्णो से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर 'अवर्ग'; 'क' आदि पांच वर्ण 'कवर्ग', 'च' आदि पांच वर्ण 'चवर्ग', 'ट' आदि पाँच वर्ग 'टवर्ग' त आदि पांच वर्ण 'तवर्ग';'प'आदि पांच वर्ण 'पवर्ग', 'य' आदि पांच वर्ण 'यवर्ग' तथा 'श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों केस्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान,

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड़ और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प, फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा।'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ ½ ,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्तकार अच्छा नहीं मानते ।१८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अवकहडा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है ।कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है ।दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है ।इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है-सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही निर्देश है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	आश्व.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	भा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	मं.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	चं.	चं.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	आ.	म.
राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	मं.	म.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देव, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

मेलापक सारणी (भाग 1)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य य त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 उ ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बमन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग व भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ व भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग य भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	26 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गमत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	.20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग य त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

वर → / कन्या ↓		तुला चित्रा 3,4	तुला स्वाती 1,2,3,4	तुला विशा. 1,2,3	वृश्चिक विशा. 4	वृश्चिक अनु. 1,2,3,4	वृश्चिक ज्ये. 1,2,3,4	धनु मूल 1,2,3,4	धनु पू.षा. 1,2,3,4	धनु उ.षा. 1	मकर उ.षा. 2,3,4	मकर श्रव. 1,2,3,4	मकर धनि. 1,2	कुम्भ धनि. 3,4	कुम्भ शत. 1,2,3,4	कुम्भ पू.भा. 1,2,3	मीन पू.भा. 4	मीन उ.भा. 1,2,3,4	मीन रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ ब य त ग	26½ ब य त	22½ त ब य ग	18½ ग भ त य	25½ भ त	14 भ न ग	13½ भ न ग	25 भ	23½ भ त	25 ब त र	26 ब त र	20 ब त यरग	20 ब त यरग	15 ब न तरग	16 ब न तयर	14½ न भ त य	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ ब त	21½ ग ब त य	17½ ग भ त य	17½ न भ त	19½ ग भ त	20 ग भ	18 न भ	26 भ	27½ ब र	26 ब त र	10 ब य गनतर	10 ब य गनतर	20 ग ब त र	24 ब य त र	22½ त भ य	17½ न भ त	26½ भ त
	कृत्ति. 1	27½ ब त य	15½ ब ग न त	19½ ब न त य	15½ भ न त य	19½ ग भ त	25½ भ त	24½ भ त	18 ग भ य	12 ग भ भ	13½ ब ग न र	11½ ब य रगन	25 ब त य र	25 ब त य र	27 ब त र	19 ब ग तयर	17½ ग भ त य	19½ ग भ त	11½ ग भ त न
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ ब भ त य	10½ ग ब भनत	14½ ब भ तनय	20½ न त य	24½ ग त	30½ त	20 भ तर	13½ य ग भ र	7½ ग भ न र	12 ग भ न	10 य ग भ न	23½ भ त य	29½ ब त य	31½ ब त	23½ ग ब त य	20 ग त य र	22 ग त र	14 ग न त र
	रोहि. 1,2,3,4	19 ग ब भ	15½ ब भ न त	9½ तबग न भ	15½ ग न त	29½ त	23½ ग त	14 ग भ त र	19 र भ त य	11½ य भ न र	16 भ य न	17 न भ य	20 ग भ	26½ ग ब	24½ ग ब त	30½ ब त	27 त र	27 त र	19 र न त
	मृग. 1,2	12 ब भ न ग	25 ब भ	18½ ब भ त ग	24½ त ग	21½ न त	24½ त ग	15 भ त र ग	10 न भ तयर	17 य भ तर	21½ भ य त	25 भ य	13 न भ ग	19 ब ग न	27 ब ग	29½ ब त	26 त र	18 न त र	27 त र
मिथुन	मृग. 3,4	14 न भ ग	27 भ	20½ भ त ग	14 भ व तरग	11 भवन त र	14 भ व तरग	23 त र ग	18 न त य र	25 य त र	20 भ य व त	23½ भ व य	11½ न भ व ग	13 न भ ग	21 भ ग	23½ भ त	25½ त व र	17½ न व त र	26½ व त र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 ग भ य	27 भ	20 ग भ य	13½ रगव भ य	17 त भ वयर	3 यतगव भनर	16 ग न त र	28 त र	28 त र	23 भ व त	23 भ व त	17½ ग भ व य	19 ग भ य	12 ग भ न	17 न भ य	19 न र व य	26½ व त र	26½ व त र
	पुन. 1,2,3	20½ भ त ग	28 भ	22 भ ग	15½ व भ र ग	21½ व भ र	7 रगव भनत	14 यरत न ग	27 त र	27 त र	22 व त भ	23 व त भ	17 वतभ य ग	18½ भ ग त य	14 न भ ग	16 न भ य	18 र न य व	28 र व	27½ व त र
कर्क	पुन. 4	20½ ब त र ग	28 व र ब	22 व र ब ग	20 ग भ	26 भ	11½ त ग भ न	8 वतब भगनय	21 ब भ व त	21 ब भ व त	26 ब त र	27 ब त र	21 बगत य र	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 न भ य	20 भ	25½ भ त
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ ब व त र	21 रबग व य	19 भ य ग	18 भ न	21 भ ग	17 गबभ व त	11 यबभ तनव	21 ब भ व त	26 ब त र	25 ब य त र	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ ब व त र	12½ गबव तरन	17½ नबव त र	15½ न भ त	20 ग भ	26 भ	22½ ब भ व य	16 गबव भ त	8 गबव भनत	13 गबर न त	13 बगत न र	26 ब त य र	17½ बभव तरय	19½ बभव त र	11½ गबभ वतयर	17½ ग भ त य	21 ग भ	13 ग भ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ ब व त र	11½ बवत रगन	16½ बवत र न	22½ न व त	25½ ग व त	33 व	25 भ व	19 ग व भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ ब र त भ	24½ ब व त र	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	18½ ग भ त	19½ ग भ त	13 ग भ न
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ ब व त र	18½ बवर ग त	24½ ग ब त	23½ न व त	25½ ग व त	19 ग व भ	17 भ व न	24 भ व न	17 ब र भ य	18½ ब त भ त	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर ग त	24½ ब व र त	24½ भ त	17½ न भ त	25½ भ त
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ ब व त र	16½ बवय गतर	22½ य व ग त	31½ व त	17½ ग व त न	9½ ग व नभत	25 भ व	25 भ व	20 ब र भ	20 ब र भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ न भ त य	26½ भ त	25½ भ त
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भ त	25½ ब भ त	16½ गबय भ त	18 यवत ग र	27 व त र	13 गवत न र	14 ग न त र	29½ र	29½ र	24½ भ व	24½ भ व	16 ग भ वतय	16½ गबभ त य	10½ गबन भ त	14½ बभन तय	17½ तनव य र	28½ व त र	27½ व त र
	हस्त 1,2,3,4	20 ब भ य ग	26½ ब भ त	18½ ब भ तयग	20 व ग तयर	26 व त र	13 न व तरग	15 न त र ग	27 त र	28½ र	23½ भ व	24½ भ व	18½ भ ग व र	19 ब भ य ग	8½ बयभ नतग	13½ ब भ नतय	16½ वनत य र	26½ व त र	27½ व त र
	चित्रा 1,2	20 ब भ न	19 ग ब भ य	26½ ब भ त	28 व त र	11 गवन तयर	25 व त य र	27 त य र	14 ग न त र	22 ग त र	17 ग भ त	18½ ग भ व	15½ भ व न य	16 ब य भ न	24 ब भ य	16½ गबत भ य	19½ गवत य र	10½ गयव नतर	19½ बगत य र

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

कन्या \ वर		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पूफा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1,2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ वयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बयर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पूषा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा. 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पूभा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पूभा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर वयगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगव भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र य त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ व त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ यतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ बवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पू.षा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पू.भा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पू.भा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बयय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १½ मास, कुल वालों के मरण से २२½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

<table>
<tr><td rowspan="4"><u>विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्</u>
पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६/
७/९/१०/११/१२</td><td colspan="13">कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–
दिन–संख्या</td></tr>
<tr><td>राशि →</td><td>१</td><td>२</td><td>३</td><td>४</td><td>५</td><td>६</td><td>७</td><td>८</td><td>९</td><td>१०</td><td>११</td><td>१२</td></tr>
<tr><td>तैल सं.</td><td>७</td><td>१०</td><td>५</td><td>१०</td><td>५</td><td>७</td><td>७</td><td>५</td><td>५</td><td>५</td><td>५</td><td>७</td></tr>
<tr><td colspan="13">अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥</td></tr>
</table>

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाश	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ.	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र
आर्द्रा	मृ.	अ.	कृ.	म.	कृ.	अ.	रो.	म.	भ.	अ.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आ.	मृ.	आ.	मृ.	श्र.	आ.	ज्ये.	पुन.	श.	ज्ये.	
श.	ज्ये.	ज्ये.	वि.	श.	ध.	उ.षा.	ध.	श.	वि.	ध.	
पू.फा.	ध.	पुष्य	पू.फा.	पू.भा.	पुष्य	पू.भा.	आश्ले.	वि.	उ.फा.	म.	
वि.	म.	ह.	उ.भा.	स्वा.	ह.	पू.षा.	मू.	अनु.	पू.फा.	पू.फा.	
मू.	ह.	रे.	पू.भा.	म.	रे.	पू.फा.	उ.भा.	उ.षा.	मू.	स्वा.	

हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृ.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्र.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.षा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र						
९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। –*कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाहलिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः॥

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः–"पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह-पात-लत्ता-जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क-बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ - (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यश्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभश्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंगवन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याहवयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगौ खलौ साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शी. यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्य, केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। घूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूवोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि										
र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोघूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोघूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोघूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोघूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोघूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोघूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र य़ोगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्								
नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–मासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना– **व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥** रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम, शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीड़न आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आ[illegible]ण बनवाने का मुहूर्त

हस्त., अ., पुष्य., [illegible]ो., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहि[illegible] तिथि., शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोडकर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतद्भिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. ३, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त

अ., मू., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये-भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश-योनि-मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने-बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्राममात् वासकर्तुः नक्षत्रं यावद् साभिजित् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्		
सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पूषा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्:– 'संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० [illegible] घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। [illegible] १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की [illegible] तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
धनहानि	पुष्टि	धनप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्हिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्हिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों मे। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
[illegible]म्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्ति
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्
चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।		

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्		
ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.,षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोड़कर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेष:— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टमिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्मादिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र से गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र	६	२	४	४	४	४	४
संख्या	उत्तमपाक	शवदहन	सर्पभय	मित्रलाभ	रोगभय	क्वाथकर्म	सुख
फल	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ	नेष्ट	नेष्ट	शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा—मुहूर्त्त—विचारः

हस्त, मघा, श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः— जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है— जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च—** **यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।**

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु—शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः— न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषानभुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छच्छूले न दोषभाक्॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास—चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः— उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग—गुरु—अङ्गिरामत— गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। **पंच—पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।**

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक—यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्ः— सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख—सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार–संक्रान्ति–दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वाकादि मुहूर्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएँ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु–घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी–पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत–स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्य	दारिद्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया–त्रयोदशी, चतुर्थी–चतुर्दशी, पञ्चमी–पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा–मुहूर्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः– **प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्यादिने वारे तिथाविति।।**

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, सेवादि कार्यों में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोमनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– "मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का:– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– **एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥**

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारंपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च							
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह–
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तो अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–वृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीडा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीट कर दें तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेद बीट कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला–134 109,

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द गौतम का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

–: समयशुद्धि :–

गुरु अस्त :– गुरु इस वर्ष ज्ये. शु. १४ मं. से आषा. शु. ११ र. (१० जून से ६ जुला., २०२५ ई.) तक अस्त रहेगा।

शुक्र अस्त :– शुक्र इस वर्ष पौष कृ. ९ श. से माघ शु. १२ शु. (१३ दिसं., २०२५ ई. से ३० जन., २०२६ ई.) तक अस्त रहेगा।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है। क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु-शुक्र का उदय-अस्त 'सं. २०८२ वि.'

अक्षांश →	+ ५°	+ १५°	+ २५°	+ ३५°
गुरु अस्त	१२ जून, '२५	१२ जून, '२५	११ जून, '२५	१० जून, '२५
गुरु उदित	४ जुला., '२५	४ जुला., '२५	५ जुला., '२५	६ जुला., '२५
शुक्र पूर्व में अस्त	१४ दिसं., '२५	१४ दिसं. २५	१४ दिसं., २५	१२ दिसं., '२५
शुक्र पश्चिम में उदित	१ फर., '२६	३१ जन., '२६	३० जन., '२६	३० जन., '२६

ध्यान रहे :– गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले **वार्धक्यदोष** और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी **बाल्यदोष** के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते।

ध्यान दें – मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है कि-इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें।

निर्बल लग्न - लग्नशुद्धि होने पर भी बुध-गुरु-शुक्र की सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोण में स्थिति का अभाव है तो उस लग्न को **'निर्बल लग्न'** लिखा गया है।

दैवज्ञ ध्यान दें–

(विवाहलग्नों की संख्या में वृद्धि)

इन आगे दिए जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों को देखने से आपको ज्ञात होगा कि-विगत कई वर्षों से शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है। दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो। इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापी ग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु एवम् अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में दैवज्ञ लोग सर्वथा अयोग्य मानते चले आते रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्ट वाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं। लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाए, तब संहिताकारों का कहना है कि– उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्थस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरी तरह निवारण करते हैं–यह भी इन परिहारवाक्यों से सुस्पष्ट है। संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर हमने विगत कुछ वर्षों से लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का यहां निर्णय किया है, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है।

ध्यान दें–पहले शुद्धविवाहलग्नों के आगे कोष्ठक में लग्नभंगकारक उन ग्रहों का निर्देश किया रहता था, जिनका वहां परिहार हुआ है। अब यह निर्देश अनावश्यक समझकर हमने छोड़ दिया है। विशेष स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक **''मुहूर्त्तगजानन''** के पृष्ठ १५१ पर दिया लेख **'लग्नभंगपरिहार (एक संशोधन)'** अवश्य पढ़िये। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हुआ है।

शुद्ध विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
वैशा. कृ. १ चं.	वैशा. २	अप्रै. १४	स्वा.	तुला	मेष	वृष	दि.ल. २, ३, ५, रा.ल. ८, ९ (२४/१३ तक),
वैशा. कृ. ३ बु.	वैशा. ४	अप्रै. १६	अनु.	वृश्चिक	मेष	वृष	ल. ९ (२४/१८ बाद), ११,
वैशा. कृ. ५ शु.	वैशा. ६	अप्रै. १८	मूल	धनु	मेष	वृष	दि.ल. ५, गोधू., ८, ११,
वैशा. कृ. ६ श.	वैशा. ७	अप्रै. १९	मूल	धनु	मेष	वृष	दि.ल. २, ३ (१०/२१ तक),
वैशा. कृ. ७ र.	वैशा. ८	अप्रै. २०	उ.षा.	धनु/मकर	मेष	वृष	दि.ल. ५, गोधू., ८, ९, ११, (गुरु-पादवेधाभाव),
वैशा. कृ. ८ चं.	वैशा. ९	अप्रै. २१	श्रव.	मकर	मेष	वृष	दि.ल. ५, गोधू., ८, ९, ११,
वैशा. कृ. ९ मं.	वैशा. १०	अप्रै. २२	श्रव.	मकर	मेष	वृष	दि.ल. २, ३,
वैशा. कृ. ९ मं.	वैशा. १०	अप्रै. २२	धनि.	मकर/कुंभ	मेष	वृष	दि.ल. ५, गोधू., ८, ९,
वैशा. कृ. १२ शु.	वैशा. १३	अप्रै. २५	उ.भा.	मीन	मेष	वृष	दि.ल. ३ (८/५३ बाद), (मृत्युबाण १०/०० तक) (मृत्युपरिहार),
वैशा. शु. २ मं.	वैशा. १७	अप्रै. २९	रोहि.	वृष	मेष	वृष	ल. ८, ९, ११,
वैशा. शु. ३ बु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	रोहि.	वृष	मेष	वृष	दि.ल. ३, ५ (१४/२५ बाद),
वैशा. शु. ३ बु.	वैशा. १८	अप्रै. ३०	मृग.	वृष	मेष	वृष	ल. ८, ९,
वैशा. शु. ४ गु.	वैशा. १९	मई १	मृग.	मिथुन	मेष	वृष	दि.ल. ५ (१४/२० तक),
वैशा. शु. ८ चं.	वैशा. २३	मई ५	मघा	सिंह	मेष	वृष	ल. गोधू., ८, ९, ११, (१०/१२ से १४/५० तक क्रान्तिसाम्य),
वैशा. शु. ९ मं.	वैशा. २४	मई ६	मघा	सिंह	मेष	वृष	दि.ल. २, ३,
वैशा. शु. १० बु.	वैशा. २५	मई ७	उ.फा.	सिंह	मेष	वृष	ल. गोधू., ८, ९ (२३/२४ तक), (केतुयुति-परिहार),
वैशा. शु. ११ गु.	वैशा. २६	मई ८	उ.फा.	कन्या	मेष	वृष	दि.ल. ५ (१२/२९ बाद), गोधू., ८ (२१/०६ तक), (केतुयुति-परिहार),
ज्ये. कृ. ३ गु.	ज्ये. २	मई १५	मूल	धनु	वृष	मिथुन	ल. १ (२८/०३ बाद), (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. ४ शु.	ज्ये. ३	मई १६	मूल	धनु	वृष	मिथुन	दि.ल. ३, ५, (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. कृ. ५ श.	ज्ये. ४	मई १७	उ.षा.	धनु	वृष	मिथुन	ल. गोधू., (२४/०३ बाद गुरुपादवेध),
ज्ये. कृ. ५ र.	ज्ये. ५	मई १८	उ.षा.	मकर	वृष	मिथुन	दि.ल. ३, ५, (६/२१ तक गुरुपादवेध),
ज्ये. कृ. ५ र.	ज्ये. ५	मई १८	श्रव.	मकर	वृष	मिथुन	ल. गोधू., ९, १ (निर्बल लग्न),
ज्ये. कृ. ६ चं.	ज्ये. ६	मई १९	श्रव.	मकर	वृष	मिथुन	ल. गोधू., (१०/१९ से १५/२४ तक क्रान्तिसाम्य),
ज्ये. कृ. १२ श.	ज्ये. ११	मई २४	अश्वि.	मेष	वृष	मिथुन	दि.ल. ७, गोधू.,

शुद्ध विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
ज्ये. शु. २ बु.	ज्ये. १५	मई २८	मृग.	वृष/मिथुन	वृष	मिथुन	दि.ल. ३, ७, रा.ल. ९ (२१/०८ बाद),
ज्ये. शु. ६ र.	ज्ये. १९	जून १	मघा	सिंह	वृष	मिथुन	ल. ९ (२१/३६ बाद), १,
ज्ये. शु. ७ चं.	ज्ये. २०	जून २	मघा	सिंह	वृष	मिथुन	दि.ल. ३, गोधू., ९ (२०/३५ तक),
ज्ये. शु. ८ मं.	ज्ये. २१	जून ३	उ.फा.	सिंह	वृष	मिथुन	ल. १, (केतुयुति-परिहार) (मृत्यु-परिहार),
ज्ये. शु. ९ बु.	ज्ये. २२	जून ४	उ.फा.	कन्या	वृष	मिथुन	ल. ९, १ (२७/३५ तक), (केतुयुति-परिहार), (१९/१३ तक मृत्युबाण),
ज्ये. शु. १२ श.	ज्ये. २५	जून ७	स्वा.	तुला	वृष	मिथुन	दि.ल. ४ (९/३९ बाद),
श्राव. कृ. १ शु.	आषा.२७	जुला. ११	उ.षा.	मकर	मिथुन	मिथुन	ल. १, २, (२८/१६ बाद शुक्र-पादवेध),
श्राव. कृ. २ श.	आषा.२८	जुला. १२	उ.षा.	मकर	मिथुन	मिथुन	दि.ल. ४ (६/३६ तक), (शुक्र-पादवेधाभाव),
श्राव. कृ. २ श.	आषा.२८	जुला. १२	श्रव.	मकर	मिथुन	मिथुन	दि.ल. ४ (६/३६ बाद), ७, गोधू., १, २,
श्राव. कृ. ३ र.	आषा.२९	जुला. १३	श्रव.	मकर	मिथुन	मिथुन	दि.ल. ४ (६/५३ तक),
श्राव. कृ. ३ र.	आषा.२९	जुला. १३	धनि.	मकर/कुंभ	मिथुन	मिथुन	दि.ल. ४ (६/५३ बाद), ७ (१३/२५ तक), रा. ल. १ (२५/०३ बाद), २ (१८/५३ से २४/५१ तक बुधपादवेध),
श्राव. कृ. ४ चं.	आषा.३०	जुला. १४	धनि.	कुंभ	मिथुन	मिथुन	दि.ल. ४ (६/४९ तक), (बुधपादवेधाभाव),
श्राव. कृ. १० र.	श्राव. ५	जुला. २०	रोहि.	वृष	कर्क	मिथुन	ल. १, ३,
श्राव. कृ. ११ चं.	श्राव. ६	जुला. २१	रोहि.	वृष	कर्क	मिथुन	दि.ल. ७, ९ (निर्बल लग्न), गोधू.,
श्राव. कृ. ११ चं.	श्राव. ६	जुला. २१	मृग.	वृष	कर्क	मिथुन	ल. १ (निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. २ श.	श्राव. ११	जुला. २६	मघा	सिंह	कर्क	मिथुन	ल. ३ (२८/०५ बाद), (मृत्युबाण २८/५२ बाद) (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. ३ र.	श्राव. १२	जुला. २७	मघा	सिंह	कर्क	मिथुन	दि.ल. ७, ८ (१६/२३ तक) (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),
श्राव. शु. ४ चं.	श्राव. १३	जुला. २८	उ.फा.	सिह/कन्या	कर्क	मिथुन	ल. १ (२३/२४ बाद) (निर्बल लग्न), २ (निर्बल लग्न), ३, (भौमयुति-परिहार),
श्राव. शु. ५ मं.	श्राव. १४	जुला. २९	उ.फा.	कन्या	कर्क	मिथुन	दि.ल. ७, ८ (निर्बल लग्न), गोधू., (भौमयुति-परिहार),
श्राव. शु. ७ गु.	श्राव. १६	जुला. ३१	स्वा.	तुला	कर्क	मिथुन	ल. २ (२४/४१ बाद) (निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. ८ शु.	श्राव. १७	अग. १	स्वा.	तुला	कर्क	मिथुन	ल. गोधू., १ (निर्बल लग्न), २ (निर्बल लग्न), ३ (२७/४० तक),
श्राव. शु. ९ र.	श्राव. १९	अग. ३	अनु.	वृश्चिक	कर्क	मिथुन	दि.ल. ७, गोधू., १ (निर्बल लग्न), ३,
श्राव. शु. १३ गु.	श्राव. २३	अग. ७	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	मिथुन	दि.ल. ८ (१४/०१ बाद) (निर्बल लग्न), गोधू., १ (निर्बल लग्न), २ (निर्बल लग्न), ३,

शुद्ध विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
श्राव. शु. १४ शु.	श्राव. २४	अग. ८	उ.षा.	मकर	कर्क	मिथुन	दि.ल. ७, ८ (१४/१२ तक) (निर्बल लग्न),
श्राव. शु. १४ शु.	श्राव. २४	अग. ८	श्रव.	मकर	कर्क	मिथुन	ल. ३ (२५/४१ बाद),
श्राव. शु. १५ श.	श्राव. २५	अग. ९	श्रव.	मकर	कर्क	मिथुन	दि.ल. ७, ८ (१४/२३ तक) (निर्बल लग्न),
भाद्र. कृ. ४ बु.	श्राव. २९	अग. १३	रेव.	मीन	कर्क	मिथुन	ल. १ (२२/३२ बाद) (निर्बल लग्न), २ (निर्बल लग्न), ३, (२२/३२ तक भौमवेध),
भाद्र. कृ. ९ र.	भाद्र. २	अग. १७	रोहि.	वृष	सिंह	मिथुन	दि.ल. ७, ८ (निर्बल लग्न), गोधू., १ (निर्बल लग्न), ३ (२६/५१ तक), (२६/५१ बाद मृत्युबाण),
भाद्र. कृ. ९ र	भाद्र. २	अग. १७	मृग.	वृष	सिंह	मिथुन	ल. ४, (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. कृ. १० चं.	भाद्र. ३	अग. १८	मृग.	मिथुन	सिंह	मिथुन	ल. १ (२२/५९ तक) (निर्बल लग्न), २ (२४/११ बाद) (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. शु. १ र.	भाद्र. ९	अग. २४	उ.फा.	सिंह	सिंह	मिथुन	ल. ३ (२६/०५ बाद), ४,
भाद्र. शु. २ चं.	भाद्र. १०	अग. २५	उ.फा.	कन्या	सिंह	मिथुन	दि.ल. ७, ८, ९ (निर्बल लग्न), रा. ल. १, २ (निर्बल लग्न), ३(निर्बल लग्न), ४ (२७/४१ तक),
भाद्र. शु. ५ गु.	भाद्र. १३	अग. २८	स्वा.	तुला	सिंह	मिथुन	दि.ल. ८, ९ (निर्बल लग्न), गोधू., १,२ (निर्बल लग्न), ३,४,
भाद्र. शु. ७ श.	भाद्र. १५	अग. ३०	अनु.	वृश्चिक	सिंह	मिथुन	दि.ल. ९ (१४/३७ से १५/०१ तक) (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. ९ चं.	भाद्र. १७	सितं. १	मूल	धनु	सिंह	मिथुन	ल. १, २ (निर्बल लग्न), ३,४, (गुरुपादवेधाभाव),
भाद्र. शु. १० मं.	भाद्र. १८	सितं. २	मूल	धनु	सिंह	मिथुन	ल. गोधू., १(२१/५१ तक), (८/५७ से १५/२५ तक गुरुपादवेध),
भाद्र. शु. ११ बु.	भाद्र. १९	सितं. ३	उ.षा.	धनु	सिंह	मिथुन	ल. ४ (२८/२२ बाद),
भाद्र. शु. १२ गु.	भाद्र. २०	सितं. ४	उ.षा.	मकर	सिंह	मिथुन	दि.ल. ७, ८, ९(निर्बल लग्न), गोधू., १, २ (२३/४४ तक) (निर्बल लग्न),
भाद्र. शु. १३ शु.	भाद्र. २१	सितं. ५	श्रव.	मकर	सिंह	मिथुन	दि.ल. ७, ८ (१३/५२ तक), गोधू., १, २ (२३/३८ तक) (निर्बल लग्न), (बुधपादवेधाभाव), (मृत्युबाण १८/१६ बाद) (मृत्यु-परिहार),
भाद्र. शु. १३ शु.	भाद्र. २१	सितं. ५	धनि.	मकर	सिंह	मिथुन	ल. २ (२३/३८ बाद) (निर्बल लग्न), ३, ४, (शुक्रपादवेधाभाव), (मृत्यु-परिहार),
आश्वि. शु. ४ शु.	आश्वि. ११	सितं. २६	अनु.	वृश्चिक	कन्या	मिथुन	ल. २ (२२/०९ बाद), ३, ४ (निर्बल लग्न),
आश्वि. शु. ५ श.	आश्वि. १२	सितं. २७	अनु.	वृश्चिक	कन्या	मिथुन	दि.ल. ९, १० (निर्बल लग्न), गोधू., २,३,४ (२४/०८ तक), (निर्बल लग्न), (मृत्यु-परिहार),
आश्वि. शु. ७ चं.	आश्वि. १४	सितं. २९	मूल	धनु	कन्या	मिथुन	दि.ल. ८(१०/३३ तक), (१०/३३ से १७/०१ तक गुरुपादवेध),
आश्वि. शु. ९ बु.	आश्वि. १६	अक्तू. १	उ.षा.	धनु/मकर	कन्या	मिथुन	दि.ल. ८, गोधू., २,३,४ (निर्बल लग्न),

शुद्ध विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	
आश्वि. शु. १० गु.	आश्वि.१७	अक्तू. २	श्रव.	मकर	कन्या	मिथुन	दि.ल. ८, ९, गोधू., २, ३, ४ (निर्बल लग्न),
आश्वि. शु. ११ शु.	आश्वि.१८	अक्तू. ३	धनि.	मकर/कुंभ	कन्या	मिथुन	ल. २ (२१/४५ तक), ३ (२३/४५ बाद),
आश्वि. शु. १५ मं.	आश्वि.२२	अक्तू. ७	रेव.	मीन	कन्या	मिथुन	दि.ल. ९(१३/०७ बाद), १०(निर्बल लग्न), (मृत्युबाण ११/०१ तक),
कार्त्ति. कृ. ५ श.	आश्वि.२६	अक्तू.११	रोहि.	वृष	कन्या	मिथुन	दि.ल. १०(१४/०७ से १५/२० तक),
कार्त्ति. कृ. ५ श.	आश्वि.२६	अक्तू.११	मृग.	वृष	कन्या	मिथुन	ल. गोधू., ३, ४ (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. कृ. ६ र.	आश्वि.२७	अक्तू.१२	मृग.	मिथुन	कन्या	मिथुन	दि.ल. ८(१०/५५ तक) (निर्बल लग्न),
कार्त्ति. शु. १ बु.	कार्त्ति. ६	अक्तू.२२	स्वा.	तुला	तुला	कर्क	ल. २(२०/१७ बाद), ३, ४,
कार्त्ति. शु. ३ शु.	कार्त्ति. ८	अक्तू.२४	अनु.	वृश्चिक	तुला	कर्क	दि.ल. ९,१०, रा. ल. ३, ४,
कार्त्ति. शु. ५ र.	कार्त्ति. १०	अक्तू.२६	मूल	धनु	तुला	कर्क	ल. गोधू. ३, ४, (१०/४६ से १७/२८ तक गुरुपादवेध),
कार्त्ति. शु. ६ चं.	कार्त्ति. ११	अक्तू.२७	मूल	धनु	तुला	कर्क	दि.ल. ८, १० (१३/२७ तक), (गुरुपादवेधाभाव),
कार्त्ति. शु. ६ मं.	कार्त्ति. १२	अक्तू.२८	उ.षा.	धनु/मकर	तुला	कर्क	ल. गोधू., ३,४,
कार्त्ति. शु. ८ गु.	कार्त्ति. १४	अक्तू.३०	धनि.	मकर	तुला	कर्क	ल. ३, ४,
कार्त्ति. शु. ९ शु.	कार्त्ति. १५	अक्तू.३१	धनि.	कुंभ	तुला	कर्क	दि.ल. १०(१३/४६ बाद), गोधू., (९/३४ से १३/४६ तक क्रान्तिसाम्य),
कार्त्ति. शु. ११ र.	कार्त्ति. १७	नवं. २	उ.भा.	मीन	तुला	कर्क	ल. गोधू. ३, ४,
कार्त्ति. शु. १३ चं.	कार्त्ति. १८	नवं. ३	उ.भा.	मीन	तुला	कर्क	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), १०,
कार्त्ति. शु. १३ चं.	कार्त्ति. १८	नवं. ३	रेव.	मीन	तुला	कर्क	ल. गोधू., ३(२०/५१ बाद), ४,
कार्त्ति. शु. १४ मं.	कार्त्ति. १९	नवं. ४	रेव.	मीन	तुला	कर्क	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), १०(१२/३४ तक),
मार्ग. कृ. २ शु.	कार्त्ति. २२	नवं. ७	रोहि.	वृष	तुला	कर्क	दि.ल. १०(१२/३४ बाद), गोधू., ३(२१/१८ तक),
मार्ग. कृ. ३ श.	कार्त्ति. २३	नवं. ८	मृग.	वृष/मिथुन	तुला	कर्क	दि.ल. ९(निर्बल लग्न), १०, गोधू.,
मार्ग. कृ. ८ बु.	कार्त्ति. २७	नवं. १२	मघा	सिंह	तुला	कर्क	ल. ३,४,
मार्ग. कृ. ९ गु.	कार्त्ति. २८	नवं. १३	मघा	सिंह	तुला	कर्क	दि.ल. ९(निर्बल लग्न), १०, गोधू.,
मार्ग. शु. २ श.	मार्ग. ७	नवं. २२	मूल	धनु	वृश्चिक	कर्क	ल. ७, (१६/४६ से २३/२८ तक गुरुपादवेधाभाव),
मार्ग. शु. ३ र.	मार्ग. ८	नवं. २३	मूल	धनु	वृश्चिक	कर्क	दि.ल. १०(१२/०८ तक), रा. ल. ३(१९/२८ तक), (गुरुपादवेधाभाव),
मार्ग. शु. ४ चं.	मार्ग. ९	नवं. २४	उ.षा.	धनु/मकर	वृश्चिक	कर्क	ल. ४(२१/५३ बाद), ७,
मार्ग. शु. ५ मं.	मार्ग. १०	नवं. २५	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	कर्क	दि.ल. ९(निर्बल लग्न), गोधू., ३,४,

शुद्ध विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

मास-तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०२५-२६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	शुद्ध लग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्ग. शु. ५ मं.	मार्ग. १०	नवं. २५	श्रव.	मकर	वृश्चिक	कर्क	ल. ७,
मार्ग. शु. ७ गु.	मार्ग. १२	नवं. २७	धनि.	मकर/कुंभ	वृश्चिक	कर्क	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), गोधू., ३ (निर्बल लग्न), ४, (११/०० तक मृत्युबाण) (मृत्युपरिहार),
मार्ग. शु. ९ श.	मार्ग. १४	नवं. २९	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	कर्क	ल. ७,
मार्ग. शु. १० र.	मार्ग. १५	नवं. ३०	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	कर्क	दि.ल. ९ (निर्बल लग्न), १०(निर्बल लग्न), गोधू., ३(निर्बल लग्न),४,
मार्ग. शु. १० र.	मार्ग. १५	नवं. ३०	रेव.	मीन	वृश्चिक	कर्क	ल. ७(२८/२२ तक),
मार्ग. शु. १४ गु.	मार्ग. १९	दिसं. ४	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कर्क	ल. ३(१८/४१ बाद) (निर्बल लग्न), ४,७,
पौष कृ. १ शु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कर्क	दि.ल. ९(निर्बल लग्न) १०, (मृत्यु-परिहार),
पौष कृ. १ शु.	मार्ग. २०	दिसं. ५	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	मिथुन	ल. ४, ७, (मृत्यु-परिहार),
पौष कृ. २ श.	मार्ग. २१	दिसं. ६	मृग.	मिथुन	वृश्चिक	मिथुन	दि.ल. ९ (८/४८ तक) (निर्बल लग्न), (मृत्युबाण ८/०८ तक) (मृत्यु-परिहार),
फाल्गु. कृ. ३ बु.	माघ २२	फर. ४	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	मिथुन	ल. ७(२४/१० बाद), ८(निर्बल लग्न), ९(निर्बल लग्न),
फाल्गु. कृ. ४ गु.	माघ २३	फर. ५	उ.फा.	कन्या	मकर	मिथुन	दि.ल. १,२,३, गोधू.,
फाल्गु. कृ. ८ मं.	माघ २८	फर. १०	अनु.	वृश्चिक	मकर	मिथुन	दि.ल. १(निर्बल लग्न), २, ३, गोधू., ७,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फाल्गु. ९	फर. २०	रेव.	मीन	कुंभ	मिथुन	ल. ७, ८ (२५/५० तक),
फाल्गु. शु. ४ शु.	फाल्गु. १०	फर. २१	रेव.	मीन	कुंभ	मिथुन	दि.ल. ३(१३/०१ बाद),
चैत्र कृ. ६ चं.	फाल्गु. २६	मार्च ९	अनु.	वृश्चिक	कुंभ	मिथुन	ल. गोधू., ७,
चैत्र कृ. ७ मं.	फाल्गु. २७	मार्च १०	अनु.	वृश्चिक	कुंभ	मिथुन	दि.ल. ३(१२/४० बाद), ४, गोधू.,
चैत्र कृ. ८ बु.	फाल्गु. २८	मार्च ११	मूल	धनु	कुंभ	मिथुन	ल. ७(२२/०० बाद), ८, १०(निर्बल लग्न), (गुरुपादवेधाभाव),
चैत्र कृ. ९ गु.	फाल्गु. २९	मार्च १२	मूल	धनु	कुंभ	मिथुन	दि.ल. १(निर्बल लग्न), (गुरुपादवेधाभाव),

आगामी सं. २०८३ वि. में गुरु-शुक्रास्तः-सं. २०८३ वि. में गुरु १५ जुला. से ९ अग., २०२६ ई. तक अस्त रहेगा। शुक्र इस सं. में १२ से २८ अक्तू., २०२६ ई. तक रहेगा।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में मृत्युबाण–वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिये जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिये जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गये हैं–***मृत्युबाण का परिहार***–यहां विवाहमुहूर्त्तों में मृत्युबाण को तभी दोषकारक (त्याज्य) माना गया है, जबकि वह बुधवार को घटित हो, क्योंकि मुहूर्त्तकारों ने इसे इसी वार को त्याज्य लिखा है–**''बुधे मृत्युं परित्यजेत्।''** ***सौम्यग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के दोष का परिहार***–मुहूर्त्तकारों ने क्रूरग्रह का वेध होने पर पूर्ण नक्षत्र को त्याज्य लिखा है, लेकिन शुभ ग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के एक चरण को ही विद्ध माना गया है। **जैसे–वेधक नक्षत्र** के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ चरण में स्थित शुभ ग्रह विद्ध नक्षत्र के क्रमशः चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम चरण को ही वेधता है। लेकिन **'मुहूर्त्तमार्त्तण्ड'** कार एवं **वसिष्ठ** का मत है कि–यदि लग्नेश एकादश में हो, चन्द्र पर शुभग्रह की दृष्टि हो, लग्न में चन्द्ररहित कोई शुभग्रह हो या कालहोरा शुभग्रह की हो तो वेधदोष समाप्त हो जाता है–**''लग्नेशे भवगेऽथवा शशिनि सद्दृष्टे शुभे वांऽगगे। होरायां च शुभस्य वा व्यधमयं नास्तीति पूर्वे जगुः।।''** हमने शुभग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के मुहूर्त्तशोधन में इस मत का भी प्रयोग किया है। वैसे तो क्रूरग्रह–विद्ध नक्षत्र–दोष का भी परिहार इस मतानुसार युक्तिसंगत सिद्ध होता है। ***युतिदोष का परिहार***–नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है।***कर्त्तरीदोष का परिहार***–मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र–कत्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। ***दग्धातिथि का परिहार***–मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। ***षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार***–नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। यदि चन्द्रमा लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तब तो उसका कोई परिहार शास्त्रों में नहीं मिलता। ***अष्टमस्थ मंगल का परिहार***–मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। यदि मंगल लग्नेश होकर अष्टम में हो तो किसी भी स्थिति में उसके दोष का परिहार नहीं माना जाता। ***षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार***–शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता। यदि शुक्र लग्नेश होकर षष्ठाष्टमस्थ हो तो उसका भी कोई परिहार नहीं है।

ध्यान रहे–उपरोक्त लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में लाते रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। इसकी विस्तृत जानकारी के लिए मेरी पुस्तक ''मुहूर्त्तगजानन'' में दिया ''लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)'' लेख पढ़ना चाहिए। यह लेख सं. २०७० वि. के पंचांग में भी प्रकाशित हो चुका है।

वि. सं. 2083 में (19 मार्च, 2026 से 6 अप्रैल, 2027 ई. तक) सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि-आगामी वर्ष में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त किन-किन दिनों में संभावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए हम यह स्तम्भ वर्षों से देते आ रहे हैं। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि-आगामी वर्ष के किन-किन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त संभावित हैं और किन-किन दिनों में नहीं। यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (x) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न (x) नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त संभावना है। हालांकि इनमें कुछेक पदार्थों का विचार समयाभाव के कारण नहीं कर पाते, जिससे इन दिनों में कुछ अन्तर भी संभव है। अभीष्ट वर्षीय पंचांग में तो सभी पदार्थों का विचार सूक्ष्मेक्षिकया किया जाता है-यह ध्यान रखें।

तारीख	मार्च '26	अप्रै. '26	मई '26	जून '26	जुला. '26	अग. '26	सितं. '26	अक्तू. '26	नवं. '26	दिसं. '26	जन. '27	फर. '27	मार्च '27	अप्रै. '27	तारीख
1	—	x		x		x		x	x		x	x		x	1
2	—	x	x	x		x	x	x	x		x			x	2
3	—	x		x		x	x	x			x			x	3
4	—	x		x		x		x	x		x			x	4
5	—	x		x	x	x		x			x			x	5
6	—	x		x		x	x	x			x			x	6
7	—	x		x		x	x	x			x		x	—	7
8	—	x		x		x	x	x			x	x	x	—	8
9	—	x		x		x		x			x	x		—	9
10	—	x		x	x	x		x			x			—	10
11	—	x	x	x		x		x		x	x			—	11
12	—	x	x	x	x	x		x			x	x		—	12
13	—	x		x	x			x			x	x	x	—	13
14	—	x	x	x	x	x		x			x	x	x	—	14
15	—		x	x	x			x	x	x			x	—	15
16	—		x	x	x	x	x	x	x	x			x	—	16
17	—			x	x	x	x	x		x	x	x	x	—	17
18	—		x	x	x			x	x	x		x	x	—	18
19	x	x	x		x			x	x	x		x	x	—	19
20	x		x		x		x	x		x			x	—	20
21	x		x		x			x		x	x		x	—	21
22	x	x	x		x			x		x	x		x	—	22
23	x	x	x		x			x	x	x	x		x	—	23
24	x	x	x		x			x		x			x	—	24
25	x		x		x		x	x		x	x		x	—	25
26	x		x		x		x	x		x			x	—	26
27	x		x		x		x	x	x	x			x	—	27
28	x		x	x	x	x	x	x	x	x			x	—	28
29	x		x		x	x	x	x	x	x		—	x	—	29
30	x		x	x	x		x	x		x	x	—	x	—	30
31	x	—	x	—	x		—	x	—	x		—	x	—	31

इस वर्ष (सं. 2083 वि.) में इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य के लिए स्पष्टरूप से सर्वथा वर्जित हैं-

मीनस्थ सूर्यदोष
(संवत् आरंभ यानी 19 मार्च से 13 अप्रैल 2026 ई.)

ज्येष्ठ अधिकमास दोष
(18 मई से 15 जून 2026 ई.)

ग्रहणवेधदोष
संवत् 2083 वि. में कोई भी ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। अतः ग्रहणवेध नहीं होगा।

श्राद्ध (महालय) दोष
(26 सितं. से 10 अक्तू. 2026 ई.)

शुक्रलोप/बाल्य/वार्धक्यदोष
(9 से 31 अक्तू. 2026 ई.)

गुरुलोप/बाल्य/वार्धक्यदोष
(12 जुला. से 12 अग. 2026 ई.)

धनुःस्थ सूर्यदोष
(16 दिसं. '26 से 13 जन. 2027 ई.)

होलाष्टक-दोष
(16 से 22 मार्च 2027 ई.)

मीनस्थ सूर्यदोष
(15 मार्च से वर्षान्त (6 अप्रै. '27 ई.) तक

ध्यान दें- *इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बाईं ओर दिए कोष्ठक में गुणनचिह्न (x) से अंकित किया गया है।*

सं. २०८२ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०८२ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे '**त्रिबलशुद्धि कोष्ठक**' दे रहे हैं। **संवत् २०८२ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. 273 पर दिए गए हैं।** किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए '**त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक**' में लिख दिया गया है। अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं–इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि-अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए '**सूर्य की पूजा**' और कन्या के लिए '**गुरु की पूजा**' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे– मेषराशि वाले लड़के और **सिंह राशि** वाली लड़की का विवाह सं. २०८२ वि. में अगस्त (२०२५ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?–यह मालूम करना है। नीचे '**त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक**' देखें–लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि **मेष** के आगे अगस्त, २०२५ ई. की १७, १८, २४, २५, २८ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि सिंह के आगे अगस्त की १, ७,८, ९, १७, १८, २४, २५, २८ तारीखें हैं। इसलिए यह समझना चाहिए कि अगस्त, २०२५ ई. में **मेष** राशि वाले लड़के और **सिंह** राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार अगस्त की केवल १७, १८, २४, २५, २८ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (**मेष-सिंह**) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं। इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाहमुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए। क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अत: चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है।

ध्यान दें–लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है। इस वर्ष गुरु वृष, मिथुन और कर्क राशि में विचरण करेगा। अत: केवल वृष एवं मिथुन राशिस्थ गुरु की पूजा वाली राशि का निर्देश भी यहां अन्तिम कॉलम में किया गया है।

नाम/ जन्म- राशि	**त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०८२ वि.) (३० मार्च, सन् २०२५ ई. से १९ मार्च, सन् २०२६ ई. तक)** (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष, जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है–
	लड़का	**सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है–**	**लड़की**	
मेष	**अप्रै. १४, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४; अग. १७, १८, २४, २५, २८; सितं. १ २, ३, ४, ५, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, ११, १२, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३; फर. ४, ५, २०, २१; मार्च ११, १२;**	**ज्येष्ठ, कार्त्तिक,**	**अप्रै. १४, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. १२, १२, १३, १४, २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ७, ८, ९, १३, १७, १८, २४, २५, २८; सितं. १, २, ३, ४, ५, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, ११, १२, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४, ५, २०, २१; मार्च ११, १२;**	**मिथुन कर्क**
वृष	**मई १८, १९, २४, २८; जून ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २८ (२४/० बाद), २९, ३१; अग. १, ३, ७ (२०/११ बाद), ८, ९, १३; सितं. २६, २७; अक्तू. १(१४/२७ बाद), २, ३, ७, ११, १२, २२, २४, २८ (२२/१४ बाद), ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, २४ (२८/२६ बाद), २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४ (२८/१९ बाद), ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०;**	**ज्येष्ठ, आषाढ़, आश्विन, माघ,**	**अप्रै. १४, १६, २० (१८/४ बाद), २१, २२, २५, २९, ३०; मई १, ८, १८, १९, २४, २८; जून ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २८ (२४/० बाद), २९, ३१; अग. १, ३, ७ (२०/११ बाद), ८, ९, १३, १७, १८, २५, २८, ३०; सितं. ४, ५, २६, २७; अक्तू. १(१४/२७ बाद), २, ३, ७, ११, १२, २२, २४, २८ (२२/१४ बाद), ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, २४ (२८/२६ बाद), २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४(२८/१९ बाद), ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०;**	**वृष**

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०८२ वि.) (३० मार्च, सन् २०२५ ई. से १९ मार्च, सन् २०२६ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/ जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है-	लड़की	इस वर्ष, जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है-
मिथुन	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २० (१८/४ तक), २२ (२४/३१ बाद), २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७; जुला. १३ (१८/५३ बाद), १४, २०, २१, २६, २७, २८ (२४/० तक), ३१; अग. १, ३, ७(२०/२१ तक), १३, १७, १८, २४, २८, ३०; सितं. १, २, ३; अक्तू. २२, २४, २६, २७, २८ (२२/१४ तक), ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३, २२, २३, २४ (२८/२६ तक), २७ (१४/०७ बाद), २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	आषाढ़ कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २० (१८/४ तक), २२(२४/३१ बाद), २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, १५, १६, १७, २४, २८; जून १, २, ३, ७; जुला. १३(१८/५३ बाद), १४, २०, २१, २६, २७, २८ (२४/० तक), ३१; अग. १, ३, ७ (२०/२१ तक), १३, १७, १८, २४, २८, ३०; सितं. १, २, ३, २६, २७, २९; अक्तू. १(१४/१७ तक), ३(२१/२७ बाद), ७, ११, १२, २२, २४, २६, २७, २८ (२२/१४ तक), ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३, २२, २३, २४ (२८/२६ तक), २७ (१४/७ बाद), २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४(२८/११ तक), १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	वृष मिथुन
कर्क	अप्रै. १६, १८, १९, २०, २१, २२ (२४/३१ तक), २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, जुला. २०, २१, २६, २७, २८, २९; अग. ३, ७, ८, ९, १३, १७, १८, २४, २५, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३(२१/२७ तक), ७, ११, १२; नवं. २२, २३, २४, २५, २७ (१४/७ तक), २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४, ५, १०;	माघ,	अप्रै. १६, १८, १९, २०, २१, २२ (२४/३१ तक), २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४; जुला. ११, १२, १३ (१८/५३ तक), २०, २१, २६, २७, २८, २९; अग. ३, ७, ८, ९, १३, १७, १८, २४, २५, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३ (२१/२७ तक), ७, ११, १२, २४, २६, २७, २८, ३०; नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७(१४/७ तक), २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४, ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	मिथुन
सिंह	अप्रै. १४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४; अग. १७, १८, २४, २५, २८; सितं. १, २, ३, ४, ५, २९; अक्तू. १, २, ३, ११, १२, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. ७, ८, १२, १३; फर. ४, ५; मार्च ११, १२;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रै. १४, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ७, ८, ९, १७, १८, २४, २५, २८; सितं. १, २, ३, ४, ५, २९; अक्तू. १, २, ३, ११, १२, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. ७, ८, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४, ५; मार्च ११, १२;	वृष कर्क
कन्या	मई १८, १९, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७ (२०/११ बाद), ८, ९, १३; सितं. २६, २७; अक्तू. १(१४/२७ बाद), २, ३, ७, ११, १२, २२, २४, २८ (२२/१४ बाद), ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३, २४(२८/२६ बाद), २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४, ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०;	ज्येष्ठ, आश्विन, कार्त्तिक, माघ,	अप्रै. १४, १६, २० (१८/४ बाद), २१, २२, २५, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १८, १९, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७(२०/११ बाद), ८, ९, १३, १७, १८, २४, २५, २८, ३०; सितं. ४, ५, २६, २७; अक्तू. १ (१४/२७ बाद), २, ३, ७, ११, १२, २२, २४, २८ (२२/१४ बाद), ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, १२, १३, २४ (२८/२६ बाद), २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर ४, ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०;	मिथुन
तुला	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २० (१८/४ तक), २२(२४/३१ बाद), २५; मई १, ५, ६, ७, ८; जुला. १३ (१८/५३ बाद), १४, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७ (२०/२१ तक), १३, १८, २४, २५, २८, ३०; सितं. १, २, ३; अक्तू. २२, २४, २६, २७, २८(२२/१४ तक), ३१; नवं. २, ३, ४, ८ (११/१४ बाद), १२, १३, २२, २३, २४ (२८/२६ तक), २७(१४/०७ बाद), २९, ३०; दिसं. ५ (२२/१५ बाद), ६; फर. २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	आषाढ़ कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २० (१८/४ तक), २२(२४/३१ बाद), २५; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, २४, २८ (१३/३६ बाद); जून १, २, ३, ४, ७; जुला. १३ (१८/५३ बाद), १४, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७ (२०/२१ तक), १३, १८, २४, २५, २८, ३०; सित. १, २, ३, २६, २७, २९; अक्तू. १ (१४/१७ तक), ३(२१/२७ बाद), ७, १२, २२, २४, २६, २७, २८ (२२/१४ तक), ३१; नवं. २, ३, ४, ८(११/१४ बाद), १२, १३, २२, २३, २४(२८/२६ तक), २७(१४/७ बाद), २९, ३०; दिसं. ५ (२२/१५ बाद), ६; फर. ४, ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	वृष

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०८२ वि.) (३० मार्च, सन् २०२५ ई. से १९ मार्च, सन् २०२६ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष, जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है-
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है-	लड़की	
वृश्चिक	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२ (२४/३१ तक), २५, २९, ३०; मई ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८ (१३/३६ तक); जून १, २, ३, ४, ७; जुला. २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १३, १७, २४, २५, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३ (२१/२७ तक), ७, ११; नवं. २२, २३, २४, २५, २७ (१४/७ तक), २९, ३०; दिसं. ४, ५(२२/१५ तक); फर. ४, ५, १०;	ज्येष्ठ,	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२ (२४/३१ तक), २५, २९, ३०; मई ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८ (१३/३६ तक); जून १, २, ३, ४, ७, जुला. ११, १२, १३ (१८/५३ तक), २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १३, १७, २४, २५, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३ (२१/२७ तक), ७, ११, २२, २४, २६, २७ २८, ३०; नवं. २, ३, ४, ७, ८ (११/१४ तक), १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७ (१४/७ तक), २९, ३०; दिसं. ४, ५ (२२/१५ तक); फर. ४, ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	मिथुन
धनु	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५ १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, अग. १७, १८, २४, २५, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ११, १२, २२, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. ७, ८, १२, १३; फर. ४, ५, १०; मार्च ९, १०, ११, १२;	आषाढ़, माघ,	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २९, ३०; मई १, ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८; जून १, २, ३, ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २६, २७, २८, २९, ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १७, १८, २४, २५, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ११, १२, २२, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. ७, ८, १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४, ५, १०; मार्च ९, १०, ११, १२;	वृष कर्क
मकर	मई १५, १६, १७, १८, १९, २८; जून ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २८ (२४/० बाद), २९, ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १३; सितं. २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, ११, १२, २२, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४ (२८/१९ बाद), ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२,	ज्येष्ठ, आश्विन, माघ, फाल्गुन,	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २९, ३०; मई १, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २८; जून ४, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २८ (२४/० बाद), २९, ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १३, १७, १८, २५, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, ११, १२, २२, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५, ६; फर. ४ (२८/१९ बाद), ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	मिथुन
कुम्भ	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २५; मई १, ५, ६, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २६, २७, २८ (२४/० तक), ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १३, १८, २४, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५,; अक्तू. २२, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ८ (११/१४ बाद), १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ५ (२२/१५ बाद), ६; फर. २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	आषाढ़ कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रै. १४, १६, १८, १९, २०, २१, २२, २५; मई १, ५, ६, ७, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८ (१३/३६ बाद); जून १, २, ३, ७; जुला. ११, १२, १३, १४, २६, २७, २८ (२४/० तक), ३१; अग. १, ३, ७, ८, ९, १३, १८, २४, २८, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, १२, २२, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ८ (११/१४ बाद), १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ५ (२२/१५ बाद), ६; फर. ४ (२८/१९ तक), १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	वृष
मीन	अप्रै. १६, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २९, ३०; मई ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २८ (१३/३६ तक); जून १, २, ३, ४, जुला. २०, २१, २६, २७, २८, २९; अग. ३, ७, ८, ९, १३, १७, २४, २५, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, ११; नवं. २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५ (२२/१५ तक), फर. ४, ५, १०;	आश्विन,	अप्रै. १६, १८, १९, २०, २१, २२, २५, २९, ३०; मई ५, ६, ७, ८, १५, १६, १७, १८ १९, २४, २८ (१३/३६ तक); जून १, २, ३, ४; जुला. ११, १२, १३, १४, २०, २१, २६, २७, २८, २९; अग. ३, ७, ८, ९, १३, १७, २४, २५, ३०; सितं. १, २, ३, ४, ५, २६, २७, २९; अक्तू. १, २, ३, ७, ११, २४, २६, २७, २८, ३०, ३१; नवं. २, ३, ४, ७, ८ (११/१४ तक), १२, १३, २२, २३, २४, २५, २७, २९, ३०; दिसं. ४, ५ (२२/१५ तक); फर. ४, ५, १०, २०, २१; मार्च ९, १०, ११, १२;	वृष मिथुन

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र एवम् फोन कॉल्स उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्त्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्त्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि - अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। ध्यान रहे- यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०८२ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। – प्रियव्रत शर्मा।

मास-तिथि-वार	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मीनस्थ सूर्यदोष - वर्षारम्भ से चैत्र शु. १५ श. (३० मार्च से १२ अप्रै., २०२५ ई.) तक।			
वैशा. कृ. १ र.	अप्रै. १३	चित्रा	संक्रान्ति,
वैशा. कृ. १ र.	अप्रै. १३	स्वा.	संक्रान्ति,
वैशा. कृ. २ मं.	अप्रै. १५	अनु.	भद्रा, व्यतीपात,
वैशा. कृ. ८ चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	गुरुपादवेध, लग्नाभाव,
वैशा. कृ. १० बु.	अप्रै. २३	धनि.	भद्रा,
वैशा. शु. ११ गु.	मई ८	हस्त	शनिवेध,
वैशा. शु. १२ शु.	मई ९	हस्त	शनिवेध,
वैशा. शु. १२ शु.	मई ९	चित्रा	राहुवेध,
वैशा. शु. १३ श.	मई १०	चित्रा	राहुवेध,
वैशा. शु. १३ श.	मई १०	स्वा.	लग्नाभाव,
वैशा. शु. १४ र.	मई ११	स्वा.	भद्रा, व्यतीपात,
वैशा. शु. १५ चं.	मई १२	स्वा.	भद्रा,
ज्ये. कृ. १ मं.	मई १३	अनु.	मासान्त,
ज्ये. कृ. २ बु.	मई १४	अनु.	संक्रान्ति,
ज्ये. कृ. ६ चं.	मई १९	धनि.	भौमवेध,
ज्ये. कृ. ७ मं.	मई २०	धनि.	भौमवेध,
ज्ये. कृ. १० गु.	मई २२	उ.भा.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये. कृ. ११ शु.	मई २३	उ.भा.	शनियुति अपरिहार्य,
ज्ये. कृ. ११ शु.	मई २३	रेव.	केतुवेध,

मास-तिथि-वार	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
ज्ये. कृ. १२ श.	मई २४	रेव.	केतुवेध,
ज्ये. शु. ९ बु.	जून ४	हस्त	शनिवेध,
ज्ये. शु. १० गु.	जून ५	हस्त	शनिवेध,
ज्ये. शु. ११ शु.	जून ६	हस्त	व्यतीपात,
ज्ये. शु. ११ शु.	जून ६	चित्रा	राहुवेध,
ज्ये. शु. १२ श.	जून ७	चित्रा	राहुवेध,
गुरु अस्त-दोष- ज्ये. शु. १२ श. से आषा. शु. १३ मं. (७ जून से ८ जूला., २०२५ ई.) तक।			
आषा. शु. १४ बु.	जुला. ९	मूल	सूर्यवेध,
श्राव. कृ. ६ बु.	जुला. १६	उ.भा.	संक्रान्ति,
श्राव. कृ. ७ गु.	जुला. १७	रेव.	केतुवेध,
श्राव. कृ. ७ गु.	जुला. १७	अश्वि.	भौमवेध,
श्राव. कृ. ८ शु.	जुला. १८	अश्वि.	भौमवेध,
श्राव. कृ. १२ मं.	जुला. २२	मृग.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ५ मं.	जुला. २९	हस्त	शनिवेध,
श्राव. शु. ६ बु.	जुला. ३०	हस्त	शनिवेध,
श्राव. शु. ६ बु.	जुला. ३०	चित्रा	राहुवेध,
श्राव. शु. ७ गु.	जुला. ३१	चित्रा	राहुवेध,

मास-तिथि-वार	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
श्राव. शु. १० चं.	अग. ४	अनु.	लग्नाभाव,
श्राव. शु. ११ मं.	अग. ५	मूल	भद्रा, वैधृति,
श्राव. शु. १२ बु.	अग. ६	मूल	मृत्युवाण,
श्राव. शु. १५ श.	अग. ९	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. १ र.	अग. १०	धनि.	सूर्यवेध,
भाद्र. कृ. ३ मं.	अग. १२	उ.भा.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र. कृ. ४ बु.	अग. १३	उ.भा.	शनियुति अपरिहार्य,
भाद्र. कृ. ६ गु.	अग. १४	रेव.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ. ६ गु.	अग. १४	अश्वि.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ. ७ शु.	अग. १५	अश्वि.	भुजंगपात, मासान्त,
भाद्र. कृ. ८ श.	अग. १६	रोहि.	संक्रान्ति,
भाद्र. शु. २ चं.	अग. २५	हस्त	शनिवेध,
भाद्र. शु. ३ मं.	अग. २६	हस्त	शनिवेध,
भाद्र. शु. ४ बु.	अग. २७	हस्त	शनिवेध, भद्रा,
भाद्र. शु. ४ बु.	अग. २७	चित्रा	राहुवेध, मृत्युबाण,
भाद्र. शु. ५ गु.	अग. २८	चित्रा	राहुवेध,
भाद्र. शु. ६ शु.	अग. २९	स्वा.	लग्नाभाव,
भाद्र. शु. ८ र.	अग. ३१	अनु.	भद्रा, वैधृति,

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.)

मास-तिथि-वार	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
भाद्र. शु. १२ गु.	सितं. ४	श्रव.	बुधपादवेध,
भाद्र. शु. १४ श.	सितं. ६	धनि.	ग्रहणशूल,
श्राद्धपक्ष (आश्विन कृष्णपक्ष) -८ से २१ सितं., २०२५ ई.			
आश्वि. शु. १ चं.	सितं. २२	उ.फा.	क्षीणचन्द्र,
आश्वि. शु. १ चं.	सितं. २२	हस्त	शनिवेध,
आश्वि. शु. २ मं.	सितं. २३	हस्त	शनिवेध
आश्वि. शु. २ मं.	सितं. २३	चित्रा	राहुवेध,
आश्वि. शु. ३ बु.	सितं. २४	चित्रा	राहुवेध,
आश्वि. शु. ३ बु.	सितं. २४	स्वा.	भौमयुति अपरिहार्य,
आश्वि. शु. ३ गु.	सितं. २५	स्वा.	वैधृति, भौमयुति अपरिहार्य,
आश्वि. शु. ६ र.	सितं. २८	मूल	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. १० गु.	अक्तू. २	उ.षा.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. ११ शु.	अक्तू. ३	श्रव.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. १२ श.	अक्तू. ४	धनि.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. १४ चं.	अक्तू. ६	उ.भा.	सूर्यवेध,
आश्वि. शु. १४ चं.	अक्तू. ६	रेव.	लग्नाभाव,
आश्वि. शु. १५ मं.	अक्तू. ७	अश्वि.	केतुवेध,
कार्त्ति. कृ. २ बु.	अक्तू. ८	अश्वि.	केतुवेध,
कार्त्ति. कृ. ४ शु.	अक्तू. १०	रोहि.	व्यतीपात,
कार्त्ति. कृ. १० गु.	अक्तू. १६	मघा	मासान्त,
कार्त्ति. कृ. ११ शु.	अक्तू. १७	मघा	संक्रान्ति,

मास-तिथि-वार	तारीख २०२५ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
कार्त्ति. कृ. १२ श.	अक्तू. १८	उ.फा.	क्षीणचन्द्र,
कार्त्ति. शु. २ गु.	अक्तू. २३	अनु.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. ४ श.	अक्तू. २५	अनु.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. ७ बु.	अक्तू. २९	उ.षा.	लग्नाभाव,
कार्त्ति. शु. ७ बु.	अक्तू. २९	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. ८ गु.	अक्तू. ३०	श्रव.	भुजंगपात,
कार्त्ति. शु. १४ मं.	नवं. ४	अश्वि.	केतुवेध,
कार्त्ति. शु. १५ बु.	नवं. ५	अश्वि.	केतुवेध,
मार्ग. कृ. १ गु.	नवं. ६	रोहि.	परिघार्ध,
मार्ग. कृ. २ शु.	नवं. ७	मृग.	भद्रा,
मार्ग. कृ. १० शु.	नवं. १४	उ.फा.	भद्रा, वैधृति,
मार्ग. कृ. ११ श.	नवं. १५	उ.फा.	मासान्त,
मार्ग. कृ. ११ श.	नवं. १५	हस्त	मासान्त,
मार्ग. कृ. १२ र.	नवं. १६	हस्त	संक्रान्ति,
मार्ग. कृ. १२ र.	नवं. १६	चित्रा	संक्रान्ति,
मार्ग. शु. १ शु.	नवं. २१	अनु.	क्षीणचन्द्र,
मार्ग. शु. ६ बु.	नवं. २६	श्रव.	मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य,
मार्ग. शु. ६ बु.	नवं. २६	धनि.	मृत्युबाण,
मार्ग. शु. ११ चं.	दिसं. १	रेव.	व्यतीपात, भद्रा,
मार्ग. शु. ११ चं.	दिसं. १	अश्वि.	केतुवेध,
मार्ग. शु. १२ मं.	दिसं. २	अश्वि.	केतुवेध,
पौष कृ. ५ मं.	दिसं. ९	मघा	वैधृति,

शुक्रास्त-दोष- पौष कृ. ६ बु. से फाल्गु. कृ. १ चं. (१० दिसं., २०२५ ई. से २ फर., २०२६ ई.) तक।
धनु:स्थ सूर्यदोष - पौष कृ. ११ चं. से माघ कृ. १० मं. (१५ दिसं., २०२५ से १३ जन., २०२६ ई.) तक।

मास-तिथि-वार	तारीख २०२६ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु. कृ. १ चं.	फर. २	मघा	सूर्य-भौमवेध,
फाल्गु. कृ. २ मं.	फर. ३	मघा	सूर्य-भौमवेध,
फाल्गु. कृ. ४ गु.	फर. ५	हस्त	शनिवेध,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फर. ६	हस्त	शनिवेध,
फाल्गु. कृ. ५ शु.	फर. ६	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ६ श.	फर. ७	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ. ६ श.	फर. ७	स्वा.	राहुवेध,
फाल्गु. कृ. ७ र.	फर. ८	स्वा.	राहुवेध,
फाल्गु. कृ. ९ बु.	फर. ११	अनु.	मासान्त,
फाल्गु. कृ. १० गु.	फर. १२	मूल	संक्रान्ति,
फाल्गु. कृ. ११ शु.	फर. १३	मूल	गुरुपादवेध, लग्नाभाव,
फाल्गु. कृ. १२ श.	फर. १४	उ.षा.	क्षीणचन्द्र,
फाल्गु. शु. २ गु.	फर. १९	उ.भा.	शनियुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ३ शु.	फर. २०	उ.भा.	शनियुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु. ४ श.	फर. २१	अश्वि.	केतुवेध,
फाल्गु. शु. ५ र.	फर. २२	अश्वि.	केतुवेध,
होलाष्टक - २४ फर. से ३ मार्च, २०२६ ई. तक।			
चैत्र कृ. १ बु.	मार्च ४	उ.फा.	ग्रहणशूल,
चैत्र कृ. २ गु.	मार्च ५	उ.फा.	ग्रहणशूल,
चैत्र कृ. २ गु.	मार्च ५	हस्त	ग्रहणशूल,
चैत्र कृ. ३ शु.	मार्च ६	हस्त	भद्रा, ग्रहणशूल,
चैत्र कृ. ३ शु.	मार्च ६	चित्रा	भद्रा, ग्रहणशूल,
चैत्र कृ. ४ श.	मार्च ७	चित्रा	सूर्यवेध,
चैत्र कृ. ४ श.	मार्च ७	स्वा.	भौम-राहुवेध,
चैत्र कृ. ५ र.	मार्च ८	स्वा.	भौम-राहुवेध,
चैत्र कृ. १० शु.	मार्च १३	उ.षा.	भद्रा, मासान्त,

मीनस्थ सूर्यदोष- चैत्र कृ. १० श. (१४ मार्च, २०२६ ई.) से वर्षान्त तक।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं. टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में भी हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्त्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक-एक या दो-दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्त्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्त्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्त्तों की संख्या बढ़ाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्त्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है। ध्यान रहे-मुण्डनादि इन मुहूर्त्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अतः दैवज्ञों को चाहिए कि-आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिये गये शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवं लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान में रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्-मुहूर्त्त' भी उपलब्ध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर (बुधवार को छोड़कर शेष दिनों में) 'अभिजित्-मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि 'अभिजित्-मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गयी है।

मुण्डन-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	कृ.	१	चं.	अप्रै. १४	स्वा.	८/२५ बाद,
वैशा.	कृ.	१०	बु.	अप्रै. २३	शत.	१६/४३ बाद,
वैशा.	कृ.	११	गु.	अप्रै. २४	शत.	१०/४९ तक,
वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	मृग.	११/२४ से १४/२० तक,
ज्ये.	कृ.	३	गु.	मई १५	ज्ये.	१४/०७ तक,
ज्ये.	शु.	२	बु.	मई २८	मृग.	

मुण्डन में विशेषः– किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी-मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२५-२६ ई.)

वैशा.	कृ.	१	चं.	अप्रै. १४	स्वा.	८/२५ बाद,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई २	आर्द्रा	१३/०४ तक,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई २	पुन.	१३/०४ बाद,
ज्ये.	कृ.	३	गु.	मई १५	ज्ये.	१४/०७ तक,
ज्ये.	शु.	३	गु.	मई २९	आर्द्रा	१५/४६ तक,
चैत्र	कृ.	६	चं.	मार्च ९	अनु.	१६/११ बाद,

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	कृ.	५	शु.	अप्रै. १८	मूल	१२/५७ बाद,
वैशा.	कृ.	१०	बु.	अप्रै. २३	शत.	१६/४३ बाद,
वैशा.	कृ.	११	गु.	अप्रै. २४	शत.	१०/४९ तक,
वैशा.	कृ.	१२	शु.	अप्रै. २५	उ.भा.	८/५३ से ११/४५तक,
वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	१२/०१ तक,
वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	मृग.	११/२४ से १४/२० तक,
वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	आर्द्रा	१४/२० बाद,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई २	आर्द्रा	१३/०४ तक,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई २	पुन.	१३/०४ बाद,
वैशा.	शु.	१०	बु.	मई ७	पू.फा.	११/३८ तक,
वैशा.	शु.	११	गु.	मई ८	उ.फा.	१२/२१ बाद, (केतुयुति-परिहार),
ज्ये.	कृ.	३	गु.	मई १५	मूल	१४/०७ से १५/१६ तक,
ज्ये.	कृ.	५	र.	मई १८	उ.षा.	६/२१ से १८/५२ तक,
ज्ये.	शु.	२	बु.	मई २८	मृग.	
ज्ये.	शु.	३	गु.	मई २९	आर्द्रा	१५/४६ तक,
ज्ये.	शु.	६	र.	जून १	आश्ले.	९/११ तक, १२/४७ बाद, (भौमयुति-परिहार),

विद्यारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२६ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु.	कृ.	३	बु.	फर. ४	पू.फा.	१२/१५ तक, (केतुयुति-परिहार),
फाल्गु.	कृ.	११	शु.	फर. १३	मूल	९/३७ तक,
फाल्गु.	कृ.	११	शु.	फर. १३	पू.षा.	१६/१२ बाद,

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग :- बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उपनयन-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

वैशा.	कृ.	१	चं.	अप्रै. १४	स्वा.	८/२५ बाद,
वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	मृग.	११/२४ से १३/५६ तक,
वैशा.	शु.	१०	बु.	मई ७	पू.फा.	१०/२० तक,
वैशा.	शु.	११	गु.	मई ८	उ.फा.	१२/२१ बाद, (केतुयुति-परिहार),
ज्ये.	शु.	३	गु.	मई २९	आर्द्रा	

उपनयन संस्कार पूर्वाह्णकाल में ही करने की शास्त्राज्ञा है। मध्याह्नकाल इसके लिए सामान्य माना जाता है। *अपराह्णकाल में उपनयन संस्कार करने का निषेध है। ''त्रेधाविभक्तादिनमानस्य प्रथमोभागः पूर्वाह्णः।''*

द्विरागमन मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	१२/०१ तक,
वैशा.	शु.	५	शु.	मई २	पुन.	१३/०४ बाद,
वैशा.	शु.	११	गु.	मई ८	उ.फा.	१२/२९ बाद, (केतुयुति-परिहार),
मार्ग.	शु.	१	शु.	नवं. २१	मूल	१४/४७ बाद,
मार्ग.	शु.	६	बु.	नवं. २६	श्रव.	११/०८ बाद,
मार्ग.	शु.	७	गु.	नवं. २७	धनि.	७/५१ से १२/०९ तक, १५/४५ बाद,

द्विरागमन में विशेष-विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

वैशा.	कृ.	१	चं.	अप्रै. १४	स्वा.	
*वैशा.	कृ.	८	चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	१२/३७ तक, (गुरुपादवेध विचार्य),
*वैशा.	कृ.	११	गु.	अप्रै. २४	शत.	१०/४९ तक,
*वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	१२/०१ तक,
*वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	मृग.	११/२४ से १४/२० तक,
वैशा.	शु.	११	गु.	मई ८	उ.फा.	१२/२९ बाद, (केतुयुति-परिहार),
श्राव.	कृ.	२	श.	जुला. १२	उ.षा.	६/३६ तक,
*श्राव.	कृ.	११	चं.	जुला. २१	रोहि.	

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०२५-२६ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव.	शु.	१०	चं.	अग. ४	अनु.	९/१२ तक,
*कार्त्ति.	कृ.	५	श.	अक्तू. ११	रोहि.	१४/०७ से १५/२० तक,
*कार्त्ति.	कृ.	५	श.	अक्तू. ११	मृग.	१५/२० बाद,
*कार्त्ति.	कृ.	९	बु.	अक्तू. १५	पुष्य	१०/३४ से १२/०० तक,
*कार्त्ति.	शु.	३	शु.	अक्तू. २४	अनु.	
कार्त्ति.	शु.	१३	चं.	नवं. ३	रेव.	१५/०५ बाद,
मार्ग.	कृ.	२	शु.	नवं. ७	रोहि.	१४/४७ बाद,
पौष	कृ.	१	शु.	दिसं. ५	रोहि.	११/४६ तक,
पौष	कृ.	१	शु.	दिसं. ५	मृग.	११/४६ बाद,
*फाल्गु.	शु.	४	श.	फर. २१	रेव.	१३/०१ बाद,

* (तारा) अंकित मुहूर्त्तों में केवल वृष-वास्तुचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये मुहूर्त्त सर्वथा शुद्ध हैं।

नूतन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

*वैशा.	कृ.	८	चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	१२/३७ तक, (गुरुपादवेध विचार्य),
वैशा.	कृ.	१२	शु.	अप्रै. २५	उ.भा.	८/५३ से १२/३० तक,
*वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	१२/०१ तक,
*वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	मृग.	११/२४ से १४/२० तक,
वैशा.	शु.	११	गु.	मई ८	उ.फा.	१२/२९ बाद, (केतुयुति-परिहार),
*ज्ये.	शु.	२	बु.	मई २८	मृग.	

नूतन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०२५-२६ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
*कार्त्ति.	कृ.	५	श.	अक्तू. ११	रोहि.	१४/०७ से १५/२० तक,
*कार्त्ति.	कृ.	१२	श.	अक्तू. १८	उ.फा.	१५/४१ बाद,
*कार्त्ति.	शु.	३	शु.	अक्तू. २४	अनु.	
कार्त्ति.	शु.	७	बु.	अक्तू. २९	उ.षा.	७/५० तक,
कार्त्ति.	शु.	१३	चं.	नवं. ३	उ.भा.	१५/०५ तक,
कार्त्ति.	शु.	१३	चं.	नवं. ३	रेव.	१५/०५ बाद,
*मार्ग.	कृ.	२	शु.	नवं. ७	रोहि.	१२/३४ बाद,
*फाल्गु.	कृ.	६	श.	फर. ७	चित्रा	

* (तारा) अंकित मुहूर्त्तों में कलशचक्र-शुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

(उत्तरायणकाल)

वैशा.	कृ.	१	चं.	अप्रै. १४	स्वा.	
वैशा.	कृ.	८	चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	(गुरुपादवेध विचार्य),
वैशा.	कृ.	११	गु.	अप्रै. २४	शत.	१०/४९ तक,
वैशा.	कृ.	१२	शु.	अप्रै. २५	उ.भा.	८/५३ से १०/२० तक,
वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	
वैशा.	शु.	६	श.	मई ३	पुन.	
वैशा.	शु.	७	र.	मई ४	पुष्य	७/१९ तक, (भौमयुति-परिहार),
ज्ये.	कृ.	५	र.	मई १८	उ.षा.	६/२१ बाद,

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२५-२६ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(उत्तरायणकाल)						
ज्ये.	कृ.	१३	र.	मई २५	अश्वि.	
ज्ये.	शु.	२	बु.	मई २८	मृग.	
ज्ये.	शु.	५	श.	मई ३१	पुष्य	
ज्ये.	शु.	१२	श.	जून ७	स्वा.	९/३९ से ११/१७ तक,
फाल्गु.	कृ.	६	श.	फर. ७	चित्रा	

तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
(दक्षिणायनकाल)						
कार्त्ति.	शु.	१३	चं.	नवं. ३	उ.भा.	
मार्ग.	कृ.	६	चं.	नवं. १०	पुन.	
मार्ग.	शु.	७	गु.	नवं. २७	धनि.	७/५१ बाद,
मार्ग.	शु.	१०	र.	नवं. ३०	उ.भा.	
पौष	कृ.	१	शु.	दिसं. ५	रोहि.	
पौष	कृ.	२	श.	दिसं. ६	मृग.	८/४८ तक,
पौष	कृ.	३	र.	दिसं. ७	पुन.	७/५० तक,

देवप्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्तों के बारे में स्पष्टीकरण

श्रीविष्णु, राम, कृष्ण, शिव, गणेश, गौरी आदि सात्त्विक देवता हैं, इसलिए इनकी प्रतिष्ठा यद्यपि उपरोक्त "**सात्त्विक देवप्रतिष्ठा**" वाले मुहूर्त्तों में हो सकती है, फिर भी मुहूर्तशास्त्रों में इनकी प्रतिष्ठा के लिए विशेष मुहूर्त्तकाल बतलाए गए हैं, जिनका निर्देश हमने यहां आगे अलग से किया है। यहां यह समझ लेना चाहिए कि-सात्त्विक देवप्रतिष्ठा वाले मुहूर्त्त श्रीविष्णु, राम, कृष्ण, गणेश, शिव, सरस्वती आदि सभी सत्त्वप्रधान प्रकृति वाले देवी-देवताओं के लिए समानरूप से प्रयोग में लाये जा सकते हैं, जबकि आगे पृथक् रूप से दिए गए श्रीगणेश, दुर्गा, गौरी, शिव आदि देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा के मुहूर्त केवल इन्हीं देवताओं के लिए हैं।

ध्यान रहे-दक्षिणायनकाल में पड़ने वाले "**तामसदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त**" तो केवल काली, भैरव आदि तामसदेवों के लिए ही प्रयोग में लाए जा सकते हैं, अन्य के लिए नहीं। सभी देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्णकाल में (मध्याह्न से पूर्व) ही की जाती है-"**पूर्वाह्न एव प्रतिष्ठाकालः।**"

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२५ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	कृ.	८	चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	१२/३७ तक,
						(गुरुपादवेध विचार्य),
वैशा.	कृ.	१२	शु.	अप्रै. २५	उ.भा.	८/५३ से १२/३० तक,
वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	१२/०१ तक,
वैशा.	शु.	४	गु.	मई १	मृग.	११/२४ से १४/२० तक,
वैशा.	शु.	६	श.	मई ३	पुष्य	१२/३४ बाद,
						(भौमयुति-परिहार),
वैशा.	शु.	७	र.	मई ४	पुष्य	७/१९ तक,
						(भौमयुति-परिहार),
वैशा.	शु.	११	गु.	मई ८	उ.फा.	१२/२९ बाद,
						(केतुयुति-परिहार),
ज्ये.	कृ	५	र.	मई १८	उ.षा.	६/२१ बाद,
ज्ये.	कृ	१२	श.	मई २४	अश्वि.	१३/४८ बाद,
ज्ये.	कृ	१३	र.	मई २५	अश्वि.	११/१२ तक,
ज्ये.	शु.	२	बु.	मई २८	मृग.	
ज्ये.	शु.	५	श.	मई ३१	पुष्य	११/५७ तक,
श्राव.	कृ.	२	श.	जुला.१२	उ.षा.	६/३६ तक,
श्राव.	कृ.	११	चं.	जुला.२१	रोहि.	
भाद्र.	कृ.	४	बु.	अग. १३	रेव.	१०/३२ से १६/०५ तक,
भाद्र.	कृ.	६	गु.	अग. १४	रेव.	९/०६ तक,
भाद्र.	शु.	२	चं.	अग. २५	उ.फा.	
भाद्र.	शु.	७	श.	अग. ३०	अनु.	१४/३७ से १५/०९ तक,
						(बुधपादवेध विचार्य),
भाद्र.	शु.	१२	गु.	सितं. ४	उ.षा.	
आश्वि.	शु.	५	श.	सितं. २७	अनु.	

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०२५-२६ ई.)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
आश्वि.	शु.	१०	गु.	अक्तू. २	उ.षा.	९/१३ तक,
कार्त्ति.	कृ.	९	बु.	अक्तू.१५	पुष्य	१०/३४ से १२/०० तक,
कार्त्ति.	कृ.	१३	र.	अक्तू.१९	उ.फा.	१३/५२ तक,
कार्त्ति.	शु.	३	शु.	अक्तू.२४	अनु.	
कार्त्ति.	शु.	१३	चं.	नवं. ३	उ.भा.	१५/०५ तक,
कार्त्ति.	शु.	१३	चं.	नवं. ३	रेव.	१५/०५ बाद,
मार्ग.	शु.	२	शु.	नवं. ७	रोहि.	१२/३४ बाद,
मार्ग.	शु.	१०	र.	नवं. ३०	उ.भा.	
पौष	कृ.	१	शु.	दिसं. ५	रोहि.	११/४६ तक,
पौष	कृ.	१	शु.	दिसं. ५	मृग.	११/४६ बाद,
पौष	कृ.	२	श.	दिसं. ६	मृग.	८/४८ तक,
फाल्गु.	कृ.	६	श.	फर. ७	चित्रा	
फाल्गु.	शु.	४	श.	फर. २१	रेव.	१३/०१ बाद,

अभिजित् मुहूर्त्त

स्थानीय दिनमानार्ध के घं.मि. को स्थानीय सूर्योदयकाल में जोड़ने पर 'स्पष्ट दिनार्ध' होता है। दिनमान का 30वां भाग 'मुहूर्त्तार्ध' कहलाता है। मुहूर्त्तार्ध को स्पष्ट दिनार्ध में से घटाने और जोड़ने पर अभिजित् मुहूर्त्त का क्रमशः प्रारम्भ और समाप्तिकाल ज्ञात हो जाता है। इस काल में लगभग सभी दोषों को समाप्त कर डालने की अद्भुत शक्ति मानी गयी है। जब मुण्डन, अक्षरारम्भ आदि मुहूर्त्तों में शुद्ध लग्न न मिल रहा हो, तब 'अभिजित् मुहूर्त्त' को प्रयोग में लाना चाहिए।

स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, धनत्रयोदशी, दीपावली और वसन्त पंचमी-ये स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त कहलाते हैं। 'स्वयंसिद्ध मुहूर्त्तों' में भद्रा, व्यतीपात, क्षीणचन्द्र, गुरु-शुक्र अस्तादि दोषों का विचार नहीं किया जाता। ये मुहूर्त्त मुहूर्त्तशास्त्रीय विधि-निषेधों के बन्धन से सर्वथा मुक्त हैं। इनमें कोई भी शुभकृत्य किसी शास्त्रोक्त गुण-दोष को विचारे बिना यथेच्छकाल में करने की परम्परा है।

ध्यान रहे-'गोधूलि लग्न' भी मूलतः 'स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त' ही है। 'ज्योतिर्विदाभरण' और 'विवाह पटल' आदि ग्रन्थों में इसके लिए तिथि, नक्षत्र, योग, लग्नादि सभी पदार्थों के विचार को सर्वथा उपेक्ष्य बतलाया गया है। '*सर्वार्थसिद्धि*' *आदि योग भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त्तों की कोटि में आते हैं।*

श्रीगणेश, शिव, गौरी, दुर्गा, विष्णु, कृष्ण, राम, भैरव, हनुमान्, स्कन्द, नाग और परशुराम की मूर्ति-प्रतिष्ठा के विशेष मुहूर्त्त (सं. २०८२ वि.) (सन् २०२५-२६ ई.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

विगत पृष्ठों पर सर्वदेव एवं तामसदेवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त दिये गये हैं। यद्यपि इन श्रीगणेश आदि १२ देवों की प्रतिष्ठा उन मुहूर्त्तों में नि:शंक की जा सकती है, पुनरपि मुहूर्त्तशास्त्र में इन देवों की प्रतिष्ठा इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों एवं वारों में भी करने का विशेष निर्देश है। तदनुसार हम यहां इन गणेशादि देवों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त इनकी अपनी-अपनी तिथियों, नक्षत्रों, वारों के अनुसार भी साधित कर निर्दिष्ट करना हमने विगत कुछेक वर्षों से प्रारम्भ किया है। श्रद्धालु लोग इन १२ देवों के इन अतिरिक्त प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तों को भी अपेक्षानुसार उपयोग में ला सकते हैं। **जान लीजिये-गणेश की तिथि कृ. चतुर्थी, शिव की तिथि कृ. चतुर्दशी और नक्षत्र आर्द्रा, गौरी की तिथि शु. तृतीया, दुर्गा की तिथि शु. नवमी और नक्षत्र मूल, विष्णु की तिथि शु. द्वादशी और नक्षत्र श्रवण, कृष्ण की तिथि कृ. अष्टमी, राम की तिथि शु. नवमी, हनुमान् की तिथि कृ. चतुर्दशी और वार मंगल, स्कन्द की तिथि शु. षष्ठी, नाग की तिथि शु. पंचमी, भैरव की तिथि कृ. अष्टमी तथा परशुराम की तिथि शु. तृतीया है। ध्यान दें-यहां इन सभी देवताओं की अपनी-अपनी तिथियां तो हैं, लेकिन अपना नक्षत्र कुछ ही देवताओं का है। किंच-अपना वार श्री हनुमान् जी का ही है।** शेष देवताओं का कोई अपना वार भी नहीं है। ध्यान दें-कुछ नक्षत्र ऐसे भी हैं, जिनमें किसी भी देवता की प्रतिष्ठा की जा सकती है, जिनका प्रयोग हमने गत पृष्ठों पर ''सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त'' में किया है। यदि कहीं उन नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हमें इन गणेशादि देवों के मुहूर्त्तकाल में प्राप्त हुआ है, उसका भी यहां हमने निर्देश नक्षत्र वाले कॉलम में किया है, अर्थात् उस नक्षत्र का यहां प्रयोग किया गया है।

यहां यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि-इन १२ देवताओं की प्रतिष्ठा के ये मुहूर्त्तकाल गत पृष्ठों पर दिये सर्वदेव और तामसदेवों के प्रतिष्ठा-मुहूर्त्तकालों की ही तरह युति, वेध, क्रान्तिसाम्य, गुरु-शुक्रास्त, भद्रा आदि सभी दोषों से सर्वथा मुक्त हैं। ये सर्वथा शुद्ध हैं। इन्हें नि:शंक प्रयोग में लाइये। **अपि च**-दैवज्ञ को यह भी जान लेना चाहिए कि-देवताओं की प्रतिष्ठा पूर्वाह्ण (दिन के पूर्वार्ध) में ही की जाती है। यहां ''शुद्धकाल'' वाले कॉलम में अनेकत्र शुद्धकाल नहीं दिया गया है। ऐसे स्थलों पर समझना चाहिए कि- वहां प्रतिष्ठा के लिए पूरा पूर्वाह्णकाल दोषमुक्त है।

श्रीगणेश-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. चतुर्थी)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये.	कृ.	४	शु.	मई १६		
फाल्गु.	कृ.	४	गु.	फर. ५	उ.फा.	
चैत्र	कृ.	४	श.	मार्च ७	चित्रा	

श्रीगौरी-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	
ज्ये.	शु.	३	गु.	मई २९		

श्रीशिव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, आर्द्रा)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये.	कृ.	१४	चं.	मई २६		७/०१ तक, ९/२५ बाद,
फाल्गु.	कृ.	१४	चं.	फर. १६	श्रव.	

श्रीस्कन्द-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ६)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	६	श.	मई ३	पुन.	७/५२ तक,
ज्ये.	शु.	६	र.	जून १		९/११ तक, (भौमयुति-परिहार),
फाल्गु.	शु.	६	चं.	फर. २३		९/०९ तक,

श्रीराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	८	चं.	मई ५		७/३६ से १०/१२ तक,
ज्ये.	शु.	९	बु.	जून ४	उ.फा.	

श्रीहनुमान्-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. १४, मंगल)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये.	कृ.	१४	चं.	मई २६		७/०१ तक, ९/२५ बाद,
फाल्गु.	कृ.	१४	चं.	फर. १६	श्रव	

श्रीदुर्गा-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ९, मूल)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	८	चं.	मई ५		७/३६ से १०/१२ तक,
ज्ये.	शु.	९	बु.	जून ४	उ.फा.	

श्रीभैरव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	कृ.	८	चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	
ज्ये.	कृ.	७	मं.	मई २०	धनि.	५/५२ बाद,
फाल्गु.	कृ.	८	चं.	फर. ९		
चैत्र	कृ.	८	बु.	मार्च ११		

श्रीनाग-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ५)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	५	शु.	मई ५		
ज्ये.	शु.	५	श.	मई ३१	पुष्य	
मार्ग.	शु.	५	मं.	नवं. २५	उ.षा.	

श्रीपरशुराम-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. ३)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	शु.	३	बु.	अप्रै. ३०	रोहि.	
ज्ये.	शु.	३	गु.	मई २९		

श्रीकृष्ण-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि कृ. ८)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा.	कृ.	८	चं.	अप्रै. २१	उ.षा.	
ज्ये.	कृ.	७	मं.	मई २०	धनि.	५/५२ बाद,
फाल्गु.	कृ.	८	चं.	फर. ९		
चैत्र	कृ.	८	बु.	मार्च ११		

श्रीविष्णु-प्रतिष्ठा मुहूर्त्त (तिथि शु. १२, श्रवण)

तिथि-वार				तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये.	शु.	१२	श.	जून ७	स्वा.	९/३९ से ११/१७ तक,

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०८२ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इन सर्वार्थसिद्धि योग, रवियोग आदि के प्रारम्भ-समाप्तिकालों के साधन में **श्रीमार्त्तण्ड पंचांग एवम् ज्योतिष कार्यालय-कुराली (पं.)** के सुयोग्य कार्यकर्त्ता आचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा, शास्त्री, M.A., साहित्याचार्य, वेदाचार्य** द्वारा पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। तदर्थ मेरा इन्हें सधन्यवाद आशीर्वाद है। **-प्रियव्रत शर्मा**

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि - इन तिथि-भ-वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र-संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं। अत्यन्त शीघ्रता की स्थिति में किसी भी शुभ कार्य को सम्पन्न करने के लिए यदि गुरु-शुक्रास्त आदि दोषों के कारण शुभ (शुद्ध) समय (मुहूर्त्त) न मिल पा रहा हो तो वहां इन शुभ (सवार्थसिद्धि आदि) योगों का प्रश्रय लेना चाहिए-ऐसी शास्त्राज्ञा है। अत: इन सुयोगों के काल में आप किसी भी शुभ कार्य को नि:संकोच सम्पन्न कर सकते हैं। **ध्यान रहे**-इन सुयोगों के कालनिर्णय में भद्रा, गुरु-शुक्रास्तादि दोषों का विचार नहीं होता।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग-जैसा कि-इनके नाम से ही स्पष्ट है-इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन-कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश गुरु-शुक्रास्त आदि का विचार असंभव होने पर इन सर्वार्थसिद्धि आदि योगों का आश्रय लेना चाहिए। यहां ब्रैकेटों (Brackets) में दिए गए '**अमृतसिद्धि योग**' संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ये योग (अमृतसिद्धि संज्ञक सर्वार्थसिद्धि योग) जिन-जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी हमने यहां साथ-साथ कर दिया है। ध्यान रहे-गुरुवार वाले अमृतसिद्धि योग (जिसे गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें नि:संकोच प्रयोग में लाइए।

रवियोग - रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति रखता है- **''कुयोगविध्वंस-करा: शुभेषु।''**

सिद्धियोग - **सिद्धियोग भी सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भान्ति ही प्रत्येक कार्य के लिए शुभ एवं महत्त्वशाली माने गए हैं। सिद्धियोग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव प्राय: समाप्त हो जाता है-ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग-मुहूर्त्तविदों का कथन है कि-इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभ कार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाड़ी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है।

द्विपुष्करयोग - ये योग त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर-इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है-**''त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।''**

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२५ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.
मार्च ३०	१६	३६	मार्च ३१	सू.	उ.	(अप्रै. १६	सू.	उ.	अप्रै. १७	५	५५)बु.	अप्रै. ३०	सू.	उ.	मई १	सू.	उ.	मई १८	सू.	उ.	मई १८	१८	५२
अप्रै. १	११	७	अप्रै. ३	सू.	उ.	अप्रै. २०	११	४९	अप्रै. २१	सू.	उ.	मई २	१३	५	मई ३	सू.	उ.	मई १९	सू.	उ.	मई १९	१९	२९
अप्रै. ५	५	२१	अप्रै. ५	सू.	उ.	अप्रै. २१	१२	३८	अप्रै. २२	सू.	उ.	मई ४	सू.	उ.	मई ४	१२	५३	(मई २३	१६	३	मई २४	सू.	उ.) शु.
अप्रै. ६	सू.	उ.	अप्रै. ७	६	२४	अप्रै. २७	सू.	उ.	अप्रै. २८	०	३९	मई ११	३	१६	मई ११	सू.	उ.	मई २५	सू.	उ.	मई २५	११	१२
अप्रै. ८	सू.	उ.	अप्रै. ८	७	५५	अप्रै. २९	सू.	उ.	अप्रै. २९	१८	४७	(मई १४	सू.	उ.	मई १४	११	४७)बु.	मई २७	सू.	उ.	मई २७	५	३२

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०२५-२६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५-२६ ई.	घं.	मि.	२०२६ ई.	घं.	मि.	२०२६ ई.	घं.	मि.
मई २८	सू.	उ.	मई २९	०	२९	अग. ८	१४	२९	अग. ९	१४	२३	अक्तू. २४	४	५२	अक्तू. २४	सू.	उ.	जन. ४	१५	१२	जन. ५	१३	२५
मई २९	२२	३७	मई ३०	२१	२९	अग. १२	११	५३	अग. १३	सू.	उ.	अक्तू. २६	१०	४७	अक्तू. २७	सू.	उ.	जन. ६	सू.	उ.	जन. ६	१२	१७
जून ५	३	३६	जून ५	सू.	उ.	अग. १४	सू.	उ.	अग. १५	७	३६	नवं. २	१७	५	नवं. ३	सू.	उ.	(जन. १४	सू.	उ.	जन. १५	३	३)बु.
जून ७	९	४०	जून ८	सू.	उ.	(अग. १७	४	३९	अग. १७	सू.	उ.)श.	(नवं. ४	१२	३५	नवं. ५	सू.	उ.)मं.	जन. १८	१०	१५	जन. १९	सू.	उ.
जून ९	१५	३२	जून १०	सू.	उ.	(अग. १८	सू.	उ.	अग. १९	२	६)चं.	नवं. ६	६	३५	नवं. ६	सू.	उ.	जन. १९	११	५३	जन. २०	सू.	उ.
जून १५	०	२२	जून १५	सू.	उ.	(अग. २१	सू.	उ.	अग. २२	०	८)गु.	नवं. १०	१८	४९	नवं. ११	सू.	उ.	जन. २५	१३	३६	जन. २६	सू.	उ.
जून १९	२३	१८	जून २०	सू.	उ.	अग. २५	२	६	अग. २५	सू.	उ.	नवं. ११	१८	१८	नवं. १२	सू.	उ.	जन. २७	११	१०	जन. २९	सू.	उ.
(जून २०	सू.	उ.	जून २०	९	५०)शु.	अग. २७	सू.	उ.	अग. २७	६	४	नवं. १४	सू.	उ.	नवं. १४	२१	२०	जन. ३१	३	२८	जन. ३१	सू.	उ.
जून २०	९	५१	जून २०	२१	४४	सितं. ५	सू.	उ.	सितं. ५	२३	३८	(नवं. १६	सू.	उ.	नवं. १७	२	११)र.	फर. १	सू.	उ.	फर. १	२३	५८
जून २३	१५	१८	जून २४	सू.	उ.	सितं. ९	सू.	उ.	सितं. ९	१८	७	नवं. २०	१०	५९	नवं. २१	सू.	उ.	फर. ८	२	२९	फर. ८	सू.	उ.
जून २५	सू.	उ.	जून २५	१०	४०	सितं. ११	सू.	उ.	सितं. ११	१३	५८	नवं. २३	सू.	उ.	नवं. २३	१९	२८	(फर. ११	सू.	उ.	फर. ११	१०	५२)बु
जून २६	८	४७	जून २७	७	२२	(सितं. १३	१०	१२	सितं. १४	सू.	उ.)श.	नवं. ३०	सू.	उ.	दिसं. १	१	११	फर. १५	सू.	उ.	फर. १५	१९	४८
जुला. २	११	८	जुला. ३	सू.	उ.	(सितं. १५	सू.	उ.	सितं. १५	७	३१)चं.	(दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. २	२०	५१)मं.	फर. १६	सू.	उ.	फर. १६	२०	४७
जुला. ५	सू.	उ.	जुला. ५	११	५१	(सितं. १८	सू.	उ.	सितं. १८	६	३२)गु.	दिसं. ३	१८	१	दिसं. ४	सू.	उ.	(फर. २०	२०	८	फर. २१	सू.	उ.)शु.
जुला. ७	सू.	उ.	जुला. ८	९	११	सितं. २१	९	३३	सितं. २२	सू.	उ.	दिसं. ८	४	१२	दिसं. ८	सू.	उ.	फर. २२	सू.	उ.	फर. २२	१७	५४
जुला. १२	६	३७	जुला. १३	सू.	उ.	सितं. २९	३	५५	सितं. २९	सू.	उ.	दिसं. ९	सू.	उ.	दिसं. १०	२	२२	फर. २४	सू.	उ.	फर. २४	१५	७
जुला. १७	सू.	उ.	जुला. १९	२	१४	अक्तू. ३	सू.	उ.	अक्तू. ३	९	३४	(दिसं. १४	सू.	उ.	दिसं. १४	८	१८)र.	फर. २५	सू.	उ.	फर. २५	१३	३८
जुला. २१	सू.	उ.	जुला. २१	२१	७	अक्तू. ६	६	१७	अक्तू. ६	सू.	उ.	(दिसं. १७	१७	१२	दिसं. १८	सू.	उ.)बु.	फर. २७	१०	५०	फर. २८	सू.	उ.
(जुला. २१	२१	८	जुला. २२	सू.	उ.)चं.	अक्तू. ८	९	२९	अक्तू. ८	सू.	उ.	दिसं. १८	सू.	उ.	दिसं. १८	२०	७	मार्च १	सू.	उ.	मार्च १	८	३४
जुला. २४	सू.	उ.	जुला. २४	१६	४३	(अक्तू. ११	सू.	उ.	अक्तू. ११	१५	२०)श.	दिसं. २२	३	३७	दिसं. २२	सू.	उ.	मार्च ७	११	१६	मार्च ८	सू.	उ.
(जुला. २४	१६	४४	जुला. २५	सू.	उ.)गु.	अक्तू. १७	१३	५८	अक्तू. १८	सू.	उ.	दिसं. २३	५	३३	दिसं. २३	सू.	उ.	मार्च ९	१६	१२	मार्च १०	सू.	उ.
जुला. ३०	सू.	उ.	जुला. ३०	२१	५३	अक्तू. १९	सू.	उ.	अक्तू. १९	१७	४९	दिसं. २८	सू.	उ.	दिसं. २८	८	४३	मार्च १५	४	५०	मार्च १५	सू.	उ.
अग. ४	सू.	उ.	अग. ४	९	१२	(अक्तू. १९	१७	५०	अक्तू. २०	सू.	उ.)र.	दिसं. ३१	३	५९	जन. १	सू.	उ.	(मार्च १९	४	६	मार्च १९	सू.	उ.
																		---	---		---	---	

रवियोग (सन् २०२५-२६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.
अप्रै. १	११	७	अप्रै. २	८	४९
अप्रै. ३	७	३	अप्रै. ४	५	५१
अप्रै. ६	५	३३	अप्रै. ८	७	५५
अप्रै. १०	१२	२५	अप्रै. ११	१५	१०
अप्रै. १९	१०	२२	अप्रै. २०	११	४८
अप्रै. ३०	१६	१९	मई १	१४	२०
मई २	१३	५	मई ३	१२	३४
मई ५	१४	२	मई ७	१८	१७
मई १०	०	१०	मई ११	३	१५
मई ११	१३	१८	मई १२	६	१७
मई १८	१८	५३	मई १९	११	२९
मई २९	२२	३९	मई ३०	२१	२९
मई ३१	२१	८	जून १	२१	३६
जून ४	०	५९	जून ६	६	३३
जून ९	१५	३२	जून १०	१८	१
जून १७	१	१४	जून १८	१	१
जून २८	६	३६	जून २९	६	३४
जून ३०	७	२१	जुला. १	८	५३
जुला. ३	१३	५१	जुला. ५	११	५१
जुला. ९	३	१६	जुला. १०	४	५०
जुला. १६	५	४७	जुला. १७	४	५०
जुला. २७	१६	२४	जुला. २८	१७	३५
जुला. २९	१९	२८	जुला: ३०	२१	५३
अग. २	३	४१	अग. ३	४	७

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५ ई.	घं.	मि.	२०२५ ई.	घं.	मि.
अग. ३	६	३६	अग. ५	११	२२
अग. ७	१४	२	अग. ८	१४	२८
अग. १४	९	७	अग. १५	७	३६
अग. २६	३	५०	अग. २७	६	४
अग. २८	८	४४	अग. २९	११	३८
सितं. १	१९	५६	सितं. ३	२३	८
सितं. ५	२३	३९	सितं. ६	२२	५५
सितं. १२	११	५९	सितं. १३	१०	११
सितं. १३	१५	४१	सितं. १४	८	४१
सितं. २४	१६	१७	सितं. २५	११	८
सितं. २६	२२	१०	सितं. २७	७	६
सितं. २८	१	९	सितं. २९	६	१७
अक्तू. १	८	७	अक्तू. ३	९	३४
अक्तू. ५	८	२	अक्तू. ६	६	१६
अक्तू. १२	१३	३७	अक्तू. १३	१२	२७
अक्तू. २४	१	५२	अक्तू. २४	६	३९
अक्तू. २५	७	५२	अक्तू. २६	१०	४६
अक्तू. २७	१३	२८	अक्तू. २८	१५	४५
अक्तू. ३०	१८	३४	नवं. १	१८	२०
नवं. ३	१५	६	नवं. ४	१२	३४
नवं. १०	१८	४९	नवं. ११	१८	५७
नवं. २३	१९	२९	नवं. २४	२१	५३
नवं. २५	२३	५८	नवं. २७	१	३२
नवं. २९	२	५०	दिसं. १	१	११
दिसं. २	२०	५२	दिसं. ३	१	१३

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५-२६ई.	घं.	मि.	२०२५-२६ई.	घं.	मि.
दिसं. ३	१८	१	दिसं. ४	१४	५४
दिसं. १०	२	२३	दिसं. ११	२	४४
दिसं. २३	५	३३	दिसं. २४	७	७
दिसं. २५	८	१९	दिसं. २६	९	०
दिसं. २८	८	४४	दिसं. २९	६	२९
दिसं. २९	७	४२	दिसं. ३१	३	५८
(सन् २०२६ ई.)					
जन. १	२२	४९	जन. २	२०	४
जन. ८	१२	२५	जन. ९	१३	४०
जन. २१	१३	५९	जन. २२	१४	२७
जन. २३	१४	३४	जन. २४	१०	४९
जन. २४	१४	१७	जन. २५	१३	३५
जन. २७	११	१०	जन. २९	७	३१
जन. ३१	३	२८	फर. १	१	३४
फर. ८	२	२९	फर. ९	५	२
फर. २०	२०	८	फर. २१	१९	७
फर. २२	१७	५५	फर. २३	१६	३३
फर. २५	१३	३९	फर. २७	१०	४९
मार्च १	८	३५	मार्च २	७	५१
मार्च ९	१६	१२	मार्च १०	१९	५
-----	-----		-----	-----	

सिद्धियोग (सन् २०२५-२६ ई.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५-२६ ई.	घं.	मि.	२०२५-२६ ई.	घं.	मि.
अप्रै. २	सू.	उ.	अप्रै. २	८	४९
अप्रै. २१	१२	३८	अप्रै. २२	सू.	उ.
मई ११	३	१६	मई ११	सू.	उ.
मई १९	सू.	उ.	मई १९	१९	२९
मई २९	२२	३९	मई ३०	सू.	उ.
जून ७	९	४०	जून ८	सू.	उ.
जून २६	८	४७	जून २७	सू.	उ.
जुला. ५	सू.	उ.	जुला. ५	११	५१
जुला. २४	सू.	उ.	जुला. २४	१६	४३
अग. १२	११	५३	अग. १३	सू.	उ.
सितं. ९	सू.	उ.	सितं. ९	१८	७
सितं. २९	३	५५	सितं. २९	सू.	उ.
अक्तू. १७	१३	५८	अक्तू. १८	सू.	उ.
अक्तू. २६	१०	४७	अक्तू. २७	सू.	उ.
नवं. ६	६	३५	नवं. ६	सू.	उ.
नवं. १४	सू.	उ.	नवं. १४	२१	२०
नवं. २३	सू.	उ.	नवं. २३	१९	२८
दिसं. ३	१८	१	दिसं. ४	सू.	उ.
दिसं. २३	५	३३	दिसं. २३	सू.	उ.
दिसं. ३१	सू.	उ.	जन. १	१	३०
जन. १९	११	५३	जन. २०	सू.	उ.
जन. २८	सू.	उ.	जन. २८	९	२७
फर. ८	२	२९	फर. ८	सू.	उ.
फर. १६	सू.	उ.	फर. १६	२०	४७
मार्च ७	११	१६	मार्च ८	सू.	उ.
-----	-----		-----	-----	

द्विपुष्कर योग (सन् २०२५-२६ ई.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५-२६ई.	घं.	मि.	२०२५-२६ई.	घं.	मि.
मई २०	सू.	उ.	मई २०	५	५२
जून ७	सू.	उ.	जून ७	९	३९
जुला. २२	सू.	उ.	जुला. २२	७	६
अग. १०	१२	११	अग. १०	१३	५२
सितं. २३	१३	४१	सितं. २४	४	५२
अक्तू. ४	सू.	उ.	अक्तू. ४	९	९
नवं. १७	२	१२	नवं. १७	४	४८
दिसं. ६	सू.	उ.	दिसं. ६	८	४८
जन. २०	१३	७	जन. २१	२	४२
मार्च १६	५	५७	मार्च १६	सू.	उ.
----	----		----	----	

त्रिपुष्कर योग (सन् २०२५-२६ ई.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५-२६ ई.	घं.	मि.	२०२५-२६ई.	घं.	मि.
सितं. १३	७	२४	सितं. १३	१०	११
अक्तू. २८	१५	४६	अक्तू. २९	सू.	उ.
नवं. २	७	३३	नवं. २	१७	४
दिसं. १६	१४	१०	दिसं. १६	२३	५७
दिसं. २२	३	३७	दिसं. २२	सू.	उ.
दिसं. २७	सू.	उ.	दिसं. २७	९	९
दिसं. ३१	५	२	दिसं. ३१	सू.	उ.
जन. ४	१२	३१	जन. ४	१५	११
फर. २४	सू.	उ.	फर. २४	७	२
फर. २८	सू.	उ.	फर. २८	९	३५
----	----		----	----	

अमृतसिद्धि योग (सन्२०२५-२६ ई.)

प्रारम्भ			समाप्त		
२०२५-२६ई.	घं.	मि.	२०२५-२६ई.	घं.	मि.
(सितं. १५	सू.	उ.	सितं. १५	७	३१) चं.
(सितं. १८	सू.	उ.	सितं. १८	६	३२) गु.
(अक्तू. ११	सू.	उ.	अक्तू. ११	१५	२०) श.
(अक्तू. ११	१७	५०	अक्तू. २०	सू.	उ.) र.
(नवं. ४	१२	३५	नवं. ५	सू.	उ.) मं.
(नवं. १६	सू.	उ.	नवं. १७	२	११) र.
(दिसं. २	सू.	उ.	दिसं. २	२०	५१) मं.
(दिसं. १४	सू.	उ.	दिसं. १४	८	१८) र.
(दिसं. १७	१७	१२	दिसं. १८	सू.	उ.) बु.
(जन. १४	सू.	उ.	जन. १५	३	३) बु.
(फर. ११	सू.	उ.	फर. ११	१०	५२) बु.
(फर. २०	२०	८	फर. २१	सू.	उ.) शु.
----	----		----	----	

त्रिपुष्कर योग (सन् २०२५ ई.)

अप्रै. १५	सू.	उ.	अप्रै. १५	१०	५५
अप्रै. २०	११	४९	अप्रै. २०	११	१
अप्रै. २९	सू.	उ.	अप्रै. २९	१७	३१
मई ३	७	५३	मई ३	१२	३४
जून १८	१	२	जून १८	सू.	उ.
जून २२	१७	३९	जून २३	१	२२
जुला. १	१०	२२	जुला. २	सू.	उ.
जुला. ६	२१	१६	जुला. ६	२२	४१
जुला. १२	सू.	उ.	जुला. १२	६	३६
अग. २०	१	८	अग. २०	सू.	उ.
अग. २५	२	६	अग. २५	सू.	उ.
अग. ३०	सू.	उ.	अग. ३०	१४	३७

अमृतसिद्धि योग (सन् २०२५ ई.)

(अप्रै. १६	सू.	उ.	अप्रै. १७	५	५५) बु.
(मई १४	सू.	उ.	मई १४	११	४७) बु.
(मई २३	१६	३	मई २४	सू.	उ.) शु.
(जून २०	सू.	उ.	जून २०	९	५०) शु.
(जुला. २१	२१	८	जुला. २२	सू.	उ.) चं.
(जुला. २४	१६	४४	जुला. २५	सू.	उ.) गु.
(अग. १७	४	३९	अग. १७	सू.	उ.) श.
(अग. १८	सू.	उ.	अग. १९	२	६) चं.
(अग. २१	सू.	उ.	अग. २२	०	८) गु.
(सितं. १३	१०	१२	सितं. १४	सू.	उ.) श.

गुरु-पुष्य योग (२०२५-२६ ई.)

अग. २१	सू.	उ.	अग. २२	०	८
सितं. १८	सू.	उ.	सितं. १८	६	३२
---	---		---	---	

रवि-पुष्य योग (२०२५-२६ ई.)

अप्रै. ६	सू.	उ.	अप्रै. ७	सू.	उ.
मई ४	सू.	उ.	मई ४	१२	५३
फर. १	सू.	उ.	फर. १	२३	५८
मार्च १	सू.	उ.	मार्च १	८	३४
----	----		----	----	

नक्षत्रचरण एवं नवांशराशि–बोधक सारणी

प्रियव्रत शर्मा

ग्रह या लग्न किस राशि, नक्षत्र एवं नक्षत्रचरण (नवांश) में विद्यमान है– यह इस सारणी से ग्रह एवं लग्न–राश्यादि द्वारा जाना जा सकता है। ध्यान रहे–यहां दिए गए राश्यादि वे हैं, जहां राशि एवं नक्षत्रचरण (नवांश) प्रारम्भ होता है। जैसे– स्पष्ट सूर्य 5 रा. 27 अं. 20 क. हो तो सारणी से ज्ञात हो जाता है कि– सूर्य कन्या राशि, चित्रा नक्षत्र–द्वितीय चरण तथा कन्या के नवांश में है। क्योंकि यहां सूर्य कन्या राशि के ही नवांश में है, अतः यह वर्गोत्तम नवांश में है। कोष्ठक में वर्गोत्तम नवांश के साथ स्टार (★) लगाया गया है। कन्या के नवांश का स्वामी बुध है– यह भी सारणी में निर्दिष्ट है।

इस सारणी की मदद से नवांशकुण्डली लगाना बहुत आसान है।

ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश राशि	नवांश स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी	ग्रह या लग्न रा. अं. क.	राशि नक्षत्र चरण	नवांश–राशि	नवांश–स्वामी
0 00 00	मेष अश्वि. 1	★मेष	मं.	3 00 00	कर्क पुन. 4	★कर्क	चं.	6 00 00	तुला चित्रा 3	★तुला	शु.	9 00 00	मकर उ.षा. 2	★मकर	श.
0 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	3 03 20	,, पुष्य 1	सिंह	सू.	6 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	9 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
0 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	3 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	6 06 40	,, स्वाती 1	धनु	गु.	9 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.
0 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	3 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	6 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	9 10 00	,, श्रव. 1	मेष	मं.
0 13 20	,, भर. 1	सिंह	सू.	3 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	6 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	9 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.
0 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	3 16 40	,, आश्ले. 1	धनु	गु.	6 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	9 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
0 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	3 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	6 20 00	,, विशा. 1	मेष	मं.	9 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.
0 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	3 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	6 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	9 23 20	,, धनि. 1	सिंह	सू.
0 26 40	,, कृति. 1	धनु	गु.	3 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	6 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	9 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
1 00 00	वृष ,, 2	मकर	श.	4 00 00	सिंह मघा 1	मेष	मं.	7 00 00	वृश्चि. ,, 4	कर्क	चं.	10 00 00	कुम्भ ,, 3	तुला	शु.
1 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	4 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	7 03 20	,, अनु. 1	सिंह	सू.	10 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
1 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	4 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	7 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	10 06 40	,, शत. 1	धनु	गु.
1 10 00	,, रोहि. 1	मेष	मं.	4 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	7 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.	10 10 00	,, ,, 2	मकर	श.
1 13 20	,, ,, 2	★वृष	शु.	4 13 20	,, पू.फा. 1	★सिंह	सू.	7 13 20	,, ,, 4	★वृश्चि.	मं.	10 13 20	,, ,, 3	★कुम्भ	श.
1 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	4 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	7 16 40	,, ज्येष्ठा 1	धनु	गु.	10 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.
1 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	4 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	7 20 00	,, ,, 2	मकर	श.	10 20 00	,, पू.भा. 1	मेष	मं.
1 23 20	,, मृग. 1	सिंह	सू.	4 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	7 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	10 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.
1 26 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	4 26 40	,, उ.फा. 1	धनु	गु.	7 26 40	,, ,, 4	मीन	गु.	10 26 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.
2 00 00	मिथुन ,, 3	तुला	शु.	5 00 00	कन्या ,, 2	मकर	श.	8 00 00	धनु मूल 1	मेष	मं.	11 00 00	मीन ,, 4	कर्क	चं.
2 03 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	5 03 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	8 03 20	,, ,, 2	वृष	शु.	11 03 20	,, उ.भा. 1	सिंह	सू.
2 06 40	,, आर्द्रा 1	धनु	गु.	5 06 40	,, ,, 4	मीन	गु.	8 06 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	11 06 40	,, ,, 2	कन्या	बु.
2 10 00	,, ,, 2	मकर	श.	5 10 00	,, हस्त 1	मेष	मं.	8 10 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	11 10 00	,, ,, 3	तुला	शु.
2 13 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.	5 13 20	,, ,, 2	वृष	शु.	8 13 20	,, पू.षा. 1	सिंह	सू.	11 13 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.
2 16 40	,, ,, 4	मीन	गु.	5 16 40	,, ,, 3	मिथुन	बु.	8 16 40	,, ,, 2	कन्या	बु.	11 16 40	,, रेव. 1	धनु	गु.
2 20 00	,, पुन. 1	मेष	मं.	5 20 00	,, ,, 4	कर्क	चं.	8 20 00	,, ,, 3	तुला	शु.	11 20 00	,, ,, 2	मकर	श.
2 23 20	,, ,, 2	वृष	शु.	5 23 20	,, चित्रा 1	सिंह	सू.	8 23 20	,, ,, 4	वृश्चि.	मं.	11 23 20	,, ,, 3	कुम्भ	श.
2 26 40	,, ,, 3	★मिथुन	बु.	5 26 40	,, ,, 2	★कन्या	बु.	8 26 40	,, उ.षा. 1	★धनु	गु.	11 26 40	,, ,, 4	★मीन	गु.

सुगम प्रश्न-विचार

जब कभी आपको किसी भी प्रश्न के पूछने की इच्छा हो तब शुद्धतापूर्वक "**ॐ श्रीकीर्तिभवान्यै नमः**" इस मंत्र को श्रद्धापूर्वक सात बार पढ़कर यहां आगे दिए चारों यंत्रों पर क्रमशः अंगुली रखें। फिर यंत्रों के उन चारों अंकों को, जिन पर अंगुली रखी गई हो, जोड़कर ९ से भाग दें। शेष बचे हुए अंक के सम्मुख अपनी अभीष्ट प्रश्नावली, उत्तरावली में (अर्थात् यदि मुकद्दमे का प्रश्न हो तो "**मुकद्दमा का फल**" वाली उत्तरावली में, नौकरी का प्रश्न हो तो "**नौकरी का फल**" वाली उत्तरावली में.....इत्यादि) अपना उत्तर देखें। **उदाहरण लीजिए**-आपका प्रश्न मुकद्दमा के विषय में है कि जीत होगी या नहीं? आपने चारों यंत्रों में क्रमशः ४, ३, ७ एवं ९ पर अंगुली रखी, जिनका योग २३ हुआ। २३ को ९ से भाग देने पर ५ शेष बचा। अब आप अपना उत्तर "**मुकद्दमे का फल**" शीर्षक वाली उत्तरावली में ५ संख्या के सम्मुख देखिए। **उत्तर है**- "**विशेष खर्च करके जीत होगी**"। यहां पर यह स्मरण रहे कि- यदि शेष ० बचे तो उसे ९ समझें। **नोट**-प्रश्न एक ही बार करना चाहिए। बार बार दिल्लगी से प्रश्न करने पर फल नहीं मिलेगा।

अंगुली रखने के चार यंत्र

यन्त्र सम्मुख			यन्त्र ऊर्ध्वमुख			यन्त्र अधोमुख			यन्त्र विपुख		
४	३	८	६	१	८	४	९	२	८	३	४
९	५	१	७	५	३	३	५	७	१	५	९
२	७	६	२	९	४	८	१	६	६	७	२

उत्तरावली

(१) मित्र मिलापफल

१. मित्र शीघ्र ही मिलेगा।
२. मित्र विश्वासघाती है।
३. मित्र कुछ विलम्ब से मिले।
४. मित्र धोखा देगा।
५. मित्र बड़ा सज्जन प्रेमी है।
६. मित्र कष्ट-भययुक्त है।
७. मित्र अच्छा है, शीघ्र मिलेगा।
८. मित्र मतलबी है।
९. मित्र दूसरे से मिलावट रखता है।

(२) मुकद्दमे का फल

१. मुकद्दमा देर से होगा।
२. मुकद्दमे में जीत होगी।
३. जज ठीक न्याय नहीं करेगा।
४. कुछ कुछ जीत होगी।
५. विशेष खर्च करके जीत होगी।
६. कष्ट अधिक होगा।
७. तुम्हारी हार होगी।
८. सुलह हो जायेगी।
९. पंचायत मिलकर फैसला करेगी।

(३) यात्रा का फल

१. गमन मत करो, लाभ नहीं।
२. देशाटन में हानि-लाभ बराबर है।
३. भूलकर भी मत जाओ, हानि होगी।
४. शुभ दिन में जाओ, लाभ होगा।
५. देशाटन में कोई चमत्कार है।
६. शकुन विचार कर गमन करो, लाभ होगा।
७. यात्रा पीड़ा कारक होगी।
८. यात्रा में आराम मिलेगा।
९. यात्रा सफल हो पर खर्च विशेष होगा।

(४) पशु लेने का फल

१. पशु से पूरा लाभ होगा।
२. पशु से हानि-लाभ सम।
३. पशु मत खरीदो, भला नहीं।
४. तेरा विचार ठीक नहीं है।
५. फायदा रहेगा तो सही।
६. आजकल पशु लेना-देना बुरा है।
७. पशु संग्रह मत करो, पछताओगे।
८. तेरा विचार बिलम्ब से फलेगा।
९. लेना-देना ठीक नहीं, हानि-लाभ सम।

(५) लाभालाभ का फल

१. इस माल से लाभ उत्तम होगा।
२. इस माल से लाभ कुछ न होगा।
३. यह काम घाटे का है।
४. चोरी या नुक्सान का भय है।
५. सांझी या व्यापारी दगा करेगा।
६. माल से सवाया लाभ होगा।
७. माल कुछ देर से लाभ देगा।
८. खरीदो मत, पड़ा है तो बेचो।
९. माल में गहरा नफा मिलेगा।

(६) नौकरी का फल
१. नौकरी ज़रूर मिलेगी।
२. देर से मिलेगी, धीरज रखो।
३. काम नहीं बनेगा, सचेत रहें।
४. खर्च करने से कार्य बनेगा।
५. यहां कुछ नहीं और यत्न करो।
६. शत्रु रुकावट करेंगे, ग्रहदान करें।
७. किसी की सहायता से काम बनेगा।
८. इस विचार से अनेक विघ्न होंगे।
९. काम सिद्ध न होगा।

(७) विद्या-परीक्षाफल
१. अभी उत्तीर्ण होना दूर है।
२. विद्या से कुछ लाभ नहीं।
३. मनोकामना पूरी होगी।
४. विद्या सामान्य सफलता देगी।
५. विद्या ही परम लाभकारी होगी।
६. उत्तीर्ण होने में कष्ट होगा।
७. अच्छे दर्जे में पास होगा।
८. विद्या में विशेष लाभ न हो।
९. विद्या लाभकारी न होगी।

(८) परदेशी प्रश्न फल
१. परदेशी शीघ्र ही आयेगा।
२. बीमारी से लाचार है।
३. मार्ग में चला आ रहा है।
४. दूर-देशान्तरों में विचरता है।
५. रास्ते में ठगा गया है।
६. अभी लौटने का विचार नहीं है।
७. वह परदेश में ही प्रसन्न है।
८. खर्च में तंग है, कैसे आवे।
९. परदेशी पराधीन हो गया है।

(९) शत्रुनाश प्रश्नफल
१. शत्रु दुष्ट है, दमन न होगा।
२. शत्रु से तुम्हारी जीत होगी।
३. शत्रु द्वारा विशेष हानि होगी।
४. मित्र की सहायता से जय हो।
५. शत्रु निर्बल हो गया, डरो मत।
६. विश्वास न करो, उससे भय है।
७. प्रशासन की सहायता से भय मिटे।
८. सुलह हो जायेगी।
९. शत्रु के कारण द्रव्यनाश होगा।

(१०) मंत्र सिद्ध करने का फल
१. इस साधना में उपद्रव होगा।
२. मन निश्चित चंचल होगा।
३. यह साधना शुभ नहीं।
४. साधना गुरुकृपा से पूर्ण होगी।
५. प्रारम्भ करने पर कष्ट होगा।
६. साधना सफल नहीं होगी।
७. देरी बाद सिद्धि होगी।
८. परिणाम अच्छा नहीं होगा।
९. इस सिद्धि को खेल मत समझो।

(११) किरयाना लेने का फल
१. किरयाना लेने से अच्छा लाभ हो।
२. किरयाना लेने में लाभ थोड़ा है।
३. किरयाना लेने में हानि है।
४. किरयाना लेने में हानि है, न लो।
५. किरयाना मत लो, नुकसान है।
६. कियाना लेने में लाभ है।
७. किरयाना महंगा होगा।
८. लाभ न होगा, मत लो।
९. किरयाना लेने में लाभ होगा।

(१२) बाग लगाने का फल
१. बाग लगाने से अच्छा लाभ है।
२. बाग देर से फल देगा।
३. बाग लगाने में लाभ नहीं।
४. बाग अधिक रुपया खा जायेगा।
५. जंगली जन्तु बाग को नष्ट करेंगे।
६. बाग सुरक्षित नहीं रहेगा।
७. बाग लाभप्रद होगा।
८. बाग लगाना कलह का मूल होगा।
९. मनोरथ सफल होगा।

(१३) शासक के दर्शन का फल
१. विचार छोड़ दो, कुछ लाभ नहीं।
२. राजा के दर्शन में हानि है।
३. राजा के दर्शन से मनोरथ पूर्ण होगा।
४. राजा का दर्शन विलम्ब में फल देगा।
५. लाभ होना संभव है, वैरी रोकता है।
६. राजा के दर्शन में कोई लाभ नहीं।
७. राजा आदर करे, जगत् में नाम हो।
८. इस झगड़े में मत पड़ो, पश्चाताप होगा।
९. राजा का दर्शन असफल होगा।

(१४) बन्ध-मोक्षफल
१. खर्च करने से सत्य छूटेगा।
२. नहीं छुटेगा, कितनी ही कोशिश करो।
३. जल्दी छुटेगा, देर नहीं होगी।
४. रूपया खर्च करने से छूटेगा।
५. धन खर्च करने से छूटेगा।
६. देर से छूटेगा, सत्य मानो।
७. सिफारिश से छूटेगा।
८. जल्दी छूट जायेगा।
९. अभी नहीं छूटेगा।

(१५) मकान बनाने में हानि-लाभ
१. मकान बनाओ, सुख मिलेगा।
२. अधिक दिनों में पूरा होगा।
३. इस कार्य में लाभ नहीं, मत करो।
४. द्रव्य का खर्च विशेष होगा।
५. इस कार्य में शत्रु उपद्रव करेगा।
६. मकान निर्बल खराब बनेगा।
७. इस मकान से लाभ होगा।
८. इस मकान पर सदा झगड़े रहेंगे।
९. पृथ्वी का भाग पृथ्वी में रहेगा।

(१६) इच्छा पूरी होगी कि नहीं
१. इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी।
२. अधूरी अच्छा पूर्ण होगी।
३. इच्छा पूर्ण होने में विघ्न।
४. निष्फलता है।
५. इच्छापूर्त्ति देर से होगी।
६. इच्छा-पूर्ति में कुछ विघ्न-बाधाएं।
७. इच्छा पूर्ण होगी।
८. इच्छा पूर्ण न होगी।
९. किसी की सहायता से पूर्ण होगी।

(१७) दुकान करूं या नहीं
१. दुकान करने से लाभ अच्छा है।
२. दुकान करने से लाभ नहीं।
३. दुकान करो, लाभ बहुत होगा।
४. दुकान से लाभ है, परन्तु खर्च बहुत होगा।
५. दुकान मत करो, हानि है।
६. लाभ-हानि समान है, न करो।
७. लाभ अच्छा होगा, दुकान करो।
८. दुकान में लाभ न होगा।
९. दुकान में लाभ अच्छा होगा।

(१८) खेती करने का फल
१. खेती में लाभ रहेगा।
२. वर्षा थोड़ी होने का डर है।
३. खेती को कीड़े का भय है।
४. मनोकामना सिद्ध होगी।
५. जितनी मेहनत, उतना लाभ।
६. खेती करो, पर सावधानी से।
७. खेती में ओले का भय है।
८. वायु के कारण कुछ हानि होगी।
९. खेती में हानि रहेगी, मत करो।

(१९) रोगी का प्रश्नफल
१. यह रोगी अधिक दिन तक रहेगा।
२. ग्रहदशा खराब है, शांति करो।
३. यह रोग ईश्वर प्रकोप का फल है।
४. चिन्ता न करो, आराम होगा।
५. रोगी की आबो-हवा बदली करो।
६. रोगी को पथ्य से रखो।
७. चिन्ता न करो, कुछ दिन भारी हैं।
८. आराम हो जायेगा, पर खर्च अधिक हो।
९. होनहार में किसी का वश नहीं चलता।

(२०) संतान भाग्य में है क्या ?
१. संतान आपके भाग्य में नहीं।
२. प्रेतशांति से होगी।
३. संतान कमजोर होगी।
४. अपने इष्टदेव की पूजा से हो।
५. नेम-व्रत से होगी।
६. गया या पिहोए की विधि से हो।
७. होकर नष्ट होने का भय है।
८. संतान की आशा छोड़ो।
९. सप्ताह-श्रवण से होगी।

(२१) धर्म-दीक्षाफल

१. धर्म में प्रीति थोड़ी है।
२. धर्म से अधिक प्रीति हो।
३. धर्म करते रोग हो।
४. धर्म में यश बढ़े।
५. धर्म से आकुलता हो।
६. धर्म से नाम स्थिर रहे।
७. धर्म करते मृत्यु हो।
८. धर्म से वृत्ति उखड़े।
९. धर्म-दीक्षा से शांति मिले।

(२२) अनाज खरीद-फल

१. अनाज में भारी लाभ होगा।
२. लाभ-हानि समान रहे।
३. घाटा रहेगा।
४. अन्न के खराब होने का भय है।
५. सांझा व्यापार न करें।
६. देर से बिकेगा।
७. अनाज में सवाये होंगे।
८. बेचना ठीक है, लेना मत।
९. प्रश्नफल अशुभ है।

(२३) पुत्र गोद लेने का फल

१. गोद लेने से नाम रहेगा।
२. यह लड़का वफादार नहीं।
३. लड़का खर्च करायेगा।
४. लड़का अच्छा नहीं।
५. अच्छी निभेगी।
६. सावधानी से गोद लेना।
७. बे-मुहब्बत निकलेगा।
८. घर में अनबन रहेगी।
९. सुखदायी नहीं।

(२४) तबादले का प्रश्न

१. तबादला होगा।
२. कुछ रुकावट के साथ होगा।
३. तबादले में विघ्न आवे।
४. तबादला अभी नहीं।
५. तबादला होगा।
६. तबादले में देर है।
७. तबादला जरूर होवे।
८. अभी ठहरो।
९. देरी से होगा।

(२५) कर्ज लेने-देने का परिणाम

१. यहां से कर्ज लेना-देना अच्छा है।
२. जैसा प्रेम अब है, आगे नहीं रहे।
३. लेने-देने का नतीजा खराब रहेगा।
४. अन्त में मुश्किल होगी।
५. दिया सो खोया, लिया सो कमाया।
६. इस जगह हानि-लाभ सम है।
७. लेने-देने में कोई हर्ज नहीं।
८. अन्त समय अदालत में जाना रहेगा।
९. नफा-नुक्सान बराबर रहेगा।

(२६) गर्भ में क्या है?

१. गर्भ से सुख की आशा नहीं।
२. पुत्री का जन्म होगा।
३. शुभ लक्षण वाला पुत्र है।
४. लड़की होगी, पर आयु कम।
५. गर्भ अधूरा रहे या बच्चा मरे।
६. पुत्र का जन्म होगा।
७. दीर्घायु पुत्र होगा।
८. कन्या जन्मेगी।
९. जोड़े बालक होंगे।

(२७) विवाह-शादी का फल

१. विवाह देरी से होगा।
२. विवाह होगा, पर स्त्री अच्छी नहीं।
३. विवाह न होगा।
४. विवाह जरूर होगा।
५. विवाह में रुकावटें होंगी।
६. किसी की खुशामद करो।
७. खर्च करो, काम बनेगा।
८. थोड़ा विलम्ब से होगा।
९. स्त्री गुण वाली मिलेगी।

(२८) रोजगार प्रश्न फल

१. रोजगार जल्दी ही अच्छा होगा।
२. विशेष परिश्रम करने से रोजगार होगा।
३. किसी प्रकार की ठेकेदारी करो।
४. जल, मिट्टी, कोयला से लाभ होगा।
५. अब इस व्यापार में हानि होगी।
६. दुश्मन नुक्सान करेंगे, सावधान।
७. रोजगार ठीक होने में देर है।
८. खोटे ग्रह की दशा है, अभी चुप रहो।
९. जो विचारा है, वह पूर्ण नहीं होगा।

(२९) चोरी गई वस्तु का फल

१. वस्तु शीघ्र मिलेगी।
२. खर्च करने पर माल मिलेगा।
३. पता पूरा लगे, पर माल न मिलेगा।
४. चोर पक्का है, माल न मिलेगा।
५. किसी की मदद से माल मिलेगा।
६. चोर ने तेरी वस्तु और को दे दी।
७. माल आधा नष्ट हो गया।
८. माल नहीं मिलेगा, आशा छोड़ो।
९. चोर छोटी आयु का है, माल मिलेगा।

(३०) गुप्त चिन्ता का फल

१. मन की इच्छा पूर्ण होगी।
२. काम बनने में कुछ देर है।
३. काम का नतीजा खराब होगा।
४. किसी का भरोसा न करो।
५. चिन्ता ना करो, काम बनेगा।
६. मन की मन में ही रहेगी।
७. तेरा दुष्ट से वास्ता पड़ा है।
८. देरी से काम बनेगा।
९. चिन्ता सच्ची है, मदद लो।

(३१) सांझेदारी में लाभ होगा?

१. सांझे में लाभ होगा।
२. सांझे में लाभ कम होगा।
३. सांझे में हानि का भय है।
४. लाभ होगा, परन्तु ठहर कर।
५. हानि का भय है।
६. लाभ होगा।
७. लाभ होगा, परन्तु अंत में गड़बड़ी का भय है।
८. लाभ की आशा व्यर्थ है।
९. लाभ होगा, विश्वास रखो।

(३२) खोया पशु किधर मिलेगा?

१. पशु दक्षिण में है, नहीं मिलेगा।
२. पश्चिम में गया है, मिलेगा।
३. उत्तर-पश्चिम के कोण में गया है, नहीं मिलेगा।
४. उत्तरदिशा में ढूंढों, मिलेगा।
५. पूर्व की ओर गया है, जल्दी ढूंढने से मिलेगा।
६. उत्तर में ही मिलेगा।
७. पूर्वोत्तर कोण में गया है, मिलना कठिन है।
८. दक्षिण में गया है, मिलेगा।
९. पश्चिम में गया है, खर्च से मिलेगा।

(३३) मेरा यह वर्ष कैसा है?

१. यह वर्ष शुभ रहेगा।
२. वर्ष कष्टप्रद है।
३. वर्ष मध्यम है।
४. वर्ष अधिक कठिनाइयों वाला है।
५. वर्ष शुभ-लाभप्रद है।
६. वर्ष साधारण है।
७. वर्ष शुभ है।
८. वर्ष हानिकारक है, ग्रहशान्ति करो।
९. इस वर्ष भाग्यवृद्धि होगी।

(३४) कुश्ती लड़ने का फल

१. प्रभु का ध्यान करो, जीतोगे।
२. सावधान, शत्रु प्रबल है।
३. मत लड़, गड़बड़ मचेगी।
४. लड़ाई-झगड़े का भय है।
५. कुश्ती कर, जीतेगा।
६. मत घबरा, जीतेगा।
७. जीतने में शत्रु विघ्न डालेंगे।
८. तेरे हारने का योग है।
९. विजय होगी।

(३५) गायब व्यक्ति जीवित है?

१. जीवित नहीं।
२. वह जीवित है।
३. जीवित नहीं है।
४. जीवन में सन्देह है।
५. जीवित है।
६. जीवित नहीं।
७. जीवित है।
८. जीवित नहीं।
९. जीवित है।

(३६) यह व्यक्ति विश्वासयोग्य है ?

१. विश्वासयोग्य है।
२. कुछ विश्वास-योग्य कम है ?
३. विश्वासयोग्य नहीं है।
४. ईमानदार है।
५. भरोसा कर सकते हैं।
६. भरोसा मत करो।
७. विश्वासपात्र है।
८. विश्वासयोग्य नहीं है।
९. विश्वासपात्र है।

(३७) इस काम में लाभ है ?

१. इस काम से सुख-लाभ होगा।
२. इस काम में दुःख-हानि होगी।
३. इस काम में हानि-लाभ समान।
४. इस काम में हानि-दुःख होगा।
५. इसमें लाभ-सुख है।
६. लाभ-सुख मध्यम।
७. सुख-लाभ होगा।
८. सावधान, हानि-दुःख होगा।
९. सुख-लाभ होगा।

(३८) मुझे यहां लाभ होगा?

१. अन्य स्थान पर जाओ, लाभ होगा।
२. इसी स्थान पर लाभ होगा।
३. अन्य स्थान पर जाना लाभप्रद है।
४. अन्य स्थान पर लाभ होगा।
५. यहीं ठहरो, कुछ दिन बाद लाभ होगा।
६. यहीं ठहरो, दूसरी जगह भी कष्ट हो।
७. यह स्थान मत छोड़ो, देर से लाभ है।
८. दूसरी जगह जाना ठीक है।
९. परिश्रम करो, ग्रहशान्ति से लाभ होगा।

(३९) यह खबर झूठी है या सच्ची ?

१. यह खबर सच्ची है।
२. यह बात झूठी है।
३. बात सच्ची है।
४. बात झूठी है।
५. बात सत्य है।
६. सत्य है।
७. कुछ सत्य है।
८. निराधार है।
९. सच्ची है।

(४०) आज का दिन अच्छा है ?

१. आज का दिन अच्छा है।
२. आज सावधान रहें।
३. अच्छा दिन है।
४. खराब है।
५. अच्छा दिन है।
६. अशुभ चिन्ताप्रद है।
७. शुभ दिन है।
८. बहुत ज्यादा खराब है।
९. मध्यम है।

(४१) रोग, ग्रहदोष या अन्य पीड़ा

१. कर्मजन्य शारीरिक कष्ट है।
२. रोग से ही पीड़ित है।
३. ग्रहकृत मानसिक रोग है।
४. प्रेतपीड़ा है, शान्ति करावें।
५. शत्रुकृत टोना आदि कसर है।
६. ग्रहपीड़ा है, शान्ति करावें।
७. शत्रु ने कुछ कराया है, रामरक्षा पढ़ें।
८. रोग कष्टसाध्य है, शिवार्चन करें।
९. कर्मजन्य फल से विवश है।

(४२) नया नल, कूप आदि कैसा होगा ?

१. शीघ्र जल मिलेगा।
२. खण्डित जल मिलेगा।
३. सुन्दर जल मिलेगा।
४. जल नहीं मिलेगा।
५. अमृत जल मिलेगा।
६. जल मिलेगा।
७. मिश्रित, कम जल मिलेगा।
८. अभी जल नहीं मिलेगा।
९. जल कम या क्षार मिलेगा।

(४३) इस व्यक्ति से कार्य सिद्ध होगा ?

१. इस व्यक्ति के द्वारा सफलता होगी।
२. इसके द्वारा कार्य सिद्ध नहीं होगा।
३. कार्यसिद्धि में सहायता मिलेगी।
४. इससे काम सिद्ध न होगा।
५. इसके द्वारा कार्य सिद्ध हो जायेगा।
६. यह दिल से काम नहीं करेगा।
७. बड़ी खुशामद से सिद्ध होगा।
८. इससे कुछ आशा न करो।
९. मिलो, कार्य बनेगा।

(४४) मुझे इस काम में सफलता मिलेगी ?

१. सफलता की कम आशा है।
२. बड़े परिश्रम से सफलता होगी।
३. सफलता मिलेगी।
४. सफल होना मुश्किल है।
५. सफल हो जाओगे, डटे रहो।
६. सफलता देर से मिलेगी।
७. किसी की सहायता से सफलता मिलेगी।
८. सफलता की आशा नहीं।
९. निराशा के बाद सफलता मिलेगी।

केरल मत से प्रश्न के पिण्ड द्वारा शुभाशुभ फल

प्रश्नकर्त्ता के मुख से जो अक्षर निकले- उसी से प्रश्नपिण्ड बनाएं। यदि प्रश्न में बहुत अक्षर बोलें अथवा अस्पष्ट (साफ नहीं) हों तो यदि प्रश्नकर्त्ता ब्राह्मण हो तो उससे किसी फूल का नाम, क्षत्रिय हो तो नदी का नाम, वैश्य हो तो देवता का नाम, यदि शुद्र हो तो किसी फल का नाम ग्रहण कराएं।

।। स्पष्टार्थ चक्र (स्वर ध्रुवांक-चक्र ।।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
१२	२१	११	१८	१५	२२	१८	३२	२५	१९	२५

।। व्यंजन ध्रुवांक-चक्र ।।

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ट्
१३	११	२१	३०	१०	१५	२१	२३	२६	२६	१०
ठ्	ड्	ढ्	ण्	त्	थ्	द्	ध्	न्	प्	फ्
१३	२२	३५	४५	१४	१८	१७	२२	३५	२८	१८
ब्	भ्	म्	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
२६	२७	८६	१६	१३	१३	३५	२६	३५	३५	१२

उदाहरण:- जैसे किसी ब्राह्मण ने प्रश्न किया तो उससे पुष्प का नाम ग्रहण करवाने से गुलाब का नाम लिया। ध्रुवांक के चक्रों से अंक ग्रहण किए। जैसे (ग् = २१, उ =१५, ल् = १३, आ =२१, ब् = २६, अ = १२) वर्ण और स्वर के सब ध्रुवों का योग किया तो १०८ यह प्रश्न-पिण्ड हुआ।

लाभ का प्रश्नविचार

लाभलाभ का प्रश्न हो तो प्रश्नपिण्ड में ४२ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में लाभ, २ शेष में अल्प लाभ, ० शेष में हानि समझना।

जय-पराजय प्रश्नविचार

जय-पराजय प्रश्नपिण्ड में ३४ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में जय, २ में सन्धि, ० में पराजय कहना चाहिए।

सुख-दुःख प्रश्नविचार

सुख-दुःख प्रश्नपिण्ड में ३८ जोड़कर २ से भाग देने पर १ शेष में सुख, ० शेष में दुःख समझना चाहिए।

गमन-प्रश्नविचार

गमन प्रश्नपिण्ड में ३३ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गमन, २ शेष में स्थिर और ० शेष में आधे रास्ते से ही लौटना पड़े।

जीवन-मरणविचार

जीवन-मरण प्रश्नपिण्ड में ४० जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में जीवन, २ में कष्ट से जीवन, शून्य में मरण फल कहना चाहिए।

यात्राप्रश्न

यात्रा-सम्बन्धी प्रश्नपिण्ड में ३९ जोड़कर ३ से भाग देने से १ शेष में उत्तम यात्रा, २ मे अल्प यात्रा तथा शून्य में यात्रा नहीं होगी।

वर्षा-प्रश्न

वर्षा-प्रश्नपिण्ड में ३२ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में पूर्ण वर्षा, २ में मध्यम और शून्य में वहां वर्षा नहीं होती।

गर्भ-विचारप्रश्न

गर्भ है या नहीं इस प्रश्नपिण्ड में २६ जोड़कर ३ से भाग देने पर १ शेष में गर्भ, २ में गर्भस्राव-सन्देह, ० शेष में नहीं है, इस प्रकार समझें।

तेजी-मन्दी का प्रश्न

प्रश्नपिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में सस्ता (मन्दी), २ में समान और शून्य में तेजी समझना।

सत्यासत्य-प्रश्न

यह बात सत्य है या असत्य, ऐसे प्रश्नपिण्ड में २ के भाग से १ शेष में सत्य और शून्य में असत्य कहना।

पुत्र-कन्या जन्मप्रश्न

प्रश्नपिण्ड में ३ के भाग से १ शेष में पुत्र, २ में कन्या और शून्य शेष में गर्भ का अभाव व नपुसंक कहना।

विवाह-प्रश्न

प्रश्नपिण्ड में ८ से भाग देकर १ शेष में बिना यत्न से, २ में अधिक यत्न से विवाह कहना। ३ शेष में विवाह नहीं हो। ४ शेष में कन्या का मरण, ५ में चाचा आदि का मरण, ६ में राजभय, ७ में वर-कन्या दोनों को मरण व श्वसुर का मरण, ८ यानी ० शेष हो तो विवाह से सन्तान का मरण कहना।

कार्यसिद्धि-प्रश्न

प्रश्नकर्त्ता श्रीदेवी जी का स्मरण करके, पंचदशी यंत्र पर अंगुली धरे। यदि १/५/९ पर धरे तो शीघ्र कार्यसिद्धि हो। ३/७ पर धरे तो सहारे से कार्यसिद्धि होवे। ४/६ पर धरे तो भी कार्य सिद्ध होवे। २/८ अंक पर अंगुली धरे तो कार्य सिद्ध नहीं होता है।

पंचदशी यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

फलित के उच्च–नीच खगोलीय मन्दोच्च–मन्दनीच नहीं हैं।

(एक विशेष शोधपूर्ण निबन्ध)

[अधिकतर सिद्धान्तज्ञ ज्योतिषियों को भी यह भ्रान्ति है कि– फलित ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले ग्रहों के स्थिर उच्च (उच्चबिन्दु या उच्च–राश्यंश) तथा स्थिर नीच (नीचबिन्दु या नीचराश्यंश) मूलतः अत्यन्त पूर्ववर्ती किसी एक ही समय के खगोलीय मन्दोच्च (मन्दोच्चबिन्दु या मन्दोच्च–राश्यंश) तथा मन्दनीच (मन्दनीचबिन्दु या मन्दनीचराश्यंश) ही हैं, जो अत्यन्त मन्द मार्गगति से चलते हुए अब उनसे (फलितीय स्थिर उच्च एवं स्थिर नीच) से काफी अन्तरित हो गए हैं। उनका यह भी कहना है कि– अब इन अन्तरित 'अशुद्ध' फलितीय उच्च–नीचों की जगह आधुनिक मन्दोच्च–मन्दनीचों का ही फलितनिर्णयार्थ प्रयोग करना युक्त है– उनकी इस महाभ्रान्ति का गणितीय विश्लेषणपूर्वक सम्मार्जन यहां हम करेंगे।– प्रियव्रत शर्मा]

भारतीय ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले ग्रहों के उच्च और नीच दो प्रकार के हैं–

(i) **फलितज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले उच्च–नीच,** जिनका निर्देश वराह आदि फलिताचार्यों ने "अज–वृषभ- मृगांगना–कुलीराः ...." आदि वाक्यों द्वारा किया है। ग्रहों के ये उच्च–नीच स्थिर हैं। English में इन्हें क्रमशः Exaltation (Exaltation Point) और Debilitation (Debilitation Point) कहते हैं। Exaltation का अर्थ है– उन्नति, शक्तिशालिता और Debilitation का निर्बलता। उच्चस्थ ग्रह को Exalted Planet और नीचस्थ को Debilitated Planet कहा जाता है। प्रत्येक ग्रह के फलितीय उच्च से उसका नीच हमेशा 180 अंशों (छः राशि) के अन्तर पर ही रहता है।

सूर्यादि ग्रहों के ये स्थिर उच्च (उच्चराश्यंश) पृष्ठ 304 पर **"उच्चनिर्णय कोष्ठक" के कॉलम (ख)** में दिए गए हैं।

(ii) **खगोलीय (सिद्धान्त) ज्योतिष में प्रयुक्त होने वाले उच्च–नीच,** जो क्रमशः मन्दोच्च और मन्दनीच शब्दों के संक्षिप्त रूप हैं। ये मन्दोच्च व मन्दनीच क्रमशः वे दो बिन्दु हैं, जहां ग्रह पृथ्वीकेन्द्र से क्रमशः दूरतम और समीपतम होते हैं। इन्हें English में क्रमशः Apogee व Perigee कहा जाता है।[1] इन उच्च–नीचों (मन्दोच्च–मन्दनीचों) का प्रयोग ग्रहों की खगोलीय गति, स्थिति, भोगांश आदि के निर्णयार्थ होता है। ये नितान्त मन्द मार्गगति से चल रहे हैं, जबकि फलितीय उच्च–नीच गतिशील नहीं हैं। वे सर्वथा स्थिर हैं।

"उच्चनिर्णय कोष्ठक" के **कॉलम (ग)** में ग्रहों के आधुनिक (सन् 2010 ई. वर्षीय) मन्दोच्चों के राशि, अंश दिए गए हैं। फलितीय नीच की भान्ति मन्दनीच भी अपने मन्दोच्चों से सर्वदा 180° (छः राशि) के अन्तर पर ही रहते हैं।

"उच्चनिर्णय कोष्ठक" के **कॉलम (च)** में ग्रहों के मन्दोच्चों का 30 अंश भोगकाल दिया गया है, जिससे आप जान सकते हैं कि– ये कितनी मन्दगति से चलते हैं। इनकी वार्षिक गतियां भी देखिए–

सूर्यमन्दोच्च की वार्षिक गति 0''.12, मंगलमन्दोच्च की 0''.06, बुधमन्दोच्च की 0''.11, गुरुमन्दोच्च

---

[1] *यहां पाठक ध्यान दें–पाश्चात्य ज्योतिष में फलितीय एवं खगोलीय उच्च–नीचों को भिन्न–भिन्न (फलितीय उच्च–नीचों को क्रमशः* Exaltation, Debilitation *तथा खगोलीय उच्च–नीचों को क्रमशः* Apogee, Perigee) *नामों से पुकारा गया है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– पाश्चात्य ज्योतिषी इन दोनों उच्च–नीचों को भिन्न–भिन्न ही मानते हैं।*

की 0''.27, शुक्रमन्दोच्च की 0''.16 और शनिमन्दोच्च की वार्षिक गति 0''.01 है।

मन्दोच्चों की गति की परममन्दता से स्पष्ट है कि– इन मन्दोच्चों (मन्दोच्च–बिन्दुओं) के विचलन का आभास सहस्राब्दियों तक भी स्पष्टता से नहीं हो पाता।[2]

"ग्रहों के परम्परागत स्थिर उच्च उनके किसी एक ही अतिप्राचीन काल के अस्थिर उच्च ही हैं[3], जिन्हें अतिमन्दगति के कारण अतिप्राचीनकालिक तात्कालिक फलिताचार्यों ने फलित में स्थायीरूप से प्रयोगार्थ निर्धारित कर दिया। अब जबकि ये अपने मूलभूत अस्थिर उच्चों से पर्याप्त अन्तरित हो चुके हैं, इन अन्तरित स्थिर उच्चों के स्थान पर आधुनिक अस्थिर उच्चों को ही फलादेश का आधार बनाना चाहिए"– इस प्रकार अनेक ज्योतिषियों का विचार है। इन ज्योतिषियों में **'हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी' के ज्योतिष विभागाध्यक्ष स्व. पं. रामयत्न ओझा, ज्योतिषाचार्य** जैसे सिद्धान्तज्ञ विद्वान् भी हैं। इन्होंने अपनी पुस्तक 'फलितविकास' में लिखा है– " ये स्थिर उच्च किसी अज्ञात अतिप्राचीनकालिक (भारतीय फलित ज्योतिषशास्त्र के शिलान्यासकालिक) अस्थिर उच्च (मन्दोच्च) ही हैं। अब जबकि अस्थिर उच्च अपनी गति से पर्याप्त आगे चले गए हैं, दैवज्ञों को परामर्श है– वे फलादेशार्थ इन्हीं आधुनिक **'अस्थिर उच्चों'** को ही प्रयोग मे लाएं।" उन्होंने **"अज–वृषभ–मृगाङ्गना–कुलीराः ...."** वाक्य को अनार्ष, अप्रामाणिक भी कह डाला है।

ओझा जी के उपरोक्त कल्पनाप्रसूत, आधारहीन मत का प्रतिवाद पृष्ठ **304** पर दिया **"उच्चनिर्णय कोष्ठक"** पूरी तरह करता है। इस कोष्ठक में दिए आंकिक परिणाम अत्यन्त सामान्य गणितप्रक्रिया त्रैराशिक पर आधारित हैं। त्रैराशिक जैसी साधारण गणितप्रक्रिया जानने वाले व्यक्ति को भी इसे समझने में यत्किंचित् भी कठिनाई नहीं होगी। **लीजिए–** इसे हम विशकलित भी किए देते हैं–

जो विद्वान् प्रचलित स्थिर उच्चों को प्राचीनकालिक अस्थिर उच्च ही मानते हैं, उनका यह स्पष्ट अभिप्राय है कि– सुदूरपूर्व किसी काल में , जब फलित ज्योतिष के सिद्धान्तनियम बनाए जा रहे थे, तब सूर्यादि ग्रहों के जो अस्थिर उच्च थे, ठीक उन्हें ही, उनकी अत्यल्प गति की उपेक्षा करते हुए, तत्तद् ग्रहों के फलादेशोपयोगी स्थिर उच्च निश्चित कर दिया गया। इसका अभिप्राय यह हुआ–सूर्यादि ग्रहों के जो स्थिर उच्च कोष्ठक[4] के कॉलम (ख) में दिए गए हैं, वे उनके मतानुसार इन ग्रहों के किसी एक ही 'अतिप्रचीनकाल' के अस्थिर उच्च हैं।[5] उनका अभिप्रेत यह **'अतिप्राचीनकाल'** आज से (सन् 2010 ई. से) कितने वर्ष पूर्व हो सकता है, इसका निर्णय हम इस कोष्ठक में दिए गए पदार्थों से करेंगे।

कोष्ठक के कॉलम (ख) में ग्रहों के स्थिर उच्च (ओझा जी[6] के मतानुसार किसी अतिप्राचीन समय के, फलितशास्त्र के तथाकथित स्थापनाकाल के अस्थिर उच्च) और कॉलम (ग) में ग्रहों के आधुनिक

---

[2] *यहां चन्द्र के मन्दोच्च के बारे में यह विशेष ज्ञापनीय है कि– अन्य सूर्यादि (छः) ग्रहों के मन्दोच्चों की भान्ति यह मन्दगति वाला नहीं है। इसकी दैनिक गति 6'.7 है और 9 मास में यह लगभग एकराशि आगे खिसक जाता है, अतः इस लेख में जहां हम अन्यन्त मन्दगति वाले मन्दोच्च की बात करेंगे, वहां सर्वत्र हमारा अभिप्राय सूर्यादि छः ग्रहों के मन्दोच्चों से ही होगा, चन्द्र के मन्दोच्च से नहीं– यह जान लेना चाहिए [इसके लिए "उच्चनिर्णय कोष्ठक" के नीचे दिया गया स्पष्टीकरण (ii) भी देखिए]।*

[3] *व्यवहारसुविधा के लिए आगे इस लेख में हम फलितीय एवं खगोलीय उच्चों को इनकी स्थिर एवं अस्थिर प्रकृति के कारण क्रमशः ' स्थिर उच्च' तथा 'अस्थिर उच्च' नामों से ही पुकारेंगे।*

[4] *यहां 'कोष्ठक' शब्द से सर्वत्र पृ.* **304** *पर दिया गया "उच्चनिर्णय कोष्ठक" ही समझना चाहिए।*

[5] *इस मत का खण्डन चन्द्र के स्थिर उच्च से स्पष्टतया हो जाता है, क्योंकि इसका अस्थिर उच्च (मन्दोच्च) तो 6'.7 दैनिक गति से पर्याप्त चल है। 9 मास में यह एकराशि आगे चल देता है, अतः इसे इस मतानुसार स्थिर रूप (1 रा. 03 अं.) देना बिल्कुल तर्कसंगत नहीं बनता।*

[6] *यहां सर्वत्र "ओझा जी" से हमारा अभिप्राय उन सभी ज्योतिषियों से भी है, जो स्थिर उच्चों को प्राचीनकालीन अस्थिर उच्च समझते हैं।*

(सन् 2010 ई. के) अस्थिर उच्च हैं। **कॉलम (घ)** में *"ग–ख"(=" सन् 2010 ई. कालिक अस्थिर उच्च–स्थिर उच्च")* से प्राप्त अंश दिए गए हैं। यहां **कॉलम (च)** में सूर्यादि ग्रहों के अस्थिर उच्चों का 30 अंश भोगकाल (ग्रह का अस्थिर उच्च 30 अंश चलने में जितने वर्ष लेता है, वह काल) दिया है। इन पदार्थों से हम त्रैराशिक द्वारा यह ज्ञात कर सकते हैं कि– कितने वर्ष B.C. में (ईसापूर्व) किस ग्रह का अस्थिर उच्च उसके स्थिर उच्च के समान था अथवा यूँ कहिए, हम इन पदार्थों से किसी भी ग्रह का **" उच्चतुल्यता वर्ष"**[7] जान सकते हैं। यह त्रैराशिक से इस प्रकार ज्ञात होगा–

ग्रह के अस्थिर उच्च को 30 अंश भोगने (चलने) में **कॉलम (च)** तुल्य वर्ष लगते हैं, तो **"ग–ख"** से प्राप्त अंशों को भोगने में उसे कितने वर्ष लगेंगे ?

इस त्रैराशिक से प्राप्त वर्ष **कॉलम (छ)** में दिए गए हैं, जो बतलाते हैं–अमुक ग्रह का अस्थिर उच्च सन् 2010 ई. से इतने वर्ष पूर्व उसके स्थिर उच्च के तुल्य था। **कॉलम (छ)** के वर्षों को B.C. वर्षों में (ईसा पूर्व वर्षों में) परिवर्तित कर **कॉलम(ज)** में लिखा गया है [8]। स्पष्ट है, ये सूर्यादि ग्रहों के "उच्चतुल्यता वर्ष " हैं।

कॉलम (ज) देखिए– यहां किन्हीं दो ग्रहों के भी उच्चतुल्यता वर्ष समान नहीं हैं। इन विभिन्न ग्रहों के उच्चतुल्यतावर्षों में परस्पर लाखों वर्षों का अन्तर है। कुछ ग्रहों के उच्चतुल्यता वर्षों में तो एक करोड़ वर्ष से भी अधिक का अन्तर है। ग्रहों के **'उच्चतुल्यतावर्षों '** में इस भयावह अन्तर से ओझा जी आदि विद्वानों का यह मत कि– इन सभी ग्रहों का उच्चतुल्यतावर्ष एक ही है, बुरी तरह ध्वस्त हो जाता है। इसी के साथ सभी ग्रहों के 'उच्चतुल्यतावर्ष ' की अभिन्नता के काल में "भारतीय फलितशास्त्र के शिलान्यास" का सिद्धान्त भी धराशायी हो जाता है।

किसी एक ही ग्रह के उच्चतुल्यतावर्ष में इस शास्त्र के शिलान्यास की कल्पना भी **Anthropologically** बुरी तरह तर्कभ्रष्ट है। देखिए– यहां गुरु का 'उच्चतुल्यतावर्ष' सर्वाल्प (10 लाख वर्ष) है। क्या विश्व का कोई भी पढ़ा–लिखा व्यक्ति यह मानने को तैयार होगा कि– 10 लाख वर्ष B.C. में ऐसा भी कोई मानव नाम की जाति का प्राणी भूगोल पर था, जिसे मन्दोच्च, मन्दनीच जैसे खगोलीय मूलतत्त्व ज्ञात थे ? ओझा जी ने तो केवल सूर्य के उच्चतुल्यतावर्षों के ही आधार पर भारतीय ज्योतिषशास्त्र की आधारशिलान्यास का काल 21 लाख वर्ष ईसापूर्व निर्धारित कर डाला (देखें 'फलितविकास' पृष्ठ 31)। शायद, उनकी दृष्टि में शनि का 'उच्चतुल्यतावर्ष ' नहीं आया। नहीं तो वे भारतीय फलितशास्त्र का शिलान्यास–काल 1 करोड़ 14 लाख ईस्वीपूर्व प्रमाणित करने से नहीं चूकते। आश्चर्य कम, दुःख अधिक होता है, जब कुछ विद्वान् लोग भी स्वत्व में निःसीम अन्धश्रद्धा के कारण यह भी नहीं जान पाते हैं कि– उनकी अतिकल्पना हास्यास्पद श्रेणी में आ रही है। ऐसे लोगों का चरम आत्मीयतानुराग (Chauvinism) तर्क की सभी सीमाओं को लांघ जाता है– बड़े दुःख की बात है।

यहां ओझा जी तथा अन्य उनके मतानुयायियों को यह बतलाना चाहता हूँ कि– **सभी ग्रहों के उच्चतुल्यता वर्षों की अभिन्नता की स्थिति, जिसे वे भ्रान्तिवश अतिप्राचीन किसी अज्ञात काल में घटित समझ रहे हैं, इस वर्तमान सृष्टि के विगतकाल 1,95,58,85,111 वर्षों की अवधि में भी आज तक कभी नहीं घटी,– यह ग्रहों के वर्तमानकालिक 'उच्चतुल्यतावर्षों' में अन्तर तथा उनके मन्दोच्चों की गतियों में असमानता से स्पष्ट है।**

---

[7] *ग्रह का अस्थिर उच्च जितने वर्ष B. C. में (ईसापूर्व) अपने स्थिर उच्च के तुल्य था, उस B. C. वर्ष को हमने यहां उस ग्रह के "उच्चतुल्यता वर्ष" की संज्ञा दी है [देखिए पृ. 30 4 पर "उच्चनिर्णय कोष्ठक" के कॉलम (ज) का शीर्षक] ।*

[8] *कॉलम (छ) के वर्ष 2010 ई. से पूर्ववर्ती हैं, अतः इनमें से 2010 वर्ष घटाकर, इन्हें B.C. वर्ष बनाकर, **कॉलम (ज)** में लिखा गया है।*

इस प्रकार ग्रहों के फलितीय (स्थिर) उच्च–नीचों को उनके फलित ज्योतिष–स्थापनाकालिक मन्दोच्च–नीच बतलाने वाला शताब्दियों से चला आ रहा यह भ्रामक मत पूरी तरह निरस्त हो जाता है।

अब हम ओझा जी व अन्य उन असंख्य दैवज्ञों को जो स्थिर उच्चों को अतिप्राचीनकालिक अस्थिर उच्च मानकर भारतीय फलित ज्योतिष के उद्गमकाल को Dinosaurian युग से भी पुरातन सिद्ध करने के लिए कटिबद्ध हैं, यह बतलाना चाहते हैं कि– ग्रहों के ये फलितीय (स्थिर) उच्चनीच भारतीयों की उपज्ञा नहीं हैं; ये तो भारतीयों को Babylon से प्राप्त हुए हैं– यह फलित ज्योतिष–इतिहास बतलाता है। प्राचीनकाल में Babylon के किसी दैवज्ञ को ग्रहों से सम्बद्ध फलादेश, निर्णय के प्रसंग में कुछ यह अनुभव हुआ कि– अमुक ग्रह जब अमुक राशि–अंश पर होता है, तब वह अति–शक्तिशाली, शुभफलप्रद तथा जब वह उसके ठीक 180° की दूरी पर होता है तब अतिदुर्बल, अशुभफलप्रद होता है (ग्रहों के ये राशि–अंश भारतीय फलित में प्रयुक्त "अज-वृषभ-मृगाङ्गना-कुलीराः....." वाले ही हैं)। इस नियमानुसार पाश्चात्त्य दैवज्ञों द्वारा अति शक्तिशाली, शुभफलप्रद ग्रहों को Exalted और अतिदुर्बल को Debilitated संज्ञा दी गई। Exaltation-Debilitation वाला यह Babylonian सिद्धान्त जब (शायद ईसा के अनन्तर) भारतीय फलितजगत् में प्रविष्ट हुआ, तब भारतीय दैवज्ञों ने इन्हें क्रमशः उच्च और नीच शब्दों से अनूदित किया, जिनके अर्थ क्रमशः वही हैं, जो Exaltation और Debilitation के हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि– पाश्चात्त्य ज्योतिष में मन्दोच्च, मन्दनीच को क्रमशः Apogee (पृथ्वीकेन्द्र से परमदूरी का बिन्दु) और Perigee (पृथ्वी-केन्द्र से परमसमीपता का बिन्दु) कहा जाता है। वहां स्थिर उच्च और स्थिरनीच के लिए जो पारिभाषिक शब्द (**Exaltation और Debilitation**) प्रयुक्त किए गए हैं, उन्हें अस्थिर उच्च (मन्दोच्च) व अस्थिर नीच (मन्दनीच) के लिए प्रयुक्त नहीं किया जाता। उनके लिए तो वहां इनसे भिन्न शब्द Apogee, Perigee का ही प्रयोग होता है। इससे स्पष्ट है, पाश्चात्त्य दैवज्ञ स्थिर उच्च–नीच एवं अस्थिर उच्च–नीचों में कोई सम्बन्ध नहीं मानते। अपि च– भारतीय दैवज्ञ भी स्थिर उच्च, स्थिरनीच को केवल उच्च–नीच की संज्ञाओं से ही पुकारते हैं। उन्हें वे भूलकर भी कभी मन्दोच्च–मन्दनीच नहीं कहते। मन्दोच्च–मन्दनीच को तो वे खगोलीय गणना में ग्रह की गति–स्थिति आदि साधन के लिए ग्रह की पृथ्वीकेन्द्र से क्रमशः परमदूरी व परमसमीपता वाले ग्रहस्थिति–बिन्दु के लिए ही प्रयुक्त करते हैं। स्पष्ट है– वे भी इन दोनों को भिन्न–भिन्न ही मानते हैं।

लेख का सारांश

गणितीय विश्लेषण बतलाता है कि–

(i) आज से विगत 10 लाख वर्ष तक की कालावधि में कहीं भी किसी भी ग्रह का खगोलीय उच्च–नीच (मन्दोच्च–मन्दनीच) उसके अपने फलितीय (स्थिर) उच्च–नीच के बराबर नहीं था।

(ii) वर्त्तमान सृष्टि के व्यतीत 1,95,58,85,111 वर्षों की अवधि में भी ऐसा काल नहीं आता, जबकि एकसाथ (एककालावच्छेदेन) सभी ग्रहों के मन्दोच्च–मन्दनीच उनके अपने–अपने फलितीय (स्थिर) उच्च–नीचों के बराबर हुए हों।

(iii) ग्रहों के फलितीय (स्थिर) उच्च–नीचों का उनके मन्दोच्च–मन्दनीचों से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, दोनों स्वतन्त्र पदार्थ हैं। प्रयोग में लाए जा रहे इनके नामों में सादृश्य ही इन दोनों में अभिन्नता की भ्रान्ति पैदा करता है।

उच्चनिर्णय कोष्ठक

(क)	(ख)	(ग)	(घ)	(च)	(छ)	(ज)
ग्रह	ग्रह का 'स्थिर उच्च' (=फलितीय उच्च)	सन् 2010 ई. में ग्रह का 'अस्थिर उच्च' (= मन्दोच्च)	(ग)–(ख) सन् 2010 ई. में ग्रह का 'अस्थिर उच्च' उसके 'स्थिर उच्च' से इतने अंश आगे बढ़ गया	ग्रह के मन्दोच्च (अस्थिर उच्च) का 30° भोगकाल (सौरवर्ष)	सन् 2010 ई. से इतने वर्ष पहले ग्रह का 'अस्थिर उच्च' उसके 'स्थिर उच्च' के बराबर था।	इतने वर्ष B.C. में ग्रह का 'अस्थिर उच्च' उसके 'स्थिर उच्च' के बराबर था। (इस काल को हमने यहां ग्रह का 'उच्चतुल्यता–वर्ष' माना है।)
	रा. अं.	रा. अं.	अंश	वर्ष	वर्ष	वर्ष (B.C.)
सूर्य	0 10	2 17	67	9,30,233	20,77,520	20,75,510
चन्द्र	1 03	— —	— —	0.7374	— —	— —
मंगल	9 28	4 10	192	17, 64,706	1,12,94,118	1,12,92,108
बुध	5 15	7 10	55	9,78,261	17,93,478	17,91,468
गुरु	3 05	5 21	76	4,00,000	10,13,333	10,11,323
शुक्र	11 27	2 20	83	6,72,897	18,61,682	18,59,672
शनि	6 20	7 27	37	92,30,769	1,13,84,615	1,13,82,605

इस कोष्ठक से सम्बद्ध विशेष स्पष्टीकरण –

(i) कोष्ठक **'सूर्यसिद्धान्तीय गणना'** पर आधारित है।

(ii) चन्द्र का 'अस्थिर उच्च' (मन्दोच्च) 6´.7 दैनिकगति से चलता है, यह लगभग 9 महीनों में एकराशि पार कर जाता है। इसके 'स्थिर उच्च' (1 रा. 03 अं.) से इसका (चन्द्रमन्दोच्च का) अन्तर बहुत द्रुतगति से घटता–बढ़ता रहता है। इसीलिए इस **कोष्ठक** के **कॉलम (ग), (घ), (छ)** और (ज) में दिए गए अन्य ग्रहों के स्थिर–अस्थिर उच्चों से सम्बद्ध विश्लेषण का यह (चन्द्र) विषय नहीं है। इसी कारण इसके कॉलम कोष्ठक में अप्रयुक्त हैं।

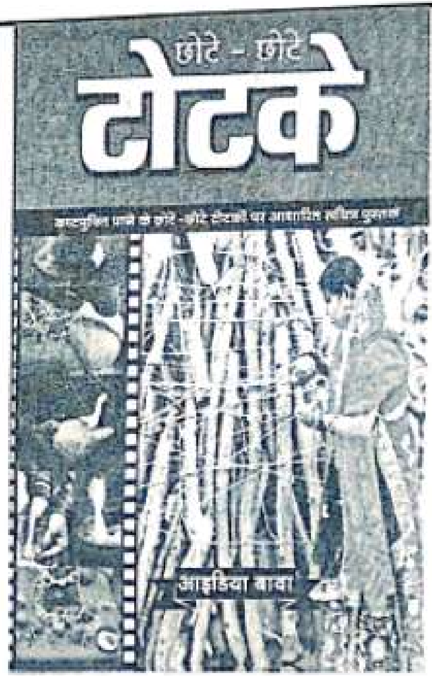
(iii) **कॉलम (ग), (घ), (छ)** और (ज) में ग्रहों के अस्थिर उच्चों को 2010 ई. वर्षीय मानकर गणना की गई है। वस्तुतस्तु ग्रहों के ये अस्थिर उच्च अत्यन्त अल्प(नितान्त नगण्य सी) गति के कारण 2010 ई. से हज़ारों वर्ष पूर्व एवं परवर्ती काल में भी लगभग इतने ही हैं। यथार्थतस्तु इन्हें **'आधुनिक युग के अस्थिर उच्च'** कहना ज़्यादा उपयुक्त है, लेकिन गणना के लिए यहां मुझे इन्हें 2010 ई. वर्षीय मानकर चलना पड़ा है।

*****



शनि साढ़ेसाती पुस्तक में हर राशि वालों के लिए अलग-अलग उपाय अलग-अलग राशियों के दिये गये हैं। जिससे आप साढ़ेसती के प्रभाव को कम करके अपने शनि को अनुकूल कर सकते हैं। इसके इलावा **महामृत्युज्य पूजन विधि, शिवलिंग पूजन विधि, महामृत्युज्य सहस्त्रनाम, महामृत्युज्य स्त्रोत्रम्, महामृत्युज्य स्तुति, श्री महाकाल शनि महामृत्युज्य स्तोत्रम, माला मंत्र, महामृत्युज्य पुष्पजलि, शनि से बचाव का पाशुपतास्त्रट प्रयोग, विशिष्ट शनि पूजन, शनि स्तोत्र दिये गये हैं।** जिसकी सहायता से आप साढ़ेसाती के प्रभाव को कम कर सकते हैं।

पुस्तक का मूल्य 150/-

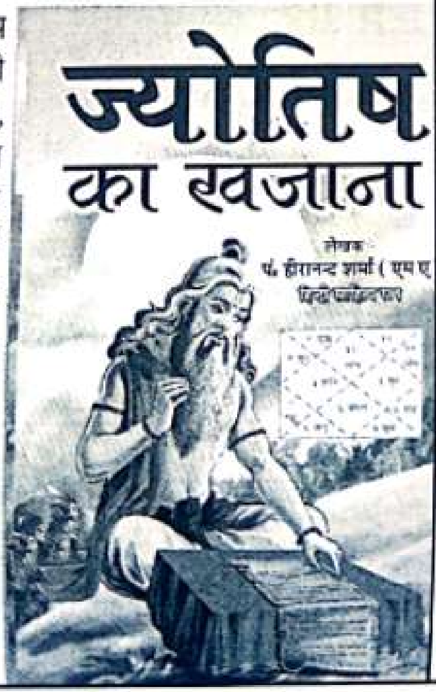


यह पुस्तक कष्ट मुक्ति पाने के छोटे-छोटे टोटकों पर आधारित है। जैसे **भाग्य उदय कारक टोटके, मनोकामना पूर्ण टोटके, सफलता देने वाले अचूक टोटके, सुख समृद्धि हेतु टोटके, सूर्य शान्ति के टोटके, मंगल शान्ति के टोटके, बुध शान्ति के टोटके, बृहस्पति शान्ति के टोटके, शुक्र शान्ति के टोटके, शन्ति शान्ति के टोटके, राहु-केतू शान्ति के टोटके, गृह प्रवेश निवारक टोटके, धन लक्ष्मी प्राप्ति के टोटके** इत्यादि हज़ारो टोटके हमारी इस पुस्तक **छोटे-छोटे घरेलू टोटके दिये गए हैं।**

पुस्तक का मूल्य 150/-

जैसे कि इस पुस्तक के नाम से ही आप को पता चल रहा होगा कि यह ज्योतिष की किताब है। इस पुस्तक में आकाशीय मंडल, ग्रह आदि की सम्पूर्ण जानकारी, आकाशीय मंडल का विवरण, ग्रहों की उच्च व नीच राशि चक्र, ग्रहों का परस्पर मैत्री चक्र, ग्रहों की दृष्टि चक्र, ग्रहों से रोग विचार, भाव और भावों की जानकारी, राशियों के स्वामी ग्रह, नक्षत्र और नक्षत्रों का प्रभाव, नक्षत्रों का विभाजन, विंशोतरी महादशा, फलित में सुदर्शन चक्र की भूमिका, सुदर्शन चक्र से फल देखने की विधि, कुण्डलियों का अध्ययन, विशेष योग अध्याय, 29 विशेष योग कैसे बनते हैं और उनका क्या लाभ है।

पुस्तक का मूल्य 150/-



जब ग्रह स्थिति जातक के विपरीत होती है तो सभी जातक के विपरीत ही चलने लगते हैं। उससे कुछ नहीं सूझता कि वह क्या करे या न करें। ऐसे समय में ज्योतिष शास्त्र ही उसकी सहायता करते हैं। कभी-कभी राहु-केतु शनि ग्रह से भी ज्यादा प्रभावी व शक्तिशाली हो जाया करते हैं। इससे ग्रस्त होकर जातक शरीरिक व मानसिक रूप में दुखी रहता है। हमारी इस पुस्तक में राहु-केतु संबंधी सभी शंकाओं का हल करेंगे। इसमें हर नक्षत्र में राहु-केतु का फल और शान्ति विधान बतलाया गया है। हर राशि में राहु व केतु का फलादेश दिया गया है। फिर हर राशि में अलग-अलग भावों में राहु का फलादेश दिया गया है और राहु के बचने के लिए टोटके व कालसर्प योग में राहु की भूमिका।

पुस्तक का मूल्य 150/-





मंगल-शुक्र की अशुद्धि से मुक्ति पाने के सरल उपायों की एक पुस्तक **मंगल-शुक्र** की अंतर-दशाओं का फल, राशि में स्थित मंगल-शुक्र तथा भाव में स्थित शुक्र-मंगल का प्रत्येक राशि का फल बताया गया है। मंगल के साथ दो ग्रहों की युति का फल, तीन ग्रहों की युति का फल, चार ग्रहों की युति का फल, ऐसे ही शुक्र के साथ युतियों का फल लिखा गया है। और अलग-अलग लग्नों में मंगल-शुक्र का प्रभाव का फल बतलाया गया है। मंगल की दशा, अंतरदशा का फल बतलाया गया है। स्त्री जातकों में मंगल-शुक्र का फल बताया गया है। मंगल और शनि मित्र या शत्रु इसके बारे में चर्चा दी गई है। क्रूर मंगल की शान्ति के उपाय, विवाह विचार।

पुस्तक का मूल्य 150/-



पित्तर दोष का नाम लेते ही लोग घबराने लगते हैं। घबरायें मत, पित्तरदोष का उपाय हमारी इस किताब में है।

पित्तर दोष है क्या, श्राद्ध में क्या करें, श्राद्ध में क्या न करें, श्राद्ध कब न करे, श्राद्ध कब करें, श्राद्ध विधान, श्राद्ध कर्म क्यों, श्राद्ध के प्रकार।

हमारे पित्तर देव और जीवन में पित्तरों का महत्त्व व श्राद्ध का फल, श्राद्धों में श्राद्ध का अधिकारी कौन, श्राद्ध में तर्पण का महत्त्व। पित्तर दोष और सहज उपाय, त्रिपिंडी और नारायण बलि श्राद्ध विधान, पित्तर शान्ति में पीपल का महत्त्व, पित्तर तीर्थों का महत्त्व-गया, त्रिभेश्वर, बद्री नाथ, गंगोत्री, त्रिवेणी क्षेत्रीय इलाहाबाद, इसके इलावा **पित्तर दोष** शान्ति के सैंकड़ों उपाय दिये गये हैं। जिसकी सहायता से आप लाभ प्राप्त कर सकते हो। **पुस्तक का मूल्य 200/-**

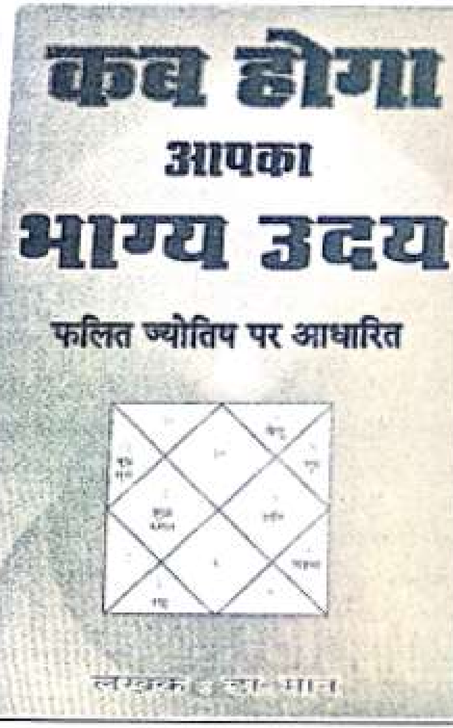
इस पुस्तक में शादी विवाह करवाने के टोटके व उपाय साधारण शब्दों में दिये गये है। जो आप स्वयं कर सकते हो तथा वह लोग जिनकी शादी टूट रही हो, के लिए विशेष उपाय बताये गये हैं। जो लोग अविवाहित रह गये हैं उनके लिए भी चमत्कारी उपाय दिये गये हैं।

प्रेम विवाह के विषय में अनमोल जानकारी दी गई है तथा उसके उपाय बताये गये हैं। इस किताब में शीघ्र विवाह के लिए उपयोगी रत्न भी बताये गये हैं। मनोअनुकूल पत्नी व पति प्राप्ति के उपाय बताये गये हैं। शीघ्र विवाह के लिए सूर्य उपासना द्वारा उसका हल करें।

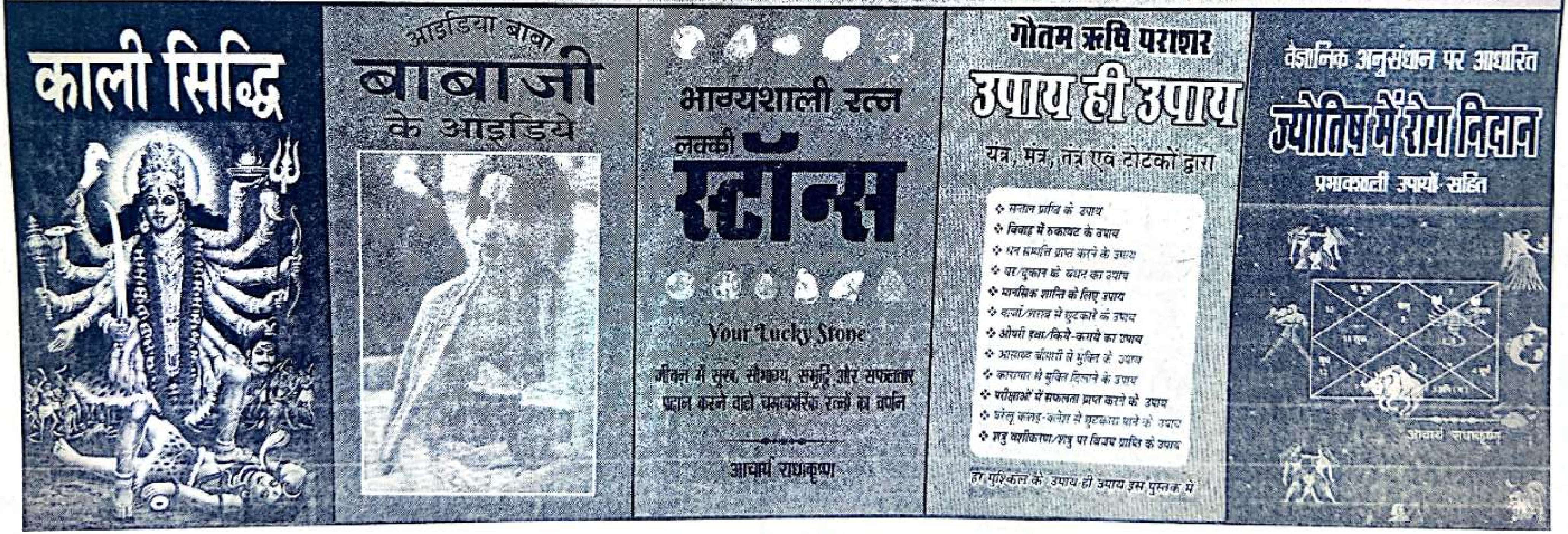
पुस्तक का मूल्य 150/-



यह पुस्तक फलित ज्योतिष (गोचर विज्ञान) पर आधारित है। कब खुलेगा भाग्य, संचित कर्म एवं भाग्य, पूर्व जन्म और भाग्य, साथ आया भाग्य, द्वादश भाव, द्वादशेश एवं भाग्य, द्वादस्थ ग्रह एवं भाग्य, पूर्व जन्म और राहु, केतू, राहू, केतू एवं भाग्य, जन्म कुण्डली, भाग्य कैसा होगा ?, जन्म कुण्डली, जन्म कुण्डली, भाग्य में क्या है ? जन्म कुण्डली जाँचने की अद्‌भुत विधि, जन्म कुण्डली, सारणी, सारणी, जन्म कुण्डली सारणी, आपका भाग्य एवं महत्वपूर्ण योग, राजयोग, विशेष राज योग, जन्म कुण्डली, **सुदर्शन चक्र** - सुदर्शन चक्र एवं भाग्य खुलने के विशेष वर्ष, सुदर्शन चक्र, वर्षफल जानने के नियम, लग्न राशि व आयु के वर्ष तालिका, **भाग्य खुलने के वर्ष, भाग्य बिन्दु महत्व एवं फल** - भाग्य खलने का वर्ष कैसे जाने ? भाग्य खुलने के वर्ष, विभिन्न भावों के भाग्य बिन्दु का फल, क्या भाग्य में विद्या है, क्या तबादला, यात्रा एवं विदेश यात्रा होगी, यात्रा या विदेश यात्रा होगी, क्या मेरा मकान बनेगा, जन्म कुण्डली, क्या आपका मकान बनेगा, क्या मैं धनवान बनूंगा।




चिन्तापूरक
अचूक उपाय
दस
महाविद्या
सिद्धि
भैरव उपासना
भैरव सिद्धि
मंत्र-तंत्र-यंत्र साधना
और प्रयोग विधि
सम्पूर्ण
भृगु संहिता


काली सिद्धि
आइडिया बाबा
बाबाजी
के आइडिये
भाग्यशाली रत्न
लक्की
स्टोन्स
Your Lucky Stone
जीवन में सुख, सौभाग्य, समृद्धि और सफलताएं प्रदान करने वाले चमत्कारिक रत्नों का वर्णन
आचार्य राधाकृष्ण
गौतम ऋषि पराशर
उपाय ही उपाय
यंत्र, मंत्र, तंत्र एवं टोटकों द्वारा
❖ सन्तान प्राप्ति के उपाय
❖ विवाह में रुकावट के उपाय
❖ धन सम्पत्ति प्राप्त करने के उपाय
❖ घर/दुकान के बंधन का उपाय
❖ मानसिक शान्ति के लिए उपाय
❖ ओपरी हवा/किये-कराये का उपाय
❖ परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के उपाय
❖ शत्रु वशीकरण/शत्रु पर विजय प्राप्ति के उपाय
हर मुश्किल के उपाय ही उपाय इस पुस्तक में
वैज्ञानिक अनुसंधान पर आधारित
ज्योतिष में रोग निदान
प्रभावशाली उपायों सहित



पुस्तक मंगवाने के लिए अडवांस में **UPI** करें। पता – **अमित पॉकेट बुक्स**, नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।



श्री मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

1. 'श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय' - यह शताब्दी पुराना उत्तरभारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने असंख्य लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। हमारे यहां से चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal) जन्म समय, जन्म तारीख और जन्मस्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर अक्षांश, सूर्योदयास्त, अयनांश आदि में सभी अपेक्षित सूक्ष्म संस्कार देकर स्वनिर्मित अत्याधुनिक/कम्प्यूटरीकृत सारणियों द्वारा भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा/दशा और निवास स्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल अतीव सूक्ष्मतापूर्वक बनाये जाते हैं, जिनमें स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, धन-सम्पत्ति, भाग्योदय, कार्यक्षेत्र, प्रगति आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्रादि हिन्दी में सुन्दर व संक्षिप्त फलादेशसहित अत्यन्त सावधानी से बनाये जाते हैं।

नोट - प्रत्येक कार्य की पूरी फीस ऑर्डर के साथ ही भेजें। V.P.P. नहीं की जायेगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जायेगा। डाकव्यय अलग से होगा।

(i)	भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस	Rs. 800/-
(ii)	भारतीय विस्तृत (बड़े) जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iii)	विदेशी जन्मपत्र की फीस	Rs. 1500/-
(iv)	भारतीय टेवा/दशा की फीस	Rs. 300/-
(v)	विदेशी दशा की फीस	Rs. 500/-
(vi)	भारतीय वर्षफल की फीस	Rs. 800/-
(vii)	विदेशी वर्षफल की फीस	Rs. 1100/-
(viii)	शुद्ध विवाहमुहूर्त/कुण्डली मिलान की फीस	Rs. 1100/-
(ix)	फोन पर मुहूर्त/मिलान की फीस	Rs. 2100/-
(x)	सर्वसाधारण प्रश्न की फीस	Rs. 1100/-

2. हमारे यहां मन्त्रादि साधनाकाल के विशेष समय में नवग्रहयन्त्र, महालक्ष्मी यन्त्र, सिद्धगोपाल यन्त्र आदि भी बनाये जाते हैं। जिनमें से कुछ का संक्षिप्त विवरण यह है--

(i) **सिद्ध शनियन्त्र-** इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभ पीड़ा से मुक्ति मिलती है। फीस-2100/-

(ii) **श्रीलक्ष्मी यन्त्र-** अष्टगन्ध आदि से विधिवत् शुभ वेला में बनाये इस यन्त्र को पूजास्थल या गल्ले में रखने से लक्ष्मीजी की अपार कृपा रहती है। फीस- 5100/-

(iii) **अठराहा नाशक यन्त्र** - जिन औरतों के बच्चे अठराहा, मसान दोष आदि के कारण मर जाते हैं, उनके संरक्षणार्थ यह यन्त्र वरदान रूप है। फीस- 2100/-

(iv) **सिद्धगोपाल यनत्र-** इस यन्त्र को श्रद्धासहित स्त्री धारण करे तो चिरंजीवी पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। फीस- 2100/-

व्यापारियों के लिए चांस (तेजी-मन्दी)

समय-समय पर हम रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड, शेयर मार्कीट, सोना, चांदी आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। **एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज, तिल-तेल सरसों, बिनौला आदि तिलहन, रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट तथा सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित Report की अडवांस फीस Rs. 6000/- प्रतिमास एवं वर्षभर की फीस Rs. 60000/- के हिसाब से चार्ज की जाती है। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार-विमर्श' के अन्त में देखें।**

यदि आप कार्यालय आने में किसी भी कारण से असमर्थ हैं तो अपने किसी भी कार्य की फीस 9988407010 नम्बर पर Google Pay कर सकते हैं और अपने कार्य का विवरण भी इसी नम्बर पर Phone/whatsApp द्वारा अवश्य भेज दें।

नोट- Report के अतिरिक्त Phone पर प्रतिदिन बात करने की फीस अलग से होगी।

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ-साफ डाक पते के साथ फोन नं. एवं. एवं Pincode लिखना न भूलें।

-: पण्डित जी से मिलने हेतु :-

Token (क्रमांक) प्राप्ति का समय प्रातः 7:30 से

पण्डित जी से मिलने का समय - 9 A.M. से

(दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित कर लें।)

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्र-व्यवहार के लिए पता-

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,

सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय (नज़दीक रेलवे स्टेशन),

मु.पो. कुराली, जिला मोहाली (पंजाब) पिन- 140103,

फोन- 0160-2641277, 09988407010,

Website: www.shrimartand.com

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय

यह शताब्दी-पुराना उत्तर भारत का एकमात्र ऐसा ज्योतिष कार्यालय है, जिसने लोगों की जटिल से जटिलतर समस्याओं का फलितशास्त्रीय चमत्कृतिपूर्ण समाधान प्रस्तुत कर भारी अक्षुण्ण यश अर्जित किया है। इस कार्यालय के अधिष्ठाता

विश्वविख्यात ज्योतिषाचार्य पं. श्री इन्दुशेखर शर्मा

एवं श्री संयमी शर्मा, एम.ए., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य हैं।

त्रिस्कन्ध ज्योतिष के पारदृश्वा आप द्वारा विगत वर्षों की गरिमामय अवधि में ऐसा शोधपूर्ण चिन्तन पाठकों को दिया गया है, जिससे इस शास्त्र में परम्परागत विचारधारा से अपने आप में एक विलग क्रान्तिकारी दर्शन भारतीय ज्योतिष जगत् में प्रतिष्ठापित हुआ है। आप भारतीय आर्ष ज्योतिष विद्या के सुपरीक्षित गूढ़ दिव्य सिद्धान्तों के आधार पर आपकी समस्याओं को निरस्त कर खोई हुई शान्ति लौटाने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

ध्यान दें- बाहर से आने वाले महानुभाव टेलीफोन द्वारा पण्डित जी से मिलने का दिन व समय निश्चित अवश्य कर लें, अन्यथा सम्भव है- आपको कार्यालय पहुंचने पर समय न मिल पाये और निराश लौटना पड़े। प्रात: कार्यालय में आकर अपना क्रमांक (Token No.) कार्यकर्ता से प्राप्त कीजिये। इसी क्रमांक के अनुसार आप पण्डित जी से मिल सकेंगे। क्रमांक निकल जाने पर कार्यकर्ता से सम्पर्क करें। आप कार्यालय में आकर व हमारे फोन नं. 0160-2641277 एवं 9988407010 पर 7:30 A.M. के बाद फोन कर अपना क्रमांक (Token No.) प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप कार्यालय आने में किसी भी तरह से असमर्थ हैं तो अपने किसी भी कार्य की फीस 9988407010 नंबर पर' Google Pay 'कर सकते हैं। अपने कार्य का विवरण भी इसी नंबर पर Phone/WhatsApp अवश्य कर दें।

हमारे यहां से

चित्रापक्षीय निरयण गणनापद्धति द्वारा क्षेत्रीय (Zonal) जन्मसमय, जन्मतारीख और जन्मस्थान के शुद्ध अक्षांश आदि के आधार पर सूर्योदयास्त आदि में सभी अपेक्षित संस्कार देकर भारतीय/विदेशी जन्मपत्र, टेवा और निवासस्थानीय अक्षांश आदि से वर्षफल बनाये जाते हैं। व्यापारिक मशवरे (सोना-चांदी आदि धातुओं एवं चना, ग्वार आदि अनाजों की तेजी-मन्दी) तथा किसी भी ग्रह किंवा राशि के रत्न/उपरत्न के लिए प्रत्यक्ष मिलें अथवा फोन से सम्पर्क करें। श्री नवग्रहयन्त्र, सिद्ध श्री महालक्ष्मी आदि यन्त्र प्रत्यक्ष आकर प्राप्त करें। यदि आप प्रत्यक्ष प्राप्त करने में असमर्थ हों तो Google Pay कर रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

'' ईश्वरेच्छा से भूत-भविष्य में जो कुछ ग्रहगोचरवश अनुभव किया है, वह आपके समक्ष रख दिया है। जो घटित हो चुका है, उसके आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसंधान के आधार पर विश्वास करें।''

"By God's grace whatever has been experienced with regard to Past, Present and Future has been highlighted and shared with you. Whatever has so far occured has also been witnessed by the masses. Therefore, you can trust and have faith on the basis of our research, experience, expertise and level of accomplishment in the past."

-Acharya Sanyami Sharma

श्री मार्त्तण्ड पंचांग एवं ज्योतिष कार्यालय,

नजदीक रेलवे स्टेशन, मु.पो. कुराली (मोहाली), पंजाब, पिन-140 103, भारत।

For Appointment - Inquiry Contact : 0160-2641277,

www.shrimartand.com, + 91 9988407010,